मुंबई पायधोनी पास शान्ति सुधाकर प्रेसमें
चीमनलाल सांकळचंद मारफतीयाने
मुद्रित कीया.

# रत्नसमुच्चय मंगलाचरणं ॥

॥ अथ श्रीजिनायनमः ॥ अथ रत्नसमुच्चय ग्रंथ प्रारंभ ॥
तत्रादौ मंगलाचरणं ॥ आदिनाथंजिनंनत्वा, धर्मशीलंचसद्गुरुं ॥
गीर्वाणींहृदयेधृत्वा, लिखामिरत्नसंचयं ॥ १ ॥ श्रेयार्थंभव्यजीवा
नां, तत्वामृतादिमेलनं, आवश्यकादिकृत्यं ॥ तपस्याविधिनिर्णयं
॥ २ ॥ द्वादशमासपर्वानि, पौषधंदेववंदनं ॥ स्तोत्राणिस्तवनंरम्यं,
स्वाध्यायंगुरुवंदनं ॥ ३ ॥ इत्यादिबहुरत्नेन, धर्मरत्नसमुच्चयं ॥
जातोयंकल्पकल्याणं, नित्यानंदश्चसंपदं ॥ ४ ॥

अथ ग्रंथ संग्रहकृत्संक्षेप गुरु प्रशस्ति ॥

श्रीमद्वीरजिनेंद्रतीर्थतिलकःसद्भूतसंपन्निधिः, संजज्ञेसुगुरुः
सुधर्मगणभृत्तस्यान्वयेसर्वतः ॥ पुण्येचांद्रकुलेऽभवत्सुविहितेपक्षेस
दाचारवान्, सेव्यशोभनधीमतां सुमतिमानुद्योतनःसूरिराट् ॥ ५ ॥
आसीत्तत्पदपंकजैकमधुकृत्श्रीवर्द्धमानाभिधः, सूरिस्तस्यजिनेश्वरा
ख्यगणभृज्जातोविनेयोत्तमः ॥ यःप्रापत्भसिद्धिपंक्तिसरदि ।
१०८० । श्रीपत्तनेवादिनो, जित्वासद्विरुदंकृतोखरतरे त्याख्यं
नृपादेर्मुखात् ॥ ६ ॥ तत्पट्टानुक्रमेश्रीमत्, सूरिःश्रीकुशलाभि
धः ॥ दादाविरुदविख्यातः, पूज्यपादगुरुर्वरः ॥ ७ ॥ क्षेमकीर्त्तिउप,
ध्यायः, जातोसौसकलाग्रणीः ॥ शाखाविस्तारितायेन, क्षेमधाटी
चिरंजयी ॥ ८ ॥ सुसाधुपदविख्यातः, धर्मशीलबुधाग्रणीः ॥ पाठ
कानेकभव्यानां, ज्ञानक्रियाप्रपालकाः ॥ ९ ॥ तच्चरणसमालीढा, नि
धानकुशलाभिधः ॥ धर्ममग्नसमाधिस्था, स्तुवंतिबहुमानवाः ॥ १० ॥
उपाध्यायसदाचारा, वादीनांमानभंजका ॥ शास्त्रार्थेविजयंप्राप, सं
पदंयुक्तिवारिधिः ॥ ११ ॥ पाठकऋद्धिसारेण, कृतोयंग्रंथसंग्रहः ॥
स्वपरोपकृतेसम्यग्, प्रसिद्धंप्रापितंमया ॥ १२ ॥ सुशिष्यक्षेमचंद्रेण,
प्रेमामरसबांधवैः ॥ श्रीसंघकृत्सहायेन, मुबध्यांशोसकाक्षरैः ॥ १३ ॥

यंत्रेमुद्रापितंसम्यग्, यंत्राध्यक्षेणशोधितं ॥ पठकःपाठकेन्योवै, नित्यंश्रेयश्चमंगलं ॥ १४ ॥ श्रीविक्रमपुरेरम्ये, वृहत्खरतरेगणे ॥ वृद्दोपाश्रयेस्थाने, पुस्तकेदंमिलिष्यति ॥ १५ ॥

इस पुस्तकोंका सर्व रकम खरच तथा इसका लाभ शुभ हमारे पोषपुत्र शिष्य पं । श्रीक्षेमचंद चि । पेमचंद चि । अमरचंदका हे, हमने हमारा सर्व स्वहथासरा पुस्तक धनमालका मालक इन तीनोंकों किया हे, दूसरा किसीका दावा उजर नहीं ॥ शुभं ॥

दसकत । उ० । श्रीरामलालगणिःका खुद ॥



# ॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

## ॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रभवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशय्यंभवसूरिः, तत्पट्टे ६ श्रीयशोभद्रसूरिः, तत्पट्टे ७ श्रीसंभूतविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीभद्रबाहुस्वामी, तत्पट्टे ९ श्रीथूलभद्रस्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहस्तिसूरजी भये सो वीरभगवानसें २३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवंतीसुकमालकूं प्रतिबोधके धर्मका बहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितसूरी १ क्रोम सूरिमंत्रका जाप कीया तबसे कोटिकगच्छ प्रसिद्ध भया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वधर बडे प्रभावीक विद्यासिद्ध भये इनोंसे वज्रशाखा प्रसिद्ध भई, तसेंइ १८ पट्टपर श्रीजिनचंद्रसूरी हुये इनोंसें चंद्रकुल प्रसिद्ध भया, इस तरे पट्टानुपाट भगवानसें ३८ में श्रीउद्योतनसूरिः भये सो एक तो निजशिष्य उर डुसरा साधुउके ८३ अपणे विद्यार्थी शिष्योंको आचार्यपद दिया तबसें ८४ गच्छ भया, यह ८४ गच्छोंके आचार्य बडे प्रभावीक धर्मोद्योतक भए, इन उद्योतनसूरजीके निजपाटधारी आबूजीतीर्थ प्रगटकर्त्ता विमलमंत्री प्रतिबोधक ३९ पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः भये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः भये सो अणहलपुरपट्टणमें दुर्लभराजाकी सभामें चैत्यवासियोंको शास्त्रार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटणके राजाने खरतर बिरुद दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके झलझलायमान। अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसंयुक्त जिसमें खर कहीये बडे कठोर इस वास्ते खरतर बिरुद पाया,

कोटिकगछ वज्रशाखा चंद्रकुल खरतर विरुद एसें ४ भेद नवदीक्षित शिष्यकूं कहणा सरू भया, इनोंके ४१ में पट्ट दिल्लीके बादसाह प्रतिबोधक जीवहिंसा छुडाणेवाले श्रीमालमहतियाण गोत्र प्रतिबोधक श्रीजिनचंद्रसूरिजी भये, फेर इनोके पट्ट ४२ में इनोके लघुभ्राता श्रीस्थंभणातीर्थ उर नवांगवृत्ति प्रगटकर्त्ता श्रीअभयदेव सूरिः भये, तत्पट्टे ४३ में अठारे हजार वागडीश्रावक प्रतिबोधक श्रीजिनवल्लभसूरिः युगप्रधान भये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रभावीक युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिः भये जिनोंनें चितोड उर उज्जयणी वज्रखंभसे साढीतीन कोटी विद्याम्नायकी पुस्तक निकालके साध कर बावनवीर चोसठ योगणी एक लाख तीस हजार घर राजन्य वंशीयोंको तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर उसवाल बणाया, उस वखत तीनसें गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारी लूणिया राखेचा सावणसुखा छाजेड इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसें इस वखत सातसे करीब होगये हे, वह गुरूका गुण लिख नहीं सकते, वह आज तक बडे दादाजीके नामसें सर्व जगे प्रसिद्ध हे, तत्पट्टे ४५ में मणीधारी दिल्लीके बादसाहकूं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दिखलाके जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंद्रसूरिः भये जिनोंका दिल्लीके भरबजारमें दाग भया बडा चमत्कार देख बादसाहादिक लोक मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी भये, अनुक्रमे ५० में पट्टपर महाप्रभावीक कुशलसूरिःजी भये, सो आचार्यपद पायके बावनवीर चोसठयोगणीकूं वसकर संघमें बडे२ उपगार किये, गूजरमल बोथरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते हुये पंखीरूपसें उहां जाकर दरियावमें तिराई एसें परमोपकारी अंतमें फागुण वदि अमावशकों स्वर्गवाश भये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्रगट होय प्रथम दरशण दिया, तिसपीछे भक्तलोकोंका उपगार

जगे२ करणे लगे इस वास्ते श्रीसंघनें अपणे आचार्यको इष्टदेव समझके सर्व नगर गाम२में चरणमूर्त्ति स्थूंभ स्थापन कर दादा जीके नामसें वंदन पूजन करणे लगें, सर्व जगे दादागुरूका जश प्रख्यात भया, प्रत्यक्ष परचा देणेवाले यह तीसरा दादाजी भये, इनोंके पाटानुपाट ६१ में श्रीजिनचंद्रसूरि भये, जिनोंने अकबर बादसाहकूं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका बताणा इत्यादि दिखाकर अमारि उदघोषणा फिरवाई, सर्व वेषधारियोंकी हिंदुस्थानमें रक्षा करवाई, क्रियाउद्धार कर पतितोंको छांटा गछकी व्यवस्था करमचंद बछावतकी वीनतीसें सर्व समयानुसार बांधी, इनोंके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरिः, इनोके पट्ट ६३ में श्रीजिन राजसूरिः इनोके समयमें आचार्य गछ सागरचंद्रसूरिःसें भया, इ नोके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरिः इनोके समय रंगविजयसूरिःसें रंगविजय गछ भया, इनोके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंद्रसूरि, इनोके पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तत्पट्टे ६७ में श्रीजिनभक्तिसूरजी भये, इनोके पट्ट ६८ में श्रीजिनलाभसूरजी भये, इनोके पट्ट ६९ में श्रीजिनचंद्रसूरिजी भये, इनोके पट्ट ७० में श्रीजिनहर्षसूरिजी भये, इनोके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी भये, इनोके स मयमें महेंद्रसूरिजीसें मंडोवरागछ भया, इनोके ७२ में पट्ट श्री जिनहंससूरिःजी भये, इनोके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरिः भये, इनोके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्त्तिसूरिःजी वर्त्तमान विजयराज्यै ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्त्ता कुल प्रकाशक पूज्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिब श्रीजिनकुशलसूरिः महाराजके शिष्य म- होपाध्याय श्रीक्षेमकीर्त्तिगणिःजीने जं । यु । प्र । भ । श्रीजि नपद्मसूरिःजीके वखतमें साधूलोक आचार्यमहाराजके पासमें ब- होत थोडे रहे और बरे२ ज्ञानवंत क्रियावंतोको और२ जगे चतु-

मांस करणे जेजेगये, थोमे वहोत रहेथे सो जी गोचरी थंमिल्ल जूमी चलेगयेथे जस वखत श्रीजीके पास फकत श्रीजपाध्यायजी ही बैठेथे, श्रीजीका थंमिलजूमीका हाथ धुलाणेकूं जठे, अपणे वि- द्यापाठकजीका एसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप विराजो समयका बमा अपरवलीपणा हे सो गछमें साधू बहोत कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे जठे, दादासाहिबके वखत कैसे२ ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसे२ पंमित वि- द्यमान थे, अब यह गछ किसदशाकूं पोहचा हे, थोमा समुदाय, जिसमें सुपात्र तो बहोतही थोमे हें, तब जपाध्यायजीने कहा म- हाराज यह वृहद्गछ खरतरमें किसी बातकी कमी नही रहेगी अजी गुरुदेवकी कृपासें यती२ होजांयगें, एसा कह दादासाहि बका ध्यान करते जपाश्रयसें विहार कर वस्तीके बाहिर जा बैठे, गुरूके ध्यानमें लीन जये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह क- रणेकुं जारहीथी, साधूमुनिराजकूं बैठे देख पाशमें आके वंदन नमस्कार कर गुरूके सन्मुख बैठ गये, श्रीजपाध्यायजीनें शांतरश का जरा वैराग्यमई जपदेश दिया सो जन पांचसें राजपूतोनें वि- वाहकी वांछा छोम दीक्षा ली, दादासाहिबनें देवशक्तीसें सबोकों धर्मोपगरण वेष दीया, इन सबोंकों लेकर श्रीआचार्य पास आये, सूरिश्वरनें कहा, क्षेमाजी, धामकीधाम लेआये, जपाध्यायजीने कहा तथास्तु, मेरे शंतानी क्षेमधाम नामहीसे प्रसिद्ध रहे, जस दिनसें वृहत्साखा क्षेमधाम विस्तारजावकूं प्राप्त जई. यह साखाकी जत्पत्ती संवत् विक्रम तेरेसेमें सीवाणाची देशमें जई, जो अब जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध हे, इस साखामें बमे२ विद्वान होते चलेआये जिनोके बनाये अनेक प्रकरण काव्य न्याय टीका वगेरह विद्यमान हे, जस शाखा

में उपाध्याय श्रीनेममूर्त्तिजीगणिः तत् शिष्य उ। श्रीक्षेममाणि कजीगणिः तत् शिष्य। पंडित प्रवर श्रीविनयचन्द्रजिगणिः तत् शिष्य श्रीपं। प्र। लब्धिहर्षजिगणिः तत् शिष्य पं। प्र। श्रीधर्म शीलजिगणिः (श्रीसाधूजी) तच्छिष्य पं। प्र। श्रीकुशलनिधानजि गणिः तच्छिष्योपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः श्रीऋद्धिसारगणिजित्संगृहीत रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविलाश तच्छिष्य पं। क्षमासौभाग्यमुनिः चि। पेमचंद चि। अमरचंदकी तरफसें यह ग्रंथ सब जीवोंके उपगारार्थ पढणेकूं छपाया। श्रीबीकानेरमें सं। १एएए की ज्येष्ट वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ स्थापन करी है इसमें मदत देणेवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीकानेरमें छिया ॥

४१ रु। श्रीनथमलजी चांदमलजी ढढा.

११ रु। श्रीमगनमलजी मंगलचंदजी झावक.

११ रु। श्रीसदारामजी गोलछा.

११ रु। मानमलजी केसरीचंदजी साह.

११ रु। श्रीचूनीलालजी गोलछा.

१० रु। श्रीराजरूपजी देवचंदजी नाहटा.

७ रु। श्रीआसकरणजी वरढिया.

११ रु। श्रीबादरमलजी जसकरणजी रामपुरिया.

११ रु। श्रीसिरदारमलजी तातेड.

२५ रु। श्रीबालचंद कनीराम आनन्द मुमईवाला.

३ रु। श्रीनगराजजी नाहटा.

आगे जो विवेकी श्रावक इस पाठशालाकूं मदत देंगें तो ज्ञानका अक्षयनिधान पावेंगें, जतीलोकोंके केइयक शिष्य जैनपंडित तत्वज्ञानी बण जायगें, जैनउपदेशक बधेगें, और जो नहीं पु-

हते हैं उनोंकों इसतरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढाणेकुं उद्यमवंत करणा यह काम श्रावक मातपिता उर गुरुलोकोंका हे, इस नही पढणेके सबब जैनके भेषधारी उर भेषधारणीयां अनेक कुकर्मोंक वश नरकके पात्र उर धर्मकूं लजाते हे, क्यों की दशवोकालक सूत्रमें लिखा हे (॥ सूत्रं पढमं नाणं तउ दया ॥) पहली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीछे दया पाल सकता हे ॥ ज्ञानीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, बाजै गृहस्थ एसा कहते हें हमारे भावे बिगडे तो क्या उर सुधरे तो क्या, हम नतो इनोंकों गुरुकरके मानेगें न अन्नवस्त्र देगें, देगेंतो मानरहित कंगलोकी तरे ॥ हम पढाणेकी क्यों कोसीस करें ॥ उत्तर ॥ यह समझसें तो जैनधर्म अमावश चंद्रताकूं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसें जैनधर्ममें पूनमचंद्रता करसें उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेकविलाशादि श्रावकाचार ग्रंथोमें एसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें धर्मसें भ्रष्टभये धर्माचार्यकूं फेर जिनधर्ममें थिर करे तो वदला उतरे, दस वीस आदमी एकठे होकर निंद्या करणेसें विगाडका सुधार नही होता, धर्ममें थिर करणेकी असली जड विद्यावृद्धि हे, स्वभाव कोई किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चे हे, तथापि कारणसें कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढणा हे कार्य सो अबी क्रिया चोथा पांचमा छठा सातमा गुणठाणा चढणेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोका हे सो विचारणा. प्रश्न । हम जतियोंकों धर्माचार्य नही मानते? ॥ उत्तर ॥ कोइ कृतघ्नी अपणे पितासे पिताभाव न रक्खे तो उसका क्या कोइ कर सकता हे लेकिन् संसारमें वह लायकवंदतो नही गिणाजाता, एसेंइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य तो जतीही हे, जतियोंसें पढते हें, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

पडिक्कमणा करते हैं, मंदिरोंमें गायन पूजा चोपी आदि वाचते हे यह तो चलता उपगार हे, उर जतियोंके वडेरोंनें तुमारे वडेरोंकों चिंतामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया हे, यह उपगार सबसें वडा हे. ॥ प्रश्न ॥ एसोंकों तो हम मानते हे लेकिन् सुणाणे पढाणेवाले तो कम उर धर्म लजाणेवाले बहोत जिनोंकों केसें माने? ॥ उत्तर ॥ सच्च हे, इस वातका निर्णय हमने आगे लिखा हे सो वांचो, एक श्रावकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों करतें हें इनोंसें यथार्थ धर्म पलता नही? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ धर्म तो यथाख्यात चारित्रकूं कहा हे सो तो वज्रऋषभनाराच संहणन विछेद होतेइ गया, सामायक छेदोपस्थापनी यह दोय रहा, जिसमें भी उत्सर्ग उर अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग सूत्रोंमें वांचणें योग्य ठहरगया, आपसमें कषायकी चोकडीका वरतावा देखके मध्यस्थ हो के रहै, आरंभत्यागकी हमेसां बुद्धि रखे पंचमकालमें वोही साधू हे, जतियोंके चेला बणाणेमें इतना फायदा हे—मिथ्यात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रमका पाप ज्ञानपढे बाद आपसेंही छोडदेणा, केइयक इनोंमें चोथा पांचमा छठा सातमादि गुणठाणे चढणा, श्रावगवर्गका इस भव परभव संबंधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाभ परजीवकूं सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थंकर गोत्रकर्म बांधता है, योंमें विचारणा ॥ प्रश्न—जिनोंकुं पढाया नही उर गुरु मरे बाद गुरूके कमाये धनसें पापारंभ करे तो वह पाप चेलेका गुरूकुं जरूर लगे या नही? उत्तर—जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह वोसिराय दिया उनोकों पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारंभ सो करणेवालेकूं लगेगा, मातापिताकुं नही, यह जैनधर्मका

धर्म है, मातापिता गुरु शुभ अनुष्ठान सिखलाते है संतान वैसा करे तो जरूर शुभफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुविसन गुरु सिखलाते नहीं इस वास्ते करै करावै अनुमोदे उसकूं पाप लगे ॥

---

# विज्ञापन.

॥ अथ वर्त्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवंत रूपवंत ओर विद्यावंत सुशीलही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्षणवाला दुसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसेंही होणा, फेर हमेंसा शास्त्राभ्यासी होणा, बहोत प्रमादवंत नहीं होणा, देश क्षेत्र काल भाव मुजब सदा गच्छकी सारसंभालसें जैनधर्मके दीपक होणा, वेजा चलणसें यतीयोंकों हटकणा, उनोंके मन मुजब नही चलणे देणा, लांछित पुरुषकी संगत नही करणी, उभय काल प्रतिक्रमण करणा, अभक्षके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य जाप करणा, देवदर्शन ओर आपनाचार्यादि पडिलेहण करणा, जती जतणीकूं शुद्ध परंपरागम वेष ओर संघ तारीफ करे एसे मार्गमें प्रवर्त्ताणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूं गणाबहही करणा, स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अछे सुशील पंडितो की सोहबत करणी, क्षमावंत भी होणा, समय भी सोचणा, उपदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य ओर पंडितकूं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख ओर अयोग्य ओर बुद्धिहीन अवस्थावृद्ध कलहकारकूं न देणा, अपणे२ गच्छके अधिष्ठायक क्षेत्रपाल मानभद्रादिकके साहायसें धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रादिक विद्या लब्धिबलसें संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रभावीक होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोके पढने ओर पढाणेवाले होणा, वर्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी

आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकूं सुविहित मार्गमें चलाणा, गच्छ के धोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुभ अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्त्तमान त्यागीसाधूओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोंके भंडार नहीं है वहां पुस्तक लिखवाके भंडार करवाणा, अपणी निश्रायें हजारो रुपेके पुस्तक लिखवाके श्रावकों पास लेणा यह साधूओंका धर्म नही, फकत अपणेसें उठे उर नित्य पडिलेहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वांचनेकुं चहीये तो ज्ञानभंडारसें लेकर पीछा देणा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिस२ वस्तुकी आवश्यकता होय सो वहां उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रत करवादेणा, अथवा दुसरे क्षेत्रोंके समर्थ श्रावकोंसे करवाके भेजादेणा, गृहस्थोसें वैयावच्च कराणी नही, व्रती योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही, जंघाबल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंडितोंहींसे तो पहली ज्ञान पढे उर फेर कृतघ्नी होकर उनही की पीछी हीलणा उर निंदा करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्षक उर बीजभूत जतीही है क्योंकी जतियोंकेही प्रतिबोधक उसवाल पोरवाल उर श्रीमालादि श्रावक हें, फेर इन जतीयोंमेंसेंही हजारों त्यागी वैरागी इस पंचमे समयमेंभी होतेआए हे, तपा सत्यविजयजी जिनके संतानमें बुंटेरायजी उर आत्मारामजी वगेरे भये हे, खरतर अमृतधर्मजी उपाध्यायजी क्षमाकल्याणजी इयते पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगेरे भये हें उर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणलालजी किरपाचंदजी भायचंदजी

वगेरे अनेक विचरते हैं सो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चारित्र इन तीनूंकी जड़ इन पुरुषोंके जतीही हे इस वास्ते जतीयोका घराणा रत्नोंकी खाण हे, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हैं, जतीभी प्रमादी छठे गुणस्थानकमें केइयक वर्त्तते हे उर आजकलके साधूभी केइयक प्रमादी गुणस्थानवर्त्ती हे इस वास्ते केइयक तो छांने दोष लगाते हे केइयक प्रगट, केइयक तो जतीयोमें भाव करके पंचम गुणठाणी हे केइयक चतुर्थ गुणाठाणी, इसी तरे साधुउंके सुजबही शुभ भावसंयुक्त जतियोके भाव आश्री गुणठाणा समझणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीभगवान कह सकते हे तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुभ बलवान हे, लोचादि कायक्लेस तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके हे, देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कषायकी बहुलता आजकल साधूंउंमें ज्यादा देखणेमें आता हे, गण२वालोंसें आपसमें द्वेष रखते हे, खरतर तथा तपोके भी देखणेमें आता हे, जब कषाय विद्यमान हे तो सिद्धिपद केसें सधेगा बलीहारी उनहींकी हे जिनोंनें कषायकी चोकड़ी त्यागी हे. किंबहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकोका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मन वणिक् राजपूत जाट वगेरे उत्तम जाती का चेला तीन च्यार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेणा यावत् बारे वर्ष तकका उपरांत ऊमरवाला पढता नही उर बहोत छोटा लेणेसें धाय रखणी होती हे उसकी प्रालगेट करणेकूं तब वहोतसे कमजात अपणी एबकूं छिपाणेकूं निंदा करतेहुये कलंक लगाते हे लेकिन् न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूंमसं वात नही निकालते मूर्खोंके कहणेसें सोना पीतल नही वणता, दुष्टोंका स्वभा-

वही होता है सो गुणमें उगुण निकालते हें, भर्तृहर लिखता हें-सूरवीरकुं निर्दइ कहते हे गमखाणेवालेकूं भरोकम केते हे ब्रह्मचारीकूं नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत हे, खैर एसे चेलेकूं मुखपाठ जैनधर्मका अवस्य कर्त्तव्य गुणाना निच फेर अक्षर वांचने सिखाणा अक्षर जमाणे वोलखा पाटी लिखाणी फेर कोश व्याकरण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्यानुसार सीखाकर जीवविचारादि षट् प्रकर्ण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोलपट्टा मुंहपत्ती उघा भांका चेद्दर पांगरणी स्वेत हमेसां रखणा, मस्तकके वाल केचीसें कतराणे या उस्तरेसें मुंडाणा, पादत्राण स्वेत वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत उष्ण कांटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर देश आश्री पहरणें दक्षिण पूर्वमें प्रायें नही उहां एसा उपसर्ग नही देश विरुधके कारण त्याज्य हे, प्रवचनसारोध्धार ग्रंथमें कारणविशेष साधूउंको पादत्राण पहरणेकी आज्ञा हे, पुस्तक लिखणा पातरे पाटी वगेरे रंगणा गूंथणा तिरपणीके भोरे बणाणे माला बणाणी ओकोरे पढाणा मंत्रविद्यामें कुशलाता रखणी सो भी जिनधर्मके अन्यके नहीं, रातकूं चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख यथाशक्ति तप करणा, दोनुं वखत पडिक्कमणा करणा, उत्ती शक्के सचित्त त्यागणा, राजदंडे लोकभंडे एसे रस्ते नही चलणा, कुलमर्याद लोपणा नही, चिलमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके वरखिलापनसा पीणेवालेकी संगत नही बेठणा, कुविसनीयोकें संगतसे लंछन लगता हे, श्रावक जो द्रव्य देवें सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थयात्रा चेला लेणा उनोकूं खिलाणा पिलाणा पंडतोकों रुजगार देके चेलेको पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत समय जीवराशी खमाय पापोंकी गर्हा सुकृतकी अनुमोदना कर सब वोसराके परभव साधणा धर्मोपदेश देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्त्तव्य ॥

॥ सुलन्नबोधी श्रावकोंके इक्कीस गुण सिद्धांतोमें लिखा है, उस गुणोकूं धारणा चाहिये. ठाणांगसूत्रमें साधूउंकी प्रतिपाल करणेसें श्रावकोंकूं मातापिता तुल्य न्नगवंतनें कहा है, बालक कसूर न्नी करे तोन्नी मातापिता अपणे संतानपर अंतरंगसे कन्नी द्वेष नही करते हैं, इसी तरे श्रावकोंकूं साधुलोकोंसें वर्त्तणा चाहिये, न्नेषधारीसाधूउंमें कोइ तरेकी एब दीखपमे तो एकांतमें हितशिक्षा देके उुमाणा चाहियें, नहीं माने तो बालककूं धमकावे जेसें धमकाणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नही दीखेतो कर्मोकी विचित्रता समझके एसोंकी संगत न करे, जैनधर्मकूं लजावै एसी एब कोइ नही होय उर शरीरके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल न्नावके कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय उर गुणवान होयतो उस गुणकी कदरदानी नारायणकृष्णकी तरे जरूर करणी, उर जिनधर्मकूं लजावै एसा होयतो उहांसें रुकसत करादेणा. जिनमंदिर उर उपासरेकी आवंद खरचकी सारसंन्नाल जरूर करे, विनासंन्नाल किये बहोतसे मंदिर उपासरोंकी तजबीजें बिगम रही हे, न्नंमार लोक खागये हे, उती शक्ते इस बातका खयाल हरतरेसें करें, अपणा लमका लमकीयोकूं संसारविद्या उर धर्मकी मजबूती करणेकूं पमिक्कमणा चैत्यवंदनादि श्रावकाचार उर जैनन्यायशास्त्री अक्षर बचपणेसें सिखलाणा चाहीये देव गुरु उर बमे२ अकलवंतोकी संगत करवाणी चहिये, बिरादरीमें सनातन कुलमरजादसें जो विपरीत आचारणा करै उसकी देखदेख आप न करणा, बणे जहांतक उणोंको न्नी रोकणा, विद्यमान अंग्रेजी इल्म लमकोंकूं सिखलावे तो पहली जैन न्यायसें हुसियार कर पीछे सिखलाणा क्योंकी इस अंग्रेजी इल्मकी ज्यादा किताबोंके पढणेसें पीछे उस-

कूं सत्य सनातन दयाधर्मका उपदेश लगणा मुसकिल होता है, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बांधणा उर अंग्रेजीमें चोथे दरजे पास होकर हाल मुकाम जेपुरमें ढढा गुलाबचंदजीकों हम धन्यवाद देतें हैं इस वजें वेलासक पढे उर पढावै, जैनधर्मके कायदेकी मजबूती उर तारीफ जिसने समझा है वोही जाणता हे उर लसनकूं मुसककी खसबो कब लग सकती है, जिनोंको संसारमें अभी बहोत भवभ्रमण करणा बाकी रहा हैं उनोंकों जैनधर्म किसी तरे रुचता नहीं, कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पंथ न्यारे२ हे मानेभी तो कोन सच्चा उर कोण झूठा ? ( उत्तर ) हे भव्य हमने पेस्तरही लिखा है न्याय जो जैनका सात भंगरूप हे उसकूं समझा उर वस्तुउ पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता हे, ( प्रश्न ) इतनी बुद्धि उर परिश्रम तो करणेवाले थोडे हैं सो एसा न्याय पढके निश्चय करे सहजमें निश्चय केसें होय ? ( उत्तर ) जो इतना नही समझो तो जो रुषभदेवजीसें लेकर आज दिनतक जो सनातन जैनधर्म चलता आया है वोही जैनधर्म सच्चा हे वीचरमें अल्पज्ञोने अहंकारके वस मनोकल्पित फंदसे एक नय पकडके अपने२ मत खडे किये हे, षट्शास्त्री चौदपूर्वधारी दशपूर्वधारी निर्युक्तीकार भगवान् भद्रबाहुस्वामी उमास्वाती भाष्यकार जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण इत्यादि पंचांगीकार जो समुद्र सरीषे बुद्धीके धणी उनोंने जिस वातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म समझणा, श्रावगधर्मवालों पर वडा उपगार रत्नप्रभसूरि उर दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने किया हे सो केइयक पापारंभ की वातें तो इस जातीके कायदेसेंही वंध होगई हे, जैसें मद्यका पीणा उर मांसादि अभक्ष खाणा लेकिन् आजकल कर्मके वस धीरे२ एसे उत्तम कुलमें निरबुद्धीयोंनें अधोगतीकी सडक वांः

धणे पर मुसलेद हुये सुणनेमें आते हे, चिंतामणीरत्न समान जैन धर्म पाय के निरभाग्यकी तरे क्यों हाथसें फेकते हो पीछे पछ-तावा होगा थोडे दिनकी जिंदगानी हे, मदिरा पीणेमें बावन ऊगुण हे एसेंइ मांसमें देखो जैनतत्वादर्श जाषाग्रंथ, यही चीज अबी होती तो तुमारे वगैरे लाखों राजपूत इस चीजोंकों क्यों गेमते उर मुसलमीनोकों जी धर्मकायदेसें इस वातकी सकत मनाई हे इत्यादि, किंबहुना ॥ जैनपाठशालाउ स्थापन करणी पढनेवालोंको अन्न वस्त्रादिसें सत्कार करणा चाहिये, जैनकोममे संप नही हे इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पं-मित तो दुस्मन जी अगा होता है मूर्ख हितकारी जी कामका नही, विद्यावान सब काम विचारकेही करता है मूर्खके विनाका-रण द्वेष उर अहंकारीपणा होता हे बाकी तो कवियोंनें कहा हे—दुहा ॥ सज्जन जाके सो नही, दुस्मन नही पचास ॥ जणनी जणके क्या किया, जार मरी नव मास ॥ १ ॥ श्रावक जितनी चीजें अपणे उपजोगमें लेता हे सो सब उत्तम चीजका दान करता हे एक स्त्री वर्जके उस करके जन्मांतरमें लक्ष्मीकी एश्वर्यता जोग कर संसारका पार पुन्यानुबंधी पुन्यसें पाता हे मुक्तिपंथ जाते हुये जीवकूं पुन्य वोलांउरूप हे, अन्न वस्त्र उषधी सज्या पात्रादिक साधुउंकों देवे, देवके निमत्त अष्टद्रव्य गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजाउंसें दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूठा वगेरे उजमणें दान करे, सा-धर्मी तथा जैनपंमितोंकूं नगदद्रव्य वस्त्र जोजनादिक यथायोग्य दान करै, तीर्थंकर जगवान जी संवत्सरी दान देते हैं, दानधर्म मुख्य हे जगवतीजीनें ग्रहस्थका अजंगद्वार कहा हे, जगवतीसू-त्रमें तीन गुरु कहे हे सिल्पगुरु १ जो कारीगरी सिखलावे सो, क-लागुरु २ जो लिखणा पढणादि ७२ कला सिखलावे सो, धर्मगुरु

३ सामायक पडिक्कमणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेस दे के मुक्ति-पंथ बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य भक्ती करे ॥ अब चउभंगी लिखते हें ॥ सम्यग्ज्ञानवंत देसविराधक । १ । कष्टरूप क्रिया करणेवाला देसआराधक । २ । ज्ञान उर क्रियारहित सर्व-विराधक । ३ । ज्ञान उर सत्क्रियावंत सर्वआराधक । ४ । ॥ इति पात्रगुरु निर्णयः ॥ विशेष श्रावकोके करणे योग्य कर्त्तव्य देखणा होय तो हमारा उपाया श्रावग व्यवहारालंकार देखो ॥

॥ अथ मंदिरके पूजारीयोंके कर्त्तव्य ॥

मारवाममें प्राये जैनमंदिर भोजगही पूजते हें उनोंमें इस वखत प्राये मिथ्यात्वी वहोत सम्यक्ती वहोतही कम हे, गुजरातमें जो भोजक जैनमंदिर पूजते हें सो सब जैन हें जिनोंको अन्य देशमें गंधर्व कहते हें. ( प्रश्न ) पूर्वोक्त भोजकोंनें जैनधर्म कबसें गोमा हे ? ( उत्तर ) पहले श्रीऋषभदेवजीनें भोगवंश स्थापनकर अपणे कुलके प्रोहित बनाये, पीछे भरतजीनें ब्राह्मणवंश स्थापन करा, राजा सूर्ययशनें भोगवंशीयोंको पूज्य जाण जिनमंदिरोंकी सारसंभाल सोंपी लेकिन् जिनमंदिरका चढापा मंदिरके कूटपर धरायाजाताथा जैनधर्मी होणेसें बलिदान भोगवंशी नही खातेथे वो सब पंखी जानवर खायाकरते, इनोंको अनेक तरेसें पर्व महोछव पर द्रव्य वस्त्र भोजनादिकसें राजा उर प्रजा सब सत्कार करतेथे वो सब नवमें दशमें भगवानके अंतरमें मिथ्याधर्मी होगये बाद कभी कोइ जैन कभी मिथ्यात्वी एसे होते चले आये, जब २४ वर्ष पहले उसीयामें जैनधर्म फेला तब राजाके पुरोहित राजीके संग भोगवंशी फेर जैनधर्मी होगये तब राजा उपलदेव प-वगेरोंनें भक्ती उर बहुमानता के संग जिनमंदिरका पूजारी साधर्मी ब्राह्मण जाण सुप्रत कीयागया, जिसके बाद विक्रम

संवत् बारेसेंमें रामानुज माधवाचारी वगेरोनें विष्णु संप्रदाय निकाली, उसही जमानेमें अनेक राजन्यवंशीयोंकों दादा दत्तसूरजी ने लाखों उसवाल फेर वणायें, तब राजवीयोनें गुरूसें अरज की इस दयाधर्मके प्रभावसें निर्दयीपणा हम लोकोंसें होगा नही राज्य तो सदा थिर रहणा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा, गुरुने कहा जो जिनमंदिरोंकी भक्ती उर जतीगुरुकी सेवा अभक्ष्य त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलोगे तहां तक पाटका मालक राजा उर सर्व थाटका मालक तुमलोक रहोगे तथास्तु वरदान एसाइ भया, राजाउने अपणें भाई स्वजनवर्गी उसवालोंकूं प्रधान हाकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथायोग्य सुप्रत किया, तबसे २२ सों रजवाडोंमें उसवालोंका राज्याधिकार वणा तबसें उसवालोंने महरवानी रखके विष्णुमंदिर शिवालयादिकोंका पूजारीपणा भी भोजकोंकों सोंपा वह भोगवंशी फेर पीछे धीरे२ मिथ्यात्वी वणवेठे, विद्याहीनता होणेसें सब तरेकी हीणता होगई आखिरकों लोक ब्राह्मण भोजकोंकों कर्म करकरके मांनणे लगे पूज्यभाव उठगया, जो कभी भोजकलोक एसा समझतें होंगें की हम तो अव्वलसेंही शैव बैष्णव थे ( उत्तर ) यह समझकी भूल है हम पहली लिखदिया है जैनधर्मकी वहुलायतमें प्रजा जैन रही, बोधोंके अमल बोद्ध, शांख्यादिकोंके अमलमें सांख्य, इत्यादि वातें तवारीकोंसें भी पाईजाती है लेकिन् जैनधर्म उर मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालका है इतना भोजकोंकों जरूर समझणा चाहिये जो तुमलोक सदा मिथ्याधर्मी होते तो राजा उपलदेव पमारादिक परमजैन तुमारा लागा उर वहुमान उसवंश पर कभी नही लगाते, मिथ्याधर्मीयोका जोर उसवाल जैनोपर कब लग सकताथा इतनेमेंही समझणा, पीछेसें

विष्णुमंदिरोंकी पूजा उर राजा वगेरोंकी देखादेख संग दोष लगा, उसवालोंनें तिथ नहीं करी वध गया, इस तरेही बहोतसें उसवंशी भी खुलामंदीसें उसरा धर्म धारलिया तुमको क्या कह सकतेथे; खैर इस बातोंसें हमारे कुछ मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन् अब हम आगे लिखतें हें उस पर अमल करणा तुमारा फरज हे; लोकीक कहणावट भी हे " जिसकी खावे बाजरी जिसको भरणी हाजरी " उसमें हरज करणेसें निमकहराम कहलाता हे ॥ अंतरंगभक्तीसें जिनमंदिरमे झाडू देणा, वरतन मलणा; अंगलूहणा धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अंगकी शुद्धी विगर जिनमूर्त्तीका स्पर्श नही करणा, पूजा एसी साफ करणी सो आसपास मैल जरा भी नही रहणे देणा, दीपक जलाणेंमें ढकणा वगेरे देकर जीवरक्षा करणी, जल शुद्ध छाणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री बहोतही विवेकसें रखणा, देवद्रव्यकी चोरी नही करणी, हकमें हरकत डालणा नही, देव उर गुरूकी सेवा करणेसें तुम्हें सेवगपद मिला हे, जो भावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोके वश जो श्रद्धा नही आवे तो जिसकी व दोलत रोटी आदि सइकडों रुपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य उपासरे के जरीये तुमें सइकडों रुपै श्रावक देते हैं वो सब देवगुरूका प्रताप समझ इन दोनोंकी सेवा तन मनसें बजाया करो ॥ अलंविस्तरेण ॥

ऊपर ब उपदेश मेंभी लिखे हे कोइ कठोर लबज लिखा होये तो माफी मांगताहूं सरलभावसें लिखा हे द्वेषसें नही ॥

इस ग्रंथके छापणेमें काना मात्रा ज्यादा या कम जो रह गया होय सो सुधारके वांचे या गुरूसें शुद्ध करालेवें में मनशुद्धिसें सर्व संघसें क्षमा मांगताहूं सज्जन तो सदा गुणग्राहीही होते

हैं, इनोंका मैं सदा आन्नार मानताहूं ॥ यतः ॥ तथापिक्रियते ग्रंथ, संतियद्यपिडुर्जना ॥ नहिदस्युन्नयाल्लोको, दैन्यवानिहवर्त्तते ॥ ॥ १ ॥ अर्थ—ग्रंथ संग्रह तोन्नी करताहूं यद्यपि डुरजन बहोत हे चोरोंके मरसें लोक कंगाल नही बणवेठते तेसे १ मेनें अपने हाथसे लिखश्कर मुंबइ नेजकर शिष्यवर्गोंके कहणेसे इसमें सं-ग्रह मेंने अनेक ग्रंथोंसे किया हे, बहोत चीजें पं। प्र। श्रीअवी-रचंदजीमुनिःसे लीहे, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संचय हे. ऋषन्नदेवजीका आदिअक्षर। र। महावीरस्वामीका। म। इन दोनोंसे बणा जो। राम। इनोंके मध्यवर्त्ती सब न्नगवंतोके गुणोका विलास इसवास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे॥

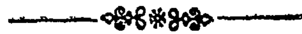
॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सवईया ॥

द्वाशानुदाशाइवसर्वदेवाः, यदीयपादाब्जतलेलुठंति ॥ मरु-स्थलीकल्पतरुःसजीया, युगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिंताम-णिः कल्पतरुर्वराको, कुर्वन्तिन्नव्याःकिमुकामगव्या ॥ प्रसीदतःश्री जिनदत्तसूरेः, सर्वेपदाहस्तिपदेप्रविष्टाः ॥ २ ॥ नोयोगीनचयोगिनी, न्नचधराधीशस्यनोशाकिनी ॥ नोवेताल पिशाचराक्षसगणाः, नोरो-गशोगोन्नयं नोमारीनचविग्रहः, प्रन्नृतयः प्रीत्याप्रणत्पुच्चकैः ॥ य-स्तेश्रीजिनदत्तसूरि, गुरवोनामाक्षरंध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ स-वईया ॥ बावन वीर किये अपणे वश, चौसठ योगण पाय ल-गाई ॥ माइण साइण व्यंतर खेचर, नूतप्रेत पिशाच पुलाई ॥ बीज तरुक्क करुक्क नटक्क, अटक्क रहे जु खटक्क न काई ॥ कहे प्र-मलीह लंघे कुण लीह, दीयै जिनदत्तकी एक डुहाई ॥ १ ॥ इति। राजै शुंन्न गौरगौर, एसो देव नही और ॥ दादौ दादौ नामसें, ज गत्र जश गायो हे ॥ आपणेंही न्नाव आय, पूजै लख लोक पाय ध्यासनकूं रांनमांकि, पाणी आन प्रायो हे ॥ वाट घाट शत्रु हे

हाट पुर पाटणमें ॥ देह गेह नेहसें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसी-ह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करै, साचों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम युं कहायो हे ॥ १ ॥ कुशल अंग नवरंग, कुशल वणिजै व्यापारै, कुशल देव देहरे, कुशल धन राजडुवारे ॥ पुन्य पसाये कुशल कुशल श्रीसंघ भणीजे, वाहण आवे कुशल कुशल घर२ गाईजे ॥ जिन-चंद्र सूरि पुह पट्टधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वस्यो संसार कुशल सज्जन घर चाहे, कुशले मङ्गल माल लच्छि घर कुशले आवै ॥ कुशलै घन वरसंत कुशल धन धन्नरुवन्नो, कुशलै घोर्मा भट्ट कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ एरसो नाम सदगुरुतणो कुशलै जग रलियामणो, भट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर२ होय वधामणों ॥ १ ॥

---

# रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



॥ देववांदणेमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके
प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥



॥ थुई संग्रह ॥

॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥



॥ अथ छुटकर चैत्यवंदन ॥

॥ अथ सिझायसंग्रह माला ॥

॥ पूजा प्रारंभ ॥

॥ अथ सर्व तपस्या विधि ॥



॥ अथ द्वादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

॥ होली स्तवन संग्रह ४७ ॥

॥ अथ तपगच्छ सामाचारी ॥

करै. जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामका २००० गुणना करै, सो लिखते है ॥ १ श्रीरुषभाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ( यह ) च्यार नामकूं ४ वेर उलटा, ४ वेर सुलटा गिणे ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणेसें एक ऊली होय. ४ ऊली करणेसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीछे शक्ति मुजब ऊजमणा करै. नंदीश्वरद्वीपका मंरूल वणावै, पूजा करावे. इत्यादि महोछव करके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साहमीवछल करै, मंरूलकी विधि एकेक दिसीमें (१३) तेरे२ पहारुकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसामें च्यार श्वेतपर्वत, दोय२ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय२ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमे १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे. इनकी पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे. क्रमसें एकेक काव्य पढके जल चंदनादि अष्ट द्रव्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे॥इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महीनेमें मिती वैसाख सुदि ३ है सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरुषभदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीछें बारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती भया. उस वखत उत्तम दानके प्रभावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साढीबारे कोडि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान२ एसी उदघोषणा ४, देवदुंदुभी वाजित्र ५, एसे पांच द्रव्य प्रगट किये. श्रेयांसकुमरका जस तीन भुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबकों मालम हुई. इस दानके प्रभावसें श्रेयांसकुमार अक्षयसुखकों प्राप्त भया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी हे. इस पर्वके आणेसें वस्त्र आभूषण पहरके भगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसें पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह भेदी, आदि पूजा करावै. पीछै गुरुके मुखसें एकासणादिकेक पच्चरकाण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरूको वहिरायके सब कुटंब समेत जीमें, उर जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वकों जो भव्यजीव सेवन करते रहेंगे उणोका तपतेज हमेसां वढता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ट मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ट कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन हे इस वास्ते इस उत्तम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने२ घरमें छांटे. इस शांतिपूजाके कराणेसें मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कभी श्रीसंघमें प्राप्त न होय (अथवा) किसी श्रावकके घरमें रोग चालता रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. (इससें) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीडा सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ट मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे सो लि० हे.॥ यथा॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्च्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, भव्याश्चतुर्मासकमंडनानि ॥१॥ (अर्थ) भोभव्याएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥

सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥
विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥
सरस्वती मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥
हंस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरें सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा ।
रागे आए लागे पाए जागे मोटी माईहे ॥
चंगी रंगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।
हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकूं गाईहे ॥
हंसी केसी चाली चाले पूजी वंदी पीडा टाले ।
लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥
सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।
एसी माता शाता दानी धर्मसीहें घ्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

॥ व्यंजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । क्ष । ज्ञ ॥ क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ कृ गृ तृ दृ पृ नृ वृ मृ गृ सृ हृ ॥ क्य ख्य ग्य घ्य ङ्य छ्य ज्य ट्य ठ्य ड्य ण्य त्य द्य ध्य न्य प्य ञ्य म्य य्य ल्य श्य ष्य स्य ह्य क्ष्य ॥ क्र ग्र व्र ज्र त्र द्र प्र ब्र म्र व्र श्र स्र ह्र ॥ क्व ग्व ण्व त्व द्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्व ॥ क्न ग्न घ्न त्न प्न म्न श्न ष्ण स्न क्ष्ण ॥ क्म ग्म ध्म ङ्म ण्म द्म न्म श्म ष्म स्म ह्ल ह्म । र्क र्ख र्ग र्घ ॥ क्क ख्क ग्ग ग्घ ङ्क । च्च छ्छ ज्ज ज्झ ञ्ञ

ट्ट ठ ड्ड ड्ढ स्स त्त त्थ ब्ज द्द द्ध न्न ॥ प्प प्फ ब्ब ब्भ म्म य्य र ल्ल व्व श्श ष्ष स्स ॥ ञ्य स्न्य ष्ट्र ॥ १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । १ । १००००० ॥ १०००० ॥ १००००० ॥ १०००००० ॥

स्वस्तिश्री कृष्णवृक्षस्था । पिंवद्राह्वास्युश्च स्वस्करा ॥
पृथ्वीशृद्धलुश्रेष्टात्म । त्रम्यास्तेहृद्यज्ञसिदा ॥

॥ अथ शिक्षावाक्य ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा ॥
अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥
विद्वत्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्यं कदाचन ॥
स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥
पंडितेच गुणा सर्वे । मूर्खे दोषा हि केवलं ॥
तस्मात्मूर्ख सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥
नक्षत्रभूषणं चंद्रो । नारीणां भूषणं पतिः ॥
पृथिव्या भूषणं राजा । विद्या सर्वस्य भूषणं ॥ ४ ॥
माता शत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः ॥
न शोभते सभामध्ये । हंसमध्ये बको यथा ॥ ५ ॥
लालयेत्पंचवर्षाणि । दशवर्षाणि ताडयेत् ॥
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे । पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ ६ ॥
वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्खशतान्यपि ॥
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति । न च तारागणोपि च ॥७ ॥
अविद्यं जीवितं शून्यं । दिशःशून्यास्त्वबांधवा ॥
पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वशून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥
न च विद्या समोबंधु । न च व्याधिसमो रिपुः ॥
न चापत्यसमः स्नेहो ॥ न च दैवात्परंबलं ॥ ९ ॥
किं तया क्रियते धेन्वा । यानसूतेनदुग्धदा ॥

कोऽर्थःपुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १० ॥
उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न शांतये॥
पयःपानभूजंगानां । केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥
मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥
आत्मवत्सर्वभूतानि । विक्षंते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमाना तेषांद्वाद्वावन्योऽन्यस्यसवर्णौ पूर्वोह्रस्वः परोदीर्घः स्वरोवर्णः वर्जोनामी एकारादीनिसंध्यक्षराणि कादीनिव्यंजनानि तेवर्गापंचपंच वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शषसश्चघोषाः घोषवंतोऽन्ये अनुनासिकाः ङञणनमाः अनतस्थाः यरलवाः ऊष्माणः शषसहाः अःइतिविसर्जनीयः कःइतिजिह्वामूलीयः पःइत्युपध्मानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्वपरयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरंव्यंजनं परंवर्णनयेत् अनतिक्रमयन्विश्लेषयेत् लोकोपचारात्ग्रहणसिद्धिः इतिसंधौसूत्रतः प्रथमश्चरणसमाप्तः ॥

## ॥ हितोपदेशः ॥

अर्हतोभगवंतइंद्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । रत्नत्रयाराधकाः ॥
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं। कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलंकुर्वंतु) यहजो पंचपरमेष्टिपदहे सो हमेसां तुमभव्यजीवोंकूं मंगलकरो. केसेकहे पंचपरमेष्ठि (अर्हंतोभगवंतइंद्रमहिता) प्रथम परमेष्टि श्री अरिहंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोकों हणे सो अरिहंत कहीजे. फेर श्री अरिहंत केसेंहे, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तहे फेर अरिहंतमाहाराज केसेकहे भगवंतहैं भगशब्दके अनेकार्थ कोपमें चौदे

अर्थहे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६ रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसें दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२ अर्थ अरिहंत भगवंतमेंहे एकतों सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो टालकै फेर श्री अरिहंत भगवंत केसेंकहैं (इंद्रसहिता) चोसठ इंद्रोंसें पूजनीक बारेगुणोसें विराजमानहै सो बारे गुण एसेहैं प्रथमतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहे रोग और पसीना और मैलरहित बन्दा खसबोदार सरीर होताहे १ सासोश्वासमें कमलके फूल जेसी खसबो होतीहे २ लोही और मांस गऊके दुध जेसा स्वेत होताहे ३ आहार नीहारकी विधि अदृस्य होतीहे अर्थात् चर्म चक्षुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह च्यार अतिशयगुण जन्मसेंही होताहे और बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न भये बाद होताहे अशोकवृक्ष १ भगवानके सरीरसें बारेगुणा ऊंचा होताहे जिसकी छाया बेठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहे १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोंके समूह गोडे पर्यंत पंचरंगेफूलोंकी वरसात करे आकाससे गिरते सीधे गिरे । वींट नीचा रहे पांखडी ऊपर रहे २ । ( दिव्यध्वनि ) एक योजन तक देवता मनुष्य तिर्यंच सब जीव अपणी२ भाषामें यथावस्थित समझै एसा उनोंकों मालम देवेके भगवान हमारी बोलीमेंही उपदेश दे रहेहें सोही वात सिद्धांतोंमें कहाभीहे ॥ गाथा ॥ एगाइंगिराणेगे । संदेहदेहियांसमंछित्ता ॥ तिहुअणमणुंसासंता । अरिहंताइंतिमेसरणं १ । ३ ॥ चामर ४ भगवानके दोनों तरफ इंद्र चम्मर ढोलता रहै ४ ॥ आसनञ्च ५ भगवंतके बैठणेकूं इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासण रहै ५ ॥ भामंडलं ६ भगवानके पिछाडी भामंडल रहे जिससें भव्यजीव भगवानके तरफ देखसके भगवंतके च्यारमुख च्यारुंदिसामें दीखाईदेवे भगवान पूर्वदिशामें मुख करके बैठे और तीन दिसामें भगवंतकी प्र-

तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन् भगवानके अतिशयसैं च्यारोंहीदिसामैं बारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेज्ञये दिखाइदेवे ६ ॥ डुंडुन्नी ७ आकाशमैं देव ते देवडुंडुन्नीवाजित्र बजावे ७ ॥ ठातपत्रं ७ न्नगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन ठत्र रहै ७ ॥ यह आठगुण देवतौंके किये होतेहे एसे अरिहंत देवाधिदेव चोतीस अतिशय विराजमान पैंतीस वचनगुण सोन्नित एक हजार आठ लक्षणालंकृत अठारे दूषणरहित शांत दांत कृपासागर त्रैलोक्यनाथ तीन जगत्के गुरु वर्त्तमान कालमैं महाविदेह क्षेत्रमें केवलज्ञान केवलदर्शनसैं लोकालोकका न्नाव देखतेज्ञये पृथ्वीमंमलपर न्नव्यजीवोंके मनोरथ पूरणथके विचरतेहें एसे अनंत गुणसैं विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमैं सदा मंगल करो १ ॥ ( सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता ) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार हुउ केसेकहें श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्ठकों शुक्लध्यानरूप अग्निसैं न्नस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तन्नये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक न्नयादिकसैं रहित चवदे राजलोकमैं सब जीवोके मनोगतभाव एकसमयमें जाणते उर देखतेथके लेकिन् आत्मगुणोंमे मग्न रहेन्नये एसे श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमैं सदा मंगल करो ॥ २ ॥ ( आचार्याजिनशासनोन्नतिकरा ) तीसरे पदमैं श्रीआचार्यमहाराजकूं नमस्कार हुउ केसेकहे श्रीआचार्यमाहाराज ठत्तीसगुणोंसैं विराजमान मुक्तिमार्गके साधक कर्मशत्रूकेविराधक पंचाचारपालक अबुधजीवप्रतिबोधक क्षमागुणन्नंमार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिनशासनके उन्नतिके करणेवाले एसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ३ ॥ ( पूज्याउपाध्यायका श्रीसिद्धांतसुपाठका ) चोथे परमेष्ठिपदमैं श्रीउपाध्यायमहाराजकूं नमस्कार हुउ केसेकहें श्रीउपाध्यायमहाराज द्वादशांगी सूत्रार्थके जा-

णकार नयनिक्षेपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतकेपढाणेवाले २५ गुणोंसें विराजमान एसे श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ४ ॥ ( मुनिवराःरत्नत्रयाराधकाः ) पंचम परमेष्टिपदमें सरब साधूमुनिराजजी केसेकहें श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ इन तीन रत्नोंकें आराधक पांचे सुमतेसमता तीने गुप्तेगुप्ता छकायके पीहर कुरकीसंबल चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक एसे सब साधूमुनिराज सत्ताईस गुणोंसें सोभित श्रीसंघमें सदा मंगल करो ५ ॥ इति हितोपदेश दोनोंके कल्याणार्थे ॥

## ॥ अथत्रिजिननाम ॥

### ॥ अतीतचोवीसी ॥

| | |
|---|---|
| १ श्रीकेवलज्ञानीजी | २ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥ |
| ३ श्रीसागरजी | ४ श्रीमहायसजी |
| ५ श्रीविमलदेवजी | ६ श्रीसर्व्वानुभूतिजी |
| ७ श्रीश्रीधरजी | ८ श्रीदत्तस्वामीजी |
| ९ श्रीदामोदरजी | १० श्रीसुतेजनाथजी |
| ११ श्रीस्वामीजी | १२ श्रीमुनिसुव्रतजी |
| १३ श्रीसुमतिनाथजी | १४ श्रीशिवगतिजी |
| १५ श्रीअस्तागजी | १६ श्रीनमिश्वरजी |
| १७ श्रीअनिलनाथजी | १८ श्रीयशोधरजी |
| १९ श्रीकृतार्थजी | २० श्रीजिनेश्वरजी |
| २१ श्रीशुद्धमतीजी | २२ श्रीशिवकरजी |
| २३ श्रीस्यन्दनजी | २४ श्रीसंप्रतिस्वामीजी |

### ॥ वर्त्तमानचोवीसी ॥

| | |
|---|---|
| १ श्रीऋषभदेवजी | २ श्रीअजितनाथजी |
| ३ श्रीसंभवनाथजी | ४ श्रीअभिनंदनजी |
| ५ श्रीसुमतिनाथजी | ६ श्रीपद्मप्रभूजी |

| | |
|---|---|
| ७ श्रीसुपार्श्वनाथजी | ८ श्रीचंद्राप्रभूजी |
| ९ श्रीसुविधनाथजी | १० श्रीशीतलनाथजी |
| ११ श्रीश्रेयांसजी | १२ श्रीवासुपूज्यजी |
| १३ श्रीविमलनाथजी | १४ श्रीअनंतनाथजी |
| १५ श्रीधर्मनाथजी | १६ श्रीशांतिनाथजी |
| १७ श्रीकुंथुनाथजी | १८ श्रीअरनाथजी |
| १९ श्रीमल्लिनाथजी | २० श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजी |
| २१ श्रीनमिनाथजी | २२ श्रीनेमनाथजी |
| २३ श्रीपार्श्वनाथजी | २४ श्रीमहावीरस्वामीजी |

अनागतचोवीसी ॥

| | |
|---|---|
| १ श्रीपद्मनाभजी | २ श्रीसूरदेवजी |
| ३ श्रीसुपार्श्वजी | ४ श्रीस्वयंप्रभुजी |
| ५ श्रीसर्व्वानुभूतिजी | ६ श्रीदेवश्रुतजी |
| ७ श्रीउदयप्रभुजी | ८ श्रीपेढालजी |
| ९ श्रीपोट्टिलप्रभूजी | १० श्रीशतकीर्त्तिदेवजी |
| ११ श्रीसूव्रतनाथजी | १२ श्रीअममनाथजी |
| १३ श्रीनिष्कषायदेवजी | १४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी |
| १५ श्रीनिर्ममनाथजी | १६ श्रीचित्रगुप्तनाथजी |
| १७ श्रीसमाधिनाथजी | १८ श्रीसंबरनाथजी |
| १९ श्रीयसोधरजी | २० श्रीविजयनाथजी |
| २१ श्रीमल्लिप्रभूजी | २२ श्रीदेवप्रभूजी |
| २३ श्रीअनन्तप्रभूजी | २४ श्रीभद्रंकरजी |

॥ वीसविहरमाननामानि ॥

| | |
|---|---|
| १ श्रीसिमंधरजी | २ श्रीयुगमंधरजी |
| ३ श्रीबाहूजी | ४ श्रीसुबाहूजी |
| ५ श्रीसुजातजी | ६ श्रीस्वयंप्रभूजी |

७ श्रीऋषभाननजी | ८ श्रीअनन्तवीर्यजी
ए श्रीसूरप्रभूजी | १० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी | १२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रबाहजी | १४ श्रीभुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रभजी | १६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी | १८ श्रीमहाभद्रजी
१ए श्रीदेवयशजी | २० श्रीअजितवीर्यजी

॥ च्यारसाश्वतातीर्थंकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी | २ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिषेणजी | ४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव भवंति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी | २ चंदनबालाजी
३ श्रीराजीमतीजी | ४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी | ६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी | ८ श्रीशीताजी
ए श्रीसुभद्राजी | १० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी | १२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीदवदंतीजी | १४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रभावतीजी | १६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि वडी२ सतियोंकों त्रिकाल२ वंदना ॥

॥ ॐपरमेष्ठिने नमः ॥

॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

# ॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

## ॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं ॥३॥ णमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन वेर गुण कें थापनाजीकी थापना करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्दहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ पलावुं ॥ २ ॥ अनुमोदुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥ ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीछें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खडा हो कें तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृछा ॥

॥ इछकार भगवन् सुहराइ, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निरा बाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोछोजी? स्वामी शाता छेजी? इति ॥ ॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे देवगुरु प्रसाद ॥

॥ पीछैं नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अमुहि डमि कहे पीछैं खमासमण देकें इछाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायिक लेवा मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे, पडिलेह. पीछैं इछं कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सद्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनी ॥३॥ मिश्र मोहनी ॥४॥ परिहरुं. यह चार बोल मुहपत्ती खोलती बिरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ ॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पडिलेहण डावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्रविराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंड ॥ १ ॥ वचनदंड ॥ २ ॥ कायदंड ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पडिलेहण जिमणे हाथसें करणी ॥ यह पच्चीश बोल मुहपत्तीके जाननें ॥

॥ अब अंगकी पच्चीश पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या ॥ ३ ॥ ए तीनुं नीलाडे मस्तकें परिहरुं ॥

॥ ऋद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शाता गारव ॥३॥ ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशल्य ॥ १ ॥ नियाणाशल्य ॥ २ ॥ मिछादंसणं-शल्य ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंन्ने परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोन्न ॥ २ ॥ ए दोय मावे खंन्ने परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन मावे हाथे परिहरुं ॥

॥ न्नय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंछा ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे हाथे परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ ए तीन मावे पगे परिहरुं ॥

॥ वाउकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥३॥ ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुहपत्ति पमिलेहणा संपूर्ण ॥५॥

॥ पीछें खमा दोय कें इछामि खमासमणका पाठ कहे कें इछाकारेण संदिस्सह न्नगवन् ॥ सामायिक संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इछं कहे कें फेर खमासमण दे कें इछा० ॥ न्न० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥

॥ पीछें इछं कही खमासमण देइ थोमो जुकी तीन नव-कार गणी इछाकारेण संदिस्सह न्नगवन् पसाउ करी सामायिक दंमक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि न्नंते सामाइयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पच्चख्खाण ॥

॥ करेमि न्नंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चख्खामि ॥ जाव नियमं पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं,

न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीछैं खमासमण दे कैं इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि॥ गुरु कहे पडिक्कमह. पीछैं इच्छं कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं॥

## ॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ॥ इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥ उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्दविया ठाणाउ ठाणं संकामिया जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥ इति ॥

## ॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायच्छित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ णिग्घायणट्ठाए ॥ ठामि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥

## ॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

॥ अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अभग्गो अविराहिउ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ९ ॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोगस्सको काउस्सग्ग

करे. पीछें णमो अरिहंताणं कहे कें काउस्सग्ग पारकें मुखसें प्रगट लोगस्स कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसज्ञ मजिअं च वंदे ॥ संज्ञव मज्ञिणं दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासु पुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ नेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अज्ञिथुआ ॥ विहुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थय रामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिअ महिया ॥ जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाज्ञं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६॥ चंदेसु निम्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंज्ञीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सवलोए० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीछें खमासमण देइ इच्छा० ॥ ज्ञगवन् बेसणो संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इछं कहे कें वली खमासमण दे कर ॥ इछा० ॥ ज्ञगवन् बेसणो ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इछं कहे कें खमासमण दे कर इछा० ॥ ज्ञ० ॥ सिज्झाय संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इछं कहे के वली खमासमण दे कर इछा० ॥ ज्ञग० ॥ सिज्झाय करुं? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे कें इछा खमे हो कर आठ नवकार कह कर सज्झाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे तो खमासमण दे कें इछा० ॥ ज्ञ० ॥ पांगरणो संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इछं कह कर खमासमण दे कर इछा० ॥ ज्ञ० ॥ पांगरणो पडिग्गाउं? गुरु कहे पडिग्गाएह ॥ पीछें इछं क

ही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोसासहित श्रावक वांदे तो "वंदामो" एसो कहे. और जो कोई दूसरो वांदे तो, सि ध्याय करेह, एसें कहे ॥ इति प्राभातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछैं इछं कही जयउ सामि जयउ सामि इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थंकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेत्तुंजि उज्जिंति ॥ ॥ पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंमण ॥ १ ॥ भरुअच्छेह मुणिसुव्वय, महुरिपास छुह डुरिय खंमण ॥ अवरविदेहिज तित्थ-यर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंदुं जिण सव्वेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढम संघयणि ॥ उक्कोसउ सत्त-रिसउ, जिणवराण विहरंत लब्भई ॥ नवकोमीहिं केवलिण, कोमि सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोमीहिं वरनाण ॥ समणह कोमी सहस्स डुई, थुणिज्जइ निच्च विहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लख्खा छप्पन्न अठ कोमीउ ॥ चउ-सय गयासीया, तिल्लुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोमि सयं, पणवीसं कोमि लख तेवन्ना ॥ अठावीस सहस्सा, चउसय अठा-सिया पमिमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तित्थं ॥ सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥ जाइं जिणबिंबाइं ॥ ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, ति-

ज्ञगराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंमरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अन्नयदयाणं, चख्खुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, वोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिहय वरनाण दंसण धराणं, विअट्ट उउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सवन्नूणं सवदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मख्खय मवाबाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ न्नयाणं ॥ ए ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ न्नविस्संति णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सवे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उढ्ढे अ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सवाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तञ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ न्नगवन् जावंत केवि साहू ॥ न्नरहेरवय महाविदेहे अ ॥ सवेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिदंम विरयाणं ॥१॥ इति ॥१५॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुन्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ डुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठ्ठउ दूरे मंतो ॥ तुझ पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न डुख्ख दोहग्गं ॥

॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ॥ पावंति विग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुउ महायस ॥ भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं ॥ भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह पभावउ भयवं॥ भवनिव्वेउ मग्गा, णुसारिआ इट्ठ फलसिद्धी॥ १ ॥ लोगविरुद्धचा उ ॥ गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोतव्वय, ण सेवणा आभव मखंडा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीछैं खमासमण दे कें इच्छा० ॥ भ० ॥ कुसुमिणदुसुमिण राई पाय छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं? गुरु कहे करेह पीछैं इच्छं कह कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायछित विसोहणत्थं करेमि काउ स्सग्गं ॥ अन्नत्थ ऊससिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे कें सोले नव कार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर कें काउस्सग्ग करे ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कह कर काउ स्सग्ग पारीकें मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्सग्गमांहे ॥ सागर वरगंभीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अब पडिक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासम ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि कें वांदियें ॥ १ ॥ खमासमण देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिये ॥ २ ॥ खमासमण देइ जंगम युगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले कें वां दीयें ॥ ३ ॥ खमासमण देइ कें सर्व साधुजीकुं वांदियें ॥ ४ ॥ इस तरे चार खमासमणसें पडिक्कमणां ठावी गोडादीयें बैठ कें मस्त क नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मुहडे दे कर ॥ सव्वस्सविराइय

॥ इत्यादि पाठ कहे. परंतु इच्छाकारेणसंदिस्सह इच्छं इस माफक न कहे ॥

॥ अथ सवस्सवि ॥

॥ सवस्सवि देवसिअ डुचिंतिअ डुप्नासिय दुच्चिठिअ इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् इछं० ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ १८ ॥ सबेरका देवसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीछैं नमुत्थुणं कह कें खमा होय कें ॥ करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीछैं इच्छामि काउस्सग्गं जो मे राइउ० ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं ॥

॥ अथ इच्छामिठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइआरो कउ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ डुज्जाउ ॥ दुविचिंतिउ अणायारो ॥ अणिच्छिअवो ॥ असावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं गुणव्वयाणं ॥ चउन्हं सिक्खावयाणं ॥ बारसवियस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंडिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ इति ॥ इहां देवसियंके ठिकानें राइयं कहेनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीछैं तस्सउत्तरी० ॥ अन्नत्थ ऊससिएणं कह कर चारित्रशुद्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें दर्शन शुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वढमाणी ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीछैं अन्नछ० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्सका उस्सग्ग करकें पारकें ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुस्करवरदी० ॥ यस्स जगवउ करेमि काउस्सग्गं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पुस्करवरदी ॥

॥ पुस्करवरदीवढे, धायइसंमे अ जंबुदीवेअ ॥ जरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपमलविद्धं, सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोमिअ मोहजाल स्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्स, कल्लाण पुस्कलवि सालसुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार मुवलप्न करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेजो पयउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सप्नूअ जावच्चिए ॥ लोगो जड पइछिउ जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वढउ सा सउ विजयउ, धम्मुत्तरं वढउ ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्स ज गवउ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर अन्नबूससिएणं कह कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउ स्सग्ग करे. काउस्सग्गके मांहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे. सो आ गें लिखेंगे. पीछैं सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु- वगयाणं, नमो सया सवसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ सं सारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंत सेल सिहरे,

दिरका नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउवीसं ॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥२१॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मदिठि समाहिगराणं ॥ इति ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नठ० ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ पीछैं संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र वादणां निमित्तें मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेह ॥ मुहपत्ती पमिलेहे. पीछैं वांदणां दे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उन्ना हुआ आधा नीचा नम कर इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं. इतना पाठ कह कर नूमि प्रमार्जन करता हुआ निसीहि कह कें कछुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संमासा प्रमार्जन कर कें उक्कम बेठ के माबे हाथमें मुहपत्ती ले कें माबे कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निलाम पूंजी, मुहपत्ती आगें रख कें तिसके मध्य नागमें गुरुचरणकी कल्पना कर कें ॥ अहो कायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कछुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो ने किलामो ॥ इत्यादि पाठ कहे. पीछैं फेर ॥ जत्ता ने ॥ इत्यादि आवर्तन कर कैं खमा होकें पीछैं पगसें नूमि पूंजता हूआ अवग्रहसें बाहिर निकलकें स्वस्थान पर आवे. उहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इछामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो ने किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु सुनेण ने, दिवसो

वइक्कंतो जत्ता जे जवणिज्जं च जे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए, पमिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिछाए, मण- , वयदुक्कमाए कायदुक्कमाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोजाए, सबकालिआए, सब मिछोवयाराए, सबधम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कउ, तस्स खमासमणो पमिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइउ वइक्कंतो, तथा चउमासीयें चउमासीउ वइक्कंतो, पक्कीयें पक्को वइक्कंतो, संवछरीयेसंवछरीउ वइक्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह जगवन् देवसियं आलोउं इछं ॥ आलोएमि, जो मे० ॥ इति ॥ २५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीछें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक्ष आलोवे, सो कहेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइंद्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें, माहारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें जलो जाण्यो होय, ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिछा मि दुक्कमं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥३॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ए ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥१५॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्यें भलां जाएयां होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छा मि छुक्कमं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादानोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय. और जो कोई पाप पर निंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायायें करकें, दिवस अतिचार आलोयणे कर कें पमिक्कमणामे आलोउं ॥ तस्स मिच्छा मि छुक्कमं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रभातके पमिक्कमणेमें दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेनां ॥ इति ॥ २८ ॥

॥ पीछें सव्वस्सवि राइयं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां इच्छाका० ॥ भ० ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रायश्चित मागे ॥ गुरु कहे पमिक्कमह ॥ पीछें इच्छं तस्स मिच्छामि छुक्कमं कह कें संमासा प्रमार्जन कर कें आसन पर बैठे कें जिमणा गोमा ऊंचा रख कें मावा गोमा नीचें कर कें ऐसें कहे कि भगवन्! सूत्र भणुं? तव गुरु कहे भणेह ॥ पीछें इच्छं कहि कें तीन नवकार अरु तीन वार करेमि भंते ॥ भण कें इच्छामि पमिक्कमिउं जो मे राइउ इत्यादि कह कर ॥ तं निंदे तंच गरिहामि

ये. वंदिता सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥ पीछैं खमा हो कें अप्नुठि
म्मि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदित्तु सव्व सिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ॥ इच्छामि
डिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,
े तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे
ं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे
आरंभे ॥ कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देवसियं सव्वं ॥ ३ ॥
ं बइमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसेण
, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चं·
े अणाभोगे ॥अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ संका
१ विगिंछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इआरे,
डिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा
॥ अत्तठाय परठा, उभयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्व-
याणं, गुणव्वयाणं च तिण्ह मइयारे ॥ सिक्खाणं च चउण्हं, पडि-
क्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥
आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविछेए,
२ भारे भत्त पाण वुच्छेए ॥ पढमं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥
१० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथुलगअलिअ वयण विरईउ ॥ आया-
रिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे,
मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीयं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥
१२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईउ ॥ आयरिअ
मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे
विरुद्ध गमणे अ ॥ कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउत्थे
अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण विरइउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ
पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व

अणुरागे ॥ चउत्थे वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमंमि आयरिअ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥ दुपए चउप्पयंमि, पडिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परिमाणे, दिसासु उट्ठं अहेअ तिरिअं च ॥ वुड्ढिसइअंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ॥ उवभोग परिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चिते पडिबद्धे ॥ अपोल दुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लख रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लणं, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥ सरदह तलाव सोसं, असईं पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसल जंतग, तण कट्ठे मंत मूल भेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पडिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणु वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूव रसगंधे ॥ वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइरित्ते ॥ दंडंमि अणट्ठाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ विहुणे, ॥ सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलखेवे ॥ देसावगा सियंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथा रुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चिते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सअ दुहिए सुअ, जामे असंजएस अणुकंपा ॥ रागेणव दोसणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंस पउगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मझ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सवस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिरकागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठि जीवो, जइ विहुपावं समायरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ, वाहिव सुसिरिकउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठगयं, मंत मल विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ भरुव भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥ डुरकाण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, नयसंभरिआ पडिक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥ अब्भुट्ठिउमि आरा, हणाए विरउमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय पाव पणासणीइ, भवसयसहस्स महणीए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मद्दिठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पडिक्कमणे ॥ असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव जीवे, सवे जीवा खमंतु मे ॥ मित्तीमे सव भूएसु, वेरं

मज्झं न केणइ ॥ ४९ ॥ एव मइं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगं-छिअं सम्मं ॥ तिविहेण पमिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५० ॥ इति ॥२५॥ इहां प्रन्नातके पमिक्कमणमें देवसिके ठीकाने राइयं कहना ॥

॥ पीछें दो वादणां देकर अवग्रहमांहियकोज कहे ॥ इछा-का० ॥ सं० ॥ न० ॥ अप्नुछिउमि अप्निंतर ॥ राइयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह ॥ संमासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बेठ के, बे बांह पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अप्नुछि ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह नगवन् अप्नुछिउमि अप्निंतर देव-सिअं खामेउं ॥ इछं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं नत्ते पाणे विणए वेआवचे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर नासाए उवरिनासाए ॥ जं किंचि ॥ मज्जविणय परिहीणं सुहु-मंवा बायरं वा ॥ तुप्ने जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिछामि डुक्कमं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिछामि डुक्कमं कहे. पीछें बे वांदणां देई नूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसें अवग्रह बाहिर आय कें आय-रिय उवज्झाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

॥ आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहम्मीए कुलगणे अ ॥ जें मे कया कसाया, सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण संघस्स, नगवउ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सवं खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सवस्स जीवरासिस्स, नावउ धम्मो निहिअ निअ चित्तो ॥ सवं खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीछैं करेमि भंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरी० ॥ श्रीमहावीर स्वामी छमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें काउस्सग्ग करे, काउस्सग्गमें श्रीवीरकृत छम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा छ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेही बे वांदणां देई सकल तीर्थनाम लइ नमस्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने, व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते, वक्कारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिछले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौंड्रे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविडकवलये

कान्यकुब्जेसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुख्या गजपुरमथुरापत्तने चोज्जयिन्यां, कौशांब्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे जद्दिले ताम्रलिप्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ "श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे, चौज्जन्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौंडले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवंति त्रिभुवनवलये यानि चैत्यालयानि" ॥ ए ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं भक्तिभाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥ इति ॥ ३१ ॥

पीछें गुरुमुखें पच्चरकाण करि कें ॥ इच्छामोनि सट्ठियं कहि कें गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीछेंणमो खमासमणाणं णमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कह कर. परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, भवसागर वारि तरण वरतरणिं ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार विहारकारि, दुरन्तभावारिगणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, भवावहं मोहभरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलभरलोभालीढलोलालिमाला, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलभविकारागार

ल्लतिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥ रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ न्ना-म सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ ूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि न ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहिंसा-वरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं, वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे॥ ३॥ आमूला लोलधूली बहुल रिमला लीढलोलालिमाला. झंकारा रावसारा मलदलकमलागार-ीनिवासे ॥ गयासंभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे, वा-ोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा भणी, शक्रस्तव कहे. पीछें-खमा हो अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआए० अन्नत्थू० । इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक गाथा स्तुति , सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम, ील वरण सुखकंद ॥ अहि लंछण सेवित, पउमावइ धरणिंद ॥ ऊठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक कहे ॥ दूसरे सब काउस्सग्गमांहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीछें अरिहंताणं कहि कें काउस्सग्ग पारे ॥ इस तरे आगें पण ॥ पीछें लोगस्स कहे ॥ सव्वलोए अरिहंत चेइआणं वंदण-

वत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयड्ढइ, कणयाचल अभिराम ॥ मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंडल सुखधाम ॥ भुवणेसुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्त्ते ते जिणवर, पूरो मुझ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीछैं पुक्खरवदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगवओ० वंदण० अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग पारि कें ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, बार उपंग छ भेद ॥ दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउभेद ॥ जिन आगम षड्द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त ॥ सांभलि सर्द्दहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीछैं सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ कह कें वेयावच्चगराणं० ॥ अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें णमोऽर्हत्सिद्धा० कह कें चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पउमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट, दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनभक्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख सुजस समापो, पुत्त कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीछैं नीचा बैठ कें णमोत्थूणं० कहि कें ॥ तीन खमासमणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांदे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें मुहपत्ती देई अड्ढाइज्जेसु कहे हैं, सो लखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अड्ढाइज्जेसु ॥

॥ अड्ढाइज्जेसु ॥ दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्मभूमीसु ॥ जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा॥ अढारसहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायारचरित्ता ॥ ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीछें स्थिरता हुवे तो खमासमण तीन बखत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ चैत्यवंदन करुं जी. यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय जय करुणा शांत दांत, भवि जनहितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद वृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥ त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किंचिनाम तिछं० ॥ नमोत्थूणं० जावंति चेइआ० जावंत केवि साहू० ॥ उंर णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ तक कहि के सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतभी अवधार लाल रे ॥ परम पुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ केवल ज्ञान दिवाकरु, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोम लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूंता इक कोम लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर वसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आशरो, भव भव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उधारण हो तुम्हें, दूर हरो भव दुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करी, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ पीछें जयवीयराय० वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थू० कहि

कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करे ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक थुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंरूणं पुसलोवन्न देहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महाणंदलच्छी बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंधरं तिजरायं ॥ १ ॥ इम होज थिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाभि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंरूण ॥ जय जय प्रथम जिणंद चंद, नव डुःख विहंरूण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद, वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिषन्न जिणेसर ॥ अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुऊ पद पंकज प्रीति धर, निशिदिन नमत कल्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिज्जं० ॥ णमोत्थुणं ॥ जावंति चेइआई० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुन्यः तक कहि कें श्री सिद्धाचलजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि न्नेट्यां रे ॥ धन्य न्नाग्य हमारां ॥ विमलाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोटो, कहेतां न आवे पारा ॥ रायण रूख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट द्रव्यसें पूजो न्नावें, समकित मूल आधारारें ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर देशथी हुं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धारण बिरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ न्नाव न्नक्तिसें प्रन्नू गुण गावे, अपना जन्म सधारा ॥ जात्रा करि न्नविजन शुन्न न्नावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ संवत अढारे त्र्यासी मास आषाढे, वदि आठम न्नोमवारा ॥

प्रभुके चरण परतापसिंहमें, क्षमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥५॥

॥ पीछें जयवीयराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहिकें एक नवकारका काउस्सग्ग करी ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, ऋषभदेव पुंडरीक ॥ शुभ तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरबीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिशुं चैत्यवंदनीक ॥ करियें जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ इति ॥ ४१ ॥ पीछें फुरसद होवे तो पडिलेहण करे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ पडिलेहण संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्साएह ॥ बीजे खमासमणें ॥ ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणे अंग पडिलेहण संदिस्साउं ॥ अंगपडिलेहण करुं, कहीके धोतियुं कणदोरो पडिलेहि कें ॥ खमासमण देई इच्छाकार भगवन् पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी. एम कही ॥ थापनाचार्य पडिलेह रक्खे, अने जो गुर्वादिक थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई आग्या मागे, पीछें खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उवहि पडिलेहण संदिस्साउं ॥ उवही पडिलेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पडिलेहे ॥ पीछें पोषधशाला प्रमार्जी काजो, विधिशुं परठवी खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोभी दृष्टिपडिलेहण तो अवश्य करणी ॥ अबभी प्राये एही करते दिखते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीछें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पडिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायवो, पीछें यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे. इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आयारो न मोत्तवो ॥ पीछें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊभो थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोडालीयें बेसी मस्तक नमावो ॥ भयवं दसणभद्दो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दसणभद्दो ॥

॥ भयवं दसण भद्दो, सुदंसणो थूलिभद्द वयरोय ॥ सफली कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाण माईणं ॥ २ ॥ छउमछो मूढमणो, कित्तिय मित्तंपि संभरइ जीवो ॥ जं च न संभरामि अहं, मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं वायाइ भासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधवो, सेसो संसार फलहेऊ ॥५॥ सामायिक विधें लीधुं विधें कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमांहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन कर, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीछें पडिलेहण करे. इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूछे ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें एसें कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिछले पहोरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पडिलेहे. जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपडिलेहण करे ॥ पीछें गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी भूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥ पीछें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक संदिस्साउं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार भगवन् ! पसाउ करी सामायिक दंडक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि भंते सामाइयं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुभाषण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ? गुरु कहे पडिक्कमेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसें इरियावहियं पडिक्कमी ॥ एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी, णमो अरिहंताणं कही, काउस्सग्ग पारी मखें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ कें मुहपत्ती पडिलेहि वांदणां देई कहे. इच्छाकार भगवन् ! पसाउ करी पच्चरकाण करावोजी. पीछें गुरु, दिवस चरिम पच्चरकाण करावे ॥ गुरु अभावें थापनाचार्य समक्षें अथवा स्वमुखें, अथवा वडेरा साधर्मी मुखें पच्चरके ॥ अने जो तिविहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पडिलेहि पच्चरकाण करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो चउविहार उपवास हुवे, तो पच्चरकाण करवुं छे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पडिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीछें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

त्र० ॥ सिझाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछैं इच्छं कही वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ त्र० ॥ सिझाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछैं इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ उन्नो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिझाय करे ॥ पीछैं खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ त्र० ॥ बेसणुं संदिस्साउं ? गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ त्र० ॥ बेसणुं ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ पीछैं इच्छं कही जो शीत कालादि हुवे तो खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ त्र० ॥ पांगरणुं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ त्र० ॥ पांगरणुं पमिग्घाउं ? गुरु कहे पमिग्घाएह ॥ पीछैं इच्छं कही शुज्ञ ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पमिक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ त्र० ॥ चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीछैं इच्छं कही ॥ जय तिहुयण कहे ॥ जिसमें पक्खी तथा चनमासी तथा संवच्छरीके रोज तीस गाथा कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा पिछामीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं. अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नं तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअक्करि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलंघियाण त्रुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेस पास थंत्रणय पुरठिअ ॥१॥ तइं समरंत लहंति ऊत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धस सुवन्न हिरस्रण पुस्रण जणत्रुंजहि रज्जहि ॥ पिक्कहि मुक्ख असंखसुक्ख तुह पासपसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्ख सुक्खहि कुण मह जिण॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुस वस्रणट्ठ सुकुठिण, चक्खुक्खीणखएणखुस

निरसल्लिअसूलिश ॥ तह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणसव, जय धणंतरि पास महवि तुहुं रोगहरो नव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंततंतसिद्धिउ अपयत्तिण, नुवणप्नुअ अठविह सिद्धि सिज्जइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउवि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्गविगंजइ ॥ डुत्थियसउ अणउ घउ निछारइ दय करि, डुरिअई हरउ सुपासदेव डुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाथंनेइ नीमदप्पुद्धुर सुरवर, रक्खस जक्ख फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरउद्दखुद्द पसुजोइणि जोइअ, इयतिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअ अउ अणउहिउन्नत्तिप्नर निप्नर, रोमंचंचिअचारुकाय किन्नरनरसुरवर ॥ जसुसेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअ कलिमलु, सो नुवणत्तयसामि पास महमद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥ जय जोइअमणकमलजसलन्नय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद नुवणत्तयदिणयर ॥ जय मइमेइणि वारिवाह जयजंतुपिआमह, थंनणयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ बहु विहवणुअवणु सुवणु वन्निउ छप्पन्नहि, मुक्खधम्मुकामउकाम नर नियनियसउहि ॥ जं झायइ बहु दरिसणउ बहु नाम पसिद्धउ, सो जोइ अमण कमलनसलसुह पास पवद्धउ ॥ ए ॥ नयविप्नल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तरलिअ नयणविसन्नसुन्नगग्गिरगिरकरुणय ॥ तइंसहसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, मह विज्झविसज्जसइ पास नय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइंपासविविअसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय, वाहपवाहपवूढरूढ डुहदाहसुपुलइय ॥ मण्णइमण्णसउण्ण पुन्नअप्पाणंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुघंटटंकारवपिल्लिअ, वल्लरमल्लमहल्लनत्तिसुरवरगंजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति नवणेहिमहूसव, इय तिहुअण

आणंदचंद जय पाससुहुब्भव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनिय-
रविहुरिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयत्थवित्थरिअ पहाभर ॥ क-
लिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणहअगोयर, तिमिरइं निरुहर
पासनाह भुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त
माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमत्थबोह कंदलदलरेहिणि ॥जायइ-
फलभरभरिय हरिय दुहदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह
दिसिपास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवल्लिउल्लूरि-
यदुहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगम वारणुं ॥ जय जंतुह-
जणएणतुल्लजंजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय
जंतु पिआमह ॥ १५ ॥ भुवणारणनिवास दरिअपरदरिसणदेवय,
जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ
अविसंठुलचिठहिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिं
॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नहयल, फलिणी
कंदलदलतमाल निलुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संस-
ग्गअगंजिअ, जय पच्चक्खजिणेस पास थंभणय पुरठिअ ॥ १७ ॥
महमणतरलपमाणनेय वायाविविसंठलु, नियतणुरवि अविणयसहाव
आलसविहलंघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुणपवत्तउ, इयम-
इमाअवहीरपासपालहिविलवंतउ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउणेयकलु-
णुकिंकिंवनजंपिउ, किं वनचिठिउकिठ्ठदेवदीणयमविलंबिउ ॥ का-
सुनकियनिप्पल्ललल्लुअह्लेहिंदुहत्तइं, तहविन पत्तउताण किंपि पइं
पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिह तुहुं माय वप्प तुहुं
मित्तपियंकरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु
॥ हउं दुहभरभारिअबराउ राउलनिब्भग्गउ, लीणउ तुह कमक-
मल सरणजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोय-
लोयकिविपावियसुहसय, किविमइंमंतमहंतकेवि किविसाहियसि-
वपय ॥ किवि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूअल, मइं अवही-

रहिकेणपास सरणागयवच्छल ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाहनिप्पन्न पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्त सम चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुग्गउविमइं पासनिरंजण ॥ २२ ॥ हउं बहुविहदुहतत्तगत्ततुहुं दुहनासणपरु, हउं सुयणहकरुणिक्कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हउंजिण पासअसामिसालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं ऊखंतइय पासन सोहिअ ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्ग विभागनाहमहुजोअणतुहसम, भवणुवयारसु हावभाव करुणारससत्तम ॥ समविसमइ किंघण नएइ भुविदाहुसमंतउ, इय दुहबंधव पासनाह मइं पाल थुणंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि असविकिविजुग्गय, जं जोइयउवयारुकरइउवयारसमुज्जय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिणचत्तउ, तो जुग्गउअहमेव पासपालहिमइं चंगउ ॥ २५ ॥ अहअसविजुग्गयविसेसकिविमसहि दीणह, जं पासविउवयारुकरइ तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण हुम्ह पसीयह, किं असुंण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पत्थण नहु होइ विहल जिणजाणउ किं पुण, हउं दुक्खिउ निरुसत्तचत्तदुक्कहु उस्सुयमण ॥ तं मणउ निमिसेण एण एउविजइ लप्भइ, सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पपयासिउ, किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमुणंवहुं जंपिउ ॥ अणु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिणदयासउ, जइअवगिणसि तुंहिजअहहाकिंहोइसहयासउ ॥ २८ ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअपाइणवेलंविउ, तउजाणुंजिणपास तुम्ह हउंअंगीकरिअउ ॥ इयमहइच्छिअ जं न होइ सातुहउहावण, रक्खंतह नियकित्तिणे य जुज्जइअवहीरण ॥ २९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसउ, जं अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धउ ॥ इय मइं पसियसुपासनाहथंभणयपुरहिअ, इय मुणिवरसिरि अभयदेव विन्नवइ

आणिंदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंभनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ॥

पीछे जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समत्थ परमत्थजाणय, जय जय गुरु गिरिम गुरु ॥ जय दुहत्त सत्ताण ताणय, थंभणयट्ठिय पासजिण ॥ भवियह भीम भवत्थु, भव अवणं ताणं तं गुण ॥ तुऊत्ति संज नमोत्थु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछें शक्रस्तव कह कें खमा हो कर अरिहंत चेइयाणं० ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि पाठ कह कें काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब काउस्सग्गमें रहे थके सुने. पीछें णमो अरिहंताणं कह कें काउस्सग्ग पारे. इसीतरें आगें पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेनां.

॥ पीछें लोगस्स कह कर सवलोए अरिहंत चेइयाणं वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक नवकारका काउस्सग्ग करे. पारि कें उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥ भवियणनें तारे, प्रवहण सम नि-

शिदीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमुं विशवा वीस ॥ यह दूसरी गाथा कहि कें काउस्सग्ग पारे. पीछें पुक्खरवरदी० वंदणवत्तिआए० अन्नत्थू० कहि कें, एक नवकारका काउस्सग्ग कर कें, पारि कें उक्त स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अर्थें करि आगम, जाख्या श्रीभगवंत ॥ गणधरने गूंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ यह गाथा कहि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नत्थू० ॥ कही काउस्सग्ग पारी उक्त स्तुतिकी चोथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु संकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोडी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंपे गुण गण इम, श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन स्तुतिः ॥ यह चोथी स्तुति कहिके बैठ कें नमोत्थूणं कहे, पीछें एक खमासमण देई कें श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. पछैं श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमण देई कर श्रीवर्त्तमान आचार्यजीका नाम ले कें मिश्र चोथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र इसी तरें कह कर गोडालीयें बैठ कें मस्तक नमावी सव्वस्सवि देवसिय० इत्यादि कह कर तस्स मिच्छामि दुक्कडं कहे, परंतु 'इच्छाकारेण संदिस्सह इच्छं' ए पद न कहे ॥

॥ पीछें खडे हो कर करेमि भंते सामाइयं० ॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ० ॥ तस्सुत्तरि० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें, आठ नवकारका काउस्सग्ग करे. काउस्सग्गमांहे आजूना चउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, णमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारि कें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पीछैं संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरें आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह. पीछैं मुहपत्ती पडिलेहि कें वांदणां देवे. पीछैं अवग्रहमांहिज नमो खमो इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ देवसियं आलोउं, एसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह. पीछैं इछं आलोएमि० ॥ यह पाठ कह कें अतिचार आलोवे. पीछैं सव्वस्सवि देवसियं इत्यादिथी मांडीने इछाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पडिक्कमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीछैं इछं तस्स मिछामि डुक्कडं कहि कें संमासा प्रमार्जि प्रमार्जित भूमियें आसन पर बैठ कें भगवन् ! सूत्र भणुं एसा कहे. तब गुरु कहे भणेह. पीछैं इछं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि भंते भणीने इछामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीछैं खडा हो कर अभुठिउमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांहिज खडा हुवा इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अभुठिउमि अभिंतर देवसियं खामेउं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछैं इछं खामेमि देवसियं कहि कें गोडालीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीछैं विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयरिय उवज्झाय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि भंते सामाइयं इछामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें पीछैं दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुक्खरवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगवउ० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू०

॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछैं पारि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० कहि कें वेयावच्चगराणं न कहे. पीछैं सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पीछैं गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग्ग पारिकें णमो अर्हत्सिद्धा० कहि कें श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग्ग पारे. अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनोद्भवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीछैं खित्तदेवयाए, करेमि काउस्सग्गं० ॥अन्नत्थू० ॥ कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्वली परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछैं खमा हुवा एक नवकार कही, संडासा प्रमार्जि उकडूबैठ कें छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह.

॥ पीछैं मुहपत्ती पडिलेही विधिशुं दो वांदणां देइ ॐ वरकनक कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ ॐ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सद्दामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ भवणवय वाण मंतर, जोइसवासविमाण वासीय ॥ जे केवि दुष्टदेवा, ते सवे उवसमंतु मे स्वाहा ॥१॥ पच्चक्खाण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामायिक चोइसत्थो पडिक्कमणां, वांदणां, काउ-

स्सग्ग, पच्चरकाण, ठ आवश्यक सांधतां कानो, मात्रा, ठंगो अ धिको अक्षर ऊंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं ॥ इच्छामो अणुसट्ठिं० ॥ कही बैठे. पछें गुरु एक स्तुति कह्या पीछें श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें णमो खमासमणाणं ॥ णमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही ॥ णमोऽस्तु वर्द्धमानाय० इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका णमो खमासमणाणं, कही सं-सारदावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावा-प्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, क-रोतियो जैनमुखांबुदोद्गतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टि सन्निभो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा लीढभृङ्गीकुरङ्गं, मुखशशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभर्ति ॥ विकच कमलमच्चैः साऽ स्त्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री प्राणभाजां श्रुताङ्गी॥४॥ इति॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीछें णमोत्थुणं० कहि कें. एक श्रावक खमासमण दई कहेः–इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्तवन भणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्त-वनभणुं स्तवन सांभलुं ? गुरु कहे, भणेह सांभलेह. पीछें आसन पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें बमो स्तवन कहे, सो लि-खते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ भविकां श्रीजिनबिंब जुहारो, आतम परम आधारो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

कांई ॥ आगम वाणीने अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते कहियें किम जाणे ॥ भूला तेह अज्ञानें भरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिछाणे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक ॥ विविधपरें जिन भगति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगतें जोतां, होय निश्चय उपगार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, छे बहु जलधि मझार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपणें अधिकार ॥ सूरियाभ सुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मझार रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोडी, करिये केम अकाज रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, छठे ज्ञाता अंगें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य भाव बिहुं भेदें कीनी, जीवाभिगम ते साखी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशें, श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीछैं तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी, अढाइज्जेसु कहनां, फेर खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥

देवसि पाय छित्त विशुद्धि निमित्तं काउस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेह. पीछें इच्छं कहि कें देवसि पायछित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारी कें लोगस्स कहे.

॥ पछैं खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ खुद्दोवद्दव उम्मावणऊं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहो. शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारि कें प्रगट लोगस्स कहे. पीछें खमासमण देई ॥ सज्झाय संदिस्साउं फेर खमासमण देई सज्झाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीछें खमासमण देई कें ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कह कर थंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटें पुरवरे श्रीस्तंभने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिव फलं स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लो शिरोमणिः ॥ पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पछैं नमोत्थुणंसें लेकें जयवीयराय सुधो कहे ॥ पछैं खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि थंभणयट्ठिय पास सामिणो०' इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयट्ठियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंभणयट्ठियपाससामिणो सेस तित्थसामीणं ॥ तित्थ समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए ॥ भत्तीए गुण सुट्ठियस्स, संघस्स समुन्नय निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंन्नणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्त करेमि काउस्सग्गं ॥ पाछें खमें दो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग करि कें पीछें पारी प्रगट लोगस्स कह्रो कें ॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहारजंगम युगप्रधान भट्टारक दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूमामणीजी आराधवा निमित्त करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछें प्रगट लोगस्स कह कें

॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहार जंगमयुग प्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूमामणिजी आराधवा निमित्त करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पाछें प्रगट लोगस्स कहि बैठ कें मावो गोमो ऊंचो करि कें खमासमण देई कें, इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं जी. ऐसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पमिल्लूरण, डुज्जय मयण बाण मुसुमूरण ॥ सरस पियंगु वन्नु गय गामिउ, जयउ पास भुवणत्तय सामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कमप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणमणि किरणालिद्धउ ॥ नंनव जलहर तमिल्लय लंछिय, सो जिणु पासु पयछउ वंछिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो भगवंत इंद्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैतें परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीछें नमुत्थूणंसें ले कें जयवीयराय पर्यंत कहि के पक्की, चउम्मासी अरु संवछरीके रोज तो बमी शांति सुणे, परंतु और

दिनोमें छोटी शांति सुणे, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ जुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वडुरितौघनाशन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ डुष्ट ग्रह जूतपिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते जगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, जद्र कल्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ जव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि ! सत्त्वानाम् ॥ अजय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥ ९ ॥ जक्तानां जन्तूनां, शुजावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्ति यशो, वर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर, डुष्ट ग्रह राज रोगरणजयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिज्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ जगवति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरुकुरु जनानाम् ॥

उँ मेति नमो नमो ह्राँ, ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फट् फट् स्वाहा ॥१४॥ एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-विदर्भितः स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिभय विनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १७ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१७॥ इति॥

॥ पीछैं चीराकका अथवा बीजलीका चांदणा पड्या होय तो इरियावहि० तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउ-स्सग्ग करे, पीछैं प्रगट लोगस्स कही पूर्वली परें सामायिक पारे, पीछैं एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसी पडिक्कमण विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-दिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेहं महासहं ॥ नवखंडाभिधं पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे ॥



॥ अथ छुटक चैत्यवंदनस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिरभानुः, कल्पवृक्षोपमानः ॥ भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स भवतु सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन० ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनाद्दुरितध्वंसी, वंदनाद्वांछितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम् ॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि भक्त्या ऋषभं जिनोत्तमम् ॥ ३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन वरण शरीर कांपि, अतिशय अभिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन, नरपति कलचंद ॥ मृगलंछन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृंद ॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंडित आण ॥ एक मनें आराधतां, लहियें कोडि कल्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादवकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी जात, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अभिराम ॥ तास क्षमा कल्याण मुनि, निशिदिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्रीनेमिनाथ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामा-सुत सार ॥ श्रीगोडी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिभु-वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जगु वाण ॥ ध्यान धरंतां एहनुं, प्रगटे परम कल्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा मरणादि रूप, भव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात, त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृतरूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ क्षमाप्रमुख कल्याण मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर० ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिक्कमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत दैवसिक पडिक्कमी ॥ १ ॥ खमासमण देई देवसी आलोइयं पडिक्कंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पक्खिय मुहपत्ती पडिलेहुं ? चउमासीएं चउम्मासियं मुह-पत्ती, संवछरीयें संवछरी मुहपत्ती पडिलेहुं ? एम कहे. पीछें गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इछं कहे, दूजी खमासमण देइ, मुहपत्ती पडिलेही, वांदणां देई, तिहां पक्खीमें पक्खो वइक्कंतो ॥ चउमासी पडि० ॥ चउमासीउं वइक्कंतो संवछरीमें संवछरो वइक्कंतो. एम यथायोगें कहे ॥ पीछें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पा-क्खिक ॥ चउमासिक सांवछरिक भणजो. छींक जयणा करजो. मधुर स्वरें पडिक्कमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांडलमें सावचेत रहेजो, पाछें सघलाही तहत्ति कहे ॥ पीछें ऊठी ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ संबुद्धा खामणेणं ॥ अभुट्ठिओमि अभ्भिं-

तर पक्खियं ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे, खामेह ॥ पछैं मस्तके अंजलि करतो थको, इच्छं खामेमि पक्खियं ॥ ३॥ कही, गोम्हालीयें बेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करी, मुहपत्ती मुखें देई ॥ पक्खियें पनरसह्नं दिवसाणं पनरसह्नं राईणं जं किंचि-अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउह्नं मासाणं अ-ठह्नं पक्खाणं वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि कहे. संवछरीयें डुवालसह्नं मासाणं चउवीसह्नं पक्खाणं तिन्निसय-सठिराइंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारें गुरु पण मिछामि डुक्कडं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता हुवे तो पा-खियें तीन, चउमासीयें पांच, संवछरीयें सात साधुने खमावे ॥ ॥ पछैं उठी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पक्खियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पछै इच्छं आलोएमि, जो मे पक्खिउ ॥ ३ ॥ अइयारोकउ, इत्यादि सूत्र भणी ॥ संक्षेपे अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवछरी, अतिचार आलोवे, सो लिखते हैं ॥

## ॥ अथ वृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्रार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण

अत्थ तदुभए, अठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-माहि पढिउं गुणिउं नही, अकाले पढिउं, विनय हीन बहुमान हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा-कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव वांदणे पडिक्कमणे सिज्झाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने मात्रें अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या, भणीनें वोसार्यो, तपोधन तणे धर्मे काजो अण ऊधरे दांडो अण-पडिलेही, वसती अणसोधी, असिज्झाई अणोज्झा कालवेलामाहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें भण्यो ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना हुई, पग लागो थूंक लागो ओसोसे मूक्यो कनें छतां आहार नोहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणास्यो विणसतो उवेख्यो, छती शक्तें सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें मच्छर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपघात कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी, कोई तोतडो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषइउ जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते सहु मन वचन कायाइं करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिठ्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल पभावणे अठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं,

सघलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी, धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नही. चारित्रिया साधु साधवी तणां मलमलीन गात्र देखी दुगंछा उपजावी, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी, मूढदृष्टिपणो कीधो, संघमांह गुणवंततणो अनुपबृंहणा अस्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवी. संघमांहे थिरीकरण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधी. देवद्रव्य विनाशिउं, विणसंतुं उवेखीउं, छतो शक्ते सार संभाल न कीधी, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रतें तेत्रीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठबको लागो, मुखतणो बाफ लागी, ठवणारिय हाथथकी पडीओ, पडिलेहवो वीसारयो, नवकरवालीनें पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं॥ एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायवो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भासासमितो २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाणपारिट्ठावणीयासमिती ५. मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूडी परें पाली नहीं ॥ साधु तणें सदैव श्रावक तणे पोसह पडिक्कमणे लीधे अष्टविध चारित्राचार विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्री सम्यक्त्वतणा पांच अतिचारः—संका कंख विगिछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संकाः--श्रीअरिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिनवचन तणो संदेह कीधो. आकांक्षाः--ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आ-तंकें इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र शीख्यां, सांभल्यां, शराध संवत्सरी होली वलेव माहीपूनिम अजा-पडिवो प्रेतबीज गोरत्रीज विणायगचोथ नागपांचम झूलणाछठ शीलसातम ध्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस व-त्सबारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक, जाग भोग उतारणा कीधा, पिंपल पाणी घाल्यां घलाव्यां घर बाहिर कूई तलाव नदी समुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां थाप्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. वितिकिच्छाः—धर्म-संबंधिया फल तणो संदेह कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें न पूज्या, न मान्या, महात्माना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुओ मिथ्यात्वी तणी प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति माडी, दाक्षिणलगें तेहनो धर्म मान्यो ॥ श्रीसमकितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार. वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाण वुच्छेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें रीशवशें गाढो घाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घणे भारे पोष्या, निर्लांछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार सं-

भाल न कीधी, लहिणे देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्या, अणगल पाणी वावर्युं, रूडे गल्युं नही, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झील्यां लूगडां धोयां, इंधण अणसोध्युं जाल्युं. साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंडा साहतां मूआं, दूखव्यां, रूडे थानक न मूक्या, कोडी मकोडी उदेही घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया डेडकां अलसिया ईली कूति डांस मसा बगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चिडकलानां इंडां फूटां, अनेरा एकेंद्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनेरुं कांइ काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रूडे न कीधी, संखारो सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां, खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रूडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजुं स्थूल मृषावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसात्कारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चिंतवो छो. इत्यादिक कह्युं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी, थापण मोसो कीधो. कन्या ढोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वढावढि करता मोटकुं झूठ बोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म्म वचन बोल्यां ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच अतिचार ॥ तेना-हडप्पओगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी, दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संबल दीधुं, संकेत कह्युं. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा, खोटे तोल मानें माप वहोरयां, दाणचोरी कीधो, साटे लांच लीधी, माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदो गांठ कीधी, किणहोनें लेखे पलेखे भुलव्युं, पडी वस्तु ओलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रत विषइओ० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोष मैथुनव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिव्वअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन, इत्वरपरिगृहितागमन, विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोक-तणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम भांग्या, घरघरणां कीधां, कराव्यां, अनुमोदीयां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गक्रीडा कीधी, पराया विवाह जोड्या काम भोगतणेविषे तीव्राभिलाष कीधो, कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधुं, चोथे मैथुन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त वत्थू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप्प सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नव परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगें संक्षेप न कीधो, माता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण लेई पढ्यो नहीं. पढी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ॥ पांचमे परिमाण व्रतविषइओ० ॥

॥ छठे दिगविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे ॥ उर्द्धदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो

नियम जे कोई अजाणे भांगो, एक गमा संकोडी बीजी गमा वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आघी मोकली ॥ छट्ट दिग्व्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत ॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करमहूंती पन्नरे, एवं वीश अतिचार॥ सचित्ते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलयं च आहारे०सचित्त तणे नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं, तथा सचित्त मली वस्तु अपक्काहार दुपक्काहार तुच्छौषधि तणुं भक्षण कीधुं. होला उंबी पहुंक काकडी भडथां कीधां, सुल्यां धान प्रमुख भक्षण कीधां ॥ सचित्त दव्व विगई, पाणह तंबोलवत्थ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि ण्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या. बावीस अभक्ष, बत्तीस अनंतकायमांहि आदुं मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काची आंबली गोल्हां खाधां, चोमासा प्रमुखमांहे वासी कठोलनी रोटी खाधी. त्रिहुं दिवसनुं दही लीधुं, मधु महुडां माखण माटी वेंगण पीलू पीचू पंपोटा पींपी विष हीम करहा घोल वडां अणजाण्यां फल टींबरुं अथाणुं आम्रणबोर काचुं मीठुं, तिल खसखस काचां कोठिंबडां खाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगबगती वेलायें व्यालू कीधुं, दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मादान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत वाणिज्ये, लक्ख वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये, जंत पीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पांच वाणिज्य पांच कर्म्म, पांच सामान्य, महारंभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या, घाणी चणा पक्वान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा

कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या, कूकडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेरुं जे कांई बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्युं ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ कदर्प्प लगें विटनी परें हास्य कुतूहल मुखादि अंग कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगें कुणहोने असंबद्ध वाक्य बोल्या. खांडा कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अनेरो कांइ पापोपदेश दीधो, अंघोल नाहण, दांतण, पगधोअण पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांढ कूकडा, मिंढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगें अदेखाई चिंतवी माटो मीठुं कण कपासिया काजविण चांप्या, तेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुंदी, छास पाणी विरस तेल गुळ आम्लवेतरस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते मांहि कीडो कंथुआ माखी उंदर गिरोली प्रमुख जीव विणठा, सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हेतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांछी एकनें मृत्युहाणि विमासी आठमा अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतनें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य बोल्युं, काय अण पडिलेह्युं हलाव्युं, छती वेलाइं सामायिक न लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुख बोल्या, ऊंघ आवी कीधी, वीज दीवा तणी उजाहो लागी. कण कपासीया माटो मीठुं नील फूल

हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यंचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यंची आभडी, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अण पूरउं पारिउं पारवुं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाइ रूवाणुवाइ बहिया पुग्गल क्खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहिबाहिर थकी कांइ अणाव्युं, आप कन्हाथी बाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंछतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिलां दिवसें शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइं परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पुठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्युं. पोसहशालामांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी, पृथ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ. पोरसिमांहि उंध्या, अविधि संथारुं पाथर्युं, काल वेलायें पडिक्कमणुं न कीधुं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नहीं ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निक्खवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रतें असूझतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा

तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेड्या, मत्सरलगें दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साधर्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म्म क्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धर्या नही ॥ बारमे अतिथि संविभाग व्रतविषइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥ इहलोका संसप्पउगे परलोगासंसप्पउगे जीविआसंसप्पउगे मरणा संसप्पउगे कामभोगासंसप्पउगे इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछ्यां. परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीव वा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी, कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार बारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमूणोयरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्त कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंठसी मूठसी साढपोरसि पुरिमड्ढ एकासणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चक्खाण पारवां वीसार्यां. बेसतां नवकार भण्यो नही, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुंपाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायच्छितं विणओ० गुरुकनें मन सुद्धें आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायच्छित तप लेखा शुद्ध पुहचाडयुं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मी प्रतें विनय साचव्यो नही; वाचना पूछना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्झाय

कीधी नहीं, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनो काउस्सग्ग न कीधो॥ अभ्यंतर तप विषइयो० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरीओ, परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायव्वो वीरियायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्म कृत्यतणे विषे मन वचन कायतणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं, रूडां पंचाङ्ग खमासमण न दीधां, बेठां पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो० ॥

॥ नाणाइ अठ अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्मेसु ॥ बारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं करणे० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य बत्तीस अनंत काय बहुबीज भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधां, नित्यकृत्य देवपूजा सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कीधां, जीवाजीवादि विचार सद्दहिया नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८. ए अढारह पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें श्रावक धर्में श्री सम्यक्त्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो अतिचार मांहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पछें सव्वस्सवि पक्खिय ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउत्थेण पडिक्कमह, छठमासे छठेण पडिक्कमह. संवच्छरीयें अठमेण पडिक्कमह. इच्छं तस्स मिच्छामि डुक्कडं कही. द्वादशावर्त्त वांदणां देवे. पछें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, देवसियं आलोइयं पडिक्कंता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणेणं. अब्भुट्ठिओमि अप्भिंतरपक्खियं ॥ २ ॥ खामेउं? गुरु कहे खा० ॥ पछें इच्छं खामेमि पक्खियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वें कह्यो, तिम कही मिच्छामि डुक्कडं देई खमावे, पछें बे वांदणां देई. भगवन्! देवसियं आलोइयं पडिक्कंता पक्खियं ॥ ३ ॥ पडिक्कमावह? गुरु कहे सम्मं पडिक्कमह. पछें इच्छं कही करेमि भंते सामाइयं॥इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे पक्खिओ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० ॥ कही ॥ काउस्सग्ग करे, गुरु, पाखीसूत्र कहे, ते सांभले. अने गुरुथकी जूदा पडिक्कमता हुवे, तो एक श्रावक खमासमण देई कहे. भगवन्! सूत्र भणुं? गुरु कहे, भणेह. एसो वचन मनमें धारी॥इच्छं कही, उभो थको, हाथ जोडी मुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो वंदित्तु सूत्र गुणे. बीजा श्रावक करेमि भंते० इच्छामि ठामि काउस्सग्ग तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कही काउस्सग्गमें रह्या सुणे. सूत्रप्रांतें णमो अरिहंताणं कही. काउस्सग्ग पारी, उभा थका तीन नवकार गुणी बेसे. पछें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि भंते कही, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, वंदित्तु सूत्र गुणे, पडिक्कमे देवसियं सव्वं ॥ एहने ठिकाणें पडिक्कमे पक्खियं, चउम्मासियं संवच्छरियं सव्वं कहे. पछें उठी, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण भणी. खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं, काउस्सग्ग करूं? गुरु कहे करेह. पछें इच्छं कही, करेमि भंते

सामा० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सु० अन्नत्थू० इत्यादि कही, पाखीयें बार लोगस्स चउमासियें वीस लोगस्स संवछरीयें चालीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, काउस्सग्ग करी, पारी लोगस्स कहे. बेसी मुहपत्ती पडिलेही, बे वांदणां देई इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अब्भुठ्ठिओमि अभिंतर पक्खियं ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे खामेह. पीछें इच्छं खामेमि पंक्खियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वें कह्यो. तिम कहे, पीछें इच्छाका० ॥ सं०॥भ०॥पाखी॥३॥ खामणां खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त खामणां खामेह. पीछें श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीछें गुरु कहे नित्थारग पारगाहोह. पीछें श्रावक कहे.इच्छं इच्छामि अणुसहिं कही, गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आंबिल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा वे हजार सज्झाय करी, एक उपवासनी पेंठे पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें दैवसिक भणजो. एम चउमासे ए सर्व दुगुणो कहणो, संवछरीयें त्रिगुणो कहणो. पीछें जिणें तप कीधो हुवे ते पइठियं कहे, न कीधो हुवे ते तहत्ति कहे ॥ पीछें वे वांदणां देई, अब्भुठ्ठिओमि अभिंतर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे. पीछें बे वांदणा देई. आयरिय उवज्झाए० तीन गाथा कहे, इम आगें सर्व विधि दैवसिक पडिक्कमणानी करे, पण इतरो विशेष है, श्रुतदेवतानो काउस्सग्ग करी स्तुति कहे. पीछें भवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं. इत्यादि विधें भवनदेवताको काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥ निहत्य दुरितान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काउस्सग्ग करे, तथा तीने पर्वे वडा स्तवन अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा पडिक्कमणो पूरो हुवा पीछें एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सिद्धा० कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणनें रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांभले ॥ इति पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि ॥

॥ अथ दस पच्चख्खाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संभारे, सो इस तरें पच्चख्खाण करे ॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं मुंठसहियं पच्चख्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगइउ पच्चख्काइ. अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहित्थसंसिठेणं उख्खित्तविवेगेणं पडुच्चमख्खिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चख्काइ. अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति नवकारसी पच्चख्काण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संभारे नहिं, सो विगइका उर देसावगासिकका आगार न पच्चख्के. निकेवल नवकारसी आदिक पच्चख्काण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं पच्चख्काइ ॥ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नवकारसी पच्चख्काण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुंठसी पच्चख्कामि, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थ०॥ सहसा०॥ पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं ॥ साहुवयणेणं सव्व० विगइउ पच्चख्कामि. इत्यादि पूर्वकी

परें कहणां ॥ इति पोरिसी पच्चख्काण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साढ पोरसीका पच्चख्काण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पच्चख्काइके ठिकाने इहां साढपोरसिं पच्चख्काइ कहणां ॥ इति साढ पोरसिपच्चख्काण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरे उग्गए पुरिमढं अवढं वा पच्चख्काइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० ॥ सह० ॥ पञ्च० ॥ दिसामो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सव्व० ॥ विगइउ पच्चख्काइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमढपच्चख्काण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चख्काइ, उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० पञ्च० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं बिआसणं वा पच्चख्काइ. दुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह० सागारिआगारेणं आउटणपसारेणं गुरुअब्भुठाणेणं पारि० मह० सव्व० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥४॥ इति एकासण बिआसण पच्चख्काण ॥आ०८॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चख्काइ. उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० पञ्चख्का० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगठाणं पच्चख्काइ. दुविहं तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह० सागारिआगारेणं गुरुअब्भुठाणेणं पारिठाव० मह० सव्व० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठाणा पच्चख्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चख्काइ. उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अस० सह० पञ्च० दिसामो० साहु० सव्व० आयंबिलं पच्चख्काइ. अस्स० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसंसिठेणं उख्कित्तविवेगेणं पारिठा० मह० सव्व० एकासणं पच्चख्काइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह०

सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअब्नुठाणेणं पारिठा० मह० सब० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पच्चरकाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चख्खाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं असण० सह० पछ० दिसा० साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चख्खामि. अस० सह० लेवालेवेणं गिहच्छसंसिठेणं उख्खित्तविवेगेणं पडुच्चमख्खिएणं पारि० मह०सव्व० एकासणं पच्चख्खाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह० सागा० आउट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं ज्ञोगपरिज्ञोगं पच्चख्खामि. अस० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति नीवी पच्चख्खाण ॥ आगार ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अप्नत्तठं पच्चख्खामि. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० मह० सव्व० देसावगासियं ज्ञोगपरिज्ञोगं पच्चख्खामि. अस० सह० म० सव्व० वोसिरामि ॥ इति चउविहार उपवास पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अप्नत्तठं पच्चख्खामि. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साढ पोरसिं पुरिमठ्ठ अवठ्ठ वा पच्चख्खाइ अस० सह० पछ० दिसा० साहु० सव्व देसावगासियं ज्ञोगपरिज्ञोगं पच्चख्खामि. अ० स० म० सव्व० वोसरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चख्खाण ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं पुरिमढ्ढ अवढ्ढ वा पच्चरकामि. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ० सह० पछ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगठाणं दत्तियं पच्चख्खामि. तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० सागा० गुरु० मह० सव्व० विगइउ पच्चख्खामि. इत्यादि पूर्ववत्. देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चख्खाइ. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ इति दिवसचरिम पच्चख्खाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चख्खामि दुविहंपि आहारं असणं खाइमं अस० सह० मह० सव० वोसिरामि. देसावगासियं पूर्ववत् ॥इति दिवसचरिम दुविहार पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चख्खामि अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ भवचरिमं पच्चख्खाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ भवचरिम, दो आगारकाभी होय ॥ इति भवचरिम पच्चखाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अभिग्रह पच्चख्खाणकेभी ए चार आगार. अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अभिग्रह पच्चख्खाण ॥

॥ अहणं भंते तुह्माणं समीवे देसावगासियं पच्चख्खामि दवउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं देसावगासियं खित्तउणं उड्ड वा अणाउवा कालउणं मुहुत्तधारणाप्रमाणें जावनियमं पच्चख्खामि भावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि छलेणं न छलिज्जामि असेणकेवि रायंकेण वा एसो परिणामो न पमिवज्जइ ता अभिग्गह अणुभणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्चख्खाण ॥

॥ तथा साधु पच्चख्काण करे. तब देसावगासी नही पच्चखे. अरु तिविहार उपवासमें आंबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका ब आगार पच्चखे सो दिखावे हैं. पाणस्स लेवाडेण वा

अलेवाडेण वा अच्छेण वा बहुलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पच्चख्खाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार छच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त पुरमिड्ढे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गठाणस्सउ, अठेवय आ-यंबिलंमि आगारा ॥ पंच वयन्नाठे, छप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिग्गहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पं-चउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पच्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहियं पच्चख्खाइ चउविहंपि आहारं ॥ अर्थः—इहां गुरु कहे पच्चख्खाइ. शिष्य कहे पच्चख्खामि. पच्चख्खाइका अर्थ सब जगे अंगीकार वांची जाणना. जेसें सूरज उदय हुआ पीछे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पच्चख्खाण मुहुर्त्त कहते दो घडी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पारूं नहीं तहां तक चउवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं. सो च्यार प्रकारका आहार इस मुजब हे. असन कहते अन्न, चावल, गहूं, मुंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सात गहूं जबकूं आदि लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लडू वगेरे सब तरेका पकवांन सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राब घाट सब पतली उर नरम वस्तु हींग वेसण सूंफ लूंण सेंधवादिक इत्यादिक सब असणमांहि जाणना ॥१॥ पाणं इसका अर्थ आछण जवोदक तुषोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्प-काय ॥२॥ खाइमं कहते खादिम सूखडी नालेर खजूर द्राख सेक्या अनाज आंबा केला काकडी अखरोट खारक विदाम वगेरह सब जातका मेवा सब जातका फल खादंम जाणना ॥३॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूंठि मिरच पींपर हरडे बहेडा आंबला तुलछी कसेला काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविडंग अजमा अजमोद कुलिंजन कबाबचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया कुंभटिआ पांनसुपारी पोहकरमूल जवासाकीजड बावची बांवलछाल धवछालि खेजडेकीछालि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींबकीछालि जड पांन लिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूडेकीछालि चंदनकीराख रोहिणीकीछालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया चिरमी कयर बोरकीजड इत्यादिक अनाहार चीज इछा मुजब छोडणा यह जो इछाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो इछा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे. पच्चख्खाणका अर्थ जाणे विगर जो पच्चख्खाण करे सो अंधा पच्चख्खाणहे इस वास्ते संक्षेप मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे. जिस पच्चख्खाणमें जितना आगार होय सो रखकर हमारे पच्चख्खाणहे. अन्नछणाभोगेणं कहिये अनाभोग टालके किया जो पच्चख्खाण. अत्यंत भूल जाणेसें कोइभी चीज भूलके मुंमे डालली होय लेकिन् जाणे बाद तत्काल उसी वखत पीछा नाख देवें तो पच्चख्खाणमें भंग नही. उर जाणे बाद भक्षण करे तो पच्चखाण निश्चे भंग होय ॥१॥ पछन्नकालेणं कहते कालकी प्रछन्नता. आकाशमें गर्द उडती होय आकाशमें बद्दल छाये होय तेसेइ पहाडकीउंट आजावे सूरज नही दीखे तब भरमसुं पच्चख्खाणका वखत पूरा हुवा जाणकर भोजन करे तो व्रत भंग नही ॥२॥ दिसामोहेणं कहतां दिसा भूलकर पूरबकूं पछिम जाणकर पच्चख्काणका काल पूरा हुये विगर भोजन कर लेवे तो व्रत भंग नही ॥३॥ सहस्सागारेणं कहतां सहसात्कार बहोत उताव लके योगसें अथवा अकस्मात् विलोवते तोलते घी वगेरेका छींटा

भूमें गिर जाय तो व्रत भंग नही ॥४॥ साहूवयणेणं कहतां साधूके वचनसें उग्घाम्रा पोरसीआदिक भरम संयुक्त सुणकर पच्चक्खाणका काल पूरा हुवा जाणकर भोजन करे तो व्रत भंग नही ॥५॥ सव समाहिवत्तियागारेणं कहतां पच्चक्खाणका काल पूरा होणेसें पहलो अकस्मात् शूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी थिरता रहे नही आर्त्तरौद्र ध्यान होय तव उसका रोग मिटाणे वास्ते ओषधादिक पथ्य देवे वा आप लेवे तो पच्चक्खाण भंग नही ६ महत्तरागारेणं कहतां पच्चक्खाणसें जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासें ज्यादा निर्जराका कारण अथवा हरकिसीसें वण नही आवे एसा जो चैत्य संघादिकका प्रयोजन होणेसें पच्चक्खाणका काल पूरण भये विगर ही भोजन कर लेवे तो व्रत भंग नही ७ सागारीआगारेणं कहतां गृहस्थ देखतां साधू भोजन करे नही एसी जिनराजकी आज्ञा हे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पच्चक्खाण कर भोजन करणे वेगहे उस वखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तव साधू उस ठिकाणेसें उठकर ऊर ठिकाणे जाकर भोजन करे तो व्रत भंग नही ऊर गृहस्थकूं इसमें एसा आगार हे जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उस पुरुषके आणेसें एकासणेवाला उठकर ऊर ठिकाणे जाकर भोजन करेतो व्रत भंग नही ॥ ८ ॥ आउट्टणपसारेणं कहतां पग प्रमुख एकठा करणसें अथवा पसारणेसें ओम्रासा आसन चल जाय तो व्रत भंग नही ॥९॥ गुरु अब्भुट्ठाणेणं कहतां आपका गुरु आणेसें तथा आपसें कोइ वम्रा पुरुष आणेसें विनयके वास्ते भोजन करतां एकाशनादिकमें आसन छोम्र खम्रा हो जावे तोभी व्रत भंग नही ॥१०॥ पारिठावणियागारेणं कहतां सव पच्चक्खाणमें यह आगार साधुकाहे. जिस आहारके परठणेसें वहुत जीवकी विराधना होती जाणकर गुरु कहे यह आहार परठो मत सरस आहार हे तव

एकाशनादि व्रतधारी साधू गुरुके आज्ञासें डुसरी वखतज्ञी आ-
हार करे तो व्रत ज्ञंग नही ॥११॥ लेवालेवेणं कहतां ज्ञोजन कर-
णेका थाल प्रमुख ज्ञाजन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका
अंसलगाज्ञया हे उसकूं हाथ वगेरेमें पूब झाला उस परज्ञी किंचित्वे
मालम सालगारहे उसमें आयंबिलादि व्रतवाला ज्ञोजन कर लेवे
तो व्रत ज्ञंग नही ॥१२॥ उरिकत्तविवेगेणं कहतां आयंबिलादि पच्च-
क्खाणमें नही खाणे योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणें
योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत ज्ञंग
नही लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसें उगाय
सके नही एसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो उसके खाणेसें व्रत ज्ञंग
नही ॥१३॥ गिहत्थसंसिठेणं कहतां ज्ञोजन पुरषे जिससेती एसी कु
ऊी आदि देकर ज्ञाजन विगय प्रमुख द्रव्यसे वेमालम खरझी होय
प्रत्यक्ष निजरसें कदाचित्मालम न होय तब जो उसही वासणसें
ज्ञोजन पुरसे तोज्ञी व्रत ज्ञंग नही १४ पडुच्चमुक्खिएणं कहतां सर्व
था लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्मात्र घृतादिकसें वेमा-
लम चोपऊणेमें आयाहे लेकिन् घृतादिकका स्वाद नही मालम देता
हे तो नीवी पच्चक्खाणमें उस द्रव्यकूं खाणेमें आवे तो व्रत ज्ञंग
नही उर जो धारविगय लेवे तो व्रत ज्ञंग होय ॥ १५ ॥ इति पनरे
पच्चक्खाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केव-
लिपन्नत्तो धम्मोमंगलं १ चत्तारिलोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालो
गुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलिपन्नत्तो धम्मोलोगुत्तमो २ चत्तारिसरणं
पवज्जामि अरिहंतेसरणंपवज्जामि सिद्धेसरणंपव्वज्जामि साहूसरणंपव्व
ज्जामि केवलिपन्नत्तं धम्मंसरणंपव्वज्जामि ३ इच्छामि पडिक्कमिउं

पगामसिज्झाए निगामसिज्झाए संथाराउवट्टणाए परियट्टणाए आउंट-णाए पसारणाए छप्पइयासंघट्टणाए कुइए कक्कराइए छीए जंभाइए आमोसेससर रक्खामोसे आउलमाउलाए सोअणवत्तियाए इत्थीविप्प-रियासिआए दिठीविप्परियासिआए मणविप्परिआसियाए पाण-भोयणविप्परिआसिआए जोमेदेवसिउ अइयारोकउ तस्समिच्छामि-दुक्कडं पडिक्कमामि गोयरचरिआए भिखायरिआए उग्घाडकवाड उ-ग्घाडणाए साणावच्छादारा संघट्टणाए मंडीपाहुडिआए वलिपाहु-डिआए ठवणापाहुडिआए संकिएसहस्सागारे अणेसणाए पाणेस-णाए आणभोयणाए पाणभोयणाए बीअभोयणाए हरियभोयणाए पच्छाकम्मियाए पुराकम्मिआए अदिठहडाए दगसंसठहडाए रयसंसठ हडाए पारिसाडनिआए पारिठावणिआए उहासणभिक्खाए जंउ-ग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिशुद्धं पडिग्गहिअं परिभुत्तंवा जंनप-रिठवणिअं तस्समिच्छामिदुक्कडं पडिक्कमामि चाउकालं सिज्झायस्स अकरणयाए उभउकालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए अप्पमज्ज-णाए दुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मे देव-सिउ अइआरो कउ तस्स मिच्छामि दुक्कडं पडिक्कमामि एगविहे असंजमे पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं पडिक्कमामि तिहिं दंडेहिं मणदंडेणं वयदंडेणं कायदंडेणं पडिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं मिच्छादं सणसल्लेणं पडिक्कमामि तिहिं गारवेहिं इढ्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं पडिक्कमामि तिहिं विराहणाहिं नाणविराहणाए दंसणविराहणाए चारित्तविराहणाय पडिक्कमामि चउहिं क-साएहिं कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं पडिक्कमामि चउहिं सन्नाहिं आहारसन्नाए भयसन्नाए मेहुणसन्ना

ए परिग्गहसन्नाए पडिक्कमामि चउहिं विगहाहिं इत्थिकहाए भत्त- कहाए देसकहाए रायकहाए पडिक्कमामि चउहिं झाणेहिं अट्टेणं झाणेणं रुद्देणंझाणेणं धम्मेणंझाणेणं सुक्केणंझाणेणं पडिक्कमामि पंचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए पारताव- णीआए पाणायवायकिरियाए पडिक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं सद्देणं रूवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पडिक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं पाणाइवायाउविरमणं मुसावायाउवेरमणं अदिन्नादाणाउवेरमणं मेहुणाउवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं पडिक्कमामि पंचहिं समिईहिं इरिआसमिईए भासासमिईए एसणासमिईए आयाणभंडमत्तनि खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेलजल्लसंघाणपारिठावणियासमि- ईए पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सईकाएणं तस्सकाएणं पडिक्कमामि छहिं लेसाहिं किन्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए प- उमलेसाए सुक्कलेसाए पडिक्कमामि सत्तहिं भयठाणेहिं अठहिं म- यठाणेहिं नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं उवासगपडिमाहिं बारसहिं भिखुपडिमाहिं तेरसहिं किरियाठा- णेहिं चउदासहिं भूयगामेहिं पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं सोलसएहिं गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अठारसविहे अबंभे इगुणवीसाए ना- यझयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इकवीसाए सबलेहिं बावीसाए परीसहेहिं तेवीसाए सुयगडझयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पचवी साए भावणाहिं छव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं सत्ता वीसाए अणगारगुणेहिं अठावीसाए आयारपकप्पेहिं एगुणतीसाए पावसुअप्पसंगेहिं,तीसाए मोहणीअठाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं बत्तीसाए जोगसंगहेहिं तित्तीसाए आसायणाए अरिहंताणं आसाय णाए सिद्धाणंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवझायाणंआ-

सायणाए साहूणंआ० साहूणीणंआ०सावयाणंआ०सावियाणंआ० दे-
वाणंआसाय०देवीणंआ०इहलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलिपन्न-
त्तस्सधम्मस्सआ०सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ०सव्वपाणभूअजी-
वसत्ताणंआ० कालस्सआ०सुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणा
रिअस्सआ० जंवाइद्धं वच्चामेलिअं हीनक्खरिअं अच्चक्खरिअं पयहीणं
विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुठुदिन्नं, दुठुपडिच्छियं अकालेक-
उसज्झाउ कालेनकउसज्झाउ असज्झाइए सज्झाइयं सज्झाइए नसज्झा-
इयं तस्स मिच्छामि दुक्कडं णमो चउवीसाए तित्थयराणं उसभाइ-
माहावीरपज्जवसाणाणं इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं के-
वलियं पडिपुन्नं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं
निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमविसंधि सव्वदुक्खपहीणमग्गं
इत्थठियाजीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिवायंति सव्वदुक्खाण-
मंतंकरंति तंधम्मं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अ-
णुपालेमि तंधम्मं सद्दहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालिंतो अणु-
पालिंतो तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिउमि आराहणाए
विरउमि विराहणाए असंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि
अबंभं परिआणामि बंभंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं
उवसंपज्जामि अन्नाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं
परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिच्छत्तं परिआणामि सम्मत्तं
उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसंपज्जामि अमग्गं प-
रिआणामि मग्गं उवसंपज्जामि जं संभरामि जं च न संभरामि जं
पडिक्कमामि जं च न पडिक्कमामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स
अइयारस्स पडिक्कमामि समणोहं संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय
पावकम्मे अनियाणो दिट्ठिसंपन्नो मायामोसविवज्जिउ अड्ढाइज्जेसु
दीवसमुद्देसु पन्नरसकम्मभूमीसु ॥ जावंतिकेविसाहू, रयहरणगुच्छ

परिग्गहंधारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अठार सहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे॥ मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मझं नकेणई ॥१॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय दुगंछियं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणेचउव्वीसं ॥२॥ इतिश्री साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

## ॥ अथ पख्खी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिथंकरे अतिथे, अतिथसिद्धेय तिथसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजिणेयरिसी, महरिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर, मविरातिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणाभिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥ खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं करंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवठिउंतं, महव्वय उच्चारणं काउं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछठा तंजहा सव्वाउ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाउ मूसावायाउ वेरमणं सव्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं सव्वाउमेहुणाउवेरमणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं सव्वाउराइभोयणाउवेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाउवेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चख्कामि से सुहुमं वा वायरं वा तसं वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से पाणाइवायाए चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तउणं पाणा

इवाए सयललोए कालउणं पाणाइवाए दियावा राउवा भावउणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंती- पहाणस्स अहिरस्सोवसियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिखाविति्तियस्स कुख्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि- त्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निवाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाण याए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा- गदोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारब- गरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया- सोख्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ- वाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिं समणुन्नाउ तं निंदामि ग- रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प- डुपन्नं संबरेमि सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेव सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा- यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं साहुसख्खियं देवसख्खियं अप्पसख्खियं एवं हवइ भिख्खूवा भिख्खू- णीवा संजयविरय पडिहय पच्चख्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्सवेरमणे हिएसुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुख्खणयाए अ- सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव- णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणु- चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहख्ख

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि पढमे भंते महव्वए उवट्ठिउमि सव्वाउ पाणाइवायाउवेरमणं ॥ १॥ अहावरेदोच्चेभंते महव्वए मुसावायाउवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं पच्चक्कामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवाइज्जा नेवन्नेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणमि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मुसावाए चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं मुसावाए सव्वदव्वेसु खित्तउणं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालउणं मुसावाए दियावा राउवा भावओणं मुसावाए रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्कणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्कावित्तियस्स कुक्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्कालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निवित्तीलक्कणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा भासिज्जंतो वा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्कामि सव्वं मुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवसयंमुसंवइ

ञा नेवन्नेहिं मुसंवायाविज्ञा मुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तं दुक्खखयाए कम्मखयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवठिउमि सव्वाउ मुसावायाओवेरमणं २ अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाउवेरमणं सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामेवा नगरेवा रन्नेवा अप्पंवा बहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंत्तंवा अचित्तमंत्तंवा नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तओणं अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रन्नेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा राओवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इम्मस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खाविंत्तियस्स कुक्खीसंबलस्स

निरग्गिसरणस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि-
व्वियारस्स निव्वित्तोलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचि-
यस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण
फलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं
अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए
मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं
पडिपुन्नभारियाए साचासुक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्ग
हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा घिप्पंतंवा परेहिंसमणुन्ना
ओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अं
इयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्कामि सव्वं अदिन्नादा
णं जावज्जोवाए अणिस्सिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं
अदिन्नं गिन्नाविज्जा अदिन्नंगिन्नंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा
अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं
एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चक्काय पाव
कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा
णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आ
णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं
जोवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाय अजूरणयाय
अतिप्पणयाय अपीडणाय अपरियावणियाय अणुद्दवणयाय महत्थे
महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्थे तं
दुक्खक्खयाय कम्मक्खयाय मोहक्खयाय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय
त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अब्भुट्ठिओमि स-
व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह-
व्वए मेहुणाओवेरमणं सव्वं भंते मेहुणं पच्चक्खामि से दिव्वंवा मा-
णुसंवा तिरिक्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविज्ञा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि। अप्पाणं वोसिरामि से मेहुणे चउविहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्तओणं मेहुणे उड्ढलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मेहुणे दियावा राओवा भावओणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खाविक्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वत्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविज्जंतोवा परेहि समणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिंमेहुणंसेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइभिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एसखलु मेहुणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्थे तंदुख्खखयाए कम्मख्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओमेहुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते परिग्गहं पच्चख्खामि से अप्पंवा वहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं,परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहंपरिगिन्नंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्नेसुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खाविन्तियस्स कुख्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स अविसंबाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव-
गरुयाए चउकसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
सोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-
हिउवा गाहाविउवा घिप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदामि गरि-
हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुप्प-
न्नंसंवरेमि अणागयंपच्चक्खामि सव्वंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सि-
उहिं नेवसयंपरिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हाविज्जा परिग्गहं-
परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्ध-
सक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिक्खूवा भि-
क्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा
एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्स-
वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं
पाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए
असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-
णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने
परमरिसिदेसियपसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए बोहिलाभाए सं-
सारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए
उवट्ठिउमि सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं ५ अहावरेछट्ठे भंते महव्वए रा-
इभोयणाउवेरमणं सव्वं भंते राईभोयणं पच्चक्खामि सेअसणंवा पाणंवा
खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइंभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराइंभुंजाविज्जा राइंभुं-
जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं
वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि
तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राई-
भोयणे चउविहेपन्नत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं
राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तउणं राईभोयणे

समयखित्ते कालओणं राईभोयणे दियावा रत्तिंवा भावओणं राईभो-
यणे तित्तेवा कडुएवा कसाएवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा
दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्ख-
णस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि-
यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावि-
त्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स
गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स
असंनिहिसंचिअस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण-
गमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अ-
णभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए
मोहयाए मंदयाए किड्डयाए 'तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं
पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहंवा
भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुजंतंवा
परेहिंसमणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वा-
याए काएणं अइयंनिंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि
सव्वंराइ भोयणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयं राईभु-
जिज्जा नेवन्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुंजंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि
तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं
अप्पसक्खियं एवंहवइभिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरय पडिहय
पच्चक्खायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा
सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे हिएसुहेखमे-
निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिं-
भूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए
अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणु-
द्दवणयाए महत्थेमहागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि-

देसिएपसत्थे तंदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि छठे भंते महव्वए उवठिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इच्चेइयाइं पंच-महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछठाइं अत्तहियठाइं उवसंपज्जित्ताणंविह-रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिव्वरागायजाभासा तिव्वदोसातहेवय मुसावायस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अव-दिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दा-रुवारसागंधा फासाणंचविआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइ-क्कमे ॥ ४ ॥ इच्छापुच्छायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-धम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे बीयंवयमणुरख्खे विरियामो-अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-धम्मे तइयंवयमणुरख्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विर-यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-णधम्मे पंचमंवयमणुरख्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे छठंवयमणुरख्खे विरयामो-राईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमण-धम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाइयाओ ॥ १२ ॥ आलियवि-हारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे बीयंवयमणुरख्खे विरियामो-अलियवयणाउ ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे तईयंवयमणुरख्खे विरियामो अदिन्नादाणाउ ॥ १४ ॥ आलियविहार-समिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विरियामोमेहु-

णाउ ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे पंच-
मंवयमणुरक्के विरयामो परिग्गहाउ ॥ १६ ॥ आलियविहारस-
मिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे छठंवयमणुरक्के विरयामोराईभोयणा
उ ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे तिविहे-
णपडिक्कंतो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिछत्तं
एगमेवअन्नाणं परिवज्जंतोगुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-
वज्जजोगमेगं सम्मत्तंएगमेवनाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रक्कामिमहव्वए-
पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइंअट्टरुद्दाइं परिवज्जंतो-
गुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तंधम्मं दोन्नियझाणाइं-
धम्मसुक्काइं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा-
नीलाकाऊ तिन्नियलेसाऊअप्पसत्थाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि-
महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाउसुप्पसत्थाउ उव-
संपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविऊ
वायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविउ रक्खामिमहव्वएपंच
॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय परिवज्जंतो
गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं-
संवरंसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥
पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवज्जंतोगुत्तो रक्कामिम-
हव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेंदियसंवरणं तहेवपंचविहमेवसज्झायं उवसंप-
न्नोजुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायवहिं छप्पिय-
भासाउअप्पसत्थाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥
छव्विहमब्भिंतरियं वज्झंपियछव्विहंतवोकम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रक्कामि-
महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयट्ठाणाइं सत्तविहंचेवनाणविब्भंगा परि-
वज्जंतोगुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गहं-
सत्तिक्कयामहज्झयणा उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अठमयठाणाइं अठ्यकम्माइंतेसिंबंधिच परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वएपंच॥३४॥ अठयपवयणमाया दिठाअठविहनिठिअठेहिं उवसं पन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणाइं संसार-ठायनवविहाजीवा परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ नवबंभचेरगुत्तो दुनवविहंबंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिम हव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंबरंतहयसंकिलेसंच परि वज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिठाणा दस चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥ आसायणंचसव्वं तिगुणं एकारसंविवज्जंतो परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंतिदंडविरउ तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो ति विहेण पडिकंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥४१ ॥ इच्चेयंमहव्वयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइवलंवसाउ साहणठोपावनिवारणं निकायणा भावविसोही पडागाहरणं निजूहणा राहणा गुणाणं संबरजोगो प सत्थझाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमठो उत्तमठो एसखलुतित्थं करेहिं रइरागदोस महणेहिं देसिउ पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय संजमं उवइसिउं तिल्लुक सक्कयंठाणं अब्भुवगया नमोत्थुते सिद्धबुद्ध मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंत मप्पमेय न मोत्थुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहउ नमोत्थुते भग वउ त्तिकट्टु इच्चेसा खलुमहव्वयउच्चारणाकया इच्छामोसुत्तकित्तणं काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भग वंतं तंजहा सामाइयं चउवीसत्थउ वंदणयं पडिक्कमणं काउसग्गो पच्च क्खाणं सव्वेहिं विएयंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनिज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भ गवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपख्खस्स अंतोचउमासीए अंतो संवछ्छरस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्ता रणाए त्तिकट्टुउवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपख्खस्स जंनवाइयं नप ढियं नपरियट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवी रिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमोपडिक्कमामो निंदामो गरि हामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अभुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायछ्छित्तंपडिवज्जामो तस्समिछ्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जे हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंद थुउ तंदुलवेयालियं चंदाविज्झयं पमायप्पमायं वीयरागसुयं विहार कप्पो चरणविसोही आउरपच्चख्खाणं महापच्चख्खाणं सव्वेहिंपिए यंमि अंगबाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनि ज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं प न्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावेसद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं अणुपालंतेणं अंतोपख्खस्स जंवाइयं पढियं परिअट्टियं पुछियं अणु पेहयं अणुपालियं तंदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहखयाए बोहि लाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणंविहरामि अंतोप ख्कस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपा लियं संतेबले संतेबोरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो प डिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमोविसोहेमो अकरणयाए अभुट्ठे मो आहारिहं तवोकम्मं पायछित्तं पडिवज्जामो तस्समिछामिदुक्कडं न मोतेसिं खमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगबाहिरियं उक्कालियं भगवंतं

तंजहा उत्तरज्झयणाइं दसाउकप्पोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं जंबुद्दीवपन्नत्ती सूरपन्नत्ती चंदपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती खुड्डियाविमाणपविभत्ती महल्लियाविमाणपविभत्ती अंगचूलिया वंगचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए नागपरियावलियाउ निरयावलियाउ कप्पियाउ कप्पवडिंसयाउ पुप्फियाउ पुप्फचुलियाउ वह्लीदसाउ आसीविसभावणाउ दिट्ठीविसभावणाउ चारणसुमिणभावणाउ महासुमिणभावणाउ तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिएयंमि अंगबाहिरए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निज्जुत्तीए ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ते भावे सद्दहंतेहि पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपख्खस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपख्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्जामो तस्स मिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडगं भगवंतं तंजहा आयारो सूयगडो ठाणो समवाउ विवाहपन्नत्ती नायाधम्मकहाउ उवासगदसाउ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइअदसाउ पण्हावागरणं विवागसुयं दिट्ठिवाउ सुदिट्ठिसुहाउ सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहि भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

द्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्द हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पख्खस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तं दुख्खख्कयाएकम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपख्खस्स जंनवाइयं नपढियं नप रियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिस क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामोविउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिव ज्जामो तस्समिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणंजेहिंइमंवाइयं दुवाल संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टं ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ सुय देवयाभगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिं सुयसागरेभत्ती १ इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥



## ॥ अथ अष्टपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाछली घडियें निद्रा दूर करीनें, पंचपरमेष्टि स्म॰ रण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पडि॰ लेही राख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशालायें आप॰ नाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी, भूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पछें ख॰ मासमण देई, ॥ इछाका॰ ॥ सं॰ ॥ भ॰ ॥ पोसह मुहपत्ती पडि॰ लेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पछें उभो थई, खमासमण देई इछाका॰ ॥ सं॰ ॥ भ॰ ॥ पोसह संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह, पछें इछं कही, ख॰ मासमण देई. इछाका॰ ॥ सं॰ ॥ भ॰ ॥ पोसह ठाउं ? गुरु कहे

ठाएह, पीछें इछं कही खमासमण देई उन्नो थई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इ-च्छकार ज्ञगवन् पसाउ करी, पोसह दंरूक उच्चरावो ? गुरु कहे उ-च्चरावेमो ॥ पीछें करेमि ज्ञंते पोसहं ॥ इहांसें ले के अप्पाणं वो-सिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पच्चख्खाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पच्चरकाण प्रारंभः ॥

॥ करेमि ज्ञं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसउ सवउ वा, सरीरसक्कार पोसहं, सवउ बंज्ञचेर पोसहं, सवउ अवावार पोसहं, सवउ चउविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पच्चख्खामि, जावदिवसं अहो-रत्तिं वा पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स ज्ञं ते पमिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञाषण करतो उच्चरे ॥ पीछें एक खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे, पमिलेहेह. बीजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे. पीछें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्साउं? सामायिक ठाउं? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊज्ञो थको तीन नवकार, गुनी तीन करेमि ज्ञंते उच्चरी दोय खमासमणें बे-सणो संदिस्साउं? बेसणो ठाउं? कही, पीछें दोय खमासमणें सि-ञ्जाय संदिस्साउं? सिञ्जाय करुं? कही खमासमण देई ऊज्ञो थको, आठ नवकारनो सिञ्जाय करे. शीतादि परिसहें दोय खमासमणें, पागरणुं संदिस्साउं? पांगरणुं पमिग्घाउं? कहे. ए सर्व सामायिक-विधि पूर्वं कह्यो छे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष छे. पहिलां इरियावही पमिक्कमी छे, तेमाटें इहां सामायिक दंरूक ऊच्चरथां पीछें इरियावही नही पमिक्कमीजें ॥ पीछें चैत्यवंदन, जयवीयराय

सूधी करी कुसुमिण डुस्सुमिण काउस्सग्ग करे, पीछें पमिक्कमण- वेलासीम सिझाय ध्यान करे. पीछें पूर्वोक्त रीतें पमिक्कमण करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांद्या पीछें खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछें इछं कही खमासमण देइ कहे. इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं करुं? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इछं कही, तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं इत्यादि नम- स्कार जणे, जो पमिलेहणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिझाय करे. हवे पमिलेहण वेला पमिलेहण करे. ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३२ पृष्ठमां लिख्यो छे तो पण संक्षे पें फेर लखीयें छैयें. दोय खमासमणें,इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पमिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पमिलेहे. पीछें दोय खमा- समणें अंग पमिलेहण संदिस्साउं ? अंग पमिलेहण करुं ? कहे. पीछें गुरुवचनें इछं कही. धोतियो कणदोरो पमिलेही वस्त्र पहेरी, खमासमण देई, इछकार जगवन्! पसाउ करी, प- मिलेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पमिलेही स्थापे, अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पमिलेहे, तो पण खमासमण देई उक्त रीतें आग्या मागे. पीछें खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे, पमिलेहेह. पीछें इछं कही, मुहपत्ती पमिलेही दोय खमासमणे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उंही पमिलेहण संदिस्साउं? गुरु कहे, संदिस्सा वेह. उंही पमिलेहण करुं? गुरु कहे. करेह,

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मझ्के उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मझ्के पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे मझ्के उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ए ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मझ्के पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मझ्के उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे मझ्के पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १ए ॥ अणागाढे मझ्के उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मझ्के पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए थंमिलपमिलेहण पाठ कह्या ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां? सो लिखते हैं.

॥ ६ थंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम पासे ३, पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके भीतर पासें दहिणें ३, वामें ३ पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके बाहर दोनुं पासें पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां जिहां उच्चार प्रस्रवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ पमिलेहे ॥ इति २४ थंमिलां पमिलेहणविधिः संपूर्णः ॥

पीछें इरियं कही, कंबल वस्त्रादि पमिलेही पोसह शाला प्र

मार्जी काजो विधिशुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. इहां आचार दिनकरमें कह्यो छे. दोय खमासमणें इच्छा का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्साउं ? वसती पडिलेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे. इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिझाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिझाय करुं ? गुरु कहे करेह. पीछें इच्छं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, जणे, गुणे. वखाण सुणे. इम करतां पूर्ण पहुर दिन चढयां. उग्घाडा पोरिसी अथवा, बहुपडिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई, इरियावही पडिक्कमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ज० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छं कही, मुहपत्ती पडिलेही पान भोजन पात्र पडिलेही राखे. पीछें सिझाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्सही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्रस्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, भूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रभुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पासें बेसे. पीछें ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे. पीछें नमोत्थुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करे. मुखें लोगस्स कहे. संडासा प्रमार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. "जं किंचि नाम तित्थं" इत्यादि कही पीछें नमोत्थुणं कहे. उभो थई अरिहंत चेईयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्ती०

अन्नत्थू० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीछें लोगस्स० सव्वलोए अरि० वंदणव० अन्नत्थू कही एक नव० पारी दूरी थुईकी गाथा कहे. पीछें पुरक्खरवरदी० सुअस्स भग० वंदण० अन्नत्थू कही एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थू० इत्यादि कथन पूर्वक चोथी थुइकी गाथा कह कर, बैठकें नमोत्थूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरें चार थुइयें देव वांदी बेसे ॥ नमोत्थूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीछें स्तवन कहे, पीछें जयवीयराय कही, नमोत्थूणं सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो छे. तथा चैत्यवंदन बृहद्भाष्यमें एम कह्यो छे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसें देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही " जावंति चेइयाइं " गाथा भणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोत्थूणं कही जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीछें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पडिक्कमे. पीछें सिज्झाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पच्चख्खाण वेला पूर्ण हुवां जल पीणेकूं पच्चख्खाण पारे ॥

॥ हवे पच्चख्खाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पच्चख्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥

ज० ॥ पाणहार अमुक पच्चक्खाण पारुं ? -गुरु कहे, पुणोवि का यव्वो. पीछें यथाशक्ति कहो, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कही, अमुक पच्चक्खाण चउविहार कर्यो, एम एक नवकार गुणी पच्चक्खाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आराहियं, तस्स मिच्छामि डुक्कडं, कही ॥ चैत्यवंदन करे. क्षणमात्र सिज्झाय करी यथासंभवें अतिथिसंविभाग करी पाणीपीवे॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पच्चक्खाण पारी आहार करे. पीछे आसण बैठो थकोहीज दिवस चरिम पच्चक्खे, पीछें इरियावही पडिक्कमी चैत्यवंदन करे. ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें छे ॥ इति पच्चक्खाण पारणेका विधि ॥

॥ पीछें जो बहिर्भूमि जावणो हुवे, तो आवस्सही कही उपयोगी थको, निर्जीव थंडिले जई; अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजलें शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही प डिक्कमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ गमणा गमणं आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीछें इच्छं कही गमणाग मण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुक देशें जई, संडा सा पूंजी, थंडिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंडियं, जं विरा हियं, तस्स मिच्छा मि डुक्कडं, एम कही बेसे. पीछें पडिलेहण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाछले प्हुरे इरियावही पडिक्कमी खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु कहे करेह.

इछं कही दूजे खमासमणे इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाला प्रमार्जुं ? गुरु कहे, प्रमार्जेह. पीछें इछं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे. पीछें गुरु वचनें इछं कही मुहपत्ती पडिलेही दंडासणो पूंजणी प्रमुखलें प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीछें काजो शुद्ध करी, उद्धरी एकांतें विखरतो परठवी इरियावही पडिक्कमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥ इछकार जगवन् पसाउ करी पडिलेहणां पडिलेहावोजी ॥ पीछें स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे. गुरुसमीपें अथवा आपनाचार्य समीपें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पीछे दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करुं ? उक्त रीतें कणमात्र सिझाय करी तिविहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार पच्चखे ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वांदणां दोय देई, पच्चख्काण करे. पीछें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंडिलां पडिलेहण संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंडिलां पडिलेहुं? गुरु वचनें इछं कही, दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणो संदिस्साउं बेसणो ठाउं ? कही बेसे. वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पडिलेहे. उपवासी तो छे तेमाटें सर्व पाछो कडिपट्टो धोतीयो कणदोरो पडिलेहे, उपधानवाही प्रमुख जोजन कीधो हुवे तो कडिपट्टादि पडिलेह्यां. पीछें वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. ए विशेष छे ॥ पीछें कालवेला सीम सिझाय ध्यान करे. पीछें उच्चार प्रश्रवण. २४ थंडिला पडिलेहे, जो चउदश हुवे, तो पांखी चउमासी पडिक्कमणो करे, संवछरीयें

संवछरी पडिक्कमणो करे. तिहां देवसी पडिक्कमणो पूर्वे लिख्यो छे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष छे ॥ इछा० ॥ देवसियं आलो एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीछें " ठाणे कमणे चंकमणे " इत्यादि पाठ कहे. खुद्दोवद्दव काउस्सग्ग कियां पीछें दोय खमासमणें ॥ इछाकार० ॥ सं० ॥ ज० सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करुं? कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिझाय करे ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि आगे एही पुस्तकमें लिख गये हैं. वहासें जान लेनां.

॥ हवे पडिक्कमणो हुवा पीछें साधुको वेयावच्च करी पोरसी सीम सिझाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसज्ञ कहेतो थको, भूमि प्रमार्जे थंडिल स्थानकें जई, देहशंका निवारे प्रश्रवण वोसिरावी, स्वस्थानकें आवे. भगवन् ! बहु पडिपुन्ना पोरसी एम कही खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे, पीछें राई संथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इछाका० सं० ॥ भ० ॥ राइ संथारा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इछं कही, खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. एक खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राइ संथारो संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें ॥ इछाका० सं० ॥ भ० राई संथारो ठावुं ? पीछें गुरु वचनें इछं कही, चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीयराय सूधी चैत्यवंदन करे. भूमि प्रमार्जी, संथारो उत्तर पट्टो पाथरे. पीछें शरीर प्रमार्जी निस्सही निस्सही एम कही संथारे बेसी, तीन नवकार तीन करेमि भंते उच्चरी ॥ णमो खमासमणाणं, गोयमाईणं महामुणीणं, 'अणुजाणह जिछिज्ञा अणुजाणह परम गुरु'

इत्यादि राइ संथारा गाथा जणी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवामो फेरे तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेरे, जो देह शंकायें ऊठे, तो पूर्वोक्त विधे देहशंका निवारी, इरियावही पमिक्कमे ॥ पीछें जघन्यें पण तीन गाथानी सिद्धाय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिनें पाछिले पहोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पमिक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्सुमिण काउस्सग्ग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पमिक्कमे. पीछें दोयखमासमणें सिद्धाय संदिस्सावी आठ नवकार गुणी, पमिक्कमण वेला सीम सिद्धाय करे. पमिक्कमण वेला हुवां पमिक्कमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष छे, के राइ आलोयां पीछें संथारा उवट्ठणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पमिक्कमणो करी पमिलेहण वेलायें पूर्वोक्त विधें पमिलेहण करी, धर्मशाला पूंजी काजो ऊद्धरी इरियावही पमिक्कमे. दोय खमासमणें सिद्धाय संदिस्सावी, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धाय करे. पीछें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं? गुरु कहे, पुणोवि कायवो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारयुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रें ऊजो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पमिलेहे, पीछें खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं ? गुरु कहे पुणोवि कायव्वो, पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारयुं ? गुरु कहे आ-

यारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उन्नो थको हाथ जोड्यां- मुहपत्ती मुखें दिधां थकां तीन न वकार गुणी संथारा पडिलेहे. गोडालीयें बेसी मस्तक नमावी, "भयवं दसन्नभद्दो" इत्यादि भावनारूप गाथा कहे. पीछें पोल- हना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे. घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविभागव्रत सा- चवण निमित्तें साधु भणी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु प ण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीछें साधुनें जे आ हार दीधो, तेहनोहीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीछें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरथकी निश्चिंत थई धर्मस्थानकें आवी, सर्व उपगरण पडिलेही, कचरो विधिशुं परठवी इरियावही पडिक्कमे. खमास- मण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुहपत्ती पडिलेहे, आगें पोसह ग्रहणका विधि पूर्वे लिखा है. तिमहिज जाणवो. पण दिवस पो- सहहीज करणो हुवे, तो पोसह दंडक उच्चरतां जावदिवसं पज्जु- वासामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठपुहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि एहवो पाठ कहे. पीछें सामायिक विधि सर्व करी चैत्यवंदन कुसुमिणदुस्समिण काउस्सग्ग करी पडिक्कमणो करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे १, अने जो पूर्वें प डिक्कमणो गुरु साथें कर्यो हुवे, तो पडिक्कमणानें अंतें पडिलेही राख्यां जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे १, तथा जो गुरुसें जूदो पडिक्क- मणो कर्यो हुवे, तो गुरुपासें आवी पोसह सामायिक सर्व विधि करी, आलोयण खामणादि निमित्तें मुहपत्ती पडिलेही बे वांदणां

देई ॥ इछाका० सं० ॥ ज० ॥ राइयं आलोउं ? गुरु कहे, आ-लोएह. पीछें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ज० ॥ अप्नुठ्ठिमि अप्निंतर, राईयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह. पीछें सब पाठ कहे, राई खामे, पहिलां पमिक्कमणामें न-वकारसी पच्चख्यो थो तेमाटें पीछें गुरु साखें पच्चख्काण उपवासनो करे. पीछें दोय खमासमणें वहुवेलं संदिस्सावे ॥ ए तीन प्रका-रका विकल्प जाणनां. हवे पमिलेहण तो पूर्वे करी छे, तो पण आदेश मागवो, ते एम खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पमिलेहण संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें पमिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पमिलेहे. पीछें इमहीज दोय खमासमणें अंग पमि लेहण संदिस्सावी मुहपत्ती पमिलेहे. पीछें वली खमासमण देई इछकार जगवन्! पसाउ करी पमिलेहण पमिलेहावो जी. एम कहे, पीछें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उ पधि मुहपत्ति पमिलेहुं ? कही कोई वस्त्र अणपमिलेह्यो राख्यो हुवे, तो पमिलेहे, नहीं तो वली आसण पमिलेहे. दोय खमास मणें सिझाय संदिस्सावी उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करे. आगें सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लिखी है, तिमहीज जाणवी, पण इहां अठ पुहरी पोसह तो पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. जिणें दिवस संबंधी चउ पुहरी पोसह लीधो हुवे, ते पाछले पुहर पच्चख्काण किया, पीछें दोय खमासमणें उंही पमिलेहण सं दिस्साउं ? उंही पमिलेहण करुं ? कहे, पण थंमिला पद न कहे. अने थंमिला नहीं पमिलेहे.यह निःकेवल दिन संबंधी पोसह ग्र हण करणेमें विशेष विधिही, सो बताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह ग्रहणविधिः ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊचरयो है. पीछैं संध्यानी पडिलेहण करतां रात्रि पोसहनो नाव थयो, तो पच्चस्काण कियां पीछैं दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पडिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंडक उच्चरे. तिहां जाव रत्तिं पज्जुवासामि एम पाठ उच्चरे, पीछें सामायिक विधि पूर्वं लिख्यो तिम करे पण सामायिक ऊचरयां पीछैं दोय खमासमणें सिझाय संदिस्सावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्सावी, पांगरणो संदिस्सावी, पीछें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उही थंडिलां पडिलेहण संदिस्साउं उही थंडिलां पडिलेहण करुं? गुरु कहे, करेह. इच्छं कही उपधि पडिलेहे. आगैं सर्व क्रिया पूर्वं लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसैं पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो नाव थये, पाछले पहुर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सरयो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगरण पडिलेही इरियावही पडिक्कमे. पीछैं चउविहार पच्चस्काण करी दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमण देई पोसह संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंडक ऊच्चरे. तिहां दिवसेसंरत्तिं पज्जुवासामि कहे. संध्या हुवे, तो रत्तिं पज्जुवासामि कहे. पीछैं बिहुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पडिलेहे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि भंते ऊच्चरे. दोय खमासमण देई सिझाय संदिस्सावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्सावी सीतादिकें बे खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्सावे. पीछैं बे खमासमण देई, अंग

पमिलेहण संदिस्सावी, मुहपत्ती पमिलेहे. फेर बे खमासमण देई, छही थंमिलां पमिलेहण संदिस्सावी जो अणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पमिलेहे. जो सर्व उपगरण पमिलेह्यां हुवे, तो पण थानक शून्यता टालवा भणी वली आसण पडिलेही, पडिक्कमण वेला सीम सिझाय ध्यान करे. पीछैं उच्चार प्रश्रवणना २४ थंडिला पडिलेही पडिक्कमणो करे. तथा पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. इतनां निकेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ गणेक्कमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे छप्पइयासंघट्टे सवस्सवि देवसिअ, दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिअ ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥ संथाराउवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी, पसारणकी, छप्पइयासंघट्टणकी, अचक्खुविसयकायकी, सवस्स विराइअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिय, इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥

## ॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

### ॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंमणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महानंद लच्छी बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, भवस्संति ते सव भवाण ताया ॥ तहा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तार संसार कुवार पोयं, कलंका वली पंकपक्खाल

तोयं ॥ मणोवंछियछे सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणंजोजलीणा, कलारूव लावस सोहग्ग पीणा ॥ वहं तस्स चित्तंमि णिच्चं पि फाणं, सिरी जारई देहि मे सुकनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं, पंचानुत्तरसीमदिव्य पदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांछनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचहृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतभृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाभं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी, पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रह्वो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न पञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां भवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चउवीसे जिनवर, प्रणमुं हुं नितमेव ॥ आठम दिन करियें, चंद्रप्रभुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिम चंद ॥ दीठां दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रभु जीना पाय ॥ इंद्राणी अपछर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर द्वीपें मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ महोछव, करता दोडादोड ॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरें, जाणी लाभ अपार ॥ चउमासें रहिया,

गणधर मुनि परिवार ॥ जविथणनें तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणुं, करियें व्रत पच्चरकाण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कल्याण ॥ जिनसूखसूरि कहे, इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं ॥ वलक्षैकादश्यां सहसि लसदुद्दाममहसि, क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेंद्रश्रेण्या गमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिनानामप्यायुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, क्षितौ० ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तॄणामिति च विदितं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुभवेयुर्बहुमुदः, क्षि० ॥३॥ सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्काखिलभवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तॄणां विदधति सुखं विस्मितहृदः, क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ डेंडेंकि धपमप, धुधुमि धोंधों, धसकिधर, धपधोरवं ॥ दोंदोंकि दों दों, दाग्डिदि दाग्डिदिकि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणवं ॥ झझिंझेंकि झेंझें, झणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुर शैल शिखरे, जवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थोंगिनि, किटति गिगडदां धुधुकि धुटनट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगण, रणकि णेंणें, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ झझि झेंकि झूंझूं, झणण रणररण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितकलमल, मुकलमीश, महे जिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठेंकि ठेंठें, ठहेंक ठ

ह्निंक, गह्निंपट्टा, ताड्यते ॥ ललकोंकि लोंलों, त्रेंषि त्रेंपिनि, मेंपिमेंषि नि, वाद्यते ॥ त्रें त्रें कि त्रें त्रें, थुंगि थुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कल रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुच्चवे ॥ ३॥ धुंदांकि धुंदां, धुधुद्दि धुंदां धुधुद्दि दोंदों, अंबरे ॥ चाचपट चचपट, रणकि णेंणें रुणाणा रूरैं, रुंबरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस, सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाव्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी, करुणासागर निजगुण आगर शुन्न समता रस धामी जी ॥ श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेंजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरंतां लहियें, अविचल पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिणें ए नीति प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें जी ॥ तेर सहस वलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ॥ इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥ विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्केसरि देवी जी ॥ नवपद सेवक न्नविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गह्न नायक सदगुरु, श्रीजिनन्नक्ति सुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरि पन्नणे, श्रीजिनलान्न सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद० ॥

॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजु

सण, दाख्यां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूंती दिन पंचास, पडिक्कमण संवछरी करियें त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करियें जलें जावें जरियें पुण्य जंमार ॥ वलि चैत्य प्रवाडें फिरतां लाज्न अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महि मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्प सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परज्ञावना धूप अगर उखेव, इम ज्ञवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि साहम्मीवछल करियें वारंवार, केइ ज्ञावना ज्ञावे केइ तपसी शी· लधार ॥ अरुदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध कहे जिनलाज्न सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्लअक्षोज्ञितं, घन सघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंछन शोज्ञितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन ज्ञविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदें श्रीआदिजिनवर वीर जिन पावापुरें, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे ॥ समेतशिखरें वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघें सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणियें, छ छेद ग्रंथ प्रसत्थ अत्था चार मूल वखाणियें ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन मत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी ज्ञाष्य पेंतालीश आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ डुहुं दिसें बालक दोय जेहने सदा ज्ञवियण सुखकरू, डुख हरें अंबा लुंब सुंदर डुरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंमण नेमि जिनवर चरणपंकज सेवियें, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो अंबा देवियें ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंमण श्रीनेमि० ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, क्ष्मापालप्रभुहस्तपालविपुलश्रीशुक्रशालामनु ॥ गोसे कार्त्तिकदर्शनागकरणे तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्रभुम् ॥ १ ॥ यन्निर्वागमनोद्भव व्रतवरज्ञानाकरास्विक्षणे, संभूयाशु सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिनवादिवीरचरमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यने नांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिध, स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचयांचकुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनैकसमये सम्यग्दृशां भूस्पृशां, भूयाद्भावुककारकप्रवचनं चेतश्चमत्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थभावनपरा सिद्धायिका देवता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिनचंद्गीस्सुमतिनो भव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

## ॥ अथ थुइसंग्रह लिख्यते ॥

### ॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेह विषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरणकमल तसु नामूं सीस । अहनिस समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पंच मेरुपासे झलकंता । सोहे वीस महा गजदंता ॥ तिण ऊपर जे जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥२॥ गणहर कहिय दुवालस अंग । आंनक वीस भणया तिहां चंग ॥ तिण ऊपर जे आणे रंग । ते नर पामे सुख अभंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी चउवीस । पूरे मुझ मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विघन निवारे । तिहुअण ज न मन वंछिय सारे ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ नगरजेसलमेरविभूषणं । भजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरेश्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहभंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थकराः सुखकारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जिनशासनं । विपुलमंगलकेलिविलासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका । फलति तस्य मनोरथमालिका ॥३॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी । जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियहारसुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तधणं ॥ पंकयलप्पयदेवगणं । सिरिअवुय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसियपायजुआ घणमोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिच्चलजीवदया । मम हुंति जिनागमसुक्खसया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं । कल्लाणपयोरुहवुड्ढिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जिनागममन्दिकरं ॥ ३॥ सिरइंदसमुज्जलगायलया । सुहझाणविणम्मियएगलया ॥ असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया । मम वाणि सुहाणि कुणेसुसया ॥ ४ ॥ इति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेसर, परमातमपद धारीजी । प्रथम जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिनराज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेसर लोकदिनेसर, आतमसंपद भूपोजी ॥ १ ॥ पांच भरत वलि पांचे एरवत, पंच विदेह मझारोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिव पद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, थास्ये इणही प्रका

रोजी । संप्रति काले वीस विहेहे, वंडु बहु सुखकारोजी ॥ २ ॥
अरथे श्रीजिनराज वखाण्या, गूथ्यां श्रीगणधारोजी । अंग डुवालस
अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय जंग
प्रमाणे, जिहां षट्द्रव्य विचारोजी । ते आगम मन शुद्ध आराध्यां,
तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्केसरिदे
वोजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी यो, वंछित नित सेवीजी
॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजि
नचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्र
णमे देव अने देविंद ॥ जवलहरी गहरी सब मन धरी अमंद ।
श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अति
शय वलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस ॥ अगणि
त रुद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंडु जिन चोवी
स ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन जाषित सिद्धांत । स्याद्वादन
यादिक हेतुयुक्ति नवि भ्रांत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सह
नाणी । सुणिये नित जविका आगमकेरी वाणी ॥३॥ सासणनी
साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥
साचे मन समरे ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पयंपे होज्यो
जय२कारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोझारी ॥

॥ यदंह्रिनमतादेव । देहिनः संति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु
वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नाजे
यजिनादिजिनपति ॥ नौमि यद्वचनपालनपरा । जलांजलिंददतु दुःखे
ज्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुगणाग्रतो जिनाः । सदर्थतो यद्रचयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥ ३॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सहदेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यताभिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । भव्यान् जनानवतु नित्यममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुति अणोऊारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे १ जैनाः पादा युष्मान् पांतु २ जैनं वाक्यं भूयाद्भूत्यै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन सात हाथ तनु मांन, दिनदिन सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरविंद, कामित भरपूरण अभिनव सुरतरुकंद ॥ भवियणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवावीस ॥ २ ॥ अरथे करि आगम भाख्या श्रीभगवंत, गणधर ते गूंथ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥ अहनिसि कर जोडी सेवे सुरनर इंद, जंपे गुणगण इम श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नाभेयं संभवं तं, अजियसुविहयं, नंदणं सुव्वयद्धा ॥ सुप्पासं पउमनाहं, सुविधशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं धमेशातिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंथुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं, नमिमविनमिसौ, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गब्भे हाणेसु जम्मे,

वय गहणखणे, केवले खोयकाले, पम्ताणिव्वाणठाणे, पगवर्श समए, संथुआ त्रावसारं ॥ देवेहिं दाणवेहिं, त्रवणवणसए, विंतरे किंन्न रेहिं, । तं मझं दिंतु मोस्कं, सयलजिनवरा, पंच कल्लाण एसु ॥२॥ हेऊं तित्थंकराणं, जमिहअणुवमं, त्रावतित्थंकरंतं । सवन्नूणं च पासा, अहमविनियमा, जायए सवकालं ॥ अन्नुन्नप्पत्तिएहिं, नियगममहणं, बीयअंकूररूवं । अबावाहं जिणाणं, जयउ पवयणं, पंच कल्लाण एसु ॥३॥ गोरीगंधारकाली, नरवरमहिषी, हंससंगोरिहभा । सवभामाणमं बा, वरकमलकरा, रोहिणीछत्तअंबा ॥ पन्नत्ती छत्तपउमा, धणइसर णाई, खित्तगेहाइवासा । संतिं संघे कुणंतु, गहगणसईया, पंच क ल्लाण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकल्याणकस्तुति ॥

## ॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेत्रुंजमंरूण आदिदेव । हूं अहनिस समरूं तास सेव ॥ रायणतल पगलां प्रत्रूतणा । पूजि सफल फल सोहामणा ॥१॥ तेवीस तीर्थंकर समवसरया । विमलाचल ऊपर गुण त्ररया॥ गिरि करूणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेलो मुगतिसाथ ॥२॥ सोहम सांमी उपदिस्या । जंबुगणधरने मन वस्या ॥ पुंरूरगिरि महिमा जे मांह। ते आगम समरूं मनउछाह ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुख क वरूयक्त । मन वंछित पूरण कल्पवृक्त ॥ सिद्धक्षेत्रसिहरे सहदेव ता । त्रणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इतिश्रीसत्रुंजयस्तुति ॥

## ॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाण । दीक्ता, वर केवल ज्ञान अने निरवांण ॥ जसु तीन कल्याणक सुखकर सुरतरुकंद । तसु त्रवियण प्रणमो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अष्टावय चंपा पावापुर गुज्ज ठाण । आइम बारम जिण चउवीसम जिणन्नाण ॥ अजिता दिक वीसे पुहता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमुं अधिक

उल्हास ॥ २ ॥ जिणवर मुख हूंती सुणि त्रिपदी ततकाल । ग णधारक गूंथ्या द्वादश अंग विशाल ॥ नयभंग पदारथ सत्तश् नव तत्त । भवियणने तारे सायर जिम बोहित्थ ॥ ३ ॥ चक्केस रि अंबा पनमादेवि प्रत्यक्ष । श्रीसंघ मनोरथ पूरे बासुरवृक्ष ॥ ध्या वे सुख पावे श्रीजिनलाभ सरीस । जिनवर सुप्रसादे आस फले सुजगीस ॥ ४ ॥ इतिनेमजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीशितलजिन स्तुतिः ॥

॥ सुख समकितदायक कामित सुरतरुकंद । दढरथ नृप रां णी नंदाकेरो नंद ॥ भद्दिलपुर स्वामी फेमे भवना फंद । चित चो खे नमिये श्रीशीतलजिनचंद ॥१॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अ नंत । संप्रति काले जे क्षेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहुं भवणे ठवणा सासय असासय हुंत । ते सगला त्रिकरण प्रणमुं श्रीअ.रिहंत ॥ २ ॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग पविठ । नयभंग निखेपा स्या द्वाद मितसिठ ॥ भविजन उपगारी भारी जिन उपदेश । श्रुत श्रवणे सुणतां नासे कोमि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजक्ष असोका सा सन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥ चिंता दुख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिन लाभसूरिस ॥ ४ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ समवसरणविचारगर्भित स्तुतिः ॥

॥ मिल चोविह सुरवर विरचे त्रिगमो सार । अढी गाउ ऊंचो पिहुलो जोयण पार ॥ विच कनकसिंहासन पद्मासन सुख कार । श्रीतीरथनायक वैसै चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन छत्र सिरो वर चामर ढोले इंद । देवडुन्दि वाजे भांजे कुमति फंद ॥ भा मंमल पूंठे फलके जांण दिनंद । तिहुअण जन भवि मन मोहे सयल जिनंद ॥ २ ॥ द्रव्य भाव सुठवणा नाम निक्षेपा च्यार ।

जिण गणहर जाख्या सूत्र सिद्धांत मझार ॥ जिनवरनी पडिमा जिन सरखी सुखकार । शुभ भावे वंदो पूजो जग जयकार ॥३॥ दुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । भवछेद कृपाणी मीठी अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिबूझो भवि प्राणी । सुय देवि पसायें पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेत्रुंजगिरि नमिये ऋषभदेव पुंडरीक । शुभ तपनी महिमा सुण गुरुमुख निरभीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य वंदनीक । करिये जिन आगल टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र स्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस । अक्षत गिणतीसें चढता तिम चालीस ॥ पंचासनी पूजा भाखइ इम जगदीस । तेहिज नित प्रणमूं स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्षनी पूनम चैत्र मास शुभ वार । विधिसेती लहिये आगम साख विचार ॥ इम सोले वरसलग धरिये ज्ञान उदार । करतां नर नारी पामे भवनो पार ॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्केसरीदेवी सेविय नर सुरवृंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद । जंपे गणनायक श्रीजिनलाभसूरिंद ॥ ४ ॥ इतिश्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद महिमा भाषी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमथी नव दीस । नव आंबिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरिहंत वलि सिद्ध आचारज उवझाय । मुनि दरसण तिम वलि नाण चरण तव थाय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय हजार । सहु जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ बारस अडत्तीस पण वीस सग वीस सार । सडसठ इक्कावन सितर पच्चास प्रकार ॥ इम

संख्या काउसग परदक्षा परिणाम । आगम भाषित विधि इम कीजे अभिराम ॥ ३ ॥ चक्केसरिदेवी तिम विमलेसर जक्ख । श्री पाठतणीपर पूरे वंछित सुक्ख ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र भवि प्राणी । जिनहर्ष वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुतिः ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अभिनव कामी जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धामीजी ॥ थानक वीसे आगम भणिया वीतराग गुण भुक्ताजी । जे नर अंतर आतम ध्यावे सिवरमणी वर युक्ताजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन सूरी थिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र ब्रह्मचारज कियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत तिछ भूपोजी । ए पद निज भवि भावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो जी ॥ २ ॥ दोय सहस गुणनो प्रत्येकें च्यार सया उपवासोजी । द्रव्यभावसें विधि परकासे तीर्थंकर पद खासोजी ॥ तीजे भव वर वीस थांनकनी सेव करे भव्य प्राणीजी । समकित बीजें जे निज आतम आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल हे मोटो श्रीसुरदेवि सदाईजी । खरतर गछ जिन आज्ञाधारी पाटोधर वरदाईजी ॥ जिन सौभाग्यसूरिंद पसायें हंस सूरिंद गुण गावेजी । संघ सकलकूं सानिधकारी मन वंछित फल पावेजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीवीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज थिवराण । उवझाय साहू नाण दंसण विनय पहाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम जिनभाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो वीसे ठाण ॥ १ ॥ उत्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । वलि काल जघन्ये जिनवर

वीम गंभीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे थानक आराधी गुणमाल ॥ २ ॥ आवश्यक बे वेला जिनवंदन त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ काउसग गुण स्तवना पूजा प्रभावना सार । इम शासन वछल करतां भवनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जक्ख जक्खणी सुरपती वेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे मन रंग । देवचंद आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

## ॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुक्ख सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥ नवपदमांहि मुख्य वखाण्या ऋषभादिक जिनचंदाजी ॥ भाव धरीने जे भवि वंदे छेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो पावो सुक्ख अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाया सकल मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित संभारीजी ॥ नवमें भव भवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी । वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे भाखीजी ॥ २॥ द्वादस आठ छत्तीसे गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी । सम्मसठ इक्कावन वलि जैती सितर पच्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम थी नव दिहसेंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंबिल नव दिहसेंजी ॥ ३ ॥ विमलयक्ष चक्केसरीदेवी रिध सिध वंछित दाता जी । इणी नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर गच्छ जिन आज्ञाकारी पाटोधरपद भुक्ताजी । जिन सौभाग्यसूरिंद पसाये हंससूरिंद गुण उक्ताजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीनवपदस्तुति ॥

## ॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंडन जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोही केवलज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रुंजगि-

शिखरे समवसरया सुखकंद ॥ १ ॥ इण चनवीसीमां ऋषन्नादिक जिनराय । वलि काल अनंते अनंत चोवीसी थाय ॥ ते सवि इण गिरवर आवी फरसी जाय । इम न्नावी काले आवस्ये सवि मुनिराय ॥ २ ॥ श्रीऋषन्नना गणधर पूंमरीक गुणवंत । द्वादस अंग रचना कीधी जेण महंत ॥ सव आगममांहे सेत्रुंज महिम महंत । न्नाखी जिन गणधर सेवो करि थिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुह कवम पमुह सुर सार । जसु सेवा कारण आपे इंड नदार ॥ देवचंडगणि न्नाखे न्नविजनने आधार । सव तीरथमांहे सिद्धाचल सिरदार ॥ ४ ॥ इतिसेत्रुंजयस्तुति ॥

## ॥ अथ श्रीशांतिनाथ स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर जग अलवेसर अचिरा नदर अवतरियाजी । विश्वसेन नृप नंदन जगगुरु हथणापुर सुख करियाजी ॥ ईत नपड्व मारि विकारी शांत करी संचरियाजी । जे न्नवि मंगल कारण ध्यावे ते हुय गुणगण दरियाजी ॥ १ ॥ वर्त्तमान जिन सव सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी । बारे चक्री नव नारायण नव प्रतिचक्री आनंदोजी ॥ रामादिक जे पुरष सलाका वंदत पाप निकंदोजी । ड्व्य निक्षेपे जिनसम जाणो काटे न्नवन्नय फंदोजी ॥ २ ॥ अंग नपांगे जिनवर प्रतिमा श्रीजिन सरखी न्नाखीजी । ड्व्य न्नाव विहुं न्नेदे पूजा महानिसीथे साखीजी ॥ विश्य निवृत्ती सत् आरंन्ने विनय तपी ते जाणोजी । शुन्नयोगे नहि आरंन्नकारी न्नगवइ अंग प्रमाणोजी ॥ ३ ॥ आपना सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंघने सुखकारीजी । कारणथी सव कारज सीझे जिनवर आज्ञा धारीजी ॥ श्रीजिनकीर्त्ति सूरीश्वर गछपति पाठक श्रीऋद्धिसारीजी । समकितधारी देव सहाई सुखसंपत्त दातारीजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीशांतिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुद्ध वंदो ज्ञावे ज्ञविथण श्रीसीमंधर रायाजी । पांचसें धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति सत्यकि नंदन वृषज्ञलंबन सुखदायाजी । विजय ज्ञली पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ होस्ये वलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते वीस वि-ख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी । ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी । मोह मिथ्यात तिमिरज्ञर नासन अज्ञिनव सूर समाणीजी ॥ ज्ञवोदधि तरणी मोक्ष निसरणी नय निक्षेप वखाणीजी । ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो ज्ञविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासणदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचांगुली माईजी । विघन विमारण संपत्तिकारण सेवकजन सुखदाईजी ॥ त्रिज्ञुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति स-वाईजी । सांनिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनहर्ष सदाईजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीसीमंधरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम पंचम तपविधि वायक ज्ञायक ज्ञाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांबन लांबित वंबित दान सुदक्ष । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु वंदो ध्यावो ज्ञविजन पक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोधक बोधक ज्ञव्य उदार । पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंद्रिय दम सिव पहुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर ज्ञविथण उपर सुथिर करी सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम गणधर जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित ज्ञाजत मद पंच बाण

॥ पंचम काल तिमरभरमांहे दीपकसम सोभंत । पांचम तपफल मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम सेवाकारक जे नरनार । निरमल पांचम तपना धारक तेह भणी सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिकादेवी अहनिशि आपो सुख अमंद । श्री जिनलाभ सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञानपंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमल्लि जनम व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार । ए पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक अधिक गुण धार । इग्यारे बारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे डुगुणा दोय अधिक जिनराय । मन सूधे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥ २ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास । वलि गुणनो गुणियें विधिसेती सुविलास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान । इक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर भुवण वण सम्यग् दरसणवंत । जिनचंद सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ सकलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कल्याण ॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादसीस्तुति ॥

॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिण तपनो फल भाख्यो श्रीभगवंत ॥ नरनारी भावे आराधो तप एह । सुख संपत लीला लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ ऋषभादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार । जिनमुख परकासे बेठी परखदा बार ॥ रोहिण दिन कीजे रोहिणनो उपवास । मन वंछित लीला सुंदर भोगविलास ॥ २ ॥ आगममें एहनो बोल्यो लाभ अनंत । विधसुं परमारथ साधे सुधो संत । दुखदो

इग तेहनो नासि जाय सब दूर । वलि दिन२ अंगे वाधे अधिको नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण । सौभाग्य सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर२ महोछव नित नवला सिणगार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पख्खी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गछ चोरासी जेहने थाप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चौदस कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम२ संशय जाय ॥ १ ॥ चउवीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, कल्पसूत्रनी पाखी चोदस जोवो चतुर सुजांण ॥ इण पर ठाम२ तुम देखो चउदस पखी होय, भूला कांइ भमो तुम प्राणी साचो जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख, भविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी भाख ॥ आवस्यक सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरबधर इणपर बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो मन वंछित फल होय, जे जे आज्ञा सूधी पाले ज्यांनो विघन हरेय ॥ सेवक इणपर करे वीनती सूधो समकित पाय, खरतरगछ मंडण कुमति विहंडण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति पखी चोदस थुइ संपूर्ण ॥



## ॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यंते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसवभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ॥ जय गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगय मंगुल भावे, तेहं विउल तवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्प भावे, थोसामि सुदिठ सप्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सव्व दुक्खप्पसंतीणं, सव्व पावप्पसंतिणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य संति महा मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निवुइ कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइअ विमग्गह सुक्खकारणं ॥ अजिअं संतिं च भावउ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुल भुयगवई, पयय पणिवइअं ॥ अजिअ महमविअ, सुनय नय निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि दिविज, महिअं सयय मुवणमे ॥७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय पसत्त विच्छिन्न संथिअं थिर सरिछ वछं मयगल लीलायमाण वर गंधहत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं हत्थिहत्थ बाहुं धंतकणग रुअग निरुवहय पिंजरं पवर लक्खणो वचिअ सोम्म चारु रूवं सुइ सुहमणाभिराम परम रमणिज्ज वरदेव दुंदुहि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ए ॥ वेढ्ढउ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ सव्वभयं भवो हरिउं ॥ पणमामि अहं पयउ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धउ ॥ कुरु जणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढमं तउ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो जो बावत्तरि पुरवर सहस्सवर नगर णिगम

जणवय वई बत्तीसारायवर सहस्साणु आयमग्गो चउदस वररयण नव महानिहि चउसट्ठि सहस्स पवर जुवईण सुंदर वइ चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी छन्नवइगाम कोडि सामी आसिजो भारहंमि भयवं ॥ ११ ॥ वेड्डओ ॥ तं संतिं संतियरं, संतिन्नं सव भया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इक्खागु विदेह नरीसर, नरव सहा मुणिवसहा ॥ नव सारयससि सकलाणण, विगय तमा विहु अरया ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय बलाविउल कुला ॥ पणमामि ते भवभय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हट्ठ तुट्ठ जिट्ठ परम, लट्ठ रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति सत्ति किति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सवलोअ भाविअ प्पभावणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायउ ॥ विमल ससिकलाइरेअसोम्मं, वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइगणाइरेअ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अवले अजिअं ॥ तव संजेमअ अजिअं, एस अहं थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ भूअगपरिरिंगिअं ॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ न तं नवसरय रवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणवइ, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तिछवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयउ, संतिमहं महा मुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणउणय सिररिइ अंजलि, रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विबुहाहिव धणवइ नरवइ, थुअ महिअच्चिअं बहुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ सप्पभं तवसा ॥

गयणंगण वियरण समुइअ, चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९॥ किसलय माला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसिअं ॥ देव कोमि सयसंथुयं, समणसंघ परिवंदिअं ॥२०॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं अरयं अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयत पणमे ॥२१॥ विज्जुविलसिअं ॥ आग यावर विमाण, दिव्वकणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ स संभमो अरण खुभिअ लुलिअ चल कुंमलंगय तिरीम सोहंत मउ लिमाला ॥ २२ ॥ वेढओ ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा, वेर विउत्ता जत्ति सुजुत्ता, आयर भूसिअ संभमपिंमिअ, सुट्ठु सुविम्हिअ सव्व लोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ भासुर भूसण भासुरिअंगा, गाय समोणय भत्तिवसागय पंजलिपेसियसीस पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपया हिणं ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइतो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजलि, राग दोस भय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंस वहुगामि णिआहिं ॥ पीण सोणिथण सालणिआहिं, सकल कमल दललो अणिआहिं ॥२६॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणभरविणमिय गायल याहिं, मणिकंचण पसिढिलमेहल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वरखिं खिणि नेउर सतिलय वलय विभूसणियाहिं, रइकर चउर मणो हर सुंदर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निमालएहिं मंमणोमुणप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं भत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदि आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायओ ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं ॥ धुअसव्वकिलेसं पयत पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥

थुअवादअस्सा॥रासगण देवगणेहिं, तो देव वहूहिं पयत्तं पणमिअ स्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, भत्तिवसागयपिंमिअआहिं ॥ देव वरच्छरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंमिअआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउरकराभिराम सद्द मी सएकए अ, सुइसमाणणेअ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराभिराम सद्द मीसए कए अ देवनट्टिआहिं ॥ हाव भाव विब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय जस्सतें सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलोअ सव्व सत्त संतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥३१॥ नारायउ॥ छत्त चामर पडागजूअ जव मंडिआ, झयवर मगर तुरय सिरिवच्छ सुलंछणा ॥ दीव समुद्द मंदर दिसागयसोहिआ, सत्थिअ वसह सी हसिरिवच्छसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोस दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा ॥ पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल वि उलं, थुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं, गई गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मु क्ख सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं, कुणउअ परि साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नं दिसेणमभिनंदिं ॥ परिसाऽवि सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिय, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो ॥ सोअव्वो सवेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअनिसुणइ, उभउ कालंपि अजिअ संतिथयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम

पयं, अहवा किर्त्तिं सुविन्नरं नुवणे ॥ ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणव यणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीबृहदजितशांतिस्त वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ नल्लासिक्क मनरक्क निग्गयपहा दंरूच्छलेणंगिणं, वदारूण ।दसंत इव पयरूं निवाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंडुज्जल दंतकंति मिसउ नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविडु इज्ज सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलोहिं, खय समय समीरं जो जणिज्जा गईए ॥ सहल नहय लंबा लंघए जो पएहिं, अजिअ म हव संतिं सो समत्थो नणेउं ॥ २ ॥ तहविहु वहुमाणु ल्लासन्नत्ति प्ररेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता णंतसामत्थउसिं, फलहइ लहु सवं वंछिअं णि छिअं मे ॥ ३ ॥ सय लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहरूइ लहु दुठा निठदोघट्टथठं ॥ नमिरसुर किरीडू ग्गिठ पायारविंदे, समय मजिअ संती ते जि णिंदे न्निवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वद्धए देहदित्ती, विलसइ नुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिणजुअ पयन्नत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं नू रिदिवंगहारं, फुरूगणरसन्नावो हारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज दंसणछे अन्नीया, इव पुणमणि बंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा छज्जए जा णिमुत्ती ॥ सरन्नस परिरंन्ना रंन्ननिवाणलच्छी, घणथणघुसि णिक्कु प्पंकपिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ वहुविहनयन्नंगं वत्थणिच्चं अणिच्चं, सदसद णन्निलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं, वयण मवय णिज्जं ते जिणे संन्नरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए ताव मोहंधयारं, न्नमइजय मसणं तावमिच्छत्तछणं ॥ फुरइ फुरूप

लंता णंतणाणं सुपूरो, पयरू मजिअसंती झाण सूरो न जाव ॥९॥ अरि करि हरि तिण्हु ण्हंबु चोरा हिवाही, समर ममर मारी रुद्द खुद्दो वसग्गा ॥ पलय मजिअसंती कित्तणे झत्तिजंती, निविमतरत मोहा भक्करालुंखिअ व ॥ १० ॥ निचिअदुरिअदारु दित्तझाणग्गि जाला, परिगय मिव गोरं, चिंतिअं झाण रूवं ॥ कणय निहसरेहा कंतिचोरं करिज्जा, चिरथिर मिह लच्छिं गाढसंथंभिअव ॥ ११ ॥ अमविनिवम्भिआणं पभिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण गुत्ति ठियाणं ॥ जलिअ जलण जाला लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिसं पक्क पाइक्कपुसं, सयलपुहवि रज्जं छड्डिअं आण सज्जं ॥ तण मिव पभि लग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवसा हुंतु ते मे पसत्ता ॥१३॥ छणससिवयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं, थणभरनमिरीहिं मुठिगिज्झोद रीहिं ॥ ललिअ भुअलयाहिं पीण सोणित्थणीहिं, सयसुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४॥ अरिस किम्हि भकुठ गंठि कासाइसार, खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नहमुह दसणच्छी कुच्छिक साइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरु दुहतासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर दुगथुत्तं वच्छरे वा पवित्तं ॥ पढइ सुणइ सिद्धा एह झाएइ चित्ते, कुणइ मुणइ विग्घं जेण धा एह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणे सर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कीसर ॥ तित्थंकर सोल सम संति जिणवल्लह संथुअ, कुरु मंगल मम हर दुरिअमखिलं पि थुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं० ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरणरंजिअं मुणि णो ॥ चलणजुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सम्थिय

र चरण नंह मुह, निबुड्ड नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुठ महारो
ानल, फुलिंग निद्दड्ढ सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, स
लिलंजलिसेय वुड्ढिय छाया ॥ वण दवदड्ढा गिरिपा यव व पत्ता
पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ डुव्वाय खुभिय जलनिहि, उब्भड कल्लोल भी
सणारावे ॥ संभंत भय विसंठुल, निज्जामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥
अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पास जिण
चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअ
वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ डझंत मुद्धमिय
वहु, भीसरणरव भीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं,
निव्वाविअ सयल तिहुअणाभोअं ॥ जे संभरंति मणुआ, न कुणइ
जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत भोग भीसण, फुरिआरुण न
यण तरल जीहालं ॥ उग्गभुअंगं नवजल य, सत्थहं भीसणायारं
॥ ८ ॥ मन्नंत कीड सरिसं, दूर परिछुढ विसम विस वेगा ॥ तुह
नामक्खर फुडसिद्ध, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु भि
ल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दल सद्दभीमासु ॥ भयविहुर वुन्नकायर, उल्लु
रिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविह वसारा, तुह नाह प
णाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं
॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह
कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंभ
म पत्थिव, नहमणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥ तुह वयण पहरण
धरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीह
करुल्लाल वड्ढि उच्छाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजल
हरारावं ॥ १४ ॥ भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गिणंति
॥ जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ स
मरम्मितिक्ख खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उद्धुय कबंधे ॥ कुंतविणिभि

न्न करि कल, इ मुक सिकार पत्तरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर रिउ, नरिंद निवहा न्नमा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजिण तुह प्पन्नावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण नयाइं ॥ पास जिणनाम संकि, त्तणेण पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महा नयहरं, पास जिणिंदस्स संथ वमुआरं ॥ नविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ राय नय जरक रकस, कुसुमिण डुस्सउण रिक्क पीमासु ॥ सं ऊासु दोसु पंथे, नवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिउ, सयल नुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं न तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयउ जय तिडं, जमिड तिडाहि वेण वरिण ॥ सम्मं पवत्तिअंन्न, व सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सय लकिलेसा, निहय कुलेसा पसड सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिड, स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निदद्धकम्म बीआ, बीअपरंमि ठिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु डुत्थाणि तिड स्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आय रिआ तह तिडं, निहय कुतिडं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पडिणीय कए, वणिंतु सवस्स संघस्स ॥५॥ निवाणसाहुणिडिअ, साहूणं जणिअ सव साहडा ॥ तिडप्पन्नावगाते, हवंतु परमिठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं नाणं, निवाणफलं च चरणमविहवइ ॥ तिडस्स दंसणं तं, मंगलमुवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निडनमो सुअधम्मो, समग न्नवंगि वग्ग कय सम्मो ॥ गुणसुठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

ह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त धम्मो, संपाविअ जवसत्त सिवस म्मो ॥ नीसेस किलेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥ ए ॥ गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिढस्स ॥ सिरिवद्धमाण पहुपय, ञिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जियपमिवरकाजरका, गोमुह मायंग गयमुह पमुरका ॥ सिरि बंज संति सहिआ, कय मयरका सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पमिहयमिंबा, सिद्धा सिद्धाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्टा, संति सुरा दिसउ सुरकाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, ददिंतु संघस्स मंगलं विउलं ॥ अचुत्ता सहिआउ, विस्सुअ सुयदेवयाउ समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रका, जरका चउवीस सासण सुरावि ॥ सुहनावा संतावं, तिढस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जिणपवयणंमि निरया, विरहा कुपहाउ सव हासवे ॥ वेयावच्च गरा विअ, तिढस्स हवंतु संतिकरा ॥ १६ ॥ जिणसमय सुद्धमग्ग, विहिअ जवाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो सुहं दिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पवय वासि देव देवीउ ॥ जिण सासण ठिआणं, डुहाणि सवाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिवालासरिक, त्तवालया नवग्गहा सनरकत्ता ॥ जोइणि राहुग्गहका, लपास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥ सहका ल कंटएहिं, सविठिवछेहिं कालवेलाहिं ॥ सवे सवक सुहं, दिसंतु सवस्स संघस्स ॥ १ए ॥ जवणवइ वाणमंतर, जोइस वमोणिआ य जे देवा ॥ धरणिंद सक सहिआ, दलंतु डुरिआइं तिढस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गढइ पुरउपणासिअ तमोहं ॥ तंतिढस्स ज गवउ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्स ज्जविसासणं जए जयइ ॥ सिद्धिपहसासणं कुप, ह नासणं सव जय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसजसेण पमुहा, हयजय नि

वहा दिसंतु तिव्वस्स ॥ सव्व जिणाणं गणिहा, रिणो णहं वंदिअं सव्वं ॥ ३३ ॥ सिरि वद्धमाण तित्था, हिवेण तित्थं समप्पिअं जस्स ॥ सम्मं सुहम्म सामी, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥ ३४ ॥ पय इएनहिआ जे, नहाण दिसंतु सयल संघस्स ॥ इयरसुरा विहु सम्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्स ॥ ३५ ॥ इय जो पढइ तिसंझं, डुस्सज्झं तस्स नत्थि किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएठिउ, सुनिट्ठिअट्ठ सुही होई ॥ ३६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणं

॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामक पंचमं स्मरणम् ॥

॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं ॥ सुगुरुजण पारतंतं, नवहिव्व थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय मोह जोहा, निहय विरोहा पणट्ठ संदेहा ॥ पणयंगि वग्ग दाविअ, सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त सोहा, समत्त परतित्थ जणिय संखोहा ॥ पडिभग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहत्थ सत्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्थवाहा, हय डुह दाहा सिवंब तरु साहा ॥ संपाविअ सुहलाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पवज्जा ॥ सिवसुह साहण सज्जा, नयगिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥५॥ अज्जसुहम्म प्पमुहा, गुणगण निवहा सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसंझं नामं, नामं न पणासइ जिणाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअ जिण देवो, देवायरिउ डुरंत नवहारी ॥ सिरि नेमचंद सूरि, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सिरि वद्धमाण सूरी, पयडीकय सूरि मंत माहप्पो ॥ पडिहय कसाय पसरो, सरय ससंकुव्व सुहजणउ ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्पर, णपच्चलो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर सिद्धसिद्धं, तउ्जाणउ पणय सुगुणजणउ ॥ ९ ॥ पुरउ डुल्लह महिव, सहस्स अणहिल्ल वाडए पयडं ॥ मुक्काविअ आरिऊणं, सीहेणव दव्वलिंगि गया ॥ १० ॥ ह

समन्धेरय निसिवि, प्फुरंतु सछंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरेणव सूरि जिणे, सरेण हयमहिअ दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्त पत्त कित्ती, पय डिअ गुत्ती पसंत सुहमुत्ती ॥ पहय परवाइ दित्ती, जिणचंद जई सरो मंती ॥ १२ ॥ पयडिअ नवंग सुत्तछ, रयणुकोसो पणासिअ पन्नसो ॥ भवभीअ मविअ जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥ ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा करणबंधु रोधणिअं ॥ सिरि अभयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय सावय संतासो, हरि व्व सारंग भग्ग संदेहो ॥ गय समय दप्प द लणो, आसाइअ पवर कवरसो ॥ १५ ॥ भीमभव काणणमिअ, दंसिअगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुउ, सूरी जिणव छहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरछिअ सच्चरणो, चउरणुउग प्पहाण सच्चरणो ॥ असममयराय महणो, उद्धमुहो सहइ जस्स करो ॥ ॥ १७ ॥ दंसिअ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिअ सावउछ भउ ॥ गुरुगिरि गरुउ सरहिव, सूरि जिणवछहो होछा ॥ १८ ॥ जुग पवरागम पीऊ, सपाणि पीणय मणाकया भव्वा ॥ जेण जिणवछ हेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिअ पवर पवयण, सि रोमणी वूढ दुवह खमोया ॥ जो सेसाणं सेसु, व सहइ सत्ताणता णकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण महीणं, सुगुरूणं पारतंत मुवहइ ॥ जयइ जियइ जिणदत्त सूरी, सिरि निलउ पणय मुणितिलउ ॥ २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीषष्ठम्स्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरउ विग्घं, जिणवीराणाणु गामि संघस्स ॥ सिरि पासजिणो थंभण, पुरछिउ निछिआनिछो ॥ १ ॥ गोयम सु हम्म पमुहा, गणवइणो विहिअ भव्व सत्तसुहा ॥ सिरि वद्धमाण जिणति, व सुतयंते कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुराजे, जिण

वेयावच्च कारिणो संति ॥ अवहरिअ विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संति करा ॥ ३ ॥ सिरि थंभणय छिअ पा, सलामि पयपनम पणय पा णीणं ॥ निद्दलिअ डुरिअ विंदो, धरणिंदो हरउ डुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुरक जरका, पम्हिहय पम्हिवरक परक लरका ते ॥ कयसुगु ण संघ रस्का, हवंतु संपत्त सिवसुरका ॥ ५ ॥ अप्पम्हिचक्का पमुहा, जिण सासण देवयाउ जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासचउर, पुरछित्त वद्धमाण जिण ऊत्तो ॥ सिरि बंऊ संति जरको, रस्कउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया ताउ ॥ निव्वुइ पुर प हियाणं, ऊव्वाण कुणंतु सुरकाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहि पहरि उछिस कंधरा धणिणं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स, सव्वहा ह रउ विग्घाणि ॥ ए ॥ तिऊवइ वद्धमाणो, जणेसरो संगउ सुसंघेण ॥ जिणचंदो ऊयदेवो, रस्कउ जिणवल्लहा पहुमं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो णेस रुव हयतिमिरो ॥ जिणचंदा ऊय देवा, पहुणो जिणवल्लहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए, ऊयदेव पहुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणेसरव, ऊमाण तिऊस्स वुद्धिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ॥ मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ जिणदत्त गणे नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअसिय वायपए, नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसह रविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ ऊवेऊवे पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्त वनं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्योतकं दलितपापत
मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं भवजले
पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, उ
द्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तो
ष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्या विना
पि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥ बा
लं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा
ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्ष
मः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को
वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भ
क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवी
र्यमविचार्य मृगोमृगेंद्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्
॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते
बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाम्रक
लिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसंनिबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनी
लमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति
नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः
॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवन
भूषणभूत नाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवंति
भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंत एव खलु तेप्य णवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि, र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भु

वि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्री
णां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी
प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जन
यति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस,
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति
मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्रपंथाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं वि
भुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं
विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंक
रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भग
वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व
राय, तुभ्यं नमोजिनभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयो
ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो
ऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपममलं
भवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, बिंबं रवेरिव
पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि
भ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशुलतावित्रा
नं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचाम
रचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशु
चिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभम् ॥ ३० ॥ छत्र
त्रयं तव विभातिशशांककांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रता
पम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वर
त्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूख

शिखाभिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि त
त्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनें
द्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रह
तांधकारा, तादृक्कुतोग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥श्च्योत
न्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐ
रावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रिता
नाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकर
भूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति
क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु
खमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं
समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्राम
ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः
॥ ३७॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भू
पतीनाम् ॥ उद्य द्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु
भिदामुपैति ॥ ३८ ॥कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावता
रतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पाद
पंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणन
क्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितया
नपात्रा, स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभी
षणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ॥
त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः
॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृ
ष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विग
तबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्राम

वारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति जयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व मेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवताम र्हदादिप्रभावा, दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः, शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन गतस्स पंथाः ॥ इति भव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयंतां २, भगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रैलोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०, स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४, एते अतीत.

॥ चतुर्विंशतितिर्थंकराः ॥

॥ ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शत कीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भ ङ्कर २४.

॥ एते भावितीर्थंकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा भ वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु र क्षंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु व्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा

२०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति व र्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ए, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १ए, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ए, अशोका १०, मानवी ११, चंडा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १ए, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंति ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ए, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अछुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः षोडशविद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताःसलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

श्च नवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिवंधु वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो नवंतु ॥ अस्मिंश्च नूमं मले आयतननिवासिनां साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां, रोगोपस र्गव्याधिडुःखदौर्भनस्योपशमनाय शान्तिर्नवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिरु द्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः नवंतु ॥ सदाप्राडुर्नूतानि डुरितानि पापा नि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा नवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना थाय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटान्य र्चितांद्र्ये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहेगृहे ॥ २ ॥ ॐ उ न्मृष्टरिष्टडुष्ट, ग्रहगतिडुःस्वप्नडुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्, नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधिपरा जसंनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥४॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्नवतु,श्रीपौरलोकस्य शांतिर्नवतु, श्रीराज संनिवेशानां शांतिर्नवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्नवतु, ॐ स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिः प्रतिष्ठा यात्रास्नात्रावसानेषु, शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधू पवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचि वपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृतः, चंदनतिलकं विधाय पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तो त्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणनाजोहि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अहं तित्थयरमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह शिवं तुम्ह शिवं, असुहोवसमं नवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता नवंतु नूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी नवंतु लोकाः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यंते वि

मवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः, ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच नमस्कारः, सर्व पापक्षयंकरः॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जयविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ कमलप्रभसूरींद्रो, भाषते जिनपंजरम् ॥३॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षे, दाग्नेयीं विजितेंद्रियः ॥ दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैरृतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवींपरमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हं, नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ संभवः कर्णयुगलं, नासिकां चाभिनंदनः ॥ १२ ॥ उष्ठौश्रीसुमती रक्षेत्, दंतान्पद्मप्रभो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रभो विभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रे

पांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षे, दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंमलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिरूरूपृष्ठिवं शं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमि श्चरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीमिते ॥ २० ॥ माकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लभते सुखसंपदं ॥२२॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरेत्यनुवासरं ॥ कमलप्रभराजेंद्र, श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सः कमलप्रभाख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछित पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्य्यपदाब्जहंसः ॥ वादींद्रचूमामणिरेषजैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

---

## ॥ अथ स्तोत्रोमेंस्तोत्रलिखणा ॥

### ॥ अथ वडानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कप्पतरुरे अयाण चिंतउ मणभिंतरिं, किं चिंतामणि कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्रावेली काज किसे देसांतर लंघउ, रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघउ ॥ चवदे पूरब सार युग लद्धउ ए नवकार, सयल काज महियल सरे दुत्तर तरे संसार ॥ १ ॥के

वलि न्नासिय रीत जिके नवकार आराहै, भोगवि सुक्ख अणंत अंत परम प्पयसाहै ॥ इण ऋाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहु परि, इण ऋाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो जपे अचिंत चिंतामणि एह, समरण पाप सबे टले रिद्धि सिद्धि नियगेह ॥ २ ॥ निय सिर ऊपर ऋाण मझ चिंतवै कमल नर, कंचणमय अठदल सहित तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहां वेठा अरिहंतदेव पउमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पहरेवि पढम पय चिंते नियमणि ॥ निवारय चउ गइ गमण पामिय सासय सुक्ख, अरिहंत ऋाणे तुम लहो जिम अजरामर मुक्ख ॥ ३ ॥ पनर भेय तिहां सिद्ध वीय पद जे आराहे, रातें विद्रुमतणे वन्ननिय सो हग साहे ॥ राती धोती पहर जपै सिद्धहिं पुब्व दिसि, सयल लोय तिह नरहि होइ ततखिणसेंवसि ॥ मूलमंत्र वशोकरण अवर सहू जगधंद, मणमूलो उभय करे बुद्धि हीणजाचंध ॥ ४ ॥ दक्खिण दिसि पंखम्मी जपे नमो आयरिआणं, सोवनवन्नह सीस सहित उवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध कारणे लाभ ऊपर जे ध्यावे, पहरे पीलावत्थ तेह मन वंछिय पावै ॥ इण ऋाणे नव निधि हुवेए रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर छत्त सिर जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवझाय सीस पाढंता पच्छिम, आराहिज्जे अंग पुब्व धारंत मणोरम ॥ पच्छिम दिसि पंखम्मीय कमल ऊपर सुहऋाण, जोवौ परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रक्खे विडुर तिहां नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहां फल सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सर्व साधु उत्तर विभाग सामला वइठा, जिण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिठा ॥ मण वयण काएहिं जपे जे एके ऋाणै, पंचवन्न तिहां नाण ऋाण गुण एह पमाणे ॥ अनंत चोवीसी जग हुइए होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे

नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोकारो पद दिसिअ गणेहिं, सव्व पावप्पणासणो पद जपनेरेहिं ॥ वायव दिसि झाएह मंगलाणं च सवेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं दिसि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रभाव धरणिंद हुउ पायालह सामी, समलीकुअर उपन्न भिल्ल सुर लोयह गामी ॥ संबल कंबल बे बलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव थयो नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंछिय करे जोगी लियो मसाण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ छींके बैठो चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह नामी ॥ वाछरू आचारंत बाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंटही उयर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सवे सरे इरत परत विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर धारू संकट टले राजा वसि होवे, तिथ्थंकर सो होइ लाख गुण विधिसुं जोवे ॥ साइण डाइण भूत प्रेत वेताल न पोहवे, आधि व्याधि ग्रहतणी पीडते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सवे नासै एणही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय झाण करंत ॥ ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण छउमथ्थ एह गुण पार न जाणूं ॥ जिम सत्तुंजय तिथ्थराउ महिमा उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिथ्थंकर गणहर पभणिय चवदह पूरब सार, इण गुण अंत न को कहे गुण गिरुउ नवकार ॥ १२ ॥ अरू संपय नव पय सहित इगसठ लहु अख्खर, गुरु अख्खर सत्तैव इह जाणो परमख्खर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि भणे सिव सुख्खह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु दुख्ख निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवै इक चित्त, पंच

तन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारा-मंन्डलमंन्डितः ॥ १२ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजं मध्यास्य सर्वगं ॥ नमामि विंबमार्हंत्यं, ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलं शांतं, बहुलं जाड्यतोझितं ॥ निरीहं निरहंकारं, सारं सारतर घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभ्रं स्फीतं, सात्विकं राजसंमतं ॥ तामसं-चिरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परं ॥परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तूर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रांतिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु ॥ ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु-वर्णांतः, सरेफो विंदुमंन्डितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-मालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषभाद्यां जिनो-त्तमाः ॥ वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥ नादश्चंद्रसमाकारो, बिंदुर्नीलसमप्रभः॥ कलारुणसमासांतः, स्वर्णाभः सर्वतो मुखः ॥ २२ ॥ शिरसंलीनईकारो, विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥ वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मंन्डलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभपुष्फदंतौ, नादस्थितिसमाश्रितौ ॥ विंदुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ सिरिई स्थिति-संलीनौ, पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हर-स्थाने नियोजिताः ॥ मायावीजाक्षरं प्राप्ता, श्चतुर्विंशतिरर्हतां॥२६॥ गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः॥ सर्वदा सर्वकालेश, ते भवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ॥ तयाछादितसर्वांङ्ग, मामांहिनस्तडाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य य० मामांहिनस्तुराकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुलाकिनी ॥३०॥

देव० मामांहिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांहिनस्तु-
शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव०
मामांहिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांहिसंतुपन्नगा ॥ ३५ ॥
देवदे० मामांहिनस्तुहस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांहिसंतुराक्षसा
॥ ३७ ॥ देवदे० मामांहिसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांहिसं-
तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांहिसंतुदुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे०
मामांहिसंतुभूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या
भुविलब्धयः ॥ ताभिरभ्युद्यतज्योति, रर्हं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥
पातालवासिनो देवा, देवाभूपीठवासिनः ॥ स्ववासिनोपि ये देवाः, सर्वे
रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥
ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाभूत-
वेत्तालाः, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रभा-
वतः ॥ ४५ ॥ ॐह्रीं श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंडी सरस्वती,
जयांवाविजया नित्या, क्लिन्नाजितामदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-
बाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री, कला
काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तते या जग-
त्त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयछंतु, कांतिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो
गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीऋषिमंडलस्तव ॥ भाषितस्तीर्थ, जगत्-
त्राणकृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वन्हौ, जले दुर्गे गजे हरौ
॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यभ्र-
ष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं,
प्राप्नुवंति न संशयः ॥५१॥ भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते
सुतं ॥ वित्तार्थी लभते वित्तं, नरःस्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे
रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः,
गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ भूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुर्ध्नि वा

भुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वभीतिविनाशकं ॥५४॥ भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्रेकै, मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठः, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ॥ तैःस्तुतैर्वंदितैर्दृष्टै, यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्यं महा स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावली ॥ अष्टसाहस्त्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रात, र्ये पठंति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवंति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमेतन्महातेजो, जिनबिंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते बिंबे, भवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानंदनंदितः ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो भवेध्याता, कल्याणानि च सोश्नुते ॥ गत्वा स्थानं परं सोपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणाज्जापात्, लभते पदमुत्तमं ॥ ६३ ॥ इति ऋषि मंडल स्तोत्रं ॥ क्षेपकश्लोकनिराकृत्य मूलयंत्रकल्पानुसारेण लिखितं गणि । श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायै तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्ष्ये तस्यैव नामानि । मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः शाश्वतोशुद्धः । निर्विकल्पो निरामयः ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः ॥ निर्भयो निरहंकारो । निर्विकारोथ निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषोनिरुजः शांतः । निभयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मो निष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशङ्क

प्रतिमश्लेष, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥५॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो ।
नैष्ठकः शब्दवर्जित. ॥ अनिंद्यो महपूतात्मा । जगत् शिखरशेखरः॥६॥
निःशब्दो गुणसंपन्नाः । पापतापप्रणाशनः ॥ सोपि योगात् शुद्ध
प्राप्तः । कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्ध । अर्चितः अ
क्षयो विभुः ॥ अमुर्त्तः अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः॥ ८ ॥
आनिंद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो भवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथः,
बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान
लोचनः ॥ अछेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्यविवार्जितः ॥ १० ॥
अजेयसर्वतो भद्रः । निष्कषायो भवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः॥
वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजानंद । अवाङ्मानस
गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंत
विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः ॥ कर्मार्जितो महात्मानः ।
लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरः शंभुः । विश्ववेदी
पितामहः ॥ सर्वभूतहितो देव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनं
दरूपचैतन्यो । भगवांस्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यठ्य
क्तठ्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ।
गौरवादित्रयाहूरः । सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥ अभयः प्राप्तकैव
ल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र
दायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः ॥ स
र्वेशः सतसुखावासः। जिनेंद्रो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरम
ज्ञानी । विश्वतत्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोभगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुन्य
कारकः ॥१९॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो
भुवनाधीशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सद्योजातमहात्मानं
विमुक्तो मुक्तिवल्लभः ॥ योगींद्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो ज्ञानगोच
रः ॥ २१ ॥ सदाशिवो चतुर्वक्रः । सततसौख्यस्त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्र

त्रिजगत्पूज्य: । कल्याणकोष्टमूर्त्तिक: ॥ २१ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्य: ।
सर्वपापविवार्जित: ॥ सर्वदेवाधिकोदेव: । सर्वभूतहितंकर: ॥ २२ ॥
स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्ध: पापनाशन: ॥ तनुमात्रचिदानंद ।
चैतन्यश्चैत्यवैभव: ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह
तांमह: ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वर: ॥ २५ ॥ महा
देवो महावीरो । महामोहविनाशक: ॥ महाभावो महादर्श: । म
हामुक्तिप्रदायक: ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा
त्मक: ॥ महर्द्धिको महावीर्यो । महांतिकपदस्थित: ॥ २७ ॥ महा
पूज्यो महावंद्यो । महाविघ्नविनाशक: ॥ महासौख्यो महापुंगो ।
महामहिम अच्युत: ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसं बोध । एकानेकवि
निश्चल: ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानक: ॥२९॥ महासूरो
महाधीरो । महादु:खविनाशक: ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाहृ
द्यो महागुरु: ॥ ३० ॥ निर्मारो मारविद्वंसो । निष्कामो विषयाच्यु
त: ॥ भगवंतामहाभ्रांतो । शांतिकल्याणकारक: ॥३१॥ परमात्मा
परंज्योति: । परमेष्टी परमेश्वर: ॥ परमात्मा परानंद । परंपरमआ
त्मक: ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुत: ॥ ना
कृतिं नाकरो वर्णो । व्योमरूपो जितात्मक: ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्त
जसंबोध: । संसारछेदकारण: ॥ निरवद्यो महाराध्य: । कर्म्मजित्
धर्म्मनायक: ॥३४॥ वोधसत्सु जगद्वंद्यो । विश्वात्मा नरकांतक: ॥
स्वयंभूपापहृत्पूज्य: । पुनीतो विभव: स्तुत: ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो
महातीत: । रूपातीतो निरंजन: ॥ अनंतज्ञानसंपर्णो । देवदेवेश
नायक: ॥ ३६ ॥ वरेण्यो भवविध्वंसी । योगिनां ज्ञानगोचर: ॥
जन्ममृत्युजरातीत: । सर्वविघ्नहरो हर: ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् भव्यसं
वंद्य: । पवित्रो गुणसागर: ॥ प्रसन्न: परमाराध्य: ॥ लोकालोकप्र
काशक: ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी । इंद्रवंद्य: सुरार्चित: ॥ नि

ष्प्रपंचो निरातङ्को ॥ निःशेषक्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोक संसेव्यो । लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठंति पुनः पुनः॥ ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीभ द्रबाहुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रनाम संपूर्णं ॥

॥ अथमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥महिम्नः पारन्ते परमविदुषस्ते जिनपरं । गणागीर्वाणानाम पि गुणगुरौगैंतुमनलम् ॥ नलम्नं लम्नं त्वाधिपमिहनयैस्सर्वकलनं । नुवद्भिः प्रापीनाप्रतिहतगतिर्वागमृतजित् ॥ १ ॥ जगत्रातः स्तोतुं किल निरवकाशोप्यहमिहो । यतप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनघोभावच वचः । गृणीयां सह्यं तत्तनुभुव इवेष्टार्थप्रतिभूपदोपास्ने पार्श्वाभन यजनयित्र्याशिवमम ॥ २ ॥ त्वकांभामासूनोधुतनिधनमूनोयवसु ना । सुनामन्नोऽनो स्मरमहमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोभानो भु वनभवने नो वृषभरं । व्यथांमोहादेनोरयमथनतेनोत्कटविपत् ॥३॥ सुबोधं देया मे घनघनघटामेचकतनु । जगत्रय्यारामेमरकुरुहवामे यजिनपाः ॥ हतोग्राक्रग्रामे शितरसमकामेषुविजयी । त्वमकाली भामे दुरमदजधामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चिरतरमपारे भुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ भुतारेकेतारे क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे छिद्वारे भवदहनवारे कुरुकृपां ॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्सारान हिमिथुनमाराध्ययविभो ॥ ज्वलद्यस्योदारान्विषधरकुमाराधिपतिता । मनुक्रोशागारावतुजिनमहाराजसभवान् ॥ ६ ॥ दिशश्रीमान्दे वव्रजविहितसेवः कुशलता, लताजातेदेवः प्रशमिवरदेवत्वमतमाः ॥ तमालाभोमेवः परिकरिहरेवत्सलसदा, सदानंदकेवल्यचलपदमेवस्तु तिकृते ॥ ७ ॥ कजन्माकंकायंकिरवगणदंकीर्तिधवलं, कुबेरेऽयं

कूहाव्रततिपरशुंकेत्तकगुणम् इतं कैवल्यंकोकिलकलरवंकौशलकरं दधानंकंकह्वोपमसुरमरालंनुततमम् ॥ ८ ॥ श्रियः पात्रंगात्रं ञ्चकुशाकदात्रंसुहृदयै रहोरात्रंह्यात्रंदधदतनुमात्रंतवप्रञ्जो पवित्रं सच्चित्रंशुचितरचरित्रंखुतमसा ममित्रंयैर्म्मित्रंस्तुतपुरुपवित्रंसरणकम् ॥ ९ ॥ वदान्यस्वञ्चन्दंहृगुदकञ्जवैः पीतममलै रिहावन्यांधन्याः स फलजनुषस्तेखलुमताः इमेवन्याः सत्वाइवतुसदसव्यक्तिविकला ञ्च वारणयेटन्तकथमपिञ्जवंत्वंनदहसुः ॥१०॥ नजानेहंनेतः कुमततिमर प्रावृतहृशां गतिर्म्मोहक्लाणादरहरञ्जवित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य ञ्जिमतफलोत्सर्जनपरां त्वदाख्यांनोचिंतामणिमिवञ्जजन्तेस्तविधयः ॥ ११ ॥ त्वमेवेशेदानींमयिवितनुतात्कामपिकृपां ञ्जवास्ताघोदत्व त्तलनिपतितं प्रोद्धरतराम् मुहुःखिन्नस्त्वत्यकजशरणमीतोस्म्यशर णः शरणयोसिश्रेयान्प्रञ्जुदलमकध्वंसनविधौ ॥ १२ ॥ जयत्वंधीरत्वा धरितकनकाहार्य्यमहिमा हिमालोप्रान्त्याध्धि प्रतिञ्जटगञ्जोरत्ववि दितः दितःप्रत्यूहालिः शुञ्जमत जगत्पावनजिना जिनाशीनश्रीरः कुमतिवसुभासीरसततं ॥ १३ ॥ ततंविञ्चह्वोधंपरमपुरुषः सिद्धिन गरीं गरीयः साम्रा:ज्यंगणधरमहामात्रमहितः हितः कर्तुंकर्म्माष्टकरि पुवलंञ्जञ्जयमहा माहतीर्थेशश्रीञ्जरमतुलमाप्तः पृथुमहाः ॥ १४ ॥ महाराज स्तुत्योडुरिततरुसिन्धुरतिलको लकोनः पालाकः सकलञ्ज विनांमोहशमनः मनस्यश्रान्तं भेवरसरसिकादम्बइवसन् वसञ्जी यात्पार्श्वप्रञ्जुरनघपार्श्वप्रणुतपत् ॥ १५ ॥ तपः श्रीञ्जोलोकोत्तरपद मुपेतःसकलवि । द्भवित्रंदोषलोयवसलवनेप्राप्तविञ्जवः ञ्जवध्वस्त्यै नस्तादनुपममहानन्दकलितो लितोविश्वख्यातैरनिशमवदातैर्गुण गणैः ॥ १६ ॥ पद्यचतुष्कंसिंहावलोकवंधुरम् ॥ ञ्जवन्तंसद्योग प्रथि तपदवीचारिनिवहा अजस्रंविश्रामंप्रणिदधतिविश्वेश्वरसमे इदंस्थाने चन्तिप्रसृमरसितोस्रंखलुखगाः कलावन्तंकिंनश्रुतमतसदाचारनि

रताः ॥ १७ ॥ अनन्तेतोदोषान्तकनुरुप्रकाशोधतमसं हरल्लोकंकुर्व
न्नमलकमलोल्लासमयकम् प्रबोधंव्यातन्वनिततःकरतःपंकदलनो ज
गच्चक्षुः पार्श्वोदिशतुकुशलंमेसमयभ्नः ॥ १८ ॥ नितान्तंसन्तापंस
मतनुमतांयन्नमृतगुःकलाभिःसंपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः प्रदो
षेनोरम्यः समुपचितरत्नाकरइहा वताद्वामापुत्रः सपदिविपदस्तार
कपतिः १९ स्फुरंत्यासिंदुरं निजतनुरुचाचारुप्रकृति महीजन्मातद्वा
स्येयप्रभृतिदुःखाग्निजलदः बुधोबोधस्फीतिंददविरतंराजतनयो ह्य
यातीतोलोकेतनुभवनमाप्नोतिबलवान् ॥ २० ॥ धरादिस्येशान शु
भ्रतरुचिर्भोगौरकरणः सदापायाद्वैमासुरगुरुरपायाज्जिनपतिः स्थिरः
स्फारश्लोकस्तुतिसमुचितोभानुतनय स्तमोविघ्नध्वंसीनकुशलकरः
केतुरसितः ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठो येभ्यस्त्रिदसविसरेभ्योवरतया सि
लोकेशोनूनंत्रिजगदवनात्वंकमलभूः सुयोगीन्द्रस्वान्तामलकमलज
न्माधिवसना च्चतुर्वक्त्र्याश्रेयोजिनपचतुरास्योस्युपदिशन् ॥ २२ ॥
प्रतीतोदैत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्पराध्यैश्रीयोगात्कमलनेलयेसौ
सिभगवन् ननाकश्चिद्विश्वातिशयभरवित्तस्त्रिभुवने भवादृक्कोगीतः
परमपुरुषोतोहरिहयैः ॥ २३ ॥ महेशानोसित्वंत्रिभुवनजनैकाधि
पतया शिवःशश्वन्नृणांपरमपददानैकसुविधेः असित्वंसर्वज्ञः सकल
जगदर्थौघकलना भशूलीनोचोग्रोनचपशुपतिर्नोविषमदृक् ॥ २४ ॥
अवाप्तःश्रेयः श्रीप्रवितरणलीलाविदलिता दितेयाभ्रक्षोणीरुहमहि
मलारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसङ्गःकृतकुमतभङ्गःसुमनसां हिताया
शेषाणांसुकृतपदवींत्वंकथयन् ॥ २५ ॥ जिनेन्द्राहोरात्रंबहुविपदम
न्तंधृतमरं कलत्रंयेनात्रकसहरिहरादिःसुरगणः सकर्णानाकर्यामित
चरितताधूर्तनिवह प्रतारीसद्दोषः मित्तसततरोषःस्थितिहतः॥ २६॥
समग्रामग्रामप्रभवभयदो बोधरहितः सरुग्भव्यद्वेषीपुरुदुरितकर्मा
नकलितः पुरामोहान्नूतश्चिरमिहसदाहीनमहितः सदेवोश्राध्यत्वंकथ

मपिसमासादिमथकाः॥ २७ ॥ प्रज्ञोकिंवामेतैरन्निमतविधानेलसतरे
रपासोपास्यस्तंखलुजिनवरेण्योनवरतम् मनोलिम्मैत्वत्यद्बनजयुगले
सम्प्रतिवसन् परामेतिप्रीतिंप्रणयकरुणामिष्टसुदृशा ॥ २८॥ अदभ्रंद
म्रांसिन् इविराज्ञरमडीसदृशं विहायेनाप्रत्नंधरसिकिलरत्नत्रयमहो
दधत्सौवर्णानामुपरिनलिनानांक्रमयुगं पुनर्न्निर्लोन्नानांधुरिसुमतिमद्भि
स्त्वमुदितः ॥ २९॥ लसन्तिः सीमश्री परिकलितमग्र्यंसुवरण त्रयी
मध्यं मेघोदधिधरणवास्तोष्यतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिल
क्ष्मांणिदधत कुलस्तैनैराग्यंशिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ ३० ॥ चलं
प्राज्यंराज्यंविदितविन्नवापास्यलषतो महानंदानन्तामहदधिपतेनश्व
रतरम् कृतेनिर्ग्रंथत्वंप्रशमरसवाहेस्त्यसुमतांमहच्चित्रंचित्तेजनयतित
वेदंतुचरितं ॥३१॥निकामार्थौत्सृष्या ततवनदवृष्ट्यातिशयितं जगद्दा
रिद्र्याग्निं स्मकिलजिनविध्यापयसियः त्रिशुद्ध्याध्यायन्तस्तवचरणयु
ग्मं सुद्वादया नतर्षं स्वेष्टासैसुरशिखरिणीशानदधते ॥ ३२ ॥ जग
त्स्येकाधाराहितनरककारानिलयतः समुद्धर्त्तुंजंतून्परिवृढसमंतूनपिकि
ल तवत्रातर्ज्जन्माजनिजननमुख्याकगणहृत् न्नवेवेशस्तोर्थोपिचनिरू
पमानन्दरसिकः ॥ ३३ ॥ अहीशास्तेशस्तक्रमणवरिवस्यस्यसुमना
मलाक्यस्येन्द्रक्तोयदिश्वदनुगंमद्यसनितं नितम्बिन्यान्वीतः सपदिकुरु
तेतंस्वपसमं समाह्वल्यंवाथप्रन्नवतिनकः स्वामिकृपया ॥ ३४ ॥ प्र
लापायाच्चुद्धास्तवगुणगणान्नान्तिविशदा स्त्रिलोकीन्नूजानेसुरपयमणे
न्नानवश्व रसज्ञानांकोव्याप्यमलधिषणोनव्यधिषणो नतानीष्टेसख्या
तुमदरपराव्र्धैतुसरदां ॥ ३५॥ नमस्तुभ्यंसंसृत्यतनुतटिनीतारणतरे
नमस्तुभ्यंन्नीमामयसमददन्तावलहरे नमस्तुभ्यंसूक्तातिमधुरिमदासी
कृतसुधा समुद्रायामुइश्युदवसिततुभ्यंजिननमः ॥ ३६ ॥ पादेयाद्
महिमालयायसुमनः सन्दोहशुश्रूषितां ह्रिद्वन्द्वायकेलिच्छिदेन्नगवते
न्नव्यावलीहेतवे लोकेशेपुरुषोत्तमायमदनामित्राथविश्वत्रयी मित्राय

क्षणदोदयायसततंश्रीपार्श्वतुभ्यंनमः ॥ ३७ ॥ सार्दूलविक्रीडितं छन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्त्ररमा भरनिर्जिततारकराजगणः कृतल क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारवदे ॥ ३८ ॥ तोटकछन्द॥ भवदमलपदाम्भोजन्मसंलग्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलिःप्रार्थये हम् वितरविततबोधंयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुषरम्यंत्वामचिन्त्य स्वरूपम् ॥३९॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा दप्रसादसनृपंरघुनाथदासम् मांशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावती प्रणुतसंसृतितोवपार्श्व ॥ ४० ॥ स्तोत्रकृद्गुरुनामगर्भवसंततिलका वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रभुस्तवः ॥ अहार्य्येषुस्तम्बेरमशशिमितेहायन थरे नभोमासकृष्णेगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु नाथाह्वामुनिना स्तवोवामासूनोरचितलिखितोमोदभरतः ॥ १ ॥ इतिश्री पार्श्वप्रभोमहिमस्तोत्र संपूर्णमगात् ॥

---

## ॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

### ॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धो विज्जाइ चक्की नमि विनमि ॥ मुणी पुंमरीउ मु णिंदो । वाली पज्जुन्न संबो भरहसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो कोम्मी पंच द्रविड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणेगे विम लगिरिमहं तिबमेयं नमामि ॥१॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥ लिवं॥

### ॥ अथ श्रीथंभणापार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, थंभणपुर ठाम ॥ सुरतरु सम सिरि पास सांम, राजे अभिरांम ॥ १ ॥ विवुधेसर सिरि अभय देव संथवियाणं दिय थुइ जलसिरिय नील वस, फण पल्लव मं भिय ॥ २ ॥ सुर नर सुह कुसुमावलीए, सिवफल दायक जांण ॥ आराहत जदि एग मण, पावो पद कल्यांण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमांण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला कांत दांत, करुणारस धामी ॥ १ ॥ कांचनगिरि सम देह, कांति वृष लांछन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥ पूर्व विदेह विराजता ए, पुंमरीकनी जांण ॥ प्रभु द्यो दरसन संपदा, कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरब दीसे दीपतो । गिरवो गिरवर नित्त । तीरथ सिखर समेतको । चाहूं दरसंण चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम बारम प्रभु । बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुहता सुजगीस ॥ २ ॥ सुणिये इणपर सूत्रमें । जिनवर गणधर वांण ॥ भविजन भेटो भगतसुं । तीरथ करण कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेसर पदमनाभ । समरुं सुखकारी ॥ भावी जिनवर भरहखित्त । मंमण मणिधारी ॥ १ ॥ लांछन वर्ण सुदेह मांन । थिति आयु प्रमाण ॥ परमेसर सिरि वर्द्धमांन । जिनराज समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक जांण ॥ भावी जिनवर भेटिये । कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अवामा वामाद्दे सकलमुभयः कालघटना । द्विधा भूतं रूपं भगवदभिधेयं भवतिय॥ तदंतर्मंत्रं मे स्मरहरमयं सेंडुममलं निराकारं शस्वज्जप नरपते सिध्यतु सते ॥१॥ अविरलशद्बघनोघा । प्रक्षालितसकलभूतलकलंकाः ॥ मुनिभिरुपासित्तचरणा । सरस्वती हरतु मे दुरितं ॥ १ ॥ इति सरस्वती स्तुतिः ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनासनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां । साधूनां वंदनेन च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अद्य प्रक्षालितं गात्रं । नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोहं सर्वपापेभ्यो । जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर पूज्या नहीं, ते परघर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो, सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनेसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥ ॥ २ ॥ जीवड़ा जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमे परजा नमे, आंण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे बागमें, बेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंद्रमा, त्यूं सोभे महाराज ॥४॥ जगमें तीरथ दो वड़ा, सेत्रुंजो गिरनार ॥ उण गिरि ऋषभ समो सरया, उण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो मन रही लोभाय ॥ ज्यूं महदीके पातमे, लाली लखी न जाय ॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अज हु न बावड़े, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांइ पंखियां, वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंच भरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार ॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ ऋद्धि बुद्धि मोहे दीजिये, दिन२ अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेसरियानाथके, केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लाड़ले, वसे पहाड़ा बीच ॥१०॥ इस रागको नांम कल्याण हे, प्रभुजीको नांम कल्याण ॥ सकल सभा कल्याण हे, जब प्रगटी राग कल्याण ॥ ११ ॥ सोरठ राग सुहामणी, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं ज्यूं रात गलंतड़ी, त्यूं त्यूं मीठी थाय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोड़ियो, लाखां ऊपर कोड़॥ मरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोड़ ॥ १३ ॥

दया गुणारी वेलमी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु वेलमी, रोपी आद जिनंद ॥ श्रावक कुल मंमन नई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत नदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत संत आतम गुण नूप ॥ आचारज नवझाय साधु समतारस धांम, जिन नाखित सिद्धांत सुद्ध अनुनव अनिरांम ॥ १ ॥ बोधबीज गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ घ्यावो परमानंद पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परनव आणंद जगमांहि प्रसिद्धो, चिंतामणि सम जास जोग बहु पुन्ये लद्धो ॥ तिहुअण सार अपार एह महि मा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संनारो ॥ ३ ॥ सिद्ध चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कल्याणनिधि प्रगटे चेतन नूप ॥ ४ ॥ इति ॥

---

॥ अथ पञ्चतिर्थोंका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक जगगुरु मुऊ आशाविशराम ॥ पूरव विदेहें विजय नली पुष्कला वई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥ धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण धरे जिहां जिनवर नाण ॥ धन ते नविजन जे रहे प्रनु ताहरे परसंग, वदनकमल निरखी नित्य माणे नत्सव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु मुखें प्रनु सुजस तुम्हीणो सांनल कान, मिलवाने नलसे मन मा हरुं धरुं एक ध्यान ॥ नगति जुगति करवानी बे मुऊ सघली जोम, पण प्रनु लग पहूंचीजें तेह नहि पग दोम ॥ ३ ॥ आमा मूंगर अति घणा विचवहे नदियां पूर, किम मुऊथी अवराये प्रनुजी एटली दूर ॥ आंखमली नलजो करे जोयवा मुख जिनराज, पांख

फली पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटफली वहतो कोई न मिले सेंगू साथ,कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ ॥ जाणूं शशहर साथें कहुं संदेशा जेह, पण अलगो थई ऊपरि वाफे निकले तेह ॥५॥ जो कोई रीतें प्रभुजी तुमथी एथ अवाय, तो इण भरतना वासी भविजन पावन थाय ॥ साहिबनी तो सुन जर सघले सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू फल प्रति जोय ॥ ६ ॥ अलगो छुं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना आवे हियमे खिण खिण चित्त ॥ हुं छुं सेवक तुं छे माहरो आत मराम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ साचें दिलथी मुझशुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर प्रभु करजो मोपरि महिर अछेह ॥ दूसम काल तणो दुःख टालो दीन दयाल, पालो विरुद संभालो निज सेवकशुं कृपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर छतां नवि थाय निराश ॥ केई वसे प्रभु पासें केई वसे छे दूर, राजमहिरनी रीतें सकलने जाणे हजूर ॥ ए ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वा मि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजें एक पलक जो थाये प्रभु तुझ संग, लाभ उदयजिन चंद लहे नित प्रेम अभंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामि सीमंधरा तुझ भगते भणुं ॥ भेटवा पायकमल भाव हियमे घणो, करिय सुप साय जे वीनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुझशुं कूड अरिहंत शुं राखियें, जिस्यो अछे तिस्यो कर जोडि करि भाखियें ॥ अति सबल मुझ हिये मोह माया घणी, एक मन भगति किम करूं त्रिभुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगहे, रीश चटको चढे

लोभ्र वयरी नम्हे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हीयम्हे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति हियम्हे अनेरो धरूं, मूढ मन रीझवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुख ने दुःख जे हुं सहुं, मन तणी वात अरिहंत कि णने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुक्ख करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं, धर्म न कराय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो नहिं, एह आधार जग जाणजो अह्म सही ॥६॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तुह्म समोवम्ह नहिं अवर वा ल्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणुं सदा सांभलुं, बारवर परषदामांहि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय उलगुं, किम करुं गाम पुंडरगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ भोलिम्हा भगति तूं चित्त हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने नामें मन वयण तन उल्लसे, दूरथी ढूकम्हा जेम हियम्हे वसे ॥ ए ॥ भव भलो एणि संसार सहु ए अछे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पछें ॥ ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशुं नेह जे वात तुह्म जी कहे ॥ तुह्म पय भेटवा अति घणो टलवलुं, पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी आभ कागल करुं, क्षीरसागर तणां दूध खम्भिया भरुं ॥ तुह्म मि लवा तणा सामि संदेशम्हा, इंद पण लखिय न शके अछे एवम्हा ॥ १२ ॥ आपणे रंग भरि वात मुख जेटली, उपजे सामि न कहाय मुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा, ढाम्ह ने कोम्ह प्रभु

पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुव भवि मोह वश नेह हुवे जेहनें, समरियें एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल भम रो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतनुं ध्यान हियमे वस्युं, बापडुं पाप हिव रहिय करशे किस्युं ॥ गम जिम गरुमवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके रही ॥ १५ ॥ पाप में कज्ज सावज्ज सहु परिहरी, सामि सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहियें प्रभु पालशुं, डुःख भं मार संसार भय टालशुं ॥१६॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह में वात अरिहंत आगल कही ॥ एवमी मारी भगति जाणी करी, आपजो बापजी सार केवल सही ॥१७॥ कलश॥ एम ऋद्धिवृद्धि, समृद्धि कारण, डुरित वारण, सुख करो ॥ नवमाय वर श्री, भक्ति लाभें, थुएयो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी सामि, मया घणी ॥ कर जोमि वलि वलि, वीनवुं प्रभु, पूर आ शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति संपूर्ण ॥

॥ अथ पंजमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप भणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद, केवल न्यान दिणंद ॥ त्रिगमे गहगह्यो ए, भवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वडुं संसार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए, साचो सर्दह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलास, लोकालोक प्र काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे किश्युं ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ न्यानी श्वासोश्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही ए, कोम बरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोल्या

सूत्र मझार ॥ किरिया छे सही ए, पण पाछे कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो ग्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरो ए, शंख दूधें ज्नरयो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पांचमि अक्षर सार ॥ ज्नगवंत ज्नाखीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ए ॥

॥ ढाल दूजी ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि सांज्नलो, जिम पामो ज्नवपारो रे ॥ श्रीअरिहंत इम उपदिशे, ज्नवियणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥ मिगसर माह फागुण ज्नला, जेठ आषाढ वैशाखो रे ॥ इण षट मासें लीजियें, शुज्नदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ बे कर जोमी ज्नावशुं, गुरु मुख करो उपवासो रे ॥ पांचमि पमिक्कमणो करो, पढो पंमित गुरु पासो रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन आरंज्न टालो रे ॥ पांचमि स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पालो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी रे ॥ पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुज्न दृष्टि रे ॥ पां० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उल्लालानी देशी ॥

॥ हिव ज्नवियण रे पांचमी उजमणो सुणो, घर सारू रे वारू धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्य जोगें रे धन पामतां सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धन पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पांचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयें काउस्सग्गरली ॥ त्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजियें, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजिये ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पांच प्रति वीटांगणां, पांच पूठां रे मखमल सूत्र प्रमुख तणां ॥ पांच मोरा रे लेखण पांच

मजीसणा, वासकूंपा रे कांबी वारू वतरणां ॥ उल्लालो ॥ वतरणां वारू वलीह कमली पांच झिलमिल अति झली, स्थाप नाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती परूपाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच कोथल पंच नवकरवालियां, इण परें श्रावक करे पांचम उजमणुं उजवालियां ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजियें, घर सारू रे दान वली तिहां दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल ढोवणुं ढोइयें, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लालो ॥ जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश भृंगार ए, आरति मङ्गलथाल दीवो धूपधाणुं सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखरू अंगलूहणुं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमाझियें रात्रि जोगे रे गीत रसाल गवाझीये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें, ज्ञान दरिसण रे उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लालो ॥ साधियें मारग एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक नें नरलोक मांहे ज्ञानवंत ते आगलो ॥ अनुक्रमें केवलज्ञान पामी सासतां सुख जे लहे, जे करे पांचमी तप अखंझित वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥ कलश ॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेसरो ॥ में थुण्यो श्री अरिहंत भगवंत, अतुल बल अलवेसरो ॥ जयवंत श्री जिन चंद सूरिज, सकलचंद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समय सुंदर, भगति भाव, प्रशंसियो ॥ २५ ॥ इति श्रीपंचमी वृहत्स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥ पहिलुं ज्ञान ने पछें किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥ १ ॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥२॥ मति अगवीश श्रुत चवदे वीश, अवधि ब असंख्य प्रकार रे ॥ दोय भेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥ चंद सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेशुं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पंचमो भेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल बिराजे, गाजे गोमी पास ॥ सेवा सारे जेहनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोभागी साहिब मेरा बे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा बे ॥ ए आंकणी ॥ सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें पेखतां मानुं, नव नवि उबिय देखाय ॥ २ ॥ सोभा० ॥ अ० ॥ भव दुःख भंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी गुण ताहरा माहरां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिमे नहिं साहिबा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु मुखचंद विलोकित हरषित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥ किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें तुं वसे साहिब, शिवसुखनोही ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ माता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणारसी, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सतरेशें बावीशें, वदि वैशाख वखाण ॥ आठम दिन भले भावशुं, मारी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी

विघ्ननिवारी, परउपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारता, मोरी स फल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फळ्यो जी, कवण कनक फल खाय ॥ गयवर बांध्यो बारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल जिन महारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिळ्या जी, हियडुं हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन ममता मेवा लही जी, कुण खल खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लही जी, कुण ल्ये रांक मनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न छते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाथ ॥ कुण सुरतरुथी ऊठिनें जी, बावल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज भवो भवें जी, तुंहिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा भगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परषदा बेठी जुडी, मागशिर शुदि इग्यारश वडी ॥ १ ॥ म ल्लिनाथना तीन कल्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधी रूवडी ॥ मा० ॥ २ ॥ नमिने ऊपनुं केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणिक हुवे तिम हीज, पंचासनी संख्या परगडी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढशें कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ छे ए तिथि जेवडी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लाभ अ नंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमल्लि नाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ ॥ मौन तणी परि व्रत इम पडी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो

लीजियें, चोविहार विधिशुं कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें धर्मी ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक उल्हास ॥ ए तिथि मोक्ष तणी पावर्मी ॥ मा० ॥ ए ॥ ऊजमणुं कीजें श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काउसग्ग गुरु पाये पर्मी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीजें वली, पोथी पूजीजें मन रली ॥ मुगतिपुरी कीजें दूकर्मी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहियें सर्व ॥ व्रत पच्चक्खाण करो आखर्मी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसलशोल इक्याशी समे, कीधुं स्तवन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो धार्मी ॥ मा० ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गाउं त्रिभुवनके स्वामी ॥ संतहि संत जपे सब कोइ, जां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥ सांत जपीने कीजे कांमा, सोइ कांम हुवे अभिरामा ॥ शांति जपी परदेश सिधावे, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्भथकी प्रभु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति तणा गुण गावे, ऋद्धि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सुहाई, ता नरकूं कुछ आरति नांही ॥ जो कछु वंछे सोही पूरे, दालिद्र दोष मिथ्यामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकासी, घट२ के भीतर प्रभु वासी ॥ स्वामि सरूप कह्या नवि जावे, कहितां मो मन अचरज थावे ॥ ५ ॥ मार दिया सबही हथियारा, जीता मोहतणा दल सारा ॥ नारि तजी शिवसुं रंग राचे, राज तज्या पिण साहिब साचे ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहीजे देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥ ऋद्धि सहू प्रभु पास लहीजे, भिक्षाहारी नांम कहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजक हे सम भायक, पिण

सेवगकूं सदा सुख दायक ॥ तजी परिग्रह भए जग नायक, नाम अतीत सबै विध लायक ॥ ८ ॥ सत्रु मित्र सम चित्त गिणीजै, नांम देव अरिहंत भणीजै ॥ सयल जीव हितवंत कहीजै, सेवक जांण महा पद दीजै ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गंभीरा, दूषण नहि इक मांहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण न रहे प्रभु एकण गांमी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रभुजी सब देखै, पिण सुपनो कबहु नवि पेखै ॥ रीस विना बावीस परीसह, सैन्या जीती तैं जगदीसह ॥ ११ ॥ मांन विना जग आंण मनावै, माया विना सबसुं मन लावै ॥ लोभ विना गुणरास ग्रहीजै, भिकु भये त्रिगडो सेवीजै ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणै सिर छत्र धरावै, नांम जती पिण चमर ढलावै ॥ अभय दांन दाता सुखकारण, आगै चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजै, कर्म सबीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ थापै, लछ घणी देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावै, ना किसही कूं सीस नमावै ॥ अकिंचनको बिरुद धरावै, पिण सोवन पंकज पगठावै ॥ १५ ॥ तजि आरंभ निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकूं साथ चलावै ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेष नही निगुणा संग वारै ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अद्भुत कहिये, तेरे गुणांको पार न लहिये ॥ तुं प्रभु समरथ साहिब मोरा, हुं मनमोहन सेवक तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुंलोकनणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन दयाला ॥ तुं सरणागत राखण धीरा, तुं प्रभु तारक छै वडवीरा ॥ १८ ॥ तुम जेसें वडभागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो स वायो ॥ कर जोडी प्रभु वीनवुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो तारो, भवसायरथी पार उतारो ॥ श्रीहथणापुर मंडण सोहे, तिहां जिन शांति सदा मन मोहे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसाये, श्रीगुणसागरके मन भाये ॥ जे नर नारी इक चित गावै, मन वंछित फल निश्चै पावै ॥ २१॥ इति श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासी आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ विलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देशी ॥

॥ जय२ जिण पास जगत्र धणी, सोभा ताहरी संसार सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस धणी, करवा सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन२ जे न पड़े जंजालै, उपयोगसुं वैसे जिन आलै ॥ आसातना चउरासी टालै, साश्वता सुख तेहिज संभालै ॥ २ ॥ जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह करै गाली जूये रमै ॥ धनुषादि कला सीखण ढूकै, कुरलो तंबोल भखे थूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय वडी लघुनीत तणी, संज्ञा कंगुलिया दोष सुणी ॥ नख केस समारण रुधिर क्रिया, चांदोनी नाखै चांमड़ियां ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये कावो, खावे धांणी फूली खावो ॥ सूवे वेसामण विसरावै, अज गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखे, नख गाल वपुषना मल नाखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विहचन अपणो कर धन धरणो ॥६॥ वैसे पग ऊपर पग चढिया, थापे छाणा ढमै ढुंढणियां ॥ सूकवै कप्पड़ पप्पड़ वड़ियां, नासीय छिपे नृप भय पड़ियां ॥ ७ ॥ शोके रोवै विकथा ज कहै, इहां संख्या वैतालीस लहै ॥ हथियार घड़े ने पशु बांधै, तापै नांणो परखै रांधै ॥ ८ ॥ भांजी निस्सही जिनगृह पेसे, धरै छत्र ने मंडपमें वेसै ॥ पहिरै वस्त्र अनें पनही, चामर वींझै मन ठाम नहीं ॥९॥ तनु तैल सचित्त फल फूल लियै, भूषण तज आप कुरूप थियै ॥ दरसणथी सिर अंजली न धरै, इगसाड़े उत्तरासंग न करे ॥१०॥

भेगो सिरपेच मोभ जोभे, दर्भिथे रमतें वेसे होभे ॥ सयणासुं जुहार करे मुजरो, करे भंभ चेष्टा कहे वचन बुरो ॥११॥ धरे ध रणो भगभे भल्लंगो, सिर गूंथे बांधे पालंगी ॥ पसारे पग पहरे चाखडि यां, पग भटक दिरावै डुखमियां ॥ १२ ॥ करदम छूटे मैथुन मंभे, जू आवलि अंग तिहां डंभे ॥ उघाभे गुभ करे वयदा, काढे व्या- पार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीर धरे, अंघोले पीवा ठाम भरे ॥ दूषण जिनभवनमें ए दाख्या, देवबंदनभाष्यमें जे भाख्या ॥ १४ ॥ सुज्ञानी श्रावग सगति छतां, आसातन टालै यारसता, परमाद वसे कोई थाये, आलोयां पाप सहू जाये ॥१५॥ तंबोल ने भोजन पान जूआ, मल मूत्र सयन स्त्री भोग हुआ ॥ भूषण पनही ए जघन्य दसे, वरज्या जिनमंदिर मांहि वसै ॥१६॥ द्रव्यत ने भावत दोय पूजा, एहनाहिज भेद कह्या दूजा ॥ सेवा प्रभुनी मन शुद्ध करै, वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम भव्य प्राणी भाव आणी, विवेकी शुभ वासना ॥ जिनबिंब अरचे परी वरजै, चोरासी आसातना ॥ ते गोत्र तीर्थं कर अरजे, नमें जेहने केवली ॥ उवझाय श्री ध्रमसिंह वंदे, जैन शासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्री चोरासी आसातना स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन देहप्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रणमुं ऋषभ जिनेसर पाय, धनुष पांचसै ऊंची काय ॥ बीजो अजित जिन मुझ मन वसै, मांन धनुष साढाच्यारसै ॥ १ ॥ तीजो संभव सुख दातार, ऊंची काय धनुष सो च्यार ॥ अभिनं दन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम सुमतिनाथ भगवांन, धनुष तीनसो देही मांन ॥ पद्म प्रभू पूरै मन आस, देह धनुष दोयसे पचास ॥ ३ ॥ सामि सुपारस सत्तम होय, देह प्रमांण धनुष सो दोय ॥ चंद्राप्रभु जिन मुज मन वसै, देह

प्रमांण धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, ऊंच प्रमांण धनुष सो एक ॥ शीतलनाथ नमें जग सवे, देह प्रमांण धनुष जसु निवै ॥ ५ ॥ श्री श्रेयांस नमूं उल्लसी, ऊंच प्रमांण धनुष तनु असी ॥ वासपूज्य बारम जिन चंद, मान धनुष सित्तर सुख कंद ॥ ६ ॥ विमल२ गुणाकर गंभीर, साठ धनुष जसु मान सरीर ॥ अनंत ज्ञांन अनंत प्रकाश, देह प्रमांण धनुष पचास ॥ ७ ॥ पनरम धरमनाथ जगदीस, मांन धनुष जस पेंतालीस ॥ शांतिकरण शोलम जिन शांति, देह धनुष चालीस सोभंति ॥ ८ ॥ सतरम कुंथु जिन जगदाधार, मांन धनुष पैंत्रीस उदार ॥ अर अठारम दीनदयाल, त्रीस धनुष तनं अति सुविशाल ॥ ९ ॥ मल्लिनाथ जिन जगणीसमो, मांन पच्चीस धनुष पय नमो ॥ वीसम मुनिसुव्रत अरिहंत, वीस धनुष तनु मांन कहंत ॥ १० ॥ इकवीसम नमिजिन राजान, धनुष पनरे तसु रूप निधान ॥ बावीसम श्रीनेमजिनंद, दस धन दीपै जांण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री पारसनाथ, नील वरण सोहे नव हाथ ॥ चोवीसमा जिनवर श्री वीर, सात हाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिनवर चोवीस, प्रणमें प्रह शम धरिय जगीस ॥ तां घर रुद्धि सिद्धि उछरंग, रंग विनय प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन देहमांन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन आयु प्रमांण स्तवनं लिख्यते ॥

॥ ऋषभदेव प्रणमुं जिनराय, लाख चोरासी पूरब आय ॥ बीजो अजित जसु सूत्रे साख, आउ बहुत्तर पूरब लाख ॥ १ ॥ तीर्थंकर संभव तीसरो, आउ लाख पूरब साठरो ॥ अभिनंदन पूरै मन आस, आउ लाख पूरब पचास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस, आउ लाख पूरब चालीस ॥ श्री पद्मप्रभुनी ए थित

जांण, लाख तीस पूरब परिमांण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्वे लाख पूरब वीस, दस लख पूरब चंदप्रभु ईस ॥ सुविधनाथ लख पूरब दोय, इक लख पूरब शीतल थित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसां तणो, वासुपूज्य परमायुष गिणों ॥ ५ ॥ विमल आयु लख साठ वरीस, वरस अनंत तणो लख तीस ॥ लाख वरस दस धरम दिणंद, लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पच्याणवै, श्री कुंथुनाथ तणी संभवै ॥ सहस चोरासी अर जिनतणी, मल्लि सहस पचावन भणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मनिसुव्रत परमाउ उदार ॥ वीस सहस नमिजिन थित भणी, वरस सहस नेमीसरतणो ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस बहुत्तर वीरजिणंद ॥ रुषभतणा तेरे अवतार, सात चंद शांतीसर बार ॥ ए ॥ सुव्रत भव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्तावीस ॥ त्रिहुं२ भव सतरे जगदीस, सगला भव एकसो अमतीस ॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन धन्न, गणधर चवदेसै बावन्न ॥ सहुनें मुनि लख अठावीस, सहस ऊपरै अमतालीस ॥ ११ ॥ लाख चमाल बयाल हजार, षमधिक सहु साधवी सो च्यार ॥ श्रावक लाख पचावन धुरै, अमतालीस सहस ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोमि श्रावका सुजगीस, लाख पांच सहस अमतीस ॥ ए संघ चतुर्विध सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणो ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सारं ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं, पन्नणासु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लियै निसतारं, आपण सफल

हुवै अवतारं, पामीजै नव पारं ॥ १ ॥ रुषन्न अजित संन्नव अ-
न्निनंदन, सुमति पदमप्रन्नु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंद्र-
प्रन्नू ने सुविध शीतल जिन श्रेयांस, वासपूज्य जिन सुरमणि,
विमल शुर्णकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुं-
थुनाथ अर मल्लि सुहंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए
जिन चोवीस ॥ जग वल्लल जगगुरु जगदीस, प्रणमीजै धर प्रेम ॥३॥

॥ ढाल २ जी ॥ प्रथम सुपन गज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम न्नरत नरइंद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मघवा तीजो
उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्कीस, छठो
कुंथु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संन्नूमि सनाथ ॥
५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिषेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय
तांम, बारम ब्रह्मदत्त नांम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार, क्षेत्र न्नरत
सिणगार ॥ मघवा सनतकुमार, पोहता सरग मझार ॥ ७ ॥ स-
न्नूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ थया सिवगामी, ते
प्रणमुं सिरनांमी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्टि जांण, द्विपृष्ठ दूसरो, तीजो स्वयंप्रन्नु जा-
णिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगमो, पुरुषसिंह परमांणिये
ए ॥ ९ ॥ छठो पुरुष पुंमरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नांमे
आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह उठी ए
पिण नमूं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला
पांच छठी गया ए ॥ सातमो पंचमी नैर, चोथी आठमो, नवमो
तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नें न्नद्र, सुप्रन्नु सुदर्शन,
आनंद नंदन शुन्न मती ए ॥ रामचंद्र बलन्नद्र, बलदेव ए नव,
आठ थया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलन्नद्र ब्रह्म देवलोक,

काल उसप्पणी, जास्यै सिव कृष्ण सासनें ए ॥ अथवा निपुलाक नाम, तीर्थंकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत भणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरपणै प्रभु रहतां काल सुखै गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वग्रीव नें तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंभ वलय प्रहलाद, रावण जरासिंधु जिसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरक गति गामिया ए, ते पिण भावि जिनेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४॥

॥ ढाल ५ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शांति नें कुंथु अरि एह भव एकही, चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत भव जूजूआ, देह तिणसाठ पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलीय बलदेव केरा पिता, एकहिज थाय नव एण लेखै बता ॥ तीन चक्रधर तणा मिलिय बारे टल्या, एम त्रेसठना तात इकावन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्रवर्त्ततणी टाल दीजे इसै, माय सहुनी थई साठ लेखे इसै ॥ एह नररयणनो ध्यांन नित जे धरे, तेह सुरपद लही मोक्ष पदवी वरै ॥ १७ ॥

॥ कलस ॥

इम थुण्या तीर्थंकर चक्रीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासुदेव सुसेव जेहनी करै सुरनर सेव ए ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष उत्तम जगत जयवंतो सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ सलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सैत्रुंजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ जुगला धर्म निवारणो, भय भंजण भगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुझ मन उलट अति घणो, सो दिन सफल गिणेस ॥ स्वामी श्री रिसहेसरू, जब नयणे निरखेस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम तिरथ विहरता, साधु

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरया, पूरब निन्नाणूं वार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥ इण गिरचउमासे रह्या, शिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पामें शिव सुख साश्वता, गणधर श्री पुंडरीक ॥ पुंडरगिरि तिण कारणें; जगति करो निरभीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू; विद्याधर बलवंत ॥ सेत्रुंज शिखर समोसरया, जे गरुआ गुणवंत ॥ श्री० ॥ ६ ॥ थावच्चा मुनिबर सुक, सहस२ परिवार ॥ पंथग वंथणे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांडव पांच महाबली, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सीधा सिद्धाचलै, सुर नर करै वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इम सीधा इण डूंगरे, मुनिवर कोडा-कोडि ॥ पाज चढंता सांभरे, ते प्रणमूं करजोडि ॥ श्री० ॥ ९ ॥ जे वाघण प्रतिबूझवी, ते दरबाजै जोय ॥ गोमुख यक्ष कवड मिली, सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर सेवक तास ॥ राजसमुद्र गुण गावतां, अविचल लील बिलास श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

## अथ श्री सिद्धाचळ स्तवनं लिख्यते ॥

॥ देसी गरवानी ॥

श्री सिद्धाचल मंडण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजामी रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनामी, यात्रीडा जात्रा निनाणूं करिये रे॥१॥ श्रीरुषभ जिनेसर राया रे, जिहां पूरब निनाणूं आया रे, प्रभु समवसरया सुख दाय ॥ या०॥ २ ॥ चेत्री पूनम दिन वखाणो रे, पांच कोडिसुं पूंडरीक जाणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संतै रे, बे बे कोडिसुं साधु संघाते रे, एतो पोहता पद लोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ काती पूनम कर्मने तोडी रे, जिहां सीधा मुनि दस कोडी रे, ते वंदो बे कर जोडी।

॥ या० ॥ ५ ॥ इम भरतेसरने पाटे रे, असंख्यात साधु थिर थाटे रे, पांम्या मुगति तणो ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनी परवारे रे, थावच्चा सुत सुखकारे रे, सय पंच सेलग अणगार ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीसे रे, सीधा बहु यादववंसे रे, ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पांचे पांडव इण गिर आया रे, सीधा नव नारद ऋषिराया रे, वलो संब प्रद्यून कहाय ॥ या० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते रे, इम भाष्यो श्रीभगवंत ॥ या० ॥ १० ॥ उज्जल गिर सम नहीं कोइ रे, तीरथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्यां पावन होइ ॥ या० ॥ ११ ॥ एकाहारी ने सचित्त पहारी रे, पदचारी ने भूमि संथारी रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम छहरी जे नर पाले रे, बहुं दांन सुपात्रे आले रे, ते जनम मरण भय टाले ॥ या० ॥ १३ ॥ धन२ ते नर ने नारी रे, भेटे विमलाचल इक तारी रे, जइये तेहतणी बलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंद सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिपदं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेव स्तवनं ॥

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब, वीनतडी अवधारो रे। जगना तारू ॥ मुझ तारो जी कृपानिध स्वांमी, जग जसवाद प्रगट छै ताहरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥ निज गुण भोका पर गुण लोला, आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज० ॥ अविनासी अविचल अविकारी, शिव वासी जिनराया रे ॥ ज० ॥२॥मु०॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हुं तुम चरणे आयोरे ॥ ज०॥तुम रीझावण हेते ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ज०॥३॥ मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्री, तरु साधारण पांमी रे ॥ ज० ॥

वरस संख्याता बलि विकलेंद्री, वेष धरया दुख धामी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेंद्रीपणो धारयो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंडक मांहि भमियो, अब तो हूं पिण हारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ भव नाटक नित करतो नव नव, हूं तुझ आगल नाच्यो रे ॥ ज० समरथ साहिब सुरतरु सरिखो, निरखी तुझने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुझ नाटक देखी रीझ्या, तो मन वंछित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीझ्या तो मुझ भाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच धरि हूं सेवा सारूं, तुं दुखड़ा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता सेती सुंम भलेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥ तुझ सरिखा साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ज०॥ तो मुझ करमतणी गति अवली, दोस न कोइ तुमारो रे॥ ज० ९ ॥ मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥ ज० ॥१०॥ मु०॥ वर्ष अढारे गुणतालीसै, ज्येष्ठ सुदी सोमवारो रे ॥ ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन भेटया, वीकानेर मझारो रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती, करजोड़ी हो कहुं मननी वात ॥बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिभुवन तात ॥ वी० ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हूं भम्यो, भव मांहे हो स्वामी समुद्र मझार ॥ दुख अनंता में सह्या, ते कहितां हो किम आवे पार ॥ वी० ॥ २ ॥ पर उपगारी तूं प्रभू, दुख भंजे हो जग दीनदयाल ॥ तिण तोरे चरणे हूं आवियो, सामी मुझने हो निज नयण निहाल ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण उधरया, तें कीधी हो करुणा मो

रा स्वांम ॥ हुंतो परम भक्त ताहरो, तिण तारो हो नहीं ढीलनो कांम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिबूझव्या, जिण कीधा हो तुझ ने उपसर्ग ॥ डंक दियो चंडकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वो० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण घणो, जिण बोल्या हो तोरा अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूंकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छै इंद्रजालियो, इम कहतो हो आयो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ॥ वो० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या ताहरा, ते झगड्यो हो तुझ साथ जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे भवे, शिवगांमी हो तें कीधो कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिष जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी पाल ॥ तिरती मूंकी कावली ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाल ॥ वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर रुषि दूहव्यो, चित चूको हो चारित्रथी अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा भंडार ॥ वी० ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूंकी हो संजमनो भार ॥ नंदिषेण पिण उधरयो, सुर पदवी हो दीधो अति सार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चोवीस ॥ ते पिण आद्रकुमारनें ॥ तें तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥ १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ विरत नही नही आखडी, नही पोसो हो नही आदर दीख ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामी आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें उधरचा, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥ सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरडी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नहि पलै, नही तेहवो हो मुझ दरसण ज्ञान ॥ पिण आधार छै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यान

वी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जोवे हो सम विखमी ठांम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंछित कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो दुख जाये दूर ॥ तुम नांमे वंछित फलै, तुम नांमे हो मुझ आनंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंडन, तीर्थंकर चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह लंछन, सेवतां सुरतरु समो ॥ जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज समयसुंदर ॥ संथुण्यो त्रिभुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहावीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करूं अरदास जी ॥ तारण तरण विरुद तुझ सांभलि, आयो हूं धर आस जी॥ पू०॥१॥ इण संसार समुद्र अथागै, भमियो भवजल मांहिजी॥गिलगिचिया जिम आयो गिरूतो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं ज्ञानी तोपिण तुझ आगै, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंडक हूं भमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते नरकतणो इक दंडक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच थावर नैं तीन विकलेंद्री ॥ उगणीस गिणती आंण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषी नैं वैमाणिक, इम दंडक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच अने नर, परयापता जे होय जी, ए चोविह देवांमैं ऊपजे, इम देवां गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आउखै नर तिरि, निश्चै देव ज थाय जी ॥ निज आऊखै सम के ऊछै, पिण अधिके नवि जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ भवनपती के व्यंतर तांई, समूर्छिम तिर्यंच

जी ॥ सरग आठमां तांइ पोहचै, गरभज सुकृत संच जी ॥ पू०॥ ॥ ८ ॥ आउ संख्यातै जे गरभज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ बादर पृथवी नें वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ९॥ पर्याप्ता इण पांचे ठामे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा मांहे पिण आगे, अधिकाई कहुं हेव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथकी मांझी सुर, एकेंद्री नवि थाय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला, मांनवमांहि जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परै, जीव भमै संसार॥दोय गति नें दोय आगत जांणियै, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ संख्याते आयु परजापता, पंचेंद्री तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहिज बे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३॥ प्रथम नरक लग जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम बीय ॥ गृद्ध प्रमुख पंखी त्रीजी लगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकै सीमा सापणी, छठि लग स्त्री जाय ॥ सातमियें माणस के माछलो ॥ ऊपजै गरभज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंडकै, तिरयंच के नर थाय ॥ ते पिण गरभज ने परयापता ॥ संख्याती जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरयां, जे फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्ट भांगे करते कहूं, पिण निश्चे नही कोय ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवै, बीजी हरि बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थंकर पद लहै ॥ चोथी केवल एव ॥ न० ॥ ॥१८॥ पंचम नरकनो सरबविरति लहै, छठि देसविरत्त ॥ सातमी नरकनो समकितहीज लहै, न हुवै अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मानव गति विन मुगति हुवै नही रे, एहनो इम अधिकार

॥आउ संख्यातै नर सहु दंडके रे, आवी लहै अवतार॥मा०॥२०॥ तेउ वाऊ दंडक बे तजी रे, बीजा जे बाबीस॥ तिहांथी आया आयै मानवी रे, सुख दुख कर्म सरीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच असंखी आउवै रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरनैं मनुष्य हुवे नही रे, अरिहंत भाख्यो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव तथा वली रे, चक्रवर्त्ति ने अरिहंत॥ सरग नरगना आया ए हुवै रे, नर तिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥२३॥ चोविह देव थकी चवि ऊपजै रे, चक्रवर्त्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थंकर ए हुवै रे, वैमानिकथी देव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

हिव तिरयंच तणी गति आगति कहियै अशेष, जीव भमैं इण पर भव मांहि करम विशेष ॥ आउ संख्यातो जे नर तिर्यंच विचार, ते सगला तिरयंचा मांहि लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचा मांहि आवे नारक देव, ते कह्या पहली तिण कारण न कहूं हेव ॥ पंचेंद्री तिर्यंच संख्यातै आऊखै जेह, ते मरी चिहुंगतिमां जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंद्री आठ कहावे, तिहांथी आउ संख्याता नर तिरयंचमें आवे॥ विकल चवी लहै सरवविरति पिण मुगति न पावै, तेउ वाउथी आयो तेहनैं समकित नावै ॥ २७ ॥ नारक वरजीनैं सगलाही जीव संसार, पृथवी आउ वनस्पतीमांहि लहै अवतार ॥ ए तीनैं इहांथी चवि आवै दसे ठांने, थावर विकल तिरी नरमांहै उतपत पामै ॥२८॥ पृथवीकाय आद देई दस दंडके एह, तेउ वाऊ मांहि आवी ऊपजै तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेउ वाउ बे जावै, विकलेंद्री ते दसमांहि जावै पूठाही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादितणो मिथ्यात्वी जीव एकंत, वनस्पती मांहे तिहां रहियो काल अनंत ॥ पुढवी

पांणी अगनि अनै चोथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइंद्री तेइंद्री अनै चौरिंद्री मझारै, संख्याता वरसां लगै भ्रमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ भव लगि तां नर तिरयंचमें रहियो, हिव मांनवभव लहिनें साधुनें वेषमें रहियो ॥ ३१ ॥ राग द्वेष छूटे नहीं किम हुवै छूटकवार, पिण छै माहरै मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण मैं त्रिकरण सुद्ध अरिहंत लाधो, हिव संसार घणो भ्रमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥ तूं मन वंछित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो मैं नवनिध सिद्ध पांमी ॥ अवर न कांइ इछू इण भव तूंहिज देव, सूधै मन इक होज्यो भव२ ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसल, मेर महिमा दिन दिनें ॥ संवत सतर गुणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद समान वाचक, विजय हरष सुसीस ए ॥ श्री पासना गुण एम गावै, धरमसी सुजगीस ए ॥ ३४ ॥ इति श्री चोवीस दंडक स्तवनं ॥

## ॥ अथ इरियावही मिछामिदुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ प्रभु प्रणमूं रे पास जिनेसर थंभणो ॥ ए देसी ॥

पद पंकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पडिक्कमी जिम इरियावही, श्री वीरनी रे वाणी तहत्त कर सरदही ॥ उल्लालो ॥ सरदही वांणी मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिछामिडक्कड तणी संख्या, कहिसुं जिम कहे केवली ॥ भू दग जलण तिम वाउ, वणसइ विगल पण इंद्री तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, दुर ते करिवा भणी ॥ १ ॥ चाल ॥ पुढवि दग रे वाउ तेउ वणस्सइ, पण थावर रे बादर सुहम दसे थई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यारह

थया, बावीसे रे पज्जत्तग अपज्जत्तया ॥ उल्लालो ॥ पज्जत्त अपज्जत्तग वखाणया, विगल तिय छह ज्ञाल ए ॥ जल थल खचर जुयंग दुइ, पण इंद्रिय तिरि अरुथाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुरुवी, नारकी तिहां सात जे ॥ ते चवद ज्ञेदे करी जाणो, पज्जत्तय अपज्जत्त जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा हम्मिया, किलविषिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंज्ञिय दस रे नव लोगंतिक जांणियै, सोलह विध रे व्यंतर देव वखाणियै ॥उल्लालो॥ वखाणियै दस विध जुवनपतिना, तार रवि ससि रिसिगहा ॥ चर थिर दसै विध जोइसी सुर, वखाणया जिनवर जिहां ॥ बारह विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रीवेके नव जणया ॥ पज्जत्त अपज्जत्तग अठाणूं, अधिक सत संख्या गिणयां ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ मेघ आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचज्ञरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर जूमिका ए ॥ खेत्र ए पनरह करम जूमि जाणोयै असि कसि मसिहि आजीविकाए ॥ हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरणयवत सहीए॥मेरुपिश पासती चारि २ खेत्र दस कुरु अकरम जूमीकहीए॥ ४ ॥ हिमगिर सिहरीय दाढ चीयारि लवण समुद्रमांहि विस्तरीए ॥ सात २ अंतर दोय पासैं दीप छप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दोइसै ज्ञेद दुइ आगला जांणी मणुय पज्जत अपज्जत्तयाए॥ एक सौ एक समुर्छिम ज्ञेद तीनसै तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ॥ ए देशी ॥

पणस्य त्रेसठिविध जीवसहू छे एह अज्ञिहय आदिक दस गुणित करीजै तेह ॥ पणसहस छसै वलि त्रीस अधिकते जाणि ॥ ते रागै दोसै दुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ दुइ सहस इग्यारह दुइसय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो हितज्ञर आण ॥मन-

वच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक ॥ तेतीस सहस सत सात-असी निःसंक॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुण किद्ध॥ इकलक्ख सहसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान वलिकाल जे थइयविराधना तिणि त्रिगुण संभाल ॥ ८ ॥ तीन लाख सहस च्यार बेसै अधिक तेथाय ॥ अरिहंत प्रमुख छह साखे छगुण थाय ॥ इम लाख अढारह वलि सहस चउवीस ॥ इकसो वीसोत्तर हुइ संख्या निसदीसं ॥ ए ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ चोपइनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिछामि दुक्कडंदेई भविक तरया भवजल निधिकेई ॥ तरे अछै वलि आगलि तरिसी ॥ निरमल केवल लखमी वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आतम करि निरमल ॥ सें मुखभाषे वीर जिणेसर ॥ सूत्रकरि गूंथै ते श्रुतधर ॥ ११ ॥ इम पडिक्कमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीस केवल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमीजै ॥ मानव जनम सफल इम कीजे ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो ॥ तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ नवझाय लक्ष्मी किर्ति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लब्धिवल्लभ तवन करि इम संथुणयो भावै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिछामि दुक्कड संख्या स्तवनं ॥

## ॥ अथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥दोहा॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराज॥ वस्तु-तत्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सप्त भंग रचना विना, बंधन

बेसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे गम ॥ पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह गज, ग्रही अवयव अकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नयें करी, जुगति योग शुद्ध बाध ॥ धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहीं किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध रुप रे ॥ नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अभंग अनूपरे ॥ ६ ॥ ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥ कालै ऊपजे विणसे कालै, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री०॥ कालै गर्भ धरै जग वनिता ॥ कालै जनमे पूत रे ॥ कालै बोलै कालै चालै, कालै झालै घरसूत रे ॥८॥ कालै दूधथकी दही थायै, कालै फल परपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपावै, अंत करे बे वाक रे ॥ ए ॥ श्री० ॥ जिन चउवीसै बार चक्कवै, वासुदेव बलवंत रे ॥ कालै कवलित कोइ न दीसै, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥ ॥ श्री० ॥ उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पणी आरा, वै वै जूजूये भांते रे, षट् रुतु काल विशेष विचारो ॥ भिन्न२ दिन रात रे ॥११॥श्री०॥ कालै बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ बुढपणे हुय बलिश दुर्बल, सकत नही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ री ॥ गिरुवा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तब स्वभाववादी वदे जी, काल किसुं करै रंक ॥ वस्तु स्वभावे नीपजे जी, विणसै तिमज निस्संक ॥१३॥ सुविवेक विचारी जुओ २ वस्तु स्वभाव ॥ ए आंकणी ॥ छते योग योवनवतीजी, वांझणि न जणै बाल ॥ मूछ नही महिला मुखै जी, करतल ऊगै न वाल ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण सभाव नवि संपजै जी, किमह पदारथ कोय॥

अंब न लागे नींबमें जी, बाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु०॥ मोरपीछ कुण चीतरे जी, कुण करै संध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी, सुंदर नयण कुरंग ॥१६॥ सु० ॥ काटा बोर वंबूलना जी, कुणें अणि-याला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध॥ ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकै नित वसै जी, मणि हरै विस ततकाल, परबत थिर चल वायरो जी, ऊरध अगननी झाल॥१८॥ ॥ सु० ॥ मच्छ तुंब जलमां तिरै जी, बूडै काग पाहाण ॥ पंख जाति गयणे फिरे जी ॥ इण परे सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय सुंठथी उपशमें जी, हरडे करै विरेच॥ सीझै नही कण कांगडो जी॥ सकल स्वभाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषै काठनो जी, भुंयमां थाये पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वभाव प्रमांण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो सशि सीयलो जी, भव्यादिक बहु भाव ॥ षट् द्रव्य आपापणा जी, न तजै कोइ सुभाव ॥ ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देसी ॥

काल किसुं करै बापडो रे, वस्तु स्वभाव अकज्ज ॥ जो न होय भवतव्यता जी, तो किम सीजै कज्ज रे ॥ २३ ॥ प्रांणी म करो मन जंजाल, ए तो भावी भाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ जलधि तरै जंगल फिरै जी, कोडि यतन करै कोय ॥ अणभावी होये नही जी, भावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ आंबै मोर वसंतमां जी, झालै केइ लाख ॥ खरया केइ खांखटी जी, केइ आंबा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ बाउल जिम भव तव्यता जी, जिण जिण दिसे उजाय ॥ परवस मन मानसतणो जी, तृण जिम पूठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसे पिण चिंतव्यूं जी, आवी मिलै ततकाल ॥ वरसां सोनुं चिंतव्यो जी, नियत कर

विसराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुभूमिते जी, समुद्र पड्यो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणांजी, नयण हरे गोवाल रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहा कोयल करे जी, किम राखीस रे प्रांण ॥ आहेडी सर ताकियो जी, ऊपर भमें सीचाण रे ॥प्रा० ॥२ए॥ आहेडी नागे डस्यो जी, बांण लग्यो सींचाण ॥ कोकूहो ऊडी गयो जी, कोड नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सख हएया संग्राममां जी, रात पड्या जीवंत ॥ मंदिरमांहे मानवी जी, राख्याही न रहंत रे ॥प्रा०॥ ३१ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ए देशी ॥

काल स्वन्नाव नियत मति कूडी, करम करे ते थाय ॥ करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव नवंतरे जाय ॥ ३२ ॥ चेतन चेतज्यो रे करम न छूटे कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें राम वस्या वनवासे, सीता पामी आल ॥ कर्मे लंकापति रावणनुं, राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्मे कीडी कर्मे कुंजर ॥ कर्मे नर गुणवंत ॥ कर्मे रोग सोग दुख पीडित, जनम जाये विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्मे वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्मे जिननें जोडे निमा रे, खीला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥ ॥चे०॥ कर्मे एक सुखपाले बैसे, सेवक सेवे पाय ॥ एक हय गय चढया चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम मांनी अंधतणी पर, जग हींडे हाहूंतो ॥ कर्म वली ते लहे सकल फल, सुखन्नर सेजे सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके कीधो उद्यम ॥ करंडीयो करकोले ॥ मांहे घणा दिवसनो भूखो, नाग रह्यो डमडोले ॥ चे० ॥ ३८ ॥ विवर करी मूषक तसु सुखमां, दीये आपणुं देह ॥ मार्ग लही वन नाग पधारया कर्म मर्म जोवो एह ॥ चे० ॥ ३ए ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ तो चाढियो घन मान गजै ॥ ए देसी ॥

हिव उद्यमवादी भणे ए, ए च्यारे असमर्थ तो ॥ सकल पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरत्थ तो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवी ए, स्युं नवि सीझै काज तो ॥ रामें रयणायर तणी ए, लीधो लंका राज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेहमां सत्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पिउ पैसंता जोय तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥ उद्यमथी ऊंची चढे ए, जोवो एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम करतां इक समें ए, जेह न सीझै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि ऊरयां विना ए, नवि रंधायें अन्न तो ॥ आवी न पडै कोलियो ए, मुखमां क्षेपे जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्मनो मर्म्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्रहार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंभ तो ॥ उद्यमथी खट मासमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपैइ सरवर भरै ए, कां करे इ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंदुउ ए, करे पाहाणमां ठाम तो ॥ उद्यमथी विद्या भणें ए, उद्यम जोडै दांम तो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ६ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवे ॥ अमिय रसै जिन वयण सुणीनें, आणंद अंग न मावे रे ॥५०॥ प्राणी समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥ ॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जांणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए पाचे समवाय मिल्यां विन, कोइ काज न सीझै ॥ अंगुल जोगै

कवल तणी पर, जे बूझै ते रीझै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रह आणी कोइ एकनें, एहमां दिये वडाई ॥ पिण सेना मिल सकल रणांगण, जीते सुभट लडाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वभावे पट उपजावे, काल क्रमें वणाई ॥ भवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विघन घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम भोक्तादिक, भाग्य सबल सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म थईनें, निगोदथकी नीकलियो ॥ पुण्यें मनुज भवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे प्रा० ॥ ५५ ॥ भवथितनो परपाक थयो तब, पंडित वीर्य उल्लसियो ॥ भव्य स्वभावे शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमान जिन इण पर वीनवै, सासन नायक गावो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्याद्वाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥५७॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक सुगति दायक, वीर जिनवर संथुण्यो ॥ सय सतर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय देव सुरिंद पटधर, विजयप्रभ सुणिंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक सीस इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च समवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ चंवणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार, आणी भाव अपार ॥ चवदे गुण थानक सुविचार, कहिस्युं सूत्र अरथ मन धार, पांमे जिम भव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आंणो, तीजो मिश्र वखाणूं॥ चोथो अविरत नांम कहाणो, देशविरति पंचम परमांणो, छठो प्रमत्त

पिछाणूं ॥ २ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अष्टम अपुरव करण कहीजै, अनिवृत्ति नांम नवम्म ॥ सुखम लोभ दसम सुविचार, उपशांत मोह नांम इग्यार, खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥ तेरम सयोगी गुणधांम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणूं प्रथम विचार॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म्म वखाणै, ए लक्षण मिथ्या गुणठाणै, तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पक्ष थापी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकलप घणें, संसयी नाम मिथ्यात चोथो भणै ॥ ६ ॥ समझ नही काय निज धंध रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अनंत अभव्यनें, कहिय अनादि थिति अंतसुभव्यनें ॥ ७ ॥ जेम नर खीर घृत खंड जिमनें वमें, सरस रस पाय वलि स्वाद केहवो गमें ॥ चौथ पंचम छठे ठाण चढले पडे, किणहि कषाय वस आय पहले अडै ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि षट आवली, सहीय सासादनें थित इसी सांभली ॥ हिव इहां मिश्र गुणठाण तीजो कहै, जेह उत्कृष्ट अंतरमहुरत लहै ॥ ए ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी तांम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला च्यार कषाय, सम कर समकितो, कैतो सादि मिथ्यामती ए ॥ ए बेहिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर दहणा बेकं रती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांहि, मरण लहै नही, आउ बंधनपडै नवो ए ॥ कै तो लहै मिथ्यातकै समकित लहै, मति सरखी गति परभवैए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान, उदय करी लहै, मति विन किहां समकितपणो ए ॥ ते अविरत

गुणठाण, तेत्रीस सागर, साधिक थिति एहनी भणी ए ॥ १२ ॥ दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै धरै ए ॥ सहु जिन वचन प्रमांण, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करै ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुदगल अरधतां, उत्कृष्टा भव में रहै ए ॥ केइएक भेदी गंठि, अंतरमहुरते, चढते गुण शिवपद लहै ए ॥ १४ ॥ च्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशमें, ते उप शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते क्षय कीध, ते नर क्षायकी, तिणहिज भव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बांध्यो आऊ, तातें तिहां थकी, तीजै चोथे भव तिरै ए ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेसी ॥ ए देसी ॥

पंचम देसविरति गुणठाण, प्रगटै चोकडी प्रत्याख्यान ॥ जेण तजेवा वीस अभक्ष, पांम्यो श्रावकपणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥ गुण इकवीस तिके पिण धारै, साचा बारै व्रत संभारै ॥ पूजादिक षट् कारज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आर्त्त रौद्र ध्यान है मंद, आयो मध्य धरम आणंद ॥ आठ वरस ऊणी पुवकोड, पंचम गुणठाणे थित जोड ॥ १९ ॥ हिव आगे साते गुणथान, इक २ अंतरमहुरत मांन ॥ पंच प्रमाद वसै जिण ठाम, तेण प्रमत्त छठो गुणधांम ॥ २० ॥ थिवरकलप जिनकलप आचार, साधै षट् आव-स्यक सार ॥ उदयत चोथा च्यार कषाय, तेण प्रमत्त गुणठांण कहाय ॥ २१ ॥ रूधो राखै चित्त समाधै, धरम ध्यान एकांत आराधै ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विध नासै, अपरमत्त सत्तम गुण भासै ॥ २२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ नदी यमुनाके तीर उडै दोय पंखिया ॥ ए देशी ॥

पहिले अंसे अष्टम गुणठाणातणें, आरंभे दोय श्रेण संख्येपें

ते गणे ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवे उपशमी, क्षपकश्रेणि क्षायक प्रकृति दस क्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम अपूरव गुण लहै, अष्टम नांम अपूरव करण तिणे कहै ॥ सुकल ध्यानंनो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणांम अडिग ध्यामे धरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जांणियै, जिहां भाव थिररूप निवृत्ति न जांणियै ॥ क्रोध मांन ने माया संजलणा हणे, उदे नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम लोभ कांइक शिव अभिलखै, तें सूखम संपराय दसम पंडित अखै ॥ संत मोह इण नांम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण गांम सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करै किणही परै, तो थाये अहमिंद्र अवर गति नादरै ॥ च्यार वार समश्रेणि करै संसारमें, एक भवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पडै, मोह उदय उत्कृष्ट अरध पुदगल रुडै ॥ क्षपकश्रेणि इंग्यारम गुणठाणो नही, दशमथकी बारम्म चढै ध्यांने रही ॥ २८ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ एक दिन कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देसी ॥

खीणमोह नामे गुणठाणो बारम जाण, मोह खपायो नेमो आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चरित्त अमल यथा आख्यात, हिव आगे तेरम गुणथांन तणी कहै वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकडी क्षय गई रहीय अघातीय एम, प्रकृति पिच्यासी जेहमे जूना कप्पड जेम ॥ दरसण ज्ञांन वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान प्रगट भयो विचरै श्रीभगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी ज्ञानी परगट वात, महिमावंत अढारै दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे ऊणी कही इक पूरवकोडि, उत्कृष्टे तेरम गुणठाणें ए थिति जोडि ॥ ३१ ॥ कर सेलेसी करणं निरूध्या मन वच काय, तेण अयोगी

अंत समय लहु प्रकृति खपाय ॥ पांचे लघु अक्षर उंचरता जेहनो मांन, पंचम गति पांमें सिवपद चउदम गुणथान ॥ ३२ ॥ त्रीजे बारमें तेरमें मांहे न मरे कोय, पहिलो बीजो चोथो परभव साथे होय ॥ नारक देवनी गति मांहे लाभै पहिला च्यार, धुरला पांच तिरी मांहि मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर बाहड मेरु मंमण, सुमति जिण सुपसाउले ॥ गुणठाण चवद विचार वरण्यो, भेद आगमनें भले ॥ संवत सतरैसै बत्तीसै, श्रावण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिध, कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदे गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवझाय ॥ साधु सकल प्रणमी करी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव तत्वनी, गाथा भाखा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधे, कहिस्युं सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निर्जर बंध मोक्ष ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल बयासी बलि बायाल, सत्तावन बारै चौ नव क्रम भेदनी माल ॥ १ ॥ इग दु ति चौविह पणविह छविह जीव कहाय, चेतन त्रस थावर वेदै गई करणे काय ॥ एगेंदी सुखम बादर ए दोय जिय ठाण, सन्नि असन्नि पणिंदी वि ति चौरिंद्री आण ॥ २ ॥ ए सग पज्जत्ता अपज्जत्ता चवदे होय, अनुक्रम जीव ठाण ए सूत्र प्ररूप्या सोय ॥ नाण दंसण चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए षट लक्षण लक्षत जीव द्रव्य इह लोग ॥३॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जत्ती तीन, सासोसास

भाषा मन षट् ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार एगेंदी पंच पज्जत्ती विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें षट् पज्जत्ती होय ॥४॥ इंद्रिय पांच उसास आऊ बल ए दस प्राण, च्यार छ सात आठ एगिंदी विगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेंद्री नें नव दस क्रम थाय, प्राणथी जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तीनूंना त्रिण२ भेद, काल दसम इग आगास पुग्गल च्यार विभेद ॥ खंधा देस पएस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुग्गल नभ काल ए पांच न जीव॥६॥चलण सहाई धम्मैं थिर संठाण अधम्म, अवगाहैं पूरण गलणें नभ पुग्गल धम्म ॥ समयावलिय महुत्त दीह पख मास नें साल पल्योपम सागर उसप्पणी सप्पणी काल॥७॥षट् इग दो सग सग सग षट् इग अंक गिणाय, एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्र कहाय ॥ तीन सात वलि सात तीन कलासें माण, केवलनाणी भणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मणु सुर दुग पंचिंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति सरीर उवंग कहाय ॥ आदि संघैण संठाण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परघ उसास तेम वलि आ तप ने उज्जोय ॥ ए ॥ सुभखगइ निम्माणत सादि दगु नीमाल, सुर नर तिरि आऊ तिथ्थंकर पुण्य बयाल ॥ तस बादर पज्जत्त प तेय थिरं सुभ सोय ॥ सुभग सुसर आइज्ज जसैं त्रस दसको होय ॥ १० ॥ नाणंतराय दस कनव बीजा नीचअसाय, मिथ्य थावर दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरियं च दुग एकेंद्री वि ति चौरिंद्री तेय, कुखगई उपघा अपसत्थ वर्ण चौ भेयं ॥ ११ ॥ पढ म संघयण विना संघैण तेम संठाण, एम बयाली प्रकृति पाप त तनी ए जाण ॥ थावर सुहम अपज्ज साहारण अथिरे गेय, असुभ दुभग दू सरणा इज्ज अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय इंदि कसाय अव्रय तिम जोग बायालीस भेद पच्चीस क्रिया संजो

ण ॥ काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप, प्राणातिपात आरं भकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिछादंसण वली तेम,, अपञ्चखाणकी दिठ पुठ पाडुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवणि य ने सत्थि सहत्थे जेह, आज्ञापनकी वेयारण अणभोगा तेह ॥ १४ ॥ अणव कंख पञ्चयना भवभंगी समुदाय, प्रेम द्वेष इरियाव ही क्रिरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसहज इ धम्म भाव ण चारित्त, पणतिग बावीस दस बारे पण संबर तत्त ॥ १५ ॥ इ रिया भाषा एषणा सुमतीना भेद होय, आदान भंरू उच्चार नि क्खेवण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जाण, हि व आगे बावीस परिसह कहूं हित आण ॥ १६ ॥ भूख पिपासा सीत उसन मसो निरवत्थ, अरति जोषा चरिआ नैषिद्या सिज्जा सत्त ॥ अक्कोसवहजायण अलाभ रोग त्रिण फास, मल सकार य भा अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव संजम सम्म, सत्यं सौच अकिंचन बंभचेरज इ धम्म ॥ पढम अ नित्य असरण संसार एग अनत्त, असुचि आश्रव संबर निज्जर भ वि भावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुभाव बोध डुरलभ इग्यारम गाम, धरम साधक अरिहंत ए बारे भावना भाव ॥ सापायक छेदोप स्थापन बीजो सोय, परिहार विशुद्ध सूखम संपराय चनत्थो जोय ॥ १९ ॥ तिम अहरकाय चरित्त सरब जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु विधि आचरणें के जिय पांम्या सिद्ध ॥ बारे बिध निर्ज्जर तत्व बंध ना च्यार प्रकार, प्रकृति ठिई अनुभाग प्रदेस भेदें निरधार ॥२०॥ अणसण जणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सल्लीनता बाहिर तप षट भाग ॥ पायछित्त विनय वेयावच्च तेम सिज्झाय, ध्यान काउसग अभ्यंतर तप षट विध थाय ॥ २१ ॥ प्रकृतिसु भाव काल अवधारण थित निरबंच, अनुभागे रस तेम प्रसेदे दल

नो संच ॥ पट प्रतिहार धार तरवार मद्य वलि तेम, निगम चित्र कर कुंभकार भंभारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना भाष्या जे जे भाव, तिम ज्ञानावरणादिक अमना एह सन्नाव ॥ इम संखेपें विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावै पांम्यो वरण वस्युं हिव मोख तत्त ॥ २३ ॥ संत पदे परूपण द्रव्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन काल पांचमो छठो अंतर जाण ॥ भाग सातमो भाव आठ तिम अलप बहुत्त ॥ ए नव भेदें भावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक पदवी वे जे पदेंअविनाभाव, व्योम कुसुम तिम ससिक शृंग जिम नहीय अभाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मग्गण द्वार, विवरण कर वरणवस्युं सुणज्यो सुहम विचार ॥ २५ ॥ संमत्तै क्षायक सन्नी असन्नी येसन्नि, अणहारी आहारी अणहारी अपन्न द्रव्य प्रमाणे सिद्ध जीव ॥ द्रव्य होय अनंत, लोग असंखम भाग एग सिद्ध होय अणंत ॥ २६ ॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां भावै नहि सिद्धां अंतर जोय, सरव जीवथी भाग अनंतम सहू सिद्ध होय ॥ २७ ॥ दंशण नाण जेहने वे ते क्षायक भाव, जीवत जेहनें वलि परणामक भाव समाव ॥ सहुथी थोभा वेद नपुंसकथी जे सिद्ध, तेहथी थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक नव तत्त तस सम्मत्तं, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरब जिनेसर मुखथी भाष्या वयण जहत्थ, ए बुद्धी जेहनें मन संमत निश्चल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, अर्द्ध पुग्गल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उसप्पणिय अणंते इग पुग्गल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तदगुण वयण प्रगट्ट ॥ ३० ॥ इम नव तत्त भेद परिभेदै विवरण कीध, श्रावक आग्रह कीन सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गण सुभ सदन प्रकास नदो उपमांन,

श्रीजिनलाभचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक करिवर सिंहे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वडसाखानी पडिसाख ॥ ग्यानसार ते पडिसाखानी सूखम डाल, ए नव पद नव रयणे विनाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवछर निश्चय नय विगई प्रवचन माय, परम सिद्धि पद वाम गतें ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन ससि वार मेरु तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा भज नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ ऋषभादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥ दंडक रचनायें तवुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंडक प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणें थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आउ तेउ वलि, वाउ वणस्सइ काय ॥ बि ति चौरिंदी गब्भधर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणिया, ए दंडक चोवीस ॥ एहना द्वार कहूं हिवै, गणनायें ते वीस ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर उगाहण संघयणेंसणा संठाण, कोहाई लेसिंदिय दो समुग्घाय प्रमाण ॥ दिठी दंसण नाण जोग तिम वलि उवयोग, उपपात वलि चवण ठिई पज्जत्ति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनोआहार सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा दुगनो ए अरथ कह्यो संकेत ॥ हिव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुची हुं तेहथी कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ २ जी ॥ देसी सूरती महीनानी ॥

चौ गब्भज तिरि वाऊ कायें च्यार सरीर, मनुष्य सें पांच दंडक इगवीस रह्या ति सरीर ॥ थावर च्यारनें जघन्य उक्कोसे देह

प्रमाण, भाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो जघन्य स्वभावक अंगुल भाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने विख्यात ॥ सुरनो सात हाथ गब्भय तिरि वणस्सय काय, जोयण सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगाउ बेइंदी जोयण बार, एग जोयण चउरेंद्री देह ऊंचै आकार ॥ आरंभ काले वैक्रिय देहनो ए परिमाण, भाग एक इग अंगुलनो संख्यातम जांण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख, नवसै जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ सात्रावकथी दुगणो नारक वैक्रिय काय, एक महूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥ सुरनें पक्ष एक उक्कोसविउवण काल, विगल संघयणो थावर सुर नारकनी माल ॥ गब्भय नर तिरनें षट् विगलनें छेवढ एक, सरव जीवनें च्यार दसेससाये लेष ॥ ५ ॥ नर तिरनें षट् सुरनें समचौरंस संठाण, हुंडग इग नारग विगलेंद्री सूत्र प्रमाण, नाणाविह धयसूईमसूरनी चंद्र आकार, वणसइ वाऊ तेऊ भू बुदबुद अप्पाकार ॥ ६ ॥ सहुनें च्यार कसाय गब्भय षट् नर तिरि होय, वेमाणिय नारग तेउ वाऊ विगल त्रिक होय ॥ जोयसि तेऊ लेसा सेस रह्या ने च्यार, दार इंद्रियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥ समुद्घात सग नरनें पण गब्भय तिरि देव, नरग वायुनें च्यार सेसनें तीनुं भेव ॥ दिट्ठी दोय विगलसें थावरने मिथ्यात, सेसने तीन दिट्ठि जिम प्रवचनमें विख्यात ॥ ८ ॥ थावर बि ति नें एक अचक्खू दंसण होय, चौरिंद्री ते चक्खू अचक्खू दंसण होय ॥ मनुजनें च्यार सेस दंडगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर नारगनें लीन ॥ ९ ॥ थावर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण, गब्भय मणुनें तीन अनाणनें पांचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें तेरै जोग, मनुजनें प ? रै च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाऊकायनें पाच तीन थावर संयोग, मनुजने बार नरग तिर देवनें नव उपयोग ॥ विगल डुगै पण षरू चौरिंडी थावर तीन, उववाय इग चवण दार दोनुं समकीन ॥ ११ ॥ एगसमै संख्यात असंख्या चवण पपात, गप्नय तिरि विकलेंडी नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ अथावर वणस्सइ संख संख अणंत, मणुज असन्नी असंख चवंत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ वावीस सात तीन दस वरस सहस उक्किठ, वणस्सई च्यारनें तीन दिवस तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पल्य सुर नारग अयर तेतीस, व्यंतर पल्य अधिक लख वरश पल्य जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसें ऊणा दोय पल्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें वार वरस गुणचास दिवस उम्मास ॥ अंतमुहुत्तजहन्नें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥ नुवनपती नारग व्यंतर दस बरस हजार, पल्य तेना अंस वेमाणिय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें षट थावरनें च्यार ॥ विगलनें पंच पज्जत्ती ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरब जीवनें होय उए दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सब मकार, दीह कालकी चौविह सुर नारग तिरयंच ॥ विगलनें हेउ पएसा सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गप्नय मणुजनें दीह कालकी सन्ना होय, केइक आचारज कहे दिठिवायथी दोय ॥ निच्चय पज्जत्ता पंचिंदि तिरि नर जेह, चौविह देवां माहे आवी ऊपजै तेह ॥ १७ ॥ संखाउपज्जत पंचेंदी तिरि नर तेम, पज्जत्ता नू दग पत्तेय वणस्सई जेम ॥ ए सरवेमें निश्चै सुरनी आगति हुंति, पज्जत्त संख गप्नय तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वरत्या नर तिर उपजै न हुवे सेस, नू अप्प वणस्सइमें नरग विण उपजै असेस॥ पुढवाई दस पयमें नू आऊ वणजंति, पुढवाई दस पयमें तेउ वाऊ उवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊनो गमण पुढवी पद नवमें हुंत, पुढ-

वांई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति मणुआ सहुमें जाय, तेउ वाऊथी मरीने जीव मनुज नवि थाय ॥ २० ॥ थीपुरसे चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, थावर विगल नारकनें एक नपुंसक भेद ॥ पज्जत्ता मणु बादर अगन वेमाणिक तेम भवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम॥ २१॥बेइंद्री तेइंद्री पृथवी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय॥ हे जिन ए सहु भावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणतां किमही न आवे अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंडगमें ते गति संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत प्रतिकूल ॥ २३॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेहथी तुह दरसणनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४॥ खरतर गछ भट्टारक श्रीजिनलाभ सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना पद अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तसु सीस, तेण तव्या तेवीस द्वार दंडग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम चंद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमनें सोमवार ॥ श्रावक आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अठम चौमासो कर जैपुर नगर मझार ॥ २६ ॥ इति श्री चोबीस दंडग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ भुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥
कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप॥ १ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ देसी सुरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव दु भेद, सत्ता भिनै सिद्ध अनंतै रूप अभेद॥संसारी थावर इग तिम त्रस दोय प्रकार, भु अप वाउ

भेद वणस्सइ थावर धार॥१॥ फिटक रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी अरणेटो पालेवो पाषाण ॥ भोडल तूरी ऊस भूमि पाहण जे खाण ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विभेद ॥ भूमि आकास ऊस हिम करग आकुना भेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूंअर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा झाला भोभर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युतादिक अगनि जीव विख्यात ॥ उब्भामगउक्कलिका मंडल वलि मुख वात, सुद्ध गूंज तिम घण तणु वाऊ भेदें ख्यात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय वणस्सई जीव दु भेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कंदा अंकुर कूंपल फूलण बलि जंबाल, भूंफोडा अद्दत्तिय सरवे जे फल वाले ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथलो थेग पालंको साग, गुपत सिरा सांधा गांठा भांजे सम भाग ॥ काटी डाल भूंमिमें रोप्यां पल्लव थाय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरीरे एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल डाल फल मूल काठ बीजे जिय एक॥ वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमुहुत्तें आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिठी निजर न होय, लोकालोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय॥ कवडी संख गंडोला लहिगा लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विख्यात ॥ ८ ॥ माय बाहाकम पौरादिक बेइंद्री होय, गोमी माकण जूआ कीडा कीडी दोय ॥ दीपक ईली घीवेलो गोगीडा जात, चरम जू कागादहिया गोवर कुम उतपात ॥ ९ ॥ धनकीडा जिम चोरकीडा गोवालो तेह, ईली कंथुक इंद्रगोप तेइंद्री एह ॥ वीछू ढंकण भमरा भमरी इंद्री च्यार, तीडा माखी डांस मछर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवडोला मांकडिय पतंग इत्यादिक भेद, नारक तिरि मणु देव पंचेंद्री च्यार विछेद॥

घम्मा वंसा सेला अंजन रिठा कात, मघा माघवई नारग ए नामें सात ॥११॥ जलचारी थलचारी नभचारी तिरयंच, मछ कछ सुसमार मगर गाहा जल अंच ॥ चौपय उरपरि भुजपरि साप भुचारी तेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय॥१२॥ खेचर चरम रोम पंखी चमचेरू कपोत, मनुजलोकथी बाहिर समुग विगय पंख होत ॥ सरवे जल थल खचर समुछम गभ्भय दोय, कम्म अकम्म भूमि अंतर दीवा मणु जोय॥१३॥असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अठ, जोइस पंच वेमाणिय डुविहासु तें दिठ॥ पनरे भेदे सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, तनु मानादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकार॥१४॥ देह आउखो एक सरीरे थितनो मांन, प्रांण जेहने जेता तिम वलि योन प्रमाण॥अंगुल भाग असंख सहू एगिंदी काय, जोयण सहस साधिक पत्तेय वणस्सई काय॥१५॥वि ति चउरिंदी अनुक्रम उक्किठ देह ऊंचास, बारे जोयण तीन गाउ इग जोयण भास ॥ सत्तमना नेरइया धणु सय पंच प्रमांण, तेहथी अरध२ कणा अनुक्रम रयणाण ॥१६॥ जोयण सहस गभ्भधर मछ उरगनो देह, गाउ धणुअ पुहत्त भूचारी पंखी जेह खेचर नव धणु उरग भुयंग जोयण नव होय, नव गाऊ परिमाण समुछम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खरू गाउ ऊंचास चउप्पय गभ्भय मांण, तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमांण ॥ भुवन व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसाणंत, सात हाथ उक्कोसे ऊंचपणे तणु हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहेंद्रे षट ब्रह्म लांतक पांच, शुक्र सहस्रारे उक्कोस च्यार कर वांच ॥ आणत प्राणत आरत अच्युत हाथें तीन, नवग्रैवेयक दोय पंचाणुतर इग लीन ॥१९॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस्सें आय भू आऊ वाऊ वणती दिन तेऊकाय ॥ बार बरस गुणचास दिवस तिम वलि छम्मास, अनुक्रम बेइंदी तेइंदी चौरिंदी रास ॥ २० ॥ सुर नारग तेतीस अयर उक्कोसें आय, चौपय

तिरिय मनुजनौ तीन पल्योपम थाय ॥ जलचर उरपर भुजपर उक्कोसें पुव्वकोडि, पंखीनें इग भाग असंख्य पल्यनो जोड ॥ २१ ॥ सरव सूखम साधारण समूछम मणुं जेह, जहन्न उक्कोसें अंतमुहुत्त नियम थिति तेह, इम भगाहण आख्यो संखेपै अधिकार, जे वलि इत्थ विसेस विसेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य उसप्पिणी सहु एगिंदी आपणी काय, उपजै चवै अनंत साधारण वणस्सई काय ॥ संख्याता संवछर विगल आपणी देह, सात आठ भव पंचेंद्री तिरि मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उदवरती जीव नरक नवि जाय, देव चवीने ते वलि देवपणे नवि थाय ॥ इंद्रिय सासोसास आउ बल ए दस प्राण, च्यार छ सात आठ इग दु ति चौरिंद्रीय जाण ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेंद्री दस नव अनुक्रम जोय, प्राणथकी जे वि प्रयोग जिय मरणें होय ॥ भीम सायर संसार अपार अनंती वार, भमियो जीव धरम विन जोण असीनें च्यार॥२५॥सग सग सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवद लख सूत्रैं साख ॥ भू अप तेउ वाऊ वणयत्तेय साधार, बि ति चौ पण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आय न पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत भंग जिन आगम थित विख्यात ॥ रोग न सोग न भोग जोग नही नारी लिंग, नहीय नपुंसक पुरसतणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वीरज ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेहथी सिद्धांतै सिद्ध कहंत ॥ इम ए जीवविचार गाथाथी भाषारूप श्रावक, आग्रहथी में कीनो सुगम सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गच्छ भट्टारक श्री जिनलाभ सूरीस, रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस ॥ संवत ससि रस वारण ससिहर धर निरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर मझार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ समवसरण विचारगर्भित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणंद ॥ प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थंकर आवे तिहां, त्रिगडो करे तइयार ॥ समकित करणी साचवे, एह कहूं अधिकार ॥ २ ॥ करे प्रशंसा समकिती, मिथ्यात्वी होवे मूक ॥ सूर्य देख हरखे सहू, जिम अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देसी ॥

आप अरिहंत भले आविया जी, गावै अपछरह गंधर्व ॥ समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहूं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥ भुवनपति वीस इंदे मिल्या जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस ३ दस वेमाणिय जुरुया जी, चौसठ इंद सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥ पवन सुर पूंज परमारजै जी, भूमि योजन सम भाव ॥ मेघकुमर रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिडकाव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर सुभ धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर हिव वेगसूं जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण उरध मुखै जी, वरषए जाणु प्रमांण ॥ भवणवइ देव त्रिगडो भलो जी, करय ते सुणाउ सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा- तणो जी, सोवन कांगरे सार ॥ रवि ससि रयण कोसीसको जी, कनकनो वीच प्राकार ॥ आ० ॥ ए ॥ रतनगढ रतनने कांगरे जी, रचय वेमाणि सुरराज ॥ भलो त्रीजो गढ भीतरे जी, जिहां विराजै जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ भींत ऊंची धणुं पांचसै जी, सवा- तेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रोल पचास धणु च्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावडी वीस हजार ॥ थाक श्रम नहिय चढतां थकां जी, एक कर ऊंच विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथ्वीथकी जी, ऊंच

रहे त्रिगढ आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसै जी, नगर आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं २ दिस तिहां जी, नीलमणि मोर निरमांण ॥ डुसय धणु मध्य मणि पीठका जी, ऊंच जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां चिहुं दिसे जी, मोतीयें झाकझमाल ॥ सम विच कूण ईसाणमें जी, देवछंदो सुविसाल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवडुंडुभि नाद उपदिसे जो, जिन गुण गावसी तेह ॥ अह्म जिम आइ सिर ऊपरे जी, गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुव दिसि आसणे आय वेसे पहू, सुर कृत चौमुख रूप देखै सहू ॥ दीपै असोक तस बारगुण देहथी, देखि हरखै सहू मोर जिम मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण छत्र सुविसाल ए, रूप चिहुं २ दिसें चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वांण श्री जिनतणी, भगवंत उपदिसै बार परषद भणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग निकूणें करी, गणधर साधवी तिम वेमाणिय सुरी ॥ ज्योतषी भुवणनी विंतरी स्त्रीपणें, नैरुतकूण जिनवांण ऊभी सुणे ॥ त्रिहूंतणा पति वायवकूणमें जाण ए, सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए ॥ बारह परखदा मद मछर छोड़ ए, भूख त्रिस विसरै सुणै कर जोड़ ए ॥ १९ ॥ पूठ भामंडल तेज प्रकास ए जोयण सहस ध्वज ऊंच आकास ए, झलहलै तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहु वारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ वाहण वहिल सहु परिय पहिले गढे, दोय पगथार नर नार ऊंचा चढै ॥ जिनतणी वाणि सुणि जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुन्यवंत पुरुष ते परषद बारमें, सुणें जिनवाणि धन गणिय अवतारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मांहिलो प्रोल

माहे वसै ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणियै, विदिसि चौ कूप दोय २ वखाणिये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए, स्नान पाने वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अप राजिया, मध्य कंचण गढे प्रोल वसंतिया ॥ तुंबरु पुरुष खट्वंग अ र्चि माल ए, रजतगढ प्रोलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो त्रिगडो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्द्धिक रचै तिण ठाम ए॥ करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही होय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी ऋद्धि दीठी जियै, तेह ध धन धन्न अवतार पायो तियै॥ पास अरदास सुणी वंछित पूरज्यो, हिव मुझ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै ऋद्धि वरणै सहू जिनवर सारखी ॥ सर- दहे ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी॥ प्रकरण सिद्धांत गुरु परंपर सुणी सहु अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवनं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेवजी सुण २ सैत्रुंज स्तवन लि० ॥

॥ ढाल ॥ पाटोधरजी पाटियै पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजांमी, हूं तो अरज करूं सिरनांमी ॥ कृपानिध विनती अवधारो, भवसायर पार उतारो, निज सेवक वांन वधारो ॥ कृ० ॥ १ ॥ प्रभू मूरति मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जाउं वारी हुं वार हजारी कृ० ॥ २ ॥ हिव किसियै विमासण कीजै, मुझ ऊपर महिर धरीजै, दिल रंजन दरसन दीजै ॥ कृ० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया, भवरेना पातिक टलिया, प्रभु जो मुझसै मुख मिलिया ॥ कृ० ॥ ४ ॥ समरथा संकट टलि जावे, नव नव नित मंगल थावै, मुझ

आतम पुन्य भरावै ॥ कु० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजै, केसर चंदन चरचीजै, दिन धन२ तेह गिणीजै ॥ कु० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस सरस लहि तोरो, अति हरषित हुवो चित मोरो, जिम दीठा चंद चकोरो ॥ कु० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचम आरै, वीस माहा भय संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ कु० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर कांई, वाधै संपत शोभ सवाई ॥ ॥ कु० ॥ ए ॥ नाभिराय कुलंबर चंदा, भव जन मन नयण आनंदा, भलगे सुर असुर सुरिंदा ॥ कु० ॥ १० ॥ जयकारी रिषभ जिनंदा, प्रह सम घर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन भक्ति सूरिंदा ॥ कु० ॥ ११ ॥ इति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका वडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ ढाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवमीपुर मंमण गुण निलो ए, तवन करिस प्रभु ताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥ नयरी नांम वणारसी ए, सुरनयरी जिण ऋद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी छै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु घर नार ए तसु गुणहि न लभै पार ए ॥ तास उयर अवतार ए, तसु अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए, अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूछै भूपतिनें कह्या ए, करजोमि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ बीजै वृषभ उदार, धरणी जिण धरयो भार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान, जसु बल कोय न मांन॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुर सेवी ॥ ६ ॥ पांचमैं पुष्फनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ छठै दीठो

ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कुंभ, भरियो निरमल अंभ ॥ देखि सरोवर दसमें, मनह थयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठांमें, खीरजलधि इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥ तेरम रतननी रासि, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें ए दीठो, पातिक धूमथी नीठो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो भूप उदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, थास्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण, आवी मंदिर उत्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्थ ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम उगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर पहुता आपणै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरु जगत्र थयो जयकार, खिण इक नारकियें पायो सुख अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूतकरम निसि कीध, कर थांनक पोहती वंछित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोसठ इंद्र मिली तिहां आवै, लेइ निज भक्तै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ क री जनम महोछव जननी पासै ठावै, तिहांथी सुर सब मिल ही प नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी उगो दिवस उदार, घर२ गाईजै कीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार, तसु नाम दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधै दिन२ कला करी जिम चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजित रूप जिसो देविंद ॥ गुणकला विचक्षण विद्यातणो निधांन, जोवनवय आयो परणायो राजान १९

॥ ढाल ४ ॥

कुमरपदै प्रभु रहतां काल सुखै गमै ए, आयो मन वैराग संजम लेवा समै ए ॥ तब लोकांतिक देव जणावै अवसरू ए, देइ संवछरी दांन याचक जन सुखकरू ए ॥ २० ॥ स्वामी संजम लेय इंद्रादिक सब मिळ्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदळ्या ए, पांमीय केवलज्ञांन सुरै महिमा करी ए, थापीय चौविह संघ मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ५ ॥

इम श्री गौडीपासतणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह परलोग सुवंछित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवडीपुर जावै, चोर धाड संकट टलै विघन बुराइ न आवै ॥ २२ ॥ धरणराय पदमावइ जास वहे सिर आंण, सांमल वरण सुसोभित नव कर काय प्रमांण ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि कांमगवी सम तोलै, श्री गुण-शेखर सीस समयरंग इण पर बोलै॥ २३ ॥ इति श्री गोडी पार्श्व-जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु अजिय जिणंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यभंडार भरेसु ए, मानव भव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोडहि लाख पचास ए, सागर जिनसासण भास ए, रिसह जिनेसर वंस ए, नवझाय सरोवर हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां गाजियो ए ॥ विजया तसु घरनार ए, बिहुं रमयति पासा सार ए ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, तिण राय मनाव्यो हार ए ॥ भयर वस्यो दस मास ए, प्रभू पूरी जननी आस ए ॥ ५ ॥ बिहुं जण

मन आणंदियो ए, सुत नांम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण सयल उछाह ए, क्रम२ वाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस तणी ए, गति सुललित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति चाले गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो संसार ए, वलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखी गज गहगह्यो ए, लंछन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधे सब काज ए, प्रभु पाले पुहवी राज ए ॥ ए ॥ हिव हथणापुर गाम ए, विश्वसेन नरेश्वर नांम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे बेव ए ॥ १० ॥ चवदह सुपनें परवरयो ए, अचिरा उयरें सुत अवतरयो ए ॥ मांनव देव वखाणियो ए, चक्कीसर जिणवर जांणियो ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिण नांम दियो श्रीशांत ए ॥ जिन गुण कुण जांणे कही ए, त्रिहुं भुवणे तसु उपम नही ए ॥ १२ ॥ नयण सलूणो हिरणलो ए, वन सिंहे बीहै एकलो ए ॥ नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गीतहि राग सु रंग ए, पिण पभणै लोक कुरंग ए ॥ तो उलग्योससि संक ए ॥ तिण पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग अति खलभल्यो ए, भय भंजण सांमि सांभल्यो ए ॥ आणंदियो मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंछन तणो ए ॥१५॥ लीला पति परणे घणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ बल भल अयण जोगवे ए, पीय राज भली पर भोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर तणें मंडल समें ए, पंचास सहस वरसां गमे ए ॥ तो तेजै दिणयर जिसो ए, ऊपन्नो चक्करयण तिसो ए ॥ १७ ॥ साधी भरह छखंड ए, वरतावी आण अखंड ए ॥ चवद रयण नव निहि सही ए, वसु सोल सहस जरवें अही ए ॥ १८ ॥ सहस बहुत्तर पुर

वरा ए, बत्तीस मौरुबद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोरु ए, भिन्न वे नमें बे कर जोरु ए ॥ १ए ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र घमघमें ए, बत्तीस सहस नाटिक रमें ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण ला वएय लीला नरी ए ॥ जंगम सोहग देहरी ए, एसी चौसठ सह स अंतेउरी ए ॥ २१ ॥ अवरज ऋद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र यण नंमार ए ॥ ते कहिवा कुण जांण ए, वपुवपु रे पुएय प्रमांण ए ॥२२॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चोथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस सहस पचवीस ए, सब पूरी मनह जगीस ए ॥२३॥ इण पर बिहुं तीर्थंकरा ए, चिर पालिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए सार ए, बिहुं लीधो संजम नार ए ॥ २४ ॥ बिहुं खम दम धीर ज धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ बिहुं जिन झाण समाण ए, बिहुं पाम्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ विहुं देवहि कोरु- हिमहि ए, बिहुं चौतीसे अतिसय सहि ए ॥ समवसरण बिहुं गाण ए, बिहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेउरी ए, बिहुं आगलि इंद अंतेउरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि गुण गावै सुरबहू ए ॥ २७ ॥ बिहुं सिर छत्र चमर विमल, त्रिहुं पग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिनतणें विहार ए, नवि रोग न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं नवयार नुवन नरी ए, बिहुं सिद्ध रमणसुं परवरी ए, बिहुं नंजी नव फंद ए, बिहुं उदयो परमाणंद ए ॥ २ए ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जांणे चिंतामण सुर तरु समो ए ॥ श्रुणि अति संऊ विहाण ए, तिहां इह परनव नवि हांण ए ॥ ३० ॥ त्रिहुं नव्व मंगल करण, बिहुं संघ सयल डुरिय हरण ॥ त्रिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज नुवण रयण ॥ ३१ ॥ इम नगते नोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति

जिण थुय नणि ए ॥ सरण बिहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमेरुनंदन उवझाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देशी॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान क्रिया जिण उपदिसी जी, सिव सुख तणो उपाय ॥ नविक जन धर श्रीजिन उपदेस, बूटे कर्म कलेस ॥ न० ॥ आंकणी ॥ पमिलेहण मुहपत्ती तणी जी, नाखी छै पचवीस ॥ तिहां ए नाव विचारिये जी, इम नाखै जगदीस ॥ न० ॥ २ ॥ प्रथम बे पास विलोकिये जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पमिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी पुष्टि ॥ न० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रनी जी, मोहनी तीननो त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ न० ॥ सीष वधू टक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव अखोमा आदरो जी, नव पखोमा गमाउ ॥ ५ ॥ न० ॥ देवतत्व गुरुतत्वसूं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी, तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ न० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी, संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अवधार ॥ न० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति ग्रहीजे शुद्ध ॥ परिहरियें वलि जांणनें जी, तीने दंम विशुद्ध ॥ न० ॥ ८ ॥ पमिलेहण पचवीस ए जी, मुंहपत्तीनी सार ॥ हिव पमिलेहण अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ न० ॥ ए ॥ हास्य अरति रति धोयनें जी, सुद्ध करो वांम बाह ॥ तज नय शोक डुगंछना जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ न० ॥ धुरली लेस्या तीन ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ न० ॥ काढ सल्य तीन उरथकी जी, मा

या नियाण मिथ्यात ॥ च्यार कषाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करी घात ॥ १२ ॥ भ० ॥ तज खटकाय विराधना जी, चरण विन्हे सुद्द होय ॥ ए पमिलेहण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १३ ॥ भ० ॥ इम पमिलेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै करै जी, पांमैं सुख्ख अनेक ॥ १४ ॥ भ० ॥ कलस ॥ इम वीर जिनवरतणा मुखथी, अरथ गणधर सांभली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहाणी, सुणो भवियण मन रली ॥ उवज्झाय वर श्रीलब्धिकीरत, मुखथकी ए संग्रही ॥ मुंहपती पमिलेहण तणी विध, लब्धिकीरत गणि कही ॥ इति श्रीमुहपत्ती पमिलेहण स्तवनं ॥

## ॥ अथ आलोयण स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाद उपगार थायै घणौ ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांभली, लहिय समकित अनें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यांन धर तप जप खप करै, जिणथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागा जिके गुरुमुख आलोइयै, जीव निमर्ल हुवै वस्त्र जिम धोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नें अरथ ते धारणा ॥ किणही कारण वसे पाप जे कीजियै, प्रथम ते नांम संकप्प कहीजियै॥३॥ कीजीये भेद कंदर्प्प प्रमुखै करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा धरी ॥ कूदतां ग्रवेतां होय हिंसा जिहां, दर्प्प इण नांम करि दोष तीजो तिहां ॥ ४ ॥ विणसतां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चोथौ आकुट्टिया दोष ऊपजै तिको ॥ अनुक्रमें च्यार ए अधिक एक एकथी, दोष धर प्रायच्छित्त भेद विवेकथी ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्याननां उपगरण-तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमढ एकासणो आंबिल उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वताई तास ॥ ६ ॥ ए जो खंफित थायै अथवा किहांई गमाय ॥ तो वलि नवा करायां दोष सहू मिट जाय ॥ थापना अणपफिलेह्यां परिमढनो तप धार, गिरतां एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार तिहां पुरमढ जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं न्नेदं मन्न ॥ आशातन गुरु देवनी साहमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंन्न विणास्यां चोथ प्रसिद्ध, वि ति चनरेंद्री प्रसायां एकासणथी वृद्ध॥ बहु बि ति चौरें-द्रिय हण्यां वि ति चन उपवास, संकल्पादि चिहुं विधि डुगुणा डुगुण प्रकास ॥ ए॥ उदेही कुलियावफा कीफी नगरा न्नंग, बहुत जलोयां मूंक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कृमि पातन आंबिल इक एक, जीवांणी ढोलंता दोय उपवास विवेक ॥ १० ॥ संकल्पादिक एक पंचेंद्री उपद्रव होय, दोइ त्रिण आठ दसैं उपवासै आलोयण जोइ, बहु पंचेंद्री उपद्रव उठ अठमें दस वीस ॥ चिहुं प्रकारै चढती आलोयण सुण ले सीस ॥ ११ ॥ पंचेंद्रीनें लकफी प्रमुखे कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास नें उठ विचार ॥ साध समक्षै लोक समक्षै राज समक्ष, कुफा आल दियां डुइ चौथरु उठ प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ उपवास दस दंफायां तेम मरायां वीस, इक लख असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास ॥ १३ ॥ सूआवफना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन कीधां बहु असतने पोस ॥ करीय डुवालस बार हजार गुणो नव-

कार, मिछादुक्कड़ देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी तांम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पच्चखाण, विण दीधां वांदणा, पडिकमणा विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिज्झाय, तिहा अविधै भणया, इ कइ आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निबी आंबिल, भांगै आलोयण इमें ए ॥ एक पांच षट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास भंग उपवास, आंबिल ऊपरां, अधिको दंड वखाणिये ए ॥ पाचम आठम आदि, भंग कियां वली, फिर भही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग, चूलै घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी छुरी, आंबिल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री भोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परद्रोह चींतव्या, उपवास एक२ जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनेर करमांदान, नियम करी भंग, मद्य मांस माखण भख्या ए ॥ आलोयण उपवास, संकल्पादिक, चिहुं भेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ बोल्या मिरखावाद, अदत्तां दांन स्युं, जघन्य एकासण जांणीये ए ॥ अति उत्कृष्टी एण, जांण आलोयण, उपवास दस२ आंणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत भागे अतीचार, जघन्य छठ आलोयण धार ॥ मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥ परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे भंग ॥ च्यार सिक्षा व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी नववाडि कहाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फरस हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥२४॥ साधुअने श्रावक पोसोध, एकेंद्री सचित्त संघट्टे कीध ॥ वीसर भोले सचित्त जलपी

ध, दंम एकासण आंबिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोयां विण लूह्यां पात्रै, एकासण तिम पुरिमड्ढ मात्रै ॥ गइ मुहपत्ती आंबिल सारो, तिम ठवै अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार ठीम्हो राखै, व्रत पच्चखांण करै पट् साखै ॥ दोवे मिच्छामिडुक्कम्ह दाखै, आलोयण लेतां अभिलाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता नावै पार ॥ तोपिण संक्षेपै तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने विधि पांमी ॥ जीतकल्प ठाणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद २९

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयनें ॥ एकांत पूछै गुरु बतावे, शक्ति वय तसु जोयनें ॥ विध एह करसी तेह तिरसी, धरमवंततणै धुरै ॥ ए तवन श्रीभ्रमासिंह कीधो, चौपने फल वधी पुरै ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्वीप स्तवनं ॥

नंदीसर बावन जिनालय, साश्वता चोमुख सोहे रे ॥ रुषभानन चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमांन मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥ आठमो द्वीप नंदीसर अदभुत, बलयाकार विराजै रे ॥ तेहने मध्य चिहुं दिस सोभित, अंजन गिरिवर गाजै रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण सहस चोरासी ऊंचा, ऊंचपणे अभिरामा रे ॥ मूलै प्रथुल सहस दस जोयण, उवरि सहस कर ॥३॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद प्रभूना, अति उत्तंग उदारा रे ॥ साधू जंघा विद्याचारण, वांदे विविध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यैश इकसो चोवीस, बिंब संख्या सब दाखी रे ॥ ध्यावो सेवो भविजन भगते, सुध आगम कर साखी रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंचपणै सहु जोयण बहुत्तर, सो जोयण आयामा रे ॥ पिहुलपणे पचास जोयणना, प्रभूप्रासाद सुठामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसै आयत प्रभुनी, विविध रतनमई काया रे ॥ जिन कल्याणक उच्छव करवा, सुरपति भक्ते आया रे ॥ नं० ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं भवरै, चोमुख च्यार विसाला रे ॥ चाव१ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चोसठ सहस जोयण उत्तंगैं, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दिसि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ॥ ९॥ वाव५ नें अंतर विदसैं, रतिकर परवत रूडारे ॥ दोय२ संख्या जगदीसै, कह्या नही ए कूडा रे ॥नं०॥१०॥ जोयण सहस मांन दस ऊंचा, दस२ सहस विस्तारारे ॥ झल्लरि सम संठाण जगत गुरु, निश्चय ए निरधारचा रे ॥ नं० ॥११॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण, अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपडिमानी संख्या तेहिज, श्रीजिनराज वखाणै रे ॥ नं० १२ ॥ इम प्रासाद प्रभूना बावन, नंदीसर वर दीपे रे ॥ द्रव्य भाव विधि पूजा करतां, मोह महा भड जीपैं रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जीवाभिगमें जाणो रे ॥ इम अधिकार छै ग्रंथ अनेकै, इहां संका मत आणो रे ॥ नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुभव इहां ध्यावो रे ॥ ध्यावो जिम पावो परमातम, जैनचंद गुण गावो रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाइ द्वीपै वीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वंदु मनसुध विहरमाण जिणेसर वीस, द्वीप अढीमें विचरै जयवंता जगदीस ॥ केवलग्यानने धारै तारै कर उपगार, किण २ ठामें कुण२ जिन कहस्युं सुविचार ॥१॥ पैंतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र प्रमाण, वलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुद्रै सोहै द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरै करमाभूमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो जंबूद्वीप समै विच थाल आकार, लांबो पिहुलो इक लख

जोयणनें विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नांमें मेर, तिणथी दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षण दिसि एह भरत सुभ क्षेत्र, पांचसे छवीस जोयण छ कला तेहनो क्षेत्र ॥ उत्तरखंडमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण विहु करमभूमी छए अरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस छसे चोरासी जोयण जाण, च्यार कला ए महाविदेह विखंभ वखाण ॥ बावीससै तेरे जोयण एक विजय पहुलाण, एहवी वत्तीस विजय विराजै जेहने ठाण ॥ ॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरब पश्चिम दोय विभाग, सोलै १ विजय तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे आरे तारै श्रीअरिहंत, एहवे महाविदेह करमभूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरब विदेह विजय पुष्कलावती आठमी ठांम, पुंडरीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंधर-स्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नांम, पश्चिम विदेह बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वच्छविजय वलि पूरब विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥ नलिनावर्त्त चोवीसमी पश्चिम विदेह वखाण, बीतसोका नगरी तिहां चोथो सुबाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप मझार, महाविदेह सुदरसण मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा गढ जेम गिरिंद, खाई रूपे दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ए ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपै बीजो द्वीप ए, धन२ धातकी खंड ॥ पिहुलो चिहुं लख जोयणे, मंडल रूपे मंड ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय भरत दोय एरवत, दोय वलि महाविदेह ॥ करमभूमि खट छै जिहां, भण-हिज नांमें एह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरब पश्चिम धातकी, खंड गिणीजे दोय, विजयमेरु पूरब दिसै, पश्चिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥ इक २ मेरुने अंतरे, करमभूमि तीन २ ॥ निज२ मेरुथी मांडिने,

रखो चिहुं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो, छठो स्वयंप्रभु ईस ॥ ऋषभानन जिन सातमो, समरीजे निस दीस ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥ पूरब धातकी खंडमें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली विहुं जिननी परे, विजयनगर दिसि ठाण, ॥ तिणहिज नांमे अनुक्रमें, विजयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रभु नमूं, दसमो देव विसाल ॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥ दी० ॥ १७ ॥ बारमो चंद्रानन जिन, पश्चीम धातकी मांहि ॥ विचरै च्यारुं जिणवरा, अचलमेरु उच्छाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी खंड ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालो-दधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींट्यो चूडी जेम विचाल ए ॥ सोलह लख जोयण विसतार ए, द्वीप पूखरवर अति सुखकार ए ॥ उलालो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनें आधै पगै ॥ विच पड्यो परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहां लगै ॥ तिण आधिकर अठ लाख योजन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमभूमी छ ए कहीजै, धातकी खंड जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधै पुष्करनें पूरब दिसै, मंदिर नांमे मेरु तिहां वसै ॥ पश्चिम विद्युमाली मेर ए, इहां किण इतरो नांमे फेर ए ॥ उ० ॥ फेर ए इतरो इहां नांमे, अवर ठामे को नही ॥ एक २ मेरे तीन तीने, करमभूमि तिहां कही ॥ इम भरत एरवत माहाविदेहे, नांम सरखो हेत ए ॥ तिणहीज नांमे विजय सगली, सासता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंडै तिम पुष्कर सही, इहां क्षेत्रानी रचना विध कही ॥ वार २ कहनां ए विसतार ए, पहिला पर लेज्यो सुविचार ए ॥ उ० ॥ सुविचार वाकी तेह सगलो,

नगर तिमदिज मन गमें ॥ पूरवे पश्चिम जेहनी ते, तेह तिमहीज अनुक्रमें ॥ श्रीचंद्रबाहु भुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थंकरा, पूरबे पुष्कर अरध मांहे, सरब जीव सुखंकरा ॥ २१ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदू जिन सतरमो, श्रीमहाभद्र अठारम नित नमो ॥ देवजसा उगणीसम देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ उ० ॥ जिण च्यार पुष्कर अरध मांहे, कह्या पश्चिम भाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमालि चिहुं दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौराशी पूरब लाख बरसां, आउ इक २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरण सुहामणो ॥ २३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ए ॥ हिव उत्कृष्ट भेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहे, पांचे भरते जिम पांचे लहे ॥ उ० ॥ जिम लहे पांचे तेम पांचे, एरवत मिल दस हुवा ॥ इक २ विदेहे बत्तीस विजया, तिहां पिण छै जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोडि नवसय केवली, नव सहस कोडी अवर मुनिवर, वंदिये नित ते वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां भरते एरवतें आज ए, पंचम आरै नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वीसे जिन गुणगेह ए ॥ उ० ॥ गुणगेह दोष अढार वरजित, अतिसयां चोतीस ए ॥ चौसठि इंद्र नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए ॥ तिहां आजे तारण तरण विचरै, केवली दोय कोड ए ॥ दोय सहस कोडी सुसाधु बीजा, नमुं बे कर जोड ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करमा भूमी क्षेत्र प्रमांण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह भाख्या वीस विहरमांण ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सतर गुणतीसै समै, सुखविजय हरख जिनंद सांनिध नेह धरि धमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंड ३ आधोपुष्करद्वीप एवं ३ ॥ द्वीपसें ५ भरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मभूमीमें विच-

रता साश्वता २० बिहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीभाइाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र भणी ऊमहेज्यो, तुम्हे नरभव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथो मांहे गाजै, आबू मारूमैं देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वादे लागो, ऊंचो अंबरियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास कहावै, निरखंता अिपति न थावे रे ॥ जा० ॥ एतो डुंगरियानो राजा, एहनी छै बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ छह ऋतु वास वणायो, एतो चंपला अंबला छायो रे ॥ जा० ॥ सरवर झरणा झाझा, जिहां तिहां वनवेल्या आझा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ भार अढारे वणराई, एतो इहांहिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै, फूलमानो रंग सुहावै रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर भूमि विसाला, देवल दीठा रलियाला रे ॥ जा० ॥ बिमलमंत्री वरदाई, चकेसरि देवी सहाई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवाम वंस वदीतो, जिण दलपति साहि जोतो रे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो, पाहण आरास मंमायो रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ झीणी२ कोरणी केरयो, दल माखण जेम उकेरयो रे जा० ॥ नवी२ भांति वणाई, जिहां तिहां कोरणिया किणाई रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ उत्तरे पाहण जेतो, जोखीजे पाहण तेतो रे ॥ जा० ॥ आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥ छगणिस कोम सोनइया, द्रव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा० ॥ करजोमीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागै, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥ पुठे चढिया हाथी, मंमाणा पति साह साथी रे ॥ जा० ॥ इण देवल समवम कोई, भूमंमल मांहि न होई रे जा० ॥ १० ॥ वलि तिण वंस विगताला, वस्तुपाल अनै तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमो ऋद्धि पाई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते

हवो जिणहर पासे, वार क्रोमनी लागति न्नासे रे ॥ जा० ॥ देराणी जेठाणी, आलानी अजब कहाणी रे ॥ जा० १२ ॥ इहां देवल सोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कसवट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल वाम्हो दीठो, ते तो लागै नयणै मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल पासै, लोक जोवे घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गाउ आगल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा न्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते धातो, फिगमिग रही दिन ने रातो रे ॥जा० ॥ मण चवदेसै चम्मालौ, जिण बिंबनो न्नाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली न्नोम सोन्नागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ एहनी करणी वाहवाहो, इहां लीधो लखमी लाहो रे ॥ जा० ॥ १७ ॥ इण डुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन न्नावी रे ॥ जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा० ॥ ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥ जा० ॥ साहमी वछल कीज्यो, जातफलीनो जस लीजो रे ॥ जा० ॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे ॥ जा० ॥ सुणिये बै जे कोई, अहिनांणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥ ॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥ जा० ॥ ए तीरथ समतोलै, कुण आवै रूपचंद बोले रे ॥ जा० ॥ २१ ॥ इति आबूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिषन्नानन व्रधमान, चंद्रानन जिन, वारिषेण नामे जिणा ए॥१॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिन्नुवन सासता, प्रणमुं बिंब सोहामणा ए ॥ २ ॥ चेइहर सग कोमि, लाख बहुत्तर, चेइय प्रतिमा

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोमि, साठ लाख सुंदर, भुवनपती मांहि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बारे देवलोक प्रासाद, चौरासी लाख, सहस भिन्नू नें सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

हिवै नवग्रीवेके पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अमत्रीस सहस सत साठ अछे गुण षाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंमल रुचक वखाण, चउ४ चेईहर साठ सबे त्रिहुं ठांण ॥ इकसो चोवीसै गुण प्रतिमा चिहुं नाम, ध्यारसै चालिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसै सोलस कुल गिरि तीस, मेरू वन अस्सी दस कुरु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार४ इखुकार, असो अति सुंदर वक्ष सकार मझार ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी द्रह सुजगीस ॥ कंचन गिर वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ए ॥ वृत दीरघ वैताढय, वीस सत रसो आढय ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सही ए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दस रुख्क, इग्यारैसै सत्तर सुख्क ॥ कुंम त्रणसय असी ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं, वीस सो ए अंक गुणियै रे, तीर्थंकर प्रतिमा थुणियै॥१२॥त्रिण लाख सहस वलि ध्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरवालै सब मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोमि सत्तावन लख्का रे, दोयसै निव्यासी कयरुख्का ॥ हिव प्रतिमा ग्यान कहीजै

रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरेसै बेतालीस कोमी रे, अमवन लख अधिके जोमी ॥ बत्तीस सहस अधिक कहीयै रे, प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ६ मी ॥

जोइस विंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥ पायकमल तेहना नित प्रणमियै, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥ विनय करी जिन प्रतिमा वंदियै, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजै प्रतिमा चोविह देवता, वलिय विद्याधर नृपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥ जिनप्रतिमा बोली जिन सारषी, हित सुख मोक्ष निदानो जी ॥ नवियणने नवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवाभिगम प्रमुख मांहि नाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥ सांभलतां नणतां सुख संपदा, हियमै हरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संथुणया जिनवर तणा, चिहुं नाम जिनचंद तणा त्रिभुवन सकलचंद सुहावणा ॥ वाचनाचारिज समयसुंदर गुण नणें अभिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो सदा मुझ परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिंब संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्टा स्तवनं ॥

नविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ॥ प्रभूजी विराजै रे सूरत बिंदरे रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ न० ॥ जगहितकारी रे जिनजी अवतरया रे, श्रीदढरथ नृप गेह ॥ श्रीवछ सोहे रे लांछन सूंदरू रे ॥ कनक वर्ण प्रभु देह ॥ २ ॥ न० ॥ विषय निवारी रे संजम संग्रह्यो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सघन घनाघन जिम ध्रम वरसता रे, विचरया त्रिभुवन नाण ॥ न० ॥ ३ ॥

वेदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, च्यार अघाती कर्म ॥ दूर निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्युं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥ संप्रति काले रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिबिंब ॥ प्रतिदिन लहिये रे प्रभु सुप्रसादथी रे, मन वांछित अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥ श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतां रे, छुकृत दूर पुलाय ॥ इंद्रिय निग्रह सुग्रह संपजे रे, समकित पिण दृढ थाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसद्गुरुना मुखथी सांजल्या रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे निज चित्तमें धरया रे, नेमी सुत जाईदास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य कराव्युं रे सुंदर सोजतो रे, मनथर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो रे बिंब जरावियो रे, सहसफणा वलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस अढारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मझार ॥ उज्जल द्वादशी दिवसे थापियो रे, बिंब अनेक उदार ॥ ए ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी सहु मेले थया रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन तेहनी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाभ सूरीश्वर दीपता रे, श्रीखरतर गछ जाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन थुण्या रे, विबुध क्षमा कल्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हांरे हूं तो भरवा गइथी तट जमुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

हांरे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवमलो ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हांरे मुंने थास्यै कोइयक समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातमली तव थास्यै महारी सवि वगे रे लो ॥ १ ॥ हांरे कोइ दुर्जननो जंजेरयो माहरो नाथ जो, उलवस्यै नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हांरे मारे स्वामी सरिखो कुण छे दुनियां मांह जो, जइये रे जिम तेहने घर आस्या

करी रे लो ॥ २॥ हांरे मारे जस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध जो, गाली रे सी करवी तेहथी गोठ्मी रे लो॥ हांरे कांइ कूडूं खाई ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही प्रीतमी रे लो ॥ ३ ॥ हांरे प्रभु अंतरजांमी जीवत प्राणाधार जो, वायो रे नवि जाएयो कलियुग वायरो रे लो ॥ हांरे मोरा लायक नायक जगत वछल जगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥ हांरे प्रभु लागी मुझने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी होइ उन्नोगलो रे लो॥ हां रे कुण जांणें अंतर गतिनी विण माहा- राज जो, देजे रे हसी बोलो ठंमी आमलो रे लो ॥ ५॥ हांरे तारे मुखनें मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंखरूली अणियाली का- मणगारीशूंरे लो ॥ हांरे मांरे नयणा लंपट जोवे खिण २ तुझ जो, राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हांरे प्रभु अलगा ते पिण जांणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जाउं वारणे रे लो ॥ हांरे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो, गिरुआ थइ मन आंणो ऊलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरे रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोह्युं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे लाल, निरखीजे नित्य मेव ॥म०॥ रा० ॥ १ ॥ चोवीस मंरूप चिहुं दिसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवरू नही संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल, मांरूयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ भलें जुहारथा भोंयरा रे लाल, सूतां ऊठ सवेर ॥ म० ॥३॥ रा० ॥ देस जाणीतूं देहरूं रे लाल, मोटो देस मेवाम ॥म०॥ लख्क नवाणुं लगाविया रे लाल, धन धन्नो पोरवाम ॥ म० ॥४॥ रा० ॥ खरतर वसई खंतसूं रे लाल, निर

खंता सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल, जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे लाल, दूर गयूं दुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल छियंतरे रे लाल, मिगसिर मास मझार ॥ म० ॥ राणपुरे यात्रा करी रे लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

समकित द्वार गुंभारे पैसतां जी, पाप पटल गयां दूर रे ॥ मोहन मारूदेवीनो लाडलो जी, दीठो मीठो आनंद पूर रे ॥ स० ॥ ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोडाकोडी हीण रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, वीरज अपूरवनो घर लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ भुंगल भांगी आदि कषायनी जी, मिथ्यात मोहनी सांकल साथ रे ॥ बार उघाड्या सम संवेगना जी, अनुभव भवनें बेठो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणूं जी, साथियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना जी, द्विगुण मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यांन रे ॥ आतम गुण रुची मृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधांन रे ॥ ५ ॥ स० ॥ भावपूजानें पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥ कारण जोगें कारज नीपजै जी, क्षमा विजय जिन आगम रीत रे ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजे, मोहन महिर धरीजै रे ॥ दिलरंजन प्रभु दरसण दीजै, म्हारो मनडो रीझै रे ॥ आ० ॥ १ ॥

प्रभु दरसन लहिवो जग डुरलभ, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥ जे दरसण विन किरिया पाले, ते नवि कहिये तरिया रे ॥आ०॥२॥ नय एकांते दरसन थापै, पिंम भरे ते पावे रे ॥ आप आपणा मति आलापैं, ते भूला भव थापे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्याद्वादनें संगे, जे ग्रहे आत्म उमंगे रे ॥ आनंदघन ऊपजै तसु अंगे, सिद्धरमणने रंगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ भव कोमाकोमीमें भमतां, तुक दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख, आज भले हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटको, जो जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदभुत, आतम गुण नुपजाउं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, स्वामी दरसण दीजै रे ॥ लाभनदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीजै रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुक अनंत अपार ॥ ते सांभलतां ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥ तारज्यो दीनदयाल, अ०॥ता॥०१॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जेहनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्त्ता तनय प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० । २ ॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसु रे, लहि कारण संयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिल्या रे, होय निमित्तम भोग ॥ अ०॥ ता० ३॥ अज कुलगत केसरी लहे रे, निज पद सिंह निहाल ॥ तिम प्रभु भक्तें भवि लहे रे, आतम शक्ति संभाल ॥ ॥ अ० ता० ॥४॥ कारण पद कर्त्तापणें रे, करि आरोप अभेद ॥ निज पद अर्थी प्रभुथकी रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥ अहवा परमातम प्रभू रे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद सत्तारसी रे,

अमल अखंड अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख भ्रम टल्यो रे, भास्यो अव्याबाध ॥ समरयो अभिलाखीपणो रे, कर्त्ता साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक भोक्ता भाव ॥ कारणता कारज दसारे, सकल ग्रह्युं निज भाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा भासन रमणता रे, दानादिक परिणाम ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता० ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद सुख सागरू रे, भावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोडी वीनवूं जी, सुणि स्वामी सुविदीत ॥ कूड कपट मूंकी करी जी, वात कहूं आप वीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मुझ विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तूं समरथ त्रिभुवन धणी जी, मुझने दुत्तर तार ॥ कृ० ॥ २ ॥ भवसायर भमतां थकां जी, दीठां दुख अनंत ॥ भागसंयोगे भेटियो जी, भयभंजण भगवंत ॥ कृ० ॥ ३ ॥ जे दुःख भांजे आपणा जी, तेहनें कहिये दुख ॥ परदुख भंजण तूं सुण्यो जी, सेवगने द्यो सुख ॥ कृ० ॥ ४ ॥ आलोयण लीधां पखै जी, जीव रुले संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह सुण्यो अधिकार ॥ कृ० ॥ ५ ॥ दूषमकालै दोहिलो जी, सूधो गुरु संयोग ॥ परमारथ पीछै नही जी, गडरप्रवाही लोक ॥ कृ० ॥ ६ ॥ तिण तुझ आगल आपणा जी, पाप आलोउं आज ॥ माय बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ कृ० ॥ ७ ॥ जिन धरम१ सहू कहै जी, थापै अपणी जी वात ॥ सामाचारी जुइ जुइ जी, शंसय पड्यां मिथ्यात ॥ कृ० ॥ ८ ॥ जाण अजांणपणे करी जी, बोल्या उत्सूत्र बोल ॥ रतने काग

ऊमावता जी, हारयो जनम निटोल ॥ कु० ॥ ए ॥ नग-वंत नाष्यो ते किहा जी, किहां मुफ करणी एह ॥ गज पाखर खर किम सहे जी, सवल विमासण तेह ॥ कु० ॥ १० ॥ आप परूंपुं आकरो जी, जांणे लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादियो जी, मासाहस दृष्टांत ॥ कु० ॥ ११ ॥ काल अनंते में लह्या जी, तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पाम्पिया जी, किहां जइ करूं पुकार ॥ कु० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ-विहार ॥ धीरज जीव धरै नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ कु० ॥ १३ ॥ सहज पड्यो मुफ आकरो जी, न गमें नूंमी वात ॥ परनिंदा क-रता थकांजी, जाये दिन नें रात ॥ कु० ॥ १४ ॥ किरिया करतां दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम पखे धंदे पड्यो जी, नरके करसी रीव ॥ कु० ॥ १५ ॥ अणहूंता गुण को कहे जी, तो हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख नली दियै जी, तो मन आणूं रीस ॥ कु० ॥ १६ ॥ वादनणी विद्या नणी जी, पररंजण उपदेश ॥ मन संवेग धरयो नही जी, किम संसार तरेस ॥ कु० ॥ १७ ॥ सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इक मनमांहे ऊपजे जी, मुफ मरकट वैराग ॥ कु० ॥ १८ ॥ त्रिविध २ कर उचरूं जी, नगवंत तुम्ह हजर ॥ वार २ नांजू वली जी, वूटकवारो दूर ॥ कु० ॥ १ए ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधा आरंन कोमि ॥ जयणा न करी जीवनी जी, देवदया पर छोम ॥ कु० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दंम ॥ कूम कपट बहु केलवी जी, व्रत कीधा सत खंम ॥ कु० ॥ २१ ॥ अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादांन ॥ ते दूषण लागा घणा जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ कु० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नही जी, राचे रमणी रूप ॥ काम विटंबन सी कहूं जी, ते तूं जांणे

सरूप ॥ कृ० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको लोभ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो जी, न चढी संजम सोभ ॥ कृ० ॥ २४ ॥ लाग्या मुझनें लालचें जी, रात्रीभोजन दोष ॥ में मन मूक्यो माहरो जी, न धर्यो धरम संतोष ॥ कृ० ॥ २५ ॥ इण भव परभव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुझ मिछामिडुकर्म जी, भगवंत तोरी साख ॥ कृ० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या जी, प्रगट अढारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, बगस२ माइ बाप ॥ कृ० ॥ २७ ॥ मुझ आधार छै एतलो जी, सरदहणा छै शुद्ध ॥ जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ कृ० ॥ २८ ॥ रिषभदेव तूं राजियो जी, सेत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ॥ कृ० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिनधर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिछामिडुकर्म जी, देतां दूर पुलाय ॥ कृ० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, भव २ ताहरी सेव ॥ कृ० ॥ ३१ ॥ ॥ कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंज चरण भेट्या नाभिनंदन जिन तणा, करजोडि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद सुसीस वाचक समयसुंदर गणि भणें ॥ ३२ ॥ इति आलोयण वृद्ध स्त०

## ॥ अथ आनंदघनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

### ॥ अथ श्री ऋषभ देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए चाल ॥

ऋषभ जिनेसर प्रीतम माहरो रे, उर न चाहूं रे कंत ॥ रीज्यो साहिब संग न परिहरे रे, भांगे सादि अनंत ॥ ऋ० ॥ १ ॥ प्रीत सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत

सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ऋ० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काष्ट ज्नकण करें रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए मेलो नवि कहियै संज्नवे रे, मेलो ठाम न ठांय ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ कोइ पति रंजन अति घणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति रंजन मैं नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥ दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंमित एह ॥ कपट रहित थई आतम अरपणा रे, आनंदघन पद रेह ॥ ऋ० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

## ॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ मारुं मन मोह्युं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथमो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥ जे तें जीत्या रे तेणे हुं जीतियो रे, पुरुष किस्युं मुज नांम ॥ पं० ॥ ॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, ज्नूलो सयल संसार ॥ जेणें नयणे करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुज्नव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अज्निमते वस्तु वस्तुगते कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य नयणतणे रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे, वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसुं रे, ए आस्था अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जाणज्यो रे, आनंदघन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संभव देव ते धुर सेवो सबे रे, लहि प्रभु भेद ॥ सेवन सेवन कारण पहली भूमिका रे, अभय अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥१॥ भय चंच लता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक भाव ॥ खेद प्रवृत्ति हो करतां थाकियें रे, दोश अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, भव परणति परिपाक॥दोष टले वली दृष्टी खुले भली रे, प्रापति प्रवचन वाक॥ सं०॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत॥ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण कारज साधिये रे, ए जिनमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सुगम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप॥ देजो कदाचित सेवक याचना रे, आनंदघन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेल्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसिये, दरसण दुर्लभ देव ॥ ॥ मत२ भेदे रे जो जइ पूछिये ॥ सहु थापै अहमेव ॥ अभि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिसण दोहलूं, निरणय सकल विशेष ॥ मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥ २ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥ आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥ ३ ॥ घाती डूंगर आडा अतिघणा, तुझ दरिसण जगनाथ ॥ धीठाइ करी मारग संचरूं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिसण२ रटतो जो फिरुं, तो रणरोझ समान ॥ जेहने पीपासा हो अ

मृत पाननी, किम भाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरसण आज ॥ दरिसण दुर्लभ सुलभ कृपाथकी, आनंदघन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अविकार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांणिये, परि सरपण सुविचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आतमा, वहिरातम धुरि भेद ॥सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, परमातम अविछेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक ग्रह्यो, वहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी॥ कायादिकनो हो साखीधर रह्यो, अंतर आतम रूप॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी॥अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ वहिरातम तज अंतर आतमा, रूप सुग्यानी थइ थिर भाव॥परमातमनूं हो आतम भाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम०॥ ५ ॥ आतम अरपण वस्तु विचारतां, भरम टलै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजै, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम ०॥६॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी, विविध भंगी मन मोहे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्षणता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्षणा रे ॥ हानादाना रहित परणामी, उदासीनता विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख छेदन इछा करुणा, तीक्षण परदुख रीझे रे ॥ उदासी

नता उन्नय विलक्षण, एक ठांमे केम सीऊ रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ
न्नयदांन ते मल क्षय करुणा, तीक्षणता गुण न्नावे रे ॥ प्रेरण
विणु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥
श.क्ति व्यक्ति त्रिन्नुवन प्रन्नुता, निर्ग्रंथता संयोगे रे॥योगी न्नोगी वक्ता
मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु न्नं
ग त्रिन्नंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,
आनंदघन पद लेती रे॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथश्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनमो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज
तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो न्नाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥१॥ रज
नी वासर वसती ऊजम, गयण पायालें जाय॥सांप खायने मुखमुं
थोथुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा
अन्निलाषी तपिया, ज्ञान नें ध्यांन अन्यासें ॥ वयरीमुं कांइ एहवुं
चिंतै, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम
धरनें हाथे, नावै किण विध आंकूं॥ किहां कणे जो हठ करी हटकूं,
तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥४॥ जो ठग कहूं तो
ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांह ने सहुथी अ
लगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते
कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंमित जन समझावै,
समझै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए
लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ है नर,
एहने कोई न झेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स
गलूं सधयुं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं,
ए कहि वात वे मोटी हो ॥ कुं०॥ म० ॥ ८ ॥ मनडुं दुराराध्य तें

वंस आणुं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरो आणो, तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिक्कमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ लुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर भेटियै, भवना संचित पाप परा सब मेटियै ॥ मन धर भाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहूंते एक कोडि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यांन धरूं प्रभू दूरथकी में ताहरो, जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ भव २ तुमहीज देव चरण हूं सिर धरुं, भवसायरथी तार अरज आहीज करूं ॥ २ ॥ भूख त्रिषा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम भार त णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नांमतणी आसत घणी, एहिज छै आधार जगतगुरु अम्ह भणी ॥ ३ ॥ तुम्ह दरिसण विण स्वांम भवोदधि हूं फिरयो, सहीया दुरूक अनेक न कारज को सरयो ॥ मिलिया हिव प्रभु मुझ सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर जगत जस लीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सैन्यां कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो, जयवंतो जिणचंद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद २ जुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन भुवन सिरताज ॥ आछेलाल, नगर ब्रहानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल सुगुण निधान ॥ आछेलाल, वामासुत वडभागीयाजी ॥ २ ॥ सेवकनी संभाल, करिय स्वरी ततकाल ॥ आछेलाल, संकट सहु प्रभु परिहरया जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रगट्यो आनंद पूर ॥ आछेलाल, वाट विषमता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद,

वीता सहु विखवाद ॥ आंबेलाल, मन वंछित मुझ सहु फल्या जी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप, मिलिया ठो प्रज्ञु आप ॥ आंबेलाल, देज्यो दरिसण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीस क्षमाकल्याण ॥ आंबेलाल, वाचक इम वीनती करे जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसादाणी रे ॥ वामासुत वरदाय, निरमल नाणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रज्ञु अंग, निरुपम निरख्या रे ॥ तीन कमल मुझ संग, आतम हरख्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख, चंद लजाणूं रे ॥ गगन ज्रमे निसदीस, इम मन आंणूं रे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजे रे ॥ हृदयकमल सुविलास, थाल ज्यूं ठाजै रे ॥ ४ ॥ प्रज्ञु कर चरण विलोक, पंकज हाख्यो रे ॥ ततखिण निज संवास, जलमें धाख्यो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार, श्रीजिन राया रे ॥ साचे पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥ प्रज्ञुगुण अनुज्जव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाल्यो पातिक पंक, आतम संगेरे ॥ ७ ॥ वरस अढार चोतीस, वदि वैसाखे रे ॥ मनुहर पांचम दीस, सहु संघ साखे रे ॥ नगर मढेवा मांहि, पास जुहारया रे ॥ श्री जिनचंद मुणिंद, वांछित सारया रे ॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुझ वीनती गोमीचा, अलवेसर अवधार हो गोमीचाराय ॥ प्रगट थई पातालथी गोमीचा, सेवक जिन साधार हो गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख थई उतावली, गो० ॥ दरसण देखण काज हो ॥ गो० ॥ पांपीनखमे पातली, गो० ॥ द्यो दरसण महाराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो छै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो उमही, गो० ॥ संप्रति करवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो ञेवमो, गो० ॥ सगली

भाति सदीव हो, गो० ॥ ऊंची नीची वातमें, गो० ॥ थे मति घालो जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवलै, गो० ॥ दीगं ते न सुहाय हो ॥ गो० ॥ इक दीगं मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीगं उल्हाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ काले वाल्है माहरे, गो० ॥ कीधी खरी सजीम हो ॥ गो० ॥ दरसण देवानी नकी, गो० ॥ पाणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं करै, गो० ॥ राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ वलि अवसर संजारज्यो, गो० ॥ इम जंपै जिनराज हो ॥गो०॥वा०॥ ७॥ इति पदं॥

॥पद ५ मुं ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, त्रिजुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥१॥ गुण गिरवा गोडीचा स्वांमी, नाथ निरंजन नामी रे॥ अ० ॥ जव अटवी वन घन विच जमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, अनुजव गुण अजिरांमी रे ॥ चरणकमल सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं॥

॥ पद ६ हुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन जाय ॥ प्या० ॥ अश्वशेन वामाजीके नंदन, देख्यां दिल हरखाय॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मनमोहन निरख्यो, नाथ गोडीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेवगकी येही अरज है, जवडुख ताप मिटाय॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं॥

॥ पद ७ मुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजब सुरंग अनूप ॥ सवाइ प्रजूजी, थांरी सांवली सूरत म्हांनु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन वांदवा, चितडामें लागी है चूंप ॥ सवाइप्रजूजी ॥ १ ॥ अणिया-

ली प्रभू आंखरू़ी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ थां० ॥ नयण सलूणे जी निरखतां, ऊपजै अधिक उल्हास ॥ स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, करुणा निधि करतार ॥ स० ॥ थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीवो, दिल रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांणियै, सो य घरू़ी सुप्रमांण ॥ स० ॥ भगतवछल भल भेटियै, जिनवर चतुरसुजांण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४ ॥ जालम जेसलगढ जयो, श्रीचिंतामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंदनी, अविचल पूरो जी आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम विन देख्यां एक घरू़ी न रहाय, म्हारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे अमारा हीयरू़ाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास छियै निरधार ॥ म्हारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि० ॥ चंद चकोरा जलधर नें जिम मोर ॥ म्हारा जि० ॥ २ ॥ नयण तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितरू़ो लीधो जिम तिम करि नें चोर ॥ म्हारा जि० ॥ अरज हमारी मानो मोटा देव रे, जि० ॥ आपो भव२ चरणकमलनी सेव ॥ म्हारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरीनें आवे जे तुझ पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास म्हाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी थावै बुद्धि रे; जि० ॥ इम जांणिने करज्यो म्हारी शुद्ध ॥ म्हारा जि० ॥४॥ राखेज्यो मुझ ऊपर निवरू़ सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांणी छिटक न देज्यो छेह ॥ म्हारा जि० ॥ खरतर गछपति श्रीजिनलाभ सूरिंद रे, जि० ॥ तासु पसायें भणें अनोपमचंद ॥ म्हारा जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ९ मुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं छै प्रभूजी म्हारो अंतर जामी, पूरव पून्यै थांरी सेवा में पांमी राज ॥ साहिब में तो तुझनें जाण्यो छै साचो, कहिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलसुं राज करीय सगाई, सुगण प्रभु जीस्युं वधज्यो प्रीत सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रभुजी ताहरो दिलमांहे वसियो, रात दिवस थारा गुणनो हूं रसियो राज ॥ सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रभुजी चाकर हूं खासो, कहिय न मेलूं प्रभुजी पलभर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी महरे राज मोटा कहीजे, लाहो लाखीणो प्रभुजी संगे लहीजे राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ पिंजर तो फिरसी राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिलमांहे रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगै हूं चोल मजीठ रंगाणो, नहिय विसरस्युं प्रभुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलि२ हूं तुम पाये जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजिनचंद सदा साधारो, तारक प्रभुजी थे भवजल तारो राज ॥ सु० ॥ ५ इति पदं ॥

॥ पद १० मुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत थारी लागे प्यारी ॥ हीग आवे दाय, मो० ॥ जिम२ सूरत देखियै प्रभु, तिम२ वाधे प्रीत ॥ तन मन मारा उलसै कांइ, रूडी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥१॥ नयण कमलदल पांखडी प्रभु, मुखडो पूनमचंद ॥ दीपशीखासी नासिका काइ, दीठां परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ कांने कुंडल झिगमिगे प्रभु, कंठे नवसर हार ॥ चंपकली सोहे भली कांइ, मुखडै ज्योत अपार ॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं छै जगनो वालहो प्रभु, थारे सेवग कोड ॥ म्हारे

तूंहिज साहिबो कांइ, वंदू बे कर जोड़, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज मनोरथ सब फल्या, मैं दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा कांइ, सीधां सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसण वहिलो दीजै ॥ दीजै २ जी माहाराज, कारज सगला सीझै ॥ ए आंकणी ॥ मुझ मन भमरतणी पर मोह्यो, भेळायो नवि छूटै ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण, ते तो कदेय न खूटै ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभु तुमने, नहिय विसारुं दिलसुं ॥ रात दिवस एहवी मन वरतै, जांणूं जइ मिलुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरव पुन्यथकी मैं पायो, ए अवसर आजूणो ॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिंतामण, साहिब सहज सलूणो ॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग छै बहुला, मो सरिषा लख थाने, माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥ आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही भाखूं ॥ अमृत जेम लही तुझ गुणरस, खारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन ए मुझनी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर मालानें गिणतां, कहो कुण मति उपजावै ॥ जि० ॥ ६ ॥ भगतपणै किंचित गुण भाखूं, हूं म्हारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुझ गुण लायक, त्रिभुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरस अढार वली इकताले, मिगसर पख उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे, यात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं, मेलो तिहां मंडायो ॥ लाभ उदय जिनचंदने प्रभुजी, वांध्यो प्रेम सवायो ॥ जि० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रभु तूं मेरे दिलमें, ध्यांन धरूं पलपलमें ॥

पास जिनेसर अंतरजामी, सेवा करूं छिनश्में ॥ तूं० ॥ १ ॥ काहूको मन तरुणीसें राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रनु तुमहीसे राच्यो, ज्युं चात्रक चित्त घनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जांणै, अलख निरंजन छिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर तूंही, साहिब तीन नुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ नाव दयासागर प्रनु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रनु सिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे, हिवइण नरतमां ॥ कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अनंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अथमाय ॥ वीर विहूणा जीवमा रे, आकुल व्याकुल थायो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे, ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक नवसमुद्रनो रे, नव अटवी सञवाह ॥ ते परमेसरविण मिल्यां रे, किम वाधे उत्साहो रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पण श्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ इमणां श्रुत आधार छे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो नविजना रे, जिनपमिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ नव नव आगम संगथी रे, देवचंद पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ए ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय रुषन समोसरया, नला गुण नरया रे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें

गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ भरतें भराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी, ऋद्धें भरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी थंभण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अमीझरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोडी स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे ॥ रुचक कुंडल चारू चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा छती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुझ इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धाचलगिरि जईएं बहेनी, विमलाचलगिरि जईहं रे ॥ आ० ॥ सुण बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनंद इम भाखी ॥ भरतादिक नरपतिने आगल, इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इण गिरिवरिये काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणनां दुःख छोडीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि सन्मुख पगलां भरतां, आतम शुद्ध सुभावें ॥ कोडि भवांरां पातक कीधां, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेत्रुं

जो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन भुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कोइ ने दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजनशुं नेह धरीने, आगें हुलग करस्यां ॥ अद्भुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥ ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पचरंगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ पहिरावी प्रभु कंठें लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मंदिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करियें ॥ मन गमती भमती विच भमतां, भवसायर निस्तरियें रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रूंखे आया ॥ ए तीरथ शुभ भावें फरसी, करियें निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाभ हुदे ए गिरिवर लहियें, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वत्सल, प्रेम घणे चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ए ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥ मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनुमोदना, करतो जीरणसेठ ॥ श्रावक अच्युत गति लहे, नवग्रैवेका हेठ ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशालापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेसालापुर बाहिरे जी, आव्या श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी, भले में भेव्या श्री जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे भाग्य अनोपम माय ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो छे देहरो जी, तिहां प्रभु काउसग्ग लीध ॥ पच्चरकाण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीध ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले श्रावकधर्म ॥ आकारे तिण हुलख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अछे उपवासीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सही प्रभु जीमस्ये जी,

ते हथ देस्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सद्दा सेठ इम चिंतवे जी, हो सी सफल मुझ आस ॥ पञ्च मास गिणतां थकां जी, पूरी थइ चो मास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तइ यार ॥ प्रभुनो मारग देखतो जी, बेठो घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥ घर आवे जे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रभुजी कां न पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीछे करस्यूं पारणो जी, हूं प्रभूने पडिलाभ ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय विन वरसे आभ्र ॥ ज० ॥ ए ॥ अवसर आव्या गोचरी जी, श्री सिद्धारथसुत ॥ वेसालापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत्त ॥ ज० ॥ १० ॥ मिथ्यात्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेडी प्रते इम कहे जी, कांइक भिक्षा देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू भरने वा कला जी, प्रभूने आंगी दीध ॥ नीरागी तेही लिया जी, तिहां प्र भू पारणो कीध ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे दुंदुभि जी, जै बो ले कर जोडि ॥ हेम वृष्टि हुइ तिहां जी, साढाबारे कोडि ॥ ज० ॥ १३ ॥ कहे सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥ लोकां प्रते इम कहे जी, में वहिराइ खीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा दिक सहूए कहे जी, धन्य२ पूरण सेठ ॥ ऊंची करणी तें करी जी, अवर सहू तुझ हेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तबे जी, वा जित दुंदुभिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रभु पारणो जी, मनमें थयो विषवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अभागियो जी, मेरे न आया सांम ॥ कल्पवृक्ष किम पांमीये जी, मारूमंडल ठांम ॥ ज० ॥ १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमांहि ॥ निर धन जिम२ चिंतवे जी, तिम२ निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा मी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पास संतानिया जी, तिहां मुनि केवलधार ॥ ज० ॥ १ए ॥ वेशालापुर

राजियो जी, लोकास्युं आणंद ॥ राय प्रश्न पूछे इस्यों जी, सुगुरु चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अछें जी, जीव पुन्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २१ ॥ राय कहे किण कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न कोइ प्रमांण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमें जी, जीरण घाल्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज० ॥ २४ ॥ घडी एक सुर दुंदुभि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहितो जीरण तो सही जी, केवल अविचल गांम ॥ ज० ॥ २५ ॥ राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुक्तनगरमें थापियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ ॥ २६ ॥ दांन दियां सुपात्रने जी, तें निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी, जीरण जिम फल थाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना जी, दांन सुपात्र रसाल ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे मुनि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोयण जीवरासि खमावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ हिवे राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जांणपणो जग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ ते मुज मिच्छामिडुक्कडं ॥ १ ॥ अरिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु० ॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख तेऊकायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चवदे लाख साधार ॥ बि ति चउरेंद्री जीवना, वे वे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, च्यार२ प्रकाशी ॥ चवदे लाख मनुष्यना, ए लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणभव परभव से

विया, जे पाप अढार ॥ त्रिविध२ करवोसरूं, डुरगति दातार ॥ ते०
॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादा
नना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, की
धो क्रोध विशेष ॥ मांन माया लोभ में कीया, वलि राग ने द्वेष
॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूडा कलंक ॥ निं
द्या कीधी पारकी, रति अरति निस्संक ॥ ते० ॥ ए ॥ चाडी की
धी चोतरे, कीधो थांपणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आं
एयो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भव जे किया, जीवना
वध घात ॥ चिडीमार भव चिडकला, मारया दिन ने रात ॥ ते०
॥ ११ ॥ माछीगर भव माछला, झाल्या जलवास ॥ धीवर भील कोली
भवे, मृग मारया पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने भवे, पढी
मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जबे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥
१३ ॥ कोटवालभवमें किया, आकाराकर दंड ॥ वंदीवान मराविया,
कोरडा छडी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधा नार
की डुरक ॥ छेदन भेदन वेदना, ताडना, अति तिख्ख ॥ ते० ॥ १५
॥ कुंभारने भव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीभव तिल पि
लिया, पापे पेट भराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने भव हल ख
ड्या, फाड्या पृथवी पेट ॥ सूडाने दान क्रिया घणा, दीधा बलध
चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने भव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल
पत्र फल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवाही
आंगमी, भरया अधिका भार ॥ पोठी ऊंट कीडा पड्या, दया ना
वी लिगार ॥ ते० ॥ १ए ॥ छींपाने भव छेतरयो, कीधा रांगणपास
॥ अगनि आरंभ किया घणा, धातुरवाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर
पणे रणझूझतां, मारया माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण भख्या,
खाधा मूला ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खिणाई धातुनी, पाणी

उलंघ्या ॥ आरंभ कीधा अतिघणा, पोते पाप ते संच्या ॥ते०॥२२॥ अंगारकर्म किया वली, धरमें दव दीधा ॥ सूंस लेइ वीतरागना, कूमा कोसज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली भव ऊंदर गिल्या, गिलोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे भवे, में जूं लीख मारी॥ते०॥२४॥ भाडभूजातणे भवे, एकेंद्री जीव, ज्वार चिणाग हुंसे किया, पामंता रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांमण पीलण गारना, आरंभ अनेक ॥ रांधण इंधण अगनिना, कीधा पाप उदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा च्यार कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पमामिया, रोदनविखवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावकतणा, व्रत लेइने भागा, मूल अने उत्तरतणा, मुऊ दूषण लागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विछु सिंह चीतरा, सिकरा ने समली ॥ हिंसक जीवतणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवमे दूषण घणा, वलि गरभ गलाया ॥ जीवाणी ढोल्या घणा, शीलव्रत भंजाया ॥ ते०॥३०॥ भव अनंत भमतां थकां, किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध२ कर वोसरूं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणभव परभव इण परे, कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध२ कर वोसरूं, करूं जनम पवित्र ॥ ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेराडी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर कहे पापथी, छूटे ततकाल ॥ते०॥३३॥इति आलोयण सिझाय सं०॥

॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विख्यात ॥ पासतणा गुण गावतां, मुऊ मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे, अहम्मदावादे पास ॥ गोमी तो धणी जागतो, सहूनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुभ वेला शुभ दिन घमी, महुरत एक मंमाण ॥ प्रतिमा तीने पासनी, थई प्रतिष्ठा जांण ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

गुणहि विशाला मंगलीकमाला, वामानो सुत साचो जी ॥ धण कण कंचण मणि माणक दे, गोफीनो धणी जाचो जी॥गु०॥ ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हूंती जी ॥ अश्वनी भूमे अश्वनी पीम्रा, अश्वनी बाल विगूती जी॥ गु० ॥५॥ जागंतो जक्ष जेहने कहिये, सुहणो तुरकने आपे जी ॥ पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुझ संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रहक ठीने परगट करजे, मेघागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे ढंगे मले जे, टका पांचसे लेजे जी ॥७॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मारीस मुरझिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्रधन हय गय हाथी, लाठ घणी घर जास्ये जी ॥८॥ गु० ॥ मारग पहिलो तुझने मिलस्ये, सारथवाहो गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोढया, वस्तु वहे तस पोठी जी ॥ ए ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

मनसुं बिहतो तुरकभो, माने वचन प्रमांण ॥ बीबीने सुहणातणो, संभलावे सहिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वमा देव हे कोइ ॥ अब सताब परगट करो, नहितर मारे सोय ॥ ११ ॥ पाछलीरात परोझिये, पहली बांधे पाज ॥ सुहणामांहे सेठने, संभलावे यक्षराज ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ ॥

एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहूने सुहणे जी ॥ पासतणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए० ॥ १३ ॥ पांचसे टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी ॥ जतन करी पहुंचाडे थानक, प्रतिमा गुण संभारू जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुझने होसी बहु फलदायक, भाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणमे तेहना पाया, प्रहऊठीने गुणजे जी ॥ए०॥१५॥ सुहणो देइने सुर चाल्यो,

आपणे आनक पहुतो जी ॥ पाटणमांहे सारथवाहू, दीठे तुरकने जोतो जी ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जातो दीठो गोठी, चोखा तिल क निलाडे जी ॥ संकेत पहुतो साचो जाणी, बोलावे बहु लाडे जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुझ घर प्रतिमा तुझने आपूं, श्रीपास जिनेसर केरी जी ॥ पांचसे टका जो मुझ आपे, तो मोल न मांगू फेरी जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, थानक पहुतो रंगे जी, केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० १९॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या पारकरमांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ नव दिन२ अधिका आये, सत्तर भेद सनात्रो जी ॥ गाम२ना दरसण करवा, आवे लोक प्रभातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ दुहा ॥

इक दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो भंग ॥ जतन करूं प्रतिमातणो, तीरथ अछे अभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठने, थल, अटवी झझाड ॥ महिमा थास्ये अतिघणो, प्रतिमा तिहां पहुचाड ॥ ॥ २३ ॥ कुशल क्षेम तिहां अछे, तुझने मुझने जांण, संका छोडी काम कर, करतो म करीस कांण ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, वहण एक वृषभे जोतरे ॥ पारकरथी परियाणो करे, इक थल चढ बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ बारे कोश आयां जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ॥ गोठी मनह विमासण थइ, पास भवन मंडावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं मंडाण, कुट को कोइ न दीसे वहाण ॥ देवल पास जिनेसर सरतणो, मंडाउं किम घरथे विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहां, सिलावटो किम आवे इहां ॥ चिंतातुर थयो निश जदे, यक्षराज आवी इम

कहे ॥ २८ ॥ गूंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहां ॥ स्वस्तिक सोपारी सहिनांण, पाहणतणी ऊलटस्ये खांण॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किण जुउ, अमृत जल निसरिस्ये कूउ ॥ खा राकूआनो इह सहनांण, भूमि पड्यो ठे नीलो ठाण ॥ ३० ॥ सि लावटो सीरोही वसें, कोढ पराभवियो किसमिसे ॥ तिहांथकी तूं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मांनजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थापियों, शिलाचटाने सुहणो दियो॥ रोग गमाउं ने पूरुं आस, पासतणो मंम्मे आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहि मांन्यो ते वेण, हेम वरण देखाड्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटेने गया तेम्मवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीरखांम्म घृत चूरमो॥ घम्मे घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ श कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंगमंम्प रलियामणो रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाद, स्वर्ग समो मंम्मे आवास ॥ दिवस विचारी इंम्मो घड्यो, ततखिण देवल ऊपर चढयो ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पवासण वेठा श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समांन, एकलमल वगम्मे रहे वांन ॥ ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभली, तवनमांहि सूंघी सांकली ॥ गोठीतणा गोतरिया अठे, यात्र करीने पगरो पठे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघन विम्मारण जंम्म जग, तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीत करे श्रीसंघने, देखाम्मे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरुइ गोम्मीपास जिन ॥ आपे अरथ भंम्मार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार; मारग चूकां मांनवी, वाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥

॥ ढाल ४ ॥

वरण अढारतणो लहे भोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ प
वित्र थइ समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥ ४१ ॥ निर
धनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरापणो
धरे, पार उतारे लक्ष्मी वरे ॥ ४३ ॥ दोभागीने दे सोभाग ॥ पग
विहूणाने आपे पाग ॥ गांम नही तेहने थे गांम ॥ मन वंछित पूरे
अभिरांम ॥ ४४ ॥ निरधाराने थे आधार, भवसायर उतारे पार ॥
आरतियानी आरत भंग, धरे ध्यांन ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरथां
साद दिये जक्षराज, जेहना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि
प्रकाश ॥ गूंगाने थे वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुखनो दा
तार, भयभंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेरीतणा, श्रीपार्श्व
नाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दूहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल ॥ हस्तियुद्ध
दूरे टले, दुष्ट सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा भय चूकवे, विष
अमृत उपकार ॥ विषधरना विष उतरे, संग्रामे जय जयकार॥४९॥
रोग शोग दालिद दुख, दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, म-
हिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ ढाल ५ ॥ चाल कडखानी ॥

ॐजततू २ भंज उपशम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अक्षर ज
पंते ॥ भूतने प्रेत झोटिंग विंतर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणंते
॥ ५१ ॥ ॐ० ॥ दुष्टरा रोग शोगा जरा जंतरा, ताव एकंतरा दु
उपंते ॥ गर्भबंधन वर्णं सर्प विछू विषं, चालिका बाल मेवाऊखंते
॥ ५२ ॥ ॐ० ॥ साइणी डाइणी रोहणी रंकणी, फोटका मोटका
दोष हुंते ॥ दाढ ऊंदरतणी कोल नोलां तणी ॥ श्वान सियाल वि-

कराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ० ॥ धरणेंद पद्मावती समर सोजावती, वाट आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लोंदो मिले सुजस वेला वले ॥ सयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ ॐ० ॥ अष्ट महाजय हरे कानपीमा टले ॥ ऊतरे शूल शीसग जणंते ॥ वदत वर प्रीतसुं प्रीतविमल प्रजु, श्रीपास जिण नांम अजिराम मंते ॥ ५५ ॥ इति श्रीगोमीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किठं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं संति, जस्स धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा डुम्मस्स पुप्फेसु, जमरो आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एव मेए समणा वुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु, दाणजत्ते सणेरया ॥ ३ ॥ वयं च वि त्तिं लप्नामो ॥ नहि कोइ उव हम्मइ ॥ अहागमे सुरीयंते, पुप्फेसु जमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार समा बुद्धा, जे जवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिंम रयादिंता, तेण वुच्चंति साहुणोत्तिबेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं, जयति शाशनं ॥ १ ॥ मंगलं जगवान्वीरो, मंगलं गौतम प्रजु ॥ मंगलं स्थूलजद्राद्या, जैनोधर्मोस्तु मंगलं ॥ २ ॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आत्म रक्षा करं वज्र, पंजरा जस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कशिर संस्थितं, ॐ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुखपटंवरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो उव ज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्द्दढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सव्व साहूणं, मोचके पादयो सुजे ॥ एसो पंच नमोकारो, शिला वज्रमई तले ॥ ४ ॥ सव्व पावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयोवहि ॥ मंगलाणं च स-

भसिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंच पदं ज्ञेयं, पढमं, हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्रमयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा, प्रभावात् रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठी पदे सदा ॥ तस्य न स्याद्भयं व्याधि, राधि श्चापि कदाचनः ॥ ॥८॥ इति आत्मरक्षा० स्तोत्रं संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ ( छंद )

॥ सुखकारण भवियण समरो नित नवकार, जिनशाशन आगम चवदे पूरब सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं पार, सुरतरु जिम चिंतित वंछितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करे कर जोड़, भूयमंडल विचरे तारे भवियण कोडि ॥ सुरछंदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिगंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे भेदे सिद्ध थया भगवंत, पंचमि गति पुहता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गछभार धुरंधर सुंदर शशिहर शोम, कर शारणवारण गुण छत्तीसे थोम ॥ श्रुत जांण शिरोमण सागर जेम गंभीर, तीजे पद नमिये आचारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र भणावे सार, तप विध संयोगे भाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुत्ता ते कहिये उवझाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर लोकमांहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमूं परमारथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण डाइण भूत वेताल, सब पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समरयां संकट दूर टले ततकाल, जंपे जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ ( छंद )

॥ शेवो पास संखेसरो मन सुद्धे, नमूं नाथ निश्चे करी एक बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो बो, अहो भव्य लोको भुला कां भमो बो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो बो, पड्या पाश मे भूतभाने भजो बो ॥ सुरधेनु बंडी अजाने अजो बो, महापंथ मूंकी कुपंथे व्रजो बो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे, ग्रहे कोण राशभने हस्ति साटे ॥ सुरद्रुम उपाडने आक वावे, महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥३॥ किहां काकरोने जे किहां मेरु, श्रृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रभावती प्राणनाथं, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेहना दुःख दालिद्र दूरे गमावे ॥५॥ पामी मानुषोने वृथा क्यु गमो बो, कुशीले करी देहने कां दमो बो, नहि मुक्ति वासं विना वितरागं ॥ भजो भगवंतं तजो द्दष्टिरागं ॥ ६ ॥उदय रत्न भाखे सदा हेत आणी, दयाभाव कीजे मोहि दास जांणी ॥ मोरे आज मोतीअडे मेह बूठा, प्रभु पास संखेसरो आप तूठा ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गोतम नांम जपो निश दीश ॥ जो कीजे गौतमनो ध्यांन, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नांमे गिरवर चढे, मन वंछित लीला संपजे ॥ गौतम नांमे नावे रोग, गौतम नांमे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, तसनांमे नावे ढूंकडा ॥ भूत प्रेत नवि मंडे प्रांण, ते गौतमना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नांमे निरमल काय, गौतम नांमे वाधे आय ॥ गौतम जिनशाशन सिणगार, गौतम नांमे जयरकार

॥ ४ ॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मनवंछित कप्पम्ह तंबोल ॥ घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नांमे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम ऊदयो अविचल ज्ञांण, गौतम नांम जपो जगजांण ॥ मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नांमे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोम्ह, वारू विलसे वंछित कोम्ह ॥ महियल मांने मोटा राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम नरसी संगत मिले ॥ गौतम नांमे निर्मल ज्ञान, गौतम नांमे वाधे वान ॥८॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण छे बहू ॥ कहे लावण्य समय कर जोम्ह, गौतम तूठा संपत कोम्ह ॥९॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये ए ॥ प्रज्ञात ऊठी मंगलीक काजे शोले शती नांम लीजिये ए ॥ १ ॥ बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी ज्ञरतनी बहिनमी ए ॥ घट २ व्यापक अक्षररूपे शोल शती मांहि जे वमी ए ॥ २ ॥ बाहुबल ज्ञगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नांमे ऋषज्ञ सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिज्ञुवनमांहे, जेह अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणेथी शीलवती शुद्ध श्राविका ए, ऊम्हदना बाकला वीर प्रतिलाज्या, केवल लहि व्रत ज्ञाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रशेन धूआ धारणी नंदन राजेमती नेम वल्लज्ञा ए, योवन वेशें कामने जीती, शंजम लेइ देव ऊल्लज्ञा ए ॥ ५ ॥ पंच ज्ञरतारी पांम्हव नारी, द्रुपदा नांम वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणिये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंद्रिका ए, शीयल सलूणी रांम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौशंबिक ठांमे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर घरणी मृगावती नांमे सुरज्ञुवने ज्ञश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलशा

साची शीद न काची राची नही विषयारसें ए, मुखमो जोतां पाप पुलाये नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनो कामण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जांणे धीज करंता अनल शीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणो बांधी कूवायकी जल काढियो ए, कलंक उतारवा शतिय सुभद्रा चंपा बार उघाड्यो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये बलिहारी तसु नांमनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांडवरायनी कूंता नांमे कामनी ए, पांडव माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम जपता पातिक जाए, दरसन डुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पड़ियां शीलज राख्यो, त्रिभुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता, पुष्पचूला ने प्रभावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, शोलमी शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शास्त्र छे साखी, उदयरत्न भाषे मुदा ए ॥ प्रह ऊठीने जे नर भणसे, ते लहिस्ये सुख संपदा ए १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ इक्ष्वीकुख रत्नहीर, विश्वभूति पितु सधीर ॥ च्यार वेद चतुरवीर मन्मथ अवतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जज्ञ रंग विप्र संग, तृप्रा सुरलोक गंग ॥ करत धरत गात्र पात्र, विरुद विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत प्रभु आये चंग, वाणी गुण सप्त भंग ॥ वर्द्धमांन जित अनंग, शंशय तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंद्रजाल संक रेख ॥ वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पाय अंग बार, रचना कृत अति अपार, बोधन जग जीव सार, भये गुरु

गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरमें लीन ॥ मुनि मन जर्ख चरण मीन, कुंदन द्युति सारी ॥ ज० ॥६॥ सिद्धियोग नंद चंद, कार्त्तिक शित संघ वृंद ॥ फूलत घर कल्प कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणी इंद्रभूति जगधणी ॥ कुशल निधान सुख भणी, पाठक ऋद्धिसारीज०॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हांने प्यारो लागे छे जी मुनिवर भेस ॥ म्हांने० हाथ लकड़िया कांधे कंबलिया, शिर शोभित तनु केश म्हां० ॥ १ ॥ चोलपट्ट चादर पांगरणी, उज्वल रहत हमेश ॥ म्हा० ॥ २ ॥ ज यणा कर मुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां० ॥ ३ ॥ थिं वरकलप जिनमुद्राधारी ॥ काटत कर्म कलेश ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ दे उपदेश भविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हां० ॥५॥ करत रामऋद्धिसार वंदना, निरखत एसो भेस ॥ म्हां० ॥६॥ इति पद॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं पद ॥

॥ राग नाटक ॥

॥ जबसे सरधा शुद्ध भई, मन अरिहंत २ ध्याते हे ॥ अरिहंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय २ जय २ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे २ सहजानंदी जगत उधारण, सुरनर चरण लुभाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढ रवाते, अपछर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवडुंडभि नाद बजाते हे, धर्म के ते हे सुख देते हे ॥ भविक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मनमें लाते हे ॥ रामऋद्धिसार कहे ऋद्धसार, तूं आधार प्रभु मोहे तार ॥ ज०

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सज्झाय ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रावक तुं उठे परभात, चार घड़ी ले पाछली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार; जेम पामे भव सायर पार ॥१॥

कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं छे कुलकर्म, कवण अ
मारो छे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामायिक ले
जे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे बुध ॥ पडिक्कमणुं करे रयणी तणु,
पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्ते करे पच्चरकाण सूधि पाले
जिननी आण ॥ जणजे गणजे स्तवन सझाय, जिणहुंती निस्तारो
थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम
॥ देहरे जाइ जुहारे देव, द्रव्यजावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषाले
गुरु वंदन जाय, सुणो दखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सूजतो
आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मीवत्सल करजे घणां,
सगपण महोटा साहम्मीतणां ॥ दुःखीया हीणा दीना देखि, क
रजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, महोटाशुं
म करें अन्निमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखडी, धर्म न मूकीश ए
के घडी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उंगा अधिकानो परिहार ॥
म जरिशकेनी कूडी साख, कूडा जनशुं कथन म जांख ॥ ९ ॥
अनंतकाय कहिये बत्रीश, अजक्ष्य बाविशे विश्वावीश ॥ ते जक्षण
नवि कीजें किमे, काचां कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजो
जनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गु
ली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण
पास, दूषण घणां कह्यां छे तास ॥ पाणी गलजे बेबे वार, अणगल
पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक छंडी
करजे पुण्य ॥ छाणा इंधण चूले जोय, वावरजे जिम पाप
न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर
म धोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे
॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं
म लेजे अनरथ दंड, मिथ्या मेल म जरजे पिंड ॥ १५ ॥ समकि

त शुद्ध हैंमे राखजे, बोल विचारीने ज्ञाखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंज्ञ, पालो शीयल तजो मन दंज्ञ ॥ १६ ॥ तेल तक घृत दूध ने दहिं, ऊघामां मत मेलो सही ॥ उत्तम ठाम खरचो वित्त, पर उपगार करो शुन्नचित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार; चारे आहार तणो परिहार । दिवस तणां आलोए पाप, जिम ज्ञांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण ज्ञव ज्ञवें ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥१९॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार, जेटीश हुं धन धन अवतार ॥ ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी ले एह, एहथी थाये ज्ञवनो छेह ॥ आठे कर्म पमे पातलां, पाप तणा छुटे आमला ॥ २१ ॥ बारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमें पामे शिवपुरधाम ॥ कहे जिनहर्ष घणा सस नेह, करशो छुःखहरणी ले एह ॥२२॥ इति श्रावकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि पज्ञणिसुं सामी साल गोयम गुरुरासो ॥ मणतणु वयणे एकंद करवि निसुणहु जो ज्ञविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरिज्ञरहखित्त खोणी तल मंमण, मगहदेस सेणियनरेस रिलदल बलखंमण ॥ धणवर गुव्वर गाम नाम जिहां गुणगणसज्जा, विप्प वसे वसुज्ञूइ तल तसु पुहवी ज्ञज्जा ॥२॥ ताणपुत्त सिरिइंद ज्ञूय ज्ञूवलयपसिद्धो, चवदह विज्जा विविहरूव नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाणदेह रूवहि रंज्ञावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण जणवि पंकजजलपामिय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास ज्ञमामिय ॥ रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधामिय, धीरम मेरु गंज्ञी

र सिंधु चंगम चयचाम्य ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण जंपे किंचिय, एकाकी किल ज्ञीत्त इन्न गुण मेल्या संचिय ॥ अहवा निश्चयपुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय, रंन्ना पनमा गवरि गंग रतिहां विधि वंचय ॥ ५ ॥ नय बुध नय कर कविण कोय जसु आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र गात्र हींमे परवरियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरमनाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव ज्ञरह वासंमि खोणीतल मंरुण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुव्वरगाम तिहां, विप्प वसे वसुन्नूइ, ...र तसु पुहवि जज्जा, सयलगुणगणरूवनिहाण, ताणपुत्त विज्जानिला, गोयम अतिही सुजाण ॥७॥ न्नास ॥ चरम जिनेसर केवलनाणी, चोविहसंघ पइन्न जाणी॥ पावा पुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां किजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे ॥ त्रिज्ञुवनगुरु सिंहासन बेठा, ततखिण मोह दिगंत पइठा ॥ ९ ॥ क्रोध मानमाया मदपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव डुंडुन्नि आगासें वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इंन्द्र मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसज्जर वरवरसंता, जोजनवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इंन्द्रन्नूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंमक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता ॥ तो अन्निमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले ॥ मो आगल कोइ जाण न्नणीजें, मेरुं अवर किम उपम दी

जें ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुरसुर महिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण बहु सुख्क कारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहि कर दिन कार सिंहासण सामी ठव्यो, हुउ तो जयजयकार ॥ १६ ॥ ज्ञास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंदभूय भूयदेव तो ॥ हुंकारो करसं चरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन भूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारंभ ॥ तो दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरणदंम ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥ वयरविवर्जितजंतुगण, प्रातीहारिज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद इंद्राणी राय तो ॥ चित्त चमक्किय चिंतव ए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल तो ॥ एह असंभव संभव ए; साचो ए इंद जाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इंदभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतहिं नाम्यो सीस तो ॥ पंच सयांसूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो॥२०॥ इण अनुक्रम गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेसे भुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो ॥ बिहुं उपवासें पारणो ए, आपणपें विरहंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जय कार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंदभूइ इंदभूइ चढियो बहुमान हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंततो ॥ बोधबीज सज्झायमनें, गोयम भवहि विरत्त ॥ दिख्क लेई सिख्का सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुउ सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य भरो ॥ दीठा गोयम सामि, जो नियनयणें अमिय झरो ॥ समवसरण मझार, जे जे

संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥२३॥ जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कनें अरिहंत, गोयम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्ट पद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीठो आवतो ए ॥२५॥ तपसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुउ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंम कलस ध्वज वम सहिय॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर भरतेसर महिय ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक्जृंभक देव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंमरीक, कंमरीक अध्ययन भणी ॥ वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांम घृत आण, अमीय वूठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचसयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जणवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पभरेसें, उपन्न परिवरिय, हरिडुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जग गुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजिनेसर इम भणे,

गोयम म करिस खेव, छेद जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला बेव ॥ ३१ ॥ ज्ञास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्ल सिय ॥ विहरियो ए जरहवासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय ॥ ठव तो ए कणय पउमेण, पायकमल संघें सहिय ॥ आवियो ए नय णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि, देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर मपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मन्नविखवाद, नादजेद जिम ऊपनो ए ॥ ३१ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिजलो ए कीधलो सामि, जाण्यो केवल मागसे ए ॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा केम्हें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, जगतहिं जोवें जोलव्यो ए ॥ आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजें टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो यम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट, रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, जविया जव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥

॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासें सं वसिय तीसवरससंजम विजूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, वाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ ज्ञास ॥ जिम सह कारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सो गंधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहिरयां लहके, जिम कणयाचल तेजें ऊ लके, तिम गोयम सोजागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हंसा, जिम सुरतरुवर कणयय तंसा, जिम महुयर राजीववनें ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केल घने ॥ ३७ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमांहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नर वइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी नाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम नूमीपती नुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधें गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंन सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन कामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥ ॥ ४२ ॥ पणवक्कर पहिलो पनणी जें, माया बीजो श्रवण सुणीजें ॥ श्रीमिति सोना संनवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पहू उवझाय थणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां काय करीजें, देस देसांतर काय नमीजें, कवण काज आयास करे ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण सीझे, नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं मंगल ए पनणीजें, परव महोछव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरें धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए ॥ विनयवंत विद्या नंमार, तसु गुण पुहवी न लब्नइ पार, बम्म जिम साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास नणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजें, रिद्धिवृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन उनो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेस

णो ए ॥ तिहां छेठी गुरु देशना देशी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रभाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ भूख्यां भोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भंडार ॥ जे गुरु गोतम समरियें, मनवंछित दातार ॥ २ ॥ पुंडरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊठीनें प्रणमता, चवदेसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुणकलियं, सुविणियं सवलद्धि संपन्नं ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंसामि ॥ ४ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभिष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास भणूं रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, हुआ धनेश्वर सूर ॥ तिण सत्रुंज माहातम कियो, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिणंद समवसरया, सेत्रुंज ऊपर जेम ॥ इंद्रादिक आगल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुज तीरथ सारिखो, नही छे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तीरथ सगला जोय ॥ ४ ॥ नांमे नव निध संपजे, दीठा दुरित पुलाय ॥ भेटंता भव भय टले, सेवंता सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबू नामे द्वीप ए, दक्षिण भरत मझार ॥ सोरठ देस सुहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहिली ॥ राग रामगिरी ॥

॥ सेत्रुंजो ने श्रीपुंडरीक, सिद्धक्षेत्र कहूं तहतीक ॥ विमलाचलने करूं प्रणाम, ए सेत्रुंजैना इकवीस नांम ॥ १ ॥ सुरगिरि

ने महागिरि पुन्यरास, श्रीपदपर्वत इंद्रप्रकास ॥ महातीरथ पूरवे सुखकांम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति; मुक्तिनिलो तिण कीजे भक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगांम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम कीजे गुणग्रांम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नांम, जपेज बेठा अपने ठांम ॥ सेत्रुंज जात्रानो फल ते लहे, महावीर भगवंत इम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण परिमांण ॥ पिहुलो मूल ऊंचपण, छवीस जोयण जांण ॥१॥ सत्तर जोयण जांणवो, बीजे अरे विसाल ॥ वीस जोयण ऊंचो कह्यो, मुझ वंदना त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोयण ऊंचो सही, ध्यांन धरूं चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण, चोथे अरे मझार, ऊंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमें नर नार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम अरे, मूलतणो विसतार ॥ दो जोयण ऊंचो अछे, सेत्रुंजो तीरथ सार ॥ ॥ ५ सात हाथ छठे अरे, पिहुलो परबत एह ॥ ऊंचो होस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थंकर, अनंत सीधा इण ठांम रे ॥ अनंत वली सिझस्ये इण ठामे, तिण करूं नित परणाम रे ॥१॥ सेत्रुंजसाधू अनंता सीधा, सीझसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज तीरथ नही भेट्यो, तेगरभावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे ॥ रायणरूंख समोसरया स्वांमी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्र चैत्री पुनम दिन, इण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोडीसुं पुंडरीक सीधा, ति

ण पुंमरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजा विद्याधर, बे बे कोमी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिण प्रणमुं परजात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चेत्रमास वदि चौदसने दिन, न मीपुत्री चउसठि रे ॥ अणसण कर सैत्रुंजगिर ऊपर, ए सहु सी धा एकठि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, डावम ने वारिखिल्ल रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोमी मुनिसुं निसल्ल रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांमव इण गिर सी धा, नव नारद ऋषिराय रे ॥ संब प्रजून्न गया इहां मुगते, आठू क र्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विना तेविस तिर्थंकर, समवस र्या गिरिशृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थंकर बेहूं, रह्या चोमासे सुरंग रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावच्चासुत साध रे ॥ पांचसें साधुसुं सेलग मुनिवर, सैत्रुंज शिवसुख लाध रे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि सेत्रुंज सीधा, जरतेसरने पाट रे ॥ रा म अने जरतादिक सीधा, मुक्तिंतणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥ जालि मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोमि रे ॥ साधु अन ता सेत्रुंज सीधा, प्रणमुं बे कर जोमि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सेत्रुंजना कहुं सोल उद्धार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार ॥ सुणतां आणंद अंग न माय, जनम २ना पातिक जाय ॥ १ ॥ ऋ षजदेव अयोध्यापुरी, समवसर्या स्वामी हित करी ॥ जरत गयो वंदणने काज, थे उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांहि मोटा अरिहंत देव, चोसठ इंद्र करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, जर त सुणीने मन गहगह्यो ॥ जरत कहे ते किम पांमिये, प्रजु कहे से त्रुंज जात्रा किये ॥ ४ ॥ जरत कहे संघवीपद मुफ, थे आपे

हूं अंगज तुझ ॥ इंद्रे आण्या अक्षतवास, प्रज्ञु आपे संघवीपद ता
स ॥ ५ ॥ इंद्रे तिण वेला ततकाल, ज्ररत सुज्रश बिहुंने माल ॥
पहिरावी घर संप्रेरुया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिष
ज्रदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी दीधी मन रली ॥ ज्ररतें गणधर
घर तेम्डिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मू
की सहु देस, ज्ररत तेमायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी,
प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ ज्रगत कीधी अतिघणी, सं
घ चलायो सेत्रुंज ज्रणी ॥ गणधर बाहूबल केवली, मुनिवर कोम्
साथे लिया वली ॥ ए ॥ चक्रवर्त्तनी सघली रूद्धि, ज्ररते साथे ली
धीसिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नावे पार
॥ १० ॥ ज्ररतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥
संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे
निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माणिक मोत्यांसुं वधाय ॥ तिण ठामे
रही महोछव कियो, ज्ररते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ
सेत्रुंजा ऊपर चढयो, फरसंता पातिक ऊम पड्यो ॥ केवलग्यानी
पगला तिहां, प्रणम्यां रायणरूंख बे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी
स्नात्र निमित्त, ईशानेंद्र आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी,
ज्ररतें दीठी कौतुक ज्रणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, इंद्रे
वलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो, ज्ररत करायो गुरि
सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मन
रंग ॥ ज्ररते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥
मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरि
प्रमुख प्राशाद, ज्ररते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक
प्रतिमा प्राशाद, ज्ररतें कराया गुरु सुप्रशाद ॥ ज्ररततणो पहिलो
उद्धार, सगलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥

ढाल चोथी ॥ राग सिंधूडो . आसाउरी ॥

॥ भरततणे पाट आठमे, दंमवीरज थयो रायो जी ॥ भरततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज उद्धार सांभलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीजा वली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपातणो, सोनानो बिंब सारो जी ॥ मूलगो बिंब भंमारीयो, पश्चिमदिसि तिण बारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुजैनी जात्रा करी, सफल कियो अवतारो जी ॥ दंमवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंमवीरजथी जिवारो जी, इशानेंद्र कराविया ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो कराविया, ए चोथो उद्धारो जी ॥ से० ॥६॥ पांचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंद्र समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो कराविया, ए पांचमो उद्धारो जी ॥ से० ॥७॥ भुवनपती इंद्रनो कियो, ए छठो उद्धारो जी ॥ चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥से०॥८॥ अभिनंदन पासे सुणयो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइंद्र कराविया, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ए ॥ चंद्रप्रभु स्वामीनो पोतरो, चंद्रशेखर नांम मल्हारो जी ॥ चंद्रयशराय कराविया, ए नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना, शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय कराविया, ए दशमो उद्धारो जी ॥ से० ॥११॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वामी वारो जी ॥ श्रीरामचंद्र कराविया, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १२ ॥ पांमव कहे अमे पापिया, किम छूटां मोरी मायो जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप जायो जी ॥ से० ॥१३॥ पांचे पांमव संघ करी, सेत्रुंज भेट्यो अपारो जी, काष्ठ चै

स्य बिंब लेपना, ए बारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करी, थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥१५॥ अढोतर सो वरसां गया, विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाम जावम करावियो, ए तेरमो उद्धारो जी ॥१६॥ से०॥ संवत बार तिम्रोतरे; श्रीमाली सुविचारो जी, वाहमदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥ से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स त्यासिये, वैसाख वदि शुन्न वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो, ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरते छे उद्धारो जी॥नित२कीजे वंदना, पांमीजे नवपारो जी॥२०॥से०

॥ दूहा ॥

॥ वलि सेत्रुंज महातम कहुं, सांजलो जिम छे तेम ॥ सूरि घनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ नगवंतनो नेष मांनता, लान्न हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमांण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तनी स्त्री थई, शिवसुख पांमे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उपवास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती परव मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नासे छोम ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक नणी, नोजन पुन्य विशेष॥ सेत्रुंज साधु पमिलान्नतां, अधिको तेहथी देख ८

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ सेत्रुंज गया पाप छूटिये, लीजे आलोयण एमो जी, तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेत्रुंज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सैत्रुंज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी ॥ चोरी कीधी जेणो जी ॥ सात दिवस पुरिमढ्ढ करे, तो छूटे गिरि एणो जी ॥४॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोरया नर नारो जी ॥ आंबिल कर पूजा करे, त्रिण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ ५ ॥ से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते भेटे सिद्धक्षेत्रो जी ॥ सेत्रुंज तलहटी साधुने, पडिलाभे सुध चित्तो जी ॥ से० ॥६॥ वस्त्राभरण जिणे हरया, ते छूटे इण मेलो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, प्रह ऊठी बहू वेलो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुध थाये एमो जी ॥ अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू प्रेमो जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय भैंस घोडा मही, गज ग्रह चोरणहारो जी ॥ ये ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥९॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नांमो जी ॥ छूटे छम्मासी तप कियां, सामायक तिण ठामो जी ॥ से० ॥१०॥ कुंवारी परिव्राजका, सधव अधव गुरुनारो जी ॥ व्रत भांजे तेहने कह्यो, छम्मासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालक ऋषि, एहनो घातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, छूटे तप कर तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ संप्रति काले सोलमो ए, ए वरते छे उद्धार ॥ सेत्रुंज यात्रा

करूं ए, सफल करूं अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ डहरी पालतां चालियें ए, सेत्रुंज केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, संघ मि ल्या बहु थाट ॥ से० ॥ २॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्ता नी वावि ॥ तिहां विसरामो लीजिये ए, वन्दने चोंतरे आवि ॥३॥ से० ॥ पालीताणे पाजनी ए, चढिये ऊठ परभात ॥ सेत्रुंजनदिय सोहामणी ए, दूरथकी देखंत ॥ से० ॥४॥ चढिये हिंगलाजने हडे ए, कलिकुंड नमिये पास ॥ बारीमांहे पैसीये ए, आंणी अंग उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीटूंक मनोहरू ए, गज चढी मरुदेवी माय ॥ शांतिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥ ॥६॥ वंस पोरवाडे परगडो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघ वी करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चोमुख प्रतिमा चरचिये ए, भमतीमांहे भला बिंब॥ पांचे पांडव पूजिये ए, अदभुत आदि प्रलंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही खंतसूं ए, बिंब जुहारुं अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालूं अलग उदेग ॥ से० ॥ ९॥ धरमदुवारमांहि नीसरूं ए, कुगति करूं अतिदूर ॥ आऊं आदिनाथ देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमुं मुदा ए, आदिनाथ भगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, भमतीमांहे भमंत ॥११॥ से० ॥ सेत्रुंज ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कल श अगेतर सो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥ प्रथम आदीसर आगले ए, पुंडरीक गणधार ॥ रायण तल पग ला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥१३॥ से० ॥ रायण तल प गला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥ बीजी भूमि बिं बावली ए, पूंडरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंड नि हालिये ए, अति भली उलकाजोल ॥ चेलणतलाइ सिद्ध शिला ए, अंग फरसुं उल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर पा

ज जतरू ए, सिद्धवरूलूं विसराम ॥ चैत्यप्रवाम इण पर करी ए, सी
धा वंछित कांम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंजतणी ए, सफल
कियो अवतार ॥ कुसल क्षेमसुं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ से०
॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोहामणो ए, सांजलज्यो सहू कोय ॥ घर
बेठां जणे जावसुं ए; तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संव
त सोल वयासिये ए, श्रावण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजत
णो ए, नगर नागोर मफार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गछ खरतर
तणो ए, श्रीजिनचंद सूरीस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल
चंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जांणिये ए, सम
यसुंदर उवझाय ॥ रास रच्यो तिण रूवमो ए, सुणतां आणंद था
य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्ण ॥

## ॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ वादी वीस जिनेसरू, रचस्युं रास रसाल ॥ तीरथ शि
खरसमेतनी, महिमा वम्री विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले,
प्रगट्यो शिखरसमेत ॥ कोमाकोमी मुनिवरू, सिद्ध गए इह खेत ॥
२ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्यां पाप पुलाय ॥ जविजन जे
टो जावसुं, ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी,
कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत जगवंतना, तिम ए ती
रथ होय ॥ ८ ॥

॥ ढाल १ ॥ चोपईनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब
जग होय ॥ वीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरी
ने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी जली, तिहां जितशत्रु

नरेसर वली ॥ विजयाराणीने सुत जांण, अजितकुमर सहु गुण नी खाण ॥२॥ जसु इंद्रादिक सेवा करे, इंद्राणी अति उछव धरे॥ तीर्थंकरनी पदवी लही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनुक्रम इम भोगवतां भोग, पुन्य प्रसाद मिल्यो सहु जोग ॥ अवसर दे संवत्सर दांन, संजम लीनो आप सुजांण ॥४॥ कर्म खपावी पांम्यो ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधांन ॥ विचरे पुहवीमंडलमांहि, भव्यजीव प्रतिबोधन ताहि ॥५॥ सिंहसेनादिक गणधर भया, पंचाणवे संख्या सहु थया, एक लाख मुनिवर परिवरया, श्रावक श्रावकणी सहु करया ॥६॥ तीन लाख वलि तीस हजार, साधवी थां जाणो सुविचार ॥ श्रावक सहस अठाणुं सही, दोय लाख संख्या गहगही ॥७॥ पांच लाख पैंतालीस हजार, श्रावकणी संख्या सुविचार ॥ बहुत्तर लाख पूरवनो आय, कंचनवरण सरीर सुहाय ॥८॥ साढीच्यारसे धनुष सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गंभीर ॥ गज लांछन प्रभुजीने जांण, अमृत सम जसु मीठी वांण ॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत सहस मुनिवरने परिवार, मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥ चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणे ॥ भूचर खेचर किन्नर सुरी, इंद्रादिकसहु उछव करी॥११॥ थाप्यो तीरथ मोटो मही, अठाइ महोछव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते भवियण अक्षयसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीसंभव जिनराज जी, गए इहां निर्वांण ॥ शिखरसमेत सुहामणो, प्रगट्यो तीरथ जाण ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥ सुगण सनेही सांजन श्रीसीमंधर स्वाम ॥ ए देशी ॥

॥ सावत्थीनगरी भली धन संपद बहु थोक, जैतारि नृप

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खा
ण, जेहने सुत श्रीसंभव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण
सरीर मनोहर प्रभुनो जाण, लंछन अश्वतणो सोहे प्रभुनो परधा
न ॥ साठ लाख पूरवनो प्रभुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसे उंच
पणै प्रभु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रभुने गणधर
होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख
श्रमणी वली ऊपर सहस छत्तीस, भूमंडल विचरे प्रभु श्रीशंभव
जगदीस ॥३॥ तीन लाख वलि सहस त्रयाणुं श्रावकलोक, षट
लख सहस छत्तीस श्रावकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुखयक्ष अरु दु
रितादेवी सानिधकार, विचरंता प्रभु सकल संघमें जयश्कार ॥४॥
सहस श्रमण परिवारे प्रभुजी सिखरसमेत, एक मास संलेखण
कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवांण,
तीरथ महिमा महियल मोटी थइय सुजांण ॥५॥

॥ दुहा ॥

॥ अभिनंदन जिन वंदिये, पायो पद निरवांण ॥ शिखरस-
मेत सोहामणो, भेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरी ॥ ए देशी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम भली, संवर राजा सोहे
मन रली ॥ सिद्धार्था राणी प्रभु तसु नंद ए, अभिनंदन जिन प्रग
टया चंद ए ॥ उल्लालो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साढी
तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंछन ते नित वसे॥
पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए॥ तीन लाख मुनि
छ लाख आर्या, सहस त्रिंसत् सोल ए,॥१॥ चाल ॥ सहस अठ्यासी
दो लख श्राद्धनी, संख्या चौ लख सत्तावीसनी ॥ श्रावकएयांरी संख्या
जाण ए, नायकयक्ष कालिका राण ए॥ उल्लालो ॥ राण ए शिखरस

मत ऊपर मास एक संलेषणा, इक सहस साधू परवरया प्रभु मुक्ति पहुंचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमंगला, श्रीसुमति जिनवर भए नंदन सदा होत सुमंगला॥३॥ चाल॥ सोवन वर्ण धनुष तसु तीनसे, लंछन क्रौंच सोहै सुभगे हसै ॥ पूरब लाख पच्यासी आउ ए, इकसौ गणधर गुणगण भाउ ए ॥ उल्लालो ॥ भाउ ए मुनि त्रिण लाख सोहे सहस वीस प्रमणां ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्ष जाण ए ॥ संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आणिये, पण लाख सोले सहस तुंबरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात संख्या सहस साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रभु मुक्ति पुहता चंग ए ॥ ३ ॥ चाल ॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धरनृप तात सुसीमा मात ए, पदम प्रभु तसु अंगज नाथ ए, लंछन कमलत णो सुभ हाथ ए ॥ उल्लालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अढाई से त॰ कहौ, तीन लाख पूरब थित कहावे एकसो गणधर लहो ॥ लख तीन तीस हजार साधू वीस सहस लख च्यार ए, साधवी दोय लख सहस छिहतर श्रावक संख्या सार ए॥४॥ चाल ॥ पांच लाख वलि पांच हजार ए, श्रावकण्यारी संख्या सार ए ॥ कुसम देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रभु सोहै सही ॥ उल्लालो ॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आठसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास संलेखन प्रभूनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रभुजी मुक्ति पहुता, गिर शिखर महिमा भई, ॥ तसु चरण पंकज बालवंदे हृदय आनंद गहगही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ भविजन भ्रमर सु सेवतां, पांमे वंछित कांम ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ श्रीसीमंधर साहिबा ॥ ए चाल ॥

॥ नगर बनारसी सोभता, राजा तात प्रतिष्ट लालरे ॥ देवी पृथवी मात जी, स्वस्तिक लंछन सिष्ट लालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व जिनंद जी, वीस पूरव लख आयु लालरे ॥ धनुष दोयसे देहनो, कंचनवरण सुहाय लालरे ॥२॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कह्या, साधू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस साधवियां जोय लालरे ॥३॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्खनी, श्रावक संख्या थाय लालरे ॥ च्यार लाख वली त्रेणवै, सहस श्रावकणी जाय लालरे ॥४॥ श्री० ॥ मातंगयक्ष शांतासुरी, पांचसे मुनि परवर लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नांम लियां निस्तार लालरे ॥५॥ श्री० ॥ नगर चंद्रपुर इण परे, राजा तात महेस लालरे ॥ देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंद्रप्रभु वेस लालरे ॥६॥ श्रीचंद्रप्रभु वंदियें, चंद्रवरण तनु जेह लालरे ॥ लंछन चंद्रतणो भलो, धनुष दोढसे देह लालरे ॥७॥ श्रीचं० ॥ भविककमल प्रतिबोधता, सेवे सुर नर यक्ष लालरे ॥ दस लाख पूरव आउखो, तेणवे गणधर दक्ष लालरे ॥ श्रीचं० ॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि श्रमणी तीन लक्ष लालरे ॥ असी सहस संख्या कही, श्रावक वलि दोय लक्ष लालरे ॥९॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर वली, श्राविका चउ लक्ष धार लालरे ॥ सहस इकाणवै ऊपरै, प्रभुजीनो परिवार लालरे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भृकुटीसुरी, सहस साधु परिवार लालरे ॥ संलेखन इक मासनी, पुहता मुक्ति मझार लालरे ॥११॥ श्री० ॥

॥ दुहा ॥

॥ जय श्रीसुविद्ध जिनेसरु, जगपति दीनदयाल ॥ समेतशिखर मुगते गया, भविजनके प्रतिपाल ॥१॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा माता सुत, जए सुविध सुज्ज जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु सत, धनुष एक परिमांण ॥ दोय लाख पूरब कह्यो, प्रभुनो आयु सुजांण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या जए, गणधर परम प्रधान ॥ लख दो मुनि विंशति सहस, इक लख श्रमणी जांण ॥ ३ ॥ दोय लक्ष श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकत्तर चौ लख सहस, श्रावकणी सुविचार ॥ ५ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सानिधकार ॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ६ ॥ मास संलेखणा कर प्रभु, मुक्ति गए इह ठोर ॥ तीरथ महिमा महियलै, प्रगटी च्यारुं ओर ॥ ७ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, हिव सुणज्यो अधिकार ॥ जद्दिलपुर दृढरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥ ८ ॥ लंछन सुज्ज श्रीवच्छनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ धनुष, मान सरीर अमंद ॥९॥ एक लाख पूरब कह्यो, प्रभुनो आयु प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजांण ॥ १० ॥ एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या ओर ॥ सहस तयासी दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥ ११ ॥ सहस अठावन लक्ष चौ, श्रावकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सानिधकार ॥ १२ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधूने परिवार ॥ मुक्ति गए प्रभु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १३ ॥

॥ ढाल छठी ॥ धन२ संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी, कंचनवरण श्रेयांस प्रभूजी, उपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो रे नमो श्रीत्रिभुवन राजा, खड्ग लंछन प्रभु पाय जी ॥ धनुष असी

देहमांन चौरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर बहुत्तर सहस चोरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सहस वलि सहस गुणयासी, श्रावक पुण दो लक्ष जी ॥ ३ ॥ न० ॥ अरू तालीस सहस वलि चौ लख, श्राविका जाणो सार जी ॥ जक्ष अमर सुरी मांनवी जांणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥ न० ॥ सहस मुनीसरनै परिवारै, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ मास संलेखणा कर प्रभु पोहता, मुक्तिमहल सुख हेत जी ॥ न० ॥ ५ ॥ हिव कंपिलपुर तात नृपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्यामादेवी अंगज रूपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सूकर लंछन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख वरसनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सहस मुनि अरू सय इक लख, श्रमणी श्रावक जांण जी ॥ आठ सहस दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥ षणमुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी शिखरसमेत जी ॥ षट हजार साधू परिवारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न० ॥ ए ॥ नगरी नाम अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सुत जायो, प्रभुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंछन श्येन सोवन सम काया, धनुष पचास प्रमांण जी ॥ तीस लाख वछरनो आयु, गणधर पचवीस आंण जी ॥ न० ॥ ११ ॥ छासठ सहस मुनीसर सोहे, बासठ श्रमणी हजार जी ॥ छ हजार लाख दोय श्रावक, श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख वलि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यक्ष श्रीसंघके सानिध, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनिवरनै परिवारै, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि ऊपर, पुहता पद निरवांण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दूहा ॥

॥ ऐसे धर्म जिणेसरू, पुहता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत गिरिंद पर, नमो२ जगन्नाण ॥१ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धणी जी, भानुराय सुजाण ॥ राणी सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिनेसर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंछन सुखकार ॥२॥ ज० ॥ चोतीस गणधर मुनि कह्या जी, चौसठ सहस प्रमांण ॥ श्रमणी बासठ सहसस्यूं जी, श्रावक दोय लक्ष मांन ॥ ३ ॥ ज० ॥ च्यार सहस वलि ऊपरां जी, चौ लख एक हजार ॥ श्रावकणी संख्या कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥ किन्नर सुर यत्ना सुरी जी, एक सहस परिवार ॥ समेतसिखर मुगते गया जी, वांदूं वार हजार ॥५॥ ज०॥ हथणापुर विश्वसेनना जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन जय२कार॥जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥मृग लांछन सोवन समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरष इक लाखनो जी, छत्तीस गणधर सीस ॥ ज० ॥७॥ वासठ सहस मूनि वसै जी, इगसठ श्रमणी हजार ॥ दोय लाख श्रावक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार ॥ ८ ॥ ज० ॥ सहस त्रयाणूं श्राविका जी, तीन लाख परिवार ॥ गरूड़यक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥९॥ नवसे मुनि परवार स्युं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमण कर मुगतिमें जी, पुहत्ता निजपद हेत ॥ ज० ॥ १० ॥ ऐसें हथणापुर भलो जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंथुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन तनु श्रीमात ॥ जगतपति कुंथु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ छाग लंछन पेंतीसनो जी, धनुष देहनो मांन ॥ सहस पंच्याणव वरस

नो जी, आयु प्रभुनो जान ॥१२ ॥ ज० ॥पैंतीस गणधर दीपता जी, साठ सहस मुनि जांन ॥ ठसै साठ सहस वली जी, श्रमणी संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्षनौ जी, श्राव क संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, श्राविका सं ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरया जी, देवी ब ला गंधर्व॥कुंथुनाथ मुगते गया जी, मास संलेखणा सर्व ॥ज०॥१५

॥ दूहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्युं अब अधिकार ॥ श्रो ता सुणज्यो प्रेम धर, थास्यै लाभ अपार ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ देसी बिछियानी ॥ हांरे लाला श्रीजिनकुशल सूरीसरू॥ए देशी ॥

॥ हांरे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला ॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंछन नंद्यावर्त्तनो, तीस धनुष देहीनो मांन रे लाला॥कंचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला॥ ॥२॥ श्री अ०॥ इक लाख श्रावक ऊपरे, वलि संख्या अधकी जांण रे लाला ॥सहस वहुत्तर लाननी लक्ष श्राविका संख्या आंण रे लाला ॥ श्रीअ० ॥३॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रभु, कर मास संलेखणा सार रे ॥ श्रीअ० ॥४॥ मिथिलानगर प्रभावती, मात पिता श्री कुंभ राय रे लाला ॥ लंछन कलस पचीसनो, वपु धनुष सोवन सम कायरे लाला ॥ श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू ॥५॥ सहस पचा वन वर्षनी, थित गणधर अठावीस रे लाला ॥ भविक कमल प्रति बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ६ ॥ श्री म० ॥ चा लीस सहस मून सरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस त्र्यासी लक्षनी, श्रावकनी संख्या सार रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म०॥

श्राविका सित्तर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला ॥ सहस मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥ ९ ॥ राजग्रही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लाला ॥ श्यामवरण तनु शोभता, जे कपिल लंछन विख्यात रे, लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वरस तीस हजार रे लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस मुनिसर सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या बहुतर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष पचास हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी भली, नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस मुनि परवारसे, गए मुक्ति महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंछन कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिनेसरू ॥ १४ ॥ दस हजार वरसतणो, गणधर सित्तर परिमाण रे लाला ॥ वीस इकतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ इक लख सित्तर सहसनी, तीन लक्ष सहस वलि होय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता भूमंडले, आया सिखर समेत मझार रे लाला ॥ भृकुटी यक्ष गंधारी सुरी, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूहा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सिरोमणि सहसफण, जगजीवन जगतात ॥ १ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ जय२ परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारसनाथ जी ॥

सांवरिया साहिब जगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥ जय२ सिखर समेत सिरोमणि, श्रीसांवरिया पास जी ॥ ध्यावे सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंछित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कासी देस वणारसी नगरी, श्रीअश्वसेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्याती, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंछन नील वरण छवि, देहि शुभ्र नव हाथ जी ॥ आयू इकसो वरस प्रमाणे, गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सहस मुनिवर अरु श्रमणी, कही अमतीस हजार जी ॥ भूमंडल विचरे भवि जनकूं, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ सहस लाख इक श्रावक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी संख्या, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ वीस जिनेसर मुगते पुहता, महिमा थइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगट्यो जगमें, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ छहरी पाले जे नर भावे, भेटे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए सुरतरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संघतणी करे भक्ति, संघपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पामी, जेहनो सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परभव सुरनर संपद पामे, जात्रा करे गहगाट जी ॥ साधर्मी वछल मुनिभक्ति, पूजा उछव थाट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूंक२ पर चरण प्रभूना, पूजो भविजन भाव जी ॥ ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उछाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां नवनिध थाय जी ॥ तिण ए भविजन भाव धरीने, सुणज्यो मन थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गछपति महिमाधारी, कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौभाग्य सूरीश्वर, अमृत वचन सुगात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तासु पसायें रास रच्यो ए, अ

मृतसमुद्रने सीस जी ॥ बालचंद निज मति अनुसारे, सोधो विबुध जगीस जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत उगणीसै सितमोत्तर, सुदि वैशाख सुढाल जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, जणतां मंगल माल जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ ढाल १ ॥

ऋषन्न प्रमुख जिन पाययुग प्रणमूं, सिवसुख दायक मनह उल्लास ॥ पुंमरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल विकास ॥ १ ॥ मद सम सूधा साधु नमुं नित, जावै श्रमण सुगुरु जगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालूं, परमानंद सुमति विकसंत ॥ २ ॥ प्र० ॥ जरत महामुनि प्रथम चक्रीसर, बाहूबल उपशम जंमार ॥ सूरयसादिक आठ मुनिसर, पांम्यो विमलाचल जवपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ ऋषजवंस जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोमी लाख असंख, श्रीसेत्रुंजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूंकी कुंख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्त्ति, साधु महाबल संजम सींह ॥ अचलादिक बलदेव अष्टमुनि, राम ऋषीसर नवम अबीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ढ वसुंदर, श्रीमल्लिनाथ पूरबजव मित्र ॥ पहुंता परम ऋषीसर शिवपुर, पाली श्रीजिन आंण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ बंडु विष्णुकुमार लबधि निधि, खंदक सूरीना सीस सय पंच ॥ कार्त्तिकसेठ सुसाधु कीर्त्तिधर, श्रमण सुकोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयडुवंस अक्षोजसु सागर, प्रमुख आठ अणगार प्रधान ॥ श्रीरहनेमि नेमजिन बंधव, निरमल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने उवयाली, पुरससेण वारिसेन प्रद्युम्न ॥ संब अने अनिरुद्ध ऋषीसर, सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमर अनीकजसादिक षट मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकमाल ॥ ढंढण ऋषि श्रीथावच्चा

सुत, सहस साधु संजतसु रूपाल ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो, पंचसयांसु सेलग मुनिवरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंमरगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥ उल्लालो ॥ संपद करो समदम रिषीसर साधु सारण सोह ए, अंतर प्रकासे तिमर नासे, भविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुध्ध प्रबुध्ध नारद मुनि प्रमुख पैंताल ए, दमदंत महाऋषि कुंजवारे साधु नमुं त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिषभदत्त रतनत्रय गुणी, स, मरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांरूव प्रणमुं मुनिपती, केसपएसी बोधक जिनमती ॥ उल्लालो ॥ जिनमती बालक पूत्र मेहल थिवर आणंद रक्कियो, अणगार कासव धर्म भाख्यो सोधि सिवपुर सक्कियो ॥ कालासवेसी पूत्र आतम अरथ साधक उपसमइ, श्रीपुंमरीक महामुनीसर प्रणमिये शुभ संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंदु वलकलची रीकेवली, श्री अयमत्तो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू डुमह नमि निग्गया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लालो ॥ श्रीजुवा ए वृषभादि देखी थया वरु वइरागिया, संजमसिरि भज मोहनिद्रा तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया एकण समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरुपम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥ १३ ॥ चाल ॥ खंते कुल्लकुमारसु ध्याइये, लोहच्चा मुनि चरणे लय लाइये ॥ काल उदाई प्रमुख महामुणी, संजम सुध जयंती साहूणी ॥ उल्लालो ॥ साहूणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया ॥ श्रीश्रमणभइ सुभइ सुंदर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठय तीस सुव्रत, साधुसुवत सेहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत गोभइ गरुड गरिमा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय रूषीसर वंदिये, दसारण भइ नमुं डुख छंदिये ॥ अर्जुनमाली सुख संजमधरो, सुदृढप्रहा

श्री सिवरमणी वरो ॥ उल्लालो ॥ सिवरमणी वरो श्री कूरगडू क्षमावंत प्रसिद्धउ, कोडिन्न दिन्न अने सेवाली पनर सतक तिडोत्तरा ॥ गो तम प्रबोधत सिद्ध हुंदता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥ गरुआ श्रीगुणसागर गाईये, प्रथवीचंद प्रणम्यां सुख पाइये ॥ खं दकुमार सदा अभिनंदिये, नमिद नरद मित्र मन आणंदिये ॥ उल्लालो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसुं समरी करी, रुष इ लापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीये धरी ॥ श्री इंद नाम निर्ग्रंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनी सरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि २ जसतणो, श्रमण सु दंसण सील सुहामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आइकुमार ए, चित्त चतुर नर चित चमकार ए ॥ उल्लालो ॥ चमकार सार सुजात रुषिवर देवसांनिध जस धणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजे सुजिन पालत हि त धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥ श्रीकपिल रुषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरलेव ए ॥ १७ ॥ ॥ चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषे जुउ, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुउ ॥ श्री इखुकार नृपति कमलावती, रांणी भृगुसुं प्रोहित सुजमती ॥ उल्ला लो ॥ सुजमती जेहनी जसाभार्या पुत्र दोय वखाणिये, ए छहूं लेइ चारु चारित्र मुगति पहुता जाणिये ॥ क्षत्रिय मुनिसर साधु संजम धर्मरुचि महाव्रती, निर्ग्रंथनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुसं यती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कल्पो, विषसुं शीतल सिवकमला मिल्यो ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशं स्यो तप गुण वीर ए ॥ उ० ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुबाहु जइ नं दकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए ॥ श्रीचंद्ररुद्र सुसीस खंदग क्षमानिधि कहिये इण कलै, कुरुदत्त सुत तीसग सरोरुह रिष नम्यां आस्या फले ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

मुख रिष च्यारे आदरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अजैकुमार मुनि अन्नयंकरो, इस्र विहस्रसु आतम हितकरो ॥ जद्यावो ॥ हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिषेण आराधिये, सुनक्षत्र ने सर्वानुनूति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने चंदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसालन्नद्र सुधन्न मुनिवर समरंता मंगलकरो ॥ २० ॥

॥ ढाल ३ ॥ राग धन्यासिरी ॥

वरुवेरागी वर नमूं, युगवर जंबूसांमि ॥ प्रन्नव सिय्यंन्नव परगमो, सुजस जसोन्नद्र स्वांमि ॥ महामुनिसर नित नमूं जी, नांमे घर नवनिध्ध वाधे रिद्ध समुद्ध ॥ महा० ॥ २२ ॥ जग संनूतिविजय जयो, न्नद्रबाहु कृतन्नद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनिवर श्रीथूलन्नद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ न्नद्रबाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्य मुनीराय ॥ सीत परीषह जिणसह्या, सारया२ आतम काज ॥म०॥ ॥ २४ ॥ अज्जमहागिरि जांणिये, अज्जसुहस्ति विसाल ॥ संप्रति नृप पमिबोहियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ २५ ॥ आरिजसांमि यसंसियो, अज्जसुन्नद्र मुनीस ॥ अज्जमंगु महिमा निलो, सींहगिरी समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि थिवर महामनी, श्रीवयरस्वामी मुनिराय ॥ अरहदिस मुनि अपहरयो, न्नद्रगुपति निरमाय ॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन वियावरू, श्रीरक्षत गुरु दक्ष ॥ पुसमित्र गुण गहगह्यो, प्रन्नु डुरबलका पक्ष ॥ म० ॥ २८ ॥ विरूसाधु सुविधइ न्नरयो, श्रीठंमिल सुविहत्र ॥ सूत्रअरथ रतने न्नरयो, क्षमाश्रमण देवर्द्धि ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काल महामुनी, श्री दुपसैं सूर दयाल ॥ सुद्ध क्रिया खरतर सही, जिन आज्ञा प्रतिपाल ॥ म० ॥ ३० ॥ इम पनर कर्मन्नूमी जिके, हुआ होस्यै अणंत ॥ वर्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रइ गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ आही

सुंदरि राधने, साहुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिक रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल छत्तीस ए, श्री विमलनाथ सुरसाल ॥ दिक्षा कल्याणक दिने, गुंथी श्रीमुनिमाल ॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरैं रलियामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ सूरि विजय राजै सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री मतिभद्र सुगुरुतणें, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंघ वखाणीयै, सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणगं ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पामे सुख भरपूर ॥ म०॥ ॥ ३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम हासिद्ध घेर फले, सदा२ कल्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नूं जिन स्तवन लि० ॥

॥दो०॥ वरतमांन चौवीसी वंदूं, मन सूधै नित मेव री माई॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम प्रभु सेव री माई॥ ॥व०॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व चंद प्रभु प्रणमुं, सुविध शीतल श्रेयांस री माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंस री माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी पास जिनंद री माई ॥ चोवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा नंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ ॥ मह सम सूधा साधु नमुं नित ॥ ए देशी ॥

नित २ अतीत चोवीसी नमियै, जेहना नांम प्रगट ए जांण ॥ केवलग्यानी ते निरबांणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥ ॥ नि० ॥ सर्वानुभूति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वा मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नांम ॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कृतारथ, श्रीजिनेसर सुद्धम

ति सुजगीस, सिवकर स्यंदन संप्रति नांमे, वंदीजे जिनवर चोवीस ॥ ६ ॥ नि० ॥

॥ ढाल ३ ॥ सफल संसारनी ॥

जे ज्नविस्संतिश्रणागए काल ए तेह चौविस प्रणमीस त्रिहुं काल ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनान्न प्रणमीस सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नांम सुपास ए, हुसी जिन बीय सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत उदाइ नरिंद ए, तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोहलो साध ए, चोथो स्वयंप्रन्न नांम आराधि ए ॥ दृढायुष जीव सिद्धांतमें जाणियै, पंचम सर्वानुन्नूति प्रमांणिये ॥ ३ ॥ कीर्त्ति इण नाम इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते उठो स्वांमि सलहीजियै ॥ संख श्रावक हुस्यै उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पेढाल जिन आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोट्टल जिणं, सतक श्रावक शतकीर्त्ति दसमो न्नणूं ॥ देवकीजीव मुनिसुव्रत इग्यारमो, सत्यकीजीव ते अमम जिन बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव निकषाय जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो ॥ पनरमो निरमम देव सुलसा कही, रोहणीजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥ समाध जिन सतरमो श्रावका रेवती, अढारमो शतालजीव संवर जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर उगणीसमो, कृष्णकोइजीव ते विजय जिन वीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीसमो जीव नारदतणो, देव बावीसमो अंबड श्रावक न्नणुं ॥ तेवीसमो अमरजीव अनंतवीरज नमो, स्वातबुधजीव ते न्नइ चोवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगाम चोवीस जिन जांणिया, प्रवचन सारउद्धारथी आंणिया ॥ केइ परसिद्ध ने केइ अप्रसिद्ध कह्या, साख्य अनुसारथी साच कर सरदह्या ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३ ॥ आजनिहेजो रे दीसे नाहालो ए देशी ॥

विहरमान जिन वीसे वंदिये, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर युगमंधिर वाहुजी, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु ऋषभानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रधर चंद्रानन चंद्रवाहुजी, भुजंग ईश्वर नेमि भाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महा भद्र नमुं वली, देवयसा यसोरिद्ध अढीद्वीपमे विचरे आज ए, नांम लियां नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजिये ॥ ए देशी ॥

च्यार तीर्थंकर सासता, इणहिज अभिधान ॥ ऋषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमान ॥ च्यार० ॥ ९ ॥ अठ कोडि छप्पन्न लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे ब्यासी देहरा, त्रिहुं लोक मझार ॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोडिया, बिंब त्रेपन लाख ॥ सहस अठावीस च्यारसै, अठयासी भाख ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ विभू जिणवर नांम ए, समरया सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, सम कित सुद्ध थाय ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम त्रिण चोवीसी वीस विहरमांण चउ जिणवर सासता, संथुणया सतरैसे बयाले अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंता मणितणो पर प्रबल वंछित पूर ए, प्रइसमै त्रिकरण शुद्ध प्रणमै सदा जिनचंद्र सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री छिन्नूं जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिझाय लि० ॥

जग चूडामणिभूउ, उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलउ ॥ एगो लोगाइच्चो, एगो चरकू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवच्छरमुसभ जिणो, छम्मासे वद्धमाण जिणचंदो ॥ इइ विहरिया निरसणा, जएँ जाएँ उव माणेणं ॥ २ ॥ जइता तिलोयनाहो, विसहइ वहुयाइं असरिसजण

णस्स ॥ इय जीयंतकराई, एस खमा सव्वसाहूणं ॥ ॥ ३ ॥ न चइ
जइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहिं
वि,मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ जहो विणीय विणउ, पढम
गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमत्थं; विम्हिय हियउ
सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इछंति ॥
इय गुरुजण मुह जणियं, कयंजलिउडेहिं सोयव्वं ॥ ६ ॥ जह
सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जहय पयाण
नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न
पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउ काउं, विहरंति मुणी
तहा सोवि ॥ ८ ॥ पडिरूवो तेयस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को
॥ गंजीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिउ ॥ ए ॥ अपरिस्सावी
सोमो, संगहसीलो अजिग्गहमई य ॥ अविकछणो अचवलो, पसं
तहियउ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं
पहं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥
अणुगम्मए जगवई, रायसुयज्जा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करे इ
माणं, परिय छइ तं तहा नूणं १२ ॥ दिण दिखियस्स दमग, स्स
अजिमुहा अज्जचंदणा अज्जा ॥ नेछइ आसणगहणं, सो विणउ सव्व
अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिखियाए, अज्जाए अज्जदिखिउ साहू ॥
अजिगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो
पुरिसप्पजवो, पुरिसव रदेसिउ पुरिसजिठो ॥ लोएवि पहू पुरिसो,
किंपुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्ससरस्सो, तश्या वाणा-
रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥
तह वि य सारायसिरी, उल्लहंती न ताइया ताहिं ॥ उयरछिएण
इक्के, ण ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, म
ज्जाउ इह समत्त घरसारो ॥ रायपुरिसेहिं निज्जइ, जणेवि पुरिसो,

जहिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सक्खियं सुकयं ॥ इह भरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिओ मिअहं ॥ उम्मग्गेण पडंतं, रक्खइ राया जणवउ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहठ्ठिओ अप्पसक्खिओ धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण भावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायविज्झडिओ ॥ संवच्छरमणसीओ, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिं, तिएण सच्छंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीओ गव्विओ निरवणामो ॥ साहुजणस्स गरहिओ, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारु व्वकेइ बुज्झंति ॥ देहे खणपरिहाणी, जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण वासीवि परिवडंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥ ॥ २८ ॥ कहतं भन्नइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स दुक्खमल्लियइ ॥ जं च मरण वसाणे, भव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सहस्सेहिं, बोहिज्जंतो न बुज्झई कोई ॥ जह बंभदत्तराया, उदाइनिव मारउ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिचत्ताइ रायलच्छीए ॥ जीवा सकम्म कलिमल, भरिय भरातो पडंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तूणवि जीवाणं, सदुक्कराइं ति पावचरियाइं ॥ भयवंजा सा सा सा, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पडिवज्जिऊण दोसे, नियए सम्मं च पायवडियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिज्झा० ॥

॥ अथ राईसंथारा पोसह सिचाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥ महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिभंते ३, कहियें. अणुजाणह जि हिज्जा, अणुजाणह परमगुरु, गुणगणरयणेहिं मंमिअसरीरा ॥ बहु पमिपुन्ना पोरिसि, राईसंथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुम पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, नवट्टंतेय काय पमिलेहा ॥ दवाई नवनुगं, ऊसासनिरुंभणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सवं तिविहेण वोसिरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा भरकाण परपरीवाउ ॥ अरइ रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिछत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइंमु, स्कम ग्ग संसग्ग विग्घ भूआई ॥ डुग्गइनिबंधणाइं, अठारस पावठाणाइं ॥ ६ ॥ एगो हं नत्थिमे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीण मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासउ अप्पा, नाण दंसणसंजुउ ॥ सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलरकणा ॥ ॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुरकपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संबंधं, सवं तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पन्नतो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ च त्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पव ज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि॥ अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया ॥ अरिहंता कित्तिअत्ता णं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ सिद्धा य मज्झ

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ २ ॥ आ यरिया मंगलं मज्झ, आयरिया मज्झ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवझाया मंगलं मझ, उवझाया मझ देवया ॥ उवझायां कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ सा हूणो मंगलं मझ, साहूणो मझ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किके सत्त जोणि लरकाउ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लरकाउ ॥ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ ति रिएसु हुंति चउरो, चउदस लरका यमणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मझं न केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमा विअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धहसाख आलोयणह, मझह वेर न भाव ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदह राज भमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मझवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति संथारा गाथा स० ॥

॥ अथ निंदावारक सझाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमा बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊ जला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणें सहु भरयां रे, केहनां नलीयां चुए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेम छुटकबारो थाय रे, ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिष्झाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, झाली झाल अपार रे ॥ सु जाणे सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खिरअङ्गार रे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करें सीतासती रे लाल ॥ शील तणे परि माण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक पासें आय रे ॥ सु० ॥ ऊभी जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, ऊभा करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ भस्म हुशी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव बिन वांछयो हुवे रे लाल, सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुझ अगन प्रजालजो रे लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आग में रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें द्रह जलशुं भरयो रे लाल, झीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें ऊतरी रे लाल, साख भरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत स हुको थयां रे लाल, सघले थया नवरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग मांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ क हे जिन हर्ष सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥ ॥ ९ ॥ इति सीतासती सिष्झाय समाप्त ॥

॥ अथ अनाथी रुषि सिझाय ॥

॥ श्रेणिक रयवाडी चढयो, पेखियो मुनी एकंत ॥ वर रूपकाते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए आंकणी ॥ इण कोसंबी नगरी वसे, मुझ पिता परि गल धन्न ॥ परवार परें परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इक दिवस मुझ वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु जूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मन उरडी, उरडी अबला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, नहिं कीधी रे मोरडी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बुलाइया, कीधला कोडी उपाय ॥ बावना चंदन लेईया, पण तोही रे दाह नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुझ उपशमे, तो लेउं संजमभार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥ ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नहिं, ते भणी हुं रे अनाथ॥ वीतरागनो धरम बाहरो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ॥ ७ ॥ कर जोडी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रेणिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचे रे सरग मझार ॥ श्रे० ॥ ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोडी ॥ गणि समय सुंदर तेहना, पाय वांदे रे बे कर जोडी ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिझाय ॥

॥ कर पडिक्कमणो भावसुं, दोय घडी शुभ ध्यान ॥ लाल रे ॥ परभव जाता जीवनें, संबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥ कर पडिकमणु भावशुं ॥ ए आंकणी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रेणिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंडी सोना तणी, दीये दिन प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते वली, एम

दीये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसत्थो, भलुं वंदन दोय दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संभारो रे आपणां, ते भव कर्म निवार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर काउसग्ग शुभध्यानथी, पच्चखाण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सध्या यें तें वली, टालो टालो अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, लहीयें अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिझाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह उठीने समरिजें हो ॥ भवियण मंगलिक सरणां चार ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ भ० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियमें राखिजें हो ॥ भ० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणी हो ॥ भ० ॥ केवलि भांख्यो धर्म ॥ ए चारू जपतां थकां हो ॥ भ० ॥ टूटे आठुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारूं सुखकारि हो ॥ भ० ॥ ए चारू मङ्गलिक ॥ ए चारूं उत्तम कह्यां हो ॥ भ० ॥ ए चारूं तहतीक हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटें चालतां हो ॥ भ० ॥ समरुं वारं वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ भ० ॥ विघन निवारणहार ॥ ॥ हि० ॥ ४ ॥ झाकण साकण भूतमां हो ॥ भ० ॥ सिंह चिताने सूर ॥ वैरी डुसन चोरटा हो ॥ भ० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥ ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ भ० ॥ जे ध्यावे नरनार ॥ पर भव जातां जीवने हो ॥ भ० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ राखो सरणाकी आसता हो ॥ भ० ॥ नेमो नहिं आवे रोग ॥ वरतें आनंद सुख सही हो ॥ भ० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥ निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ भ० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी नहिं कोइ वस्तुनी हो ॥ भ० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोड़ कल्याण ॥ शुद्ध मनें करी समरता हो ॥ ज० ॥ निश्चे पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥ ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सरणाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनह मझार ॥ हि० ॥ ॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥ जोधमल्ल इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

## ॥ अथ सिझाय संग्रह लिख्यते ॥

### ॥ ढंढण रुषीनी सझाय ॥

॥ ढंढण ऋषिजीने वंदना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हूंवारी लाल, अभिग्रह लीधो एहवो हुं० ॥ लेस्युं शुद्ध आहार रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हुं० ॥ न मिले शुद्ध आहार रे ॥ हुंवा० मूल न लै अणसूझतो हुं० ॥ पंजर कीधो गात रे हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरि पूछे श्रीनेमने हूं०, मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुंवा० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हुं० ॥ मुझनें कहो विचार रे ॥ हूंवा० ॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढण अधिको दाखियो हुं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद रे हूंवा० ॥ कृष्ण ऊमाह्यो वांदवा हुं० ॥ धन जादव कुलचंद रे हूंवा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर मिल्या हुं०, वांद्या कृष्ण नरेस रे हूंवा० ॥ किणही मिथ्यात्वी देखने हुं०, आएयो भाव विसेसरे हुं० ॥५॥ ढं० ॥ मुझ घर आवो साधजी हुं०, ल्यो मोदक छै शुद्धरे हूं० ॥ मुनिवर विहरीने पांगुरया हुं०, आया प्रभुजीने पास रे हुं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥ मुझ लबधे मोदक मिल्या हुं०, कहोने तुम्हे किरपाल रे हुं० ॥ लबध नही वछ ताहरी हूं०, श्रीपति लबधिनिधान रे हूं० ॥ ७ ॥ ढं० ॥ ए लेवा जुगतो नही हुं०, ल्याव्यां परठ-

न काज रे हुं० ॥ इंट निवा हे जायने हुं० चूरे करम समाज रे हुं० ॥ ८ ॥ ढं०॥ आंणी चढती भावना हुं०, पांम्यो केवल नाण रे हुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगते गया हुं०, कहे जिनहर्ष सुजाण रे हुं० ॥ ए ॥ ढं० ॥ इति ढंढण ऋषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नाऋषी सिझाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन, मनमें तो मांनी रे नंदन ताहरे ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना, धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो ममतो रे किम परचावसुं ॥ २ ॥ दस दिसी दीसे रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अनुमति देतां रे जीभ वहे नही ॥ ३ ॥ बत्तीसै नारी हो धन्ना, अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो०॥ गजगति चाले रे चाल सुहावणी॥५॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो०॥ कोरू बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, वय पिण जांणो मो० ॥ भोगवि लेज्यो रे भोग सुहामणो ॥ ७ ॥ व्रत अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही छे रे साधु कहावणो ॥ ८ ॥ घर२ भिक्षा हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा मो० ॥कहाणी रे रहणी नही छे सारखी ॥ ए ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आगम भणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुकर जोग छे ॥ १० ॥ वनवासे रहणा हो धन्ना, परीसह सहणो मो० ॥ कोमल केसा रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें भाख्यो हे अम्मा, झूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो॥१२॥ सुख अभिलाषी हे अम्मा, झूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग जननी दाखियो॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमारथि मोरी अम्मा, वीर वखाण्यो परखदा सहु सुण्यो ॥ १४ ॥

में इम जाण्यो हे अम्मा, वीर वखाण्यो मोरी अम्मा, ए धन जो-वन आयु थिर नही॥१५॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजे मोरी अम्मा, जो खिण जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अनमति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो रे मनमां गहगही ॥ १७ ॥ छठ पारणे हे अम्मा, विगय निवारण मोरी अम्मा, वीर वखाण्यो सुरनर आगलै ॥ १८ ॥ सुख संजम पाले हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ रूडा जाणै ॥ १९ ॥ संजम पाळ्यो हे अम्मा, नव पखवारे मोरी अम्मा, मास संथारे सरवारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना ऋषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिझाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सबला ॥ करम तणे वस सुख दुख पाया, सबल हुआ महा निबला रे प्राणी, कर्म समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरस दिवस रह्या भूखा ॥ वीरने बारे वरस दुख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूखे रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सहस सुत मारया एकण दिन, जोध जुवान नर जैसा ॥ सगर दुखे महा पूत्रनो दुखियो, कर्मतणा फल एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सहस देसांरो साहिब, चक्री सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्मे कीयो तनु छार रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्मे ह ल किया हरचंदने, वेची सुतारा रांणी ॥ बारे वरस लग [illegible] आण्यो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ५ ॥ दधिवाहन राजा[illegible] बेटी, चावी चंदनबाला ॥ चौपद ज्यूं चहुटामें वेची, करम [illegible] ला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संभूम नांमे आठमो चक्री, कर्मे [illegible] नारुयो ॥ सोले [illegible] जक्क जन्ना देखे, पिण किणही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे

बारमो चक्री, कर्मैं कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो जविप्राणी, कर्म्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ उपन्न कोम जा दवरो लाहिब, कृष्ण महाबल जांणी ॥ अटवी मांहि मूंत एकलमो, विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥ पांमव पांच महा जूआरा, हारी द्रोपदा नारी ॥ बारे बरस लग बन रूवमिया, ज मिया जेम निख्यारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ बीस जुजा दस मस्तक हूंता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलमै जग सहु नर जीत्या, ते पिण कर्म्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म्म प्रमाणे सुख दुख पांम्या, वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कर्म धकाया ॥ करमसुं जोर न किसका रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ सतिय सिरोमणी द्रौपदि कहिये, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हुइ ते नारी, पूरब कर्म्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आन्नानगरीनो जे स्वामी, साचो राजा चंद ॥ मांइ कीधो पंखी कूकमो, कर्म्मै नाख्यो ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, करता पुरुष कहावै ॥ अहनिस महिल मसांणमे वासो, जिक्षा जो जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी, रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंम्या नर करमें, जांज्या ते पिण साजा ॥ रुद्धिहरष कर जोमीने विनवै, नमो २ कर्म्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म्म सिझाय सं० ॥

॥ अथ सात विसनकी सिझाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेहनो सुविचार विवेकी ॥ सात नरकना रे जाइ सातेई, आपै दुख अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन परूयांथकां, पाण्डव पांच प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने पड्यो, खोइ सहू रा जरिद्ध वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस जक्षण अवगुण घणा, करै पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवती, नरक गइ निरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पांन विसन तजी, चित धरी वलि चाह वि० ॥ द्वीपायण रिषि दहव्यो जा दवे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने वे स्याघर वसै, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आहेडे कुविसन साचवै, प्राणी हणियें प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो पहली नरक मझार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ छठे चोरीने विसने करी, जीव लहे डुख जोर वि० ॥ मुंजदेव रा जायें मारियो, चावो हुंडक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥ इम जांणीने जव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण जव परजव आणंद अतिघणा, कहे धर्मसी सुखकार ॥ वि० ॥ ॥ सा० ॥ ए ॥ इति सात विसनकी सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिझाय लिख्यते ॥

वीर वांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीठो रे निग्रंथ॥राति वन मांहि काउसग्ग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जांण ॥ चेडाराजानी साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमांण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत शृंगार सबलो पडे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमे वस्यो जी ॥ सौडि बाहर रह्यो हाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ झबक जागी

कहे चेलणा जी, किम करतो हुस्यै तेह ॥ कुसती मनमाहि ए कुण वस्यो जो ॥ श्रेणिक पछ्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउर परो जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ भगवंत सांसो भाजियो जो, चमकियो चित्त तरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकां जी, पैसतां नगर मझार ॥ धुंआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे अभयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, व्रत लियो अभयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो भवतणो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिझाय ॥

॥ भूलो मनभमरा कांइ भमै, भमियो दिवस ते रात ॥ मायारो लोभी प्रांणियो, भमियो परमल जात ॥ १ ॥ भू० ॥ कुंभ काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन्न ॥ विणसतां वार लागे नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ भू० ॥ केहना छोरू केहना वाछरू, केहना माय नैं बाप ॥ ऊ जीव जासी एकलो, साथे पुन्य नैं पाप ॥ ३ ॥ भू० ॥ आस्या तो डूंगर जेवडी, मरवो पगला रे हेठ ॥ धन संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ भू० ॥ लखपति छत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करो गोखे बेठता, भए जल बल राख ॥ ५ ॥ भू० ॥ भवसायरजल दुख भरयो, तिरवो छे रे जेह ॥ बीचमें बीह सबलो अछै, करमें वाय ने मेह ॥ ६ ॥ भू० ॥ उलट नही मारग चालवो, जायवो पहिले रे पार ॥ आगल नहि हट वांणियो ॥ संबल लेज्यो रे लार ॥ ७ ॥ भू० मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो हतो न थाय ॥ वस्त्र विना जाय पोढवो, लखपति लाकड माय ॥ ८ ॥ भू० ॥ मह मंद कहे वस्त वोरीयै, जे कुछ आवे रे साथ ॥ अपणो लाभ उवारियै, लेखो लाहिब हाथ ॥ भू० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिझाय ॥

॥ राजंतणा अति लोभिया, भरत बाहूबल झूझे रे ॥ मूंठ उपाडी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूझे रे ॥ १ ॥ वीरा म्हारा गजथकी ऊतरो, ब्राह्मी सुंदरी भासै रे ॥ ऋषभ जिनेसर मोकली, बाहूबलनें पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढ्यां केवल न होई रे ॥ वी० ॥ २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, वलि आयो अभिमांनो रे ॥ लघु बांधव वांदू नही, काउसग्ग रह्यो शुभ ध्यानो रे ॥ ३ ॥ वी० ॥ वरस दिवस काउसग्ग रह्यो, वेलडियां वींटाणो रे ॥ पंखी माला मांडिया, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी वचन सुण्या इसा, चमक्यो चित्त मझारो रे ॥ हय गय रथ मैं परिहरया, पिण नवि मूंक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मन वालियो, मूंक्यो निज अभिमांनो रे ॥ पांव उपाडी वांदिवा, ऊपनो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखदा, बाहूबल ऋषिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर वंदे पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिझाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाझे सीसो जी ॥ पाय उवराणा रे वेलू परजलै, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर० १ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्यूं, ऊभो गोखने हेठे जी ॥ खरै दुपहरै रे दीठो एकलो, मोही माननी मीठे जी ॥ २ ॥ अ० ॥ वयण रंगीले रे नयणे वेधियो, ऋषि थंभ्यो तिण वारो जी ॥ दासीने कहे जाय ऊतावली, उ रिषि तेडी आंणो जी ॥ ३ ॥ अ० पावन कीजे ऋषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी ॥ नवजोबन रस काया कांइ दहो, सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ अ० ॥ चंद्रावदनी रे चारित चूकव्यो, सुख विलसै दिन रातो

जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगठै, तब दीठो निज मातौ जी ॥ ५ ॥ अ० अरणक२ करती माय फिरे, गलियैर२ मझारो जी ॥ कहि किण दीठो रे माहरो अरणको, पूछै लोक हजारो जी ॥ ६ ॥ अ० ॥ उतर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिवारो जी ॥ धिग्२ पापी रे माहरा जीवने, एह मैं अकारज धारयो जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिला उपरै, अरणक अणसण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू, मन वंछित फल लीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिझाय लिख्यते ॥

नांम इलापुत्र जांणिये, धनदत्तसेठनो पूत॥नटवी देखी रे मोहियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न छूटे रे प्राणिया, पूरब नेह विकार ॥ निज कुल छंडी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥ ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आया रे नाचवा, ऊंचो वंस विवेक॥ तिहां राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय पग पहरी रे पावडी, वस चढयो गजगेल॥ निराधारा ऊपर नाचतो, खेले नवनवा खेल ॥क०॥४॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर साद ॥ पायतल घूघर घमघमै, गाजै अंबर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥ तिहां राय चिंते रे राजियौ, लुबधो नटवी रे साथ ॥ जो पडै नटवो रे नाचतो, तो नटवी मुझ हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दांन न आपै रे भूपती, नट जांणे नृप वात ॥ हूं धन वंछू रे रायनो, राय वंछै मुझ घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियौ, धन२ साधु नीराग ॥ धिग्२ विषया रे जीवडा, मन आण्यो वैराग ॥ क० ॥ ॥ ८ ॥ संवरभावै रे केवली, ततखिण कर्म खपाय॥ केवलि महिमा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिझाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वैरागीयौ जी, ए संसार असार रे मायडी ॥ अनुमति द्यो मुझ आज ॥ संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वछ तूं केणे भोलव्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ कयौ किण दूहव्यो रे, हूं नवि द्युं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरवाहिस भार रे जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुल्यो जी, सहिया दुख अणंत ॥ सासोश्वासें भव पूरीया जी, तेह न जांणू अंत हे ॥ ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणा तूं बालक अछे जी, जोवन भरयों रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, भोगवि सुख अपार रे जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, दुख न सहणौ जाय ॥ वीरजिणंद वखाणियो जी, ते मैं सुणियौ कांन हे मायडी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वछ कांछलीये जीमणो जी ॥ अरस विरस आहार ॥ भुंइ पाला नित हींडणो जी; जाणसि तुझ कुमार रे जाया॥ हूं न० ॥ ६ ॥ भमतां जीव अनंत भम्यो जी, धर्म दुहेलो होय ॥ जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायडी ॥ ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोडे नवसर हार ॥ जोबनभर छोरू नहीं जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥ ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजडी जी, रूप रमणि रस भोग ॥ अतहि सुंहाली देहडी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥ ॥ ए ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरथ पखे सहु कोय ॥ विषय विषम महुरा कह्या जी, किम भोगविये सोय हे मायडी ॥ अ० ॥ १० ॥ खमिश मात पसाय करी जी, मैं दीधुं तुझ दुख ॥ दिउ आदेस जिम हुं सुखी जी, वीर चरणें ल्युं दीख हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥ तन फाटे लोयण झरे जी, दुख न सहणा जाइ ॥ वछ सुखी हुओ

तिम करो जी, मैं दीधो आदेस रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १२ ॥ मणि मांणक मोती तजया जी, तोड्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी आठै रूये जी, हिव अह्म कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥ कुमर भणै सुकुली प्रिया जी, बहु दुख ए संसार ॥ नेह तुमारो जांणियो जी, जो ल्यो संयमभार रे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथ सिविका तब सझी करी जी, कुंवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय उछव करै जी, चारित्र ल्यो रिषिराय रे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इम जांणी वैरागियो जी, वरजै जे नर नारि ॥ करजोडी पूनो भणे जी, ते तरस्यै संसार हे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिझाइ निर्णय सिझाय ॥

श्रावण काती मिगसर मास, पहिली पडवा तीन विमास ॥ चौथी पडवा वदि वैसाख, च्यार पुहर असिझाइ भाख ॥ १ ॥ जां लगि होली झड़े वार, धुंवर पडती हुवै जिवार ॥ जां परचक्रनो भय नवि जाय, तां लग असिझाई कहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने केस पाखांण, वरसै तां लग असिझाई जांण ॥ झूझे मल्ल मांहोमांहि जांम, तां लग असिझाई तिण ठांम ॥ ३ ॥ नृपति परभव पोहतो होय, जां लग पाट न बैसै कोइ ॥ तां लग बोली छै असिझाइ, सहुको सरदहज्यो मन मांहि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एक पोहर असिझाई थाय ॥ निवल मेह तिम जांणो सही, आठ पहोर सबल जल कही ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम दिनथकी, पडिवा लग असिझाइ वकी ॥ पडिवा बीज तीज चांदणी, समीसांझ असिझाई गिणी ॥ ६ ॥ आद्रा नक्षत्र न लागै जांम, गाज वीज असिझाइ ताम ॥ गाज वीज जो हुवे अकाल, असिझाइ बे पुहर संभाल ॥ ७ ॥ चंद्रग्रहण असिझाई भणी, बारह पोहर उत्कृष्टी गिणी ॥ जघन्य प्रकारै आठ विचार, सूर्यग्रहण पोहर जघन्यै बार ॥ ८ ॥ सोल प्रहर उत्कृष्टी कही,

सुगुरु मुखे त्नविषण सरदही ॥ नगर प्रधान मरे जो कोइ, आठ पुहर असिझाई होय ॥ए॥ वसतीथकी सातां घर मांहि, नर विहमै अहोरति असिझाई ॥ पुरुष पड्यो होय मृतकअनाथ, तां असिझाय कही सो हाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणे प्रसवे दिन सात, बेटी आठ दिवस विख्यात ॥ सो कर मांहि कही असिझाई, नारी ऋतु दिन तीन कहाइ ॥ ११ ॥ इंमो फूटै प्रसवै गाइ, जां जर रुधिर पमै तिन ठाइ ॥ असिझाइ सो कर मांहि, त्रिएह पोहर के ऊपर नही॥१२॥ असाढे चौमासे दिने, पमिकमणा ठायांथी गिणे ॥ बार पोहर असिझाई कही, काती चौमासे इण परि सही ॥ १३ ॥ इण पर असिझाई छे बहू, गीतारथ गुरु जांणै सहू ॥ सांजलि ए मैं कही संखेवि, हरखै पय प्रजू कीजै हेवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतकर जेह, च्यार मावठबीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग बीअं अक्षरै, तब कवि नांम कहियो इण परै ॥ ॥ १५ ॥ इति असिझाइ सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिझाय लिख्यते ॥

जिनशासन रे सूधी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व ए निरता करो ॥ मिथ्यामत रे कुमति कदाग्रह परिहरौ, सहि पालों रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित शुद्ध पालौ, टालो दोष दया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत, च्यार सिक्षाव्रत धरौ ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो त्नवि यण मनरली ॥ दाखविए गुण परह केरा, दोष सम काढौ वली ॥ ॥ २ ॥ मम काढो रे लोत्नी नर कूमौ करौ, जांणी सावद्य रे अत्नक बावीसे परिहरौ ॥ वम पींपल रे पिलखण नें कठुंबरो, ऊंबरफल रे रखे तुमें त्नक्षण करो ॥ ३ ॥ उल्लालो ॥ रखे तुमें त्नक्षण करौ मांखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम करहा ठंमि परहा, दोष मूल माटी घणो ॥ परिहरो सज्ञान र

यणीभोजन, प्रथम दुरगति बारणौं ॥ मम करौ व्यालू अति अ सूरौ, रविउदय विन पारणो ॥ ४ ॥ अथाणो रे अनंतकाय सब नाम ए, काचागोरस रे मांहि कठोल न जिमिये ॥ एह वेंगण रे तुछ फला सवि छांड ए, आपणपूं रे व्रत लीधो नविखंड ए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंडए व्रत नियम लेइ, बेइ फल व्रत भंगनौं ॥ अज्ञात फल बहुबीज भोजन, चलित रस होय जेहनो ॥ संवर आणी अभक्ष ग्यानी, तजो ए बावीस ए ॥ गुरु वयण विगतैं वली पूछयौ, अनंतकाय बत्तीस ए ॥ ६ ॥ अनंती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु भक्षण रे पातिक बोल्या छै बहू ॥ कचूरौ रे हलदनीली आदूं वली ॥ वजचूरण रे कंद बहूं कुंवलीफली॥७॥तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली बीज पाखै, चाखै चतुर नर आंविलो ॥ रतालू पिंडालू थेग थोहर, सतावरी लसण कुली ॥ गाजर मूला गिलौ रींगण विरहाली टुकवछुलौ, पल्यंक सूरण वाल वीली मौथ नीली सांभलौ ॥ ८ ॥ वंसकारेला रे कूंपल कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी रे भमरवृक्षनी बालडी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलडी ॥ ६ ॥ वेलडी तानु ताजा खिलोडा ने खरसुआ, भूय भूंफोडा छत्रा कार जांणौं नील फल सेवे जूआ ॥ बत्तीस बोल प्रसिद्ध बोल्या लक्ष्मीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी ते सवि सुख लहे ॥ २० ॥ इति बावीस अभक्ष सिझाय सं०॥

॥ अथ गजसुकमाल सिझाय ॥

॥ संवेगरसमे झीलता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोहग टलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १॥ यादवराय धनश गजसुक माल, तेहने करूं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आंकणी ॥ प्रभू पास संयम आदर्यौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ २ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जावा अलजयो, परूषैन दिन दस वीस ॥ साहसीक इम उच्चरतो, पिण दिन जावे रे तो छेह दीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाय काउसग्ग रह्यौ, तिण सांझि प्रभुने पूछ ॥ मुनिवर अवर इम चिंतवे, एहनैं साची रै छै मुंह मूंछ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुझ सुता विन अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगड़ी रचि सिर ऊपरै, चिहुं दिसि बांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अधिक वधै, तिम वधै मन परिणांम ॥ चवदमें गुणठाणें चढयो, मुनिवर पांमी रे केवलग्यांन ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जांमणने थई, ते रयण वरस हजार ॥ वांदवा आवी प्रह समें, पिण नवि देखे रे प्रांणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूछतां प्रभु मांडी करी, रातिनी वीतग वात ॥ हरि देखी हियडो फूटसी, तेणें कीधो रे ऋषिजीनो घात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पांमियो अविचलराज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रष्णचंद्र सिझाय ॥

॥ राज छंडी रलियामणो रे, जांणी अथिर संसार ॥ वैरागे मन वालियो, कांइ लीधो संजम भार ॥ प्रष्णचंद प्रणमूं तुमारा पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे काउसग्ग रह्यो रे, पग ऊंपर पग ठाय ॥ बांह बेउं ऊंची करी, सूरज सांमी दृष्टी लगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, वीरजीने वंदन जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविध२ खमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ दुरमुख दूत वचन सुणी रे, कोप चढयो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मांडियो, जीव पड्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूछियो रे, एहनी सी गति थाय ॥ भगवंत कहे हिवणां मरे तो, सातमी नरके जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंते पूछियो रे, सरवारथसिद्धि वि

मान ॥ वाजी देवनी दुंदुभी, मुनि पांम्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥ ॥ ६ ॥ प्रषणचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावीरना शिष्य ॥रिद्धहरष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक्ष ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ उतपति सिझाय ॥

॥ उतपत जोय जीव आपणी, मनमांहि विमास ॥ गरभावासे जीवभो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नाभी तले, जिन वचने जोय॥ फूल तणी जिम नालिका, तिम नाभी छै दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥ आंबतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर श्रवे तिण मांसथी, ऋतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी, तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित दुरगंध ॥ तिण थानक तूं ऊपनो, हिव हूउ अंधमंध॥ उ० ॥ ५ ॥ नाभी वांसतणी भरियै घणी, रूयाल॥ ताती लोह सलाकतैं, जाले ततकाल॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, छै नव लख जीव ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजै नर नारी मिळ्यां, पांचेंद्री जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥ उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्ठो वार ॥ जीव जघन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ए ॥ जीव जघन्य तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ बार वरसनी थिति तिहां, उत्कृष्टी जांण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरभे कोइ जीवभो, जंपै जग दीस ॥ फिर नर आवंतो रहै, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥ महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरबीज ॥ पिचहत्तर वरसां पछै, थाये पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूखै नर वसै, तिम वांमे नारि ॥ बीच नपुंसक जांणिये, जिनवचन विचार ॥ १३ ॥ उ० ॥ हिव सामान्यपणै इहां, आयो गरभावास ॥ सात

दिना उपरि रहे, नर गत नव मास ॥ उ० ॥ १४ ॥ आठ व रस तिर्यंच रहे, उत्कृष्टे काल ॥ गरनावासै जोगव्या, इम बहु जंजाल ॥ उ० ॥ १५ ॥ कार्मण काये कर लियो, पहिलो आहार ॥ शुक्र अने स्रोणिततणो, नही रूड लिगार ॥ उ० ॥ १६ ॥ पर- जापत पूरी नही, तिहां विसवावीस ॥ तिण आहारै तूं थयो, उदा रिक मीस ॥ उ० ॥ १७ ॥ पवन अछै उदरै तिको, उपजावै अंग ॥ अगनि करै थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८ ॥ उ० ॥ कठन पणै पृथवी रचै, अवगाह अकास ॥ पांचनूत सरीरमें, इम करै प्र कास ॥ १९ ॥ उ० ॥ बारै महुरत तां पछै, विलसै नर नारि ॥ गर नतणी उतपति तिहां, नहीं अवर प्रकार ॥ २० ॥ उ० ॥ कलल हु वे दिन सातमें, अरवुद दिन सात ॥ अरवुदथी पेसी वधै, घन मांस कहात ॥ २१ ॥ उ० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अमतालीस टांक ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २२ ॥ उ० ॥ सु थिर मास बीजे हुवै, हिव तीजे मास ॥ करमतणै वसि ऊपजै, मा- ता मन आस ॥ २३ ॥ उ० ॥ चोथै मासै मातना, प्रणमै सहु अं ग ॥ हाथ अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४ ॥ उ० ॥ पि त्त रुधिर छठे पमै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसै, पे सी सय पंच ॥ २५ ॥ उ० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोमि ॥ ऊपजे ऊणै केतलै, इम आगम जोमि ॥ २६ ॥ उ० ॥ आठमें मा सें नीपनो, इम सकल सरीर ॥ ऊंघै सिर वेदन सहे, जंपै जिन वीर ॥ ॥ २७ ॥ उ० ॥ सोणित शुक्र सलेषमा, लघु ने वमनीत ॥ वात पित्त कफ गरनथी, थाये नर नीत ॥ २८ ॥ उ० ॥ मात तणी सूंटि लगे, बालकनो नाल ॥ रस आहार करे तिहां, आवे ततकाल ॥ उ० ॥ २९ ॥ जननी ल्ये आहारते, जाय नामोनाम ॥ रोम इंद्री नख चस वधे, तिम मीजी ने हाथ ॥ उ० ॥ ३० ॥ सवहू अंगे ऊल

स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार करे नही, गरभै सुविचार ॥
॥ उ० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किण जीवने, थाये ज्ञान विभं
ग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिण ज्ञान प्रसंग ॥उ० ॥ ३२ ॥
कटक करे वैक्रियपणें, जूजी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी
करी, मरी सुर विण थाय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ ऊंधै मुख गोडा
हिये, सहितो बहु पीड ॥ दृष्टि आगलि बेहुं हाथसुं, रहे मुठी
भींच ॥ उ० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जलादिकै, ऊपजै आ
धांन ॥ अथवा विहुं नारी मिल्यां, कह्यो गरभविधान ॥ उ० ॥
॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवै, देखी दुखावास ॥ पुन्य करी तिम
नीकलूं, नाउं गरभावास ॥उ०॥ ३६ ॥ ऊंठ कोडि चांपे सुई, कोइ
समकाल ॥ तिणथी गरभै अठ गुणो, सहे वेदन बाल ॥ उ० ॥
॥ ३७ ॥ माता दूखी दूखीयो, सुखणी सुख थाय ॥ माता सूती
ते सुवैं, परवस दिन जाय ॥ उ० ॥ ३८ ॥ गरभथकी दुख लख
गुणो, जांमें जिण वार ॥ जन्म थयां दुख वीसरै, धिग् २ मोह वि
कार ॥ उ० ॥३९॥ ऊपज्यो अशुचिपणे जिहां, मल मूत्र कलेस ॥
पिंड अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लवलेस ॥ उ० ॥ ४० ॥ तु
रत रुदन करतो थको, जांमें जिण वार ॥ मात पयोधर मुख ठवै,
पीयै दूध तिवार ॥ उ० ॥ ४१ ॥ दिन २ दीसे दीपतो, करै रंग अपा
र ॥ लाड कोड माता पिता, पूरै सुविचार ॥ उ० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र
इग्यारे नारिनें, नव नरने जांण ॥ रात दिवस वहिता रहै, चैतो चतुर
सुजाण ॥ ४३ ॥ उ० ॥ सात धातु साते त्वचा, है सातसै ना
डि ॥ नवसे नाडी पिंडमें, तिम तीनसे हाड ॥ ४४ ॥ उ० ॥ संधि
एकसो साठ है, सतोत्तर सो सम ॥ तीन दोष पेसी पांचसै,
ढांकी है चरम ॥ उ० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेसाब
सरीष ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ उ० ॥

॥ ४६ ॥ न० ॥ पित्त टांक चोसठ अछे, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्तीस सलेखमां, जाणै जगदीस ॥ ४७ ॥ न० ॥ इण परिमाणथकी यदा, ऊंबो अधिको थाय ॥ व्यापै रोग सरीरमें, नवि वाजे काय ॥ ॥ ४८ ॥ न० ॥ पोख्यो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खानैं पान नूषण नला, करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ न० ॥ हिव बीजैं दसके नएयो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजें दसकै तेहने, जाग्यो कांम विकार ॥ ५० ॥ न० ॥ जिण थांनक तूं ऊपनो, तिणमें मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोम्ह ऊपाय ॥ ५१ ॥ न० ॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें ससनेह ॥ बेटा बेटी पोतरा, परणावे तेह ॥ ५२ ॥ न० ॥ उठे दसके प्राणियो, बले परवस थाय ॥ जरा आइ जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥ न० ॥ आवे दसकै सातमें, हिव प्राणी तेह ॥ बल नागो बूढो थयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ न० ॥ आठमें दसके मोसलो, खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावे सिर धुणैं, करे फोगट वात ॥ ॥ ५५ ॥ न० ॥ नवमें दसके प्राणियो, तन सूकत जाय ॥ साले वचन वहुआंतणो, दिन ऊरता जाय ॥ ५६ ॥ न० ॥ खाटपड्यो खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाल हुकम हाले नही, दीयो परिजन छेह ॥ ५७ ॥ न० ॥ आंख गले वे पुम्ह मिले, पम्है मुंहम्हे लाल ॥ बेटा बेटी ने वहू, न करे सार संनाल ॥ ५८ ॥ न० ॥ दस दृष्टांते दोहिलो, लह्यो नरनव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो जिम नव पार ॥ ५९ ॥ न० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाले निरमल सील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥ न० ॥ कोम्हि रतन कवम्ही सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखैं पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ न० ॥ काया माया कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम

संसार ॥ ६१ ॥ ज० ॥ चवदे राज प्रमांण ए, छै लोक मईत ॥ जनम मरण कर फरसियो, ते वार अणंत ॥ ६२ ॥ ज० ॥ आप सवारथिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचतै, सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ ज० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगै, होय साहसधीर ॥ ॥ ६५ ॥ ज० ॥ आरज देस लह्यो हिवै, लाधो गुरु संयोग ॥ अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ ज० श्रीनमि रायतणी परैं, चेतो चितमांहि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ किणरो नांहि ॥ ६७ ॥ ज० ॥ भोग संयोग तजी सहू, थया जे अणगार ॥ धन१ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ ज० ॥ सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति वधे, कीजे तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ ज० ॥ तंडुलवेयाली अछै, एह नो अधिकार ॥ तिणथी उद्धरनें कह्यो, नही कूड लिगार ॥ ७० ॥ ज० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांभलि लिये संजमभार ए, वरि सिंह केरा सदा पाले नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख सकल भोगवि ते लहे भव पार ए, श्रीजिनहर्ष सुसीस रंगे इम कहे श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ ज० ॥ इति भतपति इकहत्तरी संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मनिंद्या लिख्यते ॥

हे आत्मा! हे चेतन! ए कुद्दष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें प्रवृत्ति, यह रसगृद्धीपणो, यह खोटे द्दष्टांत, सामायक दोय घडी मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें, कभो तूं मिश्रमोहनीमें, कभी तूं कामरागमें, कभी तो स्नेहरागमें, क्यारे तूं द्दष्टिरागमें, कभी तूं कुगुरुमें, कभी तूं कुदेवमें, कभी तुं कुधर्ममें, कभी ज्ञान विराधनामें, कभी दर्शन विराधनामें, कभी चारित्रविराधनामें, कभी मनोदंडमें, कभी व

चनदंरूमें, कन्नी कायदंरूमें, कन्नी हास्यमें, कन्नी रतिमें, कन्नी अरतिमें, कन्नी न्नयमें, कन्नी सोकमें, कन्नी डुगंगामें, कन्नो कृष्णलेस्यामें, कन्नी नीललेस्यामें, कन्नी कापोतलेस्यामें, कन्नी तुं ऋद्धिगारबमें, कन्नी तुं रसगारबमें, कन्नी तुं सातागारबमें, कन्नो तुं मायासल्यमें, कन्नी तूं नियाणासल्यमें, कन्नी तूं मिथ्यादर्शनसल्पमें, कन्नी तेरे तेरेकाठिया आय फिरता हे, कन्नी तेरे बाहिर कर अठारे पापस्थानक आय फिरता हे, रे तूं आत्मा महा डुष्टो, महा डुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुन्निया, अरे तूं हीणदृष्टी, अरे तूं अयोग्य कामका करणहार, रे तूं डुष्ट पापिष्ट जीव, प्रायें तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामांन, अनंतानुबंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोन्नरी चोकमो, विचारा तेरे खपा नही, गुणगणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा दाह तेरे मिटी नही, आकुल व्याकुलता तेरे मिटी नही, दरियाव जेसा कल्लोल तेरे उगल रहा हे, तें जो धर्मक्रिया करता हे सो शून्य मनसें करता हे, थीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें करी जो क्रिया सो राख पर लींपणे जेसा हे, अरे चेतन ! सोगन नही लेवे सो पापी, उर लेकर न्नांगे सो महापापी, तैं अनंतकाय, अन्नक्ष, शीलव्रत, जरदा, न्नांग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन लेकर खोटा किया, तेरा कहां बूटकबारा होगा, रे चेतन ! तें पुजलरे वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो हे, मेरे पारस पत्थर, मेरे नवनिधांन, मेरे रसकूंपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अमृतगुटको, वा देवताकूं वस करूं, बादस्याह हो जाउं, राजा हो जाउं, प्रधांन हाकम सेनापती हो जाउं, किसी तरे धन उपार्जन करूं, ये वाते तेरे हमेसां ऊपजै, इसमे गुणगणेवालेकेही लोन्नका त्याग नहीं, तो तेरी गरज तो केसें सरे, हे चेतन ! तूं मनमें विचारतो

है मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पुद्ग ल, अरे चेतन ! चोरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा, संसारमें न किसीका तुं हे, नहि कोइ तेरा हे, रे चेतन ! तूं तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणे, केइ वखत पूत्र पणे, केइ वखत पुत्रीपणें, किसी वखत स्त्रीपणें, जेसें ठगकी बेटी नें अपणी मांसे पूछा-माताजी में जो पाप करतीहूं सो कोण जो गेगा ? मा बोली—बेटी, करेगा सो भोगेगा, तबतो उसने कहा धिक् हे इस स्वारथियें संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म, आर्यदेस, आर्यकुल, श्रावकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका धर्म पुन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, उर पायकरके तेने ब्राह्मण जेसें क उएकूं उडाणे चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसें तें चिंतामणि रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ-डंबरी कुगुरुके उपदेससें चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म आज्ञाप्रमाण जो था सो तेनें खो दिया, अब तेरा निस्तारा केसें होय, विष्टामें कृमिपणें तें अनंती वार पेदा भया, मांनरूपी गज पर बाहूबल चढा उर संज्वलनमांन था, उर ब्राह्मी सुंदरी बहिना जैसी समझाणेवाली थी जब समझै, उर तेरे सो एसा मांन, अरे चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तूं भरतमाहाराजा जिणोंके केसीक राजऋद्धि सो केसीक भावना भावतां, धिःकार राज्यनें, धिः कार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्त्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोंकूं, धन्य श्रीतार्थंकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पालते हे, धन्य जो सर्वविरती धर्म पालते हें, धन्य जो दांन देते हे, धन्न जो सील पालते हें, धन्य जो तपस्या करते हें, धन्य जो भावना भाते हें, एसें भावना भावतें भरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन पाया, इस तरें रे जीव तूं उनोंकी बराबरी मतकर, वहतो तेसठ

सलाका पुरुष चौथै आरेका जीव तें पंचम कालका भरतक्षेत्र-का कीमा भनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जीववस्तु, जीवसें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों करै, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गिराया; इग्यारमें गुणठाणेका जीव भुवनभानु केवलीजी, कमलप्रभाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योकूं फिराय दिया; तो तेरी तो विसायतही क्या, आठ करम अठावनही प्रकती हे प्रभु केसें जीता जाय, मोहकर्म पीछै लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्र-की फोजमें रह सद्बोध मोहतेकी आज्ञामें रह सदागमसुं परिचय रख, संतोषगुण धार, तृष्णारूप दाहकूं पीछी मार, जेसेंतें तिर जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तोने गुप्ते गुप्ता, छकायका पीयर, सात महाभयका टालणहार, आठ मदका ज.प-क, नवविध ब्रह्मचर्यकी वाडका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका उजवालक, इग्यारे अंगका भणणेवाला, बारे उपांगका भणणेवाला, कुरकीसंबल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुनि प्रभूकी आज्ञा मुजब धर्म पाले, रे चेतन तुझै कब उदे आवेगा, रे चेतन तेरे उदय कहांसें आवै, तेरे संसाररी बहुलताइ, धन्य देसव्रती पाले जिके प्रभुजीकी आज्ञा पाले, जिके प्रभात उठ सामायक करे, पडिकमणो करे, देवदर्शन करै, प्रभुजीकी द्वादसांगी वाणी सुणै, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दांन, तपस्या, सील, पर्वतिथी पोसा, संध्याकूं देवसी पडिकमणा जिनाज्ञा प्रमांणै षडावश्यक करै, सुझेभी कभी उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा हवाल होगा, बुरे परणांमोसे बुरीही गती उदय आयगी, सामायक मनसुद्ध करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पढण गुणना वांचनेकी खप करो, जेसें भवसायर लीला तरो, सामायकवंतके यह

लक्षण हे, उर तेरी सामायक तो निंदा विकथारूप हे, तुझे पढणे गुणनेकी लगन नही, तेनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नही किया. जो श्रुतज्ञानकी भक्ति करते हे उनोकों ज्ञान दर्शनकी प्राप्ति होती हे, केवलज्ञान उर केवलदर्शन पाता हे वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका भर्तार होता हे. दिवस प्रते दे कोई सुजांण सोना खंभी लक्ष प्रमाण, उसके पुन्य होय जेतलो, सामायक कीधा तेतलो ॥ १ ॥ लेकिन् तूं इस भरोसे मत भूल, यह तेरी सामायक वो नही, वह सामायक आणंद कामदेव संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंद्रावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो एसी हे कांम काज घरका चिंतवै, निंदा विकथा कर खिज रहै; आरत रौद्रध्यांन मन धरै, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण एसें हे अपणा पराया सरषा गिणै, कंचन पत्थर समवरू धरै, साचो थोभो आगम भणे, ते सामायक शुद्ध करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें परायाबुरा चाहता, अपणा भला चाहता, वो पराया बुरा या नही चाह्या वो तेनें अपणे आत्माकाही बुरा चाहा, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रक्खे, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे छाती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा हे, तूं अपणे आत्माका गुण विचारे तो अवेदी हे, अफरसी हे, अघाती हे, अलेसी हे, अविनासी हे, तें दिलमें विचारता हे यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन हे, कोण तेरा सज्जन उर कोण तेरा दुस्मन हे, आठ कर्मरूपिया सत्रु हे जिनोंकों तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं बाल भस्म कर जिस्से तेरा गरज सरे, अहोहो में भव्य हूं अभव्यहूं अथवा दुरभव्यहूं, मेरे संसार पोते वहोत दिखता हे, प्रायेतो में अभव्यही दिखताहूं पीछे तो ज्ञानीयोने भाव देखा सो सही, हे रे भाइ तें तो एसी सामायक करता हे, खुणे खाज मोमे

करमका, उंयतणा लेवे सरमका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सिकारेगा जब लेखे लगेगा, दुहा—आत्मनिंद्या आपणी, ज्ञानसार मुनि कीन; जो आत्मनिंद्या करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥
इति आत्मनिंद्या संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववंदनभाष्यादिकसें मंदिर जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी विधि श्रीमहानिसीथ सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकल्पसूत्रमें एसा लिखा हे छती शक्ति साधु जिनमंदिरमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका दंड उर श्रावककूं बेलेका दंड ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घडी रात रहे पिछली तब उठके नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या मेरा कृत्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मजागरणासें दिलको सावचेत करे, पीछे मल मूत्रकी वाधाकूं दूर कर अंग शुचि करके सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदेरासरकी पूजा करे, पीछे यथाशक्ति अछा वस्त्र आभूषण पहरके घोडा हाथी रथ पालखी सिपाइ नोकर चाकर भाई बंधु परिवार समेत पूजाके लायक फल फूल प्रमुख संगमे लेकर भव्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता हुआ जिनशासनकी प्रभावना करता थका जिनमंदिरमें जावे. जिन मंदिरमें प्रवेश करके द्रोपदीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार १० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—३ वेर निस्सही कहणेका, जिसमें १ निस्सही जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीछे संसार घर संबंधी कुभा कार्य विचारणा न करे १; दूसरी निस्सही प्रदक्षणा तीन दियां पीछे कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत कराणेकी जो सार संभाल रखणेकी सोभा छोडे २; (इसमे द्रव्यपूजा करणी मोकली रही )

तीसरी निस्सही कहे पीछे निकेवल भावपूजाही करे, लेकिन् द्रव्य पूजा नही करे. यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा. १

दूसरा त्रिक—ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रभूके दक्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक—मूलनायकजीके बिंबको पंचाग मिलाके तीन वेर नमस्कार करे. ३.

चोथा त्रिक—प्रभूकी अंग१ अग्र २ उर भाव ३ एसे त्रिविध प्रकारसे पजा करे. अब निस्सही किये पीछे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसें लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, उर कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंद्रियोकूं वसमे रखे, चलणे उर फिरणेमें उपयोगी रहे, गीतादिक दुसरोंका सुणके चित्तमें व्याकुलता नहि रखे, कुभ्भी देवकार्यकों छोडके, उर कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथादिक ४ हो सो विकथाको छोडे, जन्म उर कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया भया खोटे कार्यकों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन आंधेको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले. निस्सही किये पीछे जिनमंदिरमें धर्म्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोपेत वचन बोले, जिसनें मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपणी आत्मासें किया हे उस जीवके भावसे निस्सही होय, उर जिसने दूषणका त्याग नहि किया हे उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र द्रव्यनिस्सही होय इस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके आठ तहका उज्जल वस्त्रसें मुखकोस बांधे, धूपादिकसें अंग अपणा शुद्ध करे, भावसें दुसरी निस्सही कहते मूलगुंभारेमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, निकेवल भगवानकी स्तवनामें चित्त रखे. प्रथम सुगंध युक्त जल

पंचामृतसे स्नान करावे, सुकमाल अच्छा कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसें भगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरचंदनसें विलेपन करे, शुभ्रवर्ण शुभ्रगंधयुक्त जीवादि रहित निर्दोस गुलाब चंपा चंपेली केवडा जाई जूई मोगरादिक पुष्फोसे पूजा करे, अष्टांगधूप अगरवत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अखंड उज्वल अक्षतोसें प्रभूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लखे-दर्पण १ भद्रासण २ वर्द्धमानसरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ मछयुग ५ कलश ६ स्वस्तिक ७ नंद्यावर्त्त ८ एसे अष्ट मंगलकी रचना करे, पंचरंगे फूलोंसें अष्टमंगलीककूं पूजे, अच्छे केसर चंदनके हड्डा देवे, उत्तम नैवद्य चढावे, अच्छे खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती पर्यंत रायपसेणी ज्ञाताधर्मकथा जीवाभिगमादि सिद्धांतोमें लिखे मुजब करे. पीछे अंतरंग भक्तिसें प्रभूके सन्मुख नाटक करे, जेसें देवेंद्र दानवेंद्र नारद उदाइराजाकी राणी प्रभावती द्रौपदी रावण प्रमुख केइ जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टापदादि तीर्थोंपर तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया तेसें शंकारहित भव्यजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जल चंदनादि पुष्पोसे करीजावे सो अंगपूजा १ प्रभूके सन्मुख नेवद्यादिक चढाया जावे सो अग्रपूजा २ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो भावपूजा ३. द्रव्यपूजा गर्भित चोथा त्रिक कहा. ४.

अब पांचमा त्रिक-तीन अवस्था विचारणी. पिंडस्थ १, पदस्थ २, रूपातीत ३, इसमें पिंडस्थ अवस्थाके तीन भेद हे. जन्मावस्था १, राज्यावस्था २, श्रमणावस्था ३, उर केवलअवस्था कों विचारणा सो पदस्थअवस्था. निरंजन निराकार सिद्धावस्था सो रूपातीत कहीजे. ५.

अब छठा त्रिक-तीन दिशा छोडके प्रभूके सांमने नजर रखे.

उर्द्ध १, अध २, तिरछी ३, दहणी ३४ वांइ पिछाम्नी निजर नही करे. ६.

अब सातमा त्रिक—तीन वेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाणे चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक—वर्णादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उच्चारण करे सो वर्णशुद्धि १, अक्षरोके अर्थपर आलंबन रखे सो अर्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मन शुद्धि ३. ८.

अब नवमा त्रिक—तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा २, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनुं हाथोकी अंगुली मिलाणी सो योगमुद्रा कहीजे, इस योगमुद्रासें शक्रस्तव कहे १, काउसग्ग मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोमा तिस आकारसें हाथ रखणा सो मुक्तासुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासें प्रणिधान जयवीयराय कहे. ए.

अब दशमा त्रिक—प्रणिधान तीन. जिनवंदन प्रणिधान १, मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावंति चेइयाई इह संतो तऊसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावंति केविसाहू तिविहेण तिदंम विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान २, जयवीयरायसे लेके आन्नवमखंमा तक प्रार्थनारूप प्रणिधान ३. एसें दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अभिगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहते हैं. सचित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपणे नोगमें होय उसकूं दूर धरदेणा १, उर राजचिन्ह मुगट छत्र खम्ग चमर पाउका अचितवस्तुउकानी छोमणा आनूषण वगेरे पहरे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, एकपट्ट उत्तरासण करना ४, जिनबिंबकूं देखतेही नमोन्नुवणबंधुणो एसें नमस्कार करणा ५. यह डुसरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार—दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बेठके नगवंतकूं वांदे, स्त्री वांइ तरफ बेठके नगवंतकूं वांदे.

अब चोथा द्वार तीन अभिग्रहका. अभिग्रह देववांदणामे कहा हे. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बेठके देव वांदे १, मध्यम नव हाथसें उपरांत बेठके देव वांदे २, उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बेठके देव वांदे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन भेद हे. णमो अरिहंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहणा सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसें नमोत्थुणंसे लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते हे पांचदंडक समेत थुईकी च्यार गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहीजे. पांच शक्रस्तवसे आठ थुईसे देववांदे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहीजे.

अब छठा द्वार पंचाग प्रणिपात करे, दो गोडे. दो हाथ, और मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसें प्रभुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण श्रावक करे सो विचार लि०॥

सच्चित्त १, दव्व २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वत्थ ६, कुसुमेसु ७, वाहण ८, सयण ९, विलेवण १०, बंभ ११ दिशि १२, न्हाण १३, भत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ श्रावक नितप्रति नियम संभाले दिनमें जो चीज अपणे अंग खाते लगे उसका प्रमाण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सच्चित्त वस्तुका प्रमाण इस तरेसें करे मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जल अग्नि वायु वनस्पतिका छेदन भेदन, तरकारी फल परबल भींडी तोरी केला मतीरा ककडी खरबूजा नींबु आंब नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.

दूसरा द्रव्य प्रमाण, तहां धातु वस्तुकी शली तेसे अपणी अंगली विगर जो चीज मुंमें मालणेमें आवे सो सब द्रव्यकी गिणतीमे आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर होणेसे द्रव्य जुदा गिणणेमे आता हे. जेसैं गहूं एक द्रव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी वेढवारोटी बाटी यह सब जुदा द्रव्य कहलाता हे. इस तरे भात दाल रोटी कढी मांमिया कट्ट तरकारी सब जात पापम खीचिया लक सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकमेंसे सब द्रव्यमेसे जो चहिये सो रखे बाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक द्रव्यका नांम लेकर रखे सो एकही द्रव्य कहलावे. जेसेके मेवेकी खीचमी तो वह अनेक द्रव्यसे बणी भई हे तोभी एक द्रव्यही कहिये. इति द्रव्यप्रमाण दुसरा नियम २.

अब तीसरा विगय प्रमांण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसें श्रावककूं च्यार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस २ मस्कण ३ उर सहतका ४ रहे. ६ विगय--घृत १ तेल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमांण रखे. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूती खमाउ मोजा अपना इतना विराणा एसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रखे. ४.
॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंबोल नियम ॥ पांनबीमा सुपारी लौंग इलायची छोटी उर बमी जायफल जावंत्री प्रमुख सब खादिमवस्तु किरियाणेकी चीज धारणा प्रमांण रखे. इति तंबोल नियम ॥ ५.

अथ छठा वस्त्र नियम. पोसाख २ तथा ४ छूटा वस्त्र ५ तथा ७ मोकला रखे, पोसाख १ में पघमी १ जामा २ कमरबंधा ३ धोती ४ इक पट्टा उत्तरासण ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कई जे. एसेंइ स्त्रीके स्त्री मुजब. जो एसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपडा दिनमे मोकला रखे. पराया वस्त्र भूल चूकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अब सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली बेला केवडा केक की कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रखे. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ रथ गाडी वहली इक्का बग्घी कोच पालखी घोडा हाथी ऊंट तामजांम म्याना इत्यादिक सब थलवाहन, पाणीमें चलणेवाले मोरपंखी वतक घुडदोड लचकार मगर पनसोइ पलवार वजरानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगेरे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारणा रखे. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी वनात सूजनी सेत्रूंजी डुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटाई सफ दरखतकी छालका चमडेका कामला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे. इति शय्या नियम ए.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूंका राईका आटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकूं इत्यादिक शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन, फोडे परमलम प्रमुख आंखोमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाणा सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १०

अथ ब्रह्मचर्य निमय. रातकों तथा दिनकों सूइ डोरेके दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा. इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि नियम. पूरब १ पश्चिम २ दक्षिण ३ उत्तर ४ अग्निकूण ५ नैरुतकूण ६ वायव्यकूण ७ ईशानकूण ८ अधोदिशि ९ उर्द्धदिशि १० यह दश दिशिका अपणे जाणे आणेका प्रमाण करे, चिठि लिखणी आदमी भेजणा देशांतरकी चिठी वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम. तहां आज दिनमें स्नान २ वेर अथवा ४ वेर मोकला लेकिन् पाणीका तोल रक्खे, घड़े प्रमुख का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं ज्यादा नही गिराउं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा भात नियम. दिनमें भात २ सेर तथा २ वेर जीमूंगा अथवा च्यार वेर उपरांत डुविहार या चोविहार धारणा प्रमाणे रक्खे. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका प्रमाण रक्खे तोलसे या मापसे. इति चवदे नियम विचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल बारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम. जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सांमने शुद्ध सपेद वस्त्र पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढावे, पीछे अखंड तंडुल मुठ ३ थालमें रक्खे उस पर नारेल रुपया या मोहर धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पडिक्कमे इच्छाका० सम्यक्त सामाइआरोहणार्थं चेइयाइं वंदावेह गुरु केह वंदावेमो चैत्यवंदण करे. वाये पासे चावलांको साथियो करे श्रीफल धरे पीछे गुरु वर्द्धमान विद्यासें मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासक्षेप करे, वर्द्धमान स्तुतिसें देववंदन करवावे पीछे सतरे थुईमें नवकार १ एकेकका काउसग्ग करे पीछे शासनदेवता निमित्त च्यार लोगस्स का काउसग्ग करे, पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे ३ नवकार गुणें शक्रस्तव कहे नमोर्हत्० कहके वड़ा स्तवन कहे पीछे जय

वीयराय कहे इति नंदी विधिः। पीछे खमासमण देई श्रुतसा मायक सम्यक्तसामायक आराहणार्थं काउसग्गं करावेह, गुरु कहे करावेमो सम्यक्तसामायक आरोवनार्थं करेमिकाउसग्गं, ४ लोग स्सका काउसग्ग करे पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे ३ वेर नव कार गुणाकर गुरूके पास तीन वेर सम्यक्तदंडक उच्चरे गुरु पाठ बोले उसकी मनमें धारणा रक्खे. सूत्रं अहन्नंभंते तुह्माणं समवे मिच्छत्ताउ पडिक्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पभिइ अन्नतिछिएवा अन्नतिछिदेवयाणिवा अन्नतीछिपरिग्गहिय अरिहंत चेइयाणिवा वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुव्विंअणालित्तएणं आलवित्त एवा तेसिंअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणप्पाउंवा तेसिंगंधमल्लाइं पेसिउंवा नन्नछरायाभियोगेणं गणाभि योगेणं बला भियोगेणं देवाभियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचउविहं तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ तछदव्वउ दंसण दव्वाइं अहिगिच्च खित्तउ जाव भरहमज्झिमखंडे कालउ जावज्जीवाए भावउ जावछलेणं नछ लिज्जामि जावसन्निवाएणं नभिविज्जामि जावकेणइ, उम्माइवसेणं एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवडइ तावमे एसो दंसणाभिग्ग हो अन्नछणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति यागारेणं वोसिरइ. पीछे ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंनमः एसे अक्षर श्रीगुरूके पाससें हाथमें लिखाके जिन प्रतिमाकूं वासक्षेप चढावे, नवकार पढतोथको ३ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरूकूं वांदे, पीछे श्रुतसामायक थिरि करणार्थं सत्तावीस उस्सास प्रमाणे एक लोगस्सका काउस ग्ग करे पीछे प्रगटलोगस्स कहे पीछे सम्यक्तरूप कल्पवृक्ष पायके अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावज्जीवं सुसा हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतत्तं, इयसम्मत्तंमएगहियं. १. पीछे गुरु धर्मदेशना देवे, मिथ्यात्वरूप सम्यक्तके पांच अतीचार वर्जे, नित्य

चैत्यवंदन इतनी वेर करुंगा, इतना नवकार नित्य गुणूंगा, फूल केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरमें चढाउंगा, ज्ञान दर्शन चारित्रके भक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वतिथिमें पालूंगा, नित्य पच्चखाण इस मुजब करुंगा, दिनकी नवकारसी आदिक रात्रिकों दुविहार तिविहार चउविहार और बावीस अभक्ष बत्तीस अनंतकाय विदल वगेरे छोडूंगा इत्यादिक अपणी धारणा प्रमांण सब वस्तूका करे नियम, गुरुके सामने बारे व्रतकी टीप सुणे अतीचार नहि लगे एसे उपयोगसे सदा वर्त्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंडक लि० ॥ अहन्नंभंते तुम्हाणं समीवेथूलगपाणाइवायं संकप्पिउ निरवराहं पच्चरकामि जावज्जीवाए एगविहं एगविहेणं अथवा दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ यह पहले व्रतका दंडक तीन वेर उच्चरावे॥१॥ अहन्नंभंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसाश्वायं जीहाछेयाइहेउअं कन्नालीयं गवालीयं भूमालीयं थापणमोसा कूटसाखीयं पंचविहं पच्चरकामि दरिकन्नाए अविसए दवउ खित्तउ कालउ भावउ सवउणं मुसावायं खित्तउणं इहवा अणहवा कालउणं जावज्जीवाए भावउणं जावगहेणंनगहेज्जामि जावछलेणंनछलिज्जामि अन्नेणकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवडइ तावअभिग्गह दुविहं तिविहेणं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तगागारेणं वोसिरई ॥ २ ॥ अहन्नंभंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं रायनिग्गहकारयं सचित्ताचित्त वछुविसयं पच्चरकामि दवउ खित्तउ कालउ भावउ दवउणं अदिन्नादाणं खित्तउणं इहवा अन्नहवा कालउणं जावज्जीवं भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि जावछलेणं नछलिज्जामि असेणकेणवि रोगाईयं एसोपरिणामो नपरिवडई ताव अ

न्निग्गह दुविहं तिविहेणं अन्नत्थ० सहस्सा० महत्त० सव० वोसि
रइ ॥ ३ ॥ अहन्नंन्नंतुम्हाणंसमीवे उदारिय वेक्रिय न्नेयं थूलमेहुणं
पच्चक्कामि अहागहियन्नंगएणं दिवंतिरिक्षं माणसियं एगविहं एग
विहेणं पच्चक्कामि दवउ खित्तउ कालउ न्नावउ दवउणं मेहुणं खि
त्तउणं इहवा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवाए न्नावउणं जावगहेणं
नगहिज्जामि अन्न० सह० मह० सव० वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहन्नं
न्नंतें तुम्हाणं समीवे परिग्गहं पच्चुच्च अपरिमिय परिग्गहं पच्चक्कामि
धणधन्नाइ नवविहवत्तु विसयं इच्छापरिमाणं उवसंपज्जामि अहाग
हियन्नंगएणं तंजहा दवउ खित्तउ कालउ न्नावउ दवउणं नवविह
परिग्गहं खित्तउणं इहवा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवं न्नावउणं
जावगहेणं नगहिज्जामि अन्न० सह० मह० सव० वोसिरइ ॥ ५ ॥
अहन्नंन्नंते तुम्हाणंसमीवे दिसिपरिमाणं पच्चक्कामि तंजहा दवउ
खित्तउ कालउ न्नावउ दवउणं दिसिपरिमाणं खित्तउणं धारणाप
माणं कालउणं जावज्जीवाए न्नावउणं जावगहेणं नगहेज्जामि जाव
उ० तावअन्निग्गह अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहसंन्नं
ते तुम्हाणं समीवे न्नोगोवन्नोगयेन्नोयणउ अनंतकायबहुवीया राइ
न्नोयणाइं परिहरामि कम्मउणं पन्नरसकम्मदाणाइं इंगालकम्माइया
इं बहुतावज्जाइं खरकम्माइयं रायान्नियोगंच परिहरामि तंजहा दवउ
खित्तउ कालउ न्नावउ दवउणं न्नोगाव न्नोगवयं खित्तउणं इहवा अन्न
त्थवा कालउणं जावज्जीवाए न्नावउणं जावगहेणं नगहेज्जामि अन्न०
सह० मह० सव० वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहसंन्नंते तुम्हाणंसमीवे
अन्नत्थदंडं पच्चक्कामि अववज्झाण पापोपदेश हिंसोपकरण
दाण पमायचरितं चउविहं अन्नत्थदंडं जहासत्तीए परिहरामि तंज
हा दवउ खित्तउ कालउ न्नावउ दवउणं अन्नत्थदंडं खित्तउणं इह
वा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवाए न्नावउणं जावगहेणं नगहि०

अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहन्नंभंते तुम्हाणंसमीवे सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिथिसंविभागवयं जहा सं त्तीए पडिवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुव्वयं सत्तसिरकावयं डुवा लसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह० सवस० वोसिरइ ॥ ए ॥ षट् साख ७ भंगी च्यार आगार संयुक्त पालूं ॥ इति श्रावककूं संक्षेप बारे व्रत उच्चरावण विधि ॥

॥ अथ वीसथांनकका छोटा स्तवन देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करी, वीस थांनक रे गणवुं विधि कहुं चित्त धरी ॥ पहले थानक रे नमो अरिहंताणं गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी थुणउ ॥ त्रूटक० ॥ थुणउ नविश्रां बीजइ थानकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउवी स जिननी, पूंडरीक आदिइं कही ॥ त्रीजइ थानक नमो पवयण स्स, प्रभावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउथइ थांनकि; आचारज नगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ थिवर पूजा करो, नमो उवझायाणं रे छठ्इ थानक उचरउ ॥ वस्त्र कंबल र बहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्सीणं रे सातमें तपिआ पूजिए ॥ त्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स ज्ञाननी नगति करउ, नमो दंसणस्स नवमें थानक चैत्यसेवा आदरो ॥ दसमे ते नमो विनयकारीणं विनय वडानो कीजिए, इग्यारमे नमो क्रिया कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ २ ॥ बारमे थानक रे नमो बंभ धारीणं सदा, वृतधारी रे मन वच क्रम पूजउ मुदा ॥ मूल वय धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समाहिधरणं रे रात्रइ गीत गान वरचिये ॥ त्रू० ॥ वरचिये नमो सुपत्तदायगस्स परमान्न दांन ते पनरमे, नमो वायगस्स विगयनउ त्याग करो थांनक सोलमें ॥ सतरमे नमो वेयावचकारीणं, उषध गुरुनइ आपिये ॥ अढारमे

नमो नाण धराणं, नवूं जणवूं थापिये ॥ ३ ॥ नमो सुअजत्तीणं रे जगणीसमे जविया सुणउ, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइं सुणो ॥ वीसमे थानक रे नमो पश्रावगाणं कही, संघजगती रे यथासक्ति कीजे सही ॥ जू० ॥ सही कीजे वीस उली एक षठ मासि कीजीये, उपवास करिये बे सहस्स गुणिये पमिकमणे लाहो लीजिए ॥ त्रणे काले देववंदन नाहण धोअण टालिये, आरंज वरजी पुन्य गरजी सीअल सूधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु साधवी रे श्रावक श्राविकाये सेविआं, तीर्थंकर रे तेणे नामकर्म बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, ठाणांगे रे सौधर्मसामि वखाणिआ ॥ जू० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा सुपास उदाई नृप वलि, पोट्टिल मुनिवर अने दृढायुष शंख शतक श्रावक रुली ॥ सुलसा रेवती श्राविकाये एह थांनक फरसिआं, सेवकजन कल्याणकारी वयणला सफला किया ॥ ५ ॥ इति वीसथानक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥ वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥ ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख कें, जेटे सहु जवि चित्त सुख पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्रजु पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखमियां, मुख सुंदर जास ॥ मे० ॥ १ ॥ कानें कुंमल दोय ऊलके, शशि सूरज सम जास ॥ मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिजुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥

प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसास ॥ मे० ॥ लालचंद अरज सुनीजें, पूरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ ठुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी, हारे में खरी पुकारुं नेम तुंहीं तुंहीं तुंहीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिन अवगुण क्युं तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें भारो ॥ सुजा० ॥ ॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं भव भवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ नेम जिणंदजीसें आंखमली, मोरी रेन दिवस नित लग रहीरे ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आथ भन दोस्ती कीनी, ले पीछें छिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया करीने, सिवरमणी तें वर लेइ रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिथ्यातनिंद में खोई रे ॥ आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन भयो मेरे, आनंद चित्त अब जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम बिन उर न कोई मेरे, देख्यो त्रिभुवन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, तुम प्रभु भव भव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन भयो, क्या सोये जिया जागरे ॥ रा० ॥ दोय घरी तरुकी अब रहियो, उठ धरममें लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी उरबीच धार ले, उर भरम सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए सूधो शिवमाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पद ॥

॥ राग भैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कौन खबर ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ भ्रमत फिरयो संसार जगतमें, मेटो भव की फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ भव भवके प्रभु तुम जगनायक, राखो शरणें तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदय आशारो पकड्यो तेरो, सरण ग्रही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ कडखानी देशी ॥ भाव धरि धन्य दिन आज सफलो गणुं, आज में सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर भरि विमल गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ १ ॥ पग पग उमंग धर पंथ नित पूजतां, धन्य दोय चरण तिहां चलत आयो ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह गिरि सुजस गायो ॥ भा० ॥ २ ॥ दूर दुर्गति टरी जात्र विधिशुं करी, पुण्यभंडार पोतें भरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि शिखर, रुषभजिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, वीनतडी अवधार लाल रे ॥ परमातम परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवलज्ञान दिवाकरु, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोकको, क्षायिक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद चंद चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोड लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूते एक कोड लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजर वस्यो, मुझ मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, भवभव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उध्धारण हो तुमें, दूर हरो भवदुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करो, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंधर जिन स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनड़ो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशि दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरें जी, पावड़ शाला आठ जी ॥ आठ जोजन ऊंचुं देहरुं जी, दुःख दोहग जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ भरतें भरायां भलां देहरां जी, सो भोंयरां शुभ जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने कम जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली भागीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयां जी, जाणे जोई ने जंग जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुऊनें पांखड़ी जी, आवुं केम हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह उगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रभु आशा राज ॥ सु० ॥ देखि उदासा अपणा दासा, दीजें कछुक दिलासा राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चाम्डी चटकी भवमांहि भटकी, नाच्यो मैं विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी, लागुं प्रभुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत संभाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हथाली वाजे ताली, वात अचंभा वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परउपगारी पास तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी मन शुद्ध धारी, श्रीधमसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांभलीने आव्यों तुम तीरे, जनम मरण भय वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे छे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सहु

कीना मनवाछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह बिरुद छे राज तुं मारुं, किम राखो छो दूरो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नही छे, परतक्ष दरिसण दीजें ॥ धूंवाडे धीजुं नहीं साहिब, पेट पड्या पतीजें ॥ ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसर मंडण साहिब, वीनतडी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया करी मुझने, भवसायरथी तारो ॥सेवक०॥५॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी, किम मेलुं किरतार ॥ जिनेसर ॥ साहेब वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण भरत मझार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आडो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो लाडला, कागल द्यु किण हाथ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ २ ॥ रमतां थें में जीहो एकठा, दिनमें दश दश वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलता घणी मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलणो जीहो अवसरें, मिलशे सुकृत संयोग ॥ जि० ॥ पण क्षण क्षण जीहो सांभरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥ मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रली, फलशे ते दिन आश ॥ ॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रभु सुखवास ॥ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे छे ॥ जिनराज, वधाई वाजे छे ॥ नगर अयोध्यामांहे, मेघ घर आज वधाई वाजे छे ॥ ए टेक ॥ मात सुमंगला जनमिया रे, सुमतिनाथ सुखकार ॥ सुमति भरे सहु देशमें रे, प्रगट भयो जयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इंद्रादिक सहु

सुर मल्हयारे, मेरु शिखर पर आय ॥ मज्जन पूजन बहुविधे रे, थिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ २ ॥ घर घर रंग वधामणा रे, घर घर मंगल चार ॥ बालचंद्र प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोत्सव रंग रलो री ॥ ए टेक ॥ जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥ आवत सिद्धारथजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥ आ० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री ॥ बाजत ताल मृदंग सुरपधनी, बेना बीन मोचंग वली री ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंद्र हुकुम कर धरणिंद्र पठायो, सब वसुधा धन, धान्य भरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम विखेरत गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार भयो जिनशासनी व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री ॥ हरख चंद जनम्यो प्रभु मेरो, मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चउतीसय अतिसय जुत, वचनातिशये जुत्त ॥ सो परमेसर देख भवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासण बेठा जग भाण, देखी भविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीठे तुझ निम्मल झाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोभागी चोवीस वैरागी चोवीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजनंदा ॥ १ ॥ (इतना कह कुसुमांजलि चढाईजे चरणोंके टीकी दीजे) ॥ गाथा ॥ जोनिअगुण०जा रम्भो, तसुअनुभवएगत्त ॥ सुहपुग्गलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पु ग्गल संगेजे ह अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो जव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० ( एसा कह गोमे टीकी दीजे)॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगु णसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पदधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥ लोकालोक प्रकाशक नांणी, जविजन तारण जेहनी वांणी ॥ पर मानंदतणी नीसाणी, तसु जगते मुऊ मति ठहरांणी ॥ १ ॥ कु सुमांजली मेलो नेम जिनंदा तोरा० ॥ (एसा कह हाथे टीकी दीजे) ३ ॥ गाथा ॥ जेसिझासिझंतिजे, सिझस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन ठवियमण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणांमे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखा ले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा तोरा च० ॥ ( एसा कह खांधोके टीकी दीजे )४ ॥ गाथा ॥ सम्म दिठिदेसजय, साहूसाहुणीसार ॥ आचारजजवझायमण, जोनिम्मल आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धार्यो, मोक्षतणो कारण निरधार्यो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रण मंत ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ ( एसा कह मस्तक टीकी दीजे ) ५ ॥ ( पीछे स्नात्रिया चमर ले के प्रजुजीकूं ढुलावे ) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर२ नमिय मनरंग, कल्लाणक वि हि संठविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंक र, इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥ जम्म समय इगवीस, जत्तहि जावे पूजिया, करो संघ सुज गीस ॥ ढाल ॥ जव तीजे समकित गुण रम्या, जिनजक्ती प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इंद्रिय सुख आसंसना, कर थांनक वीसनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रजावता, मन जावना एहवी

भावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, एसी भावदया मन उल्ल सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं भलूं, निपजावी जिनपद निरम लूं ॥ आउबंध विचे इक भव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥३॥ तिहांथी चवि लहे नरभव उदार, भरते तिम एरवतेंज सार ॥ म हाविदेह विजय प्रधान, मझखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥ ॥ ढाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेखे ॥ गजवर उज्ज्वल सुंदर, निरमल वृषभ मनोहर ॥ निरभय केसरिसिंह, लख मी अतिह अबीह ॥ अनूपम फूलनी माला, निरमल शसि सुकमा ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश पमूर, पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण सायर ॥ बारमें भुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने भासे, राजा अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पूत्र मनोहर ॥ इंद्रादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य उदय २, ऊपना जिणनाह ॥ माता तब रयणी समे, देख सुपन हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपम अर्थ सांभले सो भागी ॥ त्रिभुवन तिलक महागुणी, होस्ये पूत्र निधांन इंद्रा दिक जसु पाय नमी, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥ ढाल ॥ चंद्राउलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अवधे मन आ- णंदियो ॥ मुझ आतम निरमल करण काज, भवजल तारण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ भवअरुविय पारग सबवाद, केवलना णाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उल- ट्यो आसाढ मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तब रोमराय, बलयादिकमां निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन आणंद कंद ॥ ३ ॥ सग अरु पय समुहा आवि तत्र, कर अंजलि

प्रणमिय मञ सत्थ ॥ मुख जाषे ए कृण आज सार, तिय लोय पहू होठो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल तापित तनु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समांन, मिथ्या विष चूरण गरूमवांन ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समञ, प्रगट्यो तसु प्रणमी हुउ सनत्थ ॥ इम जंपी सक्कव करेवि, तव देव देवी हरखे सुणेवि ॥६॥ गावे तव रंज्ञा गीत गांन, सुरलोक हुउ मंगलनिधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंस ठांम, जिनराज वधे सुर हर्ष धांम ॥ ॥७॥ पिता माता घरे उछव अलेख, जिनशासन मंगल अति विशेष॥ सुरपति देवादिक हरष संग, संयम अरथी जनने उमंग ॥ ८ ॥ शुज्ञ वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंड्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख पांम्या त्रिज्ञुवन सर्व जीव, वधाइश थई अतीव ॥ ए ॥ (एसा पढ चैत्यवंदन करणा पीछे हाथमें साथिया करणा पीछे कलस पंचामृत का लेकर खडा रहे ॥ ) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाईये सुखकार, नरखित्त मंमण उह दिहंमण ज्ञविक मन आधार ॥ तिहां राव राणा हरख उछव थयो जग जयकार, दिसिकुमर अवधि विशेष जांणी लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण छंद, जिनजननी पासे आय पहुती गहकती आणंद ॥ हे माय तें जिनराज जायो सचिव वायो रम्म, अम्ह जम्म निम्मल करण कारण करिस सूईयकम्म ॥ २ ॥ तिहां ज्ञूमिसोधन दीप दर्पण वाय वींझणधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवर जननि मज्जणकार ॥ वर राखमी जिन पांण बांधी दिये इम आसीस, जुग कोमिकोमी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल उलालानो ॥ जिन रयणीजो दस दिसि उज्जलता धरे, शुज्ञ लगनेजो ज्योतिलचक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर माताघरे, तिण अवसरजी इंड्रासण पिण थरहरे ॥ त्रूटक ॥ थरहरे आसन इंद्र

चिंते कोन अवसर ए बन्यो, जिन जन्म उछवकाल जांणी अतहिं आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जांण नगते ऊ मह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ तब सुरपतजी घंटानाद कराव ए, सुरलोकेजी घोषणा एह दिराव ए ॥ नरक्षेत्रेजी जिनवर जन्म हुउ अछे, तसु नगतेजी सुरप ति मंदिरगिर गछे ॥ त्रूट० ॥ गछे मंदिर शिखर ऊपर नुवन जीवन जिनतणो, जिन जन्मउछव करण कारण आवज्यो सब सुरगणो ॥ तुम शुद्ध समकित थास्ये निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पा तिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांन लजी सुरवर कोम्हि बहू मिली, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांहमी चली ॥ सोहमपतिजी जिनजननीघर आविया, जिनमाताजी वंदी स्वामि वधाविया ॥ त्रू० ॥ वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्य हूं कृ तपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुऊ समो कुण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मज्ञनवर करी, उछंग तुमचे वलिय थापिस आतमा पुन्ये नरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज करकमले ठव्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक विधिजी तब बत्तीस आगलि वहे, सुर कोम्हिजी जिन दरशणने ऊ महे ॥ त्रूट० ॥ सुर कोमकोमी नाचती वलि नाथ सचि गुण गा वती, अछपरा कोमी हाथ जोमी हाव नाव दिखावती ॥ जय जयो २ तूं जिनराज जगगुरु एम धे आसीस ए, अम त्रांण सरण आ धार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरवरजी पां मुकवनमें चिहुं दिसे, गिर शिल परजी सिंहासण सासय वसे ॥ तिहां आणीजी शक्रे निज खोले ग्रह्या, चोसठेजी तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ त्रूट० आविया सुरपति सर्व नगते कलश श्रेणि व णाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषध सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अच्चु

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोमाकोमने, जिन मज्जनारथ नीर ल्यावो सबे सुर करजोमने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव कोमी हसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिसी ॥ पऊमदह आदि दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवाभणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अम कलश कर सहस अठोत्तरा, उत्त चामर सिंहासण सुभतरा ॥ उपगरण पुप्फ चंगेरी पमुहा सवै, आगमे भासिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल भरिय करि कलश कर देवता, गावता भावता धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम सगति शुचि भगति इम भावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म आरोपता, कलश पाणी मिसे भक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे सर्व आव्या वही, शक्र उछंग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा॥ इंहोदेवा अणाइकालो अदिठपुव्वो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥ मिछत्तमोहविद्धंसणो आणाइतिन्नविणासणो, देवाहिदेवोदिठ्ठो २ हियकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पभणंति वण भवण जोईसरा, देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा ॥ केविकप्पठिया केविमित्ताणुगा, केवि वररमणे वयणेण अइउछगा ॥ १ ॥ वस्तु ॥ तत्थअच्चुय२ इंद आदेस, करजोमी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अदभुत रूप सरूप जुय कवण एह पुछंति सामिय, इंद कहे जगतारणो पारग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मनो करिये तसु अभिषेस ॥ ॥ १ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे न्हाभे ॥ आतम निरमल भाव करंता, वधते सुभ परिणामे ॥ अच्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंद्राणी पमुहा, इम अभिषेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाहा ॥ तबईसाणसुरिंदो, सक्कंपभणेइकरिसुपसाउ ॥ तुम्हअंकेमहताउ, खिणमित्तंअम्हअप्पेह ॥ १ ॥ तासकिंदोपभणइ, साहमीयवछलम्मिबहुला

हो ॥ आणाएवंतेणं िएइह होनकयत्थाजो ॥ २ ॥ (कलस ढाले) सोहन सुरपति वृषज रूप करि, न्हवण करे प्रजु अंगे ॥ करिय विलेपन पुष्पमाल ठवि, वर आजरणअजंग ॥१॥तव सुरवर बहु जयश रव कर, नचे धरि आणंद ॥ मोक्षमारग सारथपति पाम्यो, जांज सु हिव जवफंद ॥ २ ॥ कोम बत्तीस सोवन उवारी, वाजंते वर नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रजुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ३ ॥ आणी थापे एम पयंपे, अह्म निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्मारो धणी अह्मारो, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ मात जतन कर राख ज्यो एहने, तुम सुत अह्म आधार ॥ सुरपति जगते सहित नंदीसर, करे जिन जक्ति उदार ॥ ५ ॥ नियश कप्प गया सब निर्जर, कहता प्रजु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कल्याणक, इछा चित्त मझार ॥ ६ ॥ खरतर गछ जिनआणा रंगी, राजसार उवझाय ॥ ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ७ ॥ देवचंद जिन जगते गायो, जनम महोछव छंद ॥ बोधबीज अंकूरो उलस्यो, संघ सकल आणंद ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इम पूजा जगते करो, आतम हित काज ॥ तजिय विजाव निज जावमा, रमता सिव राज ॥ इ० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, होस्ये जेह जिणंद ॥ संपइ सीमंधर प्रजु, केवलनाण दिणंद ॥ इ० ॥ २ ॥ जन्ममहोछव इण परे, श्रावक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन खंत ॥ इ० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां जव पार ॥ जिनप्रतिमा जिनसारखी, कही सुत्र मझार ॥ इ० ॥४॥ इतिस्नात्रपूजासं०

॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमलकेवल जासन जास्करं, जगत जंतु महोदय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचि मनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजी चं- दन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल भाव युतं जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनै, सहज तत्व विकास कृतेर्च्चये: ॥ ॥ २॥ ॐ ह्रीं० केसरंचंदनं यजामहे ॥ २ ॥ त्रीजी पुष्प पूजा ॥ विक च निर्मल शुद्ध मनोरमे, विशद चेतन भाव समुद्भवेः ॥ सुपरिणा म प्रसून घनैर्नवैः, परम तत्व मयं हि यजाम्यहं ॥ ॐ ह्रीं प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चोथी धूप पूजा ॥ सकल कर्म महेंधन दाहनं, विमल संवर भावसु धूपनं ॥ अशुभ पु- फल संग विवर्जनं, जिनपते पुरतोस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं प० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ भविक नि र्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग वि शुद्ध समन्वितं, दधतु भाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प० दीपं यजामहे ॥ ॥ ५ ॥ छठी अक्षत पूजा ॥ सकल मंगल केल नि केतनं, परम मंगल भाव मयं जिनं ॥ श्रयति भव्यजना इति दर्श यन्, दधति नाथ पुरोकृत स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अक्षतं यजामहे ॥ सातमी नैवद्य पूजा ॥ सकल पुद्गल संग विवर्जनं, स हज चेतन भाव विलासकं ॥ सरस भोजन नव्य निवेदनात्, पर म निर्वृत्ति भाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी फल पूजा ॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्वफलव्रज ढोकनं ॥ विहत मोक्ष फलस्य प्रभो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे । (अर्घ) इति जिनवर वृंदं भक्तितः पूजयं ति, सकल गुणनिधानं देवचंद्र स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्व सुभावयंति, परम सहज रूपं मोक्षं सौख्यं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अर्घं यजामहे ॥ ( वस्त्र ) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला, सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यक्षते कुसुम चंदन गंध

धूपैः, कृत्वार्च्चनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० वस्त्रं यजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सतरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावै पीछै अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रकेबीमें कुंकम तथा केसरका साथिया करै पीछे शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलसमें डालै मुखकोस बांध उत्तरासण कर तीन नवकार गुणै तीन वेर नमस्कार कर हाथ के धूप देकर रकेबी हाथमें धरै मन सुद्धकर खडा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती मुनो कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ भाव भलै भगवंतनी, पूजा सतर प्रकार ॥ पर सिद्ध कीधी द्रोपदी, अंग छठै अधिकार ॥ १ ॥ राग सरपदो ॥ ज्योति सकल जग जागती, हांरे अइयो जा० सरसति समरि सुजिंद ॥ सतर सुविध पूजातणी, पभणिसु परमानंद ॥ १ ॥ गाहा ॥ न्हवण १ विलेवण २ वत्थयुगं ३, गंधारुहणंच ४ पुप्फरोहणयं ५ ॥ मालारोहण ६ व न्नयं ७ चुन्न ८, पडागय ९ आभरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुय वंसुघरं ११, पुप्फं पगरंच १२ अठमंगलयं १३ ॥ धूव उखेवो १४ गीयं १५, नट्टं १६ वज्जं १७ तहा भणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध पूजा पवरं, ज्ञाताअंग मझार ॥ द्रुपदसुता द्रोपदि परै, करियै विधि विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसाख ॥

पूर्वसुख सावनं, करि दसन पावनं, अहत धोती धरी उचित मानी रे, अइयोज० ॥ विहत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुभृत मणिकलस कर विविध वांनी ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगवं, लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअवा वारिवारि ॥ अ० ॥ भणिय कुसमांजली, कलस विधि मन रली, नवति जिन इंद जिम तिम अगारी ॥ अ० ॥ २ ॥ दुहा ॥ परमानंद पीयूप रस, न्हवण सुगति सोपान ॥ धरमरूप तरू सींचवा, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद

सौ पूजा साचवै, श्रावक शुभ परिणाम ॥ शुचि पखाल जिनतनु तणे, करइ सुकृत हितकाम ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्रकारी, सुण जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण उछ्योरी सुधारस, तपत बुझिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रभूकुं विलोक नमि जतन प्रमारजित, करत पखाल सुचि धारविनको ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथम निज वृजन पुलावत, पंककु वरष जिम घनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि तरणि भवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥ शिवपुर पंथ दिखावन दीपी, धूमरि आपदवेल मरदनकी ॥ पू० ॥ ॥ ३ ॥ सकल कुशलरंग मिछ्योरी सुमति संग, जागी सुदिसा शुभ मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधूकीरति सौरंगभर करतां, आस फली मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पढ पंचामृतसुं न्हवण कीज । डावे पांवके अंगुठे जलधार दीजे ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगलूहणेसें अंग जिनबिंबका प्रमार्जकर केसर सुगंधद्रव्य मिश्रित लेके खडा रहै)

रामगिरीमें राग ॥ गात्र लूहे जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर सु धूपित वाससुं ॥ वाससूं हांरे देवा वा०, गंध कसायसुं मेलियै ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हांरे देवा नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकम भेलीयै, कर लीयै हांरे दे० क०, रयण पिंगणि कचोलियै ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंधै सिरे रे देवा, भाल कंठ उर उदरंत रै ॥ दुख हरै हांरे देवा सुख करै, तिलक नवे अंग कीजीयै ॥ गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरै, श्रावक दूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम सुरगिरै, तिम करै हांरे देवा ति० जिण पर जनमन रंजियै ॥ ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखसदन, श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे भवोदधि तीर ॥ १ ॥ मिटै ताप तसु देहको, परम शांतिरता संग ॥ चित्त खेद सब उपसमैं, सुखमें समरसीरंग ॥ २ ॥ राग वेलाउल ॥ विलेपन कीजै

जिनवर अंगै, जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद यक्ष कर्दम, अगर मिश्रित मनरंगे ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रम जानु कर खंधै सिर भाल कंठ, उर उदरन्तर संगै ॥ विलुपति अघ मेरो कर त विलेपन, तपति बुझित जिम अंगै ॥ वि० ॥ २ ॥ नव अंग नव २ तिलक करतही, मिलत नवे निध चंगे ॥ कहे साधु तन शुचि करो सुललित पूजा, जैसे गंग तरंगै ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति द्वितिय विलेपन पूजा ॥ २ ॥ एसा कह विलेपन कीजे, नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतिय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ अत्यंत नरम वस्त्र केसरका साथिया कर प्रभू आगे ले खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वसन युगल उज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ॥ लाभ ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ राग गौडी ॥ कमल कोमल घन चंदन चरचित, सुगंध गंधै अधिवासिया ए, हांरे अइयो० ॥ कनक मंडित हय लाल पल्लव शुचि, वसन युग कंति अधिवासिया ए ॥ हांरे अ०॥ १ ॥ जिनप उत्तम अंगे सुविधि शक्रो यथा, करिय पहरावणी ढोइये ए ॥ हां० ॥ पापलूहण अंगलूहणो देवनें, वस्त्रयुग पूंज मल धोइये ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैराडी ॥ देवडुष्ययुग पूजा वन्यो हे जगतगुरु, देवडुष्य हर अब इतनो मांगुं ॥ तूंही हे सबहि हितु तूंही है मुगति दाता, तिण नमि२ प्रभुजी के चरणे लागूं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहे साधू तीजी पूजा केवल दंसण नाण, देवडुष्य मिस देहु उत्तम वागूं ॥ श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत पीतां, सब राग डुख संसय घुरम भागूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृतिय वस्त्रयुगल पूजा ॥ (एसा कह प्रभुजीकूं वस्त्र चढावे ॥)

॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्णवासक्षेपपूजा ॥

॥ गोडी रागमें दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परै, सुमति वधारण वास ॥ कुमति कुगति दूरे हरै, दहै मोहदल पास ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ हां हो रे देवा बावनचंदन घस कुमकुमा, चुरण विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो अधिवासू ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वास दसोदिसि वासतैं, पूजै जिन अंग नवंगू ए ॥ हा० लाभि भवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अभं गू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौरी ॥ मेरे प्रभुजीकी पूजा आ-नंदमेलै, पू० ॥ वासभवन मोह्यो सबलो ए, संपदा भेलै ॥ पू० ॥ ॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्ताथेइ ॥ अप्रमित्तगुण तोरा, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासै, पूजियै जिन राज तत्ताथेइ, चतुर गति दुःख गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥ इति चतुर्थी वासक्षेप पूजा ॥ (एसा कह चूर्णवास चढावे)

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगे पुष्प उत्तम ले के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुहप अनेक प्रकार ॥ प्रभु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥ चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाई जूहिका, वउलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरै ए, अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसैं वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥इति॥ राग कानडो ॥ सोहे री माई व रणें, मन मोहे री माइ वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसम जिनच रणै ॥ सो० ॥ विकसी हसीय जंपै साहिबकुं, राख प्रभु हम सर णै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकलितकी, कु० ॥ पंच विषै हां० पं० दुःख हरणै ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति भगति भग वंतकी, भविक नरां हांरे भ० सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छठो पूजाए छती, महा सुरभि पुष्पमाल ॥ गुण गूंथी थापे गले, जेम टलै दुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुज री ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका, मालिकासोग पारिध कली

ए ॥ भलां पा० ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका, लाल गुलाल पाडल भली ए ॥ भलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मो-गरा वेलला मालती, पंचवरणै गूंथी मालती ए ॥ भलां गुं० ॥ हे माल जिनकंठ पीठै ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पालती ए ॥ भलां स०॥२॥ इति॥ राग आसावरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक एधतिनंदै, चकोरकूं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० बलि सुदमंदै ॥ दे० ॥ ॥ २ ॥ छठी रे तोडरपूजा सब मार धूजै ॥ सब अरियण हारे स० होइ तिम वंदै ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे साधूकीरत सकल आस्था सुख, भविक भगत हारे भ० जे जिन वंदै ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति छठी तोडर पूजा ॥ ६ ॥ ( एसा कह फूलमाला प्रभुकूं पहिरावे ॥ )

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगे फूल केसरसें अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवडा, सोभे तेम सुगात ॥ चाढो जिम चढतां हुवै, सातमीयै सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौडी॥ कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हांरे अ० ॥ कुंद गुलाबसुं चंपको दमणको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी अलंकीयै, अंग आलंक मिस माननी मुगति आलिंगियै ए ॥ २ ॥ ॥ इति ॥ राग भैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं०॥ कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥ ॥ १ ॥ दमणक मरुक पाडल अरविंदो, अंस जुई वेलवाती ॥ पारधि चरण कलार मंदारो, विण पटकूल वनी भांती ॥ पं० ॥ ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमण गाती, भैरवी कुगति व्रत तिदाती ॥ पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ अगरवत्ती अथवा धूप लेकर खडा रहै ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेल्हारस सार, सुमती पूजा आठमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु भावसें ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥ सुरभि सिखर मृग नाभिनो जी देवा, चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥ ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जब मोरीयो जी देवा, अशुभ करम चूरीजै जी ॥ अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तव कुमतीजन खीजै जी ॥ तब सुमतीजन रीझै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री माई जिनवर अंग सुगंधै, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदारै, गोत्र तीर्थंकर बांधइ ॥ भलांश गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर से-ल्हारस, लावै जिन तनु रागें ॥ धार कपूर भाव घन वरषत, सामेरी मति जागे ॥ भलां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकें, सूहव गीत समूल ॥ दीजै तीन प्रदक्षिणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौडी ॥ वस्तु ॥ सहसजोयण१, हेममय दंड ॥ युतपताक पंचे वरण, घुमघुमत घुग्घरीय बाजै ॥ मृदु समीर लहकै गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद ल सयल भाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजा ए, हां ए वि० ॥ न वमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर श्रावक धज वहन, ति० ॥ आपै दांन अभंग ॥ आ० ॥ १ ॥ राग नट्टनारायण ॥ जिनराज को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सबद त्रि प्रदक्षणा, क० ॥ सधववधू सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ भांति वसन पंचवरण बन्यो री, विधि कर ध्वजको रोहणा ॥ साधू भणत नवमी पूजा नव, पाप नियाणा खोहणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

( ॥ ए कही ध्वजा चढाईजै ॥ पहली वाजित्र वाजतां सधवस्त्री चांदीके थालमें धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षणा देकर प्रभु सन्मुख गुंहली कर धजा पर गुरु पास वासक्षेप करा के प्रभु सन्मुख ध्वजा विस्तारै ॥ )

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

( एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खडा रहे ॥ )

॥ दूहा राग केदारेमें ॥ दसमो पूजा आभरण, रचना यथा अनेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे जिनवरतणे, रयण मुगट झलकंत ॥ तिलक भाल अंगद भुजा, श्रवण कुंडल अति भंति ॥ २ ॥ राग अधभास गुंडमल्हार ॥ आसावरी ॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणेक लाल रतणिया, हीरा सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुभग अंक अंजना, मनमोहे रे ॥ १ ॥ मौलि मुगट रयणे जड्यो, काने कुंडल हारे अति जुगते जुड्यो उर हारू रे, मन वारू रे ॥ भाल तिलक वाहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, दुखहारू रे ॥ २ ॥ राग केदारो ॥ प्रभु सिर सोहे मुगट मणि रयण जड्यो, रय० ॥ अंगद बाहु तिलक भालस्थल, बहुनीको कवण घड्यो ॥ ॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंडल शशि तरुण मंडल जीपे, सुरतरुसें अलंकर्यो ॥ दुखकेदार चमर सिंहासन, छत्र सिर उवरि धर्यो, अलंकृत उचित वर्यो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ रोक द्रव्याभरणादि चढावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सोभतो, फूंदे लहके फूल ॥ महके परिमल फल महा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलूए ॥ अईयो० तिलक दमणकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिभ पाडलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिभुवनकूं रुचै, कुश मगेहे विच तोरणूं ए ॥ हांरे अ० ॥ गुच्छ चंद्रोदयं झूंबकावल्लयं, जालिका गोख चित्तचोरणुं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो मन मोह्यो माई री फूलघर आणंद झिलै, फू० ॥ असत उसत दांम वघरी मनोहर, देखत तवही सब दुरित खिलै ॥ फू० ॥ १ ॥

कुसम मंरूप थंज्ञ गुहं चंडोदय, कोरणी चारु विनाण सजै ॥ इग्या रमी पूजा वणी हे रामगिरी, विवुध विमान जैसें तिपुरि ज्ञजे ॥ ॥२॥फू०मे०॥ इति इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ (फूलघर चढाईजै ॥)

॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वरषै बारमी पूजमें, कुसम बादलिया फूल्ल ॥ हरण ताप डुख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग ज्ञीम मब्हार करूखेकी जाति ॥ मेघ वरसै ज्ञरी पुप्फ वादल करी, जानु परिमाण कर कुसम पगरं ॥ पंचवरणें वएयो विकच अनुक्रम चिएयो, अधोवृंते नही पीम पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास महके मिलै ज्ञमर ज्ञमरी ज्ञिलै, सरस रसरंग तिए डुख निवारी ॥ जिएप आगे करै सुरप जिम सुख वरै, बारमी पूज तिए पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥ राग ज्ञीममब्हार ॥ पुप्फ वादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ योजन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥ गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिसय सुगुणें ॥ गुंजत२ मधुकर इम पज्ञणै, गुं० ॥ मधुर वचन जिनगुण शुणइ ॥ पु० ॥ २ ॥ कुसमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीम नही सुमणें, पु० ॥ समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विवुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥ ॥ ३ ॥ बारमी पूज ज्ञविक तिम करै, कुसम विकस हस उचरै ॥ तसु ज्ञीमबंधन अधरा हुवै, जे कराहिंजे जिन नमें ॥ पु० ॥ ४ ॥ इति बारमी पुप्फवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रुपया चावल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरै, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै सुमतै सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल मिब्या, अखंम गुणै ज्ञिब्या, साल रजततणा तंडुला ए ॥ श्लषण समाजक विध पंच वरणक, चंद्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ १ ॥ अ० ॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल अखै, जिनप आगे सुथानक

धैर ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टसिद्ध करे ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वणी ते रसमें, रसमें ३ हा हो ते० ॥ दर्प्पण ज्रद्रासन नंद्यावर्त्त पुर्णकुंज्र, मत्स्ययुग श्रीवत्स तसुमें ॥ वर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अगर, सेल्हारस घनसार ॥ कर प्रज्ञ आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वेलाउल ॥ कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचेपूर ॥ कुंदरुक्क सेल्हारस सार, गंध वटी घनसार ॥ १ ॥ गंधवटो घनसार चंदन, मृगमदारस ज्रेलिये, श्रीवास धूप दसांग अंबर, सुरज्रि बहु द्रव्य मेलिये ॥ वेरलिय दंम कनक मंमित धूपधाणो कर धरे, ज्रववृत्ति धूप करंति ज्रोगं रोग साग अशुज्र हरे ॥ २ ॥ राग मालवी गोमी ॥ सब अरति मथन मुदार धूपं, करति गंध रसाल रे, देवाक० ॥ धामधूमावलिय धूसर, कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ ज्रर्ध्वगत सूचंत ज्रविकुं, म ध्यमधे करनाल रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीये रयण विसाल रे॥ आरती मंगल माल रे, मालवीगोमी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति चवदमी धूप पूजा ॥ ( एसा पढके धूप खेवे ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ ज्रलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥ ज्रावो अधकी ज्रावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें आर्या ॥ यद्वदनंत केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण वर्ण तान वाद्यै, मात्रा ज्राषालयैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतैः, स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च, चंचुर चारोचारी गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥ राग श्रीराग ॥ जिनगुण गान श्रुत अमृतं, तार मंद्रादि अ नाहत तानं, केवल जिम तिम फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ विबुध

कुमीर कुमरी आलापै, मुरज उपंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र बंध धूयो प्रतिमानं, आयति छंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ २ ॥ सबद समान रुच्यो त्रिभुवनकुं, सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर मान शिवश्रीगीतं, पनरमी पूज हरै दुरितं रे ॥ जि० ॥३॥ इति पू ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ( कुमार कुमरी नाटिक करै ॥ )

॥ दूहा ॥ करजोडी नाटिक करै, सऊ सुंदर सिणगार ॥ भवनाटिक ते नहि भमै, सोलमी पूजा सार॥ १ ॥ राग शुद्धनट्ट काव्यं ॥ भावाहिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चंदानना, सपिम्मा सम रूव वेस वयसो मचेज्ज कुंजत्थणा ॥ लावण्ण सगुणा पिकस्स रवई रागाईआ लावणा, कुम्मारी कुमरावी जैन पुरउ नच्चंति सिं गारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणंते अठसयं कुमारिकुमरोउ सूरियाभ्रे णंदेवेणं संदिठा रंगमंडवेपविठा जिणनमंता गायंता वायंता नच्चंतित्ति ॥२॥ राग नट्ट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, डागरुदि तत्ताथेई ॥अ० ॥ डागरुदि२क थौंगिशन, मुखेतत्ताथेईयं ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे णु वीणा मुरज बाजे, सोलही सिणगार साजै ॥ तनन्ननन्नेईय ॥ अईयो० ॥ प्रणण प्रणण भणणणा घुग्घरु घमके, रणणसससेईय ॥ ॥ अईयो० ॥ २॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी झंकार क रणी ॥ सोभंती कुमरीय॥ अइयो० हस्तकं हावादि भावै, ददन्ती भमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमो नाटिकतणी, सूरीयाभ्रे रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप भगतें भविक लीणा, आणंद ततेत्थेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥४॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ततघन सुखिरै आनधै, वाजित्र चौविध वाय ॥ भगत भली भगवंतनी, सतरमियै सुखदाय ॥ १ ॥ गाहा ॥ सुर मद्दल कंसालो, महुयर मद्दल सुवज्जए पणवो ॥ सुरनारि नंद तूरे, पुभणइ तूं नंद जिणनाह ॥ २ ॥ राग मधुमाधवी ॥ तूं नन्दिआ

न्द बोलत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी ॥ तूं० ॥ ज्ञान निर्मल वावन मुखवेदी, तिबल बोलै रंग अतहि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥ ज्झेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवै जैन जैणावंती ॥ जैन शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंघ प रपरिय वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥ सेव ज्नविक मधुमाधव फेरी, ज्नवनी फेरी नप्पज्नणंती ॥ कहे साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनि कर कहंती ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ ज्नवि तूं ज्नण गुण जिनके सब दिन, तेज तरण मुखराजै ॥ ते० ॥ कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, थुय रंगे इम गाजै ॥ ज्नवि० ॥ १ ॥ अणहिलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि सिद्ध आबाजे ॥ सतर सुपूज सुविध श्रावककी, ज्नणी में ज्नगति हित काजे ॥ ज्नवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंद सूरि खरतर पति, धरम वचन तसु राजे ॥ संवत सोल अढार श्रावण धुर, पंचमि दिवस समाजै ॥ ज्न० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिक्यवर, तासु पसायै सुविध ह्य गाजे, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सत्र लीला सुख साजे ॥ ज्न० ॥ ४ ॥ इति सतर ज्नेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पीछे वस्त्र पहरकर उत्तरासण करकै तिलक करके रकेवीमें स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दक्षिणावर्त्तसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोरा चरणकमलकी में जाउं बलिहारी ॥ जै जै० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजीकेनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया, मृग लंछन प्रज्नु चरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रज्नु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जै० ॥ ४ ॥ मंगल आरती ज्नोरहिं कीजे, जन्म२ को लाहो लीजे ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोडी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपद पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदकी पूजामें जो अवस्य चीज चहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिश्री जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं मोली छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंद्रुवा धूप चावल गहूं चणोकीदाल मूंग उडद नव प्रकारका नैवद्य नवतरेका फल नव प्रकारकी पक्वान्न खजली मिश्री पतासा ओला वगैरे अंगलूहणो के वास्ते स्वेतवस्त्र वासक्षेप गुलावजल अत्तर नारेल इग्यारे नवनालीकेकलस ॥ ९ रकेबी तसला आरसी मंगलदीपक घी अंगीसमोसरण थाप नामें रोकनाणा रु१) ज्ञानपूजा नारेल समेंत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसें जाणनी ॥

## ॥ अथ सिद्धचक्रजीकी वडी पूजा लिख्यते ॥

### ॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करो, तास धरी उर ध्यांन ॥ अरिहंतपद पूजा करो, निज२ शक्ति प्रमांण ॥१॥ काव्य ॥ उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पाडि हेरा सणसंठियाणं ॥ सद्देसणाणं दिय सज्जणाणं, नमो२ होउ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यांनथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ कस्या कर्म दुमर्म चकचूर जेणें, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण कालै ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीनै, दिये देसना भव्यने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेसै नरेसै स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कस्या घातिया कर्म च्यारे अलग्गा, भवोपग्रही च्यार छै जे विलग्गा ॥ जगत्पंचकल्याणके सुख पांमै, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकांमै ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं, धरम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वड वीरो जी ॥ ती० ॥ उल्लालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आतम भावे चरण थिरता वास

ता ॥ जिन नामकर्म प्रभाव अतिसय प्रातिहारज सोभता, जगजंतु करुणावंत भगवंत भविकजनने थोभता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सीमंधर साहिब आगे ॥ ए देसी ॥ तीजे भव वर थानक तप कर, जिन बांध्युं जिननाम ॥ चउसठ इंद्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे भविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ भ० ॥ जिम चिरकालै नंदो रे ॥ भ० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ भ० ॥ रत्नत्रयीनो वृंदो रे ॥ भ० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ भ० सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पिण उजवालूं ॥ सकल अधिक गुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टालूं रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्ग ऊपन्ना, भोग करम खिण जांणी ॥ लेइ दीक्षा सिक्षा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ए ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्थवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजै, ते जिन नमिये उछाह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ॥ १० ॥ आठ प्रातीहारज जसु छाजै, पैंत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमियें उछाह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पर्यायै रे ॥ भेद छेद करी आतमा, अरिहंतरूपी थायै रे ॥ १२ ॥ वीर जिणेसर उपदिसै, सांभलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्यांने आतमा, रुद्धि मिले सब आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत्सिद्धचक्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अशुभ करम दूरै टलै, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाणमाणंद रमालयाणं, नमोऽणंत चउक्कयाणं ॥ सम्मग्ग कम्मक्खयका

रगाणं, जम्मंजरा दुरक निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खय पार पाम्या, जरा जन्म मरणादि जय जेण वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा॥ १५ ॥ त्रि जागोनदेहावगाहात्मदेसा, रह्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा॥सदानंत सौख्याश्रिताज्योतिरूपा, अनाबाधअपुनर्जवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥ ॥ चाल ॥ सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अ व्याबाध प्रजुतामई, आतम संपत जूपो जी ॥ उल्लालो ॥ जे जूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणें करी ॥ स्वद्रव्यक्षेत्र स्वका लजावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वजाव गुणपर्याय परणति, सि द्धसाधन परजणी, मुनिराज मानसरहंस समवम्, नमो सिद्ध महा गुणी ॥ १७ ॥ ढाल ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिजाग विसेस ॥ अवगाहन लही जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते असेस रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ पूरब प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ ज० ॥ ॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, जोयण एक लो कंत ॥ सादि अनंत तिहां थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ ॥२०॥ज०॥सि०॥ जाणै पिण न सकै कही पुर गुण, प्राकृत तिम गुण जास ॥ उपमा विण नांणी जवमांहे, ते सिद्ध दिउ उल्लास रे ॥ ज० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध स हज समाधि रे ॥ ज० ॥२१ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वजाव जे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गु ण खाणी रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ ॐ॥ ह्रीं० इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ तृतिय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ हिव आचारज पदतणी, पूजा करो विशेष ॥ मो

हतिमर दूरै हरै, सूझै भाव असेप ॥ १ ॥ काव्य॥ सूरीणदूरीकय कुग्गहाणं, नमोऽत्थुसिरिसमप्पहाणं ॥ सद्देसणा दाणसमायराणं, अ खंकूछत्तीसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्वताजा, जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्यभाजा॥षट्वर्गवर्गित गुणै शोभमाना,पंचाचारनें पालवे सावधाना॥२॥ भविप्राणिनें देशना देशकालै,सदाअप्रमत्ता यथा सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा, जगत्ते चिरंजीवज्यो शुद्धजल्पा ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणछत्तीसे धामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परभावे निक्कामो जी भल्लालो ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन, साध्य निज निरधारथी ॥ वर ज्ञान दरसन चरण बीरज, साधना व्यापारथी ॥ भविजीवबोधक तत्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संबर समाधी गत ऊपाधी, दु विधत पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै, मारग भाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने याचो रे ॥ भ०॥ २६ ॥ सि०॥ वर छत्तीसगुणैंकरि सोभै, युगप्रधान जगबोहै ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥ भ० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम उवएसे, नहि विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलुस अमल अमाय रे भ० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पडिचोयण वलि जनने ॥ पटधारी गच्छथंभ आचारज, ते मान्या मुनिमनने रे ॥ भ० ॥ २९ ॥ सि०॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदीजे जगदीवो ॥ भुवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो रे ॥भ० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे ॥ वी० ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं आचार्यपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ३

॥ अथ चोथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ॥

उवझायापद अरचियै, अनुभवरसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य ॥ सुत्तत्थ वित्थारणतप्पराणं, नमोऽवायगकुंजराणं ॥ गणस्ससंधारणसायराणं, सव्वप्पणावज्जियमच्छराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पिण सूरिगुणने सुहाया, नमूं वाचकात्यक्त मदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थदानें, जिके सावधानें निरुद्धाभिधानें ॥ २ ॥ धरे पंचनेवर्गवर्गितगुणौघा, प्रवादिद्विपोच्छेदनेतुल्यसिंघा ॥ गुणीगच्छसंधारणेस्थंभभूता, उपाध्यायतेवंदियेचित्प्रभूता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ, अज्जव मद्दवजुत्ताजी॥ सच्चंसोयंअकिंचणा, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥ उल्लालो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तगुप्ता, सुमति सुमता शुभधरा॥ स्याद्वादवादइं तत्वसाधक, आत्मपरविभंजनकरा ॥ भवभीरुसाधनधीरसासन, वहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदानसमरथ, नमोपाठकपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिज्झाय करे जे, पारगधारग तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवझाय उल्लास रे ॥ भ० ॥३४॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दानविभागे, आचारज उवझाय ॥ भवत्रिएहै जे लहै शिवसंपद, नमियैं ने सुपसाय रे॥ भ० ॥३५॥ सि० ॥ मुरखशिष्यनीपायेजेप्रभु, पाहणने पल्लवआणें ॥ ते उवझाय सकलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजांणे रे ॥ भ० ॥३६॥ सि० ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक, आचारजपद योग, ते उवझाय सदा ते नमतां, नावै भवभय सोग रे ॥ भ० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ बावनाचंदनरस समवयणें, अहिततापं सवि टालै ॥ ते उवझाय नमिजे जे वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ भ० ॥ ३८ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ तपसिज्झायै रत सदा, द्वादस अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं० श्रीपाठकपदे अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थी पूजा ॥

॥ अथ पांचमी साधूपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्षमारग साधनभणी, सावधांन थया जेह ॥

ते मुनिवरपद वंदतां, निरमल थाये देह ॥१॥ काव्य ॥ साहूर्ण सै साहियसंजमाणं, नमो २ शुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं, मुणीणमाणंदपयठिआणं ॥ करेसेवनासूरिवायगगणीनी, करूंवर्णना तेहनीसीमुणीनी ॥ समेतासदापंचसमतेत्रिगुप्ता, त्रिगुप्तैनहाकाम न्नोगेषुलिप्ता ॥ ४१ ॥ वलोबाह्यअभ्यंतरैग्रंथटाली, हुईमुक्तिनेयो गचारित्रपाली शुन्नष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निजं पाप टाली ॥ ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निःकामी निस्संगी जी ॥ न्नवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा, काउसग्गमुद्रा धीर आसन ध्यांन अभ्यासी सदा ॥ तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै परन्नणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिन्नुवन प्रणमों हितन्नणी ॥ ४३॥ ढाल ॥ जिम तरुफूले न्नमरो बेसे, पीमा तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय रे ॥ न्न० ॥४४॥ सि० ॥ पांचइंद्रीनें जे नित जीपे, षट्काया बंधु प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, वंदू दीनदयाल रे ॥ न्न० ॥ ॥ ४५ ॥ सि० ॥ अढारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजे जनम पवित्र रे ॥ न्न० सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्त जे पाले, बारे विध तपसूरा ॥ एहवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरब पुन्य अंकूरा रे ॥ न्न० ॥४७॥ सि०॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढतै वानै ॥ संजम खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुमानै रे ॥ न्न० ॥४८॥ सि० ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरखे नवि सोचे रे ॥ साधु सुधा ते आतमा, स्युं मुंडे स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं० साधुपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छट्ठी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर न्नाषित शुद्ध नय, तत्वतणी परतीत ॥

ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरियै शुन्न रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणु त्ततेरुइलक्खणस्स, नमो२ निम्मलदंसणस्स ॥ मिछत्तनासाइसमु ग्गमस्स, मूलस्सलधम्ममहाडुमस्स ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिथ्या, टलेजेअनादीअछेजेकुपथ्या ॥ जिनोक्तैहुइंसहजथीशुद्धध्यानं, कहि येदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि चित्रंन्नवारण्यकूपं॥प्रकृतिसाततेनेजपसमेक्षयतेहहोवे, तिहांआपरूपेस दाआपजोवे॥५१॥ढाल॥सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्व प्रतीत सरू पी जी॥जसु निरधार स्वन्नाव छे, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥ जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयल पर इहा टलै, निज शुद्ध सत्ता न्नाव प्रग टै अनुन्नव करुणा उछलै॥बहु मांन परणित वस्तु तत्वे अहव सुखकारण पणै, निज साध्य दृष्टे सरब करणी तत्वता संपति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध देव गुरु धर्म परीक्षा, सदहणा परिणाम॥जेह पांमीजै तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन नांम रे॥ न्न० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम क्षयं उ पशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अन्नंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजे, जिनधरमे दृढ रंग रे ॥ न्न० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश म लहीजे, क्षयउपसमीव असंख ॥ एक वार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन नमीइं असंख रे ॥ न्न० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नांण प्र माण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवांण न जे विण लहिये, समकित दरसन बलियो रे ॥ न्न० ॥ ५६ ॥ सि० ॥ सडसठ बोल जे अलंकरियो, ज्ञांन चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श न ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ न्न० ॥ ५७ ॥ सि० ॥ ॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, खयउपसम जे आवे रे ॥ दर्शन ते हिज आतमा, स्युं होय नाम धरावे रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ ॐ ह्रीं प० दर्शनपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञानना, सिद्धचक्र तपमाह ॥ आ

राधीजै शुभ मनें, दिन२ अधिक उच्छाह ॥ १ ॥ काव्य ॥ अन्नाण सम्मोहतमोहरस्स, नमो२ नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सुवगारगस्स, सत्ताणसवत्थपयासगस्स ॥ होइजेहथीज्ञानशुद्धप्रबोधे, यथा वर्णनासैविचित्राविबोधे ॥ तिणेंजाणीयेंवस्तुषट्द्रव्यभावा, नहोवै विकल्पानिजेच्छास्वभावा ॥ ५९ ॥ होइपंचमत्यादिसुग्यानभेदे, गुरु पासथीयोग्यतातेहवेदइ ॥ वलीज्ञेयहेयानुपादेयरूपे, लहैचित्तमांजे मध्यानेंप्रदीपे ॥ ६० ॥ ढाल ॥ भव्य नमो गुण ज्ञाननें, स्वपरप्रकाशक भावे जी ॥ परयाय धरम अनंतता, भेदाभेद स्वभावै जी ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधभास विलासता, मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंबना ॥ स्याद्वादसंगी तत्त्वरंगी प्रथम भेद अभेदता, सवि कल्प ने अविकल्प वस्तु सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ भक्ष अभक्ष न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञान ते सकल आधार रे ॥ भ० ॥ ६२॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञान नें पीछे अहिंसा, श्रीसिद्धांतें भाख्युं ॥ ज्ञाननें वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीये सिवसुख चाख्युं रे ॥ भ० ॥ ६३॥ सि० ॥ सकल क्रियानुं मूल ते श्रध्या, तेहनुं मूल जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नित२ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये रे ॥ भ० ॥ ६४॥ सि० ॥ पांच ज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाशक तेह ॥ दीपकपर त्रिभुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह रे ॥ भ० ॥ ६५॥ सि० ॥ लोक ऊरध अथ तिर्यग् ज्योतिष, वैमानिक ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुझ शुद्धी रे ॥ भ० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म छै, क्षय उपशम तसु थाये रे ॥ तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाये रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ आठमी चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुभवरस मिले, पातिक होय उछेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराहिय खंडिअसक्किअस्स, नमोऽस्संजमवीरिअस्स ॥ सब्भावणासंगविवज्जिअस्स, निव्वाणदाणाइसमुज्जअस्स ॥ वलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, निराशंसताद्वाररोधेप्रसंगे ॥ भवांभोधिसंतारणेयानतुल्यं, धरुंतेहचारित्र अप्राप्तमूल्यं ॥ ६८ ॥ होइंजासमहिमाथकीरंकराजा, वलिद्वादशांगीभणीहोइताजा ॥ वलिपापरूपोपिनिप्पापथाये, थईसिद्धतेकर्मनेंपारजाये ॥ ६९ ॥ चाल ॥ चारित्रगुण वलि२ नमो, तत्त्वरमण जसु मूलो जी ॥ पररमणीयपणो टलै, सकल सिद्धि अनुकूलो जी ॥ उल्लालो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व थिरता दममयी, शुचि परम खंति मुनींद संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायकादिक भेद धरमैं यथाख्याते पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्वल काम कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ देसविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही यतिने अभिरांम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतो, कीजैं तास प्रणाम रे ॥ भ० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण परं जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्त्ति पिण वरिउ, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मनमांहि धरिउ रे ॥ भ० ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद नरिंद ॥ असरण सरण चरण ते वारू, वरिउ ज्ञान आनंद रे ॥ भ० ॥७३॥ सि०॥ बार मास पर्यायै तेहनें, अनुत्तर सुख अतिक्रमिये ॥ शुक्ल२ अभिजात्य ते ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ भ० ॥ ७४ ॥ सि० ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नांम निरुक्ते भाख्यूं, ते वंदू गुणगेह रे ॥ भ० ॥ ७५ ॥ सि० ॥ ॥ ढाल ॥ जांणि चारित्र ते आतमा, निजस्वभावमांहि रमतो रे ॥ लेस्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी० ॥ ७६ ॥ ॐ ह्रीँ प० चारित्रपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥

॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ठ प्रति जालवा, परतिख अगनि समान ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यांन ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कम्म द्दुमोन्मूलनकुंजरस्स, नमोऽत्थुतिव्वतवोवरस्स ॥ अणेगलद्धीणनिबंधण स्स, डुसज्झअत्थाणयसाहणस्स ॥ ७७॥ इयनवपयसिद्धिंलद्धि, विज्जास मिद्धं, पयमियसरवग्गंह्रींतिरेहसमग्गं॥ दिसिवइसुरसारं खोणिपीढाव यारं, तिजयविजयचक्कं सिद्धचक्कंनमामि ॥७८॥ त्रिकालिकपणें कर्म कषाय टालै, निकाचितपणें बाधिया तेह बालै ॥ कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर डु भेदे, क्षमायुक्ति निर्हेत डुर्ध्यान छेदे ॥७९॥ होई जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरण शुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतैं, होई सिद्ध सीमंतनी जिम संके ते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै, नवभव सिव जावै देव नर भवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावै सिद्धचक्र प्रभा वै, सवि डुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥ ढाल ॥ इच्छा रोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदै जी ॥ आतम सत्ता एकत्व ता, पर परणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥ उल्लालो ॥ उच्छेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुभ योग संग आहार टाली भाव अ क्रियता करै ॥ अंतरमुहूरत तत्व साधे सर्व संवरता करी, निज आ त्मसत्ता प्रगट भावे करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥ ढाल ॥ इम न वपद गुणमंमलं, चउ निक्षेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरे, स म्यग्ज्ञानें जाणे जी ॥ उल्लालो ॥ निरधार सेती गुणे गुणनो करइजे बहुमांन ए, जसु करण ईहा तत्वरमणें थाये निरमल ध्यांन ए ॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरे, अक्षय अनंत म हंत चिदघन परम आनंदता वरे ॥८३॥ कलश ॥ इम सयल सुख कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लद्धिविज्जा सिद्धि मंदिर भ विक पूजो मन रली ॥ उवज्झाय वर श्रीराजसागर ज्ञानधर्मसु रा

जता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद सुशोभता ॥८४॥ ढाल॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते भवमुगति जिनंद॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ भ० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम नि काचित पिण क्षय जावै, क्षमासहित जे करतां, ते तप नमियै ते ह दीपावै, जिनशाशन उजमंता रे ॥ भ०८६॥ सि० ॥ आमोसही पमुहा बहु लद्धि, होवै जास प्रभावे ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्र गटै, नमियै ते तप भावै रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुरनरवर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो वंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ भ० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमां हि पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथै ॥ ते तपपद त्रिकरण नित न मियै, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ भ० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद थुणतो तिहांलीनो, हुउ तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासै चोथे खंडै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ भ० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इ छारोधन संवरी, परणित समता योगे रे ॥ तप ते एहिज आतमा, वरते निजगुण भोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो, भाव ते जांणो साचो रे ॥ आतमभावे थिर हूउ, परभावै मत राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांहे ऋद्धि दा खी रे ॥ तिम नवपद ऋद्धि जाणज्यो, आतमराम छै साखी रे ॥ वी० ॥९३॥ योग असंख्य छै जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जांणो रे ॥ ए हतणै अविलंबने, आतमध्यांन प्रमाणो रे ॥ वी० ९४ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथै खंडै पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइय न रही अधूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीँ प० तपपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाको कलसढालणं विधी ॥

॥ नव स्नात्रिया केसरसें तिलक करे, हाथके कांकणडोरा बांधे, दहणे हाथमें

साथिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके पहली पंचामृतके नव कलस ढाले फेर केसरकी टीकी देकर चरणो पर वासक्षेप चढावे यथाक्रम अष्ट द्रव्य चढावै ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी धजागोटा चढावे, आचार्यपदमें चिणोकी दाल पीले रंगकी धजागोटा, उपाध्यायपदमें मूंग, साधूपदमें उडद, बाकी च्यारपदमें चावल चंदनलेपित गोटा चढावे, श्वेतधजा चेत्रीपूनम आसोजीपूनम वगेरोंमें करे, नमो सिद्धाणं इत्यादि नवपदो के न्यारे२ कह के चढावे, गट्टे मुजब पट्टे पर नव साथिया कर वीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजब यथाक्रम चढावे ॥

॥ ओली करणेवाला वासक्षेप पूजा करे तो एकेक पूजामें चालकी गाथा तथा उल्लाले तक गाय कर अरिहंतपदे वासक्षेपं यजामहे कहणा. एसें नवपदोकी चाल ओर उल्लाला पद वासक्षेप चढवाणा ॥

## ॥ अथ दादागुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्हवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल दुष्कृत दाघ निवारया ॥ सकल मङ्गल वंछित दायकं, कुशल सूरि गुरोश्चरणां यजे ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं यजामहे ॥१॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसर वारिणा, निखल जाड्यरुजातं प्रहारिणा ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकु० ॥ २ ॥ अथ पुष्पपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हृत षट्पद वृंदकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ सरज तंदुल कैरित निर्म्मलै, प्रवर मौक्तिक पुंज वदुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीं प० अक्षतं यजामहे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहु विधैश्चरुभिर्वटकेयकैः, प्रवर मोदकपुंज सुखड्डकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नैवद्यं यजामहे ॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकै, विमल कंचनभाजन संस्थितै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजि० दीपं यजामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै, प्रसरिताखिल दिक्सुधूम्रकः ॥ सकल मं० ॐ ह्रीं श्रीं० धूपं यजामहे ॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पनश मोच सदाफल कर्कटै, सुसुखदैः

किल श्रीफल चिरन्टे ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० फलं यजामहे स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलैं, श्चरुप्रदीपक धूप फलादिभिः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजि० अर्घं यजामहे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सद्गुरु आरती कीजे, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, दुख दोहग सब दूर हरीजे॥जै०॥१॥बीजी बीज पमंती धारा, भयवारण तूंही सुखकारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, दूर हरौ सब दुर्मति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चोथी मुगलपूत जियदायक, सुरवर हुकम धरैं ज्युं पायक॥जै०॥४॥पांचमी पांच नदी जिण तारी, संघ सकलनो संकट चारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ छठी थांभोवज्ञ विदारी, विद्यापोथी परगटकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साधी, सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती कीजै, मनवंछित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनलाभ खरतर गणधारी, सदगुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ॥ ए ॥ इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णम् ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसें दिन १० दस सूतक ॥ पुत्री जन्म होनेसें दिन १२ बार सूतक ॥ ऊर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके एक मासको सूतक॥पुत्र होके मरण पामे, तो दिन१एक सूतक ॥ परदेशैं मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, भैंष, घोम्मी, सांढ, घरमांहे वियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवां कलेवर घर बाहिर लइ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी नेशायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ और जितना महिनाको गर्भ गिरे, तितने दिन सूतक ॥ अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये १२ बार दिन देवपूजा न करे. और मृतकके सूतक में घरका जो मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥ और अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. और जो मृतकको छूवा होवे, सो २४ चोवीस प्रहर पडिक्कमण न करे ॥ जो सदाका अखंड नियम होवे, तो समताभाव रख के संवरपणामें रहे. परंतु मुखसें नवकार मंत्रकाभी उच्चारण करे नहिं. स्थापनाजीके हाथ लगावे नहिं. और जो मृतककों छुवा न हो तो मात्र आठ प्रहर पडिक्कमण न करे ॥

भैंसके जब बच्चा होय, तब १५ पदर दिन पीछें दूध पीणों कल्पे. गायके बच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीछें दूध पीणो कल्पे. बकरीको दूध ८ आठ दिन पीछें पीणो कल्पे ॥

१ रुतुवती स्त्री, चार दिन भांडादिकको न छुवे.२चार दिन प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक कारणें तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीकों रक्त चलता दीसे, जिसका विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीछें स्थापना पुस्तक छुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा न करे, साधुकों पडिलाभे. ऋतुवंती तपस्या करे, सो तो सफल होय. परंतु रुतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा है. जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होवे, उहां १२ बार दिन तक साधु आहार पाणी न वहोरे. सूतकवालेका घरका जलसें तथा अग्निसें १२ बारा दिन तक देवपूजा न करे. निशीथसूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूतकवालेका घर दुर्गंछनिक कहा है.

गायके मूत्रमें २४ चोवीस प्रहर पीछें, भैंषके मूत्रमें १६ सोल प्रहर पीछें, गाडर, गधेडी, घोडीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीछें, नर नारीके मूत्रमें ४ चार प्रहर पीछें, संमूर्छिन जीव उपजे. इत्यादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा हे. विशेष विचार शास्त्रांतरसें जानना ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अब असझायकी विगत कहते हे ॥

१ धूंआरी पडे, तांसीम असझाय जाणवी.

२ सर्वदिशामां राती गाया तथा अरण्य संबंधी रज उडे, निरंतर पडे तो दिन ३ तीन उपरांत असझाय.

३ मेह वरसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असज्झाय.

४ नाना छांटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे अने न रहे तो असझाय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, जांलगें होय, तां सीम असझाय. अने जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असज्झाय.

६ बुदबुदा रहित निरंतर वरसे तो ५ पांच दिन उपरांत असझाय होय.

७ चैत्र शुदि पांचमहूंती पडिवा लगें असझाय. तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रजउहावणछं काउस्स ग्ग करुं ? इछं. अचित्त रज उहावणछं करेमि काउस्सग्गं. पछी लोगस्स उद्योयगरेना चार काउस्सग्ग करवा.

८ आशोशुदि पांचमने दिने द्विप्रहरथी आरंभीने पडिवा लगें असझाय.

९ दश दिग्दाहें प्रहर १ एक असझाय.

१० अकालें गाजतां प्रहर २ बे सीम असझाय.

११ अकालें बीज उल्कापात होय तो प्रहर १ असझाय.

१२ अजवालीये पर्खें समी सांझ, पडवो, बीज, त्रीज, इयारी असझाय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर १ एक असझाय.

१४ जूमिकंपें प्रहर ८ आठ असझाय.

१५ चंद्रग्रहणें प्रहर १२ बार उत्कृष्टें, अने जघन्यें प्रहर ८ आठ असझाय.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जघन्य प्रहर १२ बार असझाय.

१७ आसाढ चउमासा पडिक्कमण गयाहूंती प्रहर १२ बार असज्झाय.

१८ कार्त्तिक चउमासें पण प्रतिक्रम्या पीछें पडिवा लगें प्रहर बार असज्झाय.

१९ मांहोमांहे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असज्झाय.

२० कलह युद्ध जां लगें हुवे, तां लगें असज्झाय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यां पर्यंत असज्झाय.

२२ फागण चउमासें रजपर्वी ज्यां लगें रज उडे, अने उपशमें नहिं, तां लगें असज्झाय.

२३ दंडको मार पडते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी असज्झाय.

२४ परचक्रादि जय उपजे, अने जां लगें उपशमे नहिं, तां लगे सूत्र जणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥

२५ नगरमांहे प्रधान पुरुष विहडे, तो अहोरात्र असज्झाय.

२६ उपाश्रयथी सात घरमांहे जो कोइ पुरुष विहडे, तो अहोरात्र असज्झाय.

२७ सो हाथमाहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो ता अणउछेरे एटले ज्यां पर्यंत मृतककूं न उगावे, त्यां सीम असझाय.

२८ तिर्यंचना रुधिर पमवाथी हाथ १०० सो माहे अहोरात्र असझाय.

२९ मनुष्यना रुधिर पमवाथी हाथ १०० सो माहे अहोरात्र असझाय.

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पमे हाथ १०० सो मांहे सूत्र पढवुं सूजे नाहिं.

३१ स्त्रीने रुतु आवे थके दिन ३ त्रण असज्झाय.

३२ आर्द्रा नक्षत्र आव्या पीछें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे, वीजे, मेह वरसे, तो असज्झाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असझाय. अने दीकरीने प्रसवे दिन ८ आठ असज्झाय.

३४ कालग्रहण विणकी जणवो गुणवो नहिं. प्रहर १२ बार असज्झाय.

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्त्तिकवदि १, मागशिरवदि १. ए चार दिवसें सदैव असज्झाय अने सूत्रनी असज्झाय तो प्रहर १२ बार सूधी जाणवी.

॥ अथ साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ॥
॥ ओर दिन पीछें न खावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल प्रहर ८, राब प्रहर १२, घील प्रहर २०, गाढी प्रहर २४, दहिं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीवमां प्रहर २४, घोलवमां प्रहर ४, तह्यां वमा प्रहर ४, पूमी प्रहर ८, रोटी प्रहर ४, तथा ६. बाजरा कण्या प्रहर १२, जवार कण्या प्रहर १२, बाजरीकी खीचमी प्रहर ८, जवारकी खीचमी प्रहर ८, चावलकी

खीचमी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ८, वरसाले आटो दिन ५, पक्कान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्कान्न दिन १५, वरसाले पक्कान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासू ८ दिन, वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ८, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, वरसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी ज्नीजोइ प्रहर ८, पाणीकी उसेइ घूघरी प्रहर १८, घी तेलकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४. वम्री प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६. रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६. एवं सर्व वस्तु एकीये परिमाण उपरांत चलितरस होवे, सो साधु तथा श्रावककों खावे योग्य रहे नहिं ॥

॥ अथ नव ग्रह तथा दस दिग्पाल की स्थापन ओर पूजन विधि तथा आह्वान विसर्जन विधि लिख्यते॥

॥पांच दस स्नात्रिया शुद्ध होकर गूरू के पास केसरका तिलक करै, केसर मंत्रायकै दाहिणा हाथके मोली उर कांकणमोरा मंत्राय के बांधै ॥ (ॐ नमो परमेष्टि नमस्कारं) इत्यादि स्तोत्रसें गुरुआत्मरक्षा करावै. पीछै एक थालीमें १०, एक थालीमें ९, फेर एक थालीमे फेर ९, एसें २८ नागरवेलका पांन रखै. जिसपर पुष्प अक्षत नैवेद्य फल रोकद्रव्य यथाशक्ति धरै उरज्री पंचामृत फूल पुष्पमाला अक्षत नेवद्य तरे२ के गीले उर सूकेफल अनर गुलाबजल केसर कपूर कुंकु आदि पूजापेका सामान रखे. फेर स्नात्रपूजा की थापना रखे, स्नात्र करावे अष्ट प्रकारी पूजा करावै पीछै दसदिग्पालके पट्टे ऊपर जलका छींटा देकर वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके केसरकी टीकी देकर पुष्प चढाके फल नैवेद्यादि समेत नागरवेलका पान चढावै ॥

॥ अथ दस दिग्पालके पट्टेकी पूजाविधि ॥

॥ ॐइन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह अस्मिन्जंबूद्वीपे दक्षिणभरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्यै अमुकपूजामहोत्सवे आगच्छ२ बलिंगृहाण२ उदयमभ्युदयं कुरु२स्वाहाः ॐइन्द्रायनमः इति इन्द्रआह्वानपूजा ॥ ( पूर्वदिसि जल चंदनादि अष्ट द्रव्य चढावै ) ॥ १ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा ॥ ॐअग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्जंबूद्वीपे दक्षिणभरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्यै अमुकपूजामहोत्सवे आगच्छ२ बालगृहाण२ उदयमभ्युदयं कुरु२स्वाहाः ॐअग्नयेनमः ॥ २ ॥ अथ यम दिग्पाल पूजा ॥ ॐयमाय सायु० सवा० सपरिच्छदा अस्मिन्जंबु० दक्षिण० अमुकन० अमुकचैत्यै० अमुकपूजा० आग० बलिंगृ० उदयम० स्वाहा ॐयमायनमः ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ अथ नैऋत दिग्पाल पूजा ॥ ॐनैऋताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० दक्षि० अमुक पूजामहोत्सवे आग० बलिं० उदय० स्वाहा ॐनैऋतायनमः ॥ ४ ॥ अथ वरुण दिग्पाल पूजा ॥ ॐवरुणाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० अमुकपू० आ० बलिं० उदय० स्वाहा ॐवरुणाय नमः ॥ पश्चिम० ॥ ५ ॥ अथ वायव दिग्पाल पूजा ॥ ॐवायवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकचैत्यै० अमुकपूजामहोत्सवे० आ० बलिं० उदयम० स्वाहा ॐवायवेनमः ॥ वायव्य ॥ ६ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ ॐकुबेराय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपूजामहोत्सवे आ० बलिंगृ० उदय० स्वाहा ॐकुबेरायनमः उत्तर दिशि ॥ ७ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ ॐईशानाय सायु० सवा० सप० अस्मि० द० अमुकपू० आ० बलिं० उद० स्वाहा ॐईशानायनमः ॥ ईशानकूण ॥ ८ ॥ अथ ब्रह्म दिग्पाल पूजा ॥ ॐब्रह्मणे सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकन० अमुकचैत्यै

अमुक पू० आ० वलिं० उदय० स्वाहा ॐब्रह्मणेनमः ॥ ऊर्ध्वदिशि० ॥ ए ॥ अथ नाग दिग्पाल पूजा ॥ ॐनागाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० दक्षि० अमुकन० अमुकचैत्ये अमुकपू० आ० वलिं० उदय० स्वाहा ॐनागायनमः ॥ १० ॥ अधोदिशि अष्टद्रव्य चढावै ॥ ऊपर कसूंमल वस्त्र बांधै मौलीसे, पीछै ॥ ॐदशदिग्पालायनमः ॥ एसा कहके यथाशक्ति रोकडद्रव्य समेत नागरवेलका पांन आदि सर्व द्रव्य चढावै, पट्टेके चोतरफ दस घृतके दीपक धरे अथवा एक दीपक आगै धरै ॥ इति दस दिग्पाल पूजनविधिः ॥

॥ अथ नव ग्रह पूजनविधिः ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥ ॐनमोआदित्याय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षणाभरतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुक चैत्यै अमुकपूजामहोछवे आगछ२ वलिपूजांगृहाण२ उदयमभ्युदयं कुरु२ अत्रपीठेतिष्ट२ स्वाहा ॐसूर्यायनमः ॥ (एसापढकेजलचंदनादि अष्टद्रव्यचढावै ) ॥१॥ अथ चंद्रपूजा ॥ ॐचंद्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि गृ० उदय० अत्रपीठेति० स्वाहा ॐचंद्रायनमः ॥२॥ अथ मंगल पूजा ॥

ॐनमोभोमाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमु० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे उदय० स्वाहाः ॐभोमायनमः ३॥ अथ बुधपूजा ॥ ॐनमोबुधाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकनग० अमु० चै० अमुकपू० आ० वलि० उदयम० अत्रपी० स्वाहा ॐबुधायनमः ॥४॥ अथ वृहस्पति पूजा ॥ ॐनमोवृहस्पतये सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० कमुकचै० अमुक पूजाम० आ० वलि० अत्रपी० उदय० स्वाहाः ॐ वृहस्पतयेनमः ॥५॥ अथ शुक्र पूजा ॥ ॐनमोशुक्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जंबू द्वी० द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलिगृ० अत्र

पीठे उदयम० ॐशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॥ अथ शनि पूजा ॥ ॐनमोशनिश्वराय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ२ उदयम० स्वाहा ॐशनैश्वरायनमः ॥ ७ ॥ ॥ अथ राहु पूजा ॥ ॐन मोराहवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै त्ये अमुकपूजा० आ० वलि० अत्रपी० उदयम० ॐराहवेनमः॥८॥ अथ केतू पूजा ॥ ॐनमोकेतवे सायु० सवा० सप० अस्मि न्जं० द० अमुकनग० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ२उदय० स्वाहा ए ॐ केतवेनमः॥ इति॥ (इसी मुजब ऊपर लाल वस्त्र मोलीसे वांधे पीछे नागरवेलके पान आदि अष्टद्रव्य रोकड द्रव्य समेत सांमने भेट धरे फेर एसा कहे॥ ॐनवग्रहायनमः॥ च्यारों तरफ नवदीपक वा एक दीपक सांमने धरे इति नवग्रह थापन पूजनविधिः ॥ वाये तरफ मंडलके नवग्रहकी थापना करे दहिणे वाजू दसदिग्पाल की थापना करे ॥जिस महोछवमें इनोकी पूजा कराणी उस महो छवका नाम लेणा विशेष विधि गुरुमुखसें सीखणी ॥ शुद्ध जल सें पवित्रपणे यणायान्नया सधवस्त्रीके या पुरषके हाथसें पांचरंग के धानके वाकला पांच रंगकी खजली गुलगुला खीर दहीका करवा मालपूवा पांचरंगकेलड्डु इत्यादिखाद्य उत्तम वस्तु मंगाकर एक परातमें सब द्रव्य एकठो करै उपर घृत खांड अत्तर गुलावजल पंचरंगेफूल यहनी वाकलोंमें मिलावे पीछै गुरु ३ तीन वार मंत्रके तीन वेर वाकुलो पर वासक्षेप नाखै.) अथ वासक्षेप मंत्र ॥ ॐह्रांह्रीसर्वोप द्रवंबिंबस्यरक्ष२स्वाहा ॐणमोअरिहंताणं ॐणमोसिद्धाणं ॐणमोआ यरिआणं ॐणमोउवझायाणं ॐणमोलोएसव्वसाहूणं ॐणमोआगास गामीणं ॐणमोचारणलद्धीणं जेइमे किन्नर किंपुरस महोरग गरुड गंधर्व जक्ख रक्खस पिशाअ भूअ साइणपमुहाइउ जिणघरनिवासि

णा सन्निहियाय तेसव्वेविलेवण धूवपुप्फफलवइवसंणाहिं वलिपम्मि- छंता तुष्ठिकराभवंतु पुष्ठिकरा संतिकराभवंतु सव्वंजणंकुवंतु सव्वजि णाणं संहणप्पभावन पसन्नभावतणे सव्वत्थरक्खंतुकुवंतु सव्वदुरियाणी नासंतु सव्वाशिवमुवसमंतु संतितु ष्ठपुष्ठिसिवसत्थयणकारिणोभवंतु स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासक्षेपकूं मंत्रके बलबाकुलोमें. डालके शुद्ध करे ॥ पीछै आधा बलबाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके वास्ते वस्त्रसें ढककर रखणेमें. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर इग्यारे स्नात्रिया शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चोटीके बाल खों लकर बलबाकुल लेके पूर्वकी तरफ खडा रहे, २ दूसरा कैसरकी कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चोथा अेता, ५ पांचमा धूप धाणा, ६ छठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा जलका कलश, १० दसमा बलबाकुलकी थाली, ११ इग्यारमा मंग लवाजित्र. इस तरे सब स्नात्रिये एकेक दिसाकी तरफ खडा रहैं. जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूकै तब क्रमसें जल चंदन फूल बा कुलादिक चढावे, चामरकरे, आरीसा दिखावे, वाजित्र वजावे ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयछतु ॥ १ ॥ ( एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ बलबाकुल चढावै ) ( अग्निकूणके सांमनें ) ॥ सदावह्निदिशोनेता पावकोमेषवाहनः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयछतु ॥ २ ॥ ( एसा कह बाकुलादिद्रव्य चढावे ) ( दक्षिणदिशाकी तरफ ) ॥ दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥ ( बलबाकुल चढावै वाजित्र वजावै ) ( नैरुतकूणकी तरफ ) ॥ यमापरांतरालोको नैरुतः शिववाहनः संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥ ( अथ पश्चिमदिशि ) ॥ यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ ( अथ वायव्यकूण ) ॥ हरिणोयाहनंयस्य वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ ( अथ उत्तर दिशि ) ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥ ( ईशान कूण ) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य० वलि० ॥ ८ ॥ ( अथ अधोदिशि ) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ ( अथ उर्द्धदिसि ) ब्रह्मलोकविभोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दिग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥
॥ ओर बलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ ॐनमोइंद्राय पूर्वदिग्अधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणार्द्धे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकमहोछवे सर्वोपद्रवाद्रक्षिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ पूर्वदिशाकी तरफ ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ ( अग्निकूण ) ॥ ॐनमोअग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक० सर्वोपद्रवाद्रक्षिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ इति ॥ ( दक्षिणदिशि ) ॐनमोयमाय दक्षिणदिग्धिष्ठायकाय महिषवाहनाय दंडआयुधाय कृष्णमुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्रवाद्रक्षिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ३ ॥ इति ॥ ( नेरुतकूणे ) ॥ ॐनमोनेरुताय खड्गहस्ताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्रक्षिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ ( पश्चिमदिशि ) ॥ ॐनमोवरुणाय पश्चिमदिग्धिष्ठायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्रक्षिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायवकूणे ) ॥ ॐनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्र्क्ष० स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

( उत्तरदिशि ) ॥ ॐनमोधनदाय उत्तरदिगधिष्टायकाय नरवाहनाय गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाद्वलि० गच्छ२ स्वाहा ॥ ७ ॥ इति ॥ ( ईशाणकूणे ) ॐनमोईशानाय त्रिसूलहस्ताय ईशानाधिपतये वृषभवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्द लि० गच्छ२ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ ( उर्द्धलोके ) ॐनमोब्रह्मणे राजहंसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्टायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्वलि० गच्छ० स्वाहा ॥ ९ ॥ इति ॥ ( अधोलोके) ॐनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्वलि२ गच्छ२ स्वाहा ॥ १० ॥ ( इस तरे पढे बाद सर्व देवतोंके विसर्जनका श्लोक पढे ॥ यथा ॥ शक्राद्या लोकपालादिशिविदिसिगता शुद्धसद्धर्म्मशक्ताः, आयातास्त्रात्रकाले कलुषहतिकृते तीर्थनाथस्यभक्त्या; न्यस्ताशेषापदाद्याविहितशिवसुखाः स्वास्पदंसांप्रतंते, स्नात्रेपूजामवाप्यस्वमतिकृतमुदोयांतुकल्याणभाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीनं, मंत्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वंक्षम्यतंदेवः, प्रशीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीछे यथाशक्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दशदिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

## ॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे ( जलमंत्र ) ॐ ह्रीं अमृतेअमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतंश्राव य२ स्वाहा ( इस मंत्रसें जलमंत्रे. पीछे ) ॐ ह्रीं अमलेविमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावावाअशुचिशुचिभवामिस्वाहा (इस मंत्रकों सातवेर पढता हुवा स्नान करे. पीछे ॥ ॐ ह्रीं आँ क्रौंः॥(सात वेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीछे ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रौं अर्हते

नमः ) इस मंत्रसें सात वेर गुरू पाससें केसर मंत्रायके तिलक करे. ( पीछै ) ॐ ह्रीँ अवतर२ सोमे२ कुरु२ वग्गु२ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे ॐकवलीकः कः स्वाहा ॥ ( इस मंत्रसें मोली मैंढल मरोमफली मंत्रायके हाथके बांधै और जब मंमलजीके च्यारुं तरफ मौलीमैंढल बांधे सोभी इसी मंत्रसें मंत्रायके बांधे. इस तरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरूके सामने हाथ जोमके बेठे तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा है उससें तीन वेर पढके गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीछै तीन वेर नवकारमंत्रसें मं त्रके चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्ना त्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंमलादिकमें स्नात्रियोंकों प्रथम अवश्य कराणी चाहियें. पीछै मं दिरजीमें अधिष्ठायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावैं अष्टद्रव्य चढावे. पीछै चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढावैं, अतर चढावे, फूल धूप नैवद्य फल जल रोकद्रव्य इत्यादि सर्वद्रव्य ( ॐक्षेत्रपाला यनमः ) एसा बोलता हुवा चढावे. पीछै मंमलजोके दहणे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी थापना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढके जल चंदनादि सर्व द्रव्य चढावे. नागरवेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढके ऊपर लालवस्त्र मोलीसें बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढाके दीपक करै. पीछे वांयें तरफ नवग्रहके पट्टेकी थापना कर पूर्वोक्त काव्य पढके इसी मुजब पूजा करै. ) पीछै सर्व स्नात्रिया कूं १८ स्तुतीसें देववंदावे.

अढारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हें ॥ पहली इरियावही पमिक्कमें च्यार नवकारका काउसग्ग कर लोगस्स कहे. नीचें बेठके द हिणागोमा धरतीपर रखके मावागोमा नमीभूत करके चैत्यवंदन करै,

नमोत्थुणं० कहके अरिहंतचेइयाणं० वंदणवत्ति० अन्नत्थु० १ एक नवकारका काउसग्ग करै. नमोऽर्हत् सिद्धा० कहके यदंह्रिन मनादेव थुइकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वंदण० अन्नत्थु० एक नवकारका काउसग्ग इस थुईकी दुसरी गाथा कहे. पुक्खरवरदी० वंदणवत्ति० एक नवकारका काउसग्ग० थुईकी तीसरी गाथा कहे. सिद्धाणंबुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका काउसग्ग थुईकी चथी गाथा कहे. पीछे बेठके नमोत्थुणं कहके खमा हो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकाउसग्गं वंदणव० अन्नत्थु० १ नवकारका काउसग्ग कर० ॥ रोगशोगादिभिर्दोषै रंजितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विहितानतशांतये ५ ( ततः श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरेमिकाउसग्गं० १ नवकारका काउसग्ग ) ॥श्रीशांतिजिनभक्ताय भव्यायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांतिमपनीयते ६ ( ततः श्रीशुतदेवतानिमित्तं० ) सुवर्णशालनीदेयात् द्वादशांगीजिनोद्भवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥(ततः श्री भुवनदेवताआराधनार्थं०) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ (ततः क्षेत्रदेवतानिमित्तं० ) यासांक्षेत्रगतास्संति १ गाथा कहे ॥ ए ॥ (ततः श्रीअंबिकादेवतानिमित्तं० ) अंबानिहितडिंबामे सिद्धबुद्धसमन्विता सितेसिंहेस्थितागौरी वितनोतुसमीहितं ॥ १० ॥ (ततः श्री पद्मावतीदेवतानिमित्तं०) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा क्षुद्रोपद्रवतःसामां पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ ( ततः श्रीचक्रेश्वरीदेवतानि० ) चंचच्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निभा चिरंचक्रेश्वरीदेवी नंदतानिवत्ताच्चमां ॥ १२ ॥ ( ततः श्रीअछुप्तादेवतानि० ) खड्गखेटककोदंड वाणपाणिस्तडिद्द्युतिः तुरंगगमनाछुप्ता कल्याणानिकरोतुमे ॥ १३ ॥ ( ततः श्रीकुवेरदेवतानि० ) मथुरापुरीसुपार्श्व श्रीपार्श्वस्तूपरक्षका श्रीकुवेरानगरारूढा सुतांकावतुवोभयात् ॥ १४

( ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि ) ब्रह्मशांतिसमांपाया दपाया द्वीरसेवकः श्रीमत्सत्यपुरेसत्या येनकीर्त्तिःकृतानिजः ॥ १५ ॥ ( ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि० ) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःस- दा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ ( ततः श्रीशक्रा दिसमस्तदेवतानिमि० ) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ ( ततः श्रीसिद्धायि का श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्सको काउस्सग्गकर स्तुति कहे ) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धायिकापातु चक्रेचापेषुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स कहके बेठै चैत्यवं० नमोत्थु० जयवीयराय पर्यंत कहै ॥ इस तरै १८ स्तुतिसे देववांदण विधि॥

## ॥ अथ मंडल प्रतिष्ठा विधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मोली सूत्रकी बत्ती जगाके घृतका दी पक करै. इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंड रखै ( पीछै ) सो ने चांदी वगेरे के कलसमें अबोटजल भरके सोनवाणी करै, हाथमें कलस लेके सात नवकार गुणै.॥ ॐ ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु२ स्वाहा॥ इस मंत्रसें सात वेर जलको मंत्रके मंडलजीके च्यारों तर फ धारा देवे, ऊपर जरा छींटा देकर पवि करै, धूपखेवै (पीछै) नवतारी मोलीसूत्रका साढातीन आंटा मंडलजीके बाहर करदेवे, पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली तथा मेंढल मरोडाफली चारुं तरफ बांधे (पीछै) केसरकी कटोरी हाथमें लेके ॥ ॐ आँ ह्रीँ श्रीँ अर्हतेनमः॥ इस मंत्रसें मंत्रके मंडलके ऊपर केसरका छींटा देवे ( ऊपर ) चा वलोंको साथियो करै, टीकीदेवे, मंडलके अगाडी साथिया चाव लोंका वा नंद्यावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर भेट धरै. ( पीछै ) केशरचंदन लेकर मंडलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन क रै ॥ (पीछै) वासक्षेप पुष्प हाथमें लेके ॥ ॐ भूर्भुवःभूतधात्रीविश्वा

घारैनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलजूमें तथा पीठकी पूजा करे, फेर आचार्यगुरु वासक्षेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हत्पीठायनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलपीठकी पूजा करे (पीछै) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन वेर मंगल कों वधावे. नीचे चावलोंका साथिया करकें रुपिया नालेर थापना कों धरे ( पीछै ) स्नात्रिया मंदरके भीतरसें प्रतिमाजी लायके त्रिगडेके सिंहासण पर मंत्र पढके थापन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐनमोअर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखायपरमेष्टिने दिग्कुमरीपरिपूजिताय चतुषष्टिसुरासुरेंद्रसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेतिष्ठ२ स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ७ वेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंगलप्रतिष्ठा करकेपीछै सिद्धचक्रपूजा सरू करै ॥

॥ अथ सिंद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ७ कर्कैतनरत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत फल नैवद्य दीप धूप हाथमें ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै ( यथा ) अथाष्टदलमध्याब्ज कर्णिकायांजिनेश्वरान् आविर्भूतोल्लसद्बोधा नार्हतःस्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषेंधनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून् यजैसमस्तातिशयैकहेतून् श्रीमज्जिनानांबुजकर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हद्भयोनमः स्वाहा (इस मंत्रकूं बोलके अर्हत्पदकी पुजा करै. अपने२ जगे सर्व द्रव्य चढावै. पीछै रकेबीमें लालगोटा, लालधजा लालवस्त्र, ७ माणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्यपुर्वदले सिद्धान सम्यक्त्वादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदंप्राप्तान् नितदधेज्भक्तिनिर्भरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रेगतितःप्रणष्टः दुष्टाष्टकर्मामधिगम्यशुद्धि प्राप्तान्नरान्सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान्यजेशांतिकरान्नराणां ॥४॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सिद्धेभ्योनमः स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करै. सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीछै) रकेबीमें पीला गोटा, पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै ( यथा ) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण स्मिन्दलेमले चरतःपंचधाचारान् षट्त्रिंसत्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं उग्रोपसर्गैकनिवारणार्थं मन्त्यर्चयाम्यक्षतगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीभ्योनमःस्वाहा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य थापना पूजा करै इति ॥ पीछै) हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालडु, ४ इंद्रनील, २५ मरकतपन्ना, सर्व द्रव्य लेके खमा रहे. उपाध्याय पद पूजा पढे ( यथा ) द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान् पवित्रेपश्चिमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशांत्यै पठंतियेन्यान्यपिपाठयंति अध्यापकस्तांनपराब्जपत्रे स्थितान्पवित्रान्परिपूजयामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा ( पश्चिमदिशाकी तरफ उपाध्यायपदकी थापना पूजा करै इति॥ पीछै) स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामधजा, उरूदकालडु, ५ राजपट्ट, २७ अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै ( यथा) व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुभ्रध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतानवारान् साधुवासीससुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वादशधाशरीरे येषामुदक्यवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्परिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुभ्योनमः स्वाहा ॥ ५॥ ( उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी थापना पूजा करै इति॥ पीछै ) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व द्रव्य हाथमे ले के खमा रहे काव्य पढै ( यथा ) जिनेंद्रोक्तमनश्रद्धा, लक्षणेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमथनंशुद्धं, न्यस्तमीशानसद्दले ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनायनमः स्वाहाः ( ईशानकूणमें दर्शनपदकी

थापनापूजा करै इति ॥ पीछे ) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वेतवस्त्र, चावलोंकालड्डु, आदि सर्व द्रव्य ले खमा रहै ॥ काव्य पढै ( यथा ) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावभासकं ॥ ज्ञानमाग्नेयप त्रस्थं पूजयामिहितावहं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्ज्ञानायनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ ( अग्निकूणकी तरफ ज्ञानपदकी थापना पूजा करै॥ इति ॥ ) फेर ) रकेबीमें ७० मोती, स्वेतगोटा, स्वेतधजा, स्वेतवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खमा रहे. काव्य पढै ( यथा ) सामायिकादिभिर्भेदै, श्चारित्रंचारुपंचधा ॥ संस्थापयामिपूजार्थं, पत्रेइनैरुतेक्रमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्चारित्रायनमः स्वाहा ( नैरुतकूणकी तरफ चारित्रपदकी थापना पूजा करै इति ॥ ८ ॥ ) पीछै ) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व द्रव्य लेके काव्य पढै ( यथा ) द्विधाद्वादशधाभिन्नं, पूतेपत्रतपस्वयं ॥ निधाययामिभक्त्यात्र, वायव्यांदिशिशर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्तपसेनमः स्वाहाः ( वायव्यकूणकी तरफ तपपदकी थापनापूजा करै इति ॥ अथअर्घ ) निःस्वेदत्वादिदिव्यातिशयमयलनन्श्रीजिनेंद्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्त्वादिप्रकृष्टाष्टकगुणभृदाचारसाराश्चसूरीन् ॥ शास्त्राणिप्राणिरक्षाप्रवचनरचनासुंदराण्यादिसंज्ञं, स्तत्सिद्धयैपाठकानांयलिपतिसहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थं अष्टदलंपद्मं, पूरयेदर्हदादिभिः ॥ स्वाहांतैप्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्तये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं असिआउसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र तपसेभ्यो ह्रीँ श्रीँ अर्हं परमेष्ठिन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानंतचतुष्टय परमात्मनेतुभ्यंनमः ( इति मूलमंत्र ) इति सिद्धचक्र प्रथम वलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥

पहिले वलयमें एक तो वीचमें च्यार दिशिमें च्यार विदि

सांमे एसें अष्टदल कमलके आकार नव कोठे मंडलके मध्य भाग में होय उनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करावै ( पीछे ) दूसरे वलयमें चूडीके आकार १६ कोठा होय ( जिसमें ) एकेक कोठाके अनंतर आठ कोठोमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करे ( ओर ) एकेक कोठा वीचमें खाली रहा हे उसमें अनाहतपद ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ) एसा पद स्थापन करे ( पीछे ) एक रकेबीमें मिश्री लवंग ( तथा ) एक रकेबीमें मोटी दाखां ले के खडा रहे. अनाहत पदमें मिश्री लवंग चढावे ओर आठ वर्गमें दाखां चढावे ( यथा ) ( ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ( ॐ ह्रीं स्वर वर्गायनमः ) ( इहां ) १६ दाख चढावे २ ( ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं ) मिश्री लोंग ३ क ख ग घ ङ ( ॐ ह्रीं व्यंजनकवर्गायनमः ) १६ दाख चढावै ४ ( ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं ) ५ च छ ज झ ञ ( ॐ ह्रीं चवर्गायनमः ॥ ६ ( ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं ) ७ ट ठ ड ढ ण ( ॐ ह्रीं टवर्गायनमः ) ८ ( ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं ) ९ त थ द ध न ( ॐ ह्रीं तवर्गायनमः ) १० ( ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं ) ११ प फ ब भ म ( ॐ ह्रीं पवर्गायनमः ) १२ ( ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं ) १३ य र ल व ( ॐ ह्रीं यवर्गायनमः ) १४ ( ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ) १५ श ष स ह (ॐ ह्रीं शवर्गायनमः ) १६ पहिले अ वर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोले२ दाख चढावे सब ९६ ( उर ) य र ल व १ श ष स ह २ इण दो वर्गोमें ६४ चोसठ दाख चढावे इति ॥ दूसरा वलय पूजा ॥ २ ॥

॥ ( अब तीसरा वलयमें ) चार दिश चार विदिशिमें आठ परमेष्टिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करै इस आठ कोठाके बीच२में वलाका तीन२ देवे तीनुं वलाकामे २४ खाना होय एके

कं खानेमें २ दोय २ दोय लब्धिपद स्थापन करणेसें चोवीस घरो में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्ठीपदमें ( ॐ ह्रीं परमेष्ठिनेनमः स्वाहा ) एसा ८ वेर कहके ८ बीजोरा चढावै, ओर लब्धिपदका नाम बोलके खांरका ४८ चढावै ( यथा ) ॐ ह्रीं अर्हंणमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोओहिजिणाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोपरमोहिजिणाणं ॥ ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोसवोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोअणंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोकुठबुद्धीणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोबीयबुद्धीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोदिठिविसाणं ॥ ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोसंभिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोसयंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोबोहिबुद्धीणं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोउजुमईणं ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोविउलमईणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोदसपूर्वीणं ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोचउदसपूर्वीणं ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोअठंगनिमत्तकुसलाणं ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोविउवणइढिपत्ताणं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोविज्जाहराणं ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोचारणलद्धीणं ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोपन्नासमणाणं ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोआगासगामीणं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोसप्पियासवाणं ॥२६॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोसिद्धायणाणं ॥२९॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोभयवया महाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरिसीणं ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोउगातवाणं ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोअक्खीणमहाणसियाणं ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोवड्ढमाणाणं ॥ ३३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंण

मोदित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो तत्तंतवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो महातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो घोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो गोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो घोरपरिक्कमाणं ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो घोरबंभयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो आमोसहिपत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो खेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो जल्लोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो विप्पोसहिपत्ताणं ॥ ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो सव्वोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो मणवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो वयणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो कायबलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ अष्टचत्वारिंशल्लब्धिपदेभ्योनमः ॥ इस तरे लब्धिपदका नांम बोल २ के तीजे चोथे पांचमें वलयमें ४८ खारका चढावै ॥ ( पीछै ) मंडलजीके गलेमें ह्रीँकारजी स्थापन किया हे ( जहांसे ) साढातीन नवलाका मंडलजीके चोतरफ देके नीचे ( क्रौं ) एसा अक्षर लिखा हे ( जिसके ) प्रथम वलयमें आठे दिंशायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दाडिमफल चढाव ( यथा ) ॐ ह्रीँ अर्हत्पादुकाभ्योनमः ॥ १ ॥ अनारचढावै ॥ ॐ ह्रीँ सिद्धपादुकाभ्योनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ आचार्यपादुकाभ्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ गुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ परमगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ अदृष्टगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ अनंतगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ अनंतानंतगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ अष्टगुरुपादुकाभ्योनमः स्वाहाः ॥ इस तरे छठे वलयमें ८ दाडम चढावै ( पीछै ) सातमा वलयमें आठें दिसामें जयादिक ८ देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढावे ( यथा ) ॐ ह्रीँ जयायैनमः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ जंभायैनमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ विजयायैनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ थंभायैनमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ जयंत्यैनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ मोहायैनमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ अपराजिता

यैनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रींअंधायैनमः स्वाहा ॥ ८ ॥ ( इसी
तरे ) सातमें वलयमें ८ नारंगी चढावें ( पीछे ) आठमें वलयमें
१६ विद्यादेवीयोकी स्थापना करके चांदीके वर्क लपेटी १६ सुपा
री चढावै ( यथा ) ॐ ह्रींरोहण्यैनमः ॥ १॥ ॐ ह्रींप्रज्ञप्तैनमः॥२॥
ॐ ह्रींवज्रशृंखलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रींवज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ ॐ
ह्रींचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रींपुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं
काल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रींमाहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं
गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रींगंधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रींसर्वास्त्र
महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रींमानव्यैनमः ॥ १२ ॥
ॐ ह्रींवैरोट्यायनमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रींअछुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं
मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रींमाहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इस तरे
आठमा वलयकी बोलके वरक समेत सुपारी चढा के पूजा करै पी
छे नवमें वलयके बायें तरफ शासनदेवीयां ॥ २४ की थापना
कर पूजा करै ॥ २४ पूंगीफल चढावै (यथा) ॐचक्रेश्वर्यैनमः॥१॥
ॐअजितबलायैनमः ॥ २ ॥ ॐदुरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐकाल्यैनमः
॥४॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥५॥ ॐश्यामायैनमः ॥६॥ ॐशांतायैनमः
॥७॥ ॐभृकुटियैनमः ॥८॥ ॐसुतारकायैनमः ॥९॥ ॐअशोकायैनमः
॥ १० ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐचंडायैनमः ॥ १२ ॥ ॐविदि
तायैनमः ॥ १३ ॥ ॐअंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐकंदर्पायैनमः
॥ १५ ॥ ॐनिर्वाणयैनमः ॥ १६ ॥ ॐबलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐधार
ण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐधरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐनरदत्तायैनमः
॥ २० ॥ ॐगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐअंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ पद्माव
त्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐसिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ दहिणे त
रफ २४ यक्षराजकी स्थापना करै वरकलपेटी २४ सुपारी चढावै ॥
(यथा) ॐब्रह्मशांतयेनमः ॥ २४ ॥ ॐपार्श्वायनमः ॥ २३ ॥ ॐगो

मेघायनमः ॥ २२ ॥ ॐभृकुटयैनम ॥ २१ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐकुवेरायनमः ॥ १७ ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ १८ ॥ ॐगंधर्वीवनमः ॥ १७ ॥ ॐगरूड़ायनमः ॥१६॥ ॐकिन्नरायनमः ॥१५॥ ॐपातालायनमः ॥ १४ ॥ ॐषण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐकुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ ॐअजितायमः ॥ ७ ॥ ॐविजयायैनमः ॥ ८ ॥ ॐमातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐकुसुमायनमः ॥ ६ ॥ ॐतुंबुरुयैनमः ॥५॥ ॐयक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐत्रिमुखायनमः ॥३॥ ॐमहायक्षायनमः ॥२॥ ॐगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीछे चार दिशामें ४ द्वारपालकी थापना कर के पीला वलवाकुल चढावे ( यथा ) ॐकुमुदायनमः ॥१॥ पूर्वदिशि ॥ ॐअंजनायनमः ॥२॥ दक्षिणदिशि ॥ ॐवामनायनमः ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ ॐपुष्पदंतायनमः ॥४॥ उत्तरदिशि ॥ पीछे चार विदिसकी तरफ च्यार वीरपदमें काले वलवाकुल चढावै (यथा) ॐमाणभद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐपूर्णभद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐकपिलायनमः ॥ ३ ॥ ॐपिंगलायनमः ॥ ४ ॥ ( इस तरे दसमें वलयमें आठु दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीछै पूर्ण कलसके आकार ऊपरसें कियाहुया सिद्धचक्रजीके गलेके ठिकाणे ठिकाणे नवनिधान पदै, तव सोने चांदीके कलसादिकोमें यथाशक्ति रोकनाणा झालके स्थापन करै ) ( यथा ) ॐनैसर्प्पकायनमः ॥ १ ॥ ॐपांडुकायनमः ॥ २ ॥ ॐपिंगलायनमः ॥३॥ ॐसर्वरत्नायनमः ॥ ४ ॥ ॐमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐकालायननः ॥ ६ ॥ ॐमहाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐमाणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐशंखायनमः ॥ ७ ॥ ( इस तरे मुखस्थानकपदे ७ कलस स्थापन करै ॥ पीछै कोहलेका फल हाथमें ले के दक्षिणनेत्रके वरावर पासमें वंगलीका आकार किया है ( जहां ) ॐन्हींविमलस्वामिनेनमः १॥ एसा

कइकेचढावै ॥ फेर कोइलाफल हाथमें ले के वांयेनेत्रके पास वंग लीमें ( ॐक्षेत्रपालायनमः ) एसा वोलके चढावै २ ॥ पीछै तीसरा कोइलाफल ) हाथमें ले के नीचै पींढिके दक्षिणे तरफ वंगलीमें ) ॐचक्रेश्वर्यैनमः ( एसा वोलके चढावै ॥ ३ ॥ ( पीछै ) चौथा को इलाफल हाथमें ले के नीचे पींढेके वांये तरफ वंगलीमें ( ॐअप्र सिद्धसिद्धचक्राधिष्ठायकायनमः ) एसा वोलके चढावै ॥ ४ ॥ (पीछै दसूं दिशामें इंद्रादिक दस दिग्पालकी स्थापन करे. बणसकेतो अ पणा२ वर्ण मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि द्रव्य चढावै अथवा सर्वकों एक द्रव्य सर्व समान चढावै ( यथा ) ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ कनक वर्ण चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकद्रव्य आ दि सर्व द्रव्य चढावै १॥ ( अग्निकूणे ) ॐअग्नयेनमः ॥२॥ रक्तवर्ण का वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ २ ॥ ( दक्षिणदिसि ) ॐयमायनमः ॥ ३ ॥ काले वर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ ( नैरुतकूणे ) ॐनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ( पश्चि मदिश ) ॐवरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व द्रव्य चढावै ५ ( वा यव्यकूण ) ॐवायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य च ढावै ॥ ६ ॥ ( उत्तरदिसि ) ॐकुवेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदव र्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ७ ॥ ( ईशानकूण ) ॐईशाना यनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ८ ॥ ( अधोदिसि ) ॐनागायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ९ ॥ ( उर्द्धदिशि ) ॐब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्था पन पूजन करै ॥ ( पीछै यंत्रके पींढीके स्थानक नव कोठा किया त्र्या हे जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै (यथा) ॐसूर्यायनमः लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ १ ॥ ॐसोमायनमः ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ ॐभोमायनमः ॥ ३ ॥ लाल रंगवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ ॐबुधायनमः ॥ ४ ॥ मूंगरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ४ ॥ ॐबृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ५ ॥ ॐशुक्रायनमः ॥६॥ सपेदवर्णनंदोज वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ ॐशनेश्चरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग का वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐराहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐकेतवेनमः ॥ ए ॥ ढींटरंग वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ए ॥ इस तरे नीचै नवग्रहकी स्थापनपूजा करे. पीछे स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढावें चैत्यवंदन कर थुइ कहकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीछे गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर वासक्षेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करे पीछे यथाशक्ति साधर्मी वात्सल्य करे ॥ इति मंगल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिये (जब) कोइ श्रीमंत उलीकी तपस्या करे तब तो छए महीने मंगल पूजा विस्तार विधीसे करता रहै ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण भये बाद उच्छव के साथ मंगलपूजा कराके नव२ उपगरणोसें उद्यापन करे. जलजात्रादि अठाईमहोछव कर धर्मशालासिणगारे (फेर) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरूखाते चढावै. ऋद्धिरहित भावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढावे (उर) पंचायती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंगलपूजादिक नवपदपूजा अवश्य विधिसंयुक्त करता रहै ॥ इतिउद्यापनविधि ॥

## ॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

### ॥ अथ सत्तर सो को गुणनो लिख्यते ॥

#### ॥ अथ जंबूद्वीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणभद्रस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा

यनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा० ॥ ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्री अमरकेतुसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥ श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १९ ॥ रत्नमेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २० ॥ श्रीशांतिकृतसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ गजेंद्र प्रभसर्वज्ञाय० ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त सर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ ऋषभनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय० ॥ २८ ॥ नेमिचन्द्रसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ अजितचन्द्रसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीराजेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ धातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ ३ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ नीलकांति सर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ पूंजकेसीसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥ ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व० ॥ ७ ॥ मुनिमूर्त्तिसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ आगमिकसर्वज्ञा० ॥१०॥ उक्तितनाथसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ मल्लनाथसर्वज्ञाय० ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय० ॥ १४ ॥ वलंभूत सर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ पूर्णमेंद्रसर्वज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा० ॥१८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥० २१ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीभानुनाथसर्वज्ञाय०

॥ २३ ॥ श्री प्रभंजणसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्ठसर्वज्ञा० २५॥ श्रीजलप्रभसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥ श्रीऋषिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुडंगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्री वत्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीनूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीतीर्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ घातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीन्नूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीयेरानाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्ञानंदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाघोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रन्ननाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीन्नूमिपालसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीसुमतिषेणसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ अतिच्युतसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितांगसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीतीर्थन्नूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअरचंद्रसर्वज्ञा० ॥१५॥ श्रीसमाधिसर्वज्ञा० ॥१६॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वरसर्व० ॥ २० ॥ श्रीदेवेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीउद्योतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीकपिलनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रन्नाकरसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा० ॥ ॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ॥३०॥ श्रीसहस्राज्ञसर्वज्ञा० ॥३१॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥३२॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्धमयममहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजीविरुपिकसर्वज्ञा० ॥ ॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्री पापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीजगत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाम

इंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरजूतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार चंद्रसर्वज्ञा० ॥११॥ श्रीवीरपेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रजसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलजद्रसर्व ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय नमः ॥ १ए ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय० ॥ २१ ॥ श्रीवृंदारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंडातपसर्वज्ञा० ॥२३॥ श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीमहा यशसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीजमोकनाथसर्वज्ञा०॥ २६ ॥ श्रीप्रद्युम्नना थसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २० ॥ श्रीपुष्पकेतु सर्वज्ञायनमः ॥ २ए ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा०॥ ३० ॥ श्रीसमतकेतुस र्वज्ञायनमः ॥ ३१ ॥

॥ ओली ५ ॥ पुष्करार्द्धे द्विितियेमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंदसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र नाजसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्री वयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ० ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्री वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीज मनाथर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुजद्रसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीजद्रगुप्तसर्व ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीसुढधसहस्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीअतिश्रेयसर्वज्ञा० ॥ १ए ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥ २० ॥ श्रीअजित्तवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मजूतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्त्तिसर्वज्ञा० ॥२६

नागेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतब्र ह्मनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

( जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे जिननामानि ) श्रीअजितनाथसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ (धातकीखंडेप्रथमभरते० ) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥२॥ ( धातकीखंडे द्वितियभरतेजिननांम ) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ॥ ३ ॥ ( पुष्करार्द्धेप्रथमभरतेजिननांम ) प्रभासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ (पुष्करार्द्धेद्वितियभरतेजिननांमः ) प्रभावकनाथसर्व०॥५॥ (जं- बुद्वीपेएरवतक्षेत्रेजिननांम ) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ ( धात कीखंडेप्रथमएरवतेजि० ) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥७॥ ( धातकीखंडे द्वितियएरवते ) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ ( पुष्करार्द्धेप्रथमएरव तेजिनना० ) आम्नाह्निकसर्वज्ञाय०॥९॥(पुष्करार्द्धेद्वितियएरवतेजि०) श्रीबलिभद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका गुणना संपूर्ण ॥१६ स्यांम, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५० श्वेत. सर्व संख्या १७० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेय जिनचंद ॥ त- रपद नामी कंधरा, कारण शिव सुखकंद ॥१॥ वाग्र्थकासरदातणो, उर धरि समरण शक्ति ॥ सत्युत्तर सत जिनतणी, रचस्युं नुति सु चि भक्ति ॥ २ ॥ छे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाभ ॥ पूर्वापर भवि तेहनें, विजय नामको लाभ ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु प्रतिदिशा, कमनामें युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि भावीस ॥ ४ ॥ खंड धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन गिरि युग छे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ प्रथतम पुष्कर जां

णिये, द्वीप सकल गुणखांण ॥ अर्ध जाग जसु जत्तमें, गिरि युग जलद समांन ॥ ६ ॥ नोजवि संख्या विजयनी, प्रति मेरौ बत्तीस ॥ धारो गणित अनुक्रमें, षष्ट्युत्तर शत ईस ॥ ७ ॥ एह अढाइ द्वीपनी, विजयतणो परिमांण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा, जाख्यो श्रीजिनजाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थंकर वारके, विचरया जे जिनराय ॥ ते हूं प्रति विजये जणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ए ॥ (ढाल पारणेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थंकर महाराज ॥ अजित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ जविकजन धरज्यो धर्म सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वांणी गुण पैंतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ईस ॥ ज० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ विचरया महियल बोधता जी, विजय मझार सजंद ॥ ज० ॥ ३ ॥ पंच२ जरतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन तारता जी, समरयां संपति थाय ॥ ज० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिनवरू जी, अतुल सकल गुणखांन ॥ श्यांमवरण सोले कह्या जी, अकल कला द्युतिवांन ॥ ज० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कह्या जी, नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम झलहल जाथरू जी, कनकवरण बत्तीस ॥ ज० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित विमल प्रकाश ॥ जविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पचास ॥ ज० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, वीस प्रमित जपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुजातमां जी, धरिये जाव विशाल ॥ ज० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण हुयां जी, उजमणो निज शक्ति ॥ कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी जक्ति ॥ ज० ॥ ए ॥ ए तपविधि जवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अनुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ ज० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत मूनि सर लोक नारद चंद ज्येष्ट पमुर ए, वदि सप्तमी रवि दिने हितवल्लभ कमनधर नूर ए ॥ गुरु खरतरांबर तरणि सन्नि-भ जैनचंद सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंद कपूर ए ॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती—मतिज्ञानावरणीरहितायश्री सिद्धायनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धायनमः २, अवधि ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणरहितायश्रीसि द्धा० ४, केवलज्ञानावरणरहितायसि० ५, ( दर्शनावणकर्मकी नव प्रकृती ए )—चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ए, निद्राकर्म रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रच ला० १३, थीणद्धी० १४ ॥ ( वेदनीकर्म की प्रकति २ )—सातावे दनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, ( मोहनी कर्म की प्रकृती १८ )—सम्यक्तमोहनीर० १८, मिश्रमोहनीरहिताय १८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २२, अनंतानुबंधिलोभर० २३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोभर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०, प्रत्याख्यानीलोभर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलमानर० ३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोभर० ३५, हास्यमोह नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, भयमोह नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, दुगंछामोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर० ४२, पुरुषवेदर० ४३, नपूंसकवेदर० ४४. ॥ ( आयुकर्मकीप्रकृत।

४ )—देवायुरहि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यंचायुरहि० ४७, नरका युरहि० ४८ ॥ ( नामकर्मकी प्रकृति १०३ )—देवगति ४९, नरक गति० ५१, तिर्यंचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, एकेंद्रीजातिर० ५३, बेइंद्रीजातिर० ५४, तेइंद्रीजातिर० ५५, चौरेंद्रीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीरर० ५८, वैक्रियशरीरर० ५९, आहारकशरीरर० ६०, तेजससरीरर० ६१, कार्मणशरीरर० ६२, औदारिकअंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगो पांगर० ६५, औदारिकऔदारिकबंधनर० ६६, औदारिकतेजस बंधनर० ६७, औदारिककार्मणबंधनर० ६८, वैक्रियरबंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकार्मणबंधनर० ७०, आ हारकरबंधनर० ७२, आहारकतेजसबंधनर० ७३, आहारकका र्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकार्मणबंधनर० ७५, वैक्रि- येतजसकार्मणबंधनर० ७६, आहारकतेजसकार्मणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कार्मणकार्मणबंधनर० ७९, तेजसकार्म णबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कार्मणसंघातनर० ८५, वज्रऋषभनाराचसंघयणर० ८६, ऋषभनाराचसंघ० ८७, नाराच ८८, अर्धनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्त संघयणर० ९१, समचतुरस्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुब्जसंस्थानर० ९६, हुंडकसंस्थानर० ९७, कृष्णवर्णरहि० ९८, नीलवर्णर० ९९, लोहितवर्णर० १००, पीतवर्णर० १०१, स्वेतवर्णर० १०२, सु रभिगंधर० १०३, दुरभिगंधर० १०४, तिक्तरसर० १०५, कटुक रसर० १०६, आम्लरसर० १०७, कषायरसर० १०८, मधुरर सर० १०९, शीतफरसर० ११०, उष्णफरसर० १११, स्नारीफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, षरखराफरसर० ११४, सुकु-मालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरहितया० ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्यंचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वीर० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुभविहायोगति १२२, अशुभ-विहायोगतिर० १२३, पराघातनामकर्मर० १२४, ऊसासनांमकर्मर० १२५, आतपनांमकर्मर० १२६, उद्योतनांमकर्मर० १२७, अगुरुलघुनांमकर्मर० १२८, तीर्थंकरनांमकर्मर० १२९, निर्मांणनांम कर्म १३०, उपघातनांमकर्मर० १३१, त्रसनांमकर्मर० १३२, बादरनांमकर्मर० १३३, पर्याप्तिनांमकर्मर० १३४, प्रत्येकनांमकर्म १३५, थिरनांमकर्म १३६, शुभनांमकर्म १३७, सौभाग्यनांम कर्म १३८, सुस्वरनांमकर्मर० १३९, आदेयनांमकर्म १४०, यशनांमकर्म १४१, थावरनामकर्म १४२, सूक्ष्मनांमकर्म १४३, अपर्याप्तिनांमकर्मर० १४४, साधारणनांमकर्मर० १४५, अथिर नांमकर्मर० १४६, अशुभनांमकर्मर० १४७, दौर्भाग्यनामकर्मर० १४८, दुस्वरनांमकर्मर० १४९, अनादेयनांमकर्मर० १५०, अयश नांमकर्मर० १५१, ( गोत्रकर्मकी प्रकृती २ ) उच्चैर्गोत्र १५२, नीचैर्गोत्र १५३, ॥ ( अंतरायकर्मकी प्रकृति ५ ) दानांतरायकर्मर० १५४, लाभांतरायकर्मर० १५५, भोगांतरायकर्मर० १५६, उपभोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायश्रीसिद्धायनमः ॥ ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयडीरो गुणनो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयडी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंभव जिनराज ॥ मूलकरम उत्तर पगइ, हणी चढे सिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट करमकूं क्षय करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सादि अनंत स्थिति लही, चिदानंद चिदघन्न ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणमी करी, कम्मपयडि विस्ता

२ ॥ वरणुं नविजन हितनणी, प्रवचनने अनुसार॥ ३ ॥ (ढाल ॥ ॥ रामचंदके बाग ए देशी) ॥ अष्ट कर्म तीर्थेश, नांमे जिन्न कह्या री ॥ हेयवस्तु परित्यज्य, आतमगुण ग्रह्या री ॥ १ ॥ नाण दंशण आवर्ण, वेदनी मोह बूरो री॥ आउखो नाम कर्म, कर्मांतराय चूरो री ॥२॥ ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावर्णतणो री ॥ वेदनीय अंतराय, तीस कोमाकोमि नणो री ॥ ३ ॥ नामकर्म गोत्रकर्म, वीस कोमाकोमि हुवे री ॥ आयु सागर तेतीस, हिव मोहनीय थुवे री ॥ ॥ ४ ॥ सत्तर कोमाकोमि सागर मांन नणयो री ॥ ए उत्कृष्ट थिति जोम, केवली काल गणयो री ॥५॥ जघन्य स्थिति पंचकर्म, अंतरमुहुर्त्तपणो री ॥ नाम गोत्र दोय कर्म, आठ महुर्त्त गणो री॥ ॥ ६ ॥ अकषाय वेदनी वर्ज्य, वेदनो कर्म वदे री ॥ बारे महूरत मांन, शास्त्रानुसार सुदे री ॥ ७ ॥ नाणावरण अंतराय, पंच२ नेद जुदा री ॥ वेदनीय गोत्र कर्म, दो दो नेद उदारी ॥ ८ ॥ दर्शनावरण नव नेद, आयु च्यार विधे री॥ मोह कर्म अमवीस, सौ त्रिक नाम सधे री ॥ ९ ॥ एकसो अगवन्न, उत्तर प्रकृति कही री ॥ अष्ट करमना जांण, सवे विकल्प सही री ॥ १०॥ ढाल ॥ नण दल चुमले जोवन फिल रह्यो ॥ ए देशी ॥ पाटे सम ज्ञानावरण वे, दर्शनावरण प्रतीहार, नवियण कर्म विवेचन कीजिये ॥ मधुलिप्त असिधारानी परे, वेदनी कर्म सुदार ॥ नविय० ॥ १ ॥ मदिराछाक समान वे, मोह सुनट महराण, नवि० ॥ खोमे बंदीखांन सारखो, आयुकर्म प्रमाण॥ न०क० ॥२॥ चीतारे सम नांम कहीजे, गोत्र कुंनार समांन, न० ॥ श्रीघर नंमारी सम दाख्यो, अंतराय कुध्यांन ॥ नवि०क० ॥ ३ ॥ अष्ट कर्म ए नावना, वीर वदे व्याख्यान, न० ॥ कर्म संसार स्वरुप वे, अकरम सिद्धि सुथान ॥ नवि० क० ॥ ४ ॥ मिछ सासादन मिश्र अविरति, देसविरति प्रमत्त,

भ० ॥ अप्रमत्त गुण अंत सबीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ भ० क० ॥५॥ अपूरब अनिवृत्ति गुणमें, आयु वरज सत्त बंध, भ० ॥ सुक्ष्म संपराय दश्शम गणें, विन मोहायु षट खंध ॥ भवि० क०॥ ६ ॥ उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंध उदार, भ० ॥ अयोगी गुण चवदमें, नही बंधत कर्म द्वार ॥ भ० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु कह्या, मिथ्यात अविरत जोय, भ० ॥ क्रोध प्रमुख कषायथी, योग युगत च्यार होय ॥ भ० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमें, कर्म स्थिति पद लेय; भ० ॥ कर्म वेद पणवीसमें, कर्म प्रकृति वेद झेय ॥ भवि० क० ॥ ९ ॥ कम्मपयडी कर्मग्रंथमें, कर्मतणो निरधार, भ० ॥ बंध सत्ता उदीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ भवि० ॥ क० ॥ १० ॥ इकसो अठावन थया, चउत्थभत्त तप सार, भवि० ॥ तप उद्यापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ भवि० ॥ क० ॥ ११ ॥ अष्ट ज्ञानोपगरण भला, अष्टमंगल वृद्ध थाल, भवि० ॥ वात्सल्य चउविह संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ भ० ॥ क० ॥ १२॥ इम आराधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, भ० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम लही, शिवरमणी भरतार ॥ भ० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिनचंद सूरि मुणिंद खरतर गण ख शशि सम युगवरा, तासु वचनें स्तवन कीधो नयर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निध्येक वरषे विशद फाल्गुन द्वादशी, उवझाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयडी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवर नमी, पंच परमेष्ठि सार ॥ परम मंत्र नवकारनी, महिमा भणूं उदार ॥ १ ॥ ढाल १ ॥ मुनिवर आर्य सुहस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पूरवतणो, नव निधि सिधि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटी जास, संकट सब

टले, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अमसठ वरण विख्यात, सात गुरु अक्षर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप, जाये अरकरे, संपूरण पांचसैं मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर द्वीपार्द्ध, सिद्धावट गांम, पासे परबत कंदरा ए ॥ चोमासी पच्चरकांण, करने तिहां रह्या, दमसार नांमे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ भील भीलणी बेउ, मन सुध भावसुं, नवकार मुनि पासे भणी ए, बीजे भव राजसिंह, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रतनपुरी यसोभद्र, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी घणूं ए ॥ अति आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, महामंत्र गुण बहु भणूं ए ॥ ५ ॥ एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धर्यो ए ॥ नवकारने परभाव, सबल संकट टल्यो, सोनापुरसो तिण कर्यो ए ॥ ॥ ६ ॥ ढाल २ ॥ चरणकरणधर मुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुभ गामो जी ॥ सेठ सुभद्र तणी सुता श्रीमती, श्राविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ मिथ्यामते किण एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम न मूंके हणिये मन धरी, कलसमें मूंक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ साप फीटीने फूलमाला थई, महियल महिमा एहो जी ॥ पिउने कुटंब सहू प्रतिबूझव्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ क्षितिप्रतिष्टित बलराजा तिहां, इक दिन वूठो मेहो जी ॥ नदीपूर बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर भक्ष करे नरने तिहां, घे बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी जिनदाससेठनी, श्रावक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार भण बीजोरो ग्रह्यो, बूझव्यो व्यंतर छेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमणी खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितशत्रु राया,

भद्रा नांमे नारि सुहाया ॥ चंद्रपिंगल चोरयो नृप हारा, गणिका ने दीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहरयो हार ते जाणी, सूली दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पछतावे, चोर समीपे छानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रभावे वंछित लीधो, नृपने घर सुत थइ अवतरियो, पापी चोर एणे उधरियो ॥ ॥ ३ ॥ मथुरानगरी जिणदाससेठ, तिहां किण हुंमक पापनी छेठ ॥ एकदा चोरी करतां झाल्यो, राजा हुकमें सूली घाल्यो ॥ ४ ॥ हुंमक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार दीधो उपगार आंणी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणो ॥ ५ ॥ चंपानगरीमें जे कीधूं, सुभद्रा सती निकलंक प्रसीधुं ॥ श्रीनवकार प्रसाद ते जांणो, मनमें एहनी आसति आंणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥ भरतनृप भावसुं ॥ ए देशी ॥ अमावसि पूनिम करी ए, वीजली वांधी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृक्ष उपाडी चलावियो ए, अनुपम महिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ वाछरूया एक चारतो ए, नदिय प्रवाह्यो बाल, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो ततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ हत्या चार करी हवे ए, वली करया पाप अनेक, न० ॥ छुटकरबारो एहथी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥ ॥ ४ ॥ मंत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणे मनरंग, न० ॥ तीर्थंकर पद ते लहे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिन२ अधिकी संपदा ए, मनवंछित सुख थाय, न० ॥ दयाकुसल वाचक वरू ए, धर्ममंदिर गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका चोढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुभदिन गुरूके पास नवकारतप ग्रहण करे. जिस पदका जितना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उस पदका ।२००।

गुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ णमोअरिहंताणं ॥ उपवास ७ ॥ २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आयरियाणं ॥ उपवा वास ७ ॥ ४ । णमोउवज्झायाणं ॥ उपवास ७ ॥ ५ । णमोलोए सवसाहूणं ॥ उपवास ए ॥ ६ । एसोपंचनमोकारो ॥ उपवास ८ ॥ ७ । सवपावप्पणासणो ॥ उपवास ८ ॥ ८ । मंगलाणंचसवेसिं ॥ उपवास ८ ॥ ए । पढमंहवइमंगलं ॥ उपवास ए ॥ एसें नवकार मंत्रका ६८ उपवास करे ॥ किंकप्पतरु ॥ वर्द्धानवकार अथवा ऊपर लिखा सो स्तवन सुणे. तप पूर्ण होणेसें यथाशक्ति नवपदका उत्सव करे. चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रन्नावसें अनेक सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिय पयकमल सुन्नन्नाव सवि जिनतणा, पंच कल्याण दिण न्नणिसु जिनवरतणा ॥ कसिण कत्तीतणैं पखि पंचमि दिणें, नाण संन्नवतणौ खयकरम चिहुं तणें ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण सुरन्नवणथी बारसै, पउमपह जम्म वलि दिख तसु तेरसै ॥ वीर सिवमां वसैं पखि हिव ऊजलै, नाणसिरि सुविधि अर तीज बार सि मिले ॥ २ ॥ न्नास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमि यो, सोइ उठै रे संयमधर सुर पणमियो ॥ दसमी दिन रे वीरे सं- यम आदर्यौ, इग्यारसि रे उपमप्पह सिवसिरि वर्यौ ॥ सिर वर्यौ मिगसर सुदि दशमी दिण रयणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसैं वलि मल्लिजिणने जम्म दिख सुनाणीया, वलि मल्लि दिखा नाण उठै अंग पोसि वखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संन्ना वियै, कइ कोइ रे अवर हेतु पिण न्नावियै ॥ ते परि सवि रे गीता- र्थ सद्गुरु लहै, श्रुतकेवलि रे वचन सहु सम सद्दहे ॥ सद्दहे

सहूये ते प्रमाणजि वलि इग्यारसि नमितणौ, श्रीनाण कल्याणक चउद्दसि जनम संभवनों सुणौ ॥ पूनिमें संभव दिरक पांमी दया धरि जगजीवनी, हिव पोस वदि दसमी इग्यारस जनम दिरका पासनी ॥ ४ ॥ बारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, वलि तेरसि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशीतल थयो केवली, पोसह सुदि रे छठ विमल नाणी वली ॥ नाणी वलि थयौ नवमि संती अजितनाथ इग्यारसें, चवदसें अभिनंदनें केवल पूनिमें धम्मैं वसें ॥ माहाइ छठे पउम चवियो बारसें शीतल थयौ, वलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसह जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥ अम्मावसि रे दिवसें नाण इग्यारमें, जिन पांमी रे माहसुदें हिव अनुक्रमें ॥ सित बीजे रे अभिनंदन वासुपूजनों, कल्याणकरे जनम गंण अनुक्रम मनों ॥ अनुक्रमें मांनों बिहू त्रीजे विमल धरम सुजामिया, श्रीविमल दिरका चउथि अठमि अजित ज्रतपति पांमिया ॥ नवमियें दिरका अजित पांमी बारसें अभिनंदनें, श्रीधर्मनाथें सार संयमसिर वरि तेरसि दिनें ॥ ६ ॥ भास ॥ फागुण वदि छठे सुपास केवलसिरि पत्तो, सत्तम वलि तसु मुगति चंद्रप्रभु नाणें जुत्तो ॥ नवमि सुविह जिण चवण रिसह इग्यारसि केवल, बारस सुव्रय नाण जम्म सेयंसह निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि व्रत सिझंस तणो चवदसं वसुपुज, जम्म हुउ अम्मावसें ए तसु संजम रज ॥ सुकल बीज चउथि अठमियें अर मल्लि संभव, चवण सुबारसि मल्लि मुगति सुव्रय वय उछव ॥ ८ ॥ ( ढाल फागनी ) चैत्र पढम परिक चउथि नाण चवण पासस्स, पंचमि ससिपह चवण जम्म अठमि रिसहस्स ॥ वलि संजम पिण रिसहसांमि अठमि आदरियो, धवल तीज हिव कुंथुनाथने केवल फुरियो ॥ ९ ॥ पंचमि अजित अनंत अने संभवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नांण वलि पांम्यो सुमति ॥

॥ त्रिशलादेवें वीरनाह तेरसनिसि जायो, पूनिम दिन श्रीपदमना ह केवलसिरि पायो ॥१०॥ ज्ञास ॥ हिव वैसाख वदेंपमिवा दिन, कुंथु सिद्द शीतल बीजे दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ छठे, श्रीशी तल अवतरियो, दशमैं नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिक्खा नाण अणंतह, जनम हुउ श्रीकुंथु जिणंदह, वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अभिनंदन उत्तम, ध रमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्द चउछ ॥ १२ ॥ सुम तिनाथ अठमिये जायो, नवमें संयम सांमे पायो, गायो धरि आ णंद ॥ दशमें नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्वा मी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण पक्खि छठ, चवियो सेयंस, अठमी सुव्वय जनमियो ए ॥ नवमि सुगति सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सिव वय हुउ ए ॥ धरमनाथ सिव पत्त, धवली पंचमें, नवमें वसुपुज्ज अवतरयो ए ॥ श्रीसुपास जिण जम्म, बारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वरयो ए ॥ १४ ॥ ज्ञास ॥ हिवै असाढ वदि चउथि रिसहेस, चवण सत्तमिहि सिरि विमल ॥ मुक्ख नवमि नमि वय गहण, सेय छठे चवण ॥ वीरनो अठमि नेमि मुक्ख चवदसें श्रीवसुपुज्ज जिणंद, छ सय वर साधु कर परवरयो ए ॥ बहुतर वरस लख पुरि चंपापुरें, करमदणि मुग ति रमणी वरयो ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ श्रावण वदि हिव तीज मु गति सेयंसह पामिय, सत्तमि चविउ अणंतनाह अठमि नमि जा मिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुउ अह निम्मल बीजै, सुमति चवण पंचमिह नेमिजिण जम्म जणीजै ॥ १६ ॥ छठे मुनिवर ने- मि हुय, अठमि सीधो पास ॥ मुनिसुव्वय पूनिमरयणि, चविउ गु णमणि वास ॥ १७ ॥ ज्ञाद्रव वदि सत्तमें संति ससि चवण जव क्कय, अठमि ज्ञविय सुपास नवमि सुदि सुविध्र सिवंगय ॥ हिव

आसु वदि तेरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसर गर्भ ॥ हरण अम्मावसी ए, नाणी नेमीसर ॥ १८ ॥ पूनिम नमि जिणवर चविय, इण पर बारह मासि ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कल्याणक रासि ॥ १९ ॥ जिण चवण जन्म चरित्त केवल नाण शिव प्रापति दिनें, अरिहंत भत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मनें ॥ कल्यांण नीते कोमि पांमी अनुक्रमें सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी एह कल्याणक कहे ॥ २१ ॥ इम पांच भरते ऐरवत करि एक दिन जिनवरतणा, दस कल्याणक हुवे इण दिन सुर करे उछव घणा ॥ जिम हूआ ते तिम वली होस्ये पंच कल्याणक सदा, श्री पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २१ ॥ इति श्रीपंच कल्याणक स्तवनं ॥

॥ अथ ऋषिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ प्रथम आद्यंताक्षर संलक्ष० यह ऋषिमंडल स्तोत्र धूप दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रभात समय सुणें. ऋषिमंडलमें जो मूल मंत्र हे सो शुभ दिन शुभ घडी हाथमें फल फूल भेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. भेट धरके विनय संयुक्त मूलमंत्र गृहण करै. उसका ८००० आठ हजार जाप आठ महीनेमें करे. आंबिलकी शक्ति होय तो हमेस करै, नहीतो आठम चौदस दो आंबिल जरूर करे. आठ महीने बाद उजमणा करै. उजमणेके दिन एकसो आठ वेर सुणै. पीछे शक्ति होय तो विधि संयुक्त ऋषिमंडल स्थापन करायके पूजा करै. विशेष भक्ति करे तो २४ प्रकार पूजा करावै, गुरुभक्ती करे, साहमी वछल करै. विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ ऋषिमंडल सुणणेवाले पूजणेवाले भव्यजीवके घरमें कभी उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उछाह रहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल भरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

ऋषभ चरण अंगूठडो, दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का उसग्ग रह्या, विचरया देस विदेस ॥ खडां२ केवल लह्यो, पूजो जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥ कर कंडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमांन ॥ ३ ॥ मांन गयो दोय अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, भुजाबले भवजल तरया, पूजो खंध म हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसरांम ॥ ना भिकमलनी पूजना, करतां अविचल धांम ॥ ५ ॥ हृदयकमल उपशम बले, बाल्यो राग ने द्वेष ॥ हेम दहे वनखंडनें, हृदयक मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतूल, मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥७॥ तर्थिकर पद पून्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत, त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥८॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ॥ व सिया तिण कारण विभू, शिरशिखा पूजंत ॥९॥ उपदेशक नव तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध भावथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन दुहा ॥

॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवडा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमें परजा नमें, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंभे बांध्यो जल रहे, जल विन कुंभ न होय ॥ ज्ञानें बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे गुरुवाणी वेगला, रडवडिया संसार ॥ ३ ॥ भावें जिनवर पूजिये, भावे दीजे दांन ॥ भावें भावना भाविये, भावें केवलज्ञान ॥ ४॥ पांच कोडीनें फूलडे, पांम्या देश अढार ॥ राजा कुमारपालने, व रत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ अथ नव पदो के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुइ ॥

### ॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय२ श्रीअरिहंत भानु, भविकमल विकासी ॥ लोकालोक अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल रासी, शुक्ल चरम शुचि पादसें, भयो वर अविन्यासी ॥ ॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिनाम-तित्थं० नमोर्ह० ॥

### ॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं भंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥ अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥ बादरकायें मन वच भोग, तनु२सें फुन दृढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुक्ष्म कायतें मन वच रोक, निज वीर्यें ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥ संज्ञी मात्रके मन व्यापार, बेइंद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥ ॥ ३ ॥ एषां योगथी समयें एक, हीना संख गुणो कर छेक ॥ म० ॥ समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥ वेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें गुणमें गुण समै देव, आपो सा जगकूं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

### ॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणे करि पूरो जी ॥ ताजै भव थानक आराधी गोत्र तीर्थंकर नूरो जी, बारे गुणां करि एहवा अरिहंत आराधो गुण भूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुहिंनत भागी ॥ पुव्व पउयपसंग सैं, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो निगुण निरागी ॥ चेतनभूपे आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंशणनाणथी ए, रूपातीत स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीरधर्म, वंदे धरि शुभ भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ थांरे महिलां ऊपर मेह झरोखे वीजली ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मास हीना कोडी पूर्वमें, म्हारा लाल ही० ॥ उत्कृष्टो करै वास सयोगी धाममे, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजै भवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहै कर्म दलै गुण श्रेणिता, म्हा० दलै० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहै ते योगमें, म्हा० र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे नंगरभसें अक्रिय होयनें, म्हा० अ० ॥ पुव्व पयोग असंग स्वभाव अबंधने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इकु गुण नव परमाण योजन लहैं कही, म्हा० यो० ॥ वर्त्तुल विशदाभास निरालंबन सही, म्हा० नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मक्षी पंकथी हीन भणी सिद्धांतमें, म्हा० भ० ॥ ३ ॥ तनुपब्भारा नाम सिलासें जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें भाग अलोककुं स्पर्शनें, म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहणा, म्हा० प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणासें हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥ मिलिया एकमेंनंत अबाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि रम्य सिरिही जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो म नगहमें, म्हा० ध० ॥ कुशल भये जगजीव मिलोगा तेहमें, म्हा० मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद थुई ॥

अष्ट करमकूं धमन करीनें गमन किओ शिववासी जी, अ-

व्याबाधे सादि अनादि चिदानंद चिद्रासी जी ॥ परमातमपद पूरण विलासी अघ घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टमय शिव पद ध्यावो केवलज्ञानी ज्ञासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद थुई ॥

॥ अथ तृतिय आचार्य पद चैत्यवंदन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥ प्रबल सबल घन मोहको, जिणतें चमुहारी ॥१ ॥ ऋज्वादिक जिनराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ भवकूपें पापें पम्त, जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं वंदे हीरधर्म, अठोतर सो वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदल वींदली ये ॥ ए चाल ॥

खंती खम्गथी जेणे, हणयो क्रोध सुभट सम देणे हो, गण पति गुणपेखी ॥टेर॥ मान महा गिरि वयरे, अति शोभन मद्दव वयरे हो॥ ग० ॥१॥ दंभरूप विसवेली, वर अज्जवकीलै ठेली हो ॥ ग० ॥ मुर्छावेलथी भरियो, लोहसागर मुत्तें तरियो हो ॥ ग० ॥२॥ मदन नाग मद हीनो, जिण दमसम जंत्रे कीनो हो॥ ग० ॥ मोह माहा मल्ल ताड्यों, पुण वैराग मुगरें पाड्यो हो ॥ ग० ॥३॥ दोस गयंद वस कीनो, धर उपशम अंकुस लीनो हो॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु भेद्या, सुरवर पिण जिण सेवा हो॥ ग० ॥४॥ रस कति गुणथी लीणो, सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरो जीव कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद थुइ ॥

॥ पंचाचारकुं पालै उजवालै दोष रहित गुणधारी जी, गुण वत्तीसे आगमधारी द्वादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन मोह हरणकूं अनिल समो गुण वाणी जी, क्षमा सहित जे संजम पालै आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति थुइ ॥

॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

॥ धन धन श्री उवझाय राय । सगता घन भंजन । जिन वर दिसत डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण भं जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंब लोय लोयणें । जत्थय सुय मंजण॥२॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए।आगमसें पद तुर्य । तिनपें अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांवलिया अलगा रहोनें ॥ ए देशी ॥

॥ हुयने२ दूरी हुयने, चेतन भाषे सगने, दूरी हुयने ॥ तुं मुझ पास क्यूं आवै, दू० ॥ तुझनें कुण बतलावे, दू० ॥ ए आंकणी ॥ तो संगे निज पंचेंड्रीनो, रचना चरम भुलाणो ॥ नाणावरणी खयउवसमसें, भावेंद्री मंझाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ इव्यै ते परजासे कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किण कर्में उपदेश ॥ दू० ॥२॥ इत्यादिक बहु मुझकुं संका, तेरे संगे लागी ॥ नीलवर्णकी समता सेती, में भयो तोसुं रागी॥ दू० ॥ ३॥ उप कहिये हणियो भवियानो, अधियां लाभत आय॥ आवीनांमन पीझानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर आगम, सूत्रसें ते उवझाय ॥ तत् सेवातें हणि सगताकूं, चेतन कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद थुइ ॥

॥ अंग इग्यारै चवदै पूरब गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र अरथधर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूरा आगम पूरा नय निक्षेपै तारी जी, मुनिगुण धारी बुध विस्तारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद थुइ ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवंदनं ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुक्ल शुचि चक्रसें, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्ततें,

भये अंतरजामी ॥ मानस इंद्रिय दमनभूत, समदम अभिरामी ॥ २ ॥ चारुति घन गुणगण भरयो ए, पंचम पद मुनिराज ॥ तत्पदपंकज नमत है, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ मालन२ मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकषाया जगजन कहे, धारै चउगति वसनसें रोस हो, मुनिंदजी ॥ राग हीण भय तूं करै, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो मुणिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहै, सा० उठै पूरब कोम हो मु० ॥ शत सोगम आगम करै, सा० लघु कालै गुण आदि हो मु० ॥ २ ॥ स्त्यानद्धीनिद्रा उदै, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रच लानिद्रामें रही, सा० बारम गुणानो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थि ति रस घात प्रमुख धरै, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो मु० ॥ ॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपथें, सा० साधन पर वर जीव हो मु० ॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु भवतु जगतीव हो मु० ॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद थुइ ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पालै दोष बयालीस टालै जी, षट् काया गोकुल रखवालै नव विध ब्रह्मव्रत पालै जी ॥ पंच महाव्रत सूधा पालै धर्म शुक्ल उजवालै जी, क्षपकश्रेणि कर कर्म खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुग्गल परियट्ट, अद्ध परमित संसार ॥ गंठिभेद तव करि लहै, सब गुण आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शशि असंख, उवसम पण बार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुवै शिव दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लछन अभिरांम ॥ दरसनकुं गणि हीरधर्म, अहनिस करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके बाग आंबो मोहि रह्यो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साध जएयो री ॥ धर्म जिनेश्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाजके काज सप्तम नरक जलो री ॥ तेण विना सुरलोक, तातें अधिक बुरो री ॥२॥ मिथ्या तापे तप्त, बोधही गंह लहेरी ॥ उपशम क्षायक वेद, ईश्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ जवसायर है अपार, फुण अस्ताघ कह्यो री ॥ जसु लाजे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद जावे अप्रमाण, नाण चारित्र जलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाजें कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अथ दर्शनपद थुई ॥

॥ जिनपन्नत्ततत्त्व सूधा सरधै समकित गुण उजवालै जी, जेद वेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावै जी ॥ प्रत्याख्याने सम तुल्य जाख्यो गणधर अरिहंत सूरा जी, ए दरशनपद नित२ वंदो जवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ जाव मिलापसें जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ जव गुण पज्जवि उहि दोय, मण लोचन नांण ॥ लोकालोक स्वरुप जाण, इक केवल जांण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नांण प्रकाश ॥ सप्तम पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर जाषित आगम जणिया, तत्व यथास्थित गमिया जी ॥ म्हारे जगजन तारू ॥ ते उत्तम वर नाण कहाये, जविजन अहनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जकाजक कुपंथ सुपंथा, पेयापेय अग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जाणे जेम विचारे जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुते मति दोय छे इंद्री सारू,

तेण परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ उही मण केवल है वारू, जीव प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयविजस्स वलें जग जाणें, लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिनुवन पूजे जासु पसायें, धारी शुन्न अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम क्षयथी, चेतन नाणकुं विलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें नवि जन हरखे, निसदिन कुशलता निरखै जी ॥ म्हां० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद थुई ॥

मति श्रुति इंडी जन्नित कहियै लहियै गुण गंन्नीरो जी, आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि मनपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकूं वंदो पूजो न्नविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्स पसायें साहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ नमन करै शुन्न न्नाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दै सुरक अमंद ॥ २ ॥ इखु कृति मान कसायथी ए, रहित लेस सुचिवंत ॥ जीव चरित्तकूं हीर धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदान्नास निरसंग ॥ सुग्यानी सान्नलो ॥ टेर ॥ मूर्त्ति हीन चेतन करै, रूपी पुदगल रंग ॥ सु० ॥१॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा, कार्यें कारण न्नाव ॥ सु० ॥ कृत्वा जोगसुधामता, लन्धा संख स्वन्नाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जोगमें, वृद्धि लहे जगमान ॥ सु० ॥ मध्यें वसु समयें लहे, अंते हौते जाण । सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥ सु० ॥ प्राप्ता घस्र प्रकारता, सप्त प्रन्नृतका तेन ॥ सु० ॥४॥ तह्ने घन रूपी न्नलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर घन मिल पद

धर्ममें, कुशल भवतु अभिराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ अथ चारित्रपद थुई ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावे जी, बारे भावना सूधी भावै सागर पार ऊतारै जी ॥ खट खंम राजकूं दूर तजीनें चक्री संजम धारै जी, एहवो चारित्रपद नित वंदों आतम गुण हितकारै जी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव सिव जाण ॥ बिहि अं तेरपि बाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर मित आमो स ही, आदिक लब्धि निदान ॥ भेदै समता युत खिणें, हग्घन कर्म विमान ॥२॥ नवमो श्रीतपपद भलो ए, इच्छारोध सरूप ॥ वंदनसें नित हीरधर्म, दूर भवतु भवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ बारस भेद भएया जिनराजे, बाह्य मध्यतणा जग काजें रे ॥ म्हारे शिवपदश्रेणि ॥ ए आंकणी ॥ तिण भव सिद्धितणा वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्त्ता रे ॥ म्हारे शि० ॥ १ ॥ स मता सहितें जिनतें भारी, भली कर्मचमु पिण हारी रे ॥ म्हारे शिवपदश्रे० ॥ जीव कनकसें कर्म कचोरा, दहे तप पावकका जोरा रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम हे ऋद्धि, देव नरनी फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल हे तमनी रासी, तप भानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्स पसायें लहियें वारू, लब्धा सगली जगहितकारू रे ॥ म्हा० ॥ अति दुक्कर फुन साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ इच्छा रोधन रूपी कहिये, तपपदही चैतन वहिये रे ॥ म्हा० ॥ पाठक श्रीहीरधर्म कृपासे, नवपद कुसलाकूं भासे रे ॥ म्हारे शि० ॥५॥ इति॥

॥ अथ तप पद थुई ॥

इच्छारोधन तप ते जाख्यो आगम तेहनो साखी जी, द्रव्य जावसे द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण परणित पेखी तेहिज तपगुण दाखी जी, लबधि सकलनो कारण देखी ईश्वर सें मुख जाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन स्तुति ॥

श्रीमदृषज सर्वज्ञ, वृषजांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देवाद्दा, नाजिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ युगस्यादौ त्वयायेन, ज्ञानत्रय युते न यत् ॥ जनन्या मरुदेवायाः, पावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति ऋषज स्तुति ॥ अर्हताजितनाम्नेन, गज लांछन शालिना ॥ जितसत्रु महीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि रत्नेन, जगवंस्त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोयेन, वंदेत्वां सर्वज्ञ मुदा ॥ ४ ॥ इत्यजित स्तुति ॥ जितारिनृपतेर्वर्यात्, संजवः संजवाजिधः ॥ सेनाया नंदनो हेम, वर्णो गंधर्व्व लांछनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य, ज्ञान दर्शन संयुतः ॥ मुनीनां पुंगवो देवो, नित्यं दिसतुमांजिनः ॥ ॥ ६ ॥ इति शंजव स्तुतिः ॥ सिद्धार्था नंदनं सार्वं, वीतरागं जगत्पतिं ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, प्लवगांकं हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अजिनंदन नामानं, विशुद्ध हृदयं तदा ॥ यस्तौति परया जक्त्या, सनालोकेजि नंद्यते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेघाजिध धरि त्रोस, तन यो मंगलप्रदः ॥ क्रौंच लक्षण जृत्हेम, मरीचिर्मंगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं सुमतिनामेश ॥ सुमतिं तनु सत्तमां ॥ जविनां पुण्य कर्तृणां, स्वर्ग सौख्या वलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र सत्कोक, नवद्युति धराधर ॥ धराजिव नृपेक्षुनः, पद्म लक्षण धारकः ॥ ११ ॥ जवाब्धौ जव संकीर्णे, डुस्तरे पततां नृणां ॥ त्राणाय सततं देव, पद्मप्रज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वाभिधोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकभृत् ॥ प्रतिष्ठ नृप संजात, श्चामीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र इव गंभीरः, कर्माणां छेदने परः ॥ यः सार्वः परमब्रह्मा, स्तं नौमि सदा विभुं ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंद्रप्रभ प्रभोकांत, चंद्र लक्षण संयुतः ॥ तमापतिश्च विज्ञाम, तमोव्यूह विंनाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोभव ॥ लक्ष्मणा पुत्रमां स्वामि, भव केवल बोधभृत् ॥१६॥ इति चंद्रप्रभु स्तुति ॥ ( अत्राद्यश्छत्रबंधः श्लोकः )॥ संस्तुतोबोदवस्वाङ्गु, सुरासुरनरेश्वरैः ॥ सुविधिर्वांछितशर्म्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननीरामा, माननीयादिवौकसां ॥ मानमुक्तोवदातोयो, मायौमकरलांछिनः ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ ( चामरबंधाविमौ )॥ श्री मच्छीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः॥भास्वत्सुवर्णवद्देह, श्रीवत्सांक्षांकधारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांभोज, सेवकानांवपुर्भृतां ॥ प्राकृकृतवृंजनव्यूहं ॥ डुष्टंशंभोयहेविभो ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तुतिः ॥ विष्णुर्वंशार्कवद्देवो, विष्णुपुत्रोहिरएयभः ॥ श्रेयोवृद्धिकरोजस्रं, खड्गलांछिनभृज्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुन्सार्वे, श्रेयांसश्रेयसैः सेह ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदंपरं ॥ २२ ॥ इति श्रेयांस स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरीवार्तितरामीहा, भवतांश्यदि ॥ झटितिछेदितुंचित्ते, भोभव्याः प्राप्तुमक्षरं ॥ २३ ॥ तदाभजध्वमेनंहि, वासुपूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिषांकंचरक्तभं ॥ २४ ॥ इति वासपूज्य स्तुतिः॥ १२ ॥ श्रीमद्विमलनाथेंद्र, कृतवर्मसमुद्भवः ॥ शूकरांकधरस्यामा, पूत्रकल्याणदीधिते ॥२५॥ चंद्रवद्विमलज्ञान, त्वदंघ्रिस्मरणंविना ॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्म, प्रक्रियांनातिविस्तरां ॥ २६ ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ हेमवर्णस्यपूत्रस्य, सुयशःसिंहसेनयोः ॥ देवस्यश्येनचिह्नस्य, वर्धानन्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ ईशाद

योपियस्यांतं, गुणानांलेभिरेनहि ॥ अनन्तस्यगुणान्तस्य, क्रमोवक्तुं नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनंत स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापुत्रवज्रांक, भानुवंशार्कसन्निभः ॥ कनकप्रभसर्वज्ञ, धर्मनाथाभिधेश्वरः ॥ २९ ॥ तवागोपिपुरश्चारी, भूतलेयास्यशोकतां ॥ अनुचरफलाः संति, सतं संगतयोपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधीसं, नन्दनंमृगलक्षणं ॥ आचिरेयंसुवर्णानां, कलायामिजिनेश्वरं ॥ ॥ ३१ ॥ तंश्रीमच्छांतिनामानं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राज्यांसुमनसां वृष्टिं, विबुधाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः ॥ श्रीसुतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करहिरण्यभ ॥ सूरिभूपतिसंजात, छागलक्षणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंथुनाथजिनेशस्य, तीर्थंकरजगत्पते ॥ मदीयं पापसंदोहं, भवांतरकृतंयनं ॥ ३४ ॥ इति कुंथुनाथ स्तुतिः सुदर्शननृपोद्भूतं, नंदावर्त्तांकसंयुतं ॥ अंभोजवन्निरालेपं, देवीपुत्रसुवर्णभं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्वे, धुर्य्यंप्रभुतयाजिनं ॥ चरीकर्म्मिनमस्तस्मा, अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १८ ॥ कुंभप्रभावतीपुत्रौ, नीलवर्णोघटांकभृत् ॥ जगन्मित्रइवध्वान्त, नाशनाद्दिदितःसदा ॥ ३७ ॥ छत्रत्रययुतोभाति, देवयोविष्टपत्रये ॥ तस्यश्रीमल्लिनाथस्य, स्मरसेनमुदासखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिनाथ स्तुतिः ॥ सुमित्रनृपतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कुर्म्मलक्षणभृद्धर्म्मं, दायकस्यामलश्रये ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणकर्म्मारिमंगल ॥ देहित्वंमेव्ययीभावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमद्विजयभूपाल, कुलोत्तंसहिरण्यरुक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकभृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते पंचजनोदेव, निन्दाचकुरुतेश्वयं ॥ सएतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्रसंशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेवर्ये, समुद्रविजयोभवे ॥ हरिवंसहरौशंभौ, शंखांकेकमलप्रभे ॥ ४३

॥ त्यक्तराजीमतीस्नेहे, नेमनाथेजितेस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदयामाला, प्रत्यक्षेपिजिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः ॥२२॥ अश्वसेनाक्षनूपाल, सुतेनपरमेष्ठिना ॥ वामेयेनहितायेन, कमठस्याभिमानता ॥ ४५ ॥ तस्मैश्रीपार्श्वनाथाय, नमोस्तुमामकंसदा ॥ पवनासनचिन्हाय, नीलवर्णायसंभवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥ श्रीमत्सिद्धार्थवंशर्क्के, त्रिशलेयजगत्मणे ॥ महानादध्वजार्हत, कल्याणंकरसर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थकृद्वीर, मोहेभदहनेमृगात् ॥ त्वभक्तिदत्तचित्ताय, कमलांदेहिमेजिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभुस्तुतिः ॥२४॥ इति श्रीक्षमाकल्याणोपाध्याय कृत चतुर्विंशति जिन स्तुतिः॥

अथ नवपदजीके उलीके देववंदनमें कहणेका चैत्यवंदन पहली लिखा है ॥ ॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमां, नवपद अभिरामी रे लोय ॥ अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधी, जग अंतरजामी रे लोय ॥ अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी, थया सिद्ध सरूपी रे लोय ॥ अहो थ० ॥ सिद्ध नमो भवि भावथी, जे आगम अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण छत्तीसे सोभता, सुंदर सुखकारी रे लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारज तीजै पदै, वंदू अविकारी रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप दु विध आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोथे पद पाठक नमो, संवेग समाधी रे लोय ॥ अ० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालण परा, पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमुं दृढ़भागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनें उलखै, श्रुत श्रद्धा आवे रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ छठे गुण दरसण नमो, आ-

तम शुभ भावे रे लोय ॥ अ० भा० ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ८ ॥ आठमें चारित्रपद नमो, परभाव निवारी रे लोय ॥ अ० प० ॥ खंत्यादिक दस धर्मनो, जेह छे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ९ ॥ नवमे वलि तपपद नमो, बाह्याभ्यंतर भेदे रे लोय ॥ अ० बा० ॥ बांध्या काल अनंतना, जे कर्म्म उछेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानथी, ध्यावै शुभ भावै रे लोय ॥ अ० ध्या० ॥ नृप श्रीपालतणी परे, मन वंछित पावै रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥ आसू चैत्रक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥ नव उली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि० ॥ ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परे, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ० ॥ व० ॥ श्रीजिनलाभ कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अ० ॥ अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

तीरथनायक जिनवरू जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप ॥ भविक मन धारज्यो रे ॥ धारज्यो नवपद ध्यान ॥ भ० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गणधरू रे, गुण छत्तीस निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरू जी, श्रुत दायक सुविलास ॥ भ० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोभता जी, साधू समतावंत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश अनंत ॥ भ० ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण छे रे, तप उत्तम विधि होय ॥ ए नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥ भ० ॥ ४ ॥ अमृत सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनुभव कारणे जी, नितप्रति नमत कल्याण ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्यान धरो रे, भविका न० ॥ मन वच काया कर एकंते, विकथा दूर हरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जन्री अरु तंत्र घणे रा, इन सबकूं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य भंडार भरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अष्टसिद्ध नवनिधि मंगलमाला, संपति सहज वरो रे ॥ लालचंद याकी बलिहारी, सुरतरु बीज खरो रे न० ॥ ३

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीवा चतुरसुजाण नवपदके गुण गाय रे, जी० ॥ नवपद महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो अपणे आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी० ॥ करम निकाचित दूर करणकूं, सुंदर शुद्ध उपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इनको पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद थाय रे ॥ जी० ॥ इण जिन भए आगामी होंयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत सिद्ध उर आचारज, उवझाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व साधू मंगल ए पांचू, याहीसें दिल रमो२ ॥ जि० ॥ दरशन ज्ञान चरण तप उत्तम, याहीसें दिल दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज भज नवपदकूं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाल कहे यही सार जगतमे, उर द्वार मत भमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणमुं सिद्धचक्र शुभ भाव, हिव कारज सिद्धिनो लाधो एह उपाय ॥ तुझ नाम पसायें आरति व्याधि पुलाय, इण तुझ अनुग्रहथी सुख संपति मुझ थाय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत नमियै सिद्ध सूरी उवझाय, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुहाय ॥

ड्डग विधि चारित्रें वुध विध तप मन जाय, ये नवपद ध्यावता नि रुपम शिवसुख थाय ॥ २ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री गुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे जाष्यो एह विचार, जविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजंमार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्केसरि सुखकार, सेवकनें आपे सुख संपति परिवार ॥ हिव निद्धि उदय करि चारित्रनंदी मम जाय, जिनचंद सूरीसर खरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

( प्रथम ) आसो सुदि ७ अथवा चैत्र सुदि ७ सें उली सरू करे, कजी तिथि घटी होय तो ६ सें सरू करे, वढी होय तो ८ सें सरू करे, लेकिन आंबिल ९ पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध करके मांमणादिकसें चित्रित करे, पीछे पट्टे पर सिद्धचक्र थापके त्रिकाल पूजा करे. प्रजातसमें राइपमिक्कमणा करके पीछे वस्त्रोंकी पमिलेहणा करे. जहां सिद्धचक्रकी थापना हे उहां आयकें पांचे शक्रस्तवे देव वांदे, पीछे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव चैत्यवंदन करे, वासक्षेप पूजा करे, पीछे केसरचंदनसें पूजा करे. गुरु पास आयके अब्जुट्ठिमिके पाठसें राई आलोवे, आंबिलका पच्चक्खाण करे. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग हे इस वास्ते चावलोंसें उर गरमपाणीसें आंबिलका नियम करे. पीछे अरिहंतके बारे गुणोंको विचार कर नमस्कार करे, सो लिखते हें. सब गुणोमें इछामिखमासमणो वं० पाठ कहिके नमस्कार करे ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
६ ज्ञामंमल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
७ डुंडुन्नि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
८ छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
१० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
१२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥इतिद्वादसअ० गु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नत्थूससियेणं कहिके १२ लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे, पीछै स्वस्थानक जा के चैत्यवंदन करै, पच्चखाण पार के आंबिल करै. पहले वखत जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीछै मध्याह्न समय पांचे शक्रस्तवे देव वांदे. गुणनो (२०००) ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ इस पदका करै. श्रीपालचरित्र सुणे. पूरा पहर दिन रहणेसें तीसरी वेर पांचे शक्रस्तवे देव वांदे. पीछे फेर चैत्यवंदन कर के तिविहार पच्चखाण करे पाणहारका । फेर सामायक ले के दिन रहते प्रतिक्रमण करै. आरती के वखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पहले आरती वगेरे करके पीछै पमिक्कमणा करै. ( सोणे के वखत ) पहले इरियावही पमिक्कमके चैत्यवंदन करै, फेर र.इ संथारा गाथा सुणें ॥ निद्रा नही आवे जहां तक नव गुण स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितिय दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ अब इसी मुजब दूसरे दिन प्रन्नात समे की सब करणी पहले मुजब करके सिद्धपदका लाल रंग हे इस वास्ते गेहूंकी रो-

टीसें आंबिल करै॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हजार गुणना करै. सिद्धपदका ८ गुण हे. ८ नमस्कार गुरु करावै सो लि०॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

१ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥

२ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥

३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥

४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥

५ अक्षयस्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥

६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥

७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥

८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टौगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नत्थूससि० कहके आठ लोगस्सका काउसग्ग करै, एक लोगस्स प्रगट कहे. फेर पूर्वोक्त करणी करै ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसें प्रभात कर्त्तव्य करै. आचार्यपद पीले वर्ण हे इस वास्ते चणाकी दालका आंबिल करै ॥ ॐ ह्रीं णमो आयरिआणं ॥ इस पदका दो हजार जाप करै. आचार्यके ३६ गुण हे. छत्तीस नमस्कार गुरु करावे सो लिखते हे ॥

॥ अथ आचार्य छत्तीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥

२ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥

३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥

४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

५ गांभीर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥
८ अपरिश्रावीगुण संयुताय श्रीआ० ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१२ अविकथकगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१५ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ॥
१६ मृदुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१८ रुजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१९. द्वादस विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२३ अकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२५ अनित्य भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२६ असरण भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२७ संसार स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ०
२८ एकत्व स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२९ अन्यत्व भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३० अशुचि भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३१ आश्रव भावना भावकाय श्रीआ० ॥

३२ संवर भावना भावकाय श्रीआ० ॥

३३ निर्जरा भावना भावकाय श्रीआ० ॥

३४ लोकस्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ॥

३५ बोधदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ॥

३६ धर्मदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ॥ इतिषट्त्रिंसत् आ०

॥ यह छत्तीस नमस्कार करके अन्नत्थूससि० कहके छत्तीस ३६ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहे. पूर्वोक्त करणी क्रमसें करै. इति तृतिय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ॥ इस पदका २ हजार जाप करै. हरेमूंगका आंबिल करै. उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके नमस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

१ श्रीआचारांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥

२ श्रीसुयगडांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

३ श्रीठाणांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०

४ श्रीसमवायांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

५ श्रीभगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

८ श्रीअंतगडदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

९ श्रीअणुत्तरोववाइसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१३ आग्रायणीपूर्व पठनगुण यु० ॥
१४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥
१५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु०
२१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२२ अविंध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२३ प्राणायामप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२४ क्रियाविसालपूर्व पठनगुण यु० ॥
२५ लोकबिंदुसार पठनगुण यु०॥ इति पंचविंशत्योपाध्यायगुणाः॥

इस तरे २५ नमस्कार करे. खमा हो के अन्नत्थू० कहके २५ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुणना करे. साधुपद काले वर्ण हे इस वास्ते उम्दद के बाकलोसें आंबिल करे. सर्व साधूपदके सत्ताईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करे॥

॥ अथ साधुपदके २७ गुण लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

५ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
६ रात्रिन्नोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा०॥
७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
९ तेउकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१० वाउकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१३ एकेंडीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१४ बेइंडीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१५ तेइंडीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१६ चोइंडीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१७ पंचेंडीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१८ लोन्न निग्रहकाय श्रीसा० ॥
१९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ॥
२० शुन्नन्नावना न्नावकाय श्रीसा० ॥
२१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥
२२ संजमयोग युक्ताय श्रीसा० ॥
२३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२५ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२६ सीतादि द्वाविंशति परीसह सहण तत्पराय श्रीसा० ॥
२७ मरणांतउपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥ इति साधुगुण॥

इस वजे २७ नमस्कार करे, २७ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहिके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करे. यह पंच पर

मेष्टि पदके सब गुण मिलाणेसें १०८ होता हे, इस वास्ते मालामें एकसो आठ मणिये होते हे ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ट दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं णमो दंसणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. दर्शनपद सपेद वर्ण हे इस वास्ते चावलोंका आंबिल करे. सम्यक्तके सम्सठ गुण चिंतवकर नमस्कार करे ॥

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसद्दर्शनाय नमः॥
२ परमार्थ ज्ञातृसेवनारूप सद० ॥
३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सद० ॥
४ कुदर्शन वर्जनरूप सद० ॥
५ शुश्रूषारूप सद० ॥
६ धर्मरागरूप सद० ॥
७ वैयावृत्तरूप सद० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद० ॥
१२ धर्म्मविनयरूप सद० ॥
१३ साधूवर्ग विनयरूप सद० ॥
१४ आचार्य विनयरूप सद० ॥
१५ उपाध्याय विनयरूप सद० ॥
१६ प्रवचन विनयरूप सद० ॥
१७ दर्शन विनयरूप सद० ॥
१८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूप सद०॥
१९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूपसद० ॥

२० संसारे जिनमत स्थित साध्वादि सारमिति चिं० ॥

२१ शंकादूषण रहिताय सद० ॥

२२ कांक्षादूषण रहिताय सद० ॥

२३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय सद० ॥

२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषण रहिताय सद० ॥

२५ तत्परिचय दूषण रहिताय सद० ॥

२६ प्रवचनप्रज्ञावकरूप सद० ॥

२७ धर्मकथाप्रज्ञावकरूप सद० ॥

२८ वादीप्रज्ञावकरूप सद० ॥

२ए नैमित्तिकप्रज्ञावकरूप सद० ॥

३० तपस्वीप्रज्ञावकरूप सद० ॥

३१ प्रज्ञप्त्यादिक विद्याज्ञृत्प्रज्ञावक सद० ॥

३२ चूर्णअंजनादि सिद्धप्रज्ञावक सद० ॥

३३ कविप्रज्ञावकरूप सद० ॥

३४ जिनसासने कौसलता ज्ञूषण सद० ॥

३५ प्रज्ञावनाज्ञूषणरूप सद० ॥

३६ तीर्थसेवाज्ञूषणरूप सद० ॥

३७ स्थैर्यताज्ञूषणरूप सद० ॥

३८ जिनसासने ज्ञक्तिज्ञूषणरूप सद० ॥

३ए उपशम गुणरूप सद० ॥

४० संवेग गुणरूप श्रीस० ॥

४१ निर्वेद गुणरूप श्रीस० ॥

४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥

४३ आस्तिका गुणरुप सद० ॥

४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सद० ॥

४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सद्द० ॥
४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सद्द० ॥
४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप स० ॥
४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥
४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥
५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥
५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्वारमिति चिंतन श्रीसद्द० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५९ चारित्रधर्मस्याधारमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
६० चारित्रधर्मस्य भाजनमिति चिंतनरूप स० ॥
६१ चारित्रधर्मस्य सन्निभमिति चिंतवनरूप स० ॥
६२ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसद्द० ॥
६३ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सद्द० ॥
६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० स० ॥
६५ सचजीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० स० ॥
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०
६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०॥इति स०॥

॥ इस वजे सरूसठ नमस्कार कर खमा हो के अन्नबू० कहके

६७ लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहके पारै. पीछै पूर्वोक्त करणी करै. इति षष्ट दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै. ज्ञानपद उज्वल वर्ण, तंडुलका आंबिल करै, इकावन भेद ज्ञानपद के चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

१ स्पर्शनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
३ घ्राणेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
४ श्रोत्रेंद्री व्यंजनावग्रह मति० ॥
५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
७ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
१० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
१२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
१३ घ्राणेंद्रीईहा मति० ॥
१४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
१५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
१६ मनेकरीईहामति० ॥
१७ स्पर्शनेंद्रीअपाय मति० ॥
१८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
१९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥

२० चक्षुरिंद्रीअपाय मति० ॥
२१ श्रोतेंद्रीअपाय मति० ॥
२२ मनैनापाय मति० ॥
२३ स्पर्शनेंद्रीधारणा मति० ॥
२४ रसनेंद्रीधारणा मति० ॥
२५ घ्राणेंद्रीधारणा मति० ॥
२६ चक्षुरिंद्रीधारणा मति० ॥
२७ श्रोतेंद्रीधारणा मति० ॥
२८ मनोधारणा मति० ॥
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३२ असंज्ञी श्रुत० ॥
३३ सम्यक् श्रुत० ॥
३४ मिथ्या श्रुत० ॥
३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥
३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥
३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥
४० अगमिक श्रुत० ॥
४१ अंगप्रविष्ठ श्रुत० ॥
४२ अनंगप्रविष्ठ श्रुत० ॥
४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४५ वर्द्धमान अवधि० ॥

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः ।

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः॥इति पंच ज्ञा०॥

इस तरे ५१ नमस्कार करै, खड़ा होके अन्नत्थू० कहके एकावन लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहके पारे. पीछै पूर्वोक्त करणी करे. इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अब अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. चारित्र पदका उज्वल वर्ण है, इसोसें तंडुलका आंबिल करे. सत्तर भेद चारित्रपदके चिंतवके नमस्कार करे.

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राय नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्म्मरूप चारित्रेभ्यो नमः॥

७ आर्यवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृदुताधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

११ संयमधर्म्मरूप चारि० ॥
१२ सत्यधर्म्मरूप चारि० ॥
१३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
१४ अकिंचनधर्मरूप चा०
१५ बंभ्रधर्मरूप चारि० ॥
१६ प्रथ्वीरक्षासंयम चारि० ॥
१७ उदगरक्षासंयम चारि०
१८ तेऊरक्षासंयम चा० ॥
१९ वाऊरक्षासंयम चारि० ॥
२० वनस्पतिरक्षासंयम चारि० ॥
२१ वेइंद्रीरक्षासंयम चारि०
२२ तेइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२३ चौइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२४ पंचेंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२५ अजीवरक्षासंयम चारि० ॥
२६ प्रेक्षासंयम चारि० ॥
२७ उपेक्षासंयम चारि० ॥
२८ अतिरक्तवस्त्रअन्नादि परठन त्यागरूप संयम चारि० ॥
२९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
३० मनसंयम चारि० ॥
३१ वाक्संयम चारि० ॥
३२ कायासंयम चारि०
३३ आचार्य वेयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३४ उपाध्याय वेयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३५ तपस्वी वेयावृत्यरूप संयम चारि० ॥

३६ लघुशिष्यादि वेयावृत्यरूप संयम चा०॥
३७ गिलाणसाधु वेयावृत्यरूप संयम चा० ॥
३८ साधु वेयावृत्यरूप संयम चा० ॥
३९ श्रमणोपासक वेयावृत्यरूप संयम चा०॥
४० संघवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४१ कुलवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४२ गणवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४३ पशुपंमगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जनरुप चारि०॥
४७ कुड्यंतरसहित स्त्रीहावभाव सुणन वर्जन ब्र०
४८ पूर्वस्त्रीसंभोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०
४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५१ अंगविभूषावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५२ अणसण तपोरूप चा०
५३ ऊणोदरी तपोरुप चा० ॥
५४ वित्तसंखेवरुप चा० ॥
५५ रसत्याग तपोरुप चा० ॥
५६ कायकिलेस तपोरुप चा० ॥
५७ संलेखणा तपोरुप चा० ॥
५८ प्रायच्छित्त तपोरुप चा० ॥
५९ विनय तपोरुप चा० ॥
६० वेयावच्च तपोरुप चा० ॥

६१ सिज्झाय तपोरूप चा० ॥

६२ ध्यान तपोरुप चारि० ॥

६३ उपसर्ग तपोरुप चा० ॥

६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥

६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥

६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥

६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥

६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥

६९ माया निग्रहकरण चा० ॥

७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रभेदाः ।

॥ इस तरै ७० नमस्कार करै. खमा दो के अन्नत्थूससि० ७० लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे. पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं णमो तवस्स ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै. तपपदका उज्वल वर्ण इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै. पच्चास भेद तपपदके चिंतवं के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥

२ इत्वर तपभेद तपसे नमः ॥

३ बाह्यउणोदरी तपभेद तपसे नमः ॥

४ अभ्यंतरउणोदरी तपभेद त० ॥

५ द्रव्यतपवृत्ती संखेप तपभेद त० ॥

६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

७ कालतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

८ भावतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

ए कायकिलेस तपभेद तप० ॥
१० रसत्याग तपभेद तप० ॥
११ इंद्रीकषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥
१२ स्त्री पशु पंडकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त०॥
१३ आलोयणा प्रायच्छित्त तप० ॥
१४ पडिक्कमणा प्रायच्छित्त तप० ॥
१५ मिश्र प्रायच्छित्त तपसे० ॥
१६ विवेक प्रायच्छित्त तप० ॥
१७ उपसर्ग प्रायच्छित्त त० ॥
१८ तप प्रायच्छित्त त० ॥
१ए छेद प्रायश्चित्त त० ॥
२० मूल प्रायश्चित्त त० ॥
२१ अणवस्थित प्रायच्छित्त त० ॥
२२ पारंचिय प्रायच्छित्त त० ॥
२३ ग्यान विनयरूप तप० ॥
२४ दर्शन विनयरूप तप० ॥
२५ चारित्र विनयरूप त० ॥
२६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥
२७ वचन विनयरूप त० ॥
२८ काय विनयरूप त० ॥
२ए उपचारक विनयरुप तप० ॥
३० आचार्य वेयावच्च त० ॥
३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥
३२ साधू वेयावच्च त० ॥
३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥
३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥
३६ श्रमणोपासक वेयावच्च त० ॥
३७ संघ वेयावच्च तप० ॥
३८ कुल वेयावच्च त० ॥
३९ गण वेयावच्च तप० ॥
४० वायणा तपसेनमः ॥
४१ पृछना तपसे नमः ॥
४२ परावर्त्तना तपसे नमः ॥
४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥
४४ धर्म्मकथा तपसे नमः ॥
४५ आर्त्तध्याननिवृत तपः ॥
४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥
४७ धर्म्मध्यान चिंतन त० ॥
४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥
४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥
५० अभ्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाश तपपद भेदाः ॥

इस तरे ५० नमस्कार करै, खमा होके अन्नत्थूससि० इत्यादि कहके ५० लोगस्सका काउसग्ग करै, एक लोगस्स प्रगट कहै, पीछे पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेंको गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुभ घमी देखके अछा वस्त्र आभूषण पहरके तिलक करके दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथके मौली बांधके अक्षत सुपारी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रोकद्रव्य लेके नवकार गुणता थया गुरुके पास जावै, द्वादशावर्त्त वंदना करके ग्यानपूजा करै

पीछै प्रमोदवंत होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करणेकी विधि आगे लिखी हे ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थ गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि उलीको लिख्यते ॥

पंचवर्णके अनाजसें सिद्धचक्रका मंमल करै. सिद्धचक्रजी के चौ तरफ तीन गढ चूनीके आकार बनावे. पहिले गढमें अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै. पद२ के रंग मुजब गुण प्रमाणसें रत्न चढावे उर पंचवर्णके फूल, पंच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रंगके अपणे२ रंग मुजब पीहुरेसे न्नरके चढावै पंचरंगी ए धजा चढावै, दूसरे वलयमें सोले श्रीफल अथवा सुपारी चढावे. तीसरे वलयमें ४७ बूहारा चढावे, नव निधानोंकी जगे नव वेन्ह फल चढावै, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पकान्न रंगरंगके चढावे, इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें करै. उर जिनमंदिरमें बाहिरले मंमपमें ए ॥ ७ ॥ हाथ प्रमाणें मंमल रचना करै. विस्तारसें सब विधि गुरुके हाथसें करै, नवपदजीकी पूजा पढाय कलस ढालै, धवलमंगल गीतग्यान गावै, वाजित्र बजावै, महा महोछव उदार चित्तसें करै, मंगलदीप आरती प्रमुख करै. दूसरे दिन विसर्जन करै. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंमल विधिः ॥ अब दसमें दिन गुरु पास आयके उलीके तपकों पारै. तप पारणको विधी आगे लिखी हे तथा उद्यापनमें ग्यानन्नक्तिके कारण ए पूठा ए वींटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए ठवणी नव झिलमिल ए रुमाल ए मोरा ए सिंजासणा ए थापना ए चंद्रूआ ए पूठीया ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रतिमा ए तिलक ए मुगट इत्यादिक नव२ चीज बणावावे, शक्ति नही होय तो यथाशक्ति रोकनाणो चढावै. देवपदका देवमें देवे, गुरुपदका गुरुकूं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावै, इत्यादिक यथायोग्य शुन्नक्षेत्रमें खरच करै. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ७ सें लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम हे. उत्तमताका कारण एसा हे–बारे महीनोंमें तीन अठाइ महोत्सव आते हें जिसमें चेत्र आसोजकी अठाई तो सास्वती हे. आठमसें पूनम तक इन दोनों महीनोमें च्यारुं निकायके देवता उर ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर द्वीपमें जाते हे, (पुन्याई२) कहते नये अष्ट द्रव्यसें पूजन करै, गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेसें नक्ति करै, पीछै नवमें दिन अपणे२ जन्मकूं सफल मानते नये अपणे२ देवलोक जावे. इसी मुजब तीसरी अठाई आसाढ चोमासेकी ( १४ ) पीछै ( ४९ ) दिन जाणेसें संवछरी पर्व साचवणेकूं ( ८ ) दिन तक अठाइ महोत्सव करै. लेकिन् यह अठाइ सास्वती नही कही, कोइ वखत च्यारुं निकायके देवता एकठे होकर नंदीनी जावै, पहली पीछैनी करलेवै ॥ यह नवपदजीकी उली शाश्वती अठाइमेंही की जाती हे, नवपद माहात्म अधिकार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसें उद्धार करके नव्यजीवोंके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली नगवान नद्रबाहूस्वामीनें इसकों प्रसिद्ध करा, इस वास्ते नव्यजीवोंकों यह तप प्रमाण हे, उर जो अनवी अपणी अपणी कुयुक्तिये लगाकर खंडन करते हें सो तीर्थंकरका वचन उत्थापणेसें अनंतसंसारमें नमेंगे. सूत्रोंमें नगवंत महावीरने फुरमाया हे, हे गोतम वीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हें उर उन सूत्रोमेंसें एक हरफकेनी यथार्थ अर्थकूं तोडके नया कल्पन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विगर सो अनंतसंसारी होगा ( सूत्रनाम किसका हे ) ॥ सुत्तंगणहररइयं, तहेवपत्तेयबुद्धरइयंच ॥ सुयकेवलिनारइयं, अनिन्नदसपुव्विणारइयं ॥ १ ॥ ( अर्थ ) गणधरोका रचा, प्रत्येकबुद्धोका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियोका रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोंका रचा नयेकूं नगवानने सूत्र कहा हे. सूत्र १, पयन्ना २, आगम ३, सिद्धांत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक

दस नाम भगवानने अनुयोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा है, एकार्थ वाचक है इस वास्ते भद्रबाहु उमास्वातिवाचकादिकोंके बनाये निर्युक्ति छेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहिये, एक क्रोड पुस्तक श्रुतकेवलीयोंके बनाये अभी भंडारोमे मोजूद है ॥

॥ अथ अष्टापद ओली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि ( ८ ) से लेकर पूर्णमासी तक ( केइयक भव्यजीव ) अष्टापदजीकी ओली करते हैं ( जिसमें ) पडिक्कमणा, देववंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी ओली तुल्य करै. ( इतना विशेष है ) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः ( इस पदका ) २००० गुणना ( वा ) वीस जाप करै. अरिहंतपदके १२ गुणका नमस्कार करै, १२ लोगस्सका काउसग्ग करै, आंबिल ( वा ) एकासणेका पच्चक्खाण करै, पीछैं पूर्णमासीके दिन अष्टापदपर्वतकी थापना करै, मंडल रचै, सो विधि लिख्यते हैं ॥

पूर्व
१ । २ ।

उत्तर
१५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।

त्रिवेदिकमध्य
असोकवृक्ष
उर्द्धः

दक्षिण
३ । ४ । ५ । ६

७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।
पश्चिम

(चत्तारि दक्खिणाए, पच्छिमउ अठउत्तरा‍ई ॥ दस पुव्वाए दो अठा, वंदमि वंदे चउवीसं ॥ १ ॥ पुव्वाइं उसभमजियं ॥ दक्खिणउ संभवाइ चत्तारि, पच्छिम सुपासमाइ, धम्माइ दसउत्तरउ ॥ २ ॥) इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम यथाक्रमसें चोवीस कोठे मंडलमें बणाणा. इहां कांकणमोरे मोली आत्मरक्षापूर्वक नवपदजीके मंडलवत् जाणना. नवग्रह दशदग्पाल थापना करे. पीछे एक२ काव्य पढ२ के एकेक कोठेमें एक२

जिनेश्वरके नामके चिट्ठी उस पर वरक चढा सुपारी चढावे. एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनाभेयजिनेशत्वं, नंद्यायत सितांशुकः ॥ यथाकुमुद्वतीनेता, नंद्यायतसितांशुकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीऋषभदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठ२ स्वाहा ॥ १ ॥ उपाध्वमजितंभक्त्या, कंदर्पानामनेकपं ॥ प्रणतोद्बोधितंज्ञान, कंद धानामनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीअजितस्वामी० ॥ २ ॥ श्रीशंभवप्रपन्नाये, समयंतेसदादरात् ॥ तेसंतारवनान्मुक्ति, समयं तेसदादरात् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीसंभवस्वामी० ॥ ३ ॥ येभिनंदनतेतीर्थे, राजपादसभाजनाः ॥ विलसंतिचिरंतेत्र, राजपा दसभाजनाः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीअभि० ॥ ४ ॥ पूजि तांह्रीद्वयीमुक्त्ये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनाद्यः, कांतारा जीवमालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऐं श्रीसुमति० ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ सुदृष्टीनां, भूरिशोभातपोदयाः ॥ हन्यात्तमांसिपूर्वेव, भूरिशोभात पोदयाः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीपद्मप्रभ० ॥ ६ ॥ सुपार्श्वे ततश्रुतंश्रुत्वा, दर्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंतिजंतवःशांता, दर्पकोप क्रमानलां ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीसुपार्श्व० ॥ ७ ॥ भवांश्चंद्र प्रभेंद्रेण, यैरभ्राजिसमुन्नतः ॥ यैरभ्राजिसमुन्नतः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीचंद्र० ॥ ८ ॥ सुविधेस्त्वद्विधिंप्राप्य, प्रमाद्यंत समाहितः ॥ येतेश्रेयःश्रियंश्रस्त, प्रमाद्यंतसमाहितः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीसुविधि० ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलस्वांये, देवसंपन्न केवलं ॥ अपिमुक्तिर्भजेत्तेषां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीशीत० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूभाजां, परमोक्षगतिर्भवा न् ॥ अनंतानलवविश्रांतं, परमोक्षगतिर्भवान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रेयांस० ॥ ११ ॥ वासुपूज्यनवस्वर्णी, नीरजारूढसक्रमः ॥ हर त्वंदिरहंमोदं, नीरजारूढसक्रमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्री

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वंये, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ अपि
दुर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीवि
मल० ॥१३॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्वत्र
यीलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअनं
त० ॥ १४ ॥ नाशुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरंधर्मजि
नधर्मा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीधर्म० ॥
॥ १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनांदेहि, सारंगविदधेधृतिं ॥ शर्मकर्मततेरंक,
सारंगविदधेधृतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशांति० ॥ १६ ॥
कुंथुनाथस्तुपंथानं, विधुतारोवृषाहतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच, वि
धुतारोवृषाहतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीकुंथु० ॥ १७ ॥
येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोअरनाथकुधीर्ज्ञव्या, व
नवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री अर०॥ १८ ॥ नां
ह्रिपद्मसुनःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेज्ञियतेमल्ले, प्रतिपन्न
सुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमल्लिस्वामी० ॥ १९ ॥
श्रीसुव्रतजिनाधीश, मक्षमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवद्व, मक्ष
मालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमुनि० ॥ २० ॥
देव्योपित्वहुवोक्षाना, सहामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेज्ञक्त्या,
सहामंदरसानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनमि० ॥
॥ २१ ॥ तृष्णातापात्वयावर्षे, शमितादानवारणा ॥ श्रीने-
मेजनतांराध्य, शमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं
ऐं श्रीनेम० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदाकस, महाहारतरंगिताः ॥
नाव्यंतिचरित्रंते, महाहारतरंगिता ॥२३॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री
पार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्वानःकांचनश्रियं ॥ वि
भ्रन्नमेषुनिस्सीमां, तत्वानःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं
ऐं श्रीवीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ२ स्वाहाः ॥ २४ ॥ पीठे

चोवीस माहाराजकी पूजा करावै, पीछै बलबाकुल देके दिग्पालों को विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चेत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक भया है, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरष गुरुमुखसें समझके जल जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोछव करै. एसेंही ऋद्धिवंत श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब भगवंतके कल्याणक जो जो होय उसका उछव करणा. एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधीश्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके च्यवनकल्याणकसें लेकर निर्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महोछव पूजन करणा चाहिये. इससें धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम पर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते है॥

प्रथम चावलके पूंजसें सेत्रुंजयपर्वतको स्थापन करै ( तिस पर ) पट्टा रखके श्रीपुंडरीक गणधर ( का ) श्रीऋषभदेवस्वामीका बिंब स्थापन करै. अक्षत मोतियोसें पर्वतको वधावै, केसरचंदनसें पर्वतको पूजै. सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रदक्षिणा देवे (पीछै) पूजन सरू करै (यथा) दश (१०) वीस (२०) तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुप्फदामेणलहईं॥चउछठ्ठअठम, दसमदुवालस कलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसें पूजनका अधिकार लिखते हैं. एकाग्र चित्तसें अष्टमंगलीक आगे रखके शुद्धोदकसें मूलप्रतिमाको न्हवण करावै, पीछै श्रीसंघ खमा होके ( १० ) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला चढाके प्रतिमाके १० तिलक करै. यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि सब चीज उत्कृष्टसें दस२ जघन्यें नारेल १ सुपारी १० और फल

फूल यथासंन्नव चढावे, धूप खेवै, कपूरकी आरती करै; पीछै सिद्ध गिरी गुणगर्भित चैत्यवंदन करके पांचे शक्रस्तवे देव वांदे, १० ख मासमण देके ( श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक गणधराय नमः ) इस पदका १० वेर नमस्कार करै, पीछै ( श्रीसेत्रुंजय पूंमरीक आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थूससि० ) कहके १० लोगस्सका काउसग्ग करे (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत न्नव होय वखत कम रहे तब एक लोगस्सका काउसग्ग करे १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका स्तवन कहे ) पीछै अनेक प्रकारका वाजित्र वजावे ॥ इति प्रथम पूजा विधि ॥ अब इसी तरे (वीस । तीस । चालीस । पच्चास । यह चारों पूजाके न्नेद जाण लेणा ( इतनाही विशेष हे ) दूसरी पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करे ॥ तीसरी पूजामे १० की जगें ३० की विधि करै, चोथी पूजामें १० की जगे ४० की विधि करै, पांचमी पूजामें सब विधी ५० की करै, तथा ( सिद्धक्षेत्र श्रीपूंमरीकाय नमः ) इस पदका दो हजार गुणनो करै, उत्कृष्टसें पांचुं पूजामें जुदी२ धजा चढावे, जघन्यसे पांचूं पूजा किये पीछै १ धजा चढावे । यह तप गुरूके मुखसे लेके जघन्य १ वरस, ज्यादा हो सके तो ७ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त तपस्या करै, गुरूके मुखसें उपदेस सुणे, संपूर्ण तप हुयां पीछै सिद्धगिरीकी जात्रा करै, ग्यानपूजा करै, गुरुन्नक्ती करै, साहमीवछल करै ( यह ) चैत्रीपूनमके दिन श्रीऋषन्नदेवस्वामीके प्रथम गणधर श्रीपूंमरीकजी पांच कोमी साधू साथ अक्षय सुखको प्राप्तन्नये, ( इसवास्ते ) न्नरत प्रथम चक्रवर्त्तीनें चैत्रीपूनमकों आराधन करके ( यह ) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध किया, यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणेसें इस न्नवमें अनेक सुख संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोके पूत्र पूत्रादिककी वांछा पूरण होय, उर

आधिव्याधि सोग संताप सब दूर होय, परभवमें देवादिक ऋद्धि प्राप्त होय, क्षीणकर्मी होणेसें अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तवन लिख्यते ॥

( ढाल ) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसाउले, पुंमरगिर रे गाईस हूं सुन्न नाउलै ॥ मति सुरगिर रे सहस जीन्न जो मुख हुवे, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवे ॥ ( उल्लालो ) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण है अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण नाखियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःख दूरै राखियै ॥ १ ॥ ( चाल ) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरें चक्रवर्त्ति नरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंमरीक गुणगण निलो, समदम रस रे विनय विवेक गुणै नलो ॥ ( उल्लालो ) गुण नलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संजम शिवपुरी, पुंमरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुपते संचरी ॥ पण कोमि साथे विमलगिरिवर मुगति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंमरीक कहाव ए ॥ २ ॥ ( चाल ) हिव चैत्री रे पूनम पर्व सुहामणो, सेत्रुंजे रे आराध्यां फल हुवे घणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपै थानक रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ ( उल्लालो ) ते पुन्य पामें दान तप जप धर्म्म ध्यान मने धरै, बहु नाव नत्तै त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ॥ नावना नावै तेण दिवसै पंच कोमि गुणो फलै, अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्धसुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ ( चाल ) दस वीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पन्नासा रे श्रावक निरती सरदही ॥ चउथ उठे रे अठम दसम दुवालसे, पूजा फल रे अनुक्रम ए मुज मन वसै ॥ ( उल्लालो ) मन वसै पूजकपूरधूपै मासखमण फले वली, सामन्न

धूपै परकैनो फल जे करे मननी रली ॥ हिव पूजनी विधि जेम गुरुमुख सुणीअछै परंपरा, ते मोह माया कपट छंमी सुणो नवि यण सादरा ॥ ४ ॥ ( ढाल ) तंडुलरासि विमलगिरि थापी, तसु ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी थापी निवेरो ॥ ५ ॥ सेत्रुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल दूर करीजे ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचावो ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आग, करमबंध दूरे करि आग॥ प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियमे धरेवा ॥ ७ ॥ ऊना थई नवकार गुणंता, दस२ जैती तिलक करंता ॥ माला पुष्फ पूंगीफल ढोवो, मेरु नरण वर धूप उखेवो ॥ ८ ॥ (ढाल ) शक्रस्तव पांचे देव वांदै, जघन्यना वंदण पाप छेदे ॥ दसे नमस्कार करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनेंद सेती ॥ ए ॥ आराधिवा काजे काउसग्ग, जिणे किये नांजे कर्मवग्ग ॥ लोगस्सउज्जोय दसे वखाणु, वेला प्रमाणे अहिएग आणूं ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धूपपूज एह, इसी परे बीजा च्यार तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गिणीजे, एक चित्त सूधै शुन्न पून्य कीजै ॥ ११ ॥ धजातणी रोप तिहां करीजै, एकेक पूठे अथवा गिणिजे ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पछी प्रनु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ ( कलश ) इम करिय पूजा यथा योगे संघपूजा आदरो, साहमीवच्छल करो नविका नवसमुद्र ल लावरो ॥ संपदा सोहग तेह मानव शुद्धि वृद्धि बहू लहै, श्रीअमरमाणिक सीस सुपरे साधुकीरति इम कहै॥ १३॥ इति श्री चै० स्त०॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विधि लिख्यते ॥

स्तवन पहली वर्म स्तवनोमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुन्न घमी शुन्नदिन गुरूके पास नंदीश्वरतप ग्रहण करे. नंदीश्वरद्वीपके च्यारुं दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षायें अमावस२ (५२) बावन उपवास

करै. जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामका २००० गुणना करै, सो लिखते है ॥ १ श्रीरुषजाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ( यह ) च्यार नामकूं ४ वेर उलटा, ४ वेर सुलटा गिणे ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणेसें एक उली होय. ४ उली करणेसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीछे शक्ति मुजब उजमणा करै. नंदीश्वरद्वीपका मंडल वणावै, पूजा करावे. इत्यादि महोछव करके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साहमीवछल करै, मंडलकी विधि एकेक दिसीमें (१३) तेरे२ पहाडकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, वीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसामें च्यार श्वेतपर्वत, दोय२ दधिमुखपर्वतके वीचमें दोय२ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमे १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे. इनको पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे. क्रमसें एकेक काव्य पढके जल चंदनादि अष्ट द्व्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महीनेमें मिती वैसाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीरुषजदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीछें बारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती जया. उस वखत उत्तम दानके प्रजावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साढीबारे कोडि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान२ एसी उदघोषणा ४, देवदुंदुजी वाजित्र ५, एसे पांच द्व्य प्रगट किये. श्रेयांसकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबकों मालम भई. इस दानके प्रभावसें श्रेयांसकुमार अक्षयसुखकों प्राप्त भया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघसें परम मंगलकारी हे. इस पर्वके आणेसें वस्त्र आभूषण पहरके भगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसें पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह भेदी, आदि पूजा करावे. पीछे गुरुके मुखसें एकासणादिकेक पच्चक्खाण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरूको वहिरायके सब कुटंब समेत जीमें, उर जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वकों जो भव्यजीव सेवन करते रहेंगे उणोका तपतेज हमेसां वढता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ट मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ट कृष्णात्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन हे इस वास्ते इस उत्तम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने२ घरमें छांटे. इस शांतिपूजाके कराणेसें मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कभी श्रीसंघमें प्राप्त न होय ( अथवा ) किसी श्रावकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. ( इससें ) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीडा सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ट मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे सो लि० हे.॥ यथा॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्च्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, भव्याश्चतुर्मासकमंगलानि ॥१॥ ( अर्थ ) भोभव्याएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

मंगलानि अलंकारभूतानि विद्यंते ॥ अहो भव्य प्राणी जीवो यह सामायककों आद लेके जो धर्मकृत्य हे सो चोमासेके मंगण हे, अर्थात् अलंकार समान हे. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव सामायक पडिक्कमणा पोसा करै, कोइ भगवानके मंदिरमें नानाप्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पालै, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपणी शक्तिसें वण आवे सो करै, इसमें विरोध नही. लेकिन कोईभी प्रकारसें धर्मका उद्योत करणा चाहिये. जिससें सब श्रीसंघमें कल्याणमाला प्रगट होय, और चोमासी (१४) के दिन सब मंदिरोंमें दरशन करणेकों जाणा, पांच शक्रस्तवसें देववांदै, पीछै गुरूके पास जाके चोमासे पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका सोगन लेवै, सांझकूं चोमासी पडिक्कमणा करे. इस मुजब काती चोमासै फागुण चोमासे कोंभी सेवन करैं ॥ इति चतुर्मासपर्वाधिकार.

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ भव्यजीव मम्माई आदि क्षेत्रोंमें तरे२ की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चौमासेपर्वका उद्योत करते हें, इस माफक सब जगे तरे२ की पूजा कराणी चाहिये. और देस देसमें श्रावकणयां इस महीनेमें केइ२ तरेकी तपस्यायें करती हे. जिसमें उत्तमफलकी देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रंथसे उद्धरण करके संक्षेपविधिसें इहां लिखते हें ॥

॥ अथ दुटकर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमड्ढ १, एकासण १, नीवी १, आंविल १, उपवास १, ( यह १ ओली ) इस तरे पांच ओली करै. तपोदिन २५. उजमणें २५ लाडू चढावे ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकासण १, नीवी १, आंविल १, उपवास १, इस तरे

ठली ग्यार करै. तपोदिन १६. ऊजमणें १६ लडू चढावे ॥ इति कषायजयतपः ॥ २ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे उली ३ करै. तपोदिन ए. ऊजमणें ए लाडू चढावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३, ऊजमणें ज्ञानपूजा करै ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें स्नात्र पूजा करावे ॥ इति दर्शनतप ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अठम १, छठ, १, उपवास १, एकासण १, एकलगणो १, दत्ति, १, नीवी १, आंबिल १, यह एक उली. इसी तरे उली आठ करै. तपोदिन ८८, ऊजमणें रूपेका वृक्ष, सोनेका कुहाडा करायके ग्यान खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूदणतपः ॥ ७ ॥

जादवा वदि चउथसें लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकासणा अथवा बिआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अन्य ठिकाणें कलस स्थापन करै, एक मुठी चावल सदा कलसमे जरै, संवत्सरीके दिन कलस ऊपर नारेल रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव आगे रखे, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै॥इति अक्षयनिधि तपः ८॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै ( श्रीवासुपूज्यस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका २००० गुणना करै, गुरू के पास स्तवन सुणे. ( सो स्तवन आगे लिखेगें ) ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसें ज्ञानजक्ति गुरुजक्ति करै. इति रोहणीतपः ॥ ए ॥

सुदिपक्षके पांचमके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पाच-

एकासणादिक तप करै. अंबिकादेवीकूं वेस चढावै॥इति अंबिकातपः॥

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त उपवास करै. इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारणें आंबिल ८, एवं दिन १६. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै. इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०. ऊजमणें सोनेका अथवा रुपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढावे ॥ इति सौभाग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पडिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसें पूनम पर्यंत (१५) उपवास करे. जो तिथि भूले सो तिथि उर करै. ऊजमणे एकसो वीस लडू मंदिर चढावै, स्नात्र करावै ॥ इति सर्वसुखसंपतितपः॥ १४॥

वरसातका च्यार मास उर पोष, चैत्र, यह षट मास टालके ओटी पांचमतप सरू करै. अंधारी उजवाली पांचम मास ५ लग एकासणादि तप करै. ऊजमणे ज्ञानपूजा करै ॥ इति ओटी पांचमतप ॥ १५ ॥

सुद पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै. उपवास के दिन देव वांदणादिक क्रिया करै. ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोपगरण पकान फल कलशादिक पांच ५ चढावे, सत्तरभेदी पूजा करावै, साहमी वछल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आषाढ सुदि पडिवा, बीज, तीज, चोथ, पांचम, एकासणादि तप करै. अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नैवेद्य चढावै. इस तरै वरस १ तप करै. ऊजमणें चावलोंसें असोगवृक्ष लिखके पूजा करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आषाढ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण वदि ७ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीअ

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलोंसे लोकनाल बणाके सा ते राज सात पावरुी करके उसपर सिद्धक्षेत्र ( उसकों ) सोनेरत्न का मुगट चढावै ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशणादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावरुी, इस तरे आठे वरसे आठ पावरुी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिय. ऊजमणें अष्टापदपूजा करावे, पकवान फल सर्व चोवीस चढावे ॥ इति अष्टापदपावरुीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करै. ऊजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लड्डु देव आगे चढावै ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन दस उपवास अथवा वीस एकासणा करै. ऊजमणें अखंडित घी धारपूर्वक तीए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंडितदशमीतप ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशणा, नीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करै. ऊजमणें ११ अंगकी पूजा करै ॥ इति श्रीइग्यारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकासणादि १४ तप करै. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै ( प्रथम तेले ) सिखरणसें पारणा ( दूसरे तेले ) सारेका पारणा ( तीसरे तेले ) लापशीका पारणा ( चोथे तेले ) लडूसें पारणा ( पांचमें तेले ) खीरसे पारणा. पारणे प्रथम साधूकों वहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृततेलातपः ॥ २४ ॥

अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतपः ॥ २५ ॥

आंबिल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढावै तो सदा जय होय, विणज व्यापारमें लाभ होय झगडेमें जीत होय॥ इति धर्मचक्रतपः ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरै करै॥इति पंचमहाव्रततपः२७॥ उपवास १, एकसणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो१. उपवास १, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १.
एवं दिन १० पूनमसें सरू करै. पारणै साधु पडिलाभै, ग्यानपूजा करै ॥ इति दालिद्दहरणतपः ॥ २८ ॥

एकेंद्रिये उपवास १, बेइंद्रिये छठ १, तेंद्रिये अठम १, चौरिंद्रिये दसम १, पंचेंद्रिये द्वादशम १, छकाये चतुर्दसम १, तप करै. ऊजमणें मुखडीसें ६ स्त्री जीमावे॥इति छकायआलोयणतपः॥२९॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतपः ॥ ३० ॥

आंबिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतपः ॥ ३१ ॥

छठ पांच करै ॥ इति पुत्रीसुखतपः ॥ ३२ ॥

॥ अठम पांच करै ॥ इति पुत्रसुखतपः ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै॥ इति भर्त्तारसुखतपः ॥३४॥

॥ निवी पांच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतपः ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पांच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतपः ॥ ३६॥

॥ एकासणा पांच एकांतर करै॥ इति पितामातासुखतपः ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणेकी श्रावकणयो कियाकरती हे. इस वास्ते बहुतोंके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उद्धार करके संक्षेपविधिसें इहां लिखी हे. ज्यादा शक्ति होय तो पूजा साहमीवछल तीर्थयात्रा इत्यादिक सातुं शुभक्षेत्रोमें अपणा धन

खरच करै, धर्मका उद्योत करे ॥ इस तपस्याके प्रभावसें इस भ वमें संसारसंबंधी दुःखदालिद्र दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा होय, परभवमें देवादिक ऋद्धी प्राप्त होय. ( किंबहुना ) इति वृट कर तपस्याविधिः ॥

॥ अथ भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ भाद्रव महिनेमें मिति भाद्वा सुद ४ तथा केइ मतकी अपेक्षासे ५ तिथिकों संवछरी नांमसें पर्व प्रसिद्ध हे ( प्रथम इस संवछरी पर्वकी महिमा कहते हे ) जेसें जगतमें अनेक मंत्र हे पर नवकार समान कोइ मंत्र नही १, तीर्थोमें सेत्रुंजय समान कोइ तीर्थ नही २, पांचदानमें अभयदान सुपात्रदान समान कोइ दान नही ३, गुणमांहे विनयगुण ४, व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ५, नियममें संतोष नियम ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमांहे गंगा जल ९, अलंकारमांहि चूडामणी १०, ज्योतषीमें चंद्रमा ११, ते जवंतमांहि सुर्य १२, गजमें एरावण १३, दैत्यमांहे रावण १४, तु रंगमें पंचवल्लभकिशोर १५, नृत्यकलावंतमांहे मोर १६, वनमांहे नंदन १७, काष्टमांहे चंदन १८, साहसीकमें विक्रमादित्य १९, न्यायवंतमें श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीता २२, शास्त्रमांहे ज्ञाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५, वाजित्रमें भंभा २६, स्त्रीमांहे रंभा २७, धातुमें स्वर्ण २८, दाता रमें कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृक्षमें कल्पवृक्ष ३१, जलमें अमृत ३२, स्नेहमांहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एक२ चीज उत्तम होती है. इस तरे सर्व पर्वोमें उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री संवछरी ( दूसरा नाम ) श्रीपर्यूषण पर्वकों भगवंत श्रीमाहावीर स्वामीजीने उत्तम वर्णन किया. अब श्रीपर्यूषणपर्वके आणेसें प्रथ म श्रीसाधुके करणे योग्य धर्मकृत्य कहते हे ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण

करै १, लोच करावे २, तेलेका तप करै ३, सर्व मंदिरोमें ज्नगवंत की ज्नावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावै ५. यह पांच कारण के वास्ते श्रीतीर्थंकर गणधरोंनें पर्यूषणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब शुद्धश्रावक संवछरी पर्व आराधन करणेकूं आठ दिन अठाइ महोछव करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी ज्नक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रीजागरण करावै; प्रज्नातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकूं निमंत्रण कर यथा योग्य सत्कार सन्मान करै, पीछे पुस्तकग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र आज्नूषण पहरकै मुगट छत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रमहाराजका रूप बणाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मंगलीक रचित थालमें पुस्तक धरके अथवा दोनुं हाथमें थाल धरके दोनुं तरफ पुरुष अछा वस्त्र आज्नूषण पहरके चमर ढाले, अनेक प्रकारके वाजित्र वाजते ज्नये, दान देते ज्नये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन करते ज्नये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै. गुरु पिण खमा होके विनयसंयुक्त पुस्तककों नमस्कार करके आगे रखै. श्रीसंघके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जने अमारिपमह वजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ धोबी ज्नमज्नूंजा इत्यादिक सबका आरंज्न बोमावे २, सुपात्रदान देवे ३, बिदाम सुपारी नालेरादिक की प्रज्नावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार ज्नक्तिसें पूजा करै, चौदसके दिन संवछरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे होकर सर्व मंदिर दरसण करणेको जावै ५, सचित्तका परिहार करै ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउछ, छठ, अठमादिक तप करै ८, अपने २ वित्तके अनुसारे जन्मकल्याणकका उछव करै ९, अठपहरी पोसा करै १०, संवछरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघसें खमावै १२, पारणेके दिन पोसह पमिक्कमणेवाले साधर्मीज्नाइ;

योंकी ज्नक्ति करै १३, गुरुज्नक्ति करै १४, संवछरी दान देवै, साहमी, वछल करै १५. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसें, आराधन करणेसें आठ ज्नवसें मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता हे ( उर ), केइयक ज्नव्यजीव अत्यंत शुज्न ज्नाव धरतेज्नये अठमादि तप कर के युक्त कल्पसूत्रजीकों वांचते हे उर सुणनेवाले प्रमाद निद्रा वि, कथा गेरुके अठमादि तप करके एक चित्तसें शुद्धज्नाव रखके इक वीस वेर सुणते हे, सो ज्नव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे ज्नव सि, द्धिस्थानकों प्राप्त होते हे ॥ इस पर्यूषणपर्वका महोछव जो ज्नव्य, जीव करते हे सो धन्य हे, धर्मके प्रज्नावीक हे, अपणी लक्ष्मीसें, धर्मका उद्योत करते हे. उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते हे उर नमस्कार करते हे ॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते हे ॥ यह, कल्पसूत्र नवमेंपूर्वसें उद्धरण कियाज्नया दशाश्रुतस्कंधका आठमा, अध्ययन हे. सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीज्नद्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया हे. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय हे. जेसें सर्व नदीके वालू के कण होय उसले ज्नी एक सूत्रके अनंते विषय हे. इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हजार जीज्न करके कहे तोज्नी महात्मका एक अंस ज्नी कह सकता नही. एसा इस पर्वका महात्म जाणजो ज्नव्यजीव शुद्ध ज्नावसें सेवन करेंगें सो अनेक तरे सें ऋद्धि वृद्धी सुख सौज्नाग्य कों प्राप्त होंमें. उर परज्नवमें देवादिक ऋद्धि पायके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंमें ॥ इति पर्यूषणपर्वाधिकारः६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिती आसोज सुदि ७ से लेके आसोज सुदि १५ तक नवपदजी की उली तथा अष्टापदजीकी उली विधिसंयुक्त करै. सो सब विधि पहली लिखी हे उसी माफक करै॥

॥ अथ कार्त्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्त्तिक महीनेमें मिती कार्त्तिक वदि अमावस हे सो दी-

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. यह दीपमालिकापर्व कबसें भया सो लिखते हे. चोवीसमें तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु साध्वी साथ विचरते थके अंतकी चोमासी मध्यमपावापुरीमें आयके रहे, वहां आगामीकालकी सर्व वात भव्यजीवोंके सामने निरूपण किया, फेर अपणा अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शुक्कशालामें आयके रहे. अपणे पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देखके निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेकूं भेजा. पिछारी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंड देसना देते भये बहुत्तर वरसका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन पिछली दो घरी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त भये. जिस समय भगवंतका निर्वाणकल्याणक भया उस समय चोसठ इंद्र देवतागणके आणे जाणेसें बरा उद्योत भया, उर जो राजा पोषधमें बैठे भयेथे सो भावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके द्रव्यउद्योत किया. एकमके प्रभात समें देवतोका आणा जाणा उर वचन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न भया. दूजके दिन सुदर्शना बहिन अपणे भाई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमाया, शोक दूर कराया जिससें भाईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह दीवाली पर्व बरा उत्तम हे. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना करते हे सो लिखते हे ॥ ॥ श्रीमहावीस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ इस एक२ पदको २००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागरण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाणकल्याणकका अधिकार सुणै । गोतमरास सुणै. इत्यादिक उदार चित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उछव करणा चाहियै ॥ दिवालीका स्तवन पूर्वे लिखा हे सो पढै ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काती महीनेमें कार्त्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन सर्व भव्यजीवोंकों ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ भी नही हे. सर्व तत्वमें ज्ञानके समान कोइ तत्व नही. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोइ उपाय नही. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्टकर्म नाश होय. गूंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, ओर कोढादिक रोग सर्व दूर होय. अनुक्रमें ज्ञानावरणी कर्मके क्षय होणेसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जेसें वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण भये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चोकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पांच साथिया करै, फल फूल प्रमुख चढावे, पांच बत्ती का दीपक चढावे, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढके वासक्षेप कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढावे तथा पूगा विटांगणादि चढावै. ( ज्ञानपूजा लिखते हे ) नमंतिसाअंतमहीवनाहं, देवायपूयंसुविहेयपूर्विं॥ भत्तीयचित्तंमणिदामएहिं, मंदारपुप्फपसवेहिनाणं ॥ १ ॥ तहेवसद्धामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुप्फेहिंवरंसएहिं ॥ पूयंतिवंदंतिनमंतिनाणं, नाणस्सलाभायभवक्खयाय ॥२॥ यह गाथा पढके ज्ञानपूजा करै. (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीछै भावपूजा करे सो लिखते हें) खमासमण दे के। इरियावही पडिक्कमें। लोगस्स कहे। बेठके। मुंहपत्ती पडिलेहे। अणूजाणह मेमिउग्गहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवै, पीछै पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहे ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिभास भानु

निरमल सुखकारण, सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु भवजलनिधि तारण ॥ संयमतप आनंदकंद अज्ञाण निवारण, मार विकार प्रचार साथ तापित जिन तारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म परणति परिबोहण, साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण ॥ मोह तिमर विध्वंससूर मिथ्यात्व पणासण, आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रभुता परगासण ॥ ॥ २ ॥ मति श्रुति अवधि विशुद्ध नाण मणपज्जव केवल, भेद पचास क्षायोपसमिक एक क्षायिक निरमल ॥ दोय परोक्ष प्रथम तिहां दुग परतक्ष दीसत, सकल प्रतक्ष प्रकाश भास ध्रुव केवल अपरमित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन भाखै, बाहिर अंग प्रधान खंघ गणधर सुप्रकाशै ॥ शाखा श्रीनिर्युक्ति भाष्य परिशाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचांगी सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगै, नंदी अनुयोगद्वार शाख मानो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुभव उपगारी, अभ्यासो आगम अगम निरुपम सुखकारी ॥५॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धांत अबाधे, देवचंद आणा सहित नयभंग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोहामणो सकल मोक्ष सुखकंद, भगते सेवो भविकजन पामो परमानंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । णमोत्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविसाहू० नमोर्हत् सिद्धा० । कहके ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोलै, जयवीयराय० कहै, वंदणव० अन्नत्थू० कहके एक नवकारका काउसग्ग करै, थुई कहै ॥ ॥ अथ थुई लिख्यते ॥ देविंदवंदियपएहिंपरूवियाणि, नाणाणिकेवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचावि पंचमगईसियपंचमीए, पूयातवोगुणरयाणजियाणदिंतु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके ( ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं ) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहके १ लोगस्सका काउसग्ग करै, ( पारके ) बोधागाधं० (इत्या-

दिगाथापढके ) पीछै ॥ आन्निणिबोहियनाणं । सुयनाणंचेवउहिना णंच ॥ तहमणपज्जवनाणं । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा कहके । इच्छामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४, समस्त लोकालोकन्नास्कर श्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तरे पांच नमस्कार करै, थिरतः होय तो ( ५१ ) ज्ञानके गुणोंकों नमस्कार करै, सो पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ उस माफक करै ॥ पीछै (ॐ ह्रीँ णमोनाणस्स) इस पदका २००० गुणना करै. कम थिरता होय तो इग्यारे अंगकी सिज्झायों पढै वा सुणें, सो लिखते हे॥

॥ प्रथम आचारांग सिज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हरीयाली ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आ चारांग रे ॥ सुगणनरा॥ वीर जिनंदे न्नाखियो रे लाल, उववाई जास उवंग रे ॥ सु०१॥ बलिहारी ए अंगनी रे, हुं जाउं वारंवार रे॥सु०॥ विनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु० ब०॥२॥ सुयखंध दोय छै जेहना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु० ॥उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगीस रे॥ सु० ब०३॥ हेतु जुगत कर सोन्नता रे, पद अढार हजार रे ॥ सु० ॥ अक्षरप दने छेहमे रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु०ब०४ ॥ गमा अनंता जेहमां रे, वलिलि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परित्तो छै इहां रे लाल, थावर अनंत कहाय रे ॥ सु० ब० ५ ॥ निबद्ध निकाचित सासता रे, जिनप्रणीत ए न्नाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम उलसे रे लाल, प्रगटे सहज स्वन्नाव रे ॥ सु० ब० ६ ॥ सुगुण श्रावक वारू श्राविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥सु०॥ विधिपूर्वक तुमे सां न्नलो रे लाल, गीतारथ गुरु पास रे ॥ सु० ब० ७ ॥ ए सिद्धांत महिमानिलो रे, उतारे न्नव पार रे॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे माहरे

रे लाल, एहिज अंग आधार रे ॥ सु० ब० ८ ॥ इति आचारांग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रसियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांभलो, मनोहर श्रीसुगडांग ॥ मोरा लाजन ॥ त्रिणसे तेसठ पाखंडीतणो, मत खंड्यो धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागे जे हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माणी माहरै, मानु सुधा रे समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग छे जेहनो, ए तो सूत्र गंभीर ॥ मो० ॥ बहुश्रुत अरथ जाणे सहू, क्षीर नीर धनु तीर ॥ मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुयखंध दोय छै, वलि अध्ययन तेवीस ॥ मो० ॥ उद्देसा समुद्देसा जिहां भला, संख्याये रे तेत्रीस ॥ मो० मी० ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण भरया, पद छत्तीस हजार ॥ मो० ॥ संख्याता अक्षर पदमांहे, कुण लहे तेहनो रे पार ॥ मो० मी० ५ ॥ गमा अनंता पर्याय वली, भेद अनंत जिण मांहि ॥ मो० ॥ गुण अनंत त्रस परित्त कह्या, थावर अनंत जे मांहि ॥ मो० मी० ६ ॥ निबद्ध निकाचित्त जे सासय कह्या, जिन पणत्ता रे भाव ॥ मो० ॥ भाषी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मीठी० ७ ॥ करिये भगत जुगत ए सूत्रनी, निश्चे लहिये रे मुक्ति ॥ मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणनी रे शक्ति ॥ मो० मी० ॥ ८ ॥ इति सूयगडांग सिझाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ ठाणांगसूत्रसिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठ टके कंकण लियोरी ॥ ए चाल ॥ त्रीजो अंग भलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीठाणांग ॥ मोरो मन मगन थयो ॥ हां रे देखी २ भाव, हां रे जीवाजीव स्वभाव ॥ मो० ॥ सबल जगत करी छाजतो रे जि०, जीवाभिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह अंग मुझ मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंब ॥ मो० ॥

गुहिर नाव कर जागतो रे जि०, आज तो एह आलंब ॥ मो० २ ॥ कूट शैल सिखरी शिला रे जि०, काननमें वलि कुंम ॥ मो० ॥ गह्वर आगर द्रह नदी रे जि०, जेहमेंअछे रे उदंम ॥ मो० ॥ ३ ॥ दस गाथा अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त जेहनी वाचना रे जि०; संख्याता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्ट सिलोक निजुत्तपुं रे जि०, संगहणी पमिवित्त ॥ मो० ॥ ए सहु संख्यातां जिहां रे जि०, सुणतां उलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय खंध इक राजनोरे जि०, दश अध्ययन उदार ॥ मो० ॥ उद्देशादिक वीस छे रे जि०, पद बहुत्तर हजार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशासन तणो रे जि०, सुणे सिध्धांत वखाण ॥ मो० ॥ विनयचंद कहै ते हुवे रे जि०, परमारथरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० ठा० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगसूत्र सिझाय ॥

॥ ढाल ॥ थारा महिलां ऊपर मेह झरोखे वीजली ॥ एचाल ॥

चोथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणा उपांग करी सोन्ना वणी, हो लाल करी सो० ॥ अरध मागधी नाषा साखा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित नाव कुसुम परिमल व्यापी घणी, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव समासथी, हो लाल जी०, लहीयै एहथी नाव विरोध कांइ नथी, हो लाल वि० ॥ नांगा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल यादि०, लोक अलोक ने लोकालोक वखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥ एकथकी छे सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोमाकोमि प्रमाणक जीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविह गणी पिटकतणो संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि छै एहना सही, हो लाल छै० ॥ ३ ॥ सुयखंध अध्ययन उद्देसादिके नला, हो लाल उ०, संख्यायें एक एक प्रत्येके गुण निला, हो० प्रत्ये० ॥ पद

एक लाख चौमाल सहस तेउत्तरा, हो० स०, पदनें अग्रउदग्र संख्याता अक्करा, हो० सं० ॥४॥ भाष्य चूर्णि निर्युक्ती करी सोहे सदा, हो० करी०, सुणतां भेद गंभीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥ जेह नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं माहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिथ्यात सुत्र जाण्यो खरो, हो० सू० ॥ जिम मालती लहे भृंग करीनेनविरहे, हो० क०, इश्वर शिर सुरगंग तभी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन निग्रंथतणो जुगते वम्यो, हो० त०, साकर सेलडी द्राख थकी पिण मीठम्यो, हो० थ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो, वि०, एहना सुणने भाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल पंथीमानी ॥ पंचम अंग भगवती जाणिये रे, जिहां जिन वरना वचन अथाह रे ॥ हिमवंत परवत सेती निकल्या रे, मानुं परतिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नत्ती नामे परगडी रे, जेहनी है उद्दाम उवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांहिला अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंध एक अति भलो रे, एकसो एक अध्ययन उदार रे ॥ दश हजार उदेसा जेहना रे, जिहां किण प्रश्न छत्तीस हजार रे ॥ पं० ३ ॥ पद तो दोय लाख अरधे भरया रे, ऊपर सहस अठ्यासी जाण रे ॥ लोकालोक स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नत्ती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥ करिये पूजा अने परभावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥ सुणिये सूत्र भगवती रागसूं रे, तो होय भवसागरनो त्याग रे ॥ पं० ५ ॥ गोतम नामे द्रव्य चढाइयै रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम रे ॥ कीजै साधु तथा साहमीतणी रे, भगति युगति मन आणी

प्रेम रे ॥ पं० ६ ॥ इण विधसुं ए सूत्र आराधतां रे, इण भव सीझे वंछित काज रे ॥ परभव विनयचंद कहे ते लहे रे, मोहन मुगतिपूरीनो राज रे ॥ पंच० ७॥ इति श्रीभगवतीसूत्र सिझाय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ कितलख लागा राजाजीरै मालियै ॥ ए देशी ॥ छठो अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेहना छै अरथ अनेक उदं म हो ॥ म्हारा सुणज्यो धरि नेह सिद्धांतनी वातमी जी ॥ श्रवणे सुणतां गाढो रस ऊपजे जी, मधुरता तर्जित जिम मधुखंम हो ॥ म्हा० १ ॥ जंबुद्दीवपन्नत्ती उपांग छै जेहनो जी, इण मांहे जिन पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिक सुण परम शांतिरस अ नुभवे जी, चर्चिक सुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर उ द्यान चैत्य वनखंम सोहामणो जी, समवसरण राजानो मात ने तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह लोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ भोग परि त्याग प्रव्रज्या पर्यवा जी, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ॥ म्हा० ॥ संलेहण पच्चक्खाण पादपोपगमनता जी, स्वर्गगमन शुभ कुल उतपत्तान हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलाभ वलि तंत ते अंतक्र त्या कही जी, धर्मकथाना दोय छै खंध हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना उगणीस अध्ययन ते आज छै जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुबं ध हो ॥ म्हा० ५ ॥ उंठकोमि तिहां सकल कथानक भाषिया जी, भाष्या वलि उगणीस उद्देस हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हजार भला पद एहना जी, एह थकी जाये कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥ विनय करे जे गुरुनो बहु परै जी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल होय हो ॥म्हा०॥ ते रसिया मन वसिया विनयचंदने जी, सो मांहे मिलै जोया एककै दोय हो ॥ म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग सि०॥

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विछियानी ॥ हिवै सातमो अंग ते सांभलो, उपासगदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नत्ती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रथी, एतो भव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुयखंध एक छै, अध्ययन उद्दस विचार रे ॥ दस२ संख्यायैं दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनंदादिक श्रावकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जागे मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥म० ४ ॥ श्रोता आगल तो वांचतां, गीतारथ पामे रीझ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समझै नही, तेहसुं तो करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस श्रावक तो इहां भाखिया, पिण सूत्र भएयो नही कोय रे ॥ ते माटे शुद्ध श्रावक भणी, एक अरथनी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपिये, निस्संकपणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंद्र कहै स्युं थयो, जो कुमती करस्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपाशकदशांग सिझायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगड केवली जे थया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां भासता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप नय भंगथी जी, अंगना भाव अभंग ॥ सहिज सुख रंगनी तहिपका जी, कहिपका जास उवाग ॥ आ० ३ ॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग छै आठ अभिराम ॥ आठ उद्देसा छे वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥ आ० ४ ॥ आठमा

अंगना पाठमें जी, एहवोअ छे रे मीठास ॥ सरस अनुभव रस ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे हुवे जी, निरविषयी सुण्यां थाय, जिम माहा विष विषधरतणो जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंद इण सूत्रना जी, तुरत लहै अभिप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतगडदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ९ ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुझने आई हो ॥ श्रावक सूत्र सुणो ॥ सूत्र सुणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥ श्रा० १ ॥ जसु कल्याणवतंसिका नामै, सोहै उपांग प्रकामे हो ॥ श्रा० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥ श्रा० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिम२ अंतरगति भीजै हो ॥ श्रा० ॥ प्रगटै नवल सनेहा, एहथी उलसे मोरी देहा हो ॥ ॥ श्रा० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गाया हो ॥ श्रा० ॥ नगरादिक भाव वखाण्या, ते तो छठै अंगे आण्या हो ॥ श्रा० ४ ॥ इहां एक सुयखंध चारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू रे ॥ श्रा० ॥ उद्देसा त्रिण सनूरा, संखशत सहस पद पूरा हो ॥ श्रा० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेहने हो ॥ श्रा० ॥ श्रोताथी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगाउं हो ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ जे सुणतां करै चकोर, ते तो माणस नही पिण ढोर हो ॥ श्रा० ॥ कवि विनयचंद कहे साचो, श्रुत रंगै सहु को राचो हो ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिझायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रश्नव्याकरण सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघा आम पधारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावै, प्रश्नव्याकरण नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चि दानंद फल पामे ॥ आवोरे गुणना जाण तुमने सूत्र सुणाउं ॥ पुष्फकली ज्यूं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो० २ ॥ अंगु ष्ठादिक जिहां प्रकास्या, प्रश्नादिक अति रूमा ॥ ते है अष्टोत्तर सत ए तो, सूत्र मध्य मणिचूमा ॥ आ० ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां आण्या, पांचे संबर द्वारा ॥ महामंत्र वाणीमां लहियै, लबधि जेद सुखकारा ॥ आ० ४ ॥ सुधखंध एक है दसमे अंगै, पणयालीस अज्ञयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा ॥ आ० ५ ॥ जे नर सूत्र सुणै नही कानै, केवल पोषे काया ॥ माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ० ६ ॥ सूत्र मांहि तो मारग दोयहै, निश्चय नय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल कमखानी ॥ सुणो रे विपाकश्रुत अंग इग्यारमो, तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्फचूलि का, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु० १ ॥ अशुज्ञ किंपाक सम डुकृतफल जोगवी, नरकमें गरक थया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल जो गवी स्वर्गमां जे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु०२॥ दोयश्रुत खंधने वीश अध्ययन वलि, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजे ॥ सहस संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल भ्रमर चित्त गुंजे॥ सु०॥३॥ सरस चंपकलता सुरज्ञि सहुने रुचै, अन्य उपगारनी बुद्धि माटै ॥ सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अ-चल खाटै ॥ सु० ४ ॥ बंध ने मोक्षना बेउं कारणअछै, डुकृतने सुकृत जोवो विचारी ॥ डुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

चन धारिये गुण संभारी ॥ सु० ५ ॥ म कर रे म कर निंधा नि- गुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ बांधे ॥ नारकी प्रकृत तज सहज संतोष भज, लाग श्रुत सांभली धरमधंधे ॥ सु० ६ ॥ सुख ने दुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें वीतरागे ॥ चिरजयो वीर शासन जिहां सूत्रथी, कवि विनयचंदगुण ज्योति जागे ॥ सु० ७॥

॥ अथ इग्यारे अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारे में सुण्या, सहेली ए ॥ आज थया रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥ भाष्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंक- णी॥ पसरी अंग इग्यारनी, स०॥ मुऊ मन मंरूप वेल कि ॥ सींचू ते हरखे करी, स० ॥ अनुभव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी जे सांभले, स० ॥ कुण बूढा कुण बाल कि॥ तो ते फल लहे फू टरा, स० ॥ स्वादें अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी हियै, स० ॥ अहम्मदावाद मफार कि ॥ भास करी ए अंगनी, स० ॥ वरत्या जयस्कार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें, स० ॥ वरषाऋतु नभभास कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्षमां, स० ॥ पूरण थई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी, स० ॥ श्रीजिनचंद सूरीस कि ॥ खरतरगछना राजिया, स० ॥ तसु राजै सुजगीस कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रहखनिधान जी, स० ॥ ज्ञानतिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ अंग इग्यार सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग ठुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर उप गारी सुगुरु बताई, पांचु भेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन पर्यव, केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूंस दंसनकी,

करमेंधनल करी ॥ सक्रिय संजम करतासुं मिल, सिद्धि रसान धरी ॥ मे०२॥ पूरण पुन्य मिली मोहि सजनी, सकलानन्द दरी, चाल कहै अब विसरत नांही, पल छिन एक घरी ॥मे०३॥ इति पद॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अर्तहि भलो, संघ सकल आधार नमूं श्रीभुवन तिलो ॥ आंकणी ॥ अर्थे श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रे श्रीगणधरगुरु भाष्यो, तद्भवथी जे मुनिवर राख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहथी जग भाव सकल जाणे, नय एकांत मुनिजन नवि ताणे, निश्चय विवहार ते मन आणे ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग उपांग है अति रूडा, छ छेद पंयन्ना नहि कूडा, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूडा ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां निरयुक्ती सूत्रे संगी, वलि भाष्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहियै, संवेगपखी वलि सरदहियै, ए त्रिण विन भवमारग कहियै ॥ श्रु० ५ ॥ जेहनी अनुपेहा नित करियै, उपचारे दूषण परिहरियै, आराध्यां निज अनुभव तरियै ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे गुण गावे, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावे, ते क्षमाकल्याण सदा पावै ॥ श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवनं ॥

॥ अथ कार्त्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्त्तिक महीनेमें मिति कार्त्तिक सुदि १४ के दिन सब मंदरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आसाढ चोमासे मुजब जाणना ॥ इति कार्त्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्त्तिक पूर्णमासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्तिक वदि १ सें सेत्रुंजरास सुणें, निवी वा एकासणा व्यासणादि तप करै, दोनुं टंक पडिकमणा करै, देववंद-

नादि करे, ( ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र अनंतसिद्धायनमः ॥) इस मंत्रका जाप करे १०८ वेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धगिरी जात्रा करणेंको जावै. कातिपूनमके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै, अठाई महोत्सव करै, विस्तारसें देववंदनादिक विधि करै, ( २१ ) वेर सेत्रुजरास सुणे ( ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः ) इस पदसें २१ जेती देवै. ( कदाल ) सिद्धिगिरी जाणेकी शक्ति नही होय तो जहां सिद्धगिरीका पट्ट मंम्या होय उहां महोत्सव संयुक्त दर्शन करणेकूं जावे, पूजादिक सब विधि करै, उपवास करके वा चउत्थभत्त करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुभक्ति करै, साहमीवछल करे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करणेसें सर्व अशुभकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥ इस दिन श्रीद्राविड वारखिल्ल प्रमुख दस कोडि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त भए, जिससें इस दिन जो धर्मकृत्य करणेमें आता हे उसका निश्चे दशकोडि गुणा फल होता है ॥ इस भरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान दुसरा तीर्थ नही. संवत १९३२ की सालमें मेरा चतुर्मास मुंबईमें था. उहांसें कार्त्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व बिंबोके दरसण करके गिणती देखणेमें आई सो बारे हजार तीनसें अठावनकी संख्या मिली, और बहुत जगे चरणोंकी स्थापना हे, अनन्त साधू अणसण लेके परमपद पाए हें, इस वास्ते जो तुरत भव्यी जीव होंगें सो शुद्धभावसें इस तीर्थकों सेवेंगें, जो सेवते हे सो धन्य हे. गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तीर्थआसातनाकारी देवद्रव्यभक्षक जतीसाधू जो संवेगपक्षी गीतार्थोंके द्वेषी एसी वक्रवृत्तिसें जीर्णोद्धार तथा नोकारसी प्रमुखके बाहनेसें अन्य देसांतरी जात्रार्थी भव्यजीवोंका धन ठगणेकी वृत्तिसें तीर्थ सेवन अनंत संसारका भवभ्रमण समझके वर्जना, एसें दुरबुद्धियोकी पूजाव्रतपच्च-

खाणादि द्रव्यकरणी श्रावकाचारवृत्तिरूप जाणके उनोका संगभी न करणा. शुद्धभावसें सिद्धगिरी सेवे ताकूं नमस्कार हे ॥

॥ अथ सिद्धगिरी स्तवनं ॥ १ ॥

॥ देशी गरबानी ॥ ते दिन क्यारे आवसी हे, जो रे बहिनी ॥ जासुं सिद्धाचलनी जात्र, मोरी सहियां हे ॥ पाजै चढतां प्रेमसुं हे, जो रे वहिनी ॥ गाइयै गुण अखियात, मोरी सहियां हे ॥ ते दि० १ ॥ अदभुत ऊंचो देहरो ए, जो रे बहिनी ॥ मूलनायक आदिनाथ, मोरी सहियां हे ॥ भोली भगत भली परे हे, जो रे ब० ॥ निरख्यां होय सनाथ ॥ मो० ते० २ ॥ नाही निरमल नीरसुं हे, जो रे० ॥ पहिर खीरोदक चीर, मो० ॥ केसर भरिय कचोलमी हे, जो रे० ॥ पुजसुं सुगुण सुधीर ॥ मो० ते० ३ ॥ रूमी रायणछांहमी हे, जो रे० ॥ आदिजिनंद ऊदार, मो० ॥ तिहां जगनाथ समोसरया हे, जो० ॥ पूरब निनाणू वार ॥ मो० ४ ॥ इण गिरवरियै ऊपरा हे, जो रे० ॥ सीधा साधु अनंत, मो० ॥ चोमासे रह्या दोय जिनवरा हे, जो रे० । अजित जिनेसर शांती ॥ मो० ५ ॥ चेलणातलाइ सिद्धसिला हे, जो रे० ॥ अदभुत उलकाझोल, मो० ॥ सिद्धवम सेत्रुंजैनदी वहे हे, जो रे० ॥ करियें नित रंगरोल ॥ मो० ६ । इण डुंगर दीठा थकां हे, जो रे० ॥ ऊपजै परमानंद, मो० ॥ गहिरी गिरवर छांहमी हे, जो रे० ॥ कहे नित जिणचंद ॥ मो० ते० ॥ ७ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

श्रीचंद्रप्रभु प्राहुणो रे । ए देशी ॥ नमो रे नमो सेत्रुंजगिरी रे, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ॥ पापपमल दूरै टलै रे, तूटे करमजंजाल रे ॥ नमो० १ ॥ पूरब निनाणू समोसरया रे, प्रथम जिनंद जगदीस रे ॥ बावीसम जिनवर विना रे, समवसरया

तेवीस रे ॥ नमो० २ ॥ साधु अनंत अनसण ग्रही रे, सीधा ए-हिज ठोम रे । काल अनंत वलि सीऊस्यै रे, साधू अनंती कोमि रे ॥ नमो० ३ ॥ अनंत कब्याणक नूमिका रे, महिमावंत महंत रे ॥ सास्वतो तीरथ ए सही रे, अतिशय जास अनंत रे ॥ नमो० ४ ॥ कोमि नवांतर जे किया रे, पातिक विविध ऊपाय रे ॥ सेत्रुंजै सनमुख चालतां रे, पग२ ते सहू जाय रे ॥ नमो० ५ ॥ धन दिन तेहिज जाणसूं रे, वहिस्युं सेत्रुंजे केरी वाट रे ॥ उहरी यथाविध पालस्युं रे, संघ सहित गहगाट रे ॥ नमो० ६ ॥ पग२ उत्रव अतिघणा रे ॥ पग२ याचकदान रे ॥ प्रेम नगत साहमीतणी रे, जीर्णोद्धार प्रधान रे ॥ न० ७ ॥ धन ते गिरिराय निरखसुं रे, व-ढती मंगलमाल रे ॥ मणि मोतीयमे वधावस्युं रे, रजत सोवन नर थाल रे ॥ नमो० ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्युं रे, करस्युं पावन मोरी काय रे, नगति जुगति जुहारस्युं रे, नान्निनंदन जिनराय रे ॥ नमो० ए ॥ द्रव्य नाव करसुं मुदा रे, पूजा विविध प्रकार रे ॥ नावे नावना नावसुं रे, करसुं सफल अवतार रे ॥ नमो० १० ॥ रत्नत्रयी नमती नली रे, देसुं ते धर बुद्धि रे ॥ नवनव भ्रमण निवारसुं रे, लहिसुं आतमसुद्धि रे ॥ नमो० ११ ॥ विध फरसन मन माहरो रे, मोहि रह्यो दिनरात रे ॥ पुन्य प्रबलथी पामियो रे, उज्जलगिरि केरी जात रे ॥ नमो० १२ ॥ नाथ धूलेवा सुपसा-यथी रे, कारज सगला सिद्ध रे ॥ कहै जिनहरष सूरीसरू रे, हो-यजो मंगल बुद्ध रे ॥ नमो० १३ ॥ इति सिद्धाचल स्त० ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ देशी पंथीमानी ॥ अंग ऊमाहो मोने अतिघणो, नेटवा विमलगिरिंद रे पंथीमा ॥ नान्निराया कुल चंदलो, जिहां वसै मरु-देवानंद रे पंथीमा ॥ वहिलुं बोले रे पंथी म्हारा वहिलुं बोले रे ॥

सेत्रुंजो छै कितनी दूर रे पंथीडा ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नगर सोहामणो, रूडी ललतासरनी पाल रे पंथीडा ॥ जिहां अंबला रे वडला घणा, झुक रही चंपलारी डाल रे पंथीडा ॥ वहि० २ ॥ धन ते पंखी पारेवडा, सेत्रुंज वसिया जे मोर रे पंथीडा ॥ जमा हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते ढोर रे पंथीडा ॥ वहि० ॥ ३ ॥ सेत्रुंज वाटे जी चालतां, झीणी२ उडे खेह रे पंथीडा ॥ मैला थावे संघना कापडा, निरमल थावै देह रे पंथीडा ॥ वहि० ४ ॥ ऊंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीडा ॥ जिहां मिल२ घणा मानवी, गावै प्रभुगुण माल रे पंथीडा ॥ वहि० ५ ॥ घस केसर भर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीडा ॥ फूलाहंदो सोहे प्रभु सिर सेहरो, दिवलांरी ज्योति अभंग रे पंथीडा ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीठां माहरै, ऊपजै परम आनंद रे पंथीडा ॥ मोने भेटणरो जी कोड छै, प्रेम घणे जिनचंद रे पंथीडा ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरब निनाणूं वार सेत्रुंज गिर, ऋषभ जिनंद समोसरियै, सेत्रुंजगिर यात्रा०॥ कोडिसहस भव पातक तूटै, सैत्रुंज साम डग भरिये ॥ विम० जात्रा० १ ॥ चोथ छठ दोय अठम तपस्या, कर चढियै गिरवरियै ॥ विम० जा० ॥ पूंडरीक पद जपियै हरषै, अध्यवसाय शुभ धरियै ॥ वि० जा० २ ॥ पापी अभवी निजर न देखै, हिंसक पिण ऊधरियै ॥ वि० जा० ॥ भूमिसंथारी ने नारितणो संग, दूरथकी परहरियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथे पद चरिये ॥ वि० जा० ॥ पडिक्कमणा दोय विधसुं कीजै, पापपडल विष हरियै वि० जा० ४ ॥ कलिकालै ए तीरथ मोटो, प्रवहण

सम नवदरियै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवंता, पदम कहै नव तरियै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ५ ॥

॥ राग प्रनाती ॥ नाव धर धन्य दिन आज सफलो गिएयो, आज में सजन आनंद पायो ॥ ना० ॥ हर्ष धर निजर नर विमलगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ ना० ॥ १ ॥ पग२ उमंग धर पंथ नित पूठनां, धन्य दोय चरण जिहां चलत आयो ॥ ना० ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह में सुजस गायो ॥ ना० २ ॥ डुर डुरगति टरी जात्र विधसुं करी, पुन्यनंमार पोते नरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सुरगिरसिखर, ऋषन जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ ना० ३ ॥ इति पदं॥

॥ अथ मार्गशीर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ मिगसर महीनेमें मिती मिगसर सुद ११ सो मोनइग्यारस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन मेढसें कल्याणक नये हें सो लिखते हे. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कल्याणक श्रीमल्लिनाथस्वामी के नये, श्री अरयनाथ स्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान नया. एसें इस नरतक्षेत्रमें वर्त्तमान चोवीसीके पांचकल्याणक नये. इस तरे पांच नरत, पांच एरवत में, चोवीसीके पांच२ कल्याणक मिलाणेसें पच्चास कल्याणक नये. अतीत, अनागत, वर्त्तमानकालकी अपेक्षासें मेढसें कल्याणक नये. इस वास्ते यह दिन वमा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास करै, अठ पहरी पोसा करकै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह की शक्ति नहीं होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. एसे इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे की इछा होय तो महीनेंमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै, यह तपस्या करतां इग्यारे अंग ज्ञावसें सुणें, इग्यारे अंग लिखायके देवै, पढणेवालोंकों सहाय देवै, तपस्या ग्रहण करणेकी तथा पारणेकी विधि करै, सो गुरुमुखसें करै. ( समवसरण बैठा भगवंत ) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्वें लिख्या है सो पढे वा सुणै. पीछै उद्यापनमें पैंतालीस आगमकी पूजा करै. यथाशक्ति साहमीवच्छल करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः॥

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥

॥ प्रथम ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः
६ श्रीसर्वानुभूतिअर्हतेनमः
६ श्रीसर्वानुभूतिनाथायनमः
६ श्रीसर्वानुभूतिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक ॥२॥

२१ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीमल्लिअर्हतेनमः
१९ श्रमल्लिनाथायनमः
१९ श्रीमल्लिसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअरिनाथायनमः

जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रेअनागत २४ जिनपंचकल्याणक० ॥३॥

४ श्रीस्वयंप्रभुसर्वज्ञायनमः

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥ ४ ॥

॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः
६ श्रीशुभंकरअर्हतेनमः
६ श्रीशुभंकरनाथायनमः
६ श्रीशुभंकरसर्वज्ञायनमः
७ श्रीसप्तनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरतेवर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणकनाम॥५॥

२१ श्रीब्रह्मेंद्रसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीगुणनाथअर्हतेनमः
१९ श्रीगुणनाथनाथायनमः
१९ श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीगांगीलनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरतेअनागत२४ जिनपंचक०नाम।६।

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीदेवश्रुतअर्हतेनमः
६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः
६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतीते २४ जिनपंचकल्याणक० प्रथ॥७॥

४ श्रीमृडुसर्वज्ञायनमः
६ श्रीव्यक्तअर्हतेनमः
६ श्रीव्यक्तनाथायनमः
६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः
७ श्रीकलाशतनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिनपंचकल्याणक । ८ ।

२१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः
१९ श्रीयोगनाथअर्हतेनमः
१९ श्रीयोगनाथनाथायनमः
१९ श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअयोगनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिनपंचकल्याणकनामः ९

४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिअर्हतेनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिनाथायनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनिष्केशनाथायनमः

६ श्रीमुनिनाथअर्हतेनमः
६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः
६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविशिष्टनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअतीत २४जिनपं०ना०द्वितिय॥१०॥

४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः
६ श्रीहरिचन्द्रअर्हतेनमः
६ श्रीहरिचन्द्रनाथायनमः
६ श्रीहरिचन्द्रसर्वज्ञायनमः
७ श्रीमगधाधिनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान २४पंचकल्यालकना० ॥११॥

२१ श्रीप्रयच्छसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीअक्षोभ्रअर्हतेनमः
१९ श्रीअक्षोभ्रनाथायनमः
१९ श्रीअक्षोभ्रसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअनागत २४ जि०पं०क० १२

४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः
६ श्रीधनदअर्हतेनमः
६ श्रीधनदनाथायनमः
६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः
७ श्रीपौषनाथायनमः

पुष्कराद्धेपश्चिमभरतेअतीत२४जिन पंचकल्याणक ॥१३॥

४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः

६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्कराद्धेपश्चिमभरतेवर्त्तमान२४ जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीविपरीतअर्हतेनमः

१९ श्रीवीपरीतनाथायनमः

१९ श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥ पुष्कराद्धेपश्चिमभरतेअनागत २४जिनपंचकल्याणक॥१५॥

४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः

६ श्रीभ्रमणेंद्रअर्हतेनमः

६ श्रीभ्रमणेंद्रनाथायनमः

६ श्रीभ्रमणेंद्रसर्वज्ञायनमः

७ श्रीऋषभचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअतीत२४जिन पंचकल्याणकनाम॥१९॥

४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः

६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअतीत २४ जि०पंचक० ।१६

४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअभिनंदनअर्हतेनमः

६ श्रीअभिनंदननाथायनमः

६ श्रीअभिनंदनसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेवर्त्त०२४ जिनपंचक० नाम।१७

२१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीमरुदेवअर्हतेनमः

१९ श्रीमरुदेवनाथायनमः

१९ श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअना०२४जिनपंचकल्याणकनाम॥१८॥

४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः

६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः

६ श्रीव्रतधरनाथायनमः

६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥पुष्कराद्धेपूर्वएरवतेअतीत२४ जिनपंचक०ना०॥२२॥

४ श्रीअष्टाह्निकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीवणिक्अर्हतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः
६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनारसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वऐरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥

२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसंतोषितअर्हतेनमः
१९ श्रीसंतोषितनाथायनमः
१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीकामनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वऐरवतेअनागत२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२१॥

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
६ श्रीचंद्रदाहअर्हतेनमः
६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः
६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः
७ श्रीदिलादित्यनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमऐरवतेअतीत२४
जिनपं०क० नाम ॥ २५ ॥

४ श्रीपुरुरवसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअवबोधअर्हतेनमः
६ श्रीअवबोधनाथायनमः
६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविक्रमेंद्रनाथायनमः

६ श्रीवणिक्नाथायनमः
६ श्रीवणिक्सर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वऐरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचक०नाम ॥ २३ ॥

२१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसायकाक्षअर्हतेनमः
१९ श्रीसायकाक्षनाथायनमः
१९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वऐरवतेअना० २४
जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीरविराजअर्हतेनमः
६ श्रीरविराजनाथायनमः
६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
७ श्रीप्रथमनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत२४
जिनपं०क०ना०॥२८॥

४ श्रीअश्ववृंदसर्वज्ञायनमः
६ श्रीकुटिलअर्हतेनमः
६ श्रीकुटिलनाथायनमः
६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४ जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥
२१ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीहरअर्हतेनमः
१९ श्रीहरनाथायनमः
१९ श्रीहरसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीनंदिकेशनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेअना०२४ जिनपंचकल्याणकनाम ॥२७॥
४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः
६ श्रीअसौचितनाथायनमः
६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः
७ श्रीधर्मेंद्रनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएरवतेवर्त्त० २४जिनपंचक०ना०२९
२१ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीधर्मचंद्रअर्हतेनमः
१९ श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः
१९ श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीविवेकनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएर०अना० २४जिनपं०क० ॥३०॥
४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः
६ श्रीविसोमअर्हतेनमः
६ श्रीविसोमनाथायनमः
६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला गुणनेसें मेढसें माला होती हे. जो भव्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगें सो थोमे भवोंमें अनंतसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशीर्ष मास मध्ये प० ॥

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिती पोष वद १०, सो पोषदसमी नामसे पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकल्याणक है, इसीसें यह दिन श्रीसंघमें परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पच्चरकाण करै, जहां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय तहां जात्रा करणेंको जावे, जो कभी यात्रा करणेको नही जा सकै तो जहां

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय उहां महोछव संयुक्त दरसण करणेकों जावै, जलयात्रादि महोछव करके अष्टोत्तरीस्नात्र करावै अथवा पंचकल्याणकजीकी वा सत्तरभेदी पूजा करावै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसें अनेक तरेके उछव करै, और (पास जिणेसर जगतिलो ए ) वा ( वाणी ब्रह्मा वादिनी०आदिक ) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्भित स्तवन पढे वा सुणे. इस पर्वका सेवन करणेसें आधिव्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरेसें ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ ( स्तवन पासजिनेसर जगतिलो) सुणे वा पढे सो उर (वाणी ब्रह्मा०) पहली लिखा है॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मिती माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीऋषभदेवस्वामीका निर्वाणकल्याणक है, इस वास्ते भगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु भगवानके आगै चढावै, वीचमें १ वडा मेरु, च्यारुंदिस छोटा च्यार मेरु, एसें पांच मेरु चढावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढावै । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंद्यावर्त्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरहभेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढावै. पीछै श्री ऋषभदेवस्वामी ( पारंगतायनमः ) इस पदका दो हजार गुणना करै, उर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणेके दिन करै. अतिथिसंविभाग करके पारणा करै. इस तरै १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीछै शक्ति मुजब उछवसें ऊजमणा करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधर्मीवछल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसें अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पुत्र पिंगलरायकुमर गांगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणके

तपस्या करी. तपस्याके करणेसे पांगलापणेका रोग मिटा. तब त- पस्या पूर्ण नयां पीछे तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमई, १३ स्व र्णमई, १३ रूपैमई प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संघसमेत ती- र्थोंकी यात्रा करी. तेरे वेर साधर्मी वात्सल्य किया, बहोत तरेसें ज्ञान नक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देकै श्रीसुव्रताचार्य- जीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमें चवदे पूर्वकों पढके सर्व क- र्मोंका क्षय करके अनंतसुखकों प्राप्त नया. जो नव्यजीव इस पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस नव उर पर नवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकार: ॥

॥ अथ फाल्गुणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाल्गुनमहिनेमें मिती फाल्गुन सुद १४, सो तीसरे चो- मासेकी चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध हे। इस दिनको सर्व कर्त्तव्य आषाढचोमासे तुल्य करे, सो पहली लिखा हे ॥

अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हें ॥ ॥ श्रमणनगवंत श्रीमहावीरस्वामी बारे महीनोंमें ६ बडे पर्व कहा हे. ३ तीन चोमासे, २ उली, १ पर्यूषण. जिसमें उली २ का उर पर्यूषण का एवं ३ अगाईका महोछव तो प्रायें सर्वत्र होता हे. जिसमें नी जेसा वीकानेरमें खरतर गछवालोका पोथा अर्थात् पुस्तकका उछ- व हाथीके होदे बडे आम्बरसें होता हे वा बरधोडा पुस्तकका मुंब- इमें नी होता हे. लेकिन् हस्त्यारूढ नही. उर कार्त्तिक महोछव अ- न्यत्र नी बहोत जगे होता हे लेकिन् कलकत्ते जेसा महोछव स्वमतमें त था पर मतमें कहांइ नी नारतवर्षमें हमने देखा नही. दक्षणमें मल्ले- वार तक हम गयें, पूरबमें दिल्ली लखनेउ आगरा काशी पटणा तक में नही देखा. नगणीसें बावनके वर्षमें हमनें यह उछव कलकत्तेमें देखा था, उर फागुणमहोछव मकसूदाबादका बहोत अछा होता

हे, उगणीससें सुमतालीसमें देखा था. दुसरी जगे नही कहांइ न्नी देखा, लेकिन् किसीन्नी धर्ममहोछवमें आज्ञा विरुद्द जो काम होय सो अछा नही. एक तो न्नगवंतके समवसरणके संग आजकलके न्नाग्यवानलोक धूपके मरसें रेतीके मरसें आप-तो जाते नही फकत बेसमऊ अदम्योंको न्नेजदेतेहें, वो लोक कूदते नाचते न्नागते समवसरणकों उडालादेते लेजातेहें उसमें कितनी आसतना होती हे, कितना कर्म बंधताहे, उसकूं सम्यक्तीजीव विचारके आप विवेक विनय संयुक्त शुद्धन्नावसें धर्मकाममें उद्योग करतेहें उनका दोनुं न्नव सफल हे. वोही महोछव लायकतारीफके हे इस वास्ते आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष हे सो शेलका चोमासापर्वीनाणके सर्व जगें न्नगवंतके धर्मका उद्योत करतेन्नये शुन्नध्यानरूप अग्निसें अष्ट कर्मरूपी काष्ठको जलाके होली करते हें, पीछे सुबोधजलसें स्नान करके अत्यंत सुंदरताकूं प्राप्त होते हें. अब यह होलीपर्व दो प्रकारसें हें. द्रव्यें उर न्नावे. सो प्रथम द्रव्य होलीका अधिकार लिखते हें ॥

॥ इस फाल्गुनमहीनेमें चौदश पूर्णमाशी के दिन केइयक अज्ञानीजीव विवेकविकल न्नयेथके नीचजातिके परंपराको प्राप्त न्नयेथके लकम गाणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हें, उत्तम चोमासा धर्मपर्वका विराधना करते हें. दूसरे दिन मलमूत्र रेतीसें क्रीमा करते हें, खोटे वचन बोलते हें, गधे पर चढते हे, अनेक जीवोंकों दुःख देते हें, एसे जीव वीतरागकी आज्ञा गेमके न्नांम न्नरमोंकी कुलमर्याद करते हें, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हें, दूध गेम पेसाब पीते हें. एसे पुरुष निकेवल कर्मका सघन बंधन करके दुर्गतिकों उपार्जन करते हें, अनर्थदंमसें अनंत न्नव संसारको स्थिती बांधते हें. इसवास्ते आत्मार्थी न्नव्यजीवोकों न्नावहोली करणा चाहिये, सो इस मुजब–प्रन्नुके गुणग्राम वसंतके स्तवन बोले, रात्रीजागर-

ण करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोछव निकालै, नानाप्रकारका नाटिक करै, साहमीवछल करै, साधर्मीभाई आपसमें नाना-तरेकी क्रीडा करै ॥ आगे राजालोक भी वसंतरुतु आणेसें मदन महोछव करणेकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अबीर गु-लालसे सहरके लोक बगीचोमें क्रीडा करते थे, इत्यादि लेख तो शास्त्रोमें वहोत जगे वांचणेमें आया हे, लेकिन् मलमूत्र राख धूडसें खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, भंड चेष्टा करणी, कुल मर्याद छोडणा, वडेरोकी लज्या छोडणी, एसा कृत्य उत्तम पुरु-षोंके करणे लायक नही. यह क्रीडा वाममार्गीयोकी चलाइ भई हे. इसकों प्रवृत्त भयें प्राये दो हजार वर्ष करीब भया. पीछे स्वामी शंकराचार्यकूं यह वात सम्मत भई तबसें धीरे२ अज्ञानी जीव ए-ककी देखादेख बहोत लोक करणे लगगये, लेकिन् एसी कर्त्तव्यता किसी भी शास्त्रमें नहीं देखणेमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी वात हे, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोछवका काम होता हे उस वख-त तो जाणें को फुरसत नही मिलती हे, उर होलीके दिनोंमें मा-तापिता भाई वहिन सबोंकी लज्या छोडके वहोत दिलमें खुसव-खती मानताभया पागलके माफक भांडोंकी तरे वकते फिरता हे. कोइ वेस्याउका नाच होता होय उहां तो हजारुं रुपे खरच कर देतेहे. मनमें फूलते हें हमने वडा नाम किया. तत्व नजरसे देखे उर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुभगतीके पाये पूरे-मजबूत बंध करणेमें आये. एसी लज्जया छोडके जिनमंदिरका महो-छव करो, रात्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उद्योत करो, एसी होली खेलो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे. यह द्रव्ये उर भावे होलीका स्वरूप वांचके आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष तो प्रसन्न होयगें, उर जो महामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो तो रोष धारण करेंगें उर

सच्ची वातकूं कुयुक्तियोंसें झूठी ठहरावेंगें, ओर मध्यस्थ विचारवंत तो एसा कहेंगें यह वात सच्च हे. किसका पर्व किसका खेल, निकेवल इसमें अनर्थ दंम लगता हे, लेकिन् हम इकेला क्या करें, भाइबंधोंकों एसा करते देख हमभी करते हैं, हमसें रहा जाता नही. परंतु यह प्रथा बंध हो जाय तो अछा है. इस वास्ते हे भव्यजीवो इसमें समुदाणी कर्म बंधता हे. ओमे सो धन्य हे. नरकके जाते का संग नही करणा, जेसें सरकारकी एनके जाणकार चोरी करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत ओर वात तक नही करते ओस मुजब एकका अनर्थ खेल देख दुसरेकों बचना चाहिये. काम वो करणा जिस्में दोनों भवमें लाभ होय. इस ध्यहोलीके खेलमें वमी२ लमाइयां होजाती हे. मेमता सहर हालीके ख्यालसें पुष्करणे ओर भोजकोंकी लमाइमें तमाम नुकशान होगया. ओर परभवमें अेरगेर बोलणेके फल सब धर्मोंमें बुरा लिखा हे. इस बाबत जो जो कठोर लबज लिखा हे उसकूं वांच विवेकी मेरे पर गुस्सा नही लावेंगें. जो कुछ लिखा हे सो पूर्वाचार्योंके वचनानुसार लिखा हे. हितोपदेस समझके ओमणेका प्रयत्न करेंगें. मेरे तो नवकारमंत्रके अमसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु हे. जिसमें भी सर्व जीवायोनिसें मित्रता हे. कम या ज्यादा जो कुछ अपशब्द लिखा होय तो मिछामिदुक्कमं ॥१॥ इति फा० ॥ प० ॥

॥ अथ भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग धमाल ॥ होरी खेलीयै नर बहुरन एसो दाव ॥ हो० ॥ दयामिठाई अति भली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अथाणो अति भलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १॥ लेस्या मादल भाव झफ रे, क्रोध मान दोय ताल॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० २॥ सुमताकेसर घोलियें रे, दमवाको

जिम्काव ॥ ग्यान पिचरको पकरकै, वारी मुगतिवधू चित लाव ॥ हो० ३ ॥ एसा साज वणायकै रे, रुषज्ञदेव गुण गाय ॥ श्रीजिनचंद इम खेलतां, वारी ज्ञव२ पातिक जाय॥ हो० ४॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥ जय बोलो रे पास जिनेसरकी, ज० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, अंगिया सोहे केसरकी ॥ ज० १ ॥ त्रिज्ञुवन ज्योति अखंम्ति तनकी, स्यामघटा जैसी जलधरकी ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रज्ञु अदज्ञुत ज्ञानी, करुणा कीधी विषधरकी ॥ ज० ३ ॥ कमठ जगाय वाय ज्युं वादल, जीत करी अपणे घरकी ॥ ज० ४ ॥ मातवामा उदरे जिन जाया, राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करमदल सबल खपाये, श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ ज० ६ ॥ कहे जिनचंद्र मेरे प्रज्ञु पारस, जैसी छाया सुरतरुकी ॥ ज० ७॥ इतिपदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ मधुवनमें जाय मची होरी, म० ॥ ग्यान गुलाल अबीर उमावो, सुमताकेसर रंग घोरी ॥ म० १ ॥ अमृत रूप धरम जिनवरको, शुध क्षमा कहे करजोरी॥ म० २॥ इति पदं॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ यादव मन मेरो हर लियो रे, या० ॥ संजमदूती कान लगी जब, शिवनारी पर चित्त दियो रे ॥ या० २॥ मोह छोम गिरनार सिधाए, नव ज्ञव नेह अलग कियो रे ॥ या० ३॥ तुम हो तीन ज्ञुवनके साहिब, सुरनर कहे तुमे चिरंजीयो रे ॥ या० ॥ ४ ॥ वार२ मेरो वंदना होयज्यो, चंद कहै मन हरखियो रे ॥ या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ इक सुण लै नाथ अरज मेरी, इ०॥ इह संसार गहर तरु सिंधु, ज्रमर परूत जिहां ज्ञव फेरी ॥ इ० १॥ क्रोधादिक बहु मगरमछ हे, ग्रहत जंतु न करत देरी ॥ इ० २ ॥ एसें जलधिसें पार करो तो, तारण तरण विरुद तेरी ॥ इ० ३ ॥

धरमजिनेसर जगपरमेसर, दूर करो दुखकी वेरी । इ० ४ ॥ परम सुभागुण दायक लायक, अनुपम कीरत जग तेरी ॥ इ० ५॥ इति ॥

॥पुनःहोरी॥ सांवरो सुखदाई, जाकी छिव वरणी न जाई सा० ॥ श्री॥ अश्वसेन वामा नंदकी, कीरत त्रिभुवन गाई ॥ समेतसिखरगिरि मंडण प्रभुको, देख दरस हरखाई–हृदय मेरो अति हुलसाइ ॥ सां० १॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो, आज आनंद वधाई ॥ तीन भुवनको नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई–सफल मेरो जनम कहाई ॥ सां० २ ॥ प्रभुके दरस सरस विन पाये, भववन भटक्यो में भाई ॥ अब प्रभु चरण सरण चित चाहत, बाल कहै गुण गाई ॥ प्र० सां ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ नेना हरखाई, आज तेरी सूरत निरखी ॥ ने० ॥ भवभव संचित पाप करम सब, देखत दूर पुलाई, सुमति वधारण कुमति विडारण, ज्ञान विमल भलसाइ ॥ आ० १ ॥ वामानंदन अति छवि सुंदर, महिमा वरणी न जाई ॥ दीनदयाल दयाकर दीजै, आनंद हरख सवाइ ॥ आ० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफीमें होरी ॥ एसें फागुण मस्त महीने चलोरी, देखो स्याम सखी मोपे छोरी ॥ एसें० ॥ व्रजकी सखी सब वनवन निकसी, खेलत मिलमिल होरी॥ डारे गुलाल अबीरसुचोभर, अपने प्रीतम रंगरोरी ॥ च० ए० १ ॥ फूलत फूल सभी वनवनके, मधुरमधुर रस जोरी ॥ कलि कोयल कल करत भरत विन, प्रियतमप्रियतम गौरी ॥ च० ए० २ ॥ रस अनरस रात रसे रस, सरस दरस प्रभु मोरी ॥प्री१तजी सुमता ममता मन, बाल कहै कर जोरी ॥ च० ए० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफी होरी ॥ नेम स्यामसें कहियो मोरी, ने०॥ समुद्रविजै शिवादेवीको नंदन, यादवकुल उदयो री ॥ तेजपूंज तनु

सावलो रूमो, कित गयो मो चित चोरी–अरज नहीं लीनी मोरी ॥ ने० १ ॥ व्याहन आए मेरे मन जाए, लाये बल दल जोरी ॥ तोरणसें रथ फेर चले हो, चढ गए गिरकी जरी–मदन महा रिपु तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल जईहुं दरस विन देखे, रहि है मुख कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमती सखियनसें, विनती करै करजोरी-लगी है मुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ होरी खेलो रे जविक मन थिर करकै, हो० ॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अबीर जरावो जोली जरश्कै ॥ हो० १॥ ग्यान ध्यान मफ ताल बजावो, गुण गावो प्रजु हित धरके ॥ हो० २ ॥ अनुजव अतर फूलेल मंगावो, वास दिसोदिस महम हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रज धूर जमावो, ज्यूं तेरा पाप सबल थरके ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रजू जज विलंब न कर रे ॥ हो० १ ॥ विनय संजारो जर पिचकारी, हांरे तूं तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल जर जोरी, हांरे तूं तो खेल वसंत घरश रे ॥ हो० ३ ॥ सील सुरंग आजूषण अंगै, हांरे तूं तो जावना वागा पहिर रे ॥ हो० ४॥ नीरंजन प्रजुना गुण गावो, हांरे तूं तो आतम अनुजव वर रे ॥ हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हांरे तूं तो गूंजत मन मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पास जिनेसर, हांरे तूं तो जगनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ श्रीजिनलाज कहै प्रजु संगै, हांरे तूं तो अनुपम जव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी ॥ वाके ममतानें धूम मचाई, आज सुमता संग खेलेंगें होरी ॥ वा० ॥ जिन शासन व्रतरंगमहिलमें, दीपकबोध बनाई ॥आ० वा० १॥ सरधासखी क्षमा मृडुता मिल, रुजुता मुक्ति सुहाई ॥

जर अनेक सुमति सखी व्रजमें, अनुभव रंग रंगाई ॥आ० वा०२॥ भाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सहाई ॥ जिन गुण गान संगीत निरत धुनि, भक्ति जिणंद वढाई ॥ आ० वा० ३ ॥ खेलत संजम फाग मिलै सब, बाल आणंद वधाई ॥ अब कुमता संग रंग करे तो, मेरे चित न सुहाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ समकित विन जीव जगत भटक्यो, स० ॥ चउरासी भव भमतां२, नरभव पायो सो दिल खटक्यो ॥ स०१॥ गरभावास नव मासे नीकौ, ओरूकी संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥ पुन्य संजोग मिल्यौ कुल श्रावक, ग्यान प्रकाश भयो घटको ॥ स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासें तेरों मन अटक्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संभाल तूं जाग रे मानवी, सूधो शिवपुरकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहे प्रभु गुण गावो, स्वर्गपुरीमें नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ विसरे मत नाम प्रभूजीको, वि० ॥ प्रभुजीको नाम चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १॥ नाभ कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन भुवन सिर हे टीको ॥ वि० २ ॥ चतुर कुशल चित चोलसुं राच्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने०॥ बहुत हठसुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥व० ने०१ ॥ सब यादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने० २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोर्‍यै, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व० ने० ३ ॥ जनधरभूषण कहे भविजननें, सहु जगमें जस लीनो रे व० ने० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः फाग ॥ गढ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेलै ने-

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल भरयौ, दिशि दूजी गिर वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोभतो, तिण मांहे खेले नेमकुमार ॥ ग० १॥ फूल्या केवमा केतकी, विच फूल्या मरुआ मचकुंद ॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांहे खेले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥ आंबा मोरया बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजे पवन दक्षिणतणी, स्यामभमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३॥ आंब पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचे नेमकुमर अजूं नहीं, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४॥ हरि हलधर गोपि मिली, विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलभरी, मुख ऊपर गंटे यडुनार ॥ ग० ५॥ नेम हठी हठ ना तजे, समझायो जोरें यडुनाथ ॥ रिद्धहरष वाचक कहै, वात सांभलो शिवादेवी मात॥ग०६

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो भाग री, नेमनाथ वर पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजूं ऋषभजिणंदा, जिण मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको छत्र धरयो सिर ऊपर, गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंबेली दोनुं मरुआ, फूल चढाउं गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी एहि बीनती, भवर दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंपानगरमें, फागणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मंडपमें, होय रही हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी भरिय कचोरी, प्रभुजीके अंगियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाल भराए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध भांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, ब० ॥

निविम्न दुरित भर शिखर भि दुरकी, भवसागर तारण तरकी ॥ ब० १ ॥ तीन भुवन तीरथ तारागण, सोभा लहिय निशाकरकी ॥ ब० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिकै, महिमा जीती सुरगिरकी ॥ ब० २ ॥ परमातम पद प्रतिबिंब तनको, बंछित पूरण सुरतरुकी ॥ ब० ॥ वर सोरठ मंडल मंडनकी, सकल करम रज जलधरकी ॥ ब० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाभेय जिनेसरकी ॥ ब० ३ ॥ ए गिरि उदयाचल परि जिनकी, दुति दीपै जेम दिनेसरकी ॥ ब० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित करुणासागरकी ॥ ब० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सहु, तीन भुवन जनहितकरकी ॥ ब० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषभ लंछन सोभाधरकी ॥ ब० ५ ॥ सुंदर प्रभुकी मोहनमूरति, देखत परमानंद भरकी ॥ ब० ॥ केवलकमला प्रभुकी निरंतर, पदतल नमत सुरासुरकी ॥ ब० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, भवश एहिज जिनवरकी ॥ ब० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसै प्रभु नेमनाथ, मेरे दिल वसिया ॥ ऐ० ॥ त्रिगढमें विराजमान, डुंडुभि सुणत कान ॥ अपछर मिल करत गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासण विराजै साम, जीत लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम नाम लसिया ॥ ऐ० २ ॥ तीन छत्र चमर सार, पंच वर्ण पुष्फ धार ॥ गहिर असोक सार, भामंडल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चंग, द्वादश वखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त वसिया ॥ ऐ० ४ ॥

॥ रागवसंत ॥ संभवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥ हांरे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला ॥ सं० ॥ त्राता तीन भुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी ॥ साता दीजै साहिब मोकूं, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं० १ ॥

सेनामात नयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज सेवन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाला ॥ सं० २ ॥ साठ पूरब लख आयु अवगाहन, धनुष च्यारसे धारी ॥ सोवन वरण सेवे दुरितारी, सावत्थी नगरी सारी हो लाला ॥ सं० ३ ॥ समेत सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्रादिक मिल मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाला ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण सुद्धसें त्रिभुवन पतिकुं, वंदना होज्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा चित चाहत, सुगुण सदा हितकारी होलाला ॥ सं० ५ ॥ इति पदं॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस दिखावो रसिया, सा०॥ सोरठ देसमें नीके दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया॥ सा० १ ॥ रेवतगिर पर जदुपति केरा, दिख्या ग्यानकेवल रसिया ॥ सा० २॥ राजुलनारी नेमीसर हाथै, संजम लेइ भवोदधि तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरब निनाणुं समोसरिया ॥ सा० ४॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाभनंदनकूं करुं जुहारा, सा० ६॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया ॥ सा०॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे भव हारो रे॥ जि० ॥ रथ पानधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि तन कर हियरा हरख भरे, प्रभु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या० १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरभव सफल जमारो ॥ भवि जन मन भमरा रंग भरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥ भवदुख भंजन नाथ निरंजन, नाम लीये निसतारो॥ ममता तज समता संग भेली, निज आतम काज सुधारो॥ जि० ३॥ आज नगरमें रंग वधाई, घर२ मंगलाचारो ॥ रथ महोछव रचना रची हद, मुख

जय२ सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद विचारी, सेवक सुगुण संभारो ॥ प्रभु पंकजकी छिव सरणा ग्रही, भवसा यर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वणाय सखी सब, शिखर सैल जेसें चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो, मोसें प्रीत लगाइ भामनी ॥ आ० ॥ तोरण आय चले मोहि छोमी, कोन चूक मोपै काही भाममी ॥ आ० ॥ २ ॥ मैं न तजूंगी नव भव केरी, प्रीत वणी जेसी इंदु यामिमी ॥ आ० ॥ राजुल पहली प्रीतमसेती, बाल कहै भई सुगति गामिनी ॥ आ० म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेलै ॥ रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥ पर मंदिर तज अविचल लीजै, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥ हिल मिल आप परम रस चाखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो० रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागै, सोहै अदभुत वान ॥ हो० रं० ४ ॥ सुमति अबीर उमाय जगतमै, बैठे शिवपुर थान ॥ हो० रं० ५ ॥ अनुभव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर आन ॥ हो० रं० ६ ॥ एसा खेल भविकजन धारै, वंछित पावै दान ॥ हो० रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥ मनमृदंग वजै तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित केसर चीर रंगाउ, पहिरो मनवैराग॥ हो० २॥ लाख चोरासी रामत छांमी, च्यारुं गतिसें भाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ ऐसा खेल भविकजन धारै, पावै भवजल थाग ॥ हो० ॥ चेतनता सुद्ध होय जगतमें, समकितके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसें धाय२, दुरजनकी लाज मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अबीर उमावो, क्षमा करो रंग लाय २ ॥ दु० हो० १ ॥ शील संजम व्रत पान मिठाई, ध्यान धरूंगी मैं गाय गाय२ ॥ दु० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेह उमावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ दु० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अरज वीनती, सरण गही मैं तेरी आय२ ॥ दु० हो० ४॥ इति पदं॥

॥पुनः होरी॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे भरी, शिवपुरकी वात पूछूं कबकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर, परमातम निज ध्यान धरी ॥ मे० १॥ मोहन रंग भस्यो रंग शीवपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो ऋषभ बेठै अलवेसर, मारो गुलाल मुठी भरकै ॥ बावो० ॥ मुठी भरकै पसली भरकै, बावो० ॥ चूआ२ चंदन ओर अगरजा, केसरका मटका भरके ॥ बावो० १ ॥ रतनजडित शिर छत्र बिराजै, अंगी जडाव जडी जरकै ॥ बावो० २ ॥ बांहै बाजूबंध बहिरखा विराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा० ३ ॥ नाभिराया मरुदेवीको नंदन, रमिये भवि आदीसरसें ॥ बा० ४॥ आदिखान है दास तुमारो, तार लीओ अपणे करकै ॥ बावो० ६॥

॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे, जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ भवःदुख वारण शिवसुख कारण, देखत भवनही फंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन, प्रणमुं ऋषभ जिनंदना रे ॥ गि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान तुमारो, जिम चातक दिल चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कहै

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥ देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे है अति नीको ॥ द०१ ॥ बीस कोसथी दरसन दीगे, नागो नरम सकल जियको ॥ द० २ ॥ वीसे टूंके वीस गोमटकी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब जिनवरके शरणे आयो, रसतो पायो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥इ०

॥ पुनःहोरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसण करलै, संघयात्रा-संघयात्रा करणसें पाप कटत है, सि०द० ॥ कोटि अनंता इण गिरि सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ ऋषभ जिनेश्वरजीको दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, नवरका दुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि जिनंद चंद ॥ मोहे० ॥ रंग तूंही रंग रे ज तूंही है, संजम रंग मोहि रंगदे ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अनादिको, सो अब इनकूं खिनदे ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी ऋद्धि तेरी में देखी, सो अब मुझकुं सझदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे, बा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो०४॥ भूधरदास कहे सम्कित दे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो०५॥

॥ पुनःहोरी ॥ मेरे पारसप्रभुजीके रंगमंडपमें, खेलत संत वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अबीर विलसंत ॥ ॥ मे० १ ॥ प्रभुगुण प्रेम पिचरकी छूटत, समता सखिय मिलंत ॥ आगम लहर फूली फुलवाडी, मुनिवर भ्रमर गुंजंत ॥ मे० २ अंग आभूषण पंचेंद्रिय वस, गुरुसेवास लहंत, बार भावना गहिर कसूंबा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदभूत पंच महाव्रत वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कहै जिनचंद प्रभुकी कृपासें, नी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ रंग मच्यो जिनद्वार चालो खेलिये होरी, रं० ॥ पास प्रभु दरबार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन च्यार रे, चा० कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥ कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल महके अपार रे ॥ चा० २ ॥ लाल गुलाल अबीर उडावत, पासजीके दरबार रे ॥ चा० ३ ॥ भर पिचकारी गुलाबकी छिरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥ ताल मृदंग बीण डफ बाजै, भेरी झुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥ सब सखियन मिल नाटक करके, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥ रत्नसागर प्रभु भावना भावै, मुख बोलै जयकार रे॥ चा० ७ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ नेमजीसें कहियो मोरी, सामरेसें कहियो मोरी ॥ तोरण आए किण भरमाए, छोड चले अभिमानी ॥ हां रे लाला छो० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोडी प्रीत पुरानी-दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पडीसो मुंहसें कहियो, ना करिये सोधाणी ॥ आठ भवोकी प्रीत बंधाणी, नवमे चले क्युं ज्यानी–श्याम तेरी सूरत पिछाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें नेह लागी, राजुल गुलकी वामी ॥ वीनती सुणके अमर पद दीजे, रंग विजय सुख दानी–आवा उर गमन छिदानी ॥ सा० ३॥ इ०॥

॥ पुनःहोरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमें वरसै रंग, जिन० ॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा, सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुभव लहर फुली फुलवाडी, दिन२ वढते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम वागा अंग अनोपम, शुक्ल ध्यानके संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद चिंतामणि चित धर, तुझसुं अविहड रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ इ०॥

॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वणी हे सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रभूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आये, आणी भाव अभंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ ग्रहबंधीकी भांत भली हे, बुंटिया नवश रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्यो हे, कोर केवमा संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोय कुंमल, बाजूबंध सुचंग ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोभत है, सौरंग वास सुगंध ॥ श्रीचिं० ३॥ त्रिभुवन साहब तखत विराजै, मह्रिबान मनरंग ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस धर रंग ॥ श्रीचिं० ४ ॥ सुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरंग ॥ श्रीचिं० ॥ भावना भावो जिनगुण गावो, अमर घणे उमरंग ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चित ध्यावो रे, वंछित फल पावो ॥ चिं० ॥ सकल भविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण गावो रे ॥ वंछित० १ ॥ अबीर गुलाल लाल संग लावो, भर२ मुठियां उमावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं छिमकावो, भाव शुद्ध भल भावो रे ॥ वंछि० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुष्प बनावो, दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ दरस सरस करके सुख पावो, पुण्य भंमार भरावो रे ॥ वंछित० चिं० ३ ॥ वाजित्र वाजा विविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ अमरसिंधुर आनंद वधावो, जिनजीसें लय लावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ मत मारो पिचकारी रे, में तो सगरी भीज गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांहि, गावत आगम राग ॥ लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति सोहाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगाउं, पहिरुं मन वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चोरासी रामत छोरूं, च्यारों गति सोहाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ एसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में० ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारै, इण विध खेले फाग ॥ पिया में० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिनजी, नेम० ॥ मे हुं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये॥ हो० ने० १॥ हम हे केतकी तुम हो २ भमरा, फिर वासना लीजीयै ॥ हो० ने० २ ॥ में हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना कीजीयै ॥ हो० ने० ३॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद दीजीयै ॥ हो० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसें, करम कटै ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिछाएयो, ममता मिट गई सारी जानसें ॥ कर्म क० आ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार सम, नास भयो सब ज्ञानभानसें ॥ कर्म क० आ० २॥ परमातम पद पावत सोई, विनय भजत पद अचल थानसें॥ कर्म० आ० ३॥

॥ पुनः होरी॥ लाल तेरे नयनोंकी गति न्यारी, एतो उपसमरसकी क्यारी ॥ लाल ते० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे, नयन भये अविकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण निवारी ॥ लाल ते० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत भरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इछा, यामें हे हुसियारी ॥ लाल ते० २ ॥ एसा लछन हे नयनोंमें, क्युं पामे भव पारी, योही विचार करो दिल अपनें, होत कर्मसें भारी॥ लाल ते० ३ ॥ धर्म विना कोई सरणा नही हें, एसो निश्चै धारी ॥ विनय कहै प्रभु भजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार भम्यो, द० ॥ चोरासी लख योनिमें भटकत, लहि मानवभव युंही गम्यो ॥ द० १ ॥ पुन्य उदय श्रावक कुल पायो, घटमें ज्ञान उद्योत भयो ॥ द०

२॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो॥ द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, भटकत भवमें क्युं भरम्यो ॥ द० ४ ॥ कहत क्षमाकल्याण निरंतर, भज भगवंत तेरो पाप शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत छेमो मोने यूंही रे, कोइ चूक बतावो ॥ म० । अबीर गुलाल भावसें रमतां, हमसुं कहिय न खेलो रे ॥ कोइ० म० १॥ रथ फेरी प्रभुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी रे ॥ को० म० २ ॥ वहुत हठासुं व्याह मनायो, जीव देख दया आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल ऊभी अरज करत हे, एक वार फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए, पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्यारो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवत्स लंछन जनम भद्दिलपुर, कुल इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेउ धनुष शरीर सुसोभित, कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरब आयु कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५॥ दीनदयाल जगत प्रतिपालक, अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके साहिब सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥ ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी विच सार ॥ ने० २ ॥ मंगलधन धन्नामुनि नायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३ ॥जय२ खेमकुसल गुरु जंपै, आनंदघन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं॥

॥ इम मास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासें संग्रही, अति सुगम भाष प्रकाश करतां भव्यजन मन गहगही ॥ निधि बाण नंद सुचंद विक्रम माघ सुदि पूनम सही, श्रीबृहत्खरतर गच्छ पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन भगवंत के कल्याणकके है सो सर्व भव्यजीवोंके सेवन करणे योग्य है, लेकिन् कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही ( और विशेषमें ) पंच कल्याणककी तपस्या करणेवाले भव्यजीवोंके अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासें पंच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पंच कल्याणकको टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५
५ श्रीसंभवनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीपद्मप्रभुजीअर्हतेनमः
१२ श्रीनेमनाथजीपरमेष्ठिनेन०
१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनमः
३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४
५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः
६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०
१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः
११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनमः

पोषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥
१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्हतेनमः

कार्त्तिकशुक्लपक्षे ॥ २ ॥
३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ९ ॥
१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनमः
१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०
११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीअर्हतेनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०
११ श्रीनमिनाथजीसर्वज्ञायन०
१४ श्रीसंभवनाथजीअर्हतेनमः
१५ श्रीसंभवनाथजीनाथायन०

११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः
१२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्हतेनमः
१३ श्रीचंद्राप्रभुजीनाथायनमः
१४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय०

माघकृष्णपक्षे ॥ ५ ।

६ श्रीपद्मप्रभूजीपरमेष्ठिने०
१२ श्रीशीतलनाथजीअर्ह०
१२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः
१३ श्रीरुषभदेवजीपारंगता०
३० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायन०

फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १०

६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता०
७ श्री चंद्रप्रभूजीसर्वज्ञायन०
९ श्रीसुविधनाथजीपरमेष्ठिने०
११ श्रीरुषभदेवजीसर्वज्ञायनमः
१२ श्रीश्रेयांसजीअर्हतेनमः
१२ श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः
१२ श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः
१४ श्रीवासुपूज्यजीअर्हतेनमः
३० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः

चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५

४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्ठिने०
४ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
५ श्रीचंद्रप्रभूजीपरमेष्ठिने०

पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०
९ श्रीशांतिनाथजीसर्वज्ञा०
११ श्रीअजितनाथजीसर्व०
१४ श्रीअभिनंदनजीसर्वज्ञा०
१५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०

माघशुक्लपक्षे ॥ ए

२ श्रीअभिनंदनजीअर्ह०
२ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०
३ श्रीविमलनाथजीअर्ह०
३ श्रीधर्मनाथजीअर्हतेनमः
४ श्रीविमलनाथजीना०न०
८ श्रीअजितनाजीअर्ह०
९ श्रीअजितनाथजीनाथा०
१२ श्रीअभिनंदनजीनाथा०
१३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०

फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५

२ श्रीअरनाथजीपरमेष्ठिने०
४ श्रीमल्लिनाथजीपरमेष्ठि०
८ श्रीसंभवनाथजीपरमेष्ठि०
१२ श्रीमल्लिनाथजीपारंग०
१२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०

चैत्रशुक्लपक्षे । ८

३ श्रीकुंथुनाथजीसर्वज्ञा०
५ श्रीअजितनाथजीपारं०

८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः
८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०

वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९

१ श्रीकुंथुनाथपारंगतायनमः
२ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०
५ श्रीकुंथुनाथजीनाथायनमः
६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्टि०
१० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०
१३ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०
१४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०
१४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०
१४ श्री कुंथुनाथजीअर्हतेन०

ज्येष्टकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥

८ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०
९ श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०
१३ श्रीशांतिनाथजीअर्हं०
१३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०
१४ श्रीशांतिनाथजीनाथा०

आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥

४ श्रीआदिनाथजीपरमे०
७ श्रीविमलनाथजीपार०
९ श्रीनमिनाथजीनाथा०

श्रावणकृष्णपक्षे । ४

३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०
७ श्री अनंतनाथजीपर०

५ श्रीसंभवनाथजीपारंग०
५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०
९ श्रीसुमतिनाथजीपारं०
११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०
१३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः
१५ श्रीपद्मप्रभूजीसर्वज्ञाय०

वैशाखशुक्लपक्षे ८

४ श्रीअभिनंदनजीपरमे०
७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०
८ श्रीअभिनंदनजीपारंग०
८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०
१० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीविमलनाथजीपारंग०

ज्येष्टशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥

५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०
९ श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्टि०
१२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्हं०
१३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०

आषाढशुक्लपक्षे ३

६ श्रीवर्धमानजीपरमेष्टि०
८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०
१४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०

श्रावणशुक्लपक्षे ५

२ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०
५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

| | |
|---|---|
| ८ श्रीनमिनाथजीअर्ह० | ६ श्रीनेमिनाथजीनाथाय० |
| ९ श्रीकुंथुनाथजीपरमे० | ८ श्रीपार्श्वनाथजीपारंग० |
| भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥ | १५ श्रीमुनिसुव्रतपरमेष्टि० |
| ७ श्रीचंद्रप्रभूजीपारंग० | भाद्रपदशुक्लपक्षे १ |
| ७ श्रीशांतिनाथजीपरमे० | ९ श्रीसुविधनाथजीपारं० |
| ८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे० | आश्विनशुक्लपक्षे १ |
| आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २ | १५ श्रीसुविधिनाथपरमेष्टि० |
| १३ श्रीमहावीरजीगर्भाय० | |
| ३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा० | |

इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार षष्ठमप्यस्ति ॥

## ॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घडी गुरुके पास पंच कल्याणक तप ग्रहण करै, उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पच्चक्खाण करै, तीन टंक देववंदन करै, पडिक्कमणा करै. जिस दिन जो महाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै, उर पहली लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुणै या पढै. जहां भगवंतकी कल्याणक भूमि होय उहां वडे महोछवसें संघ समेत यात्रा करणेकों जावै. उहां विधी संयुक्त सर्व भगवंतोके पंच कल्याणकका उछव करै. जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीमहावीरस्वामीके षट् कल्याणकका उछव करै ॥ अब २३ भगवंतकी अपेक्षायें पांच, श्रीवीरप्रभूके अपेक्षायें षट् कल्याणक संक्षेप उछव विधि लिख्यते॥ च्यवन कल्याणककों (परमेष्टिनेनमः) कहियै. इस दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायके च्यवन कल्याणादिकका उछव करै, हीरा चढावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककूं ( अर्हतेनमः ) कहणा. इस दिन जलजात्रादिकका महोछव करके अष्टो-

त्तरी स्नात्रादिक करावै, वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ दिक्षा कल्याणककों (नाथायनमः) कहणा. इस दिन समवसरण निकालै, अशोक वृक्षादिकके नीचै स्थापन करके दिक्षाका उत्तव करै, घृत गुरु वस्त्रादिक चढावै, शक्ति मुजब दान देवै ॥ ३ ॥ केवलज्ञान कल्याणककों (सर्वज्ञायनमः) कहणा. इस दिन समोसरणमें ज्ञगवंतकों विराजमान करके आठ प्रातिहार्य प्रगट करै, तरे२ के उत्तव करै, वस्त्र आज्ञूषण चढावै, सुपेदचंदन चर्चित गोला चढावै ॥ ४ ॥ निर्वाण कल्याणककों (पारंगतायनमः) कहियै. इस दिन निर्वाण कल्याणकके ज्ञावगर्ज्ञित उत्तव करै, लड्डू चढावै ॥ ५ ॥ और जो गर्ज्ञापहार कल्याणकका उत्तव करणा होय तो च्यवनकल्याणकके उत्तव समान करै ॥ ६ ॥ इस मुजब सर्व कल्याणकका उत्तव करै. तपस्या पूर्ण होणेसें पंच कल्याणकजीकी पूजा करावै, गुरुज्ञक्ति करै, साहमीवत्सल करै. इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या जो ज्ञव्यजीव करेंगे सो अनंत सुखकों प्राप्त होंगे॥ इति पंचकल्याणक तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ पखवासेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ सीमंधर करजो मया ॥ ए देशी ॥ जंबुद्वीप सोहामणो, दक्षिणज्ञरत उदार ॥ राजग्रही नगरी ज्ञली, अलिकापुर अवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख थाय ॥ मनवंछित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राज करै तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम ॥ पटराणी पद्मावती; शीलगुणें अज्ञिराम ॥ श्री० ३॥ श्रावण उज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश ॥ माताकुक्षि सरोवरे, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४॥ जेठ पढम पक्ष अठमी, जायो श्रीजिनराज ॥ जन्ममहोछव सुर करै, त्रिज्ञुवन हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

रूप निधान ॥ जिनवर लंछन काछवो, वीस धनुष तनु मान ॥ श्री० ६ ॥ परणो नार प्रभावती, भोग पुरंदर साम ॥ राजलीला सुख भोगवै, पूरै वंछित काम ॥ श्री० ७ ॥ तब लोगांतिक देवता, आवि जंपै जयकार ॥ प्रभु फागुण वदि बारसै, लीधो संजम भार ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि बारसै, मनधरं निरमल ध्यान ॥ च्यार करम प्रभु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ९ ॥ (ढाल २ ॥ सुख कारण भवियण ॥ ए देशी ॥ ततखिण तिहां मिलिया चलिया सुरनर कोडि, प्रभुना पदपंकज प्रणमैं बे कर जोडि ॥ बे कर जोडी मछर छोडी समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रिगडो छत्रत्रय झलकंत ॥ सिंहासण बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म प्रकासै, बारै परखदा बैठी आगलि सुणै मन उल्हासै ॥ १० ॥ तपने अधिकारै पखवासो तप सार, पडवाथी कीजै पनरह तिथी उदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उपशम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपीजै वांदी देव उल्लास ॥ तप उजमणैं रजत पालणो सोवन पूतलो चंग, मोदकथाल देहरै मूंकी जिनवर स्नात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरंतर अदुख दर्शनो जेम, मनवंछित केरा सुख पामीजै तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति वंछभ भरतार, जस कीरत सोभाग बडाई महियल महिमा जाण ॥ परभव सुगति फल लहियै, एं तपनें प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर थापी चतुर्विध संयतणो अधिकार, भरुअछ प्रमुख नगरादिक करियां विहार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंदक पंच सयां परिवार, कार्त्तिकसेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥ तीसं सहस वरष आउखो पालै जग दया सार, श्रीसम्मेतशिखर परमेसर पुहता मुगति मझार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक थुणिया त्रिभुवन ताय, मुनिसुव्रतस्वामी वीसमो जिनवर राय ॥ वीसमो जिनवर राय

जगतगुरु नयनंजण नगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अजरामर अरिहंत ॥ श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकलचंद गणि सीस, वाचक समयसुंदर इम पन्नणै पूरो मनह जगीस ॥ ॥१४॥ इति ॥

॥ अथ पखवासा तप विधि लिख्यते ॥

प्रथम शुन्नदिन गुरूके पास तप ग्रहण करके सुद (१) पफ्रिवासें पूर्णमासी तक इकसार १५ नपवास करै. जो शक्ति नहीं होयतो प्रथम सुदि पक्षकी पफ्रिवा १, दूसरे सुदि पक्षकी दूज, एसें अनुक्रमसें पनरे सुद पक्षमें तपस्या पूर्ण करै. श्रीमुनिसुव्रतस्वामी के पांच कल्याणक नावगर्भित स्तवन पढै. गुरूका संयोग होय तो गुरूके पास सुणै. ( श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका २००० दो हजार गुणना करै. और तप ग्रहण करणेकी तथा देववंदनादिककी विधि पहले लिखी है नस मुजब विवेकी जीव सब तपस्याकी विधि करै. विधि संयुक्त करणेसें नत्तम फल मिलता है ॥ इति पखवासाविधि ॥

॥ अथ दश पच्चरकाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर नगवंत ॥ त्रिगमै बैठा जिनवरू, परषद बार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिण समे, पूछै श्रीजिनराय ॥ दस पच्चरकाण किसा कह्या, कीयां कवण फल थाय ॥ २ ॥ (ढाल १ ॥ सीमंधर करज्यो मया ॥ ए देशी) ॥ श्रीजिनवर इम नपदिसै, सांनल गोयम ताम ॥ दस पच्चरकाण कियां थकां, लहिये अविचल ठाम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी ३, साढपोरसी पुरिमढ्ढ ४॥ एकासण नीवी कही ६, एकलठाण देवढ्ढि॥ श्री० ४ ॥ दात ८ आंबिल ए नपवास १० ही, एहिज दस पच्चरकाण ॥ एहना फल सुण गोयमा, जूजूवा करूं वखाण ॥ श्री० ५ ॥ रतनप्रन्ना १ सर्करप्रन्ना २, वालुक तीजी जाण ॥ पंकप्रन्ना

४ तिम धूमप्रन्ना ५, तमप्रन्ना ६ तमतम ७ ठाम ॥ श्री० ६ ॥ नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम वस ते सही, ऊपजै तिणहीज ठोर ॥ श्री० ७ ॥ छेदन न्नेदन ताम्ना, न्नूख तृषा वलि त्रास, रोम२ पीमा करे, परमाहम्मो तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल न्नर नहीं जिहां सुख ॥ किया करम जे न्नोगवै, पामे जीव बहु छुःख ॥ श्री०ए॥ इक दिनरी नवकारसी, जे करै न्नाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो आनखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करै नवकारसी, ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप वलि पावला, निरमल होवे जी काय ॥ श्री० ११ ॥ ( ढाल २ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो ॥ ए चाल) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥ न्नावसुं जे पोरसी करै, छुरगति छेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांहि जै नारकी, वरसें एक हजार ॥ करम खपावै नरकमें. करता बहुत पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार ॥ करम हणें सहस एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४॥ छुरगति मांहे नारकी, दस हजार प्रमाण ॥ नरक आयु खिण एकमें, साढपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमढ्ढ करै नित जीव जे, नरके ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमढ्ढ करम खपाय ॥ ॥ सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें छुःख अनंत ॥ इतरा करम एकासणें, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोमि वरसां लगै, करम खपावै जीव ॥ नीवीय करतां न्नावसुं, छुरगति हणे सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोमि जीव नरकमें, जितरो करै करम दूर ॥ तीतरो एकलगणाही, करै सही चकचूर ॥ सु० १ए ॥ दात करंता प्राणियो, सो कोमी परिमाण ॥ इतरा वरस छुरगति तणा, छेदै चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो, कोमी

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, भाव आंबिल अधिकार ॥ सु० २१॥ कोडि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मझार ॥ उपवास करै इक भावसुं, तो पामे मुगति मझार ॥ सु० २२ ॥ (ढाल ३॥ केकेइ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोडि वरसां लगे, नरके करता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ छठमं तप करतां थकां, सही नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोडि लाखही, जीव लहै तिहां डुरक रे ॥ ते डुख अठमं तपहुंती, दूर करी पामे सुरक रे ॥ गो० २४ ॥ छेदन भेदन नारकी, कोडाकोडि वरसोइ रे ॥ कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो० २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोडाकोडि वरसनो पाप रे ॥ दूर करै खिण एकमें, निश्चै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय विशेष फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे भला, करता त्रिभुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं करै, चवदह पूरब होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां वलि नावै पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करै जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै भव पार रे ॥ गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अनंत भवाना पापथी, छूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती पापी तरया, निसतरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एकमें, शिव पाम्यो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१॥ तपना फल सूत्रे कह्या, पच्चरकाणतणा दस भेद रे ॥ अवर भेद पिण छै घणा, करतां छेदै त्रय वेद रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ (कलशः) ॥ पच्चरकाण दस विध फल परुप्या महावीर जिणदेवए, जे करै भविअण तप अखंडित तासु सुर पय सेव ए ॥ संवत्त निधि गुण अश्व शशि वलि पोस सुदि दशमी दिने, पदमरंग वाचक शीस गणिवर रामचंद्र तप विधि

नखे ॥ ३३ ॥ इति दस पच्चक्काण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पच्चक्काण तप विधिः ॥

॥ यह दस पच्चखाणके स्तवनमें खुलासा दस पच्चक्काणके भेद और बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक तपस्या करणेके फल भगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजब उत्तम पुरुषोने रचना करीहै. इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तवनकों पढके तपस्या करणेमें आदरवंत होता है, और किसीके दश पच्चक्काण तप करणेकी इछा होय तो पहिले दिन नवकारसी, दुसरे दिन पोरसी, इस तरै स्तवन मुजब १० पच्चक्काण दस दिवसे सेवन करै, सदा स्तवन सुणें पढै, अंतमें पूजा करावै, शक्ति माफक उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रभावसें दुरगतिबंध दूर करके अछी गती पावे, महा एश्वर्यवंत होय, भाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल भेटियै ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेवियै, धर कर शुभ परिणाम लाल रे ॥ तीजै भव सेव्यो थको, बांधे तीर्थंकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही, ज्ञाताअंग मझार लाल रे ॥ सुणजो भवि तुमे भावसुं, चित्तसें करिय उच्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहै, वीस थानक तप एह लाल रे ॥ निरदूषण शुभ महुरते, उचरीजै ससनेह लाल रे ॥ वी०३॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ थिवर ५ उवज्झाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाण ८ दंसण ९ अरु, विनय १० नमूं उलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ बंभ १२ क्रियापदे १३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७ ज्ञातने १८ श्रुत भणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीश लाल रे ॥ वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणनो कर मेव लाल रे ॥

अथवा दिन विसा लगै, वीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥ एक उली षट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर नवी करणी पडै, पिछली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥ छठ अठम उपवाससुं, अथवा देखी शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर आराधियै, देव वांदे निज भक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपूरण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदे सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी थिवर पाठक पदे, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही, सात थानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै सदा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पडिकमणो दोय टंकही, करियै पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक उली करो वीस लाल रे ॥ वीसावीसी च्यारसै, तप संख्या कही एम लाल रे ॥ वी० १२ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित्त धार लाल रे ॥ काउसग्गने परदक्षणा, मुख भणियै नवकारलाल रे ॥ वी० १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणै, कीजै जिनपद भक्ति लाल रे ॥ पूजन शुद्ध मन साचवै, दिन२ वढती शक्ति लाल रे ॥ वी० १४॥ मृतक जनम ऋतुकालमें, कवि धारयो उपवास लाल रे ॥ सो लेखे नाहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी० १५ ॥ सावद्य त्यागपणो करै, सोक न धारे चित्त लाल रे ॥ शील आभूषण आदरै, मुखसुं बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १६ ॥ जेठ आसाढ वैशाखमें, मिगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए षट् मासे मांहिमें, व्रत ग्रहिये वडभाग लाल रे ॥ वी० १७ ॥ तप पूरण हुवां थकां, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारीनें, उच्छव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १८ ॥ वीस२ गिणती तणा, पुस्तक पूठा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै हठवाद

लाल रे ॥ वी० १९ ॥ फलवधी नगरनी श्राविका, कीधी विध चित लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा जणी, उद्दिज मोक्ष उपाय लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आज्ञा धार चित्त मझार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंद वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी शशि गड खरतर जणी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुज महुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुविहित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक उली दो महीनेसे लेकर ब महीने पूरी करै. कदास ब महीनेमें पूरी नही कर सके तो वो उली गिणतीमें नही. उर फेर नइ करणी पमती है. एक उलीके वीस पद हे ( तहां ) कोइ वीस दिनमें वीस पद जुदा२ गिणते हे, कोईयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हें, दूसरै वीशों दिनमें दूसरा पद, एसें वीशों पदकी वीश उली करै. तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिकै आराधै. वीश अठमसें एक उली होय ( एसें ) वीस उली ४०० सें अठमसें आराधै. और उससें कम शक्ति होय तो बठसें आराधै. उससें कम शक्ति होय तो चोविहार उपवास करकै आराधै. उससें हीन शक्ति होय तो तिविहार उपवास करके आराधै. उससें हीणशक्ति आंबिल ( तथा ) तिविहार एकाशणा करकै आराधै. उसमें जो शक्तिवान होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै. हीनशक्ति दिनपोसह करै. वीसों पद पोसहसेती आराधै. जो पोसह शक्ति सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, थिवर पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपदमें ७, यह सात थानक पद तो पोसह करकेही आराधै, जो इतनी

भी शक्ति नहिं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार छोडै, सो शक्ति भी नही होय तो यथाशक्ति तप करके आराधै. अपणी हीणता भावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप नही गिणै जावै, स्त्रियां भी ऋतुसमयका तप नही गिणै, तथा तपके दिन पोसह सहित करै तो वहोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो सके तो तपके दिन उभय टंक पडिक्कमण करै, तीन टंक देववंदन करै, दो हजार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, भूमि शयन करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नही करै, असत्य नहि बोलै, सब दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे तो पारणेके दिन जिनभक्ति करके पारणा करै, जो तपके दिन पोसह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनभक्ति करै करावै, भावना भावै तथा तपके दिन तप पदके गुण भेद प्रमाण संख्यासें काउसग्ग करै. इतनाही तद्गुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदणा करै. उस पदका गुण याद करके उदात्त स्वरसें स्तवना करै, हर्षित रहै॥

॥ अथ वीस स्थानक गुणना और काउसग्गका प्रमाण लिखते है॥

(णमो अरिहंताण) १००० गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १ ॥ (णमोसिद्धाणं) २००० गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ २ ॥ (णमों पवयणस्स) १००० गुणना लोगस्स ७ का काउसग्ग ॥ ३ ॥ (णमो आयरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स ३६ का काउसग्ग (णमो थेराणं) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ ५ ॥ (णमो उवज्झायाणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ ६ ॥ (णमो लोए सव्व साहूणं) दो हजार गुणना लोगस्स २७ का काउसग्ग ॥ ७ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ ॥ ८ ॥ (णमो दंसणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का

काउसग्ग ॥ ए ॥ ( णमो विणयसंपन्नाणं ) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १० ॥ ( णमो चारित्तस्स ) दो हजार गुणना लोगस्स ६ का काउसग्ग ॥ ११ ॥ ( णमो बंभवय धारीणं ) दो हजार गुणना लोगस्स ए का काउसग्ग ॥ १२ ॥ ( णमो किरिआणं ) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ १३ ॥ ( णमो तवस्सीणं ) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ १४ ॥ (णमो गोयमस्स ) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का काउसग्ग ॥ १५ ॥ ( णमो जिणाणं ) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १६ ॥ (णमो चरणस्स ) दो हजार गुणना लोगस्स १९ का काउसग्ग ॥ १७ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ १८ ॥ ( णमो सुअनाणस्स ) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १ए ॥ ( णमो तिथस्स ) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग करै ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों उलीमें सर्व पदके उछव महोछव प्रभावना उजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते इतनी शक्ति नहीं होय तो एक उली तो विशेष उछवादिक संयुक्त करणी चाहिये. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्रसें लिखी है. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसें वीशों पदकी जुदी२ विधि गुरुके मुखसें समझके करै. जो गुरूका संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखके वीस स्थानक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढै, वीस स्थानकजीकी पूजा करावै, अपणी शक्ति माफक वीस२ ज्ञानोपकरण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावे, गुरुपदका गुरुखाते लगावे, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,

साहमी वछल कैर, इत्यादिक द्रव्यें ऊर भावे विधि संयुक्त शुद्ध भावसें जो भव्यजीव यह वीस स्थानक पदकों सेवन करेंगें सो जिन नाम कर्मकों उपार्जन करके तीसरे भव अनंत सुखकों प्राप्त होंगे. इत्यलंविस्तरेण ॥ इति वीस स्थानक तप ऊली विधि सं० ॥

॥ अथ वीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

णमोणंतविन्नाणसदंसणाणं, सहाणंदियासेसजंतूगणाणं ॥ भवःभोजविद्धयणेवारणाणं, णमोबोहियाणंवराणंजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनेंद्रपूजा ॥ अथ सिद्धपूजा ॥ लोगग्गभागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमणिंदियाणं ॥ निस्सेसकम्मक्खयकारगाणं, णमोसयामंगलधारगाणं ॥ ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥ अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुरकंधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवाणदयागिहस्स, णमो२ संघचउविहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः ॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूसिंधुराणं, सुरीसराणंमुणिबंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, णमोसयामंगलमंदिराणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्मत्तसंयमपतितभविजन अतिदृढथिरकरताभला ॥ अवगुणअदूषित गुणविभूषित चंद्रकिरणसमोज्ज्वला ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगरथ रुचिरधाराधरा, भवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोथिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ छठा पद ॥ सव्वोहिबीजंकुरुकारणाणं, णमोश्वायगावारणाणं ॥ कुबोहिदंतीहरिणेसराणं ॥ विग्घोघसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥६॥ अथ सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहाणं ॥ सन्नाण पज्जायतरूवणाणं, णमो२होउतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्साधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ छदव्वपज्जा

यगुणाकरस्स, सयापयासीकरणोधुरस्स ॥ मिछत्तअन्नाणतमोहरस्स, णमो२ नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्स, अणंतसंसारविदारणस्स ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्स, णमो२निम्मलदंसणस्स ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-पद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्स, कुंदिंदुपादामलताचणस्स ॥ सुधम्मजुत्तस्सदयासयस्स, णमो२श्रीविणयालयस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्विनयैनमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ कम्मोघकंतारदवानलस्स, महोदयानंदलयाजलस्स ॥ विन्नाणपंकेरुहकारणस्स, णमोचरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्चारित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशम चारित्र पद ॥ सग्गापवग्गाग-सुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्स ॥ सव्वव्वयाभूषणभूषणस्स, नमोहिशीलस्सअदूसणस्स ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्ब्रह्मचैयनमः ॥ १२ ॥ अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्धाणविभूषणस्स, सुलद्धिसंपत्तिसुपोषणस्स ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्स, नमो२सुद्धक्रियापदस्स ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥ लद्धीसरोजावलितावणस्स, सुरूवसंलग्गसुपावणस्स ॥ अमंगलानोकुहउद्दवस्स, नमो२निम्मलसत्तवस्स ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्तवसे नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविन्नाकरस्स, दुवालसंगीकमलाकरस्स ॥ सुलद्धवासाजयगोयमस्स, नमोगणाधीस्सरगोयमस्स ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ गौतमायनमः ॥ अथ सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुस्सवातिसयासयाणं, सुरा२धी सरवंदियाणं ॥ रवींदुबिंबामलसग्गुणाणं, दयाधणाणंहिनमोजिणाणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जिनेभ्योनमः ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद ॥ सव्विंदियापारविकारहारी, अकारणासेसजणोवगारी ॥ महान्न-

वातंकरणापहारी, जयेोसदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्चारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अठारमें ज्ञानपदपूजा ॥ शुद्धक्रियामंगलमंगणस्स, संदेहसंदोहविखंमणस्स ॥ मुत्तीनपादानसुकारणस्स, नमोहिनाणस्सजसोधणस्स ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणवल्लीवनवारणस्स, सुबोहिबीजांकुरकारणस्स ॥ अणंतसंसुद्धगुणालयस्स, नमोदयामंदिरसत्र्यस्स ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्श्रुतये नमः ॥ १९ ॥ अथ वीसमें तीर्थपद ॥ तुभ्यंनमःसकलविश्ववशंकराय, तुभ्यंनमस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुभ्यंनमःभुवनमंगलमंगनाय, तुभ्यंनमोस्तुजिनपंकविखंमनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्तीर्थपदेभ्योनमः ॥२०॥ ध्वजासमेत अष्ट द्रव्य चढावै (पीछे) ६४ इंद्रपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधर्मेंद्रायनमः १ ॥ ॐ इशाणेंद्रायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंद्रायनमः ३ ॥ ॐमाहेंद्रायनमः ४ ॥ ॐब्रह्मेंद्रायनमः ॥ ५ ॥ ॐलांतकेंद्रायनमः ६ ॥ ॐशुक्रेंद्रायनमः ॥ ७ ॥ ॐसहस्रारेंद्रायनमः ॥ ८ ॥ ॐप्राणतेंद्रायनमः ॥ ९ ॥ ॐअच्युतेंद्रायनमः ॥१०॥ ॐचंद्रेंद्रायनमः ॥११॥ ॐसूर्येंद्रायनमः॥१२॥ ॐचमरेंद्रायनमः ॥ १३ ॥ ॐवलींद्रायनमः ॥ १४ ॥ ॐधरणेंद्रायनमः॥१५॥ ॐभूतानेंद्रायनमः ॥१६॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनमः॥ १७ ॥ ॐवेणुदालींद्रायनमः ॥१८॥ ॐहरिकांतेंद्रायनमः ॥१९॥ ॐहरिस्सहेंद्रायनमः ॥ २० ॥ ॐअग्निशिखेंद्रायनमः ॥ २१ ॥ ॐअग्निमाणवेंद्रायनमः ॥ २२ ॥ ॐपूर्णेंद्रायनमः ॥ २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः ॥ २४ ॥ ॐजलकांतेंद्रायनमः ॥ २५ ॥ ॐजलप्रभेंद्रायनमः ॥ २६ ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः ॥ २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनमः ॥ २८ ॥ ॐवेलवेंद्रायनमः ॥ २९ ॥ ॐप्रभंजनेंद्रायनमः ॥ ३० ॥ ॐघोषेंद्रायनमः ॥ ३१ ॥ ॐमहाघोषेंद्रायनमः ॥ ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ ॐमहाकालेंद्रायनमः ॥ ३४ ॥ ॐसरूपेंद्रायनमः ॥ ३५ ॥ ॐप्रतिरूपेंद्रायनमः ॥३६॥ ॐपूर्णभद्रेंद्रायनमः ३७॥ ॐमाणभद्रेंद्राय नमः ॥ ३८ ॥ ॐभीमेंद्रायनमः ॥ ३९ ॥ ॐमहाभीमेंद्रायनमः ॥ ४०॥ ॐकिन्नरेंद्रायनमः ॥४१॥ ॐकिंपुरुषेंद्रायनमः ॥४२॥ ॐसत्पुरुषें द्रायनमः॥४३॥ॐमहापुरुषेंद्रायनमः॥४४॥ ॐअमितकायेंद्रायनमः ॥ ४५॥ ॐमहाकायेंद्रायनमः ॥४६॥ ॐगीतरतींद्रायनमः ॥४७॥ ॐगीत-यशेंद्रायनमः ॥ ४८ ॥ ॐसन्निहितेंद्रायनमः ॥ ४९ ॥ ॐसामानि-केंद्रायनमः ॥ ५० ॥ ॐधात्रेंद्रायनमः ॥ ५१ ॥ ॐविधात्रेंद्रायनमः ॥ ५२ ॥ ॐऋषिंद्रायनमः ॥ ५३ ॥ ॐऋषिपालतेंद्रायनमः ॥ ५४ ॥ ॐइश्वरेंद्रायनमः ॥ ५५ ॥ ॐमहेश्वरेंद्रायनमः ॥ ५६ ॥ ॐवत्सेंद्रा-यनमः ॥ ५७ ॥ ॐविसालेंद्रायनमः ॥ ५८ ॥ ॐहास्येंद्रायनमः ॥ ५९ ॥ ॐश्रेयइंद्रायनमः ॥ ६० ॥ ॐहास्यस्तेंद्रायनमः ॥ ६१ ॥ ॐपदगेंद्रायनमः ॥ ६२ ॥ ॐपदगपतेंद्रायनमः ॥ ६३ ॥ ॐमहाश्रे-येंद्रायनमः ॥ ६४ ॥ इतिचोसठइंद्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्या-देवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ ॐरोहिएयैनमः ॥ १ ॥ ॐ-प्रज्ञप्तैनमः ॥ २ ॥ ॐवज्रश्रृंषलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐवज्रांकुशयैनमः ॥ ४ ॥ ॐचक्रेश्वयैनमः ॥ ५ ॥ ॐपुरुषदत्रायैनमः ॥ ६ ॥ ॐका-ल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐगौर्य्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ गंधार्य्यैनमः ॥ १० ॥ ॐमहाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐमानव्यै-नमः ॥ १२ ॥ ॐवैरोट्यायनमः ॥ १३ ॥ ॐअछुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐमहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इति षो-डश विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ ॥ अथ २४ यक्षपदे सो-पारी चढावै ॥ ॥ ॐब्रह्मशांतियैनमः ॥ २४ ॥ ॐपा-र्श्वयक्षायनमः ॥ २३ ॥ ॐगोमेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐभृकुटयैनमः ॥ २१ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ ॐय-

ॐक्षायनमः ॥ १७ ॥ ॐगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ ॐगरुडायनमः ॥ १६ ॥ ॐकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ ॐपातालायनमः ॥ १४ ॥ ॐषण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐकुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ॐब्रह्मण्येनमः ॥ १० ॥ ॐअजितायनमः ॥ ९ ॥ ॐविजयायनमः ॥ ८ ॥ ॐमातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐकुसमायनमः ॥ ६ ॥ ॐतुंबुरवेनमः ॥ ५ ॥ ॐयक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐत्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ ॐमहायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति २४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ ॐअजितबलायैनमः ॥ २ ॥ ॐदुरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐकालिकायैनमः ॥ ४ ॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐश्यामायैनमः ॥ ६ ॥ ॐशांतायैनमः ॥ ७ ॥ ॐभृकुटयैनमः ॥ ८ ॥ ॐसुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ ॐअशोकायनमः ॥ १० ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐचंडायनमः ॥ १२ ॥ ॐविदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐअंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐकंदर्पायैनमः ॥ १५ ॥ ॐनिर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐबलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐधारिण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐधरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ ॐगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐअंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ ॐपद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐसिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ ॐनैसर्प्पकायनमः ॥ १ ॥ ॐपांडुकायनमः ॥ २ ॥ ॐपिंगलायनमः ॥ ३ ॥ ॐसर्वरत्नायनमः ॥ ४ ॥ ॐमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐकालायनमः ॥ ६ ॥ ॐमहाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐमाणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐशंखायनमः ॥ ९ ॥ इति नव निधान पदे ९ कलश चढावे ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥ ॐविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ ॐक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ३ ॥ ॐधरणेंद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐपद्मावत्यैनमः ॥ १ ॥ ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐअग्नयेनमः ॥ २ ॥ ॐयमायनमः ॥ ३ ॥

ॐनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ ५ ॥ ॐवायव्यैनमः ॥६॥ ॐकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ ॐईशानायनमः ॥ ८ ॥ ॐनागायनमः ॥ए॥ ॐब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ ॐसूर्यायनमः ॥ १ ॥ ॐचंद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐभोमायनमः ॥ ३ ॥ ॐबुधायनमः ॥ ४ ॥ ॐबृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ ॐशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॐशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॐराहवेनमः ॥ ८ ॥ ॐकेतवेनमः ॥ ए ॥ इति नवग्रह नाम ॥ इहां वीस स्थानक मंगल पूजनकी विधि विशेष लिखी है। सो नाममात्र स्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंगल प्रतिष्ठा वलबाकुलादिककी संपूर्ण विधी नवपद मंगल पूजामें लिखआए हे उस मुजबही करणो। फेर विशेष विधी कराणी होय तो विद्वज्ञान गुरूकों पूछके करणी ॥ इति वीशस्थानक मंगल पूजा वि०सं॥

॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शाशण देवत सामणी ए मुझ सानिध कीजै, भुंजो अक्षर जगति भणी समझाई दीजे ॥ मोटो तप रोहण तणो ए जिणंरा गुण गाउं, जिम सुख सोहग संपदा ए वंछित फल पाउं ॥ १ ॥ दक्षिण भरते अंगदेस छै चंपानयरी, मघवा राजा राज्य करै तिण जीता वयरी ॥ पाटतणी राणी रूवमी ए लखमी इण नामै, आठ पूत्र जाया जिणें ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामें कन्यका ए सबकुं सुखकारी, आठां पूत्रां ऊपरां ए तिण लागै प्यारी ॥ वाधै चंदतणी कला ए जिम पख ऊजवालै, तिम ते कुमरी धाय माय पांचै प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवमी ए घर अंगण बैठी, दीठी राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन भुवन विच एहवी ए नही दूजी नारी, रंभा पदमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥ पुरुष न दीषै कोइ इसो जिणनें परणाउं, आंख्या आगल साल वधै तिण चयन न पाउं ॥ देशश्ना राजवी ए ततखिण तेंमाया,

संबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजातणो ए छै कुमर सोभागी, कन्याकेरी आंखमी ए तिणसेती लागी ॥ कन्ना देखै सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेनरे कंठ ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनै देवांगना ए जपै जैजैकार, रलियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक व खत कन्यारो जाम्हो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर लाम्हो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो भलो ए दीया दान अपार ॥ घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र भणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस लीधो ॥ ८ ॥ ( ढाल—प्रभु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंभणो ॥ ए देशी ) ॥ तिण नगरी रे चित्रशेन राजा थयो, सुख मांही रे केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा भला, चढते पख रे चंद्र जिसी चढती कला ॥ ( उल्लालो ) चढती कला हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी भूमी कंतसेती करै क्री मा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो, पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ए ॥ ( चाल ) इक कामण रे गोख चढी इष्ट पमी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे खमी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण अधिकेरो दुख हुओ ॥ ( उल्लालो ) दुख हुवो देखी रोहिणी हिव कहै इम प्रीतम भणी, ए नार नाचै अनै कूदै कहो किम मोटा धणी ॥ एहवो नाटक आज तांइं में कदे देख्यो नही, मुझने त-मासो अने हासो देखतां आवे सही ॥ १० ॥ (चाल) इण वचनै रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीमा नवि लहै ॥ ए दुखणी रे पूत्र मुओ तमफम करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥ ( उल्लालो ) जाणै तरै तूं वात दुखनी गरवगहली कामनी, इम

कह्री राजा हाथ झाल्यो तेहना बालकजणी ॥ सातमा जूंयथी तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पुत्र नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ ( चाल ) हिव राजा रे पुत्रतणै शोकै करी, थयो मुरछित रे रोवै अति आंख्या जरी ॥ पमतो सुत रे सासणदेवत झालियो, कंचनमय रे सिंहासण वैसारियो ॥ (उल्लालो) वैसारियो कर जोम आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ हसावै पायपंकज सेवता ॥ आनो जूपतने अचंभो देख ए कारण किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूछियै सांसो इसो ॥ १२ ॥ ( चाल ) चिंतवतां रे चारनिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो वंदणने तिसे ॥ सुण देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी रे पूरवजव बालकतणो ॥ ( उल्लालो ) बालकतणो जव जूप पूछै कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो जवांतर अने राजानो वली ॥ श्रीगुरु पासे पाछलै जव रोहणी तप आदर्यो, तपतणे लगते साधुजगते तुम्म जवसायर तर्यो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रे रोहणितप किम कीजियै, विधि जाखो रे जिम तुम पासे लीजीयै ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन राजाजणी ॥ (उल्लालो) राजाजणी विधि एह जंपै चंद रोहणतप आवियै, उपवास कीजै लाज्ञ लीजै जली जावना जावियै ॥ बारमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे कीजै तजी आलस अंगसुं ॥१४॥ ( ढाल—वीर सुणो मोरी वीनती ॥ ए देशी) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करिये हो ऊजमणो एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥ त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजै वृक्ष अशोक ॥ गुणनो बारम जिनतणो, जला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त० ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजै आगे हो आठे मंगलीक ॥

विधसुं पुश्क पूजियै, ते पामे हो शिवपुर तहतीक ॥ त० १७ ॥ सेवा कीजै साधूनी, वलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोषीजै साहमी, मनरंगे हो करश पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोथी पूंठना, मिस लेखण हो झिलमिल सुजगीस, नवकरवाली वीटणा, गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणि आदरै, ते पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥ (ढाल–धरम करो जिनवर तणो ॥ ए देशी) ॥ इम महिमा रोहणतणी, श्रीग्यानी गुरु परकासे रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थंकर पासे रे ॥ इ० २१ ॥ इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, मन सूधे संजम लीधो रे ॥ इ० २२ ॥ आठै पुत्रे आदरी, दिख्या बारम जिन आगे रे ॥ वलि नानाविध तप तपै, धरमतणी मति जागे रे ॥ इ० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हियै, प्रभु चरणां चित लाया रे ॥ इ० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, मैं तवियो शिवपुरगामी रे ॥ मन मान्या साहिबतणो, हिव पुन्यें सेवा पामी रे ॥ इ० २५ (कलश) ॥ इम गगन इगमुनि चंद्र वरसे ( १७२० ) चोथ श्रावण सुदि भली ॥ मैं कही रोहणतणी महिमा सुगुरु मुख जिम सांभली ॥ वासुपूज्य अमने थया सुप्रसन चित्तनी चिंता टली, श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आस्या फली ॥ २८ ॥ इति रोहणीतप स्तवन संपुर्ण ॥

## ॥ अथ रोहणीतप विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास रोहणीतप ग्रहण करै, रोहणी नक्षत्रके दिन उपवास करै, बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीका पूजन करै, आगे अष्ट मंगलीक रचना करै, अष्ट द्रव्य चढावै, देव वंदना-

दिक करके धर्मोपदेश सुणे ( श्रीवासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञायनमः ) इसका दो हजार गुणना करे. एसें सात वरस तप करणेसें सुख शोभाग्य बधेगा, पूत्रादिकका शोक संताप न होगा. विशेष अधिकार स्तवनसें जाणना ॥ इति रोहण तप विधिः ॥

॥ अथ छम्मासी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ गौतमस्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पसाय ॥ महावीरस्वामी जै जै तप किया, तेहनो कहिसुं विचर ॥ वलिश वांडु वीरजी सुहामणा ॥ १ ॥ भावठ भंजण सेव्यां सुख करे, गातां नव निधि थाय ॥ बारे वरसां वीरजी तप कियो, दूर करे सहु पाप ॥ व० २ ॥ बे कर जोडी ए हूं वीनवूं, श्रीजिनशासन राय ॥ नाम लियांथी नव निधि संपजे, दरिशण डुरित पुलाय ॥ व० ३॥ नव चोमासा जिनजीरा जाणियै, एक कीयो छम्माश ॥ पांचे ऊणा छ वलि जाणियै, बारकेकोजीमाश ॥ व० ४ ॥ बहुत्तर माशखमण जग जीपता, छ दो मासी रे जाण ॥ तीन अढाई दो दो कीया, दो दोढ माशी वखाण ॥ व० ५ ॥ भद्र महाभद्र शिवगति जाणियें, उत्तम एहना प्रकार ॥ विचमें पारणो स्वामी नहि कियो, नहि कीयो चोथो आहार ॥ व० ६ ॥ तिहुं उपवासे प्रतिमा बारमी, कीधा बारे जी माश ॥ दोयसें वेला जिनजीरा जाणियै, इण गुणतीस विलास ॥ व० ७ ॥ तीनसे पारणा जिनजीरा जाणियै, तीन गुणतीस पचास ॥ एहमें स्वामी केवल पामिया, पाम्या मुगति आवास ॥ व० ८ ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवर सयल सुखकर अतहि डुक्कर तप करी, संयमसु पाली कर्म टाली स्वामी शिव रमणी वरी ॥ सेवक पभणें वीर जिनवर चरण वंदित तुमतणा, संसार कूप पडंत राखो आपो स्वामी सुख घणा ॥ ७ ॥ इति छम्मासी स्तवन ॥

॥ अथ छम्मासी तप विधिः ॥

॥ शासनके अधिपती श्रीमहावीरस्वामी सर्वसें उत्कृष्ट छम्मासी तप किया. इस वास्ते इस वखतमें संघयण बल पराक्रम के हीनपणेसें इकसार छम्मासी तपनहिं कर सकतेहैं तोभी छम्मासीके १८० उपवास करणेसें जघन्य छम्मासी तपके फलकों जीव प्राप्त होता है. उर देव वंदनादि क्रिया करै, स्तवन छम्मासीतपका सुणै, इस स्तवनमें वीरप्रभूके सर्व तपस्याकी संख्या कही है. ( श्रीमहावीरस्वामीनाथायनमः ) इसका २००० गुणनां करै. वीर प्रभूके नामका तीर्थ होय उहां यात्रा करणेकों जावै, शुद्ध भावना भावै, शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रभाव लघुकर्मी जीव होकर अनंतसुखकों प्राप्त होय ॥ इति छम्मासी तप विधि ॥

॥ अथ बारेमाशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ दान उल्लट धरी दीजीयै ॥ ए देशी ॥ त्रिभुवन नायक तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे ॥ चौसठ इंद्र करै सदा, तुऊ पदपंकज सेव रे ॥ त्रिभु० १ ॥ प्रथम भूपाल प्रभु तूं थयो, इण अवसरपणी काल रे ॥ तुऊ सम अवर न को प्रभु, तूं प्रभु दीनदयाल र ॥ त्रि० २ ॥ प्रथम तर्थंकर तूं सही, केवलज्ञान दिणंद रे ॥ धर्म प्रज्ञापक प्रथम तूं, तूंही हे प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ३ ॥ अंतर अरि जे आतमतणा, काल अनादि थिति जेह रे ॥ ते तप शक्तियें तें हण्या, आत्म वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ४ ॥ तादृशी शक्ति कुण कह सकै, जेहनो अंत न पार रे ॥ द्वादश माशनो तप कर्यो, तेह अपानक सार रे ॥ त्रि० ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणव्यो, आगममें जिनराज रे ॥ ते करवूं अति आकरुं, तप विना किम सरे काज रे ॥ त्रि० ६ ॥ तीनसै साठ उपवास ते, ते इण पंचम काल रे ॥ अवसर आदरै क्रम विना, ते पिण भवि सुविसाल रे ॥

त्रि० ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्रनणे अनुसार रे ॥ पमिक्क मणादिक नावथी, शुद्ध क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ८ ॥ चित्त समाधि शुन्न नावथी, धरे ताहरो ध्यान रे ॥ ते नर उत्तम फल लहै, कवि लहै उत्तम ग्यान रे ॥ त्रि० ए ॥ काल अनादि संसारमें, जन्म मरणतणा डुःख रे ॥ ते लहे धर्म पाया विना, तप विना किम हुवै सुख रे ॥ त्रि० १० ॥ हिव लह्यो नरनव पुन्यथी, वलि लह्यो श्रीजिन धर्म रे ॥ तत्वनी रुचि थइ हे मुझ, हिव मिव्यो मनतणो नर्म रे ॥ त्रि० ११ ॥ नव२ एक जिनराजनो, सरण हो ज्यो सुखकार रे ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, मैं कियो हिवै परिहार रे ॥ त्रि० १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्षमारग सुविशाल रे ॥ नव२ जे मुझ संपजै, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० १३ ॥ श्रीजिनशाशन तप कह्यो, ते तप सुरतरू कंद रे ॥ धन२ जे नर आदरै, काटै ते करमनो फंद रे ॥ त्रि० १४ ॥ कलश ॥ इम नाभिनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, मैं थुण्यो धन दिन आजनो मुझ मात मरुदेवी नंदनो ॥ संवत सुनेत्राकासनिधि शशि नयर श्रीवालूचरै, श्रीजिनसौन्नाग्य सुरिंद के सुपशाय विजय विमल वरै ॥ १५ ॥ इति श्री बारे माशी तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ बारे माशी तप विधिः ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर श्रीरुषन्नदेवस्वामी उत्कृष्ट बारे मासी तपस्या करी. इस वास्तै नव्यजीव बारैमाशी तपस्याका नाव लायकै ( ३६० ) तीनसे साठ उपवास करै. जिस दिन व्रत होय उस दिन देववंदनादि क्रिया करै, बारे माशी तपका स्तवन सुणै ॥ ( श्री रुषन्नदेवस्वामीनाथायनमः ॥ ) इसका २००० गुणना करै. तपस्या पूर्ण होनेसें सिद्धगिरी यात्रा करणेकों जावै. शक्ति माफक उद्यापन उत्सव करै. इस तपस्याके प्रशाद नव्यजीवोके कन्नी डुख

दौर्भाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज वढता रहै ॥ इति बारैमाशी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ प्रणमुं प्रथम जिनेसरू, शुद्ध मने सुखकार ॥ लबधि अठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याकरणें प्रगट, भगवतीसूत्र मझार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारू लबधि विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजै, लबधी अठावीस ॥ ए हिव परगट अरथसुं, सांभलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ सफल संसारनी ॥ ) अनुक्रमें हेव अधिकार गाथातणे, लबधिना नाम परिणाम सरिषा भणे ॥ रोग सहु जाय जसु अंग फरस्यां सही, प्रथम ते लबधि है नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र उषध समा जाणियै, बीय वप्पोसही लबधि वखाणियै ॥ श्लेष्म उषध सारिखो जेहनो, तीजी खेल्लोसहो नाम है तेहनो ॥ ५ ॥ देहना मैलथी कोढ दूरे हुवे, चोथो जल्लोसही नाम तेहनो ठवे ॥ केश नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहै नही रोग सब्बोसही ते कही ॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रियतणा, भेद जाणे तिका नाम संभिन्नसना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी लबधि ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥ ( ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥ ) हिव आंगुल अढियै ऊणो मानुषक्षेत्र, संज्ञा पंचेन्द्रि तिहां जे वसय विचित्र ॥ तसु मननो चिंतित जाणे थूल प्रकार, ते रुजूमति नामे अष्टम लबधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषक्षेत्रे संज्ञावंत, पंचेंद्रिय जे है तसु मन वातां तंत ॥ सूखम परजायें जाणे सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती शुभ नाम ॥ ९ ॥ जिण लबधि प्रभावें ऊडी जाय आकाश ॥ ते जंघाविद्याचारण लबधि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापे खिणमें खेरु थाय, ए लबधि

इग्यारमी आसीविस कहिवाय ॥ १० ॥ सहु सूखम बादर देखै लोकालोक, ते केवल लबधी बारमियै सहू थाक ॥ गणधर पद लहियै तेरम लबधि प्रमाण, चवदम लबये करी चवदै पूरब जाण ॥११॥ तीर्थंकर पदवी पामे पनरमी लबधि, सोलम सुखदाई चक्रवर्त्तिपद रिद्ध ॥ बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अट्ठारमी आखा वासुदेव विस्तार ॥१२॥ मिसरी घृत क्षीरै मेळ्या जेह सवाद, एहवी लहै वाणी ज्ञयोशम परसाद ॥ ज्ञणियो नवि ज्रूलै सूत्र अरथ सुविचार, ते कुष्ट कबुद्धी वीसम लबधि विचार ॥१३॥ एके पद ज्ञणियां आवै पद लख कोम, इकवीसमी लबधी पयाणुसारणी जोम ॥ एकै अरथे करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥ ( ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥ ) सोलह देशतणी सही रे, दाहक सगति वखाण ॥ तेह लबधि तेवीसमी रे, तेजोलेस्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥ आगमने अधिकार, च० ॥ वारू लबधि विचार ॥ च० ॥ एआंकणी ॥१५॥ चवद पूरबधर मुनिवरू रे, ऊपजंना संदेह ॥ रूप नवो रचि मोकले रे, लबध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेश्या अगननी रे, ऊपशमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतोलेश्या सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगतिसुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै रूप ॥ सदगुरु कहै छावीसमी रे, वैक्रिय लबधि अनूप ॥ च० १८ ॥ एकण पात्रे आदमी रे, जीजांमे केइ लाख ॥ तेह अखीणमहानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चक्रीसनी रे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधी कही रे, अट्ठावीशमी नाम ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेश्या बिहुं रे, तेम पुलाक विचार ॥ ज्ञगवतीसूत्रमें ज्ञाषियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥ पन्नवणा आहारनी रे, कलपसूत्र गणधार ॥ तीन३ इक२ मिली रे,

वारू आठ विचार ॥ च० १२ ॥ प्रश्नव्याकरणे सही रे, बाकी ल बधां वीश ॥ सान्नलतां सुख ऊपजै रे, दोलत हुवै निशदीस ॥ च० १३ ॥ ( कलश ) संवत सत्तरैसे ढवीसे मेरुतेरस दिन न्नलै, श्रीनगर सुखकर लूणकरणसर आदिजिन सुपसान्नलै ॥ वाचना चारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन न्नणतां प्रगट ग्यान प्रकास ए ॥ १४ ॥ इति २८ लब्धि स्तवनं ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि तप विधिः ॥

॥ शुन्न दिन गुरुके पास २८ लब्धि तप ग्रहण करै, अन क्रमसें २८ उपवास करै, स्तवन सुणे. जिस दिन जो लब्धिका उ पवास होय उसही नामका गुणना करै. तप पूर्ण होणेसें शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्यासें निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय, सदा आनंद रहै. इति २८ लब्धितप विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ बे कर जोमी ताम ॥ ए देशी ॥ जिनवर श्री वर्द्धमान, चरम तीर्थंकर, प्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्री गणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥ १ ॥ चवदे पूर व नाम, सूत्रै जूजूवा, वीरजिनंदे न्नाषिया ए॥ ते हिव सुगुरु पसा य, वरणविस्युं इहां, आगममें जिम उपदिस्याए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व उत्पाद १, दूजो अग्रायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अस्ति नास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणियै, नारग रयण पंचम ५ गिणुं ए ॥ ॥ ३ ॥ ढठो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आतम ७, कर्मप्रवाद अष्टम गिणो ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ए, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशमो कह्यो ए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कल्याण ११, प्राणायु बारमो १२, क्रियाविशाल तेरम न्नणो ए १३ ॥ विंदुसार १४ इण नाम, चवदे ए कह्या, सास्त्र थकी में संग्रह्या ए ॥ ५ ॥ ( ढाल २ ॥ श्री

विमलाचल शिर तिलो ॥ ए देशी ॥ ) उत्पाद पूर्व सोहामणो, कोटी पद परिमाण ॥ षट भाव प्रगट छै ते जिहां, त्रिपदी भाव विनाण ॥ १ ॥ सर्व द्रव्यपर्ययतणो, जीव विशेष प्रमाण ॥ दूजो पूर्व अग्रायणी, छिन्नुं लख पद जाण ॥ २ ॥ पद लख सत्तर जेहनी, संख्या परगट एह ॥ वीर्य प्रबलता जीवनी, भाषी तीजे तेह ॥ ३ ॥ चोथे पूर्वे जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद ॥ पद संख्या साठ लाखनी, सप्तभंगी स्याद्वाद ॥ ४ ॥ ग्यान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आण्यो जोम ॥ मत्यादिक पण भेदसुं, पद संख्या इक कोमि ॥ ५ ॥ सत्यप्रवाद छठो कहुं, भाषुं सत्य स्वरूप ॥ संख्या पद इक कोमनी, भाषी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां, आतम द्रव्य सुभाव ॥ छवीस पद कोम जेहना, सूत्रै आण्या भाव ॥ ७ ॥ कर्म प्रवादतणो हिवै, प्रगटपणें अधिकार ॥ लाख असी पद जेहना, कोमी इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहुं हिवै, नामे प्रत्याख्यान ॥ लाख चोरासी जेहना, पद संख्या चित आन ॥ ए ॥ अतिशय गुण संयुत भणी, साधन साध्य निदान ॥ विद्या अनुपम सातसै, कोमी वरस लख जान ॥ १० ॥ कढ्याण नाम इग्यारमो, छवीस कोम प्रमाण ॥ ज्योतिषशास्त्र विचारणा, चोविह देव कढ्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो, छप्पन्न लख इग कोमि, प्राण निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आण्यो जोम ॥ १२ ॥ ख्यायिक्यादिक जे क्रिया, छंद क्रिया सुविसाल ॥ पद संख्या नव कोमनी, तेरमी क्रिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारबिंदु चवदमो, नामे अरथ निहाल ॥ पद संख्या इग कोमनी, लाख पचवीस संभाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्यय देखण भणी, संख्या गज परिमाण ॥ सोले सहस अरु तीनसै, उर तयासी जाण ॥ १५ ॥ पूरब संख्या ए कही, गुणमालाथी देख ॥ आगे बुधजन सोधज्यो, बाकी देश विशेष ॥ १६ ॥

( ढाल ॥ वीर जिनेसर उपदिसै ॥ ए चाल ) सूत्रे गुंथे गणधरा, अरथै अरिहंत भाखै रे ॥ ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमर जिम नासै रे ॥१॥ वाणी रे जिणंदनी, सुणज्यो चित हित आणी रे, तत्व रमणता अनुसरै, संपूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषाय तजी करी, ध्यान भगत उर धारी रे ॥ विधि संयुत जिनमंदिरै, प्रभु मुख पाठ जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी, श्री श्रुतज्ञान निधानो रे ॥ सदगुरु चरण नमी करी, संवरजोग प्रधानो रे ॥वा० ४॥ अक्षत लेइ ऊजला, गुंहली सुंदर कीजै रे॥ नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजै रे ॥ वा० ५ ॥ चवद पूर्व व्रत इण परैं, सुगुरु संजोगे लेई रे ॥ विधिसुं पुस्तक पूजीयै, चित अति आदर देई रे ॥ वा० ६ ॥ इम तप संपूरण थयां, ऊज-मणो हिव कीजे रे ॥ घर सारू धन खरचनें, नरभव लाहो लीजै रे ॥ वा० ७ ॥ पूठा परत विटांगणा, पूरब नाम प्रमाणो रे ॥ नव-करवाली कोथली, लेखण ठवणी जाणो रे ॥ वा० ८ ॥ देहरै देव जुहारने, आरती मंगल कीजे रे ॥ सनात्रपूजा वलि साचवी, तत्व सुधारस पीजे रे ॥ वा० ९ ॥ इण पर तप आराधतां, दुरगति का-रण छेदै रे ॥ चवदह रज्जु सिरोमणी, जीव अकथगति वेदे रे ॥ ॥ वा० १० ॥ तप आराधन विधि भणी, आगम वचने जोइ रे ॥ भवियण पिण तुमे आदरो, ज्युं भवभ्रमण न होई रे ॥वा०११॥ (कलश) इम सयल सुखकर गछ खरतर तपै रवि जिम कांत ए, सौभाग्यसूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृतंत ए ॥ संवत अठारै बरस बिहूं नयर श्रीबालूचरै, ए स्तवन भणतां श्रवण सुणतां सयल मनवंछित फलै ॥ १२ ॥ इति चवद पूर्व स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूरब तप विधि लिख्यते ॥

॥ चवदै पूर्वकी तपस्याके १४ उपवास करे. जिस दिन जो

पूर्वका उपवास होय उसी पूर्वका नामसे ( २००० ) गुणना करै, स्तवन सुणे, इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम और विधि सर्व लिखी है इस मुजब विवेकी जीव गुरूभें समझकें करै. यह तपस्याके करणेसें ज्ञानावरणादि कर्मका क्षयोपशम होय, शुभ ज्ञानका उदय होय ॥ इति १४ पूर्व तप विधिः ॥

॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सासण देवी सारदा, वाणी सुधारस वेल ॥ बालक हित भणी बगसियै, सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जिन पूजतां, मन लहि शुभ परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये, दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥ ( ढाल ॥ वीर जिणेसर उपदिसै ॥ ए देशी ) कमला जिम कुंभणपुरै, भुजबल नरपति भीमो रे ॥ पदमनी पदम सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो रे ॥ पदम० १ ॥ परतख्य फल ए पुन्यना, प्रसवी सुता पूरै माशे रे ॥ दवदंती नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकाशै रे ॥ पद० २ ॥ चौसठ कला विचक्षणा, रूप गुणे करी रंभा रे ॥ देवगुरु धर्म दीपावती, व्रतधारी दृढ थंभा रे ॥ प० ३॥ प्रतिमा पूजै शांतनी, देवे दीधी त्रिकालो रे ॥ मात पिता प्रमोदसुं, स्वयंवर वरमालो रे ॥ प० ४ ॥ उवझायाधिप श्रीनिषदनो, नल लिखियो निलाम्है रे ॥ आनंदसु पंथ आवतां, पूरब पून्य उघाम्है रे ॥ प० ५ ॥ मझम रयणी तम भरी, मधुरवकुंत इहां वनमें रे ॥ मणि भाले तेज दिनमणी, जा अत देखी अहो मनमें रे ॥ प० ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिलै, पूछियै एह प्रसन्नो रे ॥ कर्म बलै मुनि आविया, परीसह जीत मदन्नो रे ॥ प० ७ ॥ पंच जीत पंच पालता, टालता दुस्सह सबला रे ॥ संजम शुद्ध संभालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥प० ८ ॥ दुहा ॥ मणि तेजें मुनि तरुतये, रथ थकी स्त्री भरतार ॥

देवै तीन प्रदक्षणा, विधिसुं चरण जुहार ॥ ए ॥ देशना सुण पावन थया, ज्ञान सुधारस पाय ॥ को तप परभव तिलक है, कहिये श्रीमुनिराय॥ १० ( ढाल—भरत नृप भावसुं ए ॥ ए देशी )॥ मधुर स्वरै मुनिवर कहे ए, नाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना ए ॥ कर्म शुभाशुभ परभवै ए, इह भव फल निपजाय, करम गति वंकड़ी ए ॥ ११ ॥ डहिनाण भव प्रागनो ए, नृप सुणे निरमल भाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मवती को नृपवधू ए, जाणयो हे तत्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥ १२॥ चोथ प्रमुख नृप चूंपसूं ए, किरिया शुद्ध करी एह, भलै चित भावसुं ए ॥ ॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए, चाढै जिन चोवीस, रयण कंचण जड्या ए॥ १३॥ तिलकरसें पामियो ए, समकित एह सतील, जनम सफलो गिणे ए ॥ भगवन तप विधि भाषियै ए, नत्र कहै बोध वरीस, पीहर षट्कायना ए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतना ए, षट् उपवास कहीस, त्री चोवीहारस्युं ए॥ चोथ दोय जिन वीरना ए, अजितादिक बावीस, आणा गुरु शिर वही ए ॥ १५ ॥ पोषध त्रीस तीने थया ए, पूजन तिलक चढाय, तारक जगदीसने ए ॥ उद्यापन संघ भक्तिसुं ए, जन्म सफल नरराय, मूधै मन साधियै ए॥ १६॥ सुण वाणी समकित ग्रहे ए, पय प्रणमी गुरु वीर, चित्त क्षमाहीयो ए ॥ इण पर जे भवि आदरै ए, थाये चरम शरीर, मूल सुख शासतोए ॥ १७॥ (कलश) श्रीशांति दाता त्रि जगत्राता भविक ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वाध्यो शिवघरां ॥ आगमे आखै सूरीय साखै सुगुरु भाषै सुण थया, शुद्ध ध्यावैं भविक भावै विजय विमल जिनवर कथा ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ तिलकतपस्या विधि ॥

॥ शुभ दिन गुरूके पास तिलकतपस्या ग्रहण करकै तीस

उपवास करै. प्रथम श्रीऋषन्नदेवस्वामीके ७ उपवास करै, जब ( श्री ऋषन्नदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका १००० गुणना करै. फेर श्री महावीरस्वामीके २ उपवास करै, तब ( श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका १००० गुणना करै. और श्री अजितनाथस्वामीको आद लेकै ( २२ ) बाईस न्नगवंतोका बाईस उपवास करे. जब उन२ न्नगवंतोंके नामसे दो दो हजार गुणना करे, उर सर्व विधि स्तवन मुजब करे ॥ इति तिलकतपस्या विधिः ॥

॥ अथ शोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर न्नाषियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, न्नवि प्राणी रे ॥ कषायगंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जाय ॥ न्न० वी० १ ॥ कोम वरष तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावे फल तास ॥ न्न० ॥ मान करे जे प्राणिया रे लाल, ते जगमें न सुहाय ॥ न्न० वी० २ ॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो पायो मल्लिनाथ ॥ न्न० ॥ रूप परावृत कीया घणा रे लाल, आषाढन्नूति गणिका साथ ॥ न्न० वी० ३ ॥ च्यार कषाय छे मूलगा रे लाल, उत्तम सोले न्नेद ॥ न्न० ॥ इम न्नव२ न्नमतो थको रे लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ न्न० वी० ४ ॥ एकासण व्रत जे करे रे लाल, लाख वरस दुख हाण ॥ न्न० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ न्न० वी० ५ ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो रे लाल, उपजै लबधि अपार ॥ न्न० ॥ उपवास करतां न्नावसुं रे लाल, पामे न्नवनो पार ॥ न्न० वी० ६ ॥ इम दिन शोले तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए थाय ॥ न्न० ॥ देव गुरु पूजा करै रे लाल, मन वंछित फल थाय ॥ न्न० ॥ नर सुर रिद्धि पिण न्नोगवे रे लाल, निश्चै मुगति जाय ॥ न्न० वी० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शोलिये तपकी विधि लिख्यते ॥

॥ क्रोध १, मान २, माया ३, लोन्न ४, यह च्यार कषायमें

अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्यानी ३, संज्वलन ४, इस मुजब एकेक कषायके च्यार२ भेद करणेसें १६ होते हैं, इनोंकों दूरकरणेकों प्रथम एकासणा १, निवि २, आंबिल ३, उपवास ४, इस अनुक्रमसें १६ दिन तप करै, स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेसें यथा शक्ति उद्यापन करे ॥ इति शोलिया तप विधिः ॥

अथ पैतालीस आगम तप विधि ॥

गुरूके पास शुभ दिन पैंतालीस आगमतप ग्रहण करै, २ दूज, ५ पांचम, ११ इग्यारस, इत्यादिक ज्ञानतिथिके दिन अनुक्रमसें उपवास वा एकाशणा करै, जिस दिन जो आगमका तप होय उसी आगमका गुणना करै, सिद्धांत लिखावै, सिद्धांत सुणै, पढनेवालोंकों साहाय करै, अपणी शक्ति मुजब सर्व ठिकाणे ज्ञानकी वृद्धि करै (प्रणमुं श्रीगुरु पाय) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणे, सो आगे लिखा है, एसें तपस्याके ४५ दिन पूर्ण होणेसें पैंतालीस आगमकी पूजा करावै, मंदिर उपाश्रयमें ज्ञानोपगरण चढावै. इस तपस्याके करणेसें मुर्खपणा दूर हो के शुद्ध आत्मज्ञानकी प्राप्ती होय ॥

अब ४५ आगमका गुणना लिख्यते ॥

॥ प्रथम इग्यारै अंग ॥

१ श्रीआचारागजीसूत्रायनमः
२ श्रीसुयगडांगजीसूत्रायनमः
३ श्रीठाणांगजीसूत्रायनमः
४ श्रीसमवायांगजीसूत्राय०
५ श्रीभगवतीजीसूत्रायनमः
६ श्रीज्ञाताधर्मकथाजीसूत्रा०
७ श्रीउपासगदशाजीसूत्रा०
८ श्रीअंतगडदशाजीसूत्रा०
९ श्रीअणुत्तरोववाइजीसूत्रा०
१० श्रीप्रश्नव्याकरणजीसूत्रा०
११ श्रीविपाकजीसूत्रायनमः॥

॥ अथ बारै उपांग नाम ॥

१ श्रीउववाईजीसूत्रायनमः
२ श्रीरायपसेणीजीसूत्रायन०

३ श्रीजीवाभिगमजीसूत्राय० ४ श्रीपन्नवणाजीसूत्रायनमः
५ श्रीजंबूद्वीपपन्नत्तीसूत्राय० ६ श्रीचंदपन्नत्तीसूत्रायनमः
७ श्रीसूरपन्नत्तीजीसूत्राय० ८ श्रीकप्पियाजीसूत्रायनमः
९ श्रीकप्पवडिंसियाजीसूत्रा० १० श्रीपुप्फियाजीसूत्रायनमः
११ श्रीपुप्फचूलियाजीसूत्राय० १२ श्रीवन्हिदसाजीसूत्रायनमः

॥ अथ छ छेदका नाम गुणना ॥

१ श्रीव्यवहारछेदसूत्रायनमः २ श्रीवृहत्कल्पजीसूत्रायनमः
३ श्रीदसाश्रुतस्कंधजीसूत्राय० ४ श्रीनिशीथजीसूत्रायनमः
५ श्रीमहानिशीथजीसूत्राय० ६ श्रीजीतकल्पजीसूत्रायनमः

॥ अथ दस पयन्ना नाम गुणनो ॥

१ चोसरणपयन्नाजीसूत्रायन० २ संथारपयन्नाजीसूत्रायनमः
३ श्रीतंदुलपयन्नाजीसूत्रायन० ४ श्रीचंदाविज्झियासूत्रायनमः
५ श्रीगणविज्झियासूत्रायनम० ६ श्रीदेवविज्झियासूत्रायनमः
७ श्रीवीरथुवोजीसूत्रायनमः ८ श्रीगछाचारजीसूत्रायनमः
९ श्रीज्योतिष्करंडजीसूत्राय० १० श्रीमहापचखाणजीसूत्रा०

॥ मूल सूत्रके नामका गुणना ॥

१ श्रीआवस्यकजीसूत्रायनमः २ श्रीउत्तराध्ययनजीसूत्राय०
३ श्रीउघनिर्युक्तीजीसूत्रायन० ४ श्रीदशमीकालिकजीसूत्रा०
१ श्रीअनुयोगद्वारजीसूत्राय० २ श्रीनंदीसूत्रजीसूत्रायनमः

॥ अथ पैतालीस आगम स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे श्रीतीर्थपति, नमूं देव अरिहंत ॥ अर्थ प्रकाशै गणपपुर, द्वादश अंग महंत ॥ १ ॥ त्रिपदी लहि गणपति रचै, सूत्र अर्थ संजोग ॥ अक्षररूपै सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग ॥ ॥ २ ॥ टीका कर्त्ता जगतगुरु, सूत्र करै गणधार ॥ पंचागी श्रुत विस्तरै, नय निक्षेप विचार ॥ ३ ॥ दुषम काल दुर्भिक्षसें, भूले बारम अंग ॥ कंठ पाठसें लिखत कर, रचना रची अभंग ॥ ४ ॥

खंदिल अरु देवर्द्धि गणि, आचारज सय पंच ॥ चोरासी आगम लिखै, कोटि ग्रंथ तज खंच ॥ ५ ॥ काल दोषसें अब मिलै, आगम पैंतालीस ॥ ताको मुनि विवरण करै, माने विसवावीस ॥ ६ ॥ ( ढाल ॥ जगतगुरु त्रिसला नंदनजी ॥ ए देशी )॥ आचारांग पहिलो कह्यो जी, मुनि आचार विचार ॥ सुयगमांग दूजोअछै जी, पाखंमी निरधार ॥ जगतगुरु जाखै वीर जिनंद ॥ १ ॥ दस ठाणा ठाणांगमे जी, समवायांग संख्यात ॥ सहस उत्तीस जल प्रश्नो जी, जगवई अंग विख्यात ॥ ज० २ ॥ धर्मकथा ज्ञाता जणी जी, दस श्रावक व्रतधार ॥ दसाउपासक सातमो जी, अंग कह्यो निरधार ॥ ज० ३ ॥ अंतगम केवली जे थया जी, वरणन अष्टम अंग ॥ पंचानुत्तर जे गया जी, अणुत्तरोवाई चंग ॥ ज० ४ ॥ अंगुष्ठादिक प्रश्नो जी, प्रश्नव्याकरण नाम ॥ सुख दुःखना फल जाषिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज० ५ ॥ अढार सहस आचारांगमें जी, पद संख्या परिमाण ॥ वर्ण संख्याते पद हुवे जी, ठाण दुगुण सब जाण ॥ ज० ६ ॥ उववाई उपांगमे जी, कोणिक अंबम रूप ॥ वर्णन नगरी आदि दे जी, सांजल जविजन चूंप ॥ ज० ७ ॥ सूरियाज पूजा करी जी, जिन प्रतिमा नवरंग ॥ द्रव्य जाव बिहुं जेदसूं जी, रायप्रश्नी चित चंग ॥ ज० ८ ॥ जीवतणो अजिगम सही जी, विजयदेव प्रस्ताव ॥ जीवाजिगम तीजो कह्यो जी, सुर कृत बहु विध जाव ॥ ज० ९ ॥ पन्नवणामें जाणज्यो जी, जीवाजीव विचार ॥ जंबूद्वीपनी वर्णना जी, नाम थकी गुण धार ॥ज० १०॥ सूर चंद्र विग्रह गती जी, पन्नत्ती बिहुं जाण॥ कप्पिया कप्पवमिंसियाजी, पुप्फिया नाम वखाण ॥ ज० ११ ॥ पुप्फचूलिया जाणीये जी, वन्हिदशा इण नाम ॥ नामथी अर्थ पिछाणज्यो जी, सांजलता सुख धाम ॥ ज० १२ ॥ (ढाल २ ॥ ख्याली लाल

अणवट रंग लागो ॥ ए देशी) ॥ छेदतणा प्रायश्चितना जी, छेद छए ए जाण ॥ वृहत्कल्प विवहारमें जी, भाष्यो भगवंत ज्ञान ॥ सुज्ञानी लाल इणसुं नित राचो ॥ राचो२ रे भविक दिलदार, इणसुं नित राचो ॥ सुज्ञा० १ ॥ महानिशीथे भाषियो जी, जिनपूजा विहुं भेद ॥ श्रावक द्रव्ये भावसूं जी, मुनिवर भाव उमेद ॥ सुज्ञा० २ ॥ जीतकल्प वलि निसीत छे जी, उंर दशाश्रुतस्कंध ॥ दश पयन्ना जाणिये जी, चौसरण संथार प्रबंध ॥ सु० ३ ॥ तंडुलवयाली चंदाविज्झया, गणविद्या अभिधान ॥ देवविज्झया वीरथुवो जी, गच्छाचार निधान ॥ सु० ४ ॥ ज्योतिकरंड, महा पच्चरकाण जी, च्यार सूत्र छे मूल ॥ आवश्यक दशमीकालिक जी, उत्तरध्ययन अमूल ॥ सु० ५ ॥ च्यारे अनुयोगे करी जी, रचना सूत्रे जाण ॥ तेह न्याय निक्षेपथी जी, अनुयोगद्दार प्रधान ॥ सू० ६ ॥ द्रव्यानुजोग छए द्रव्यनी जी, चर्चा विधि विस्तार ॥ चरण करण अनुयोगमें जी, मुनि श्रावक आचार ॥ सू० ७ ॥ गणतानुयोग गणना करी जी, पृथ्वी गिरी विमाण ॥ वर्गमूल घनमूलथी जी, जाणो चतुरसुजाण ॥ सु० ८ ॥ धर्मकथा अनुयोगमें जी, धर्मकथा दृष्टांत ॥ ए च्यारों विस्तारीया जी, पेंतालीस सिद्धांत ॥ सु० ए॥ (ढाल तीसरी ॥ सांगानेर विराजै ॥ ए देशी ) ॥ सुण२ गोतमवाणी, इम वीर वदे गुणखाणी रे, भवियां आगमसुं मन लावो ॥ मन कल्पित वात म गावो रे ॥ भ० आ० १ ॥ नंदीसूत्र चिरनंदो, यामें पंचज्ञानने वंदो रे ॥ भ० आ० ॥ ज्ञानना भेद वखाण्या, मति अगवीसे आण्या रे ॥ भ० आ० २ ॥ श्रुत चवदे वीसां भेदे, ए मिथ्यामतने छेदे रे ॥ भ० आ० ॥ अवधिछ असंख्य प्रकारे, मनपर्यव दुय भेद धारे रे ॥ भ० आ० ३ ॥ केवल एक प्रकासे, ए सब विधि नंदी भासे रे ॥ भ० आ० ॥ एतो सहु आगमनी नूंद, स्या-

हाद गंगनी बूंद रे ॥ ज० आ० ४ ॥ अंग उपांगनी टीका, कर्त्ताने नमूं निरन्नीका रे ॥ ज० आ० ॥ प्रथम शीलांगाचारी, श्रीअजय देव बलिहारी रे ॥ ज० आ० ५ ॥मलयगिरी गुरुस्वामी, इत्यादि कने सिर नामी रे ॥ज०आ०॥ सामान्य विशेषे जाखी, निश्चय वि वहार छै साखी रे ॥ ज० आ० ६॥ उत्सर्ग वचन बे केइ, अपवाद वचनने लेइ रे ॥ ज० आ० ॥ इक मनसुं आराधो, मन वंछित स गला साधो रे ॥ ज० आ० ७ ॥ ( ढाल ४॥ मंगल कमला कंद ए ॥ ए देशी ) ॥ पैंतालीस आगमतणी ए, हिव तप विध सुणज्यो हित जणी ए ॥ दूज पांचम एकादसी ए, ज्ञानतिथि तपथी कर्म जाय खसी ए ॥ १ ॥ शक्ति बले उपवास ए, आंबिल निविग्गी उ ल्लास ए ॥ एकासण अथवा करै ए, इम पैंतालीस दिन आचरे ए ॥ २ ॥ जाप करै दो हजार ए, देववंदन पूजन सार ए ॥ प्रतिक्र मण करै दोनुं टंक ए, आगम सुणै अर्थ निसंक ए ॥ ३॥ उजमणो हित चित्त करे ए, गुरु जक्ति चित्तसुं आदरे ए ॥ जक्ति करै साहमीतणी ए, जे पढय पढावै ते जणी ए ॥४॥ अन्न वस्त्र पुस्तक करै दान ए, तिण मनुष्य जनम परिमाण ए ॥ ते पामे श्रुतज्ञान ए, क्रमथी लहै पद निरवाण ए ॥ ५ ॥ ( कलश ) शुज नंद सर निधि चंद्र वरषै माघ सुदि पंचमी दिने, वर नयर बीकानेर सुंदर बृहत्खरतर गण घणे ॥ गणधार कीर्ति सुरिंद पाठक रामगणि ऋद्धिसार ए, इ म करिय स्तवना सुय महोदय सदा जयकार ए ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधिः ॥

॥ शुज दिन गुरुके पास ११ गणधर तप ग्रहण करे. ११ दिन उपवास वा एकासणा करे. जिस दिन जो गणधर माहारा जका तप होय उसी नामका २००० गुणना करै ॥

॥ अथ इग्यारे गणधरोंका नाम गुणनो ॥

१ श्रीइंद्रजूतिगणधरायनमः     २ श्रीअग्निजूतीगणधरायनमः

३ श्रीवायुभूतिगणधरायनमः ४ श्रीव्यक्तभूतिगणधरायनमः
५ श्रीसुधर्मास्वामीगणधराय० ६ श्रीमंमितस्वामीगणधराय०
७ श्रीमोर्यपूत्रजीगणधरायनमः ८ श्रीअकंपितजीगणधराय०
९ श्रीअचलजीगणधरायनमः १० श्रीमेतार्यजीगणधरायनमः
११ श्रीप्रनवजीगणधरायनमः

॥ यह ११ गणधर नगवंत श्री महावीरस्वामीके शिष्य जातिके ब्राह्मण थे, विद्यमान द्वादसांगीके रचना करणेवाले नये. इस वास्ते मंगल जाणके यह तपस्या करै. गणधरपदकी आराधना करै, गोतमरास सुणे, पूर्ण होणेसें गणधरोकी पूजा करावै, आचार्य उपाध्यायादिककी नक्ति करै, यथाशक्ति परमान्न नोजनसे साहमी वछल करै ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥

॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै सो विधि ॥

प्रथम ५ साथिया करै (नमंतसामंत) यह गाथा पढके शक्ति मुजब ज्ञान पूजा करै, इरियावही पमिकमे, एक लोगस्सका काउसग्ग करै, पार कै प्रगट लोगस्स कहे, नीचा वैठके मुंहपत्ती पमिलेहे, दो वांदणा देवै, स्थापनाजीको खमासमण देई (नगवान अमुक तप गहणत्थं चेइयं वंदावेहं) एसा कह चैत्यवंदन करै, णमोत्थुणं इत्यादि अरिहंतचेइयाणं अन्नत्थु० कह ४ थुई कहै, चोथी गाथा कहके नीचा वैठके णमोत्थुणं कहै, फेर खमा होके (श्रीशांतिनाथस्वामी आराधनार्थं करेमिकाउसग्गं अन्नत्थू०) कहकै १ लोगस्सका काउसग्ग करै, पार कै नमोर्हतसिद्धा० कहकै (श्रीमतेशांतिनाथाय, नमःशांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीस, मुकुटाभ्यर्चितांह्रये ॥ १ ॥ यह थुई कहकै (शांतिदेवताआराधनार्थंकरेमिकाउसग्गं अन्नत्थु०) कहै, एकेक नवकाराका काउसग्ग करै, थुई पढै, (शांतिःशांतिकरःश्रीमान्, शांतिदिशतुमेगुरुः ॥ शांतिरेवसदातेषा,

येषांशांतिगृहे २ ॥१॥) पीछे श्रुतदेवताकी क्षेत्रदेवताकी भुवनदेवता-की स्तुति काउसग्ग एकेक नवकारका करके अनुक्रमसें कहे. पीछे शासनदेवताका काउसग्ग एक नवकारका करै (यापातिशासनंजैनं, सद्यप्रत्यूहनाशनी ॥ साभिप्रेतसमृध्यर्थं, भूयाछासनदेवता ॥१॥ ) पीछै समस्त वैयावृत्ति कर आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थु० एक नवकारका काउसग्ग करै, पार कै (श्रीशक्रप्रमुखायक्षा, जिन-शासनसंस्थिताः ॥ देवान्देव्यस्तदन्येपि, संघरक्षंत्वपायतः) यह थुई कहके नीचा बैठके नमोत्थुणं कहै, जयविराय पर्यंत चैत्यवंदन करै. फेर खमासमण देके (भगवन् अमुक तप गहणछं करेमि काउसग्गं) एक लोगस्सका काउसग्ग करै, पार के प्रगट लोगस्स कहै, खमासमण देके ३ नवकार गुणे. फेर खमासमण देके (इछकार भगवन् अमुक तप ग्रहण दंडक उच्चरावो जी) गुरु कहे (उच्चरावेमो) पीछै ( अहसंभंतेतुह्माणंसमीवे अमुकतवंउपसंपज्जा-माणंविहरामि ॥ तंजहा दवउ कालउ भावउ दवउणं अमुकतवं खित्तउणंइछावा अन्नछवा कालउणं जावपरिमाणं भावउणं जाव-गहेणंनगहिज्जामि जावछलेणंनछलिज्जामि सन्निवाएणंनभविज्जामि जावअसेणवा केणइरोगायंकादिपरिणामवसेण एसोमेपरिणामोनप-रिवज्जइ तावमेएसतवो अन्नछरायाभियोगेणं गणाभियोगेणं बलाभि योगेणं देवाभियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥) जो तप ग्रहण करै उसी तपका नाम लेके गुरुके पास ३ वेर यह पाठ सुणे, गुरु नहीं होय तो थापनाचार्यजी समके तीन वार यह पाठ पढे, पीछै गुरु कहे ( हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुभयेणं सम्मं-धारणीयं गुरुगुणेहिंवुद्धाहि नित्थारगपारगाहोहि ) एसो गुरु कहै. पीछै खमासमण देके गुरुमुखे पच्चखाण करै अथवा गुरु नहि होय

तो आप मुखे करै. इति सर्व तपस्या ग्रहण विधिः संपूर्ण ॥

॥ अथ सर्व तप पारणविधिः लिख्यते ॥

प्रथम ज्ञानपूजा करकै इरियावही पडिक्कमे, अमुक तवपा० मुहपत्ती पडिलेहे २ वांदणा देवै ( इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् तुम्हेअम्हं अमुक तप पारावेह ) गुरु कहे ( पारावेमो ) इच्छामिख-मासमणो० इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अमुक तप निस्कमणत्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके १ नवकारका काउसग्ग करे, स्तु-तिकी गाथा कहे, पीछे णमोत्थूणं कहे, बेठकै भगवन् अमुक तप करतां अविधि आशातनायें करी जो कोइ दूषण लागो होय सो मन वचन कायायें कर मिच्छामिच्छुक्कडं. और ज्ञानभक्ति द्रव्यसें भावसें किया होय सो प्रमाण फल दायक होणा. गुरु कहे ( नि-च्छारगपारगाहोह ) पीछे पच्चक्खाण करै, अमुक तप आलोयण नि-मित्तं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके ४ लोगस्सका काउसग्ग करै, प्रगट लोगस्स कहै, पीछे उपगरण पात्र भक्त पानादिकसें साधुभ-क्ति करै. अपनी शक्ति मुजब जैनशास्त्रके पढणेवाले तथा पढा-णेवाले विद्यागुरुकी भक्ति करै, साहमी वच्छल करै, पहरावणी करै, पीछे याचकोंका दान सन्मान करै ॥ इति सर्व तपस्या पारण विधि ॥

॥ अथ उपधान तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्रीमहावीर धरम परगासै, बैठी परखद बारजी ॥ अमृ-त वचन सुणी अति मीठा, पामे हरख अपार जी ॥ १ ॥ सुणो२ रे श्रावक उपधान वह्या विन, किम सुझै नवकार जी ॥ उत्त-राध्ययन बहुश्रुत अध्ययने, एह भणयो अधिकार जी ॥ सु० ॥ २॥ महानिशीत सिद्धांत मांहे पिण, उपधान तप विस्तार जी, अनु-क्रम सुद्ध परंपर दीसे, सुविहित गच्छ आचार जी ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप उपधान वह्यां विन किरिया, तुच्छ अलप फल जाण जी, जे

उपधान वह्यां नर नारी, तेहनो जनम प्रमाण जी ॥ सु० ॥ ४ ॥ तप उपधान कह्यो सिद्धांते, जो नवि माने जेह जी ॥ अरिहंतदेव-नी आण विराधे, भमस्यै भव२ तेह जी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अपछ्या घाट समा नर नारी, विन उपधाने होय जी ॥ किरिया करता आदेश निरदेश, काम सरै नहि कोय जी ॥ सु० ६ ॥ इक घेवरने खांडे भरियो, अतिघणो मीठो थाय जी ॥ एक श्रावक उपधान वहे तो, धन२ ते कहिवाय जी ॥ सु० ७ ॥ (ढाल २) ॥ नवकारतणो तप पहिलो वीसरू जाण, इरियावहीनो तप बीजो वीसरू आण ॥ इण बिहुं उपधाने निश्चै नाण मंडाण, बारे उपवासै गुरु मुख बे बे वाण ॥ ८ ॥ पैंत्रीसरू त्रीजो णमोत्थुणं उपधान, त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान ॥ अरिहंतचेई तप चोथो चोकरू एह, उपवास अढाई वाण एक गुण गेह ॥ ९ ॥ पांचमो लोगस्स तप अठावीसरू नाम ॥ साढापनरह उपवास वायण त्रिण ठाम ॥ पुक्खरवरदी तप छठो छक्करू सार, साढात्रण उपवासे वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणंबुद्धाणं सातमो उपधान म्हाल, उपवास करै इक चोविहार ततकाल ॥ एक वाणि करै व्हाल गुरुमुख सरस रसाल, गछनायक पासै पहरै माल विशाल ॥ ११ ॥ माल पहरण अवसर आणी मन उछरंग, घर सारू वारू खरचै धन बहु भंग ॥ अति उछव कीजै रातीजोगो दिल खोल, गीत गान गवावै पावे अति रंगरोल ॥ १२ ॥ ( ढाल ३ ॥ ) ए साते उपधान, विधिसों जे वहै, ते सूधी किरिया करै ए ॥ खिण न करै परमाद, जीव जतन करइ, पूंजि२ पगलां भरै ए ॥ १३ ॥ न करै क्रोध कषाय, हरू२ हसै नहीं, मरम केहनो नवि कहै ए ॥ नाणे घरनो मोह, उतकृष्टी करै, साधुतणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥ पहुर सीम सिझाय, करि पोरसि भणी, ऊंचै स्वर बोलै नही ए ॥

मन मांहें नावे एम, धन२ ए दिन, नरनव मांहि सफल सही ए ॥ १५ ॥ जे साते उपधान, विध सेती वहै, पहिरै माल सोहामणी ए ॥ तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फल दायक, करम निर्जरा अतिघणी ए ॥ १६ ॥ परनव पामे ऋद्धि, देवतणां सुख, बत्तीसबद्ध नाटक पखै ए ॥ दाने लील विलास, अनुक्रम शिवसुख, चढती पदवी जे चढै ए ॥ १७ ॥ ( कलश ) इम वीर जिनवर नुवन दिनयर माता त्रिसला नंदणो, उपधानना फल कहै उत्तम नविय जन आनंदणो ॥ जिनचंद युगपरधान सदगुरु सकलचंद मुनीसरो, तसु सीस वाचक समयसुंदर नणै वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥ इति सात उपधान गर्भित स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ संघ मालारोपण विधि लिख्यते ॥

प्रथम मालारोपणके मुहुर्त्तके पहिले दिन मध्यान्ह समें सुहागणस्त्री चांदी आदिके थालके अंदर कुंकुमका साथिया करके ऊपर चावलोंका करै, पांच सुपारी १ नालेर धरके माला पधराके सुहागणस्त्री अपणें हाथसें सिर पर धरै, पीछै सब संघ समेत गीत गाते वाजित्र वाजते गुरु पास आवै, सधवस्त्री गुंहली करै, उर स्त्रियां गहुंली गावै, पीछै गुरु उर्ध्व सासलें वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर वासक्षेपसें माला प्रतिष्टित करै. यथा ॥ ॐह्रीणमोअरिहंताणं । ॐह्रीणमोसिद्धाणं । ॐह्रीणमोआयरियाणं । ॐह्रीणमोउवज्झायाणं । ॐह्रीणमोलोएसव्वसाहूणं । ॐह्रीणमोअरहउ नगवउ वद्धमाणसामिस्स ॥ जएविजये जयंते अपराजिए सव्वठसिद्धिए ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहाः ॥ इति वर्द्धमानविद्याः ॥ पीछै वाजित्र वाजते स्वस्थानकें आवै, बाजोठ पर थाल रक्खै, धूप दीप संयुक्त रात्रीजागरण करै, श्रीफलादिककी प्रनावना करै, पीछै मालाग्राहक प्रनात समें प्रतिक्रमण करके पडिलेहण देववंदनादि करके जिनपूजा करै. पीछै

मुहूर्त्तकी वखत वाजित्रादि उत्सव संघ समेत गुरु पास आवै, पात्र श्रीफल रोक इव्य हाथमें लेके पहले जो नांदकी थापना करी हे. नांद कहीये समोसरणका चित्रपट सो वस्त्री ठवणी पर मोलीसे लपेटके आपे सो उस नांदके च्यारों खूणो पर च्यार साथिया कुंकुं उर चावलोका करके नारेल उर रोक मोहर वगेरे भेट करै. साथियों पर अच्छे विदामादि फल चढावे, पीछे मालाग्राहक चरवला मुहपत्ती हाथमें लेके गुरूके संग इरियावही पडिक्कमे. पीछे श्रावक खमासमण देके श्रावकमुहपत्ती पडिलेहे, फेर खमासमण देके इच्छकारभगवन् तुम्हे अम्हं संघपति मालाआरोहावणि देववंदाव मणि वासनिक्षेप करो. तब गुरु वासक्षेप करै. पीछे फेर खमासमण देई तुम्हे अम्हं संघपति माला आरोहावणी देववंदावो, गुरु कहे वंदेह, श्रावक इच्छं कही गुरुके साथ देववंदन करै ॥

॥ अथ देववंदन विधिः ॥

॥प्रथम खमासमण देके इच्छा० भगवन् चैत्यवंदन करुं. गुरु कहे करेह. पीछे गुरु चैत्यवंदन बोलै. श्रावक णमोत्थुणं कहै अरिहंत चेइयाणं० कहके एक नवकारका काउसग्ग करै, नमोर्हत्सिद्धा० कहके गुरु स्तुति कहै. यथा ॥ अर्हंतनोतुसश्रेय। श्रियंयध्याननोनरैः । अप्यैंद्रीसकला त्रेहि । रहंसासहसोच्यते ॥ १ ॥ पीछे लोगस्सउज्जो० सव्वलोए० वंदणव० अन्नत्थु० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै. उमितिमंतायं । शासनस्यनतासदायदंहीच । आश्रियंतेश्रियांते । भवतोऽजिनापातु ॥ २ ॥ पीछे पुक्खरवर० वंदन० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै. नवतत्वयुतात्रिपदी । मिश्रेतारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता, वरधर्मकीर्त्तिविद्या । नंद्यास्याज्जैनगीर्जीयात् ॥ ३ ॥ पीछे सिद्धाणंबुद्धाणं० तत्तः श्रीशांतिनाथ आराधनार्थं करेमि काउसग्गं वंदणव० अन्नत्थु० कहके एक लोगस्सका काउसग्ग करै, नमोर्हत्० स्तुति कहै ॥ श्री

शांतिश्रुतशांति। प्रशांतिकोवशांतिमुपशांतिं। नयतुसदायस्यपदा। सुशांतिदाःशांतिजिने ॥ ४ ॥ ततः द्वादशांगीआराधनार्थं क० वं० एक नवकारका० पारके नमोर्हत्सि० ॥ सकलार्थसिद्धिसाधन। बीजो पांगासदास्फुरदुपांगा। भवतादनुपहतमहा। नमोपहाद्वादसांगीव ॥ ५ ॥ ततः सुयदेवयाए आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थु० कहके १ नवकारका० नमोर्हत्सि० ॥ वंदवदतीवागवादनी। भगवतिकःश्रु तगमेत्तु। रंगप्ररंगमितिवर। तरणीस्तुभ्यंनमइतिहः ॥ ६ ॥ ततः शासनदेवता निमित्तं करेमि का० अन्नत्थु० १ नवकारका० स्तुति॥ उपसर्गविलयविधन। निरत्तीजिनशासनावनैकरता। हृतमिहसमिही-तस्कृते। स्युशासनेदेवताभवतु ॥ ७ ॥ पीछे समस्त वेयावच्चकरा-णं शंतिकराणं सम्मदिट्ठिसमाहिकराणं अन्नत्थू० १ नवकारका का-उसग्ग स्तुति०॥ संघत्रयेगुरुगुणोघनिधेसुवैया। वृत्यादिकृत्यकरणैक निवद्धकक्षा। तैशांतयेसदभवंतुसुरासुरीभिः। सद्दृष्टयोनिखिलविघ्न विघातदक्षा ॥ ८ ॥ प्रगटपणे एक नवकार नमोत्थुणं जावंतिचे० नमोर्हत्सि० कहके स्तवन कहै ॥ उँमितिनमो भगवउ। अरिहंत सिद्धाचारियउवझाए। वरसवसाहूमुणिसंघ। धम्मतिउयपवयण स्स ॥ १ ॥ सप्पणवनमोतइभगवइ। सुयदेवयाइसुहयाए। सिव संतिदेवयाय। सिपवयणदेवयाणंच ॥ २ ॥ इंदागणीयमनेरइया। वरुणोवायुकुवेरईसाणा। वंभोनागुत्तिदशम। मवियसुदिसाणपाला णं ॥ ३ ॥ सोमयमवरुणवेसमण। वासवाणंतहयपंचएहं। तहलोगपा-लयाणं। सुराई गहाणयनवन्हं ॥ ४ ॥ साहंतस्ससमरकं। मझमिणंचेव-धम्मणुणाणं। सिद्धिमविग्घंगच्छउ। जिणाणंनवकारउभणियं ॥ ५ ॥ इति स्तवनं ॥ जयवीराय कहै पीछे भगवान आगे पच्छा करके मालाग्राह क गुरुकूं द्वादशावर्त्त वंदनायें वांदे, पीछे खमा होके कहे इच्छकार भ० तुझे अह्मं संघपति मालाआरोहावणी उद्देसावणी नंदीसुत्र

संजलावणी काउसग्ग करावो. गुरु कहे करेह. इच्छं. संघपतिमाला आरो० उद्दे० करेमि काउसग्गं अन्नत्थु० कहके १ लोगस्सका का० प्रगट लोगस्स कहे, गुरुजी काउसग्ग करे. पीछे मालाग्राहक खमासमण देइ इच्छाकार भगवन् नंदीसूत्र संभलावो, तब गुरु खडा होकर हाथमें वासक्षेप लेके तीन नवकार सुणावे, नित्थारगपार गाहोह कहके मस्तक पर वासक्षेप करे, पीछे श्रावक खमासमण देके इच्छा० संघपति माला उद्देसह, गुरु कहे उद्देसमि. फेर श्रावक इच्छामि० इच्छाका० किंभणामी, गुरु कहे वंदित्ता पवेह. खमासमण देके इच्छं तुझे अह्मं संघपति मालाउद्दिठं इच्छामो अणुसद्धिं उदिठिर ख मासमणाणं हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुभयेणं जोगकरीजाहि गुरु गुणवुद्धीजाहि नित्थारगपारगाहोह. फेर खमासमण देई तुह्माणं पवेइए संदिसह साहुणंपवेमी, गुरु कहे पवेह. पीछे खमासमण देके तीन नवकार गुणता भया नांदकूं तीन प्रदक्षिणा देवे वासक्षेप चढावे. गुरु १ प्रदक्षिणा देवे. पीछे मालाग्राहक मूहपत्ती पडिलेहै, खमासमण देके इच्छाका० तुह्माणंपवेइयं संदिसहभगवन् काउसग्गं करेमी इच्छामी० इच्छाका० भगवन् तुझे अह्मं संघपति माला उद्दे सामणी आरोहावणी करेमिकाउसग्गं अन्नत्थु० कहके १ लोगस्सको काउसग्ग प्रगट लोगस्स कहै पीछे खमासमण देके वेसणो संदिसाउं, दूजे खमासणे वेसणो ठाउं, पीछे खमासमण देके जो विधि करतां अविधि आसातना लागी होय ते सहु मन वचन कायायें करी मि० इति नांदकी क्रिया ॥ पीछे मालाग्राहक भगवानके नव अंग नव रुपिया मोहर वगेरे चढाके नमस्कार करै, मुहुर्तकी वखत मंदरजीके बाहिर जमीन खुली होय तो भगवानके सनमुख सर्व संघ आयके खडा रहे, पीछे मालाग्राहक गुरूके पास आके नव अंग पूजा करे, नव रुपिया मोहर आदि ज्ञान निमित्ते भेट धरे, पीछे गुरू ऊर्ध्वश्वासे माला

हाथमें लेके ७ नवकार गुणे, पीछे जो माला पहिरावे जिसकों माला पहिरणेवाला यथाशक्ति पहरामणी करे. माला पहिराणेवाला ऊर्ध्वश्वासें करी संघपतिकों माला पहिरावे, दोनुं जणें ८ दिन तक सचित्त कुशीलादिकका गुरु पासे पच्चखाण करे, पीछे मंदरजी पर चढाणेकी धजा सो संघपति थालमें लेके मंदिरजीके बाहिरकर तीन प्रदक्षणा देकर गुरु पास वासक्षेप पूजन कराके मंदिरजीके ऊपर चढावे, पीछे सर्व संघके सामने गुरु धर्मोपदेस देवे, साधर्मी वात्सल्य करे ॥ इति संघपति मालारोपण विधिः ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लि० ॥ नित्यकर्त्तव्यता यथा ॥

॥ नित्यकर्त्तव्यता कुछ तो शास्त्रोंके लिखतसें कुछएक देखणेमें आई जो परंपरा सो लिखते हें ॥ उपधानवाला श्रावक विगयोंमेंसें एक घीहीज लेता हे उर विकृती नहीं लेता १, उपधानमें तीस विगयोंकी नीवीतोंमेंसें एकही नीवीता लेणा कारणयोगसें खांड वगेरे लेणेकी जयणा २, उत्कट इत्यादिक नही लेणा ३, घी तेलका वघारया साग भी नहीं लेणा धूंगारया हुवा लेणा ४, हरासाग नीलोती नहि लेणा ५, तलाहुवा पापड सीरा वडे वगेरे नहि लेणा ६, अन्न पुरषणेवाली रात्री प्रायश्चित्त करणेसें स्त्री शुद्ध होती हे अन्यथा नही ७, अन्न पुरषणेवाली स्त्री फटावस्त्र अथवा कारीलगावस्त्र नहि पहरे ८, भोजन करणेकी जगा झाडू वगेरे देणेवाली व्रत प्रायश्चित करे अखंडित वस्त्र रखे तो शुद्ध ९, जितने वस्त्रादि उपकरण तप प्रवेशके प्रथम दिन पासमें रखे हें वो सब भोगाभोगकी दोनों वखत पडिलेहणा करणी १०, जीमणके ठिकाणे जो जो थाली कटोरा वगेरे रखेहे वो सब भोजन करे जिस दिन पादोनपोरसीमें पडिलेहणाकी वखतही पडिलेहणा दुसरी वखत अन्यदा नही ११, कदाचित् हार कुंडल.दिक गहणा अपणे

शरीरसें उतारके अपणे घरादिकमें रखा होय तब विना उपधान-वाली जो स्त्री अठपहरी पोसा लिया हुवा होय तिसके हाथसें रातको दिनको नही वह उपधानवालोकूं देवे उर वोही स्त्री प्रभात समें उनके कहे मुजब ठिकाणे धरदेवे १२, उपधानमें सर्व वस्त्र आप अथवा मालकणके हाथसें पडिलेह्यां शुद्ध होय १३, सर्व क्रिया अनुष्ठानादिक आदेस निदेसादिक मालकणके आदेससें शुद्ध होय १४; क्रिया अनुष्ठानकी कराणेवाली मालकण भी दोनुं वखत पडिक्कमण करे रात्री प्रायश्चित्त करे सात वेर देव वांदे तब शुद्ध होय अन्यथा नही १५, रजस्वलाके तीन दिन तपमें नहीं गिणे जाय १६, महास्वध्याय संबंधी आसोज सुदिकी तथा चैत्र सुदिकी सातम आठम नवम दिन तीन तपस्यामें नहीं गिणे जाय १७, प्रतिक्रमणमें प्रभात समें नवकारसीकादी पच्चख्काण करे पीछे क्रिया करती वखत गुरुके पास उपवास १ अथवा आंबिल २ नीवी ३ अथवा एकासणेका ४ करै १८, पच्चख्काण पारती वखत पहली नवकारसी पारैं पीछे उपवासादिक पारे १९, पहले ही उपधान तप ग्रहण करणेके दोनों दिन नंदीके आडम्बरसें देरी हो जाती है इस वास्ते अठपहरी पोसा वण नहिं आता इस वास्ते तीसरे पहरकी पडिलेहण किये बाद सर्वोपगरणोकूं पडि-लेहके रातकूं निश्चे पोसा लेणा २०, प्रभातसमें उपधानवाही गुरु-के पास आयके इरियावही पडिलेहके पोषध वपुन सामायक लेके वस्त्र पडिलेहणा उर अंग पडिलेहणा करे, पीछे मुहपत्ती पडिले-हके (उहीपडिलेहणसंदिस्साउं उहीपडिलेहणकरूं) एसे खमासण दोय देवे पीछे उव वंदन दिये बाद खमासमण दश देवै उसका क्रम एसे है बहुवेलसंदिस्साउं १ बहुवेलकरूं वेसणोसंदि० वैसणो-ठाउं० सिझायसं० सिझायकरूं० पांगरणोसं० पांगरणोपडिगहुं

कवासणोसं० कवासणोपमिग्गहूं ) एवं १० ॥ २१, पीछे वंदन दिया बाद सुख तप पूछा २२, सांऊकूं जी यही क्रिया करणी लेकिन इतना विशेष हे पट पमिलेहणा जर अंग पमिलेहणा तो करै परंतु उपधि पमिलेहण नही करै, पीछै गुरुवंदन व दिये बाद खमासमण दस देवै (जहीपमिलेहणसंदिस्सा० जहीपमिलेहणकरूं सिज्झायसं० सिज्झायक० वैसणोसंदिस्सा० वैसणोठाउं) बाकी पहलीकी तरे २२, ग्यारा पमिक्कमणा होणेसें पाक्षीवंदना सुखतपपूछना पर्यंत क्रिया सब करदेना २३, माला पहरणेमें सांऊकूं माला मंत्रायके अपने घर रात्रीजागरण करके प्रजातसमें आचार्य पास माला पहरणी तिसके बाद दिन दश तक दशाहिका करणी जहां पोसा नही लिया हुआ जी हे तो जी तिविहार एकासणा करताजया निरा- रंजी होकर रहै २४, सजी उपधान उत्कृष्ट विधिसें वहना, उसके अजावमें श्रावक एकांतर उपवास उर साधुओंने उपवास आंबिल निवी एकासणा करकै उतनेही उपवासकी संख्या पूर देणी लेकिन दिन संख्याका नियम नहीं हे ॥ इति नित्यकर्त्तव्यता समयसुंदरो- पाध्याय कृत संस्कृतोपरिअस्मद् कृत जाषा संपूर्ण ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लिख्यते ॥

पंच मंगल श्रुत नवकार जिसका उपधान वहणेवाला बारे उपवास अथवा चोवीस आंबिल ३५ नीवी अमृतालीस एकासणा करके १२ उपवासको पैठ पूर कर पीछे पांच अध्ययनकी वाचना नमो अरिहंताणंसें लेके नमो लोएसव्वसाहूणं तककी १ वाचना एक दिनमें लेवे, तिसके बाद तीन अध्ययनकी वाचना एसोपंचनमो- कारो १, सव्वपावप्पणासणो २, मंगलाणंचसव्वेसिं पढमंहवइमंगलं ॥ एवं ३, अध्ययनकी दूसरे दिन एक वाचना करै, फेर इस नवकारके आठ अध्ययनोंकी एकही वाचना एक दिनमें लेवे तो उवतो आंबिल करै,

फेर तेला करे, तेलेके पारणे आंबिल करै, फेर तेला करै, फेर आंबि- ल करे, फेर तेला कर पारणा करके आठ अध्ययनोकी एकही दिनमें वाचना लेवे. आठ आंबिल ३ तीन तेला मिलाणेसे उपवास १२ हुये. यह पंच मंगल नवकारका पहिला उपधान अविधिसें करे तो पो- सा २० वीस करै उपवास १२ करै, विधिसुं वहे तो १६ पोसा उपवास १२॥ यह पहिला वीसम्हतप २०॥ अब दूसरा इरि- यावहीका उपधानमें आठ अध्ययन तीन अंतकी चूला उसमें भी अगलेकी तरेही १२ उपवासादिक पीछै इच्छाकारेणसंदिस्सहसुं ले- कर जेमे जीवाविराहिया तक एक वाचना लेणी, एगेंदियासें ले- कर ठामिकाउसग्गं तक दूसरी वाचना देणी, उर एकही वाचना लेणी होय तो पहली तरे आठ आंबिल ३ तेला करके लेवै॥ इ- रियावहिया श्रुतस्कंधका तप वीसम्ह नामका अविधिसें पोसा २० उपवास १२, विधिसुं वहे तो पोसा १६ उपवास १२॥ ॥अ- ब तीसरा भावारिहंतका तीसरा उपधान उगणीस उपवासकी पैं- ठपूरकर वाचना ३ लेवे सो इस मुजब. पहली १ तेला करै पीछै नमोत्थुणंसे लेकर गंधहत्थीणं तक पहिली वाचना लेवे, फेर १६ आंबिल करै, लोगुत्तमाणंसें लेकर धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं तक दू- सरी वाचना लेवै २, पीछै सोले आंबिल करके अप्पडिहयवरनाण सें लेकर सव्वेतिविहेणवंदामि तक तीसरी वाचना लेवै ३, यह ती- सरा उपधान नमोत्थुणका पैंत्रीसम्ह नामका जिसमें उपवास १९ विधिसुं वहे तो पोसा ३५, अविधिसुं करता पोसा उपवास ॥ ॥ अथ चोथा स्थापना अरिहंत श्रुतस्कंधका उपधान अध्ययन तीन. जिसमें पहली १ उपवास कर ३ आंबिल तीन करै. अरिहंतचेइयाणं इहांसें लेकर वंदणवत्तियाए अन्नत्थउससी- एणं अप्पाणंवोसिरामि तक १ वाचना लेणी. यह थापनारिहंतका

चौथा उपधान चउक्कं नामका जिसमें पोसा ४ उपवास ३॥ अढाई ॥ ॥ नामारिहंत चउवीसत्थेका पहले तेला करै, पीछै लोगस्सउज्जोयगरे इहांसे लेके चउवीसंपिकेवली तक पहली वाचना लेवै, फेर बारे आंबिल करके उसभमजियंचवंदे इहांसें लेकर पास-तहवद्धमाणंच तक दूसरी वाचना देणी, फेर तेरे आंबिल करके एवम-एअभित्थुआसे लेकर सिद्धासिद्धिंमनदिसंतु तंक तीसरी वाचना लेवै. ए नामारिहंत चउवीसत्थेका अठावीसकनाम तप विधिसुं व-हंतां दिन २८ पोसा २८ उपवास साढापनरे एकांतर करै, अवि-धि करतां दिन अठाईस पोसा २८ उपवास साढासतरै ॥ ५ ॥ सुत्रार्थश्रुतस्कंध पहली १ उपवास पीछे ५ आंबिल पीछे पुक्खर-वरदीवड्ढेसें लेकर सुयस्सभगवओकरेमिकाउस्सग्गं तक एक वाचना देणी. यह छठा उपधान श्रुत्रार्थक नाम छक्कं पोसा ६ उपवास साढातीन ॥ ६ ॥ ॥ अथ सिद्धार्थकश्रुतस्कंध सातमा उपधान पोसह समेत चोविहार उपवास १ करै, पीछै सिद्धाणंबुद्धाणंसें ले-के तारेइनरंवनारिंवा तक एक वाचना देणी. यह सातमा उपधान मालाका तप ॥ ७ ॥

॥ अब उपधान तप प्रवेश विधि लिख्यते ॥

॥ जब बहोत श्रावक अथवा बहोत श्रावकएयां उपधान वहे तब तो संघके नामसे चंद्रमा अछा देखणा, संघकी कुंभरासी है. अगर एक श्रावक अथवा एकही श्रावकणी उपधान वहे तो अपणे नामसें चंद्रबल लेवै तथा उपधानवाही सांझकूं वाचनाचार्य-के पास आयके इरियावही पडिक्कमके खमासमण देके कहे (अमुक उपधान तपे पवेसह) गुरु कहे (पवेसामो, नवकारसी करणा अंग पडिलेहण संदिस्साणा) तब उपधानवाही कहे (तहत्ति) इहां खमा-समण दिये बाद चोवीहार करै, चाहेपाणी पीवै वा अथवा भोजन

करो व्यवस्था नही है, अथ किसी भी कारण करके सांऊकूं खमा-सण नही दिया होय तो तब पमिकमणेके वखतसे पहली पिबली रातकूं भी खमासण देणा काल वखत पमिक्कमणा करणा नवका-रसीका पच्चरकाण मालकण पास करणा पीछे सूर्य उदय भये बाद वाचनाचार्य पास आणा. तहां पहले दो उपधानमें (नवकारके उर इरियावहीके) तो प्रारंभमें अवस्य नंदीकी स्थापना करणी उर उत्क्षेप भी इन दोनों उपधानोंका नंदीमेंही करणा. इस उपरांत बाकी उपधानोंमें नंदीका नियम नही हे. तिसके बाद प्रभातसमें पहले उत्क्षेप करणा, तिसके बाद पोसा सामायक लेणा, पीछे दो वांदणा देके पच्चरकाण करणा, फेर मुहपत्तीपूर्वक सुखतप पूछा वांदणा दोय देवै ॥ इति उपधान तप प्रवेश विधि ॥

॥ अथ उपधान तप उत्क्षेप विधिः लिख्यते ॥

॥ पहले इरियावही पमिक्कमके मूहपत्ती पमिलेहके दो वांद-णा देवे, खमासण देके उपधानवाही कहे (पहले उपधानमें पंच मंगल महासुयरकंध तवं उरिकवह) गुरु कहै (उरिकवामो) पहले पंच मंगलउपधान महाश्रुतकंध उखेवावणियं नंदीपवेसावणियं काउसग्गं करावेह, गुरु कहै करावेमो. पहले उपधान पंच मंगल महासुयस्कंध उस्केवावणियं नंदिपेवसावणियं करेमिकाउसग्गं अन्नउससिएणं इ-त्यादि काउसग्गमें चंदेसुनिम्मलयरा तक चिंतवै, पार के प्रगट लोगस्स कहे, पीछे खमासण देके पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंध उखे वावणियं चेइयाइंवंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेपकरावेह, गु रु कहे करेमो. पीछे वासक्षेपपूर्वक संपूर्ण चैत्यवंदन करै. एसें सर्व उपधानोंमें उत्क्षेप जाणना. इतना विशेष हे पहले दो उपधानो का उत्क्षेप नंदीमेंही करणा बाकी उपधानोके विषे सो जब नंदी होय जब तो नंदीमें करे जो नंदी नही थापे तो प्रातसमे प्रवेश

के दिन उत्क्षेप करणा, लेकिन् जो जो उपधान वहे उस२ का नामोच्चारण करणा ॥ इति उत्क्षेप विधिः ॥

॥ अथ वाचना विधिः ॥

॥ सांझकूं पहिले चोविहारका पच्चक्खाण कर इरियावही पडिकमके मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देवे पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंधका प्रथम वाचना प्रतिग्रहण निमित्तं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके काउसग्ग सागरवरगंभीरा तक लोगस्स विचारे, पार के प्रगट लोगस्स कहे, दोय खमासमण देके इच्छाकारेणसंदिस्सह पहिलै उपधान पंचमंगल० प्रथम वाचना प्रतिग्रहणार्थं चेइयाइ वंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेपकरावेह, करावेमो. पीछै गुरु वासक्षेप करै, पीछै चैत्यवंदन करै, पीछै खमासण देके उपधानवाही दोनुं हाथोंमें मुहपत्ती लेके मुखकूं ढांककर अर्द्धावनतगात्री होयके वार तीन पांचों अध्ययनोंकी वाचना देवे, वाचनामें मिच्छामिदुक्कडं एसें सब जगे वाचनाभिलाप जाणना ॥ १ ॥ इति वाचना विधिः ॥

॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधिः ॥

॥ अथ तपस्या पूर्ण होय उस आखरी दिनकों सांझकूं चोविहार करके अथवा प्रभातसमें इरियावही पडिकमके मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देके उपधानतपवाही कहै—इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं अमुक तवंनिक्खिवह, गुरु कहे निक्खिवामो. फेर खमासण देके कहे—इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अमुक तप निक्खिवणत्थं काउसग्गं करावेह, गुरु कहे करावेमो. इच्छाक० अमुक तप निक्खिवणत्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके एक नवकारका काउसग्ग करकै खमासण देवै, अमुक तप निक्खिवणत्थं चेइयाइं वंदावेह. वंदावेमो गुरु कहे. पीछै संपूर्ण चैत्यवंदन करै ॥ इति निक्षेप विधि ॥

॥ अथ पडिपुन्ना विगय पारण विधि लिख्यते ॥

प्रभातसमें गुरुके पास आयके भ्यारा प्रतिक्रमण किया उस

वास्ते मुहपत्ती पमिलेहके वंदन ब्व देवे ( दो वांदणा देवे इसकूं ब्व वंदन कहते हे ) गुरूके साथ पमिकमणा कीया होय तो वांदणा दोयही देवे. पीछे गुरु कहे पवेयणंपवेह एसा कहके कहे पमुपुसोविगयपारणयंकरेहत्ति, पीछे अपणी इच्छानुसार पच्चरकाण करे पीछे गुरूके सामने कहे उपधानमें अभक्ति आसातना करी होय तस्स मिच्छामिडुक्करूं ॥ इति ॥

॥ अथ क्षमाश्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ उपधान वहणेवाला प्रभातसमें गुरू पास आयके गुरूकी आज्ञासें इरियावही पमिकमके आगमन आलोचकर पोसा सामायक लेके दोय खमासमणपूर्वक पमिलेहणा उर अंगपमिलेहणा करे, पीछे मुहपत्ती पमिलेहके पहिले खमासणसें उहीपमिलेहणसंदिस्साएमि, दूसरी खमासण देके उहीपमिलेहणाकरूं, पीछे मुहपत्ती पमिलेहके गुरूकूं ब्व वंदन देवे पीछे गुरु कहे-पवेयणं पवेयह, उपधानवाही कहे, इच्छाए अमुक उपधान निमित्तं निरुंद्दंवातवंकरावेह. गुरु कहे उपवासे आंबले निरूवेति एकाशणे, एसा कहे. पीछे दश खमासणसें अनुक्रमसें कहे-बहुवेलंसंदिस्सावेमि १, बहुवेलंकरेमि २, वइसणं संदिसावेमि ३, वइसणं गएमि ४, सज्झायंसं देस्साएमि ५, सज्झायंकरेमि ६, पांगरणोसंदिसाउं ७, पांगरणोपमिग्गहूं ८, कट्ठासणोसंदिस्साउं ९, कट्ठासणोपमिग्गहूं १०. पीछे मुहपत्ती पमिलेहके दो वांदणा देवे. गुरू कहे सुखतप, उपधानवाही कहे, तुमारे प्रसाद ॥ इति प्रभात विधि ॥ अब तीसरे पहरकी पमिलेहणा उये वाद स्थापनाके आगे मालकणीके हुकमसें इरियावही पमिकमके पहले खमासणसें पमिलेहण करूं १, दूसरी खमासणसें पोसहसाला प्रमाजुं २. एसा कहके मुहपत्ती पमिलेहे, एसें दो खमासण देणेपूर्वक अंग पमिलेहणा उर मुहपत्ती पमिलेहे. इहां अंग शब्द करके

कटिपट्ट ( अर्थात् कणदोरा जाणना ) एसा गीतार्थ कहते हैं. पीछे वसति प्रमार्जकर तहां जो उसही दिन भोजन कीया होय तब तो पहरे वस्त्र पमिलेहे, बाकीके अवशेष वस्त्र नहीं पमिलेहे, जो उस दिन उपवास होय तब तो एकभी वस्त्र नहीं पमिलेहे. पीछें गुरु पास आयके इरियावही पमिक्कमके पमिलेहणा १, अंगपमिलेहणा २, फेर गुरुके सामने करे. पीछे सिझायसंदिस्साएमि सिझायंकरेमि आठ नवकार गुणे. पीछे मुहपत्ती पमिलेहके छव वांदणा देवै. पीछे त्रिविहार अथवा चोविहारका पच्चरकाण कर दस खमासण अनुक्रमसें इस मुजब देवे—उहीपमिलेहणसंदिस्साउं १, उही पमिलेहणाकरुं २, सिझायसंदिस्साउं ३, सिझायकरुं ४, बइसणों संदिस्साउं ५, बैसणोगाउं ६, कडासणोसंदिस्साउं ७, कडासणोपमिग्गहुं ८, पांगरणोसंदिस्साउं ए, पांगरणोपमिग्गहुं १०. पीछे मुहपत्ती पमिलेहके दो वांदणा देकर सुखतप पूछै, पीछे सर्वोपगरण पमिलेहे, मातृका ( पालसिया ) प्रमुख पमिलेहै, तथा जिस दिन भोजन करै उस दिन पूण पहरकी पमिलेहणकी वखत थाली कटोरादिक सर्व उपभोगके पात्रादिक पमिलेहै, उपवासके दिन नहीं पमिलेहे ॥ इति तीसरे प्रहर क्रिया विधि ॥ तथा पाखीपमिकमणमें असिझाइका काउसग्ग नही करे तो आवती पखी तक सर्व सिद्धांतकी असिझाई होय, इरियावहीका पाठ भी गुणणा नही सूझै. इस वास्ते असिझाईमें भी असिझाईका काउसग्ग करणा. युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराजनें महोपाध्याय श्रीसागरचंदगणिकूं पुछा तब एसाही जबाब दिया योगारंभकी यह विधी है ॥ इहां चउमासीमें योगारंभमें वर्षकी महीनेकी शुद्धिका मुहुर्त्त नहि देखणा, दिन शुद्ध देखणा ॥ मृडुधुवचरक्षिपेः । वारेभोमें शनिंविना ॥ आद्यादनंतपोनंद्या । लोचनादिशुभं२ ॥ १ ॥ इति

आचारदिन करे ॥

॥ अथ उपधान तप विवरन गाथा ॥

॥ श्रीमुहपत्तीपन्नासं । अठारसआसणम्मिपमिलेहा ॥ दंमे पत्तेसोलस । कप्पेपणवीसगोअमा ॥ १ ॥ पणवीसचोलपट्टे । गुरु कंबलतहयचेवसंथारे ॥ कठासणेअठारस । जपेइंमेअपंचेव ॥२॥ इति॥ प्रतिलेखणा विचारः ॥ पणनववासायाम । अठयंकुणइअठमंअंते ॥ नवकारनवद्दाणं । इत्तियमित्तंइरियाए ॥ १ ॥ सक्कत्थयंमितइएगं । अठमंअंबिलाणवत्तीसं ॥ अरिहंतचेइथत्रए । चनत्थमायामतिअगं च ॥ २ ॥ चनवीसत्रएमठम । मेगंपणवीसहुंतिआयामा ॥ नाण थयंमिचनठं । आयामापंचनवहाणं ॥ ३ ॥ चनवीसंनववासा । ए गासीअंबिलाणसवंगं ॥ पंचोत्तरंचपोसहसय । मुवहाणेसुजाणेसु ॥ ४ ॥ बारसबारसएगो, पणवीसअद्धइपाणपन्नरस ॥ अठयनववासा । सवंगंसठचनसठी ॥५॥ नवकारसहियपोरसी । पुरमठअवठएग ठ्ठंतेहिं ॥ इगठाणयनिविगई । विलेहिंअठंविलेणंच ॥ ६ ॥ पणया लाचनवीसं । सोलसचनशहिअठहिकमेणं ॥ चनश्ठहियएगेणय । आयरणाइदोइनववासे ॥७॥ इति उपधान तपोगाथाविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ ऋषिमंडल मंडल पूजा लिख्यते ॥

॥ प्रथम २४ तीर्थंकरोंके नामकी चिठियां लिखके बीच मंडलमें २४ कोठेमें धरे. इति चतुर्विंशति तीर्थंकराः ह्रैंनमः १ ॐनमः बबबबबबबबबबबबबब १, बबबबबबबबबबबबब २, बबबबबबबबबबबबबब ३, बबबबबबबबबबबबबब ४, ॐ ह्रैं अर्हद्भ्योनमः ॐ ह्रैंसिद्धेभ्योनमः ॐह्रैंआचार्येभ्योनमः ॐह्रैंउपाध्यायेभ्योनमः ॐह्रैंसर्वसाधुभ्योनमः ॐह्रैंज्ञानेभ्योनमः ॐह्रैंदर्शनेभ्योनमः ॐह्रः चारित्रेभ्योनमः ॥ इति प्रथम वलय १॥ दूसरी वलयमें दश दिग-पालोंके नामकी दस चिठी दश कोठेमें धरे॥ इति द्वितिय वलय २॥

तीसरी वलयमें नव ग्रहोके नामकी नव कोठेमें नव चिठियां ॥ इति तृतिय वलय ॥ इसके उपरांत अकारादिक सोले स्वर ककारादिक तेतीस वर्ण इंद्रभूति आदि इग्यारे गणधरोके नाम ॐह्रीं युक्त लिखे. पीछे अरुतालीश लब्धिपद ॐह्रीअर्हं एसा आदिमें देकर लिखे ॥ अरुतालीश लब्धिपदोंके नाम नवपद मंडलपूजामें लिखे हे उस मुजब लिखे. पीछे चोवीस तीर्थंकरोके पिता ॐनाभयेनमः १ इत्यादि लिखे. पीछे ॐमरुदेवायैनमः इत्यादि चोवीस तीर्थंकरोके माताका नाम लिखे ॥ पीछे ॐह्रियैनमः १, ॐश्रियैनमः २, ॐधृत्यै नमः३, ॐलक्ष्म्यैनमः ४, ॐगोर्यैनमः ५, ॐचंड्यैनमः६, ॐसरस्वत्यैनमः ७, ॐजयायैनमः ८, ॐअंबायैनमः ९, ॐविजयायैनमः १०, ॐक्लिन्नायैनमः ११, ॐअजितायैनमः १२, ॐनित्यायैनमः १३, ॐमदद्रवायैनमः १४, ॐकामांगायनमः १५, ॐकामबाणायैनमः १६, ॐसानंदायनमः १७, ॐनंदमालियैनमः १८, ॐमायायैनमः १९, ॐमायावित्यैनमः २०, ॐरौद्र्यैनमः २१, ॐकालायैनमः २२, ॐकाल्यैनमः २३, ॐकालप्रियायैनमः २४. एसें श्रीदेव्यादि चोवीसोके २४ कोठेमें नाम लिखे. इसके बाद २४ यक्ष और २४ यक्षणीका नाम लिखे. १६ विद्यादेवीका नामकी स्थापना लिखे, पीछे नव निधानोके नाम लिखे, फेर चोसठ इंद्रोके नाम लिखे. पहली वीशस्थानक मंडलपूजामें लिखा हे उस मुजब. इस मुजब लिखके अष्ट सिद्धिका नाम लिखे ॐअणिमसिद्ध्येनमः १, ॐगरिमसिद्ध्ये नमः २, ॐलघिमसिद्धियैनमः ३, ॐप्राकाम्यसिद्ध्येनमः ४, ॐमहिमसिद्धियैनमः ५, ॐईसित्वसिद्ध्येनमः ६, ॐविसित्वसिद्ध्येनमः ७, ॐप्राप्तसिद्ध्यैनमः ८, इति अष्ट सिद्धिः नामानि ॥ ॐश्रीधरणेंद्रेरक्षतुः १, श्रीपद्मावतीरक्षतु २, श्रीगौतमस्वामिनेनमः ३, श्रीवैरोट्यारक्षतु ४. इति श्रीऋषिमंडल पूजन विधि संपूर्ण. इण पदोंमें

अथ नवपदमंगल वीस स्थानक मंगलपूजा मुजब चढावै ॥

॥ अथ शांतिक पूजाविधि सर्व उपद्रव शांत्यर्थ लिख्यते ॥

॥ शुभ दिन शुभ मुहुर्त्तमें जिनमंदिरमें समवसरण पर जिनप्रतिमा स्थापन करावैं, आगे पंचपरमेष्टीपट्ट स्थापन करैं तथा भगवनाके दक्षिण पासे दश दिग्पालपट्ट उर वांये पासें नव ग्रह का पट्ट स्थापन करै, पीछे एक वडा एक छोटा मट्टीआदिकका हंडा ऊपर खडी सपेदमट्टी पोतके चार२ केसर कुंकूका साथिया करै, पीछै ऊंची नीची दोय टिवडी काठकी धरावै, नीची टिवची पर मोटा हंडा धरै, ऊंची पर छोटा हंडा धरै, छोटे हंडेके तले एक छिद्र करैं, दोनुं मटकाके अंदर साथिया करै, वडे मटकेकी टिवची नीचे चावलका साथिया करै, ऊपर नालेर रुपिया थापनाका धरै, दोनुं मटका ऊपर मोलीसूत्र वटके पंचरंगी खजली एकेक खूणे २१ इक्कीस२ पोकर च्यारों कोणोंमें ८४ खजली पोके तणी बांधे, नालेरके आकार मोलीसूत्रको दडो नीचला मोटा हंडामें लटकतो रखके ऊपरकी मोली छोटा हंडाके छिद्रमें पोकर ऊपर जो चौं खूणी तणी वांधीहै जिसके बीचमें गांठ देवे, पीछे जो संघ समुदायकी तरफसें शांतिक पूजा होय तो मंदिरजीका कलश लेवै उर एक जणेकी तरफसें होय तो शांति कराणेवालेके घरसे-ती सधवस्त्री जिसका माता पिता सासू सासरा चारों मावित्र जीता होय, जिस स्त्रीकुं अछा वस्त्र आभूषण पहिरायके कलसके अंदर कुंकूमकेसरका साथिया करके चावल सुपारी पंचरत्न की पोटली धरके मुख पर नारेल ढकणे माफक खडा धरके ऊपर लाल कसुंमल वस्त्र मोलीसें बांधे, ऊपर कलशके च्यारों तरफ च्यार साथिया कर स्त्रीके मस्तक पर रखके गीत गानपूर्वक वाजित्रादि अनेक उछव समेत जिनमंदिरमें लावे, समवसरणके स-

मुख चावलोंका साथिया करके ऊपर कलश स्थापन करै, पीछै पाच दश जणा द्रव्ये जर जावे अपणा अंग शुद्ध करै, गुरुके पास से केसर मंत्रायके तिलक करै. इत्यादि सर्व विधी इहांसे आगे नव ग्रह दश दिग्पालका आह्वान अगारे स्तुतिसे देववंदन वगेरे करे सो सब विधि पूर्वै लिखी हे, सो सब करके बलबाकुल सब देके पीछै सुंदर अंगोपांगवाले सुशील स्त्रीपुत्रादि संयुक्त विवेकगुणधारक आठ स्नात्रिया मुखकोश बांधके तीन२ नवकार गुणे, जिसमें दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनुं तरफ खमा रहै, एक स्नात्रिया धूप खेवता रहै, १ स्नात्रिया फूल चंदन वासक्षेप चढाता रहै, दो स्नात्रिया लोटोंमें जल जरके दोनुं तरफ धारा देणेवाले कलशोंको पूरता रहै, दो जणे दोनुं तरफ चमर डुलता रहै. प्रथम गुरु आदि सकल संघ सात२ नवकार गुणे, स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवै, एसैं सात धारा दे चूके तब गुरु मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसें नमोर्हत्सिद्धाचा० कहके अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें. पीछै जक्तामर बम्हीशांति मोटीशांति गुणें, तथा सकल संघमें जिसको साते स्मरण वृद्धशांती आती होय तब तो गुरुके संग अपणे मनमे गुणता रहै, जर नहि आवे तो संघ सर्व नवकारमंत्र गुणता रहै, जहां तक साते स्मरण शांति गुणे तहां तक अखंम ऊपरले मोटे कलशोंसे धारा देता रहै, छींक कोई नही करै, आपसमे डुसरी संसारी विकथा न करे, साते स्मरणादि सर्व गुणे पीछै तीन नवकार गुणके कलस धरे, पीछे नीचेके हंमेमेसे जिनप्रतिमाकूं निकालके अच्छी तरे अंगलूहणा करके केशर पुष्पादिकसें पूजा करै, जगवानकी अच्छी तरे अंगी रचना करै, नानाप्रकारका नैवद्य फल चढाके आरती ऊतारै, मंगलदीपक करै. पीछै शांतिजल सर्व संघ लगावें,

अपणे घरोंमें छाटे, शांतिपूजाकी मोली गुरूके पाससे लेके राखमी बांधे. इससें संपूर्ण संघमें नगरमें देशमें मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांतिक होय, अनेक प्रकारसें ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकी प्राप्ति होय. पीछे आधा बलबाकुल परातमें रक्खा था सो लेके गुरु पूर्वोक्त स्नात्रियोंसें दश दिग्पाल विसर्जन विधि पूर्वे लिखी हे उस मंत्रोंसें विसर्जन करे॥ इति शांतिक पूजा विधि सं०

॥ अथ पंच तीर्थ आरती लिख्यते ॥

॥ पहली आरती प्रथम जिणंदा, सत्रुंजय मंडण ऋषभ जिणंदा ॥ जय२ आरती आदि जिनंदकी ॥ डुसरी आरती मरुदेवीनंदा, जुगला धरम निवार करंदा ॥ ज० १ ॥ तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे, रत्नसिंघासण म्हारा प्रभुजीने सोहे ॥ ज० ॥ चोथी आरती नित्य नई पूजा, देव ऋषभदेव अवर न दूजा ॥ ज० २ ॥ पंचमी आरती प्रभुजीने भावे, प्रभुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ ॥ ज० ३ ॥ आरति कीजै प्रभु शांतिजिनंदकी, मृग लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ जय२ आरति शांति तुमारी ॥ विश्वशेन अचिराजीको नंदा, शांतिजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ ज० ४ ॥ आरति कीजै प्रभु नेमजिनंदकी, शंख लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० समुद्रविजय शिवादेवीकों नंदा, नेमिजिणंद मुख पूनमचंदा॥ आ० ५ ॥ आरति कीजै प्रभु पाशजिणंदकी, फणिंद लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वशेन वामाजीके नंदा, पाशजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिनंदकी, सिंह लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धारथ त्रिसलाकों नंदा, वीरजिणंद मुख पूनमचंदा॥ आ० ७॥ आरति कीजे चोवीश जिनंदकी, चोवीस जिणंदकीमें जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ चरण कमल नित सेवित इंदा, चोवीश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ८ ॥

करजोमी सेवक इम बोले, नहि कोइ माहरा प्रज्जुजीने तोले ॥ इति॥

॥ अथ चक्रेश्वरीदेवी आरती लिख्यते ॥

॥ जय२ आरती देवी तुमारी, नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी ॥ ज० १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्केसरी जग सौ-ख्याली ॥ ज० २ ॥ सुविहित गछनी शासनदेवी, सकल संघने सुख करेवी ॥ ज० ३ ॥ निलवट टीलमी रत्न विराजै, काने कुंम ल दोय रवि शसि गाजै ॥ ज० ४ ॥ बांहे बाजूबंध वोरखा सोहे, नीलवर्ण सहु जनमन मोहे ॥ ज० ५ ॥ सोवनमय नित्य चूमी खलके, पाये घूघरमा घमघमघमके ॥ ज० ६ ॥ वाहन गरुम चढ्या बहु प्रेमे, तुऊ गुण पार न पामु केमे ॥ ज० ७ ॥ चूनमी जमामां देह अति दीपे, नवसरा हारे जग सहू जीपे ॥ ज० ८ ॥ नित२ मानी आरती ऊतारे, रोग सोग ज्ञय दूर निवारे ॥ ज० ९ ॥ तसु घर पूत्र पुत्रादिक गाजै, मन वंछित सुख संपद राजे ॥ ज० १०॥ देवचंद मुनि आरति गावे, जय२ मंगल नित्य वधावै॥ज०११॥इति।

॥ अथ चोपड खेलण विचार स्तवन ॥

॥ राग सोरठी ॥ अरे माहरा प्राणीया, चतुरनर, चोपम इण विध खेल रे ॥ अशुज्ञ करम मल ऊरकै च० ॥ जाजम कर वैराग रे, वमीय विछायत वेस जो च० ॥ जहां नहीं कुमतिको लाग रे॥ अरे० १ ॥ दान शील तप ज्ञावना च०, चोपम एह पसार रे ॥ आठ दाव इक बोलमें च०, आठुंइ करम निवार रे ॥ अरे० २ ॥ देव गुरु धर्म तीनूं ज्ञला च०, पाशा एही जाण रे ॥ अवसर कर हाथे लिया च०, ऊजल लेश्या आण रे ॥ अ० ३ ॥ दरसण ज्ञान चारित्र ज्ञला च०, तीनुंइ गुपती विचार रे ॥ नव तत्व सात हिरदे घरो च०, ए सब सोला सार रे ॥ अरे० ४ ॥ पम्या अगारे रहण दे च०, पोबारा व्रत भार रे ॥ दश लक्षण दश धरम है च०, हित

कर हिये विचार रे ॥ अ० ५ ॥ षट् काया ठकमी पमी च०, हिर॰दे दया विचार रे ॥ पुन्य उदय पंजमी पमी च०, पंच महाव्रत धार रे ॥ अ० ६ ॥ च्यार तीन काया पड्या च०, सातुंइ विसन निवार रे ॥ जे डुरगति दायक सही च०, बाधे अनंत संसार रे ॥ अ० ७ ॥ चिहुं गति बाजी लग रही च०, डुख सह्या जरपूर रे ॥ करम कटै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ०८॥इति

॥ अथ सेत्रुंज खेलन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सेत्रुंज खेल खिलारी, सब समऊ देख सेत्रुंजकी घात, लख दोनुं दल अपणे परायेकी जात ॥ काल विध कर मोह बाद॰ स्याकों मात, जब जाणु तोय चतुर खेल खिलार ॥ हे से० १ ॥ आठुं कर्म पियादे आगे ऊकतेही आवै, काम क्रोध गज चलत थंज्ञ स नहीं थंज्ञे ॥ लोज्ञ ऊंठ चारुं खूटकी मरोम चल ध्यावै, मान माया के तुरंग चाल चपल दिखावै ॥ मिथ्यामत सो वजीर वीर वाके ढंग गामो, वाके मारवैकों दल अपणो संज्ञार ॥ हे से० २ ॥ तेरे ग्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग गामो, आगें अंग समकित के पियादे हलकारो ॥ त्याग सांढिया सवार पर सांढियाको मारो, सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग निवारो ॥ क्षमा शील दोय फील राखो दलके अगामी, पर दल कर मारो जिनमें संहार ॥ हे से० ३॥ जप तप सत व्रत याके घेरे चिहुं उर, जब वाके चल॰नेकी काइ रहै नही ठोर ॥ जब तेरी होगी जीत दूजो हारेगो खिलारी, जब सुजशको तेरै शिर बंधेगो मोम, गमे इंद्र धरणेंद्र तेरे ढोलेंगें चवर, तेरो जजन जजेगो गुण अगाह ॥ हे से० ४ ॥ इति सेत्रुंज खेलन ज्ञान संपूर्ण ॥

॥ अथ प्राचीन राग रागणी स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग कल्याण॥ टुक निजर महरदी करणा हो, टु० ॥ मैं

हुं अधम पापकी मूरत, मेरा दोस न धरणा हो ॥ टु० १ ॥ अ- ष्ट ज्ञवनकी प्रीत हमारी, नवमे ज्ञव निरवाहना हो ॥ टु० ॥२ ॥ रूपचंद ज्ञगतनकी वीनती, आवागमन निवारणा हो ॥ टु० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥ लोक चवदके पार किनारे, पूरण ब्रह्म- का वासा हे ॥ लो० ॥ पैंतालीस लाख जोजनकी शिल्ला, फिटक रतन उजासा हे ॥ लो० ॥ निरमल जोत विराजे साहिब, ग्यान ध्यान परकासा हे ॥ लो० १ पंच वरणकी धजा फरूके, क्या कहूं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, उरनकी क्या आसा हे ॥ लो० २ ॥ चोसठ इंद्र ख- म्हे वाके द्वारे, खिजमत वंदा खासा हे ॥ रूपचंद कहे नाथ निरं जन, चरणकमलका दासा हे ॥ लो० ३॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥ सखि सब बनठन, सखी० ठाढे नान्नि नृपतजूके द्वारे आगे ॥ स० ॥ रिषज्ञकुमरको जनम ज्ञयो हे, मंगल मुख्क उच्चारै री ॥ स० १ ॥ ताल मृदंग रबाब मधुरी धुनि, वीणा वाजे सुर तारे ॥ नाचत हा व ज्ञाव करी राजत, तान लेत सुर तारे री ॥ स० २॥ सुरवनिता मिल गाई वधाई, मोतियन चोक सवारे ॥ जगबंधव जगपतिकुं निर खत, आनंद हर्ख अपारे री ॥ स० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः हो जिन तेंम्हे दरस पर वारीया, हो जि० ॥ तुम विन ज्ञव२में ज्ञटकंदा, अब मेंम्ही उर निहारिया ॥ हो० १ ॥ अष्ट करम मेंम्हे लार लगे हैं, उनकूं वेग विमारियां ॥ चरण सरण गहे आणा तु साढे, रूपचंद गुणगारियां ॥ हो० २ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥ म्हारा रिषज्ञ जिनंदने गजरो चढाऊं रे, म्हा० ॥ चंवेली चंपा गु लाब लाउं रे ॥ जाइ जूई मोगरो मालती, विध गुंथाऊं रे ॥ म्हा० १ ॥ अगर चंदन अक्षत नैवेद्य लाऊं रे ॥ धूप दीप फल सुगंध पु ण्य पाउं रे ॥ म्हा० २ ॥ इष्ट दरव आदिनाथ ज्ञाव ज्ञावुं रे ॥

ऋषभदास पूरो आस गुण गाऊं रे ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मन लीनो हमारो जिनचरणा रे, पोत जलधि भवतरणा रे ॥ म० ॥ आदि पुरुष जगतारण निसुणयो, कर्म विकट घन हरणा रे ॥ म० १ ॥ नाभि तात मरुदेवी माता, नंद ऋषभ सुखकरणा रे ॥ म० २ ॥ सिद्धपादिक प्रगटन जग तत्पर, कुमतांगन दल टरनां रे ॥ म० ३ ॥ सारंग दृग शशि वदन मनोहर, अंग कनक सम वरणा रे ॥ म० ४ ॥ श्रीजिनहंस सूरीश्वर जंपै, जिन समरण दिल धरणा रे ॥ म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग झिंझोटी ॥ २ ॥ ॥ अजित अजित जिन ध्यान, म्हारे मन रे अ० ॥ जितशत्रु विजयाको नंदन रे, वंदन त्रय युत ज्ञान ॥ म्हारे० १ ॥ त्रिहुं जग तारन टारन अघको रे, वारुं तन धन ज्यान ॥ म्हा० अ० २ ॥ जिन वचनामृत पान करीजै रे, केवल निरमल ग्यान ॥ म्हा० अ० ३ ॥ श्रीजिनहंस सूरि प्रभु पाए रे, निवृत्ति पुरंदर म्यान ॥ म्हा० अ० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यह अरजी मोरी सहियां, मोहे तारजो गहवहिया ॥ य० ॥ मैं नांहि जाणूं सहियां, य० ॥ मैं तारण तरण सुणयो छै, मैं यातें शरणो गहियां, इनतें उवार लहियां ॥ य० मो० १ ॥ इन करमनके वश हुयकै, मैं भटक्यो चिहुं गति महियां ॥ य० मो० २ ॥ हित करकै दाश निहारे, करजोमि पमि हुं पइयां, शिव देति क्युं न सहियां ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ रागकाफी ॥ मुजरो मानी लीजै, हो गोमीराय अरज सुणीने, म्हारो मु० ॥ किरपा काज करी सेवगनें, दिलभर दरशण दीजै ॥ हो गो० १ ॥ गुणनिध गवमी दरसण दीजै, सकल करम दल छीजै ॥ हो गो० २ ॥ रूपविबुधको मोहन पभणे, प्रहऊगी प्रणमीजे ॥ हो गो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तु मेंमा प्रभु इण दिल

वसणावे, तेंमा तो गुण सुर गावंदा हो ॥ प्र० १ ॥ संतके सागर गुणके आगर, जोही ध्यावे सो पावंदा हो ॥ प्र० २ ॥ तुमहो तत्वज्ञानके दाता, भविजन ताप मिटावंदा हो ॥ प्र० ३ ॥ कहै जिनचंद एसे प्रभु मेरे, चरणकमल चित्त ध्यावंदा हो ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हम जाणतहैं तुम तारोगे, हम० ॥ नाभिराय मरुदेवीकों नंदन, मेरी उर निहारोगे ॥ हम० १ ॥ आदि जिनेसर अंतरजामी, स्वामी कबु न विचारोगे ॥ हम० २॥ जगजीवन जगतारक तुमहो, एही विरुद संभारोगे ॥ हम० ३ ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरिंदके साहिब, भवजल पार उतारोगे ॥ ह० ४ ॥ इति पदं॥ पुनः ॥ पंथीमा पंथ चलेगो, प्रभु भजले दिन चार ॥ पं० ॥ झूठी काया झूठी माया, झूठो सब परवार ॥ पं० १ ॥ बालपणेमें खेल गमायो, जोवन मायाजाल ॥ पं० २ ॥ वृढापण आयो धरम न पायो, पीछै करत पुकार ॥ पं० ३ ॥ क्या ले आयो क्या ले जायगो, पाप पुण्य दोय लार ॥ पं० ४ ॥ दया मया कर पासएवंती, अब तेरोही आधार ॥ पं० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तेवीशमा जिनराज, जोमे थांरे कोण जुझेगो ॥ ते० ॥ अश्वशेन तात वामादेवी माता, तूं तारण संसार ॥ जो० १ ॥ कमठ विभारण नागकूं तारण, संभलायो नवकार ॥ जो० २ ॥ विबुद्ध कुशल करजोमीने वीनवैं, भव२ देज्यो दीदार ॥ जो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खंभायची ॥ कैसें काज सरै, महाराजा विन, केसें० ॥ भ्रमत२ लख चौरासीमें, सुख दुःखसें जीया रुलत फिरै ॥ म० केसें० १ ॥ ए रिपु कर्म वैरी भटकावत, जाहीसें मेरो प्राण मरै ॥ म० केसें० २ ॥ जो जीव सुखकी वांछा चाहै, प्रभु सेव्यांसें काज सरै ॥ म० केसें० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः राजरी वधाई वाजै छै, महा० ॥ सरणाई सिरै नोवत वाजै, घन ज्यूं अंबर गाजै

है ॥ म्हा० १ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावै, मोतियन चौक पुरावै है ॥ म्हा० २ ॥ सेवग प्रभुजीसैं अरज करै है, चरणारी सेवा प्यारी लागे है ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग अडाणो १ ॥ मोतनकी माला जिन गल सोहे, मोति० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, कुंडल लागत वाला ॥ ॥ जि० १ ॥ भजोरी भजो तुम लोक सहरके, नहिय भजै सो काला, माणक पर प्रभु महिर करो तो, अपणा विरुद संभाला ॥ जि० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ रहे तुम आज क्यूं जीवन डुराय, रहे० ॥ जीय जीवन सखियन में प्यारी, हारी हा हा खाय ॥ र० १ ॥ अविरत घूंघट पट उघारी, अनुभव मुख निरखाय ॥ र० २ ॥ भव परणित परिपाक इतै पर, आई धाई माय ॥ र० ३ ॥ अति आग्रह सव ग्यानसारकूं, जीवन कंठ लगाय ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः हे माय वांकभी करमगति जाय ना कही, चिंतत और वनत कछु औरे, होनहार सो होय रही॥ हे माय वां० १ ॥ सकल साज सझियौ व्याहनकूं, राजुलकों तब चाह भई ॥ सुनी नेम गिरनार सिधाए, वदन विलख मुरझाय रही ॥ हे माय वां० २ ॥ सीता सती योंही पतिभ्रगता, जानत सकल मही ॥ झूठो दोस दियो जब रुघपति, पावक कुंडमें धीज दही ॥ हे माय वां० ३ ॥ क्षायक सुदृष्टि श्रेणिकराजा, निज सुत कोणक बंध ठई ॥ सुध बुध विसर गई नरपतकी, आपणकी अपघात लही ॥ हे० वां० ४ ॥ छिनमें रंक छिनकमें राजा, अकल कथा किम जाण कही ॥ उलट पलट वाजी नटसीकी, नवल सरबमें व्याप रही ॥ हे० वां० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हांनु प्यारो लागे है जी थांरो उपदेस, म्हांनु० ॥ ग्यान जगावण उगुण

मेटण, संशयवन रहे न लेस ॥ म्हा० १ ॥ मोह तिमिर डुर्व दूर करणकूं, जगत वधावत हेत ॥ चंद फते नित एही चाहे, समकित सुखको खेत ॥ म्हा० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मेरो पिया पर संग रमत हे, मैं केसे मनाऊं री ॥ मे० ॥ सोतन संग रैन दिन रमतां, मोहि न बुलावै री ॥ मे० १ ॥ हाहा करत सखी पइया परत हूं, कोइ पिया मिलावै री ॥ विरहानल अति डुसह पिया विन, कोन बुझावै री ॥ मे० २ ॥ सुमता संगले अनुभव आयो, सब परठ सुणावै री ॥ ग्यानसार प्यारो दोउं हिलमिल, सोरठ गावैं री ॥ मे० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठमलार ॥ बरषित वचन झरी, हो सुगुरु मेरो, ब० ॥ श्रीश्रुतज्ञान गगनतैं ऊमटी, ग्यानघटा गहरी ॥ हो सुगु० १॥ स्याद्वादनय विजुरी चमकित, देखत कुमति मरी ॥ हो सुगु० ॥ अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न एक घरी ॥ हो सुगु० ॥ २ ॥ श्रद्धा नदी चढी अति जोरे, शुद्ध सुभाव धरी ॥ सुभरभर्यो सुमतारससागर, समकित भूमि हरी ॥ हो सुगु० ३ ॥ प्रगटे पुन्य अंकुरे चिहुं दिस, पाप जवास जरी ॥ चातक मोर पपइया भविजन, बोलत भक्तिभरी ॥ हो सुगु० ४ ॥ दया दान व्रत संजम खेती, भविक कसान करी, हरखचंद सुरनर शिवसुखकी, सहज सद्भाव फली ॥ हो सुगु० ५॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ या घरीमें रंग, बन्यो हे म्हारे ॥ या० ॥ तत्वारथकी चरचा पाई, सा धरमीको संग ॥ ब० या० १ ॥ श्रीजिनराज दयानिध भेटे, हरख भयो अंग अंग ॥ ब० या० २॥ एसी विध भव२ मांहे मिलियो, धर्मप्रसाद अभंग ॥ ब० या० ३ इति पदं ॥

॥ रागमलार चिहुं उर दरिया बरसै, अब घरर घरर घन गरजै ॥ चि० ॥ नेमप्रभु गिरनार सिधाए, देखणकूं जिया त

रसै ॥ चि० १ ॥ दादुर मोर सोर सुण श्रवणें, नयन भए घन ज़रसै ॥ चि० २ ॥ ढूंढत ढुंढ सकल वन२में, कबहुं पिया ना दरसै ॥ चि० ३ ॥ सो दिन सफल जाणेंगें सजनी, दिवस घरी जिन फरसै ॥ चि० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मोरवा पपइया बोले पीउ२ घनमें, नेमपिया रहे सहसावनमें, मो० ॥ निशि अंधियारी कारी विजुरी झरावै, दूजी विरह व्याकुल भई तनमें ॥ मो० १॥ झिरमिर वरषित गरजत दादुर, सोर करत रहे नदियां रनमें ॥ मो० २ ॥ आणंद यह सम देखण चाहे, राजुल भई विरागण छिनमें ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥राग विहाग॥ समझ नर जीवन थोरो, थोरो थोरो थोरो ॥स०॥ पल२ आयु घटत छिन२ही, गलत जात जैसें उरो ॥स० १॥ या तनको कहो कोन भरोसो, छिन मासो छिन तोरो ॥ जो कछु करै सो अबही करलै, पुनपरहो जिम झोरो ॥ स० २ ॥ तन धन आदि सकल सामग्री, गरज२ घनघोरो ॥ रूपचंद त्रसनाको बांध्यो, जानबूझ भयो भोरो ॥ स० ३॥ इति पदं ॥ पुनः॥ मत कर मान गुमान, योवन धन ठगहे ॥ म० ॥ वेलूकी भीत उसको मोती, कोइ घरी कोइ पलहे ॥ यो० म० १ ॥ नदियां गहरी नाव पुराणी, तारणहारा जिनहे ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, आखर जंगल घर हे ॥ यो० म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ निसदिन जोउं थांरी वाटडी, घर आवोनी ढोला ॥ नि० ॥ मुझ सरिखा तुझ लाख है, मेरे तूंही अमोला ॥ नि० १ ॥ जोंहरी मोल करै लालनका, मेरा लाल अमोला ॥ जिसके पटंतर को नही, उसका क्या मोला नि० २ ॥ कोन सुणे किसपें कहूं, किसपें मांडू खोला ॥ तेरे मुख दीठे टलै, मेरे मनका झोला ॥ नि० ३ ॥ मित्त विवेक कहै हितकर तुं, सुमतासु न बो

ला॥ आणंदघन प्रभु आवसी, सेजरूी रंगरोला ॥ नि० ४॥ इति पदम्॥

॥ राग जैवंती ॥ आज तो हमारे भाग, वीरप्रभु आए हें ॥ आ० ॥ चंदना खरूी दुवार, चितसें करै विचार ॥ देखत ही दार हीया, हरख भराये हे ॥ आ० १ ॥ आज मेरी आस फली, अली मेरी रंगरली ॥ विकसी आतम कली, प्रभु पात्र पाए हे ॥ आ० २ ॥ धन दिन आज मेरो, गयो सब कर्म फेरो॥ सुकृत बहु तेरो, भगवान दिल भाए हे ॥ आ० ३॥ सिद्धारथराय नंद, सोहत सरदचंद ॥ कहै जिनचंद चित, आनंद वधाये हे ॥आ० ४॥ इति॥

॥ राग परज ॥ बावरो रे आज मनवो मारो ॥ बा० ॥ आप रंगीला वाकी रंगीली, उर रंगीलो वाको सांवरो रे ॥ आ० १ ॥ आप न आवै वारी न लिख भेजै, प्रीत करणकूं उतावरो रे॥ आ० २॥ आनंदघन पिया निज घर आवै, मिट गयो मोह संतावरो रे ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जंगलो ॥ रूषभ विहारी, थांरी तो छवि न्यारी हो ॥ रू०॥ प्रथम तीर्थंकर प्रथम जिनेसर, प्रथम यती व्रतधारी हो ॥ रू० १ ॥ धनुष पांचसें मान मनोहर, काया कंचन वानी हो ॥ रू० २ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन, वा पर जिया कुरवानी हो० ॥ रू० ३॥ जुगलाधरम निवारण स्वामी, प्रभु भो पर उपगारी हो॥ रू० ४॥ केवल पाय प्रभु मुगति सिधाए, आवागमन निवारी हो ॥ रू० ५ ॥ आनंदघन प्रभु एती वीनती, तुम पर जाउं बलिहारी हो ॥ रू० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सुण मन होनहार न टरै रे, सु० ॥ चित कछु उर विचारत है नर, उरही उर बने रे ॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचै, चिरूिया केसें बचे रे ॥ सु० २॥ होणहार वश रूस्यो हे पारधी, सर सींचाण मरे रे॥ सु० ३ ॥ होत पदारथ भावी भइया, क्यूं जग चाह धरै रे ॥ सु० ४

॥ उदय करम गत देख जगतकी, जिनवर क्युं न भजै रे ॥ सु० ५ इति पदं ॥ पुनः ॥ सहियो री मिल चालो प्रभु पूजन काज, स० ॥ समवसरण विच आप विराजै, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १ श्रेणक भूप चेलणाराणी, भक्ति करत है आज ॥ स० २॥ निज२ द्रव्य लिये पुर के जन, उमंग२ शुभ साज ॥ स० ३ ॥ वे प्रभु दीन दयाल जगतके, हितकर धर्म जिहाज ॥ स० ४॥ इति पदं ॥

॥ राग कहरवो ॥ मनवा जिनंद गुण गाय रे, म० ॥ या जिनजीके दरस सरसतें, दुखदोहग मिट जाय रे ॥ म० १ ॥ सद गुरु वचन परतीत मानले, आतमसुं लय लाय रे ॥ म० २ ॥ भव २में तोकूं सुखदाई, आनंद वंछित पाय रे ॥ म० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चलो देखो री मधुवनको राव, च० ॥ वामानंदन पाश जिनेसर, सिर पर रे वाके चमर ढुराय ॥ च० १ ॥ तारण तरण जिनेसर लखके, भेटै सहु भवि चित सुख पाय ॥ च० २॥ गंगा दरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राखुं रे हमारा घटमें, जिनराज नाम तेरा, हो राखूं रे ह० ॥ जाके प्रभाव मेरा, अज्ञानका अंधेरा, भागा भया उजेरा ॥ हो रा० १ ॥ सूरत तेरी रागे, पेख्या विभाव त्यागे, अध्यात्मरूप जागे ॥ हो० २ ॥ मुद्रा प्रमोदकारी, रूपभे सजू तिहारी, लागत मोहि प्यारी ॥ हो० ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही, हम है अनाथ गुनही, करियै सनाथ हमही ॥ हो० ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखै, जिनहर्ष सूरि भाखै, दिल मांझ याही राखै ॥ हो० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ तेरे दरसको चाह लग्यो, सखी श्यामवरण दिखलाजा रे ॥ ते० ॥ वनमें जाय प्रभु दीक्षा लीनी, हमकूं लार लगाजा रे ॥ ते० १ ॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर,

अब केसैं विसराजा रे ॥ ते० २ ॥ चैनविजै कहै धन२ राजुल, प्रभु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः थांरे मुखकारी हो वारी राज, प्यारी छवी वरणी न जाय ॥ थां० ॥ शीस मुगट सोहै सिर टीको, काने थारे कुंमल सोहाय ॥ थां० १ ॥ मोहनगारी सूरत थांरी, देख्या म्हारो मनमो लोभाय ॥ थां० २ ॥ भरकत नेण भए दोउं निरखत, थांसु प्रभु प्रीतमी लगाय ॥ थां० ३ ॥ भव२ पाशजिनंदजी की सेवा, एसी म्हारे दिलमेंमें चाव ॥ थां० ४ ॥ बाल कहे तुमही प्रभु मेरे, मेरे तुम्हही सुहाय ॥ थां० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी कानमो ॥ एसी विध तेने पाइ रे, कछु करनी करजा ॥ ए० ॥ उत्तम नरभव जैनधर्म रुचि, सुगुरु सेवा सुखदाई रे, जसु पातिक झरजा ॥ ए० १ ॥ हिंसा जूआ झूठ पर तिरिया, परिग्रह मद फल चोरी रे, घट जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥ तप जप शंजम शील दान कर, आनंद सुमति सुहाई रे, भवजल निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ इति पदं ॥

रागकालिंगमो ॥ मोहि अपणो कर जाणो, प्रभुजी मो० ॥ मैं मतिहीण महा हठवादी, सो तुमसें नहि छानो ॥ राग द्वेष अरु मोह महा मद, वाध्यो खोट खजानो ॥ प्र० मो० १ ॥ ए रिपु कर्म पम्यो मुझ केमे, किस विध छूटै पानो ॥ कुमति कदाग्रह मांहि अलूझ्यो, ज्युं मदपान वयानो ॥ प्र० मो० २ ॥ हुं भववाशी तूं सिववासी, जाने सकल जहानो, विरुद लाखीणो साम संभारो, तो हिव किम चित ताणो ॥ प्र० मो० ३ ॥ भक्ति सदाई शिवसुख दाता, संभवनाथ कहाणो ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरिने निज वर, दीजै सुख प्रवानो ॥ प्र० मो० ४ ॥ इति पदं ॥

रागभैरवी ॥ वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमता सखी

मेहरवान भई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवै बोधा पगावै, तेरी सूरत कुरवान भई रे ॥ वी० १ ॥ साशणनायक एही अरज हे, दीजै दरस वमी वैर भई रे ॥ वी० २ ॥ आस दासको पूरण कीजै, चरण सरण लपटाय रही रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विभास ॥ भोर भयो अब जाग बावरे, भो० ॥ कोन पुन्य तें नरभव पायो, क्यूं सूतो अब पाय दाव रे ॥ भो० १ ॥ धन वनिता सुत तात भ्रातकों, मोह मगन ए विकल भाव रे ॥ भो० २ ॥ कोइ न तेरो तूं नही काको, इह संजोग अनाद सुभाव रे ॥ भो० ३॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत, पाइतें बहु पुन्य प्रभाव रे ॥ भो० ४ ॥ ग्यानसार जिन मारग पायो, क्यूं डूबे अब पाय नाव रे ॥ भो० ५ ॥ इति पदं ॥

राग खट॥ जाग रे सब रैन विहाणी, जा०॥ उदयो उदयाचल रविमंडल, पुन्यकाल क्यूं सोवे प्राणी ॥ जा० १ ॥ कमलखंड वन२ विकसानी, अजुअ न तेरी हग उघराणी ॥ जा० २ ॥ चेतन धर्म अनादि तुमारो, जड संगतसें सुध विसराणी ॥ जा० ३ ॥ तुम कुल दोय अवस्था पइयें, नींद सुपन ए जड नीसाणी ॥ जा० ४ आतम रूप संभार आपणो, कब तुमरे घर कुमति घराणी ॥ जा० ५ ॥ सुध वुध भूली निरुपम रूपकी, तातें घट वध होत कहाणी ॥ जा० ६ ॥ निश्चे ग्यान स्वरूप तुमारो, ग्यानसार पद निजर जधानी ॥ जा० ७ ॥ इति पदं ॥

राग वेलाउल ॥ सांवरो सलूणो सखी मेरे मन भावनो, रूप देखाय मेरो मन ललचावणो ॥ सां० ॥ तोरणसें रथ फेर चले पिया, ना जानुं ए काहेको रुसावनो ॥ सां० १॥ नव भव नेह निभाहो नेम तुम, याहीतें कहा वदन डुरावणो ॥ आनंद राजुल याकी प्रीत कपटकी, भयो पीया मुगतसखीको पावनो ॥ सां० २इति

राग ललित ॥ आज ऋषभ घर आवै, देखो माई आ० ॥ रूप मनोहर जगदानंदन, सबहीके मन भावै ॥ दे० १ ॥ केइ मुगता फल माल विसाला, केइ मणि माणक लावै ॥ दे० २ ॥ हय गय रथ पायक केई कन्या, ले प्रभु वेग वधावै ॥ दे० ३ ॥ श्रीश्रेयांस-कुमर दानेसर, इक्षुरस वहिरावै ॥ उत्तमदान अधिक अमृतफल, साधुकीरत गुण गावै ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

रागरामकली ॥ अंगण कलप फल्यो री, हमारे माई अं० ॥ ऋद्धि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक, श्रीशांतिनाथ मिल्यो री ॥ ह० अं० १ ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, मांहे बरास मिल्यो री ॥ पूजत श्रीशांतिनाथजीकी प्रतिमा, अलग उदेग टल्यो री ॥ ह० अं० २ ॥ शरणे राख कृपा कर साहिब, ज्युं पारेवो पल्यो री ॥ समयसुंदर कहै तुमारी कृपासें, डुंरहिसुं सुहलो री ॥ ह० अं० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ ऊठोने मोरा आतमराम, जिनमुख जोवा जइये रे, ऊ० ॥ जिनजीनो दरसण छै अति दोहलो, थे किम सोहीलो जाणो रे ॥ वार२ मानवभव एहवो, भुरूवो मुसकल टाणो रे ॥ ऊ० १ ॥ च्यार दिवशनो चटको मटको, देखीने मत राचो रे ॥ विनसी जातां वार न लागै, कायाघट छै काचो रे ॥ ऊ० २ ॥ अनंत गुणें भरियो हे जिनवर, पूरब पुन्ये पायो रे ॥ एहने देखी दिलमें आणंद, कर तूं सदा सवायो रे ॥ ऊ० ३ ॥ हीरो हाथ अमोलख पायो, मूढपणे मत गमजो रे, सहज सलूणा पाशजिणंदजीसुं, राजी हुय चित रमज्यो रे ॥ ऊ० ४ ॥ मन मानीता मारा चेतन, करजे सुकृत कमाई रे ॥ लाभकहै जिनचंद लहीने, कर तूं सिद्ध वधाई रे ॥ ऊ० ५ ॥ इति

राग केदारो ॥ भज मन नाभिनंदन देव, भ० ॥ ध्यान मुनिजन अघग धारै, सुरनर करत हे सेव ॥ भ० १ ॥ चक्री भू-

पति वंदे सुरपति, वासुदेव बलदेव ॥ नमत ब्रह्मा रुद्र नारद, शेष मणिधर सेव ॥ भ० २ ॥ असरण शरण हे विरुद जाको, भक्ति- वच्छल भेव ॥ राजसिंह प्रभु रुषभ सिर पर, नाथ हे नितमेव ॥ भ० ३ ॥ इति पदं ॥

ताल ठुमरी ॥ आवो नेम रहजावो सदन, हमकों न सं- तावो रे ॥ आ० ॥ ब्याहन आये सजके सजन, पशुवनको सुन देख रुदन ॥ गिरनारी चले निज छांमी वतन, तकसीर वतावो रे ॥ आ० १ ॥ पूनम जेसे चंदवदन, मनमोहन मूरत स्यामवरण ॥ मेरी नीकी लगी भव भवकी लगन, मत छेह दिखावो रे ॥ आ० २ ॥ संयमदूती लागी श्रवण, प्रभुकुं सिखाये नीके भ्रमन ॥ सब झूठे पमेंगें कोलवचन, रथ फेरी न आवो रे ॥ आ० ३ ॥ कपूर कहे प्रभुजीके चरण, राजुल मन वैराग धरण ॥ लेनं दोम नेम जिनजीकी शरण, शिवपुर तो वतावो रे ॥ आ० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः कीरतीबाग मन प्रेम लाग, जिन सूरत प्यारी रे ॥ की० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, सुरपति करत अहोनिशि वंदन ॥ दरसणसें नयणानंद ठरे, गुण केसरक्यारी रे ॥ की० १ ॥ अं- ब कदंब मालती निरमल, चंपक वेल सघन तरु परिमल ॥ वीच भुवन हिय हरख धरे, पारश सुखकारी रे ॥ की० २ ॥ सांवली सूरत अधिक विराजे, वासुपूज्यकी महिमा गाजे ॥ प्रभु अतिशय तन मकरंद झरे, पदकज बलिहारी रे ॥ की० ३ ॥ सुंदर सुभग दरसकूं आवे, निरखश प्रभु सहज स्वभावे ॥ जीव जमी मन प्रे- म धरे, जगपति रुद्रसारी रे ॥ की० ४ ॥ इति पदं ॥

खेमटा ताल दादरा ॥ अधम जग काम भये अगीवान, हे ना निकला मुखसें कभी भगवान ॥ बार नही देखा समोसरणा, किया भवदधिमें ऊदर भरणा ॥ दोम जो लेते प्रभु सरणा, दूर

दुख होते जनम मरणा ॥ बैठ भववरमें लगाया नही ध्यान, राज शिवपुरमें हुवा अपमान, करो अब देख काल भगवान, ना नि० १ ॥ नाम जो जिनके दान देते, आवुं मद तुमसें दूर रेते ॥ यार जो तिनके चरण सेते, शषी सुमताकों तुमें देते ॥ रहे तप जपमें सदा जो सूर, वरे वो भव भव सुख भरपूर ॥ करै कपूर करम चकचूर, देखयां जिन नूर हुवै दुखदूर, करो भवपार सुणो महरवान ॥ ना० २ इति ॥

॥ खेमटा ॥ प्रभु तेरी सूरतिया लागे भली, नेणां हमारी प्रभु तुमसें मिली ॥ प्र० ॥ अनुभव रंग मगन तेरी अखियां, खुल रही सहजानंद कली ॥ ने० प्र० १ ॥ निरमल शांति पदम प्रभु आनन, मुख देखत आफत दूर टली ॥ ने० प्र० २ ॥ अगम अगोचर तेरी महिमा, आप विसंभर अतुल बली ॥ ने० प्र० ३ ॥ मुझकूं आश दीनपति तेरी, उर न चाहूं देव भली ॥ ने० प्र० ४ ॥ लग रही लगन सुधारस कारण, खटक सटक अघ दूर चली ॥ कर सुनिजर प्रतिपाल सुखाकर, श्रीधर नृपके नंद लली ॥ ने० प्र० ५ ॥ गंज अजीम सुवसपुर जिनवर, कुशल जमी रुड़सार फली ने० प्र० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ राग पीलू ॥ आयो सही अब जाउं कहां, शरणागतकों शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तोहू समान मिल्यो नही कोई, ढूंढ फिरयो धरती सब हैरी ॥ आ० १ ॥ होय दयाल महाप्रभुजी अब, आन भई तुमसें भट भेरी ॥ आ० २ ॥ दास कल्याण करै वीनती सुण, पारसनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खांबाज ॥ घमी२ पल२ छिन२ निशदिन, प्रभु कों समरण करले रे ॥ घ० ॥ प्रभु समरण सब पाप कटत है, अशुभ करम सब हरलै रे ॥ घ० १ ॥ मन वच काय लगी चरणन नित ज्ञान हियेमें धरले रे ॥ घ० २ ॥ दौलतराम प्रभु गुण गावै, मन

वंछित फल वरखै रे ॥ घ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ सुमतानें क्या कर मारा रे, जिन मोह्या स्याम हमारा ॥ जि० सु०॥ शखी दोस नही सुमतामें हे, आली अपना नेम एसा ॥ जि० सु० ॥ सुमता शोकण नई हे हमारी, बस किया प्राण पियारा रे ॥ जि० सु० १ ॥ प्रीतकी रीत करी नहीं वालम, छोड चले निरधारा रे ॥ जिन मो० सु० २ ॥ जादव जात कठिन निर मोही, दिल करवतकी धारा रे ॥ जिन मो० सु० ३ ॥ तुम तो नेम तजे हो हमकूं, मैं न तजू पद थांरा रे ॥ जि० सु० ४ ॥ लगन हमारी तोरी नही तूटे, कर बांधी इक तारा रे ॥ जि० सु० ५॥ सब जग जो तुमसे हो जइथै, तो क्यूं चलत संसारा रे ॥ जि० सु० ६ ॥ रूड्सार राजुल प्रनुजीसें, पोहची मुगति मझारा रे ॥ जि० सु० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शिखरगिरि स्तवनं ॥

॥ तुम तो नले विराजो जी, सांवलिया महाराज शिखर पर नले विराजो जी ॥ तेरे घाटे चोकी लागै, श्रावक जाण न पावै ॥ हुकम कियो श्रीपाशजिनेसर, बांह पकड ले जावै ॥ तु० १ ॥ ऊंचा नीचा परवत सोहे, तलै नीलनका वासा ॥ पेंड२ पर सींह दडूके, जिहां लीया तुम वासा ॥ तु० २ ॥ टूंक२ पर धजा विराजै, झालरे झणकारै ॥ झालरे झणकार सेती, वाजा अविचल वाजे ॥ तु० ३ ॥ दूर देशके जात्री आवे, पूजा आण रचावे ॥ अष्ट द्रव्य पूजामें लावै, मन वंछित फल पावै ॥ तु० ४ ॥ सुरनर मुनिवर वंदन आवै, महा परम सुख पावै ॥ चंद खुसाल चरणको सेवक, हरख२ गुण गावे तु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ शिखर गिरिंद्र जुहारो, निज पातिक दूर निवारो रे ॥ नवियां शि० ॥ इण सम तीर्थ न कोई, मैं देखा सहु

जग जोई रे ॥ ज्ञ० १ ॥ वीश जिनेसर आया, इहां मुक्तिपुरी सुख पाया रे ॥ ज्ञ० ॥ कोमाकोमी मुनि सीधा, जिहां अजर अमर पद लीधा रे ॥ ज्ञ० २॥ वीश चरण जिन सोहै, ज्ञविजन चात्रक मन मोहे रे ॥ ज्ञ० ॥ ध्रुवमठ मंदिर गाजै, जिहां पाशप्रज्ञु महाराजै रे ॥ ज्ञ० ३ ॥ पावन तीरथ एहवो, इहां शंसय धरवो न केहवो रे ॥ ज्ञ० ॥ तीर्थ आसातन टालो, ज्ञविजन ब्हरी व्रत पालो रे॥ ज्ञ० ४ ॥ नरज्ञव लाहो लीजै, इण तीरथ महिमा कीजै रे ॥ ज्ञ० सय जगणीस तेतीसे, अगहन सुदि पंचमी दीसे रे ॥ ज्ञ० ५ ॥ दूगम गोत्र सुहावै, ज्ञवि चंदगोविंद गुण गावे रे ॥ ज्ञ० ॥ जात्रा करी मन रंगे, चंद शिखर ज्ञणै अति चंगे रे ॥ ज्ञ० ६ इति पदं॥

पुनः ॥ ( सांवरियां जेसैं वणे जेसे तारो, सां० ॥ इस चालमें) सांवरियामें दीठो दरस तिहारो, मेरी ज्ञव ज्ञय वाधा टारो॥ सां० ॥ अश्वशेननंदन जगवंदन, जगबंधव जग प्यारो॥ नीलवरण द्युति श्री जिनवरकी, वामा जदर अवतारो ॥ सां० १॥ कमठ विमारण शिव सुख कारण, तारण तरण निहारो ॥ अलख अगोचर अगम अरूपी, निर्यामक सत्थवारो ॥ सां० २ ॥ शिखर गिरी मंमण जिनवरजी, अदज्ञुत महिमावारो ॥ कर जोमी दोउं वीनती करतहे, बुधसिंह अरजी धारो ॥ सां० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पावापुरी स्तवनं ॥

( श्रीचिंतामणि पासजी ॥ ए चाल ) ॥ त्रिज्ञुवन नायक वीरजी, दरशण अतहि सुरंग ॥ वधाई प्रज्ञुजी ॥ थारी मोहनी मूरती म्हारो मन लागो राज ॥ मुख बवि चंदनें निरखवा, लगन चकोर अज्ञंग ॥ वधा० १ ॥ सिद्धारथ कुल सेहरो, तेज जलामल ज्ञाण ॥ व० ॥ हृदयकमल विकसायवा, तूं जगजीवन प्राण ॥ व० धा० २ ॥ आस धरी जिनचरणनी, आयो हुं त्रीज्ञुवन नाथ, म-

हिर लहिर कर वगसीये, आनंद निज गुण साथ ॥ व० था० ३ ॥ धन२ वेला जी आजनी, सैंमुख मिलिया हो आप ॥ व० ॥ हूंस घणी कहिवा तणी, वीतक उःख संताप ॥ व० था० ४ ॥ जो नही सुणसो नाथजी, तो तुम विरुद न थाय ॥ व० ॥ जगतवछल जग सहु कहै, ते निरफल किम जाय॥ व० था० ५॥ किरिया जोगे जे तारवुं, तेहमां स्यो उपगार ॥ व० ॥ तो वलिहारी श्री नाथजी, विन आयास उधार ॥ व० था० ६॥ गुनही तारया जी बहु विधे, विबुध कहे तुम नाम ॥व०॥ हूं तो जी अनुचर चरणनो, किम नवि सारो जी काम ॥ व० था० ७॥ अतिशयज्ञानी जी इण अरै, नहि कोइ लब्धि निधान ॥ व० ॥ मोहन मुहासुं मन रमें, के तुम वचन प्रमाण ॥ व० था० ८ ॥ मुझ तन मन मंजूसमें, जतन करूं जगनाथ॥ व०॥ तुम गुणरतननी सूंघमी, प्रेम जमी निज हाथ ॥ व० था० ए ॥ आस फली जात्रा करी, कंचन वरण सुवास ॥ व० ॥ सरवर वीच सुहामणो, जुवन रमण केलास ॥ व० था० १० ॥ पावापुर उगणीशमें, अमृतालीश उदार ॥ व० ॥ कार्तिक दिन निरवाणनो, कुशल निधि ऊहिलार ॥ व० था० ११ इति॥

॥ अथ चंपापुरी स्तवनं ॥

( नैणा सफल जयें, प्रभु दरसण पायो आज ॥ ए चालमें )

निरख हिया हरख जरे, प्रभू वासपूज्य महाराज ॥ नि० ॥ अभिलाषा दरशणतणी रे, परम पदारथ काज ॥ कारण कारज नीपजे रे, आप गरीबनिवाज ॥ नि० १ ॥ मेरु महीतल तोलवा रे, समरथ को नहि हाल ॥ अतुल गुणाकर उपमा रे, जक्त सुधारण काज ॥ नि० २॥ उखजंजन दाता सुण्यो रे, जस कीरत मुख संत॥ अंतर राख्यां नवि बनेरे, तार२ जगवंत ॥ नि० ३ ॥ कल्पवृक्ष पुन्ये लह्यो रे, वंछित पूरण नाथ ॥ जाग्योदय अब माहरो रे, शि

वपुर दायक साथ ॥ नि० ४ ॥ कमल नयण रतना जमी रे, अनु भव आतम तेज ॥ दीजै निजपद दासकूं रे, पलक न कीजै जेज ॥ नि० ५ ॥ नगणिसे अमृतालमें रे, कार्त्तिक सुदि निधि सार ॥ चंपापुर अधिपति मिल्यो रे, सकल संघ जयकार ॥ नि० ६ ॥ कुशल निधान विबुधतणो रे, कली अली जिम लीन॥ रूपसार जिन ध्यानमें रे, अंतरंग गुण चिन ॥ नि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ गोडी पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ राग केरवो ॥ मैं मुख देख्यो गोमी पारसको, मेरो ज नम सफल भयो आज ॥ मैं० ॥ अन्य देवकूं बहुत मैं ध्यायो, तो य न सरयोजी मेरो काज ॥ आजरे मैं० १॥ भव२ भटकत शरणे हुं आयो, अबतो रखोजी मेरी लाज ॥ आजरे मैं० २॥ कमठ हरा वण नागकूं तारण, संभलाव्यो नवकार ॥ आजरे मैं० ३ ॥ रूप चंद कहै नाथ निरंजन, तारण तरण जिहाज ॥ आजरे मैं० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ किरपा करो रे गोमी पाश जिनेसर, तुम स्वामी अंतरजामी ॥ कि० ॥ ऊंचे२ गढ पर पाश विराजै, चारो तरफ ज्ञानी ध्यानी ॥ कि० ॥ नीलवरण तेरा अंग विराजै, वदनोंकी जाउं वलिहारी ॥ कि० २॥ बांहे वाजुबंध वेरखा विराजै, कुंमलकी छवि है न्यारी ॥ कि० ३॥ ढूंढत२ मैं प्रभु पायो, पूरण पदवी अब पाई॥ कि० ४॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, रूपचंद पदवी पाई ॥ कि० इति॥

मुजरा साहिब मुजरा साहिब, साहिब मुजरा मेरा रे ॥ मु० ॥ साहिब सुविध जिनेसर स्वामी, चरण पखालूं तेरा रे ॥ मु० १ ॥ केशर चंदन चरचूं अंगे, फूल चढाउं सेहरा रे ॥ घंट वजाउं अगर उखेवुं, करुं प्रदक्षणा फेरा रे ॥ मु० २ ॥ पंचशब्द वाजित्र वजाउं । नृत्य करुं अधिकेरा रे ॥ रूपचंद गुण गावत हरखित, दास निरंजन तेरा रे ॥ मु० ३ ॥ इति पदं ॥

घंट वाजै घनननननन, इंद्रलोक हरखन्नयो ॥ जनमे वर्द्धमानकुंवर, वीतराग तनननननन ॥ घं० १ ॥ मृदंग ताल गुण विसाल, झलरी नाद झननननन ॥ घं० २ ॥ रूपचंद राग रंग, होत ध्यान मगननननन ॥ घं० ३ ॥ इति पदं ॥ निरंजन सांइआं रे, सांइ मेरा दुकसा मुजरा लै ॥ तुम तीरथके देवता जी, हम केशरदा घोल ॥ कनककचोली हाथमें जी, पूजा करुं रंगरोल ॥ नि० १ ॥ तुम अंबरदा मेहला प्रभु, हम गिरवरदा मोर ॥ रुमझुम२ मेहला वरसे, ठम२ नाचै मोर ॥ नि० २ ॥ हमगुण कालो कोयली जी, प्रभुगुण आंबा मोर ॥ मांजरके परतापसे कांइ, करवा लागी सोर ॥ नी० ३ ॥ तुम हो मोतीयनकी लरी रे, हमगुण झंफा भोर ॥ रूपचंद दिलदार मथाकर, तुम विन देव न ओर ॥ नि० ४ ॥ इति॥

राग कल्याण ॥ एसे सहर विच कोनसा दिवान है ॥ पानीके कोट पवनके कांगरे, दस दरवाजै मंम्ठान है ॥ एसे० १ ॥ पांच इंद्रीके तेवीस तस्कर, नगरकूं करत हेरान हे ॥ एसे० २॥ प्रजा पुकार सुणी जब जाग्यो, चेतनराय सुजाण हे ॥ एसे० ३ ॥ ज्ञान को बाण वचनरस भेदे, हाथमें लाल कबाण हे ॥ एसे० ४ ॥ रूपचंद कहे तेने वारो, दुस्मन मान गुमान हे ॥ एसे० ५ ॥ इति पदं ॥ आय रहो दिल बागमें, सुण प्यारे जिनजी, आ०॥ चुन२ कलिया तोरे चरण चढाउं, गुण अनंता तोरा रागमें ॥ सु० १ ॥ मरुदेवी नंदन आद जिनेश्वर ॥ खेल अनंता तोरा वागमें ॥ सु० २ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, जाउं विकसित वन फागमें ॥ सु० ३ ॥ इति पदं॥ रहो२ रे यादव दोय घड़ियां, दोय घड़ियां रे अब च्यार घड़ियां ॥ र० ॥ प्रेमका प्याला वहोत मसाला, पीवत मधुरी सेलड़ियां ॥ र० १ ॥ हाथसुं हाथ मिलाय दियो सांइ, फुलरा विछाउं सेजड़ियां ॥ र० २ ॥ राजुल छोड़ि चले

गिरनारी, दीपत मोहन वेलडियां ॥ र० ३॥ रूपचंद कहै नाथ नि- रंजन, मुक्तिवधू गुण वेलडियां ॥ र० ४॥ इति पदं ॥ विराजो बंगलामें, विराजो मंदिरमें, प्रभु गोडीचा पारसनाथ ॥ वि० ॥ चुवा२ चंदन और अरगजा, केशरमें गरकाब ॥ वी० १ ॥ शिर सोनेको छत्र विराजै, मोतियडे तपे रे निलाड ॥ वी० २ ॥ भव सागरमें आण पडाहुं, बांह पकड मुझ तार ॥ वी० ३ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, आवागमन निवार ॥ वी० ४ इति पदं ॥

किण देखा हमारा स्वामी, स्वामी अंतरजामी रे ॥ कि० ॥ आठ भवकी प्रीत प्रकाशी, नवमें गया शिवगामी रे ॥ कि० १ ॥ सहसावनकी कुंजगलीनमें, मिले मोहे अंतरजामी रे ॥ कि० २ ॥ आप चलै गिरनारके ऊपर, नारी तारी केवल पामी रे ॥ कि० ३॥ कहे नथू प्रभु नेमनगीनो, कहुंछू आज शिरनामी रे ॥ कि० ४ ॥

राग आसाउरी ॥ अबधू सो जोगी गुरु मेरा, उस पदका करे रे निवेडा ॥ अ० ॥ तरुवर एक मूल विन छाया, विन फूलें फल लागा ॥ शाखा पत्र नही कर उनकूं, अमृत गगने लागा ॥ अ० १ ॥ तरुवर एक पंछी दोउं वेठै, एक गुरु एक चेला ॥ चेलेने जुग चुण२ खाया, गुरु निरंतर खेला ॥ अ० २ ॥ गगनमंडलमें अधविच कूआ, उहां हे अमीका वासा ॥ सुगरा होय सो भर२ पीवै, निगुरा जात पियासा ॥ अ० ३ ॥ गगनमंडलमें गउआ वि आणी, धरती दूध जमाया ॥ माखण था सो विरला पाया, छाछ जगत भरमाया ॥ अ० ४॥ थड विन पत्र पत्र विन तूंबा, विन जीभ्या गुण गाया ॥ गावनवालेका रूप न रेखा, सुगुरु सोही वताया ॥ अ० ५ ॥ आतम अनुभव विन नही जाणे, अंतर ज्योति जगावै ॥ घट अंतर परखै सोही मूरत, आनंघन पद पावै ॥ अ० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ अबधू एसो ज्ञान विचारी, वामें कोण

पुरुष कोण नारी ॥ अ० ॥ ब्रह्मनके घर नाती धोती, जोगीके घर चेली ॥ कलमा पढ२ भई रे तुरकनी, आपही आप इकेली ॥ अ० १ ॥ सुसरो हमारो बालोभोलो, सासू बालकुंवारी ॥ पिऊजी हमारो पोढे पालणे, मैंहुं झुलावनहारी ॥ अ० २ ॥ नहिं हुं परणी नही हूं कुंवारी, पूत्र जणावणहारो ॥ कालीदाढीको में कोइ नही छोड्यो, अजुए हूं बालकुंवारी ॥ अ० ३ ॥ अढीद्वीपमें खाट खुटली, गगन उसीकूं तलाई ॥ धरतीको छेड़ो आभकी पिछोड़ी, तोय न सोड़ भराणी ॥ अ० ४ ॥ गगनमंडलमे गाय वियाणी, वसुधा दूध जमाई ॥ सऊरे सुणो भाई विलोवणा विलोवै, कोइयक अमृत पाई ॥ अ० ५ ॥ नाहिं जाउं सासरीये नहि जाउं पीहरियै, पीयुजीकी सेज बिछाई ॥ आनंदघन कहै सुणो भाई साधो, ज्योतसें ज्योत मिलाई रे ॥ अ० ६॥ इति पदं॥ पुनः॥ हंसा तूं मानसरोवर वासी, वामे झूलो रंग विलासी रे ॥ हं० ॥ नीर अगाध भरयो थो करदम, पसरी वेल जरासी ॥ आंकी वांकी कवहू न सीधी, सब जगकी हे मासी रे ॥ हं० १ ॥ आयो चंडाल भूपके घरमें, रतन गयो ले नासी ॥ नृप पछतावै पर आंगणामें, भटके गया उर काशी रे ॥ हं० २ ॥ हाथी झूठो फैल मचावै, भागो माहावत जासी, दुनियां चढ२ नीचै गिरती, पड़ते ही झालै फासी रे ॥ हं० ३ ॥ बाप आप बेटाके प्यारी, परणावै इक दासी ॥ रुद्धसार इनकूं जब देखै, तबही प्यासी२ रे ॥ हं० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ वेर वेर नहीं आवै, अवसर वेर२ नहीं आवै ॥ ज्युं जाणे त्युं करले भलाई, जनम२ सुख पावै ॥ अ० १ ॥ तन धन जोवन सबही झूठो, प्राण पलकमें जावै ॥ अ० २ ॥ तन छूटे धन कोण कामको, काहेकूं कृपण कहावै ॥ अ० ३॥ जाके दिलमें साच वसत हे, ताकूं झूठ न भावै ॥ अ० ॥ ४ ॥

आनंदघन प्रनु चलत पंथमे, समर समर गुण गावे ॥ अ० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः॥ ये जिनजी के पाये लाग रे, तोने कहिये केतो ॥ ये० ॥ आठोंइ जाम फिरै मदमातो, मोह निंदरियासुं जाग रे॥ तोने० ये० १ ॥ प्रनुजी प्रीतम विन कोइ नही प्रीतम, प्रनुजीनी पूजा घणी माग रे ॥ तो० ये० २ ॥ नवका फेरा वारी करो जिनचंदा, आनंदघन पाये लाग रे ॥ तो० ये० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चितमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो, एती शीख हमारी प्यारे चित्तमें धरो ॥ थोमासा जीवन काज अरे नर, काहेकूं छल परपंच करौ ॥ एती० १ ॥ कूम कपट पर द्रोह करो तुम, अरे नर परनवथी न मरो ॥ एती० २ ॥ चिदानंद जो ए नही मानो तो, जनम मरणके छुःखमें परो ॥ एती० ३ ॥ इति पदं ॥ अवधू निरपक्ष विरला कोई, देख्या जग सब जोई ॥ अ०॥ समरस नाव नला चित्त जाके, थाप उत्थाप न होइ ॥ अविनाशीके घरकी वातां, जाणेगे नर सोइ ॥ अ० १ ॥ राव रंकमें नेद न जाणे, कनक उपल सम लेखे, नारी नागणको नहिं परिचय, तो शिवमंदिर देखे ॥ अ० २ ॥ निंदा स्तुति श्रवणे सुणने, हर्ष शोक नवि आणे ॥ ते जगमे जोगीसर पूरा, नित चढते गुणठाणे ॥ अ० ३ ॥ चंद्र समान सौम्यता जाकी, सायर जेम गंनीरा ॥ अप्रमत्त नारंम परे नित्या, सुरगिरि सम शुचि धीरा ॥ अ० ४॥ पंकज नाम धराय पंकसुं, रहत कमल जिम न्यारा, चिदानंद एसा जन उत्तम, सो साहबका प्यारा ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

राग प्रनाती ॥ चलणा जरूर जाकूं ताकूं केसा सोवणा ॥ च० ॥ नया जब प्रातकाल, माता धवरावे बाल ॥ जगजन करत, सकल मुख धोवणा ॥ च० १ ॥ सुरनीके बंध छुटै, घूघरू नये अपूठे ॥ ग्वालबाल मिलके, विलोवत विलोवणा ॥ च० २ ॥ तज

परमाद जाग, तूं ज्ञी तेरे काज लाग ॥ चिदानंद साथ पाय, वृथा नही खोवणा ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥

कैरवा राग ॥ समक परी, मोहे समक परी, जगमाया अब जुठी ॥ मोहे समक० ॥ काल२ तूं क्या करे मूरख, नही ज्ञरोसा पल एक घरी ॥ ज० स० १ ॥ गाफिल बिनज्ञर नांही रहो तुम, शिर पर घूमें तेरे काल अरी ॥ ज० स० २ ॥ चिदानंद ए वात हमारी प्यारे, जाणो तुम चित मांहे खरी ॥ ज० स० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ ज्ञलांजी मेरो नेम चढ्यो गिरनार, इकेली जानसें मेरो ने० ॥ राजुल कज्ञी अरज करे बै, ज्ञलांजी मेरी अरज सुणो महाराज ॥ इके० १ ॥ तोरण आय चलै रथ फेरी, ज्ञलांजी वांतो पशुवनकी सुणी बै पुकार ॥ इ० २ ॥ सहसावनकी कूंजगलनमें, ज्ञलांजी वांतो महाव्रत धार ॥ इ० ३ ॥ हरखचंद प्रज्ञु राजुल विनवै, ज्ञलांजी मेरो होजो मुक्तिमें वास ॥ इ० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः रसना सफल ज्ञई, मेंतो गुण गावे महाराज ॥ रसना० ॥ परम आनंद प्रगट ज्ञयो मेरो, जब देखे जिनराज ॥ र० १ ॥ अति उज्वल जस सुण जिनजीको, संच्यो सुकृत समाज ॥ र० २ ॥ नाक नमन करतां प्रज्ञुजीकूं, सार्या आतमकाज ॥ र० ३ ॥ पदपंकज प्रज्ञुके फरसतही, दूर गई डुख दाऊ ॥ कहत क्षमाकल्याण सुपाठक, अब मोहि अविचल राज ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग गजल ॥ राजुल पुकारे नेम पिया, एसी क्या करी ॥ मुजें ढोरूके चले हो चूक, हमसें क्या परी ॥ रा० १ ॥ हुई आशकी निराश, उदाशीनता घरी ॥ प्यारा वश नही हमारा, प्रीतम पीरमें परी ॥ रा० २ ॥ हमसें रह्यो न जाय, प्रीतम तुम विना घरी, संयम लीजियें दयाल, दयाधर्म आदरी रा० ३ ॥ निशदिन तुमारा नाम, देने ज्ञानकी ऊरी ॥ मुनि चंद विजय चरण

कमल, चित्तमें धरी ॥ रा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ कोन किसीको मित्त, जगतमें कोन किसीको मित्त ॥ ज० ॥ मात तात उर जात सजनसें, कांइ रहत निचिंत ॥ ज० १ ॥ सबही अपणे स्वारथके है, परमारथ नहि प्रीत ॥ स्वारथ विणसे सगो न होसी, मित्ता मनमें चिंत ॥ ज० २ ॥ उठ चलेगो आप इकेलो, तुंहीसुं सुविदीत ॥ज०॥ को नहीं तेरो तूं नही किसको, एह अनादी रीत ॥ ज० ३ ॥ ताते एक नगवान नजनकी, राखो मनमें नीत ॥ ज० ॥ ग्यानसार कहै एह धन्याश्री, गायो आतमगीत ॥ ज० ४ ॥ इति पदं ॥ आदीसर जिनराज, त्रिनुवनके महाराज, आज हो आयो रे, मैं शरणें प्रनुजी तुम तणे जी ॥ १ ॥ उल्लस्यो ज्ञान अंकूर, प्रगट्यो पुण्य पडूर ॥ आज हो जागो रे, मुऊ मनमें तुम सेवना जी ॥ २ ॥ लगन लगी नरपूर, दोष गये सब दूर ॥ आज हो गेरूं रे, नहीं तुम पद सेवा सुखकरू जी ॥ ३ ॥ नान्निराय कुलचंद, मरुदेवीके नंद ॥ आज हो राखो रे, प्रनु मुऊकूं निज चरणे सदा जी ॥ ४ अमृत धर्म सुजाण ॥ शीश क्षमाकल्याण ॥ आज हो रागे रे, प्रनु आगे आ विनती करे जी ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग केदारो ॥ गोमीगाइयै मन रंग, गो० ॥ एक ध्याने एक ताने, कर केदारो संग ॥ गो० १ जात्र कीजै अमृत पीजै, नीर वहेरी गंग ॥ रोग शोग कलेश नासै, आलस नावै अंग ॥ गो० २ ॥ पोढतां प्रनु नाम लीजै, आणी मन उमरंग ॥ अन्नय तेहने उंघ मांहै, कदिय न होवे चित्त नंग ॥ गो० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ हारे हूं तो मोह्यो रे लाल, जिन मुखमानें मटकै ॥ नयण रसाला ने वयण सुखाला, चित्तडुं लीधुं चटकै ॥ प्रनुजी केरी नक्ति करंता, करमतणो कस तटके ॥ हां० हूं० १ ॥ मुऊ मन

लोन्नी न्नमरतणी पर, जिनगुण कमले अटके ॥ रत्नचिंतामणि मूकी राचे, कहो कुण काचतणे कटके ॥ हारे हूं० २ ॥ ए जिन गुणतां क्रोधादिक सहु, आसपासथी हटके ॥ केवलनाणी बहु सुखदाणी ॥ कुमति कुगतिने पटके ॥ हारे हूं० ३ ॥ ए जिनने जे दिलमां न आणे, ते तो न्नूला न्नटके ॥ न्नाव न्नक्तिसुं लगन करतां वंछित सुखरूं सटके ॥ हारे हूं० ४ ॥ मूरत संन्नव जिनेश्वर केरी, जोतां हियरुं हटके, नित्यलान्न कहे प्रन्नु ए मोटो, गुण गाउं हूं लटके ॥ हारे हूं० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी ॥ प्रन्नुजीसे लागो मेरो नेह सखीरी, अब कैसें कर छूटे री ॥ प्र० ॥ धिग२ जगमें वाको जीयो, अपणा प्रन्नुजीसें रुसे री ॥ प्र० १ ॥ जो कोई प्रन्नुजीसें नेह करेगो, शिवपुरना सुख लहस्ये री ॥ प्र० २॥ सेवाराम प्रन्नु गांठ रेसमकी, लगी प्रीत नही तूटे री ॥ प्र० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ खतरा दुर करना, दु० ॥ एक ध्यान प्रन्नुका धरणा, खतरा दूर करना० दू० ॥ जब लग पांचो निर्मल करणा, तब लग जिन अणुसरणा ॥ खतरा० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया परिहरना, सुमति गुपति चित्त धरना ॥ खत० २ ॥ संवर न्नाव सदा मन धरना, आतम दुरगति हरना ॥ ख० ३ ॥ धण कण कंचनकुं क्या करणा, आखिर इक दिन मरणा ॥ खत० ४ ॥ ज्ञानउद्योत प्रन्नु पाये परना, शिवसुंदरी सुख वरना ॥ खत० ५ ॥ इति पदं ॥

राग रामग्री ॥ रे जीव जिनधर्म कीजीये, धर्मना चार प्रकार ॥ दान शीयल तप न्नावना, जगमें ए तंत सार ॥ रे० १ ॥ वरस दिवसने पारणे, आदीशर सुखकार ॥ इक्षुरस दान वहरावियो, श्रीश्रेयांस कुमार ॥ रे० २ ॥ चंपा बार उघाडिया, चलणी काढ्यो नीर ॥ शतीय सुन्नद्रा जस थयो, शीले सुरगिर धीर ॥

रे० ३ ॥ तप कर काया सोषवी, अरस निरस आहार ॥ वीरजिनंद वखाणियो, धन धन्नो अणगार ॥ रे० ४ ॥ अनित्य भावना भावतो, धरतो निरमल ध्यान ॥ भरत आरीसा भुवनमें, पाम्यो केवलज्ञान ॥ रे० ५ ॥ ए जिनधर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल छांह ॥ समयसुंदर कहे सेवतां, मुगतितणा फल त्यांह ॥ रे० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सोइ२ सारी रैन गमाई, वैरन निद्रा तूं कहांसें आई ॥ सो० ॥ निद्रा कहे मैंतो बाली रे भोली, बमे२ मुनिजनकूं नाखूं रे ढोली ॥ सो० १ ॥ निद्रा कहे मैंतो जनमकी दासी, एक हाथमें मूंकी दुसरे हाथमें फासी ॥ सो० २॥ समयसुंदर कहे सुनो भाइ वनिया, आप मूबै सारी मूब गई दुनिया ॥ सो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चंदाप्रभुजीसें ध्यान रे, मोरी लागी लगनवा॥ चं० ॥ लागी लगनवा छोमी नहि छूटै, जब लग घटमें प्राण रे ॥ मो० १ ॥ दान शीयल तप भावना भावो, जैनधर्म प्रतिपाल रे ॥ मो० २ ॥ हाथ जोमके अरज करत हैं, वंदत सेठ खुस्याल रे ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः

ते शिवपुर गये रहे रे, वारी सकल करम दल खयकर ॥ शि० ॥ अविनाशी अविकार विराजित, परमातम शिवधाम रे ॥ समाधान सरवंग सरूपी, मेरे मन वसे२ रे ॥ शि० १ ॥ शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध हे, वहे अनादि अनंत रे ॥ वीरप्रभुके आगे गौतम, अमृत पद लहे लहे रे ॥ वा० शि० २ ॥ इति पदं ॥

गरबाकी चाल ॥ म्हारे भले रे छगो छैयामो आजनो रे, मैंतो मुखमो दीठो जिनराजनो रे ॥ म्हारे भ० ॥ म्हारे सुत सिद्धारथ महाराजनो रे ॥ जिन लंछन सोहे मृगराजनो रे ॥ म्हा० १ ॥ म्हाने पाणी मिल्यो शिवपाजनो रे, मोने साधन मिल्यो शुभ काजनो रे ॥ म्हा० २ ॥ मारे कल्पवृक्ष फल्यो काजनो रे, म्हारो

मद्दीयल वाध्यो मोटो माजनो रे ॥ म्हा० ३ ॥ जिनलाभ सूरिंद महाराजनो रे, फळ्यो वंछित अनुपम राजनो रे ॥ म्हा० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ धन२ ते दिवाली म्हारे आजनीरे, मेंतो छवि निरखी जिनराजनी रे ॥ धन० ॥ पहरी अंगी अलोकिक जातनी रे, मांहे बूटी दीसे भांत२नी रे ॥ धन० १ ॥ मणि हीरा मुगट-मा जम्था बहु रे, काने कुंमलनी शोभा शी कहुं रे ॥ धन०२॥ मुने किरपा करी ते कहूं कसी रे, मारे वाहले मुझ सामो जोयुं हसी रे ॥ ध० ३ ॥ प्रभु शांति जिनंद हृदये वस्या रे, थई सूर शशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

धन२ आजनो दिन रलियामणो रे, सूरज सोनानो ऊग्यो सो-हामणो रे॥ धन० ॥ वाहणुं वातां प्रभुने चरणे नम्यो रे, जिनराज ते म्हारे मन गम्यो रे ॥ धन० १ ॥ नवग्रह समा थया म्हारे आजथी रे, वली दशा ते श्री जिनराजथी रे ॥ ध० २ ॥ मुख जोतां ते दुख सरवे गयुं रे, वालानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्यूं रे ॥ ध० ३॥ आपी सेवा ते शुद्ध मनथी खरी रे, सूरशशी ऊपेर करुणा करी रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं॥ पुनः॥ म्हारे आज आनंद वधाम णा रे, हुंतो लेउं रे वाहलाजीना भामणा रे ॥ म्हा० ॥ मुंने दास पोतानो जाणियो रे, आथमता ठेकाणे आणियो रे ॥ म्हारे० १॥ आप्युं दरशन ते दुर्लभ देवने रे ॥ मुंने कीधुं तुं रहजे मारी सेव में रे ॥ म्हा० २ ॥ एहवो दीधो भरोसो साचा गुरु रे, प्रभु विना जगत मिथ्या सहू रे ॥ म्हा० ३ ॥ महेर करी ने म्हारा म नमां रम्या रे, सूरशशीने जिनराजजी गम्या रे ॥ म्हा० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सवा लाख टकानी जाये एक घमी, स० ॥ ए संसार जेसा सांभेला, घमपण आया घोमे चढी॥ मांगी तूंगीनें भत्र थरायो, केहनो कंदोरो केहनी कमी ॥ स० १ ॥ साधो भाई

जिनने संभारो, जन्मदशा जिम आवी चढी ॥ कहे लींबो भजे तूं भगवंतने, मोक्ष जवानी यह वात खरी । स० २ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ आवोश्नी प्यारा नेम अम घर आवो रे, तुम जगत वछल जगवंत नाथ स्ये नावो रे ॥ प्रभु केहवी थइ तकसीर कही ने सुणावो रे, इम विन गुनेह दीनानाथ मूंकी न जावो रे ॥ आ० १ ॥ सखी हलधर गिरधर वीर चतुर कहावो रे, मारो रूठो अबी लो कंत कोइ तो मनावो रे ॥ आ० २ ॥ केतो मोती चुगता हंस के लंघन राचे रे, सखी आंबातणी जे रुहाम, आंबलिये न माचे रे, आ० ३ ॥ हूं तो मोही तुझ दीदार नहीं तुझ जोमे रे, इण जग में जोतां कंत कहूं हूं थोमे रे ॥ आ० ४ ॥ जगमें ढीलरिया मिं त ते प्रीत निकामी रे, जे रेसम रंगे गांठ ते मांहे न खामी रे ॥ आ० ५ ॥ बीजा जादव केइ लाल मनमें न भावे रे, जो माहरो साजन होय तो नेम मिलावे रे ॥ आ० ६॥ इम करतां बांधी प्रीत राजुल साची रे, जे नेहनो नावे बेह इक चित राची रे ॥ आ० ७ ॥ इम रूद्धसारनी वाण चित्तमें धरजो रे, प्रभु नेम राजुल सी प्रीत मुगति पद वरज्यो रे ॥ आ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ ऊभो जमुनाके तीर ॥ ए चाल ॥ मनमोहन पारस प्यारा रे, चित चाहे रे दीदार ॥ तन मन हंदा बागमें रे, नैण अनोपम फूल ॥ चंचल चित पल छिन घमी रे, मत मन प्रभुकूं भूल रे, चि० म० १ ॥ स्याम घटा तन शोभता रे, दमक दामनी रंग ॥ जुगवाला इक तूं धणी रे, लागी लगन अभंग रे ॥ चि० २ ॥ अश्वसेन कुल दिनमणी रे, पुरुषोत्तम जयदेव ॥ वेपरवाही वालमा रे, सारुं तुमारी सेवरे ॥ चि० ३ ॥ श्रीफलवधीपुर तिलक ज्यूं रे ॥ आप विराजो नाथ ॥ निगुण दास पर साहिबा रे ॥ हित कर दीजै हाथ रे ॥ चि० ४ ॥ श्रीजि

नचंद शुद्धातमा रे, नंद योग मधुमाश॥ निधि इंदु शित सप्तमी रे, ऋद्धिसार सुख रास रे ॥ चि० ५ ॥ इति पदं ॥ मेरे मन भाव नकी, छवि नीकी जी ॥ मेरे० ॥ चरण कमल चित हितकर चाहुं, लागी लगन गुण गावणकी॥ छ० १॥ सांमली सूरत लटक चटक पर, वरसे घटा जेसें सावणकी॥ छ० २॥ बालपणे प्रभु हम संग खेले, अब तो भइ विसरावणकी ॥ छ० ३ ॥ याद करो जिन पूरब प्रीती, वखत वनी हे दिल लावणकी ॥ छ० ४ ॥ मोहे भरो सो हे बहुतेरो, आप कहो ललचावनकी ॥ छ० ५ ॥ सहजानंदी एक लहरमें, दीजै सुख दुख जावनकी ॥ छ० ६॥ पारस भेट रहे जो लोहा, होवै लोक हसावणकी ॥ छ० ७ ॥ राम निवास आश प्रभुजोसें, ऋद्धसार पद पावनकी ॥ छ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेम जिनंदजीसें आंखरूली ॥ ए चाल ॥ साहिब सुगुण सुपारससें, मेरी अजब अनोपम प्रीत भइ रे ॥सा० ॥ जिन मुख चंद चंद्रिका निरमल, चंचल नेण चकोरमई रे ॥ सा० १ दुर न कीजै निज चरणनसें, सुरतरुकी छांह गही रे ॥ सा० ॥ दिलभर प्रभुसें अरस परस अब, वतिया दुखकी आण कही रे ॥ सा० २॥ विक्रमधारी जग उपगारी, मेरी सूध क्युं विसार दई रे ॥ सां० ३ ॥ शांति सुधारश नाथ दयानिध, ऋद्धसार लय लाग रही रे ॥ सा० ४ ॥ इति पदं ॥

कृपानिध वीनती अवधारो ॥ ए चाल ॥ सावरिया पास जी सुख दीजे, प्रभु अरजी दिलभर लीजै ॥ सां० ॥ मनमोहन मूरति थांरी, आतम अनुभव उपगारी, सुध लीज्यो नाथ हमारी॥ सां० १॥ करुणारस अमृत कूंपी, लयलीन सुधानंद रूपी ॥ तन मन पद पंकज सूंपी ॥ सां० २ ॥ जब पारस नाम उचारयो, रघुपति को कारज सारयो, प्रभु धरणीधर निसतारयो ॥ सां० ३ ॥ शिव-

शंकर रमणविहारी, प्रभु महिमा अगणित धारी, श्रीपतिकी चिंता वारी ॥ सां० ४॥ डुंगर सिंघ विक्रमराजा, उपदेश सुमति दिये ताजा, जिनभुवन करावण काजा ॥ सां० ५॥ शिववामी सुंदर छाजै, जिनमंदिर शरस विराजै, हरिहर मंदिर विच गाजै, सां० ६ ॥ नरनारी दरशन आवै, शुभ पूजन युगति रचावै, प्रभुजीसें प्रेम लय लावै ॥ सां० ७ ॥ अभिनव श्रीनवल जिनंदा, जगजीवन वामानंदा, प्रभु दीज्यो परम आनंदा ॥ सां० ८ ॥ उगणीसे उगणपचासे, सुदि पांचम यतन विलासै, प्रभु माधव माश हुलासै ॥ सां० ए ॥ हितवल्लभ प्रभु गुण संगी, निधि कुशलसु अमृत रंगी, ऋद्धसार कहे नवरंगी ॥ सां० १० ॥ इति शिववामी सुमतेश्वरपार्श्वनाथ स्तवनं ॥ अथ ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ मोहे छोड चला वणझारा ॥ ए चाल ॥ तुम जो ऋषभ प्रभु प्यारा, जगजीवन नाथ हमारा ॥ नहीं करूं पलकभर न्यारा, लग रही लगन इकतारा ॥ ज० ॥ प्रभू मोहन सूरतिधारी, कंदरपदर्प विषयारी ॥ लयलीन योग आधारी, सुर असुर नमत नरनारी, प्रभु भए जगतसें न्यारा ॥ ज० १ ॥ केवलकमला संग लीने, पीयूष सहज सुखभीने ॥ माया छाया तज दीने, आगम गम अंतर चीने, भया तीन लोक उजियारा ॥ ज० २ ॥ क्या बाह्य विभूषा त्यागी, अध्यातम रटना जागी ॥ प्रभु उपादान शिवपागी, वर ध्यान धरै अनुरागी ॥ शेलेसी करणकूं धारा ॥ ज० ३ ॥ वीक्रमधर नयर जिणंदा, प्रभु आनन सुरतरु कंदा ॥ तुम जगत उजागर चंदा, दील रंजनमें तुम बंदा, प्रभु सुख संपति दातारा ॥ ज० तु० ४ ॥ चिंतामणि कलप समाना, जिन रूपें कुशलनिधाना ॥ ऋद्धसार करत गुण गाना, प्रभु कीजै आप समाना ॥ अब झिगमिग ज्योतिस तारा ॥ ज० तु० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी.

॥ अगमडुं२ वाजै चोघमा, सवाइ झंका साहेबका ॥ धननं२ अवाज होता, महेल बनाया गगनोका ॥ कल्याणपारसनाथ नामका, नित२ वाजे चोघमा ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिब, पार्श्वनाथ अवतार बमा ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा जनम हे, माता वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोभे, जैसा सरद पूनमचंदा ॥ स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावै ॥ तेत्रीस कोम देवता मिलकर, ओछव करणेकुं आवै ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंद्र अरज करंता, चंद सूरज करता सेवा ॥ केइ सुरनर साहेबके आगे, अरज करंता खमाखमा ॥ जिनके सरूपको पार न पावे, जिनका गुण हे सबसें बमा ॥ ३ ॥ दूर देससें आया जोगी, बमे जोर तपस्या करता, नीचै लगाता ज्वाला जोगी, बमे२ झोके खाता, बारे बरसकी उमर प्रभुकी, छोटेपनमें वहोत कला ॥ बरोबरीके लिये सोवती, तपशीकूं देखण चला ॥४॥ ज्ञान देखके बोले जोगीसें, एसी तपस्या कूं करता, उ जोगी तेरे बमे लकमेमें, बमा नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहता, तोबी जोगी नहिं सुणता, लकमे दिये फेंक जंगलमें, लोक तमासा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया बे जोगी तुमने, बमा नागकूं जला दिया, दिया सार नवकार नागकूं, धरणीधर पदवी पाया ॥ बमी उमेदसें आया साहिब, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताकी आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज छोमके चले जंगलमें, जुगतीसें काउसग्ग किया ॥ बमे धीर गंभीर प्रभूने, तीन लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी बमी धूपमें, नीरंजन निराकार खमा, कमठासुरने किया कमाका, नभमंमल बादल चमा ॥ ७

॥ उसी दिनको कमठासुरने, पिछला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी सेना लेकर, जलकूं जलदी बुलवाया ॥ वर्षा किया घनघोर जोरसें, पवन चलाया मतवाला ॥ कड़ड़२ कर हुआ कड़ाका, चमक बीजका उजवाला ॥ ८ ॥ मूसलधारा मेघ वरसता, गगन गाजता चौताला ॥ सात खूटकी वर्षी झड़ीमें, प्रभु खड़ा है मतवाला ॥ नाक बरोबर आया पाणी, नाथ निरंजन धीर वड़ा, पराजय नहिं होय जिनूंका, एसा प्रभुका ध्यान चढा ॥ ए ॥ संकटसें सिंहासण डोला, हुवा घंटका आवाजा, अवधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धाउ२ धरणीराजा ॥ धरणीधर जलदीसें आया, पदमावतीकूं संग लिया, पदमावतीने लिये शीस पर ॥ शेषनागने छत्र किया ॥ १० ॥ क्रोड़ उपाय तो किया कमठनें, कुछबी इलाज नहीं चलता ॥ तरणेवाला साहिब उनकूं, छलणेवाला क्या करता ॥ जीते श्रीजिनराज हारके, कमठ हाथ दो जोड़ खड़ा ॥ धरणीधर साहिबके आगे, अरजी करता खड़ा२ ॥ ११ ॥ केवल पाय शिवपदकूं पहुंचै, पार्श्वनाथ शुभ मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योति दीपकी, तपे तेजका अजुवाला ॥ वीसनगरमें पार्श्वनाथका, देवल बनाया तेताला ॥ वड़े देवलमें इंदर सोहे, घंट वाजता चोताला ॥ १२ ॥ वड़ी जुगतसें सिंहासण कर, कोट बनाया देवलका ॥ जगों२ पर शिखर चढाया, दरवाजा शुभ केवलका ॥ भामंडलके आगे शोभता, मूल गुंभारा आरसका ॥ पीछे पच्चीस देरिया सोभित, सिरे काम सिंघासणका ॥ १३ ॥ मूलनायक के ऊपर सोहै, सहसफणा प्रभु पारसका ॥ चौमुखकी चतुराई वणी है, बडू काम है सारसका ॥ अढारसे पैंसठ सवाई, मुहुर्त्त फागण मास भला ॥ सुदी तीजकूं तखते वैठै, जगो२ पर नाम चला ॥ १४ ॥ देश२ के संघ बहु मिलकर, तेरे दर्शनकुं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वड़ी

तेरी अकलमाया ॥ धर्मचंद जोमता सवाईने, वमा साहमी वात्सल्य किया ॥ सकल संघकी आज्ञा लेकर, वमा शिखर निशान दीया ॥ १५ ॥ करमचंद ने देवचंद ने, खेमचंदने खुब किया ॥ पारसनाथकूं तखत वैठाकर, जगोर पर नाम किया ॥ कीर्त्तिविजय गुरुराजकूं प्रणमूं, पाय गुरुका राज वमा ॥ गुलाबचंद साहेब के आगे, जिनसासनका काम वमा ॥ १६ ॥ तेजा गाता चंग रंग में, ग्यान ध्यानसें खमा२, हाथ जोमके अरजी करता, पारसनाथ जी तूंही वमा ॥ वमा काम तेरे है साहिब, मुखसें नहि कहणे आता ॥ शिवरमणीकुं वरी है जिनजी, भविजनकुं सुखके दाता ॥ १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आखातीजकी लावणी ॥

ऋषभ तेरी सूरतका प्यासा, लगी मोहे दरशनकी आसा॥ वंश इक्ष्वाकू नभचंदा, भूमिपति नाभीके नंदा ॥ मात मरुदेवा सुखकंदा, प्रगट भये जगजन आनंदा ॥ ( डुहा–साखी ) रेणु पूंज पर आपकै, गये मिथुन जल लैन ॥ आसन कंप भयो सचिपतिको, आयो तिलक पद दैन ॥ नाथ भये वसुधर सुखरासा ॥ ल० १ ॥ मौलि पर कनक मुगट राजे, माल गल मोतियनकी छाजै ॥ श्रवण युग कुंमल अति साजै, निरख छबि कोटि भान लाजै ॥ ( डुहा–साखी ) हीर वीर सोभावणी, आप ताप झलकंत ॥ युगल अलंकृत देख प्रभूकूं, चरण नीर वरसंत ॥ विनीता धनदपुरी वासा ॥ ल० २ ॥ सुनंदा सुमंगला राणी, भोगसें योग प्रीत ठानी ॥ भये शत पूत्र सुगुण खाणी, प्रभूने दिया राजधानी ॥ ( डुहा–साखी ) चौसठ विद्या नारकी, पुरुष बहोत्तर ग्यान ॥ जग विवहार चलाया प्रभूनें, प्रजापती अभिधान ॥ मुनि हुय तजै जगत फासा ॥ ल० ३ ॥ लाभ अंतराय उदै आया ॥ बरसदिन भोजन नहि पाया, भेट मणिकंचन

सब लाया ॥ प्रभु निरममती गतमाया ॥ ( दुहा—साखी ) हस्तिनागपुर नगरमें, श्रीश्रेयांशकुमार ॥ इक्षुरस प्रभुकुं वहिराया, देव करत जयकार ॥ अक्षयतृतिया भई परकासा ॥ ल० ४ ॥ करम हन केवल चिदरासी, नाथ भये अविचलअविनासी ॥ शिखर केलाश आप वाशी, नाम शिव ब्रह्मा विष्णु भासी ॥ ( दुहा—साखी )॥ कुंदण काया सोहनी, परम धरम जिनचंद ॥ जगी घगी मनमोहन मुरति, लखमी धरत आनंद ॥ फूल रही मीना उजियासा ॥ ल० ५ ॥ कृश्न घनस्याम मूरति नीकी, सजल घन घटा प्रभुजीकी ॥ नयण अरिविंद भमरकीकी, भक्तिरस कुंभल पुर सीखी ॥ (दुहा—साखी) ॥ जगणीशाय अगतालमें, ज्ञानपंचमी रंग ॥ कूम कपटतज भेट भई जिन, सुंदर कमला संग ॥ कुशल कल्हार चरण दासा ॥ ल० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दीवाली लावणी ॥

प्रभु वीर धीर मणि हीर दरस बलिहारी, प्रभु पावापुर निर्वाण संघ सुखकारी ॥ प्रभु केवल भान प्रकाश तत्व दरसाये, प्रभू चउद सहस मुनिराज संघ सुखदाये ॥ प्रभु चरम समय निज देख पावापुर आये, तब सुरवर सुखकर समवसरण विरचाये ॥ क्या सघन तरुगत शोक रमण छवि छाये, भामंडल धजवर दुंदुभि नाद सुणाये, मणि कनक रतनका वीच सिंहासण भारी ॥ प्रभु पावा० १ ॥ तब हस्तपाल नरपति सुरपतिके आगै, प्रभु शोले पहर धुनि अमृत उपम लागे ॥ पंचम आरेके भाव प्रगट गत रागे ॥ भाषै सिद्धारथनंद सुणत भ्रमभागे ॥ तिहां नरपति सुरपति खगपति सेवा मागे, जय२ श्रीजगपति नाथ सरस रस जागे ॥ गौतमकूं भेजा प्रतिबोधन उपगारी ॥ प्रभुपा० २ ॥ अम्मावश पिछली रैन मुगतिपद लीने, इंद्रादिक मिलकर अधिक महोछवकीने ॥ गौ

तमने सुणकर वीतरागपद चीने, तब जगत प्रकाशन ग्यान सुधा रस पीने ॥ मेरी धन्य घमी दिन आज दरश मोहि दीने, मेरे हिअरा हरष न माय फरकता सीने ॥ जई दीवाली जग वीच तन्नीसे जारी ॥ प्र० ३॥ तहां देवादिकने रइन सदनमें धारी, कोटाकोटी रज़ कग लिया नरानरी ॥ तहां जया सरोवर महिमा अपरंपारी, नंदीवरधन ने किया जुवन विस्तारी ॥ प्रजु जलमंदिर गरदाव कमलकी क्यारी, प्रजु हो मंदरमें मूरति मोहनगारी ॥ जिन चरणकमल उवि जविकूं लागत प्यारी ॥ प्रजु० ४ ॥ प्रजु धरमचंद हो आप आप जस राजा ॥ क्या कांति अनोपम फूल महकते ताजा ॥ मीनाकुंदनसें जमाव अंगिया साजा, प्रजु मुन्नी चुन्नी अविचल वाजत वाजा ॥ सन उगणीसे अमृताल कृष्ण पख गाजा, जये कार्तिक दिन निर्वाण जेट माहाराजा ॥ प्रजु लखमी प्रेमसे कुशल निधी रुहसारी ॥ प्रजु पा० ५ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीमंधरजिन लावणी ॥

श्री सीमंधर जिनराज अरज सुण लीजें, प्रजु रहम नजर कर दिलजर दरसण दीजे ॥ मोहे लगन तुमारे वदन दरसकी लागी, मेरे जिगर ज्यानमें रीत प्रीतकी जागी ॥ क्या करुं नाथ तुम दूर वसे वमजागी ॥ नहि पोंहचत पतिया पास तुमारे पागी ॥ नहि इस डुनिया दरम्यान पंथका आगी ॥ मेरे रात दिवस इक ध्यान जया अनुरागी ॥ जो पल जर पाउं संग अमृतरस पीजे ॥ प्रजु रह० १ ॥ मैं जररयणीके वीच सुपन पजु पाया, पजु अरस परस जिनराज दरस दिखलाया, मेरे रोम२ आनंद हरख जर आया ॥ क्या प्यारी सूरत मूरति कंचन काया ॥ जो परतिख देखुं नाथ चरणकी उाया, मेरा जनम सफल हो जाय करुं दिल चाया ॥ तुम जाणत हो घट वात ढील नहि कीजे ॥ पजु र० २॥

धन२ वो सहर मुकाम जिहां जिनराजे, धन२ वो नर हर नार सुणं-त धुन साजै ॥ जो पर पाऊं इक वार मिलणके काजै ॥ तो आऊं जिन तुमें पाश देख डुख भाजै ॥ ये सुण जिन मेरा ख्याल कुटिलता लाजै, प्रभु मतकर देरी तुरत चढा शिव पाजै ॥ तुम वचन मालती फूल भ्रमर मन रीझै ॥ प्रभु र० ३ ॥ क्या समवसरण सोनापद पदम उजाला, नरपति श्रेयांशकुमार सुतन सुकमाला ॥ प्रभु प्राणपियारी रुकमणि मोहनमाला, प्रभु सत्यकी जननी नीर मीन खुसियाला ॥ अब दीजै कुशल निधान सदा सुविशाला, मैं चाहुं संग अभंग प्रेमरस प्याला ॥ जिन भक्ति जमी रुद्धसार नाथ वगसीजै ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अजीमगंजमें रामबाग लावणी ॥

जिनचंद करण आनंद हरख घन वरसण, श्रीसांवरिया म-हाराज तीहारे दरशन ॥ श्रीकाशी सुंदर देश बनारस गाजै, जहां अश्वशेन वरशैल सुदर्शन राजै ॥ वामोदर कंदर प्रभु पंचानन गाजै, प्रभु नरहरि दीनदयाल मदन मद भाजै ॥ प्रभु कमठ दीन नृप देश दयाके काजै, प्रभु धरे जोग तज भोग अचलपद साजै ॥ पा रसके संगत लोह कनक भयो करशन ॥ श्री सां० १ ॥ क्या वर-णूं साहिब तुम गुण गणकी रासी ॥ जोगी नागार्जुन सुवरणसिद्धि प्रकाशी ॥ श्रीअभयदेव सूरी गण खरतर वाशी, तुम शांतिक जल सें गये अरुज सब नाशी ॥ श्रीरामचंद सेतु वर पाज सराशी, श्रीयादवकुलकी जरा पिशाची नाशी ॥ तुम सूरत निरखण लग रही अंखियां तरसन ॥ श्री सां० २ ॥ श्रीअजीमगंजमें संघ सुथिर सुविलासी, नित आनंद उच्छव होत धर्म उजियासी ॥ प्रभु रामबाग विच भुवन बण्यो केलासी, क्या अदभुत महिमा चंदकिरण परकासी, जिन ध्यान सरूपी लगी लगन अविनासी, प्रभु डुरजन

फंदा तोम मोहकी फासी ॥ जिनचंद सूरीश्वर विजयराजके सर सन ॥ श्रीसां० ३ ॥ पाठक हितवल्लन्न चैत्य प्रतिष्ठा कीनी, श्री संघ सदा कल्याण न्नक्ति बुध दीनी ॥ सन् ऊगणी सय अमताल माघ सुद लीनी, सुन्न वस्तपंचमी कुशल निधान नवीनी ॥ लक्ष्मी वरदायक श्रीपारस पद चीनी, रुद्धसार कहै सुखकार न्नक्तिरस पीनी ॥ न्नइ कंचन काया प्रन्नु चरणनके फरसन ॥ श्रीसां० ४इति ॥

॥ अथ लावणी नेमनाथजीकी ॥

नेमनाथ मोरी अरज सुणीजै, मेहुं दासी चरणोकी, तोरण आये फेर मत जाउ, तुमकूं सोगन जादवकी ॥ ने० १ ॥ जान लेइ तुम व्याहन आए, लारे सेना माधवकी ॥ उप्पन्न कोम जादव मिल आए, ए अवसर नही फिरणेकी ॥ ने० २ ॥ रथ फेरी गिरवरकुं सिधाए, हमकुं ठांमी नव न्नवकी ॥ मेरे सामरे स्याम सलूणे, में इहां नही अब रहणेकी ॥ ने० ३ ॥ सुण जिनजी में तोकुं कहतहुं, देखूं शोन्ना गिरवरकी ॥ मातापिता बाधव सब ठंमी ॥ जासुं संगे यादवकी ॥ ने० ४ ॥ हाथ जोरके वीनवै राजुल, बात सुणो पियु मुज घरकी, हमकुं ठोम चले गिरधारी, अब हे पीतम सरणेकी ॥ ने० ५ ॥ नेम कहे तुम सुण हो राजुल, विषयारस हे विष सरषी ॥ यह संसार असार निरंतर, कर करणी यह तरणेकी ॥ ने० ६ ॥ पियुजी पासे संयम लीयो, जिनसें कारज सरणेकी ॥ तपस्या करीने उत्तम कीनी, यह न्नव पार उतरणेकी ॥ ने० ७ ॥ पियुजी पहलां राजुल नारी, पोहता सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए, येही शोन्ना हे जिनकी ॥ ने० ८ ॥ चतुर कुशल या कही लावणी, जिनसें काया उद्धरणेकी ॥ अरिहंत ध्यान धरे दिल माहै, फिर फेरा नाहिं फिरनेकी ॥ ने० ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ जिनदासजी कृत १० धन तथा लावणीओ ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, जीनोसें उतरोगे भव पार ॥ होय तेरी कायाको आधार, सफल कर ले अपनो अवतार ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नर नार, खाण दुख की ए हे संसार ॥ करो प्रभु निहाल अभी जिनदास, रखो प्रभु मुझ चरणोके पास ॥ १ ॥ सरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गई लाली॥ सोबत समताकी में ढाली, आतमा तपमें नहिं खाली॥ अनंत भव वीतगया खाली, वेदना निगोदकी झाली॥ अमरपद जिनदास मांगे, सदा पद प्रभुजीकूं लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नाभिनंदन, चरण पर चढै केशर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक वंदन, कटत हे कर्मोंका फंदन ॥ साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकूं सुख कंदन ॥ जिनंद गुण जिनदास गावे, शीश चरणोंसें नमावें ॥ ३ ॥ बोलत हे हिया मेरा हसकर, चढावुं चंदन चूआ घसकर ॥ पेठामें धर्ममें धसकर, पाप दल दूर गया खसकर, चेतन हुवा खमा कमर कसकर, हटाया कर्मोंका लसकर॥ श्रीजिनराज जिहाज खासा, शरण जिनदास लिया वासा ॥४॥ समझ मन मेरा मतवाला, तुझे नहिं कोइ हटकणवाला ॥ वस्या तेरे हिये कुगुरु काला, दिया तें सुरगतिकुं ताला ॥ फेर तो ममताकी माला, वाल तो भगवंत पर भाला ॥ दुयासें दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ कीया मैं गणधर प्रेमपती, मुझे वरदायक हे सरसती ॥ करी निर्मल निर्धमती ॥ पूठ पर खमे जागता जती॥मुझे बलवंत भई शील सती, मिटी मेरी दुर्गतिकी सब गती, एसा धन जिन दास गावे, अचल पद भक्तिसें पावे ॥ ६ ॥ विकट घट दुरगतिका भारी, भीर ज्यां भरती कुमति नारी ॥ वरठी जन नेणोंकी मारी, मुव्या कोइ कामी संसारी ॥ इनोंकी हो रहिये खुआरी, जीता कोइ सहुव

धरमधारी ॥ प्रभु तुम परमारथ पाया, शरणे अब जिनदास आ या ॥ ७ ॥ चैत नर निगोदका वासी, कराई जगमें तें हांसी ॥ कुमतिकी पमी गले फांसी, सुमतिसुं रखी हे उदासी ॥ कुमतिकी वसी सेज खासी, मान रह्यो ममताकूं मासो ॥ हियो खोल अरिहंतकूं परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ८ ॥

अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी नहिं मानी ॥ किया नही गुरु निग्रंथज्ञानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें ऊन रं गया पानी, गती तेरी डुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तोरा जिनदास वाजे, सुधारोगे तुमही काजे ॥ ए ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निग्रंथज्ञानी, कानसें लगी सुमति राणी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पाणी, गती तेरी सुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास वाजे, सुधारोगे तुमही काजे ॥ १० ॥ इति ॥

पुनः लावणी॥चल चेतन अब उठकर अपणें, जिन मंदिर जइये॥ कीसीकी नूंमी ना कहियै रे, किसी० चल० ॥ चरण जिनवरजी का नेटो रे च०, नव२ संचित पाप करम सब तन मनका मेटो ॥ सुकृत कीजै—महाराज सु० ॥ जिनवरका गुण नज लीजै, सम कित अमृतरस पीजे ॥ लान्न जिननक्तीका लहिये रे—लान्न० ॥ चल०१॥ करो मत मुखसे बमाई, करो०, तज तामस तन मनका सुमति कर घर रहणा नाई ॥ रीतसे बोलो—मेरी जान री० ॥ आतम समतामें तोलो, मत नरम पारका खोलो ॥ मौनकर तन मनसें रहियेरे—मो० ॥ च० २ ॥ जोवन दिन च्यारतणा संगी रे, जो० ॥ अंत समें चेतन उठ चाल्यो, काया पमी नंगी ॥ प्रीत सब तूटी—मेरी ज्या० प्री० ॥ आउखेकी खरची खूटी, चेतनसें काया रूठी ॥ सुख डुःख आप किया सहियैरे—सुख डुः० ॥ च० ॥ ३ ॥

जगतमें रहता उदासी रे ज०, परख्या में जिनराज कटी मेरी दुर गतिकी फासी ॥ तजो सब धंदा–मेरी ज्या० त० ॥ जिनवर मुख पूनमचंदा, जिनदास तुमारा बंदा ॥ मेरे एक जिन दर्शन चहिये रे–मे० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ तुम जजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाईरे–मु० ॥ अब अचल अखंमित ज्योति सदा सुखदाईरे ॥ मैं रुल्यो चोरासी मांहि जूल्यो मैं जरम, जूल्यो०॥ महारे उदय अनंता दुख बांध्या जब कर्म ॥ मैं कदियक हूउं रंक फिरयो तज शरम, फि०॥ अरु कदियक राजा जयो गरबको गरम ॥ जब गरब आणकर बोल्यो पारका मर्म, पण निर्मल जगमें जैन कियो नही धर्म ॥ अब मनुष्य जनममें चेत धर्म्मी शुज आई रे, ध० ॥ अब० १ ॥ मैं सुरनर का सुख वार अनंती पाया, अनं० ॥ मारे शिव समताका सुख हाथ नहिं आया ॥ मैं कुगुरु अने कुदेव जला कर ध्याया, जला० ॥ मैं उलज्यो अनादि अज्ञान विषय जोग जाया ॥ मैं पम्यो लोजके फंद जोम्तो माया, जो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय कालने खाया ॥ अब परहर सब परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म० अ० २ ॥ अब दुर्लज अवसर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥ अब दानशील तप जाव हीयामें धर रे, तुं करमकी माला काट पाप परिहर रे, पा०॥अब वार २ कहुं तोय जगतसें तर रे ॥ तुं निर्मल नयणे देख जगतसें मर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान अज्ञानी नर रे ॥ अब पर तिरिया कर जान बैन अर जाई रे ॥ बे० ॥ अ० ३ ॥ अब जिनवर मुज मन जायो सदा गुण गाउं, सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो नरक नही जाउं ॥ अब जवर मांही देव जिनेसर पाउं ॥ जि० ॥ में मन वच काया करी चरण चित ध्याउं ॥ ए दयाधरम हितकार, सदा में चाउं ॥ स० ॥ ए

चोरासी के माहि फेर नहीं आउं॥ यूं अरज करे जिनदास, कीरत ए गाई रे॥ की० अब० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमति कुमतिकी लावणी॥ हांरे तूं कुमति कलेसण नार, लगी क्यूं केरे, ल० ॥ चल सरक खरी रह दूर तुझे कुण छेरे॥ हांरे तुं सुमतीको नरमायो, मुझे क्युं छोडी, मुझे०॥ मेरी सदा शाश्वती प्रीत बिन कर्मे तोडी॥ तुझ बिन सूनी मेरी सेज, कहुं करजोडी, क० ॥ तब चलो हमारी संग सुखे रहो पोढी ॥ यु झुरइ कुमति आंसु आंखसे रेरे, आं० च०१॥ हां रे तेरी नरकनिगोदकी सेज, सेति में रुवो, सेति० ॥ पकड्यो साचो जिनराज, संग तेरो टूटो ॥ तेरी मूरख माने वात, हियाको फूटो, हिया० ॥ मैं सहज हुवो हुं दूर हार तेरो टूटो ॥ तुम करो दूरसे वात आव मत नेरे, आं० च० २ ॥ मेरी अनंतकालकी प्रीत पलक नहिं पाली, पल० ॥ सुमती के लागो संग मुझे क्यों टाली ॥ तुं सुमतीको सिरदार, सुणावे गाली, सु० ॥ तेरी हम दोनूं हे नार गोरी उर काली ॥ तूं हम कूं ठेले दूर सुमतिकुं तेरे, सु० च० ॥ ३ ॥ अब कुमतीको लव ध्यायो, रती नहिं झगियो, र०॥ सुणकर सूत्रनकी शीख, साच होय लगियो ॥ चेतन कुमतीकी सेज, दूरसुं नगियो, दू० ॥ जिनराज वचनको ग्यान, हिये में जगियो ॥ जिनदास कुमति तुं वात खोटी मन खेरे, खो०॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ तुम तजो जगतका ख्याल, इसकका गाना, इस० तेरी अलप ऊमर खूट जाय, नरक उठ जाणा ॥ तैं दिना चार जुग बीच लिया हे वासा, लि० ॥ तेरे सिर पर बेठा काल, करे हे हांसा ॥ मैं बोलूं साची वात, झूठ नहीं मासा, झू० ॥ तूं सूता हे कुण निंद, किसी कर आसा ॥ अब सेव देव जिनराज खलक में खासा, खल० ॥ तेरे जोबन पतंगका रंग, झूठ सब

आसी ॥ अब हिये धरो मेरी सीख, समझ रे दिवाना, स० तु० ॥ १ ॥ अब बुरी भली सब बात, मोन कर रीजे, मो० ॥ ए मुख मी ठा संसार भेद नहीं दीजे ॥ कर वीतराग विसवास, हिये धर ली जे, हिये०॥ पण नीच नारका संग मांहे मत भीजे ॥ अब सात विसनको संग, प्रीत मत कीजे, प्री० ॥ तोदे डुरगति दे पोहचाय तेरो तन छीजे ॥ तुं सुख डुखका सिरदार, रंक नहि रानो, रं० तुं०२ ॥ तुं विसरगया जुग वीच, नाम जिनवरका, ना० ॥ पच रह्या कु टुंबके काज, किया फंद घरका ॥ तें दया धरम विन खोया, जनम सब नरका, ज० ॥ तेरे पल्ले बांध्या पाप, कसाई सरखा, अब लि या नहीं तें लाभ, वखत पर करका, व०॥तेरी वीती वात सब जा थ जनम युं खरका ॥ अब सुणो शीख सूतरकी सुलट रे स्याना, सु० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण सेज पर पोढ्या, आनंद दिल आया, आ० ॥ मेरी भगी भूख सब प्यास सुधारस पाया ॥ मेरे सिर पर तुम शिरदार, जिनेसर राया, जि० ॥ मैं चाहुं चर णकी सेव सफल कर काया ॥ अब यो दोलत दरसणकी, मेरे ए हि माया, मे०॥ यूं अरज करे जिनदास अलख गुण गाया ॥ अब बुरा कुगुरु उपदेश सुणो मत काना, सु० तुम० ४॥इति पदं ॥

॥ पुनः नेमनाथजी की लावणी ॥ दे गया दगा दिलदार, सुणो मेरी माई, सु० ॥ जग रही नेम दरसनकी, सरस असनाइ ॥ अब अजब अली जो नेम, मेरे शिर गाजे ॥ ॥ मे० ॥ जादवकी देखी स्यान, जगत सब लाजै ॥ एसो नेम नवल इक वींद, अनोखो बाजे, अ०॥ सुरनर सब गावे गीत, गगन में गाजै ॥ अब दोड़२ सब डुनियां, देखणे आई, दे० ॥ दे० १ ॥ अब चढ़ा नेम तोरणकूं, आनंद दिल धरकर, आ० ॥ सज आये सुरंगा साज, किलोलां करकर ॥ में पायो परमानंद, दरखे

हिया न्नरकर, ह० ॥ ले गयो पती नेमनाथ, मेरो मन हरकर ॥ सखी सुख संपत अंगणमें, आज चल आई, आ० दे० २ ॥ अब इण अवसरमें सूरत, स्यामकी लागी, स्या० ॥ पशुअनकी सुणी पुकार, दया दिल जागी ॥ जिन ली परवतकी वाट, तृष्णाकूं त्यागी, शिवरमणीके शिर वींद, वण्यो वैरागी ॥ अब महल चढी राजुलकूं, खरी ठिटकाई, ख० दे० ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें, टिके नही पाणी, टि०॥ जिनगुण गाया नहीं जाय, अलप जिंदगानी॥ अब कवन जीव डुरगतको, बन्यो मेंदानी, ब० ॥ जिनदास करो न्नव पार, दया दिल आणी ॥ अब शरण सतीके बैठ लावणी गाई ॥ ला० ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मगसी पार्श्वनाथकी लावणी ॥

मुलक वीच मगसी पारसका बाज रह्या ऊंका, मुगति गढ जीत लिया वंका रे, मु०॥ मुल०॥ करमदल बलकूं क्षय कीया रे, क० ॥मुगतिमहलमें केलि करे, अनुन्नव अमृत पीया ॥ शाशता जीया, माहाराज शा० ॥ कल्याणक कारज कीया, अमरापुर पदवी लीया, कमठ जसका करगये फंका रे, क० ॥मुल० १ ॥ प्रन्नु पारस न्नजले न्नाई रे, प्रन्नु पा०॥न्नाव न्नमरका मेट जोत तेरी जगमें सवाई॥ टेककूं टालो, महाराज टे०॥चंचल चितसे मत चालो, गुमान गरबकूं गालो, गरबसे धूम मिली लंका रे, ग० ॥ मु० २ ॥ मेरे शुन्न न्नाग्य नदय आया रे, मेरे० ॥ इण पंचम आरा मांहि प्रन्नु मगसी पाया, पापसे ऊरता, महाराज पाप० ॥ न्नवि जीव ध्यान दिल धरता, श्रावक नित समरण करता, मरण डुख मिटया मेरे अंगका रे, म० ॥ मु० ३ ॥ महिमा मगसीकी अब जाणी रे, म० ॥ नहि ऊघमी मेरी आंख विलोया परब विना पाणी ॥ में जिनवर जाच्या, महाराज में जि० ॥ जिनदास जिनंदसें राच्या, म-

गसीपारश हे साचा, करो मत मनमें कोइ संका रे ॥क० मु० ४ ॥

॥ उपदेश लावणी ॥ सुकृतकी वात तेरे हाथ रती ना रही रे, पुदगलमें मान्यो सुख कलपना कही रे ॥ सु० ॥ जग मांहे जैन निज सार संघाते आवै, संघा० ॥ इसकुं तजकर क्युं वैठो, विषय गुण गावै ॥ अमृतकूं अलगो ढोल, विसन विष खावै, वि०॥ मुगतीको मारग मेट, उवटमें जावै ॥ थारी तुछ जिंदगानी मांहि, विकल बुध भई रे ॥ पु० १ ॥ आरे धन दोलत भंमार भरया हे मोती, भ-र्या० ॥ सत्रु सज्जन सब बने, जगत हुय गोती ॥ कोइ मसले तेल फूलेल, धोवे कोइ धोती, धो० ॥ सन्मुख उठ आवै, अबला तेरो मुख जोती ॥ एसी संपत छिन मांहि सरब क्षय भई रे, स० ॥ पुद० ॥ २ ॥ तें खटरस खाया खूब, खजाना खोया, ख० ॥ निसदिन सु-खभर सुंदरकी, सेजमें सोया ॥ सझिया शोले सणगार, नारिसें मोह्या, ना० ॥ तें अंतरघटका मैल रती ना धोया ॥ या नरक नि-गोदकी वाट, पकड़ कर लही रे, प० ॥ पु० ३ ॥ मन मातो आठ मद मांहि, गरबसें बोले, ग० ॥ में सुख संपतको नाथ, मेरे कुण तोले । दुर्बल करता पोकार, पलक नही खोलै, प० ॥ चाकर हुय रह्या हजूर चमर सिर ढोलै, अब अवसर आयो हाथ, चेत तूं सही रे, चे० ॥ पु० ४ ॥ कायासें कीयो लाड़ वनाइ चंगी, व० ॥ पलभर परवार्यो पुन्यतणो तिहां भंगी ॥ पकड़ी परभवकी वाट, होय कुण संगी, हो० ॥ तेरो हंस गयो आकाश काया पड़ी नंगी ॥ जिनदास कहे करमोंसें जोर तेरा नही रे, जो० ॥ पु० ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ नेमजिन लावणी ॥

तुम तजकर राजुल नार, तजा सब घर रे, तजा० ॥ में नमुं नेमके पाय गया गिरवर रे ॥ में प्रीत पियाकी कर कर पछे लागी, तुम त्याग चलै वनखंड भये वैरागी ॥ अब राजुलसी

सणवंती भ्रावसैं त्यागी, भ्रा० ॥ थारे अंतरघटमैं ज्योत ज्ञानकी जागी ॥ यूं रोती राजुल नार नेण भर२ रे, नेण॥ मैं० १ ॥ मैं अरज करुं करजोड, करो मन परसन, करो०॥ मेरे सिर पर तुम सिरदार, देजो मोहे दरसन ॥ अब सुख सखियनका देख, लग्यो मन तरसन, ल० ॥ मेरे आवे नयणमें नीर लग्यो नित बरसन॥ मेरे नेम मिलनकी आस, मिलूं क्यूं कर रे, मि० ॥ मैं० २ ॥ मैं नहि कीनी तकसीर, चले क्यूं रूठे, च० ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार चार दिस चूंटे ॥ में रहूं जो घरके मांहि, जोवन जम लूंटे, जो० ॥ मैं चलुं पियाके संग, प्रीत क्यूं तूटे ॥ मेरे नेम विना नहीं उर, जगतमें वर रे, ज० ॥ मैं० ३ ॥ तुम तारी राजुल नार, मुगतमें मेली, मु० ॥ पीछे नेम गये निरवाण, करम सब ठेली ॥ मैं नित ऊठे परभात, नमुं पद पहेली, न० ॥ मेरे नेम विना नहिं उर जगतमें बेली ॥ युं अरज करे जिनदास सुणो जिनवर रे, सु० ॥ मैं० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप समझका घर नहिं पाया, दूजेकुं क्या समझावे ॥ वंका फिरे जिनदास जगतमें, हीयो हाथमें नहि आवै ॥ दरस सवाद चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आय लगे, इंद्रीका परवसमें पडियो, ग्यानकला कहो कैसें जगे ॥ तृष्णाने जग लूंट लियो है, कपट करी परधनकुं ठगे ॥ खाय२ लोही मांस वधायो, प्राणी किस विध चले पगे ॥ विषय विपतकी करै चूंथणी, चरचासैं चित नही लावै ॥ वं० ही० आ० १ ॥ अपने अवगुणकूं नही देखै, दूजाका अवगुण भाखै ॥ हिंसाहीमे हूओ हजूरी, दया दूर दिलसें नाखे ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन, अवगुणके रसकूं चाखे ॥ तीनूंही प्रणमें राग धरामें, सरणें जिनवर किम राखे ॥ ठग फासीगर चोर अन्याई, धनके मिस इनकूं ध्यावें ॥ वं० ही० आ० ॥ २ ॥ अवगुणकी मेरी खान आतमा, अजान होय सो मोहि पूजे ॥

नहीं गाममे रुंख अंबको, एरंम अंब सरिखो सूझे ॥ पारख नहीं हे हीये ग्यानकी, गुण अवगुण कूं कुण बुझे, गाम्र देख कहे मुझ घरमें, कामधेनु इतनी दूझे ॥ एसी मेरी अविनीत आतमा, अवगुण किम गाया जावै ॥ वं० ही० आप० ३ ॥ क्रोध मान मायामें माते, लोज्ञ मांहे लपट्यो रहतो ॥ गरथ गुमानी गमको गरजी, पीम पारकी नहिं सहतो ॥ ज्ञगति नहीं गुरु देव धरमकी, कठन वचन मुखसें कहतो, अंतर आंठ न खुलै हियांकी, धूठ परमपदकूं देतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको ठग खावै ॥ वं० ही० आप ४ ॥ इति पदं ॥

अथ सुगुरुकी लावणी ॥ नमूं२ में गुरु निर्ग्रंथकूं, वें जिन मुद्राधारी हे ॥ पुलग्न ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे ॥ न० १ ॥ गरब गालकर गुपति गोपवे, गत निर्ग्रंथकी न्यारी हे॥ कनक कामनीके नही ज्ञोगी, वे पूरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० २ ॥ छ कायके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काढकर केवल पावे, ज्ञानगरथ गुण ज्ञारी हे ॥ न० ३ ॥ शुध्ध श्रद्धासें सुमती सेवी, निज आतमकूं तारी हे ॥ जिनवरकूं जिनदास वीनवै, उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः॥ करूं२ में एसे सदगुरु, थिवर कल्प जिन धारी हे ॥ सरधा शुद्ध सदा उपदेशी, ज्ञविजनके उपगारी हे ॥ करूं२ में० १ ॥ च्यार निक्षेपे सप्त ज्ञंग नय, देश काल आचारी हे ॥ विरताविरती सर्व विरतके, धार धरावणहारी हे ॥ करूं२ में० २॥ सत्य सनातन कुल अरु गणके, परंपराके धारी हे ॥ निन्हव अरु पाखंम खंमते, जैनधर्म जयकारी हे ॥ करूं२ में० ३ ॥ संवेगी अरु संवेगपक्षी, मुनी जती गुणकारी हे ॥ ग्यान ध्यानसें शिवपद साधे, कहे पाठक रुद्धसारी हे॥ करूं२ में० ४॥ इति पदं ॥

॥ अथ कुगुरूकी लावणी ॥ तजुं३ मैं उन कुगुरुकुं, कनक का-मनी धारी हे ॥ ज्ञान ध्यानकी वात न जाणे, अष्ट करमसें न्यारी हे ॥ तजूं० १ ॥ करी कपाल वभूत लपेटी, शिर पर जटा वधा-री हे ॥ कान फाड़कर मुद्रा पहरे, उसके घरमें नारी हे ॥ तजूं० २ ॥ जोग लेइ जग जीव विणासै, वे मद मांस आहारी हे ॥ कूड़ा पंथ जगतकूं करतां, मुखसें कहे आचारी हे ॥ तजूं० ३ ॥ कहूं उगुण कुगुरूकां कब लग, साध नही संसारी हे ॥ आप डुबे उरनकूं डूबावे, दुर्गतिका अधिकारी हे ॥ तजूं० ४ ॥ समकित श्रद्धा जैनधर्मकी, नहीं कुगुरूकूं प्यारीरे, जिनवरकुं जिनदास वीन-वै, कुगुरू संग खुआरी हे ॥ तजूं० ५ ॥ इति ॥

आत्मलघुता लिख्यते ॥ यो जिनदास झूठो रे झूठो, येने लेइ लाकड़ी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहीं भरतो, ग्यान हियाको खूटो ॥ सुधारयो सुधरे नही घड़तां, जैसो लकड़को ठुंठो ॥ यो० १ ॥ भणवा गुणवाका गुण नाहिं आया, कोरोही पक-ड़्यो पूठो ॥ गपोड़ा सुणकर लोक पूजता, ए अलग ड़ालको ठुंठो ॥ यो० २ ॥ पंड़ित गुरुकी सोवत पाई, चेत्यो ना हीयाको फूटो, साचा नरको संग न करतो, कूड़ कपट नहीं छूटो ॥ यो० ३ ॥ झूठोही बोले झूठोही चाले, कपट करे एक मूठो ॥ साचो एह अ-सार देखके, जिनदास सबसुं रूठो ॥ यो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वैराग्य लावणी लि० ॥ जब तन दोस्ती है इह म-स्ती, काया मंगलकी ॥ सासोस्वास समर ले साहिब, आउ घटे तनकी ॥ खवर नही हे जुगमें पलकी, सुकृत करणा होय सो क-रले, कुण जाणे कलकी ॥ ख० १ ॥ तारामंडल रवी चंद्रमा, सज्जी चलाचलकी ॥ दिवस च्यारका चमत्कारहे, बीजलियां झलकी ॥ ख० ॥ सु० ॥ २ ॥ यो जग हे सुपणेकी माया, उस

बूंद जलकी ॥ विणस जावता वार न लागे, दुनिया जाय खलकी ॥ ख० ३ ॥ हंसा था देहीमें जब लग, खुसी हे मंगलकी ॥ हंसा छांम चले जब देही, मिटिया जंगलकी ॥ ख० ४ ॥ मनभावत तन चंचलहस्ती, मस्ती हे बलकी ॥ सद्गुरु अंकुश दीया आनके, वातां नई अलकी ॥ ख० ५ ॥ मात पिता सुत बंधव भाई, सब जन मुतलबकी ॥ काया माया सबे कारमी ॥ ए तेरे कबकी ॥ ख० ६ ॥ झूठ कपट कर माया जोमी, कर वातां छलकी ॥ बोझकी गांठ बंधी सिर तेरे, केसे होय हलकी ॥ ख० ७ ॥ देव धरम साहिबका समरण, ऐ वाता सलकी ॥ राग द्वेष ऊपजै नही जिनकूं, वीनती अखेमलकी ॥ ख० ७ ॥ इति पदं ॥

पुनः। अरज हमारी सुणो, दीनपति, कोन भांत तिरणा॥ हम दुखी फिरत संसार चतुर गति, सो तुमसें निरणा, दीनपति को० ह० १ ॥ घोराघोर तरकके भीतर, नानादुख भरना ॥ मारन तामन छेदन भेदन, उर देह धरणा ॥ दीनप० २ ॥ कबहुक तिरयंच जोनि पायके, गलै फास परना ॥ क्षुधा तृषा अरु शीत उष्णता, मार मार करना ॥ दी० ३ ॥ देव विभूति पायके सुंदर, देखश झूरना ॥ जब माला मुरझावण लागी, सोच किये मरणा॥ दीनप० ४ ॥ मनुष्या जनम पायके भम्यो, कहुं नांही थिरना ॥ साहिब तुम सरणागत राखो, जनम मरण हरना ॥ दीनप० ५ ॥

॥ मुक्ति जाणेकी डिगरी ॥

दूहा ॥ तीर्थंकर महावीरने, कौशल गणधर साज ॥ कानून प्ररुप्या हे दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप भावना, असल खुलासा सार, जिण पुरषां धारण किया, पोहच्या मुगति मझार ॥ २ ॥ चवदे सहस साधु हुआ, आर्या छत्तीस हजार, लाखा श्रावक श्राविका, पाया भवजल पार ॥३॥ (चाल–हीर

रूऊके ख्यालकी) मेरी अदालत प्रभुजी कीजीयै ॥ जिनसासन नायक, मुगती जाणेकी फिगरी दीजियै ॥ जिन० ॥ खुद चेतन मुद्दई बनाई, आठुं करम मुदाला ॥ दावा रसता मुगति मारगका, धोखा दे जाय टाला जी ॥ जि० १॥ तप कागद इष्टांम लिया, तलवाणा क्षमा विचारी ॥ सिझाय ध्यान मजवून वणाकर, अरजी आन गुजारी जी ॥ जि० २ ॥ मैं जाता था मुक्तिमारगमें, करमोंने आ घेरा ॥ धोखा देकर राह भुलाया, लूंट लिया सब मेरा जी ॥ जि० ३ ॥ बहोत खराब किया करमोने, चौरासीके मांही ॥ दुःख अनंता पाया मेने, अंत पार कछु नांही जी ॥ जि० ४॥ सच्चे मिले वकील कानूनी, पंच महाव्रतधारी ॥ सूत्र देख मसोदा कीना, तब में अरजी मारी जी ॥ जि० ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्ति ए, आठुं गवा बुलावो ॥ शील असेसर वडा चौधरी, उसकूं पूछ मंगावो जी॥ जि० ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी, हूआ सफीना जारी॥ हाजर आवो जुआब लिखावो, लावो साबूती सारी जी ॥ जि० ७ ॥ आठुं मुदा लै हाजर आये, मोह मुगत्यार बुलाये ॥ च्यार कषायरु आठे मदकूं, साथ गवाहीमें लाये जी ॥ जि० ८ ॥ ( टेर मुदायलेकी ) ॥ जिनशासन नायक, कूडा दावा है चेतन जीवका, जि० ॥ हमनें नही बहकाया इसकूं, ए हमरे घर आया ॥ करजा लेकर हमसे खाया, एसा फरेब मचाया जी ॥ जि० ९ ॥ विषयभोगमें रमिया चेतन, घाटा नफा न जाणा ॥ करजदार जब लारे लागा, तब लागा पिस्ताना जी ॥ जि० १० ॥ हाजर खडे गवांह हमारे, पूछियै हाल जु सारा ॥ विना लियां करजा चेतनसें, केसें करे किनारा जी ॥ जि० ११ ॥ ( टेर मुद्दीकी ) ॥ चेतन कहै सतावी मांही, सुण शासन सिरदार ॥ इमानदार है गवाह मारे, जाणे सब संसार जी ॥

जि० मे० १२ ॥ मैं चेतन अनाथ प्रभूजी, करम फरेबी भारी ॥ जीव अनंते राह चलतकूं, लूंट चोरासीमें मारी जी ॥ जि० मे० १३ ॥ वम्हे२ पंम्हित इन लूंटे, एसा दम वतलाया ॥ धरम कहा उर पाप कराया, एसा करज चढाया जी ॥ जि० मे० १४ ॥ असल एन सरकारी सूत्रमें, मन मत अर्थ घलाया ॥ धर्म एनमें हिंसा कहकर; उलटा जीव फसाया जी ॥ जि० मे० १५ ॥ न्नेद अर्थसें वेद पढाया, हिंसक यज्ञ वताया ॥ इसके फलसें स्वर्ग दिखाकर, एसा मुफे सतायाजी, जि० मे० १६ ॥ हिंसा मांहे धर्म वताया, तपस्या सेती मिगाया, इंद्रिय सुखमें मगन करीनै, फूंगा जाल फेलाया जी ॥ जि० मे० १७ ॥ एसा करो इनसाफ प्रभूजी, अपील होण न पावे ॥ हकरसी चेतनकी होवे, जन्म मरण मिट जावै जी ॥ जि० मे० १८ ॥ ग्यान दर्शन करी मुनसफी, दोनोकों समफाया ॥ चेतनकी मिगरी कर दीनी, करमूंका करज वताया जी ॥ जि० मे० १९ ॥ असल करज जो था कर्मोंका, चेतन सेती दिलाया, जि० ॥ सुध संजम जब करी जमानत, चेतन मिगरी पाई ॥ फागुण सुदि दशमी दिन मंगल, सन् उगणीस अठाई जी, जि० मे० २० ॥ इति ॥

॥ अथ अनुभव पद डिगरी ॥

साहब अदालत पर बैठ, श्रीपारस प्रवीण एन उत्तम चलाए है ॥ शील हे सिरदार और दान हे दरोगा जाके, दयारूपी वारण सत्त श्रावगण पर आए है ॥ ग्यान हे चपरासी ताको लग्यो हे मोहोसल ताकी, माल जामनीमें श्रीजिनवरजी लिखाए है ॥ रोसकी रसूम उर कमीसन लगे कर्मनकुं, मोहकों म्याद इसत्यार लटकाये है ॥ १ ॥ बैठके लिखेगा जब जीवकी जुवानबंधी, तबके कुछ स्वाल जवाब सतगुरुने वताए हैं ॥ ओमकार सा-

जी पायो पकड्यो अरिहंतजीको, अनुभव पद पायवेकी डिगरी कराय लाये हे ॥ अबतो दरकास मेंने करी हे तुमारे पास, साहब जिनराज अरज मेरी सुण लीजीयें ॥ अष्ट करम आठुं जाम करत हे कार साजी, साहिब बुलाय इसें पिसेमान कीजीयै ॥ २ ॥ मेंतो हूं गरीब मेरी करेगा वकीली कोन, पारस प्रवीण मेरी मिसल आज कीजीयै ॥ हारुं तो हाजर हजूरीमें रह्या करुं, जीतूं तो लगाय जुगल चरणनेंमें लीजीयै ॥ अब तो फरियाद नाथ करी हे तुमारे पास, मेरी दाद दीजीयै तो रावरी वडाइ हे ॥ मुनसबकी वात ओर मामलत अदालतकी, अब तो अपील मान अरजी लगाई हे ॥ झूठमूठकार साजी करत हे पांच तीन, साचो मत जेन जाकी अैन अधिकाइहे ॥ मेरेही पांच लोक मोहीकों झूठावत हे, जाते ग्वाही श्रीजिनराजकी लिखाई है ॥ ठोडकार साजी पायो पकड्यो अरिहंतजीको, अनुभव पद पायवेकी डिगरी कराय लाए हे ॥ ४ ॥ इति डिगरी संपूर्ण ॥

॥ नेमनाथजीकी लावणी ॥

नेमकी जान बणी भारी, देखनकूं आवे नर नारी ॥ अनंता घोडा रथ हाथी, मिनखकी गिणती नही आती ॥ ऊंठ पर धजा जो फरराती, धमकसें धरती थरराती (दुहा-साखी) समुद्रविजयजीका लाडला, नेम भनोंका नाम ॥ राजुलदेकूं आया परणवा, उग्रसेन घर ठाम ॥ प्रसन भई नगरी जब सारी ॥ नेमकी० १ ॥ कसुंबल वागा अति भारी, काने कुंडल छवि है न्यारी ॥ किलंगी तुररा सुखकारी, माल गलमोतियनकी भारी ॥ (दुहा-साखी) कानें कुंडल झगमगे, शीश मुगट झलकार ॥ कोडि भानुकी करुं उपमा, शोभा अधिक अपार ॥ वाज रह्या वाजा टंकसारी ॥ नेम० २ ॥ छूट रही वनकी छरराई, व्याहमें आये वडे भाई ॥ झरोखे

राजुलदे आई, जानकुं देखी सुखपाई ॥ (दुहा—साखी) उग्रसेनजी देखके, मनमें करे विचार ॥ वहोत जीव करि एकठा, वाम्हो भ-रयो अपार ॥ करी सब भोजनकी त्यारी ॥ नेम० ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये, पशुजीव सबही कुरलाए ॥ नेमजी वचन फुर-माये, पशुजीव काहेकूं लाये ॥ (दुहा—साखी) याको भोजक होवसी, जान वालते एह ॥ एह वचन सुणी नेमजी, थरहर कांपे देह ॥ भावसें चढ गये गिरनारी ॥ नेम० ४॥ पीछेसें राजुलदे आई, हाथ जब पकम्यो छिन मांही ॥ कहां तूं जावे मेरी जाई, उंर वर देहूं मुकताई ॥ (दुहा—साखी) मेरे तो वर एकही, हो गया नेमकुमार ॥ और भुवनमें वर नहीं, कोटी करो विचार ॥ दीक्षा जद राजुलने धारी ॥ नेम ० ५ ॥ सहेलियां सबही समझावें, हिये राजुलके न-हि आवे ॥ जगत सब झूठो दरसावे, मेरे मन नेमकुमर भावे ॥ (दुहा—साखी) तोम्या कांकण दोरमा, तोम्या नवसर हार ॥ काजल टीकी पान सुपारी, त्याग्यो सब सिणगार ॥ सहेल्यां सबही विल-खाणी ॥ नेम० ६ ॥ तज्या सब शोले सिणगारा, आभूषण रत्न-जम्ति सारा ॥ लगे मोहे सबही सुख खारा, छोमकर चाली निर धारा ॥ (दुहा—साखी) मात पिता परवारकूं, तजतां न लागी वार ॥ वियोग करके चली आपसुं, जाय चढि गिरनार ॥ झूरति छोमि मा प्यारी ॥ नेम० ७ ॥ दया दिल पशुवनकि आई, त्याग जब किनो छिन मांहि ॥ नेमि जिन गिरनारे जाई, पशुवनके बंधन छुमवाई (दुहा—साखि) नेम राजुल गिरनारपें, लिनो संजमदान ॥ नवलराम यह करि लावणी, ऊपन्यो केवलग्यान ॥ जिनोकि किरिया बुध सारी ॥ नेम० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेमनाथजीका चोमासा लिख्यते ॥

गई घटा गगनमें कारि, राजुलकुं विरह दुख भारि

॥ डा० ॥ चोमासो लग्या रस झिना, अलि अषाढ रंग महिना ॥ च्यारुं तरफसैं बादल पिना, बिजलिने चमकणा किना ॥ दिल होत धमकता सिना, में अबला सखी पति हीना ॥ ( झमाना ) सरररर चलत समीर, थरररर करत सरीर ॥ मरररर मरत समीर ॥ अलि कैसी करुं तदबीर, बुरी तकदीर, पीया विन प्यारी ॥ राजुलकूं वि० १ ॥ श्रावणमें श्याम घनघोर, जरजोर बोलते मोर ॥ दादुर मिल करते दोर, पिउ२ पपइया सोर ॥ झम लग्यो बूंद झमझोर, बिच चमके दामनी कोर ॥ ( झमावनी ) खझझझझ खघनमाला, तझझझझ जल परनाला, अझझझझ नाला खाला, में दुखी हुई बेहाल, हीयेमें साल, हुई जलधारी ॥ राजु० २ ॥ भाद्रवमें पवन प्राचीना, बादलमें धनुष रंगीना ॥ जंगलमें नदी स्वर झीणा, ज्युं बाजे मनोहर बीणा ॥ अब एसें कहो क्या जीना, प्रीतमनें मुझें दुख दीना ॥ ( झमाना ) युं विलपत मुख मुरझाई, सखियन मिल दौड जगाई, यूं विलखत वचन सुनाई ॥ सखी देखो पीयाकी रीत, तोडके प्रीत, गये गिरनारी ॥ रा० ३ ॥ आश्विनमें जरा नहीं धीर, यादुचंद भये वे पीर ॥ उठ चली नेमके तीर, काटनकूं कर्म जंजीर । प्रीतमसें लीयो अकसीर, व्रत संजम समकित हीर ॥ (झमाना) शिव राजुल नेम सिधाए, इंद्रादिक जसु गुण गाये, भविजन मिल शीश नमाए ॥ मुनि कहे कपूराचंद, प्रेमसे बंद, जाऊं बलिहारि ॥ राजु० ४ ॥

॥ सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी ॥

चिदानंद महाराज राज हे, प्रितम दोनुं प्यारीका ॥ झगडा दिल धरकर सुण लेणा, सुमति कुमति दोउं नारीका० ॥ चि० ॥ कहंति सुमता सुणरी शोकन मोह लिया प्रितम प्यारा, अविरत उर कषाय इस्कमें भूल गया सुधबुध सारा ॥ तूं वैरण हे जनमरकी

तेरा संग लगे खारा, तेरे वसमें हो गया प्रीतम पलक नहीं होता न्यारा ॥ कहुं खराबी कब लग तेरी तेरा चरत ठंदगारीका ॥ जगमा दि० १ ॥ कहती कुमता सुणरी सुमता मेरा संग अनादीका, वो मेरा प्रीतम इस्क ज्ञमर है, इंद्री पांच सवादीका ॥ कर सिणगार कसाय सोलेके राग रंग उनमादीका, मैंहुं मोह-रायको ललनी वो प्रीतम सहजादीका ॥ तेरे पाश नही आवेगा वालम वो हे फुल हजारीका ॥ ज० २ ॥ सुण रे वैरन बात ह-मारी तेरे संग डुख पावेगा, तेरा महल पातालखोकमें जहां वो वास वसावेगा ॥ संगतके फल उसकूं लगेगा फिर पीछे पछतावेगा, आखिर छेह देवेगी वैरण कैसें प्रीत निज्ञावेगा ॥ मैं समजाउंगी प्रीतम मेरा जो मानें दिलदारीका ॥ ज० ३ ॥ कुमता बोली बात सुमतसें तेरे संग क्या होणा हे, नही जहां वस्ती सूना मंदिर सुख डुख दोनुं खोणा हे ॥ खाणा पीणा नही जहां पर राग रंग नही सोणा हे, नही उजाला नही अंधेरा शिल्ला सहज विछोना हे ॥ एसा मेरा ज्ञोग छोमके सेहे न डुख अणगारीका ॥ ज० ४ ॥ कहती सुमता सुण मेरे प्रीतम इसकी संगत नही करणा, टुक इक सोच करो दिल ज्ञीतर मेरी अरज दिलमें धरना ॥ निगोद इस्की बोत कठिन हे समजके बूजके नहिं पमना, पहली सुखसें फिर डुख उपजे वो सुखसें चातुर मरणा ॥ रतन तीनका तूं हे ज्ञोगी मुगति महल सिणगारीका ॥ ज० ५ ॥ एसे बोल सुणे सुमताके चिदानंद उठके चल्ला, नेणोंमें आंसु ज्ञर रोती प्रीतमका पकमया पल्ला ॥ मत ना छेह दिखावो साजन सोकणकी सुणके सल्ला, में अबलासें दगा करोगे केसें होय तुमरा ज्ञल्ला ॥ मैंहुं दासी जनम२की मानो वचन करारीका ॥ ज० ६ ॥ तजके संग कुमतनारीका सुमता प्रेम जगाया हे, संजमसे सिणगार वणाकर

शील सुगंध लगाया है ॥ प्रीत रीतसे सदा मगन हुय मुगतिमहल जब पाया है, सीख सुरंगी मानो भविजन अपणां दिल सम झाया है ॥ कहे रामऋद्धिसार प्यारसें तजो ख्याल संसारीका ॥ झ० ७ ॥ इति पदं ॥ नेमप्रभूकी लावणी ॥ सज शोले सिणगार हुई हुसीयार, सहेल्या सारी, चली राजुल गिरनारी रे० ॥ कर केसरिया वेस छिटक रह्या केश, अजब नखराली, खुली तो जेसे केसर क्यारी रे ॥ गल मोतियनको हार, वणी तो दिलदार हंस जेसी चाली, मधुर मुख वैण उच्चारी रे ॥ (उठावणी) नेणनमे कजरा हद नीका, सिर सोहै रतनोका टीका ॥ चंदवदन सा हुसन परीका, लगी पियासें लगन, मगन दिल सघन घटा जेसें कारी ॥ चलीतो रा० १ ॥ करे पियासें अरज गरज मेरी सुण वालम दिल वाते, गुने विन क्युं छिटकाते रे ॥ में चरणनकी दाश रहो मेरे पाश जोवन मदमाते, जोड़ कर शीश नमाते रे ॥ (उठावणी) आठ भवनकी प्रीत हमारी, आप पिया में प्रीतम प्यारी ॥ साजन प्रीत निभा इकतारी, तेरे विना नहीं चैन, नींद नहीं रैन, सभी तो लगे खारी ॥ च० २ ॥ सजके खुब वरात साथ लिये राम कृष्णसे भाई, पहली तो क्यों लगन लगाई रे ॥ अब क्या देखी खोट लगा दिल चोट चला मुरझाई, कहो मुझकूं सम झाई रे ॥ (उठावणी) तुमसे प्रीतम नहीं कोइ स्याणा, दिलमें अरज हमरी लाणा, सुखसें रंगभर चैन उठाणा ॥ नेणा वरसे मेह लग्या तुमसे नेह, विरहकी मारी ॥ च० ३ ॥ नेम प्रभु दे ज्ञान एक धर ध्यान सदा निभ जाणी, प्रीतका अंत न आवे रे ॥ विजली जेसी चमक दमक जेसें उस बूंदका पाणी, अंत मोती खिर जावे रे ॥ (उठावणी) ज्योतिरूपका भज ले सरणा, नित२ प्रेम उसीसे करणा, उर किसीके फंद नहीं पड़णा, मेरा वचन ले

मान, ज्यान धोखेकी समझले सारी ॥ च० ४ ॥ गुणवंतोका संग रहे नित रंग समझले स्याणी, जगत थोड़ी जिंदगानी रे ॥ चली जाय सब खलक पलकका नहीं भरोसा जाणी, करो सुकृतकी निसाणी रे ॥ (झड़ावणी) इतना कह्या जब दिल समझाया, अविचल राजुल नेह लगाया, सदा मुगतिमें वास वसाया, कहे राम शुद्धसार, करो तो एसा प्यार, नाम रहे जारी ॥ चली० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चंद्रावदनी मुखसे केती गिरनारीकूं जावोगे, राजुल भन्नी अरज करत हे प्रीतम कब घर आवोगे ॥ दुष भर गाती मनमें चिंता नेणामें आसुं झरते, हाथ जोड़के राजुल भन्नी वार वार विनती करते ॥ ज्यान वणाई व्याहन आए घरमें आनंद वरते, किस विध छांड़ चले गिरनारी मेरी दया नहिं दिल धरते ॥ में चरणाकी खासी जो दासी तुम विन मेरे नही सरते, ज्यूं सागरमें जल विन मछली प्राण घड़ी पलमें हरते ॥ (झड़ावणी) हे तुं महिर निजर कर आव फेर रथला रे, तूं चंदवदन दीदार मुझे दिखला रे ॥ हे तूं दिलकी घूंडी खोल चूक वतला रे, हे तुं मोहनगारा प्यारे हे जी मुझकूं साथ निभावोगे ॥ रा० १ ॥ दुखसुं भरी वातां मत वोलो राजुल मन धीरज धारो, एकर थांसु मिलणे कारण मुगतीमहलमें मन मारो ॥ उर नार नही दाय हमारे शिवनारीसुं मन प्यारो, पांच सखी ले साथ सिधावो मुगतिमहलकूं शिणगारो ॥ कवल वचन थांसुंमें कीनो राखो मनमें पतियारो, मुगतिमहलमें आसां हे सुंदर सोच फिकरकूं विसारो ॥ (झड़ावणी) हे तुं चंपकली सी नार जोवन मतवाली, हे तुं मिरगानेणी मुख चंद मधुरधुनिवाली ॥ हे तूं शील सलूणी जयशेनकी लाली, हे तूं लागे सबकों प्यारी हे जी मुझकूं कदि न भुलावोगे ॥ रा० २ ॥ कपटी साजन हसकर वोले मनकी घुंडी

नहि खोले; या दुनिया मुतलबकी गरजी बिन मुतलब मुख नहिं बोले ॥ सहज प्रीतकी रीत लगाणी फिर निभणी मुसकल होवै, धन मानव जो प्रीत निभावै तरश अधकी रंगरोलै ॥ अरज वीनती करकै राजुल वचन रसीला अणमोले, जलदी आयजो नेमकुमरजी मुगतिमहलमें रमझोलै ॥ ( झरावणी ) देवा चंदकपूर अपूरब ख्याल वणावै, देवा नरनारी मन रंग रागसुं गावै ॥ देवा झांझ ताल डफ ढोल मृदंग वजावै, देवा आनंद हर्ष वधावै हे जी मन वंछितफल पाउंगे ॥ रा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ कोइ देख्या रे हो सांवलिया साहिब प्यारा लागे रे० ॥ अश्वशेन घर जनम लियो अवतारी रे, वामानंदन नीलवरण सुखकारी रे, चंद वदन मनमोहन मूरति प्यारी रे॥ हां रे० मु० कोइ० १ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ग्यान सवाई रे, कमठ महा शठ मान हर्यो दुखदाई रे, मंत्र दियो हितकारी नाग सहाई रे ॥ हां० नाग० को० २॥ सिर पर मुगट श्रवण कुंडल हद भारी रे, कर श्रीफल भुजबंध झलक हिव न्यारी रे, गल मोतियनको हार बण्यो गुलझारी रे ॥ हां रे गु० को० ३ ॥ पतित उधारण तारण विरुद वडाई रे, पारस२ नाम जपो वरदाई रे, चंद कपूरा प्रणमें प्रेम वधाई रे॥ हां रे प्रे० को० ४॥

॥ अथ केसरियानाथ लावणी ॥

सुणजो बातां राव सदाशिव, मत चढ जाणा धूलेवा ॥ गढपति उनका वडा अडंगा, मत छेडो तुम उन देवा ॥ सु० १ ॥ सकलावत चंडावत बोले, हमही नोकर उनहीका ॥ हींदुपति वाकूं हाथ जोडै, तीन भुवन शिर दे टीका ॥ सु० २ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल सवेही, सुरनर वाकूं ध्यावत हे ॥ इंद्र चंद्र मुनि दर्शन आवे, मनकी मोजां पावत हे ॥ सु० ३ ॥ गया राज उनहीसें आवे, निर्धनियाकुं धन देवै ॥ वांझ खिलावै सुंदर लडका, सदा

सुखी जो प्रभु सेवे ॥ सु० ४ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जाके, रोग निवारे भवरका ॥ भूप भुजंग महार करि नदियां, चोरन बंधन अरिदवका ॥ सु० ५ ॥ धौं धौं धौं धौं धोंसा वाजे, दशो दिशामें हे मंका ॥ भात तातिया नहीं भलाइ मत वतलाओ गढ वंका ॥ ॥ सु० ६ ॥ राणाजीके ऊमरावकी, मानत नहिं हे ये वातां ॥ थांरा कीया ओहीज पावो, म्हे नाहिं आवां थां साथां ॥ सु० ७ ॥ मूछ मरोम चढा अभिमाने, जहर भरा हे निजरूमें ॥ रुषभदेव हे साहिब सच्चा, देख तमासा फजरूमें ॥ सु० ८ ॥ मथाराम सुत भणे मूलचंद, वमे सितंवर तुम देवा ॥ फोज विखरगई घर२ घोमा, लज्जा राखो तुम देवा ॥ सु० ए ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ केसरियानाथ महात्म लावणी ॥

॥ दूहा ॥ आदि करण आदिम जगत, आदि जिनंद जिनराज ॥ धूलेवनाथ जाचो धणी, वरणुं श्रीमहाराज ॥ १ ॥ (चाल लावणी) कास्यपगोत इक्ष्वाकु वंशमें, मरुदेवा जननी जायो ॥ नाभि नरेसर वंश उजाखन, आदि धर्म जस प्रगटायो ॥ १ ॥ चोसठ सुरपति देव देवी मिल, मंदिर गिरपे न्हवरायो ॥ इसो रुषभ निधि प्रगट कल्पतरु, सुरनर मुनिजन नित ध्यायो ॥ २ ॥ खमगदेशमें नगर धुलेवे, जास दमामा घुरता हे ॥ जाकी महिमा अपरंपारा, कविजन कीरत करता है ॥ ३ ॥ आदौ मुरत काल असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरिंदा ॥ सुरपति नरपति वंदित पद युग, वलि पूजत सूरज चंदा ॥ ४ ॥ लाख इग्यार हजार पंचासी, वरस पांचसे पचासा ॥ इतने वरस पर लंकागढमें, पूजित रावण गुणरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र शीता अरु लछमन, ए मुरत पूजन लाए ॥ नयरी अयोध्या जाते अधविच, नयर उजेणी ठहराए ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणा धरमनकी, वा-

पकरम अरु आपकरमकी, नई लगाई मरमनकी ॥ ७ ॥ आपक-रमके ऊपर नृपनें कुष्टी वरपें परणाई ॥ मयणा चिंते कांई नवाई, करम लिखी सो बन आई ॥ ८ ॥ इक दिन जिनपूजन गुरुवंदन, आई श्रीजिनमंदिरपें ॥ वंदन पूजन करके इक चित, ध्यान धरै मनकंदरपें ॥ ए ॥ ( मोतीदाम छंद ) तूंहि अरिहंत तूंहि भगवंत, तूंहि जिनराज तूंही जग संत ॥ तूंहि जगनाथ तूंहि प्रतिपाल, तूंही मनमोहन तूंही दयाल ॥ १ ॥ तुंहि भवभंजन भाव सरूप, तूंहि अरिगंजन रंजन भूप, तुंही अविनासी तूंही वीतराग, तूंही माहाराज तूंही वमभाग ॥ २ ॥ तूंही गुण-धाम तूंहि विसराम, तूंहि नवनिद्ध तूंहि वरु नाम ॥ तूंही अघ-नाश तूंहि अविनाश, तूंही मतिवंत तूंही मतिवास ॥ ३ ॥ तूंही गुण केवल रूप अनंत, तूंही जगतारन तारण संत ॥ तूंही जग ध्येय तूंही जग ध्यान, तूंही चिदरूप तूंही भगवान ॥ ४ ॥ तूंही मम तात तूंही मम मात, तूंही मम भ्रात तूंही मम गात ॥ तूंही सरणागत राखणहार, तूंही दुख दोहग टालणहार ॥ ५ ॥ (चाल लावणी) ॥ करूं अरज एक तोपें जिनपति, कंत कुष्टसें नही मरते ॥ पूरब करमके लिखत लेख जे, किसके टारे नहीं टरते ॥ १ ॥ पण तुज शासन जगत देखना, जगत ढंढेरा वाजत हे ॥ आपकर्म अरु जैनधर्मके, फल पाई यों लाजत हे ॥ २ ॥ यो दुख मोसें सह्यो जात नही, आदिनाथ जग रखपाला ॥ करुणाकरके रोग निवारण, गुण कीजे जग प्रतिपाला ॥ ३ ॥ यक्ष प्रसन्न हुय फल बीजोरो, हाथतणो फल तब दीनो ॥ मयणा तब उल्लास भई मन, चिंते सब कारज सीनो ॥ ४ ॥ नौ दिन नमण नीर तनु फरसें, कुष्टरोग सब नासत हे ॥ कामदेव अरु अमर समोवरु, नृप श्रीपाल सोहावत हे ॥ ५ ॥ या कीरत प्रभु तिहारी भूतल,

प्रगट प्रबल है जस तेरो ॥ आसू चैत्र मासमें महिमा, देश२में प्रभु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागड़देश वड़ोद नगरमें, जग पर प्रभु करुणा कीनी ॥ कितने वरस लग मदीमें महिमा, अविचल भूतल ऋद्धि दीनी ॥ ७ ॥ दिल्ली पर तुरकान भयो तब, पातस्याइ लड़वा आयो ॥ बूत भूत पत्थरकी मूरत, जड़मुल्लासें उखरायो ॥ ॥ ८ ॥ बहुत दीनां लग की विलराइ, थाको यों वाचा बोले ॥ देव हिंदको वड़ो जागतो, यूं बोलत फिर२ डोले ॥ ९ ॥ सुनो वात काजी मुल्लां तुम, एक वातसें त्रासेगा ॥ गौ ब्राह्मण प्रतिपाल कहाई, गो वधसें ये नासेगा ॥ १० ॥ गो वध करण लगे जब निजरे, देख सके क्यों प्रतिपाला ॥ करण युद्ध जब भये महाबल, शस्त्र झड़ोझड़ विकराला ॥ ११ ॥ ( दूहा ) महा युद्ध करणे लगे, घाव चोरासी अंग ॥ करी मलोखा गाड़ली, आये धुलेव सुरंग ॥ १ ॥ ( चाल लावणी ॥ ) गांव धूलेवा वंशजालमें, गुप्त रहे हैं प्रभु धरती ॥ गाय एक कोडी वनियनकी, आइ वाहां चरती२ ॥ स्रवे तिहां पयधारा शिर पर, सांझ समें फिर नहीं दूजे ॥ रीस करी तब गोपालन पर, गोपाल थरहर धूजे ॥ दूजे दिन गौ लारे आयो, लह्यो भेद कह्यो वनियनपें ॥ शेठ आय जब नजरे देख्यो, चकित भयो है तन मनपें ॥ ३ ॥ मध्यरातमें सुपनो दीनो, ऋषभनाथकी मूरत है ॥ बहिर निकासो करो लापसी, भीतर मूरत पूरत है ॥ ४ ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी, मत काढे तूं नव दिनमें ॥ कियो सेठने हुकम प्रमाणे, आये संघ बहु ७ दिनमें ॥ ५ ॥ केइ उपवासी केइ व्रतधारी, केइ अलुआणे पांव चलै ॥ केइ लोककूं दुकर बाधा, कब प्रभुको दरशन मिले ॥ ६ ॥ यूं सब लोकां दरस तरसकी, कहे लोक मूरति काढो ॥ लाओ२ महाराजकी मूरत, संघ सबे लीनो आडो ॥ ७ ॥ जबरदस्तसें दिवस सातमें, लापसी

मंदिर तब कीने, अंत२ जर जण रहाए, संघ लोंक दर्शन दीने ॥
॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें इव्य दिखायो, संघे मिल देवल कीनो ॥
मध्य विराजे रुषन तखतपर, कलियुगमें यो जस लीनो ॥ ए ॥
( दूहा ) संवत अठारे तेसठे, जाज सदाशिव राय ॥ कियो धंगानो
डुष्टने, जाखूं वरण वनाय ॥ १ ॥ ( मोतीदाम छंद ॥ ) सदा-
शिव राय चिंते मन एह, लूंटे बहु धाम जमी पर जेह ॥ जिह्वां
पति नाथ धूलेव कहाय, लखो लग इव्य जंमार सुणाय ॥ १ ॥
जावां अब लूंटण गाम धुलेव, महुं सब माल जई ततखेव ॥ आयो
निज फोज लेई दल गाज, तोपां दोय साथ लियां बहु साज ॥ २॥
कंपु दोय लार लिये फिरंगाण, ऊंठा जर साथ लिया कोकवाण ॥
तवां बहु लोक कहे माहाराज, नही इह कारण कृत्य अकाज ॥
॥ ३ ॥ एतो वह जाजल देव कहाय, रहे नहीं लाज ति
हारिय काय ॥ तवां फिर बोले शदाशिव जूप, यहां सब माल
अवां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत डुष्ट करुर, कीयो नज
राणह नाथ हजूर ॥ राख्यो नही नाथ तबे नजराण, जयो मन
चक्रितमान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चिंत जंमारी बुलाय, मीठे
वच बोल सबे ललचाय ॥ लई संग आय मुकाम मझार, कियो
तब कूच लई सब लार ॥ ६ ॥ करे तब गाम पुकार२, जंमारी सबे
इ पुकार२ ॥ करो अब बाहर नाथ दयाल ॥ गयो किहां आज
गरीब निवाज ॥ चढो अब वाहर राखण लाज ॥ ८ ॥ ( दुहा )
उण समें कोन सेवको, वाहण तारण काज ॥ गये अधिष्टायक
नाथजी, जेरु गये वहागाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी
सहेर धुलेव मझार ॥ कियो अकारज डुष्टने, शीघ्र चलो जन तार
॥ २ ॥ आए तुरत महाराजजी, करवा जन संजाल ॥ दो घोडे
दोनुं चढे, जेरुं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ जिह्व कोप आपे कियो, ब-

शी दिशि फौज हजार ॥ मार२ चो तरफतैं, भई लराई त्यार ॥ ४ ॥ ( भुजंग प्रयात छंद ) कूंकू कुकूं कुकू वहे कोकवाणं, सणसणं सणसं तीर तरकस्स बाणं ॥ धुंवाके धमाके वहे नाल गोला, जिसा कर्कसा जम्मरा नयनरोला ॥ १ ॥ किते अंगपें शस्त्ररा घाव लागे, किते मारतैं कंपते दूर भागे ॥ किते दंतपें तिरण लेवे वराका, किते थरथरे भ्रास होवे तिराका ॥ २ ॥ किते रसुल्लाइलल्ला पुकारे, किते दीन होके खुदापें संभारे ॥ किते नाथपें केसरा खून माणे, किते नाथकूं जागती ज्योत जाणे ॥ ३ ॥ सदाशिवनें घाव लागे अठारो, पुनी भाउ जसवंत दोनुं संहारो ॥ वमी कोप जाणी सबे फोज भाजी, हुई केशरीनाथकी जीत वाजी॥४॥ सदाशिवने आखमी अटक लीनो, सवापांचसें रकमरो खून दीनो॥ इसो नाथ धूलेवरो महंगाजी, सदा केशरानाथरी जीत वाजी ॥५॥ ( दूहा ) या विध कलियुग जग जणा, तारया केई जिनराज ॥ दीपविजय कविराजकूं, महेर करो महाराज ॥ १ ॥ ( मोतीदाम छंद ) तूंही नवनिद्ध तूंही अष्टसिद्ध, तूंही मनवंछित वंछित रुद्ध॥ तूंही सिरदार तूंही किरतार, तूंही सरणागत दीनदयाल ॥ २ ॥ तूंही कामकुंभ तूंही कामधेन, तूंही सुरवृक्ष तूंही मम शेन ॥ तूंही दक्षिणावर्त्त दायक देव, तूंही विसराम तूंही वम सेव ॥ ३ ॥ तूंही मम प्राण आधार जरूर, तूंही मम इछित दायक नूर ॥ तूंही मम भूप तूंही पतसाह, तूंही मम रुद्ध भंमार अगाह ॥ ४ ॥ तूंहि मम मंत्र तूंहि मम यंत्र, तूंही मम सत्य तूंही मम तंत्र ॥ तूंही गछनायक तूंही श्रीपूज्य, तूंही मम पूज्य तूंही जगपूज्य ॥ ५ ॥ ( लावणी चाल ) नाथ धुलेवा कीरत सुणकें, देश२ नृप आवत है, केशरमें गरकाब रहते, केशरनाथ कहावत है ॥ १ ॥ सहर परगणे देश दिशावर, फिरे दुहाई नाथनकी ॥ हिंद

मूसल वर्ष राणा हाजर, पूरे इछित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट थलवट वाटघाटमें, रण रावल दुख दूर हरे, इक चित्त ध्याने जे नित समरे, अखय खजाना अन्नर न्नरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप धपमप धपमप, ताल पखावत राजत हे ॥ गम्गम् दौ गम्गम् दौ गम्गम्, धों धों नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह ऊदेपुर, न्नीमसिंहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागनमें ॥ ५ ॥ संवत अढार पच्चोत्तर वरषे, फागुण सुदि तेरश दिवसै ॥ मंगलके दिन दीपविजयकूं, दरशन परशन दो उलसे ॥ ६ ॥ (कलश—छप्पय छंद ) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, न्नरण पोष पावन करन ॥ जुगलधर्म नीती हरन, सब करम छंध घनजरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन, सुकनु वरन शुद्ध चरन, इंद्र चंद्र पदजुगल सेवन, जगत विरुद तारनतरन ॥ दीपविजय कविराज बहादुर, रुषन्ननाथ असरनशरन ॥ १ ॥ रुषन्ननाथ महाराज, सबे दुख दालिद्र न्नंजन ॥ ऋषन्ननाथ महाराज, सबे न्नूप मनरंजन ॥ ऋषन्ननाथ पृथ्वीनाथ, समरथो बाहर धाये, ऋषन्ननाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय कविराज बहादुर ॥ खलक मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव तुं, सुरनर सब कीरत कहे ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रन्नूकी, जन्म वनारशी हे जिनका, घननं घननं वाजे घंटघण, एसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥ जब कमठासुर कोप कियो तब, स्यामघटा बिजुरी चमका ॥ गिरुआ गाज जल मूसलधारा, धरू धरू काजन शंका ॥ आ० २ ॥ थररर आशन कंपे सुरको, तब धरणीधर चित्त चमका ॥ फण विस्तार हजार किया तब, झमक जाय प्रन्नु तन ढंका ॥ आ० ३ ॥

जब पद्मावती सब सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ ध्रमकट धौं मादल वाजत, घननं घुग्घरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी कट नौवत बाजै, धौं धौंकट डुंडुंभि धौंका ॥ या विध गीत संगीत बजन सब, गंधर्व गान करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररर तंत ताल सब, झफ झौं झौं करते झंका, भेरण फेरणके झनकारे, झागझदी झालरके झंका ॥ आ० ६॥ सुरनर इंद्र सब जै जै करते, जीवत सफल भया जिनका ॥ अमृत उदय तिण वेर भयो सुख, को विस्तार कहै तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ आदि जिनेशर पारणो ॥

आदि जिनेशर कियो पारणो, आ रस सेलडी ॥ आ० ॥ घडा एकसो आठ झेलडी, रस भरिया छै नीका ॥ उलटभाव श्रेयांश वहिरावै, मांझ दिवीआहूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंदुभी वाज रही है, सोनइयारी वरखा ॥ बारे माससूं कियो पारणो, गई भूष सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ ऋद्धि सिद्धि कारज मनोकामना ॥ घर२ मंगलाचार ॥ दुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा त्रीज तिवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेत्रूंजा सिद्धक्षेत्र हे, मोटो कहिये धाम ॥ श्रीसंघका मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥ संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज ॥ बे करजोडी नानु कहता, ऋषभदेव महाराज रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी लावणी ॥

श्रीअजीतनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवरजी ॥ सेवक शिरनामे, तने उच्चारे अरजी ॥ कर माफी मारा वांक, रजलियो रांक, अनंता भवमें ॥ अ० ॥ आव्यो छुं तारा शरण, वली दुख दवमें ॥ क्रोधाधिक धुकता चार, खरेखर खार, लग्या मुझ केडे ॥ ल० ॥ वली पापी म्हारो नाथ, छेक छेडे

॥ आ मुजरो मुफ भगवान, करुं गुणगान, ध्यानमें धरजी ॥ धा० ॥ सेवक० १ ॥ में पूर्ण कर्या छे पाप, सुणजो आप, करुं करजोमी ॥ क० ॥ मुफ भूंफामां भगवान, भूल नही ओमी ॥ जो वहिंसा अपरंपार, करी किरतार, हवे सुं करवुं ॥ ह० ॥ कूमूं बहु बोली, साचने सुं हरवुं ॥ तुफ खोलामां मुफ शीश, जाण जगदीश, गमे ते करजी ॥ ग० ॥ सेवक० २ ॥ में किया बहुत कुकर्म, धरी नहि धर्म, पूर्ण हुं पापी ॥ पू० ॥ अवलो थइ थारी आण मेंज उत्थापी ॥ में मुरख निंदा घणी, मुनि पर तणी, करी हरखायो ॥ क० ॥ परदारा देखी लबारू, हुं ललचायो ॥ किंकर कहे केशवलाल, आणीनें व्हाल, दुःख तुं हरजी ॥ दु० सेवक० ३ इति पदं ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी लावणी ॥

पिया मेरा हो गिरनार सिधाए, हम संग मोह निवारयो रे ॥ समुद्रविजे सुत नेमजी रे, सब जादव सिरताज ॥ नायक तीनों लोकके रे, गुणनिध गरीबनिवाज ॥ मो० १ ॥ वहोत हठांसुं व्याह मनायो, हलधर कृष्ण मुरार ॥ षट्पंचाश कुल कोटि प्रमाणे, जादव उनके लार ॥ मो० २ ॥ खूब वरात बणायके रे, उग्रशेन दरबार ॥ आए प्रभुजी हरखसूं रे, चढगये गिरनार ॥ मो० ३ ॥ पशुवन पर कीनी दया रे, मो पर कीनो रोस ॥ विन अवगुण छोमो मती रे, कोइ नही छे दोस ॥ मो० ४ ॥ सावण सुद षष्टी दिने रे, इंद चंद परिवार ॥ दीक्षा लीधी शुभ मने रे, करम दिया सहु जार ॥ मो० ५ ॥ नेत्र हुताशन नंदकू रे, चैत्र शुकल शुभ वार ॥ श्रीजिनहंस सूरीसरू रे, श्रीखरतर गणधार ॥ मो० ६ ॥ राजुल पहली नेमसुं रे, मुगतिमहलमें जाय ॥ प्रीत निभाई जुगतसुं रे, ऋद्धसार गुण गाय ॥ मो० ७ ॥ इति पदं ॥

दूहा ॥ इक मोथी अरु पदमनी, नहि दीजै पर हत्थ, वा

विगर्भै पंन्डित विना, वा विगर्भे पर सब ॥ १ ॥

॥ अथ दिवाली स्तवनं ॥

धन२ मंगल एह सकल दिन, पूजो प्रन्नाते चाली रे ॥ आज म्हारे दीवाली अजुवाली ॥ १ ॥ गावो गीत वधावो गुरुनें, मोतीर्भै थाल पूरावो ॥ चार२ आगे चतुर सुहागण, चरण कमल चित्त सारी रे ॥ आ० ॥ २॥ धन धूतु धनतेरस दिवसे, काले चव दश काली ॥ पाप हरणने पोसो कीजै, कर्म मेलो सब टाली रे ॥ आ० ३ ॥ अमावसकी परब दिवाली, फरती झाककमाली, घर२ तो दीवलिया झलके, रात दीसै अजुवाली रे ॥ आ० ४ ॥ अम्मा वशकी पिछली राते, अ८ करम सब टाली, श्रीमहावीर निरबाणे पोहता, अजरामर सुखकारी रे ॥ आ० ५ ॥ पन्डिवाने दिन जुहा रपटोला, ए रत रूर्भी सारी ॥ गुरु गौतमना चरण पखाली; रीझ पामी रहियाली रे ॥ आ० ६ ॥ बीजे तो वली न्नावर्भवीजर्भ, बे नर्भली अति वाहाली ॥ ए पांचे दिन होयां रे पनोता, एवे२ ह रंखे गाई रे ॥ आ० ७ ॥ हरख विजय पंन्डित इम बोलैं, करो स हु सेव सुहाली ॥ रूपविजय पंन्डित गुण गावै, जय२ बाजैं ताली रे ॥ आ० ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे दीवाली रे थई आज, प्रन्नुमुख जोवाने, सरया२ रे सेवकना काज, न्नवदुःख खो वाने १ ॥ महावीरस्वामी मुगते पुहता, गौतम केवलज्ञान रे ॥ धन अमावस्या धन दीवाली म्हारे, वीरप्रन्नु निरवाण ॥ जिन मु० २ ॥ चारित्र पाल्या निर्मलानें, टाल्या ते विषय कषाय रे ॥ एह वा प्रन्नुने वांदियेतो, उतारे न्नव पार ॥ जिन मु० ३ ॥ बाकुला वहोरया वीरजीने, तारी चंदनवाल रे ॥ केवल लइ प्रन्नु मुके पो हता, पाम्या न्नवनो पार ॥ जिन मु० ४ ॥ एवा मुनिने वांदिये जे, पंचम ज्ञानने धरता रे ॥ समवसरण देइ देशना रे, प्रन्नु ता

रया नरने नार ॥ जि० ५ ॥ चोवीशमा जिनेसरू रे, मुकतितणा दातार रे ॥ करजोमी कवियण एम भणे, मारो भवनो फेरो टाल ॥ जिन मु० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ पोढो२ जी ऋषभ विहारी, निद्रा वश नयण तिहारे ॥ पो० ॥ प्रभु आलस अंग हुलसाई, पूछै मरूदेवा माई ॥ पो० १॥ प्रभु नंदा सुमंगला राणी, भन रुच२ सेज बिछाणी॥ पो० २ ॥ प्रभु नवलसु नेह सनेहा, प्रभु मनवंछित फल देहा ॥ पो० ३ ॥ प्यारे सेवक हितकर गावै, मनवंछित फल पावै ॥ पो० ४ ॥ अजर अमर पद पावै, करजोमी शीश नमावै ॥ पो० ५ ॥ इति ॥

॥ मंगल स्तवन ॥ राग सामेरी ॥

॥ कीजै मंगल च्यार, आज घरे नाथ पधारया ॥ कीजै० ॥ पहिले मंगल प्रभुजीकूं पूजूं, घसी केसर घनसार ॥ आ० १ ॥ बीजुं मंगल अगर उखेवुं, कंठै ठवुं फूलहार ॥ आ० २ ॥ त्रीजे मंगल आरती उतारूं, घंट वजाउं रणकार ॥ आ० ३ ॥ चोथे मंगल प्रभुगुण गाउं, नाचू थै थैकार ॥ आ० ४ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, चरण कमल जाउं वार ॥ आ० ५ इति पदं ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि भेटो रे, भविजन सुखकारा ॥ सि० ॥ प्रथम जिनंदे ए गिरिना गुण, भाख्या विविध प्रकारा॥ इण गिरि साधु अनंता सीधा, एहनी हुं बलिहारा रे ॥ भ० सि० १ ॥ ऋषभ जिनेश्वर पूर्व निनाणूं, समवसरया सुखकारा ॥ रायण तल पगला प्रभु भेट्या, पाप पंक मल हारा रे ॥ भ० सि० २ ॥ चोमुख बिंब मनोहर अदभुत, दरशण अतही उदारा ॥ मूलनायक श्रीआदजिनेश्वर, पूजत दुख सहु वारा रे ॥ भ० सि० ३ ॥

मात चक्केसरी गिरवर ऊपर, चक्र हस्त विच धारा ॥ दुष्ट निवारण सुमति वधारण, राजत संघ रखवाला रे ॥ ज० सि० ॥ ४ ॥ खरतर गच्छ नायक सुख दायक, कीरत जग विसतारा ॥ गुण आगर राजत अति सुंदर, हंस सूरि गुणधारा रे । ज० सि० ५ ॥ संवत उगण वत्तीसे कार्तिक, शुक्ल पक्ष मनुहारा ॥ पंचमी दिन मन हर्ष धरीने, जात्र करी जयकारा रे ॥ ज०सि०६॥धर्मशील पदपंकज सेवक, कुशल निधान उदारा ॥ तास पसाये गिरवरना गुण, पभणे मुनि रूद्धसारा रे ॥ ज० सि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपदजीकी लावणी ॥

जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले भारी ॥ प्रथम पद तीर्थपती राजै, दोष अष्टादशकूं त्याजै ॥ आठ प्रातीहारज गाजै, जगत प्रभु गुण बारै साजै ॥ ( दोहा–साखी ) अष्ट करम-दल जीतके, सकल सिद्ध ते थाय ॥ सिद्ध अनंता भजो बीजे पद, एक समय शिव जाय ॥ प्रगट भयो निज स्वरूप भारी ॥ ज० १ ॥ सूरिपदमें गौतम केशी, उपमा चंद सूरज जेशी ॥ उमारयो राजा परदेशी, एक भव मांहे शिव लेशी ॥ ( दोहा–साखी ) चोथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी उवझाय ॥ सब साहु पंचम पदे, धन धन्नो मुनिराय ॥ वखाएयो वीरजिणंद भारी ॥ ज० २ ॥ द्रव्य षट्की श्रद्धा आवै, सम संवेगादिक पावै ॥ विना यह ग्यान नही किरिया, जैनदरशनसें सब तिरिया ॥ ( दुहा–साखी ) ज्ञान पदारथ सातमें, पदमें आतमराम ॥ रमता रम्य अध्यातमें, निजपद साधे काम ॥ देखता वस्तु जगत सारी ॥ ज० ३ ॥ जोगकी महिमा बहु जाणी, चक्रधर गोरूी सब राणी ॥ यती दश धरम करी सोहे, मुनि श्रावक सब मन मोहे ॥ ( दुहा–साखी ) करम निकाचित कापवा, तप कुठार कर ध्याय ॥ क्षमा युत नव-

सुरंग घन वरसत होरी, पारसप्रभुजीके पाश रे ॥ आ० ॥ कीरत बाग गगन जिनमंदिर, सजल घटा सुविलास रे ॥ श्याम मनोहर तन छवि दमकत, चमकत दामनी भास रे ॥ आ० १ ॥ प्रभु आनन अमृतरश धारा, झरी लगी इक राश रे ॥ चात्रक रटत वचन मन मेरो, प्राण प्रभूकी आश रे ॥ आ० २ ॥ खेंच कबाण इंद्रधनुषनकी, झिलमिल भमर उजास रे ॥ अपछर गान करत सुर वनिता, कोयल वचन उल्लाश रे ॥ आ० ३ ॥ थिर चित्त लाल गुलाल कुमकुमा, प्रेम अबिर सुवाश रे ॥ तन मन प्रीत भरी पिचकारी, षेलूं प्रभूसें कर हास रे ॥ आ० ४ ॥ सहज गुलाब फूल चुन चोसर, गुंथ भणी गुणवास रे ॥ कुशल निधान बरो छतियनपें, ऋद्धसार प्रभु दास रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेवका बारेमासो लिख्यते ॥

मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें, मेरा ऋषभ गया क्युं वनमें, प्रथम महीना जी लग्या आशाढ चोमाशा, इंद्र वरषणकी आशा ॥ मरुदेवाजी मनमें भई उदासा, प्रभु ऋषभ गये वनवासा ॥ ( दूहा–साखी ) ऋषभ प्रभु वनकूं गये, जगत सुधारण काज ॥ भरतादिक सो पूत्रकूं, वांट दिया सब राज ॥ पूत्र तुम सवही जी मगन होय रहे धनमें ॥ मे० १ ॥ सावण महीना जी झिरमिर मेहला वरसे, मेरे पूत्र विना जी तरसे ॥ भरतादिक जी सौ पूत्रनके झरसें, मेरा नंद निकल गया घरसे ॥ ( दूहा–साखी ) नगर अयोध्या युं झुरै, गये कहां महाराज ॥ दे उलंभा भरतकूं, मेरा पूत्र मिलावो आज ॥ अजीतो मेरे सुत विन जी प्राण निकलसी छिनमें ॥ मे० २ ॥ भादू महिना जी तज धन दोलत माया, वो गया इकेली काया ॥ भरतादिक रे तुम मनमें हरखाया, राज ये विना कमाये पाया ॥ ( दूहा–साखी ) नित नव नाटक होत हे,

कर रहै भोगविलाश ॥ सब माया या ऋषभकी, छोड गया वन-
वास ॥ हेजी जगतारण जी दुखी होयगा तनमें ॥ मे० ३॥ आ
सू महीने जी सूरतकी छिब लागी, वो होयगया वैरागी ॥ धनके
सब लोभी जी पूत्र भये नीरागी, कभी खबर न लो वडभागी ॥
( दूहा-साखी ) भरत कहे सुण मात जी, मत कर वृथा विलाप
॥ तीन लोक तारण तरण, आवेगें प्रभु आप ॥ इंद पद सेवे जी
नहीं हे रती विघनमें ॥ मे० ४ ॥ काती महिना जी कब वो ऋ-
षभ घर आवें, मोहे नेणा आण बतावे ॥ नही कागद जी मुझकूं
पूत्र पठावे, मेरा जीव वहोत दुख पावे ॥ ( दूहा-साखी ) झुरती
निशदिन पूत्रकों, रो रो खोइ आंख ॥ उडकर मिलती ऋषभसें,
जो देत विधाता पांख ॥ मोर पपइया जी मगन ज्युं रहते घनमे ॥
मे० ५ ॥ मिगसर महीना जी भरत बाहुबल भाई, आपसमें करे
लडाई ॥ भरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सैन्या चढ-
कर आई ॥ ( दूहा-साखी ) बारा बरस लडते भये, इंद्र दिये सम
झाय ॥ चक्रवर्ति बनता गये, भये चंद्रयश राय ॥ हे जी तो तप
कारण जी खडे बाहुबल रनमें ॥ मे० ६ ॥ पोसका महीना जी
पडे ठंडका पाला, रुत आया कठिन सियाला ॥ कहां होगा
जी ऋषभ जगत प्रतिपाला, मैं रटुं ऋषभकी माला ॥ (दूहा-साखी)
कोइ परवतकी ढंदमें, होगा मेरा नंद ॥ ठंड तापकी विपतमें, सहै
वहोत दुख धंद ॥ भरत मेरे सुतका जी नही फिकर तेरे मनमें ॥
मे० ७ ॥ माहका महीना जी किसें कहूं दुख मेरा, सब पूत्र विना
अंधेरा ॥ पूत्र घर आवो जी देखूंगी मुख तेरा, कोइ देवे ऋषभका
वेरा ॥ ( दूहा-साखी ) इंद्रादिक जाकूं नमें, रहे सदा करजोर ॥
राज रमणकी संपदा, वो गया छिनकमें छोड ॥ एसा निरमोही जी
पटका विरह दहनमें ॥ मे० ८ ॥ फागण महीना जी नीर नयणमें

भरतो, सूने मन घरमें फिरती ॥ भरत यूं केता जी सोच फिकर क्यूं करती, रहे निशदिन मुझसें लरती॥ (दूहा–साखी) भरत विविध तर भांतसों, कहता वात वनाय ॥ वनपालक उद्यानके, दीवी वधाइ आय ॥ प्रभू पधवारे जी सेवित हे मुनिजनमें ॥ मे० ए॥ चैतका महीना जी हय गय रथ सब त्यारी, सिणगारी सेन्या सारी ॥ भरत कर जोमे जी मरुदेवा मनुहारी, चल देख पूत्र सुखकारी ॥ ( दोहा–साखी ) इंद्रध्वज आगे चले, भामंमल हे लार ॥ चोसठ चमर सुरपति करै, डुंडुभी गगन मझार ॥ एसो सुत तेरो जी विलसे सुख सुरगणमें ॥ मे० १० ॥ माश वैशाखां जी मरुदेवा मन हरखे, जब ऋषभप्रभू मुख निरखै॥ नैणपट उघम्या जी वीत राग पद सरखै, चढ शुक्ल ध्यानकूं परखै ॥ (दूहा–साखी) गज ऊपर मुगती गई, श्रीमरुदेवी मात ॥ पहली शिव जननी दई, एसें ऋ-षभ सुजात ॥ जगत सुख कारण जी विचरै प्रभु मगनमें ॥ मे० ११ ॥ जेठका महीना जी रुत गरमीकी आई, में ऋषभ चरण लई छाई, दरस नित तेरो जी मुझकूं हे सुखदाई ॥ शिवा प्रेम सदा मन भाई ॥ ( दूहा–साखी ) धरम शील आधारसें, कुशल सदा आनंद ॥ रुद्धसार जिन नामसें, हरे डुरित डुख धंद ॥ हे जी तो मन सुध कर जी राखो जिन चरणनमें ॥ मे० १२ ॥

॥ अथ नेमनाथजीका बारे मासा ॥

(मोह लियो माहाराज कूबरी वो मथुरावाली एचाल) ॥ सावण महीने नेम पिया मोहे व्याहनकूं आये, उग्रशेन घर वटत वधाई सब मंगल गाये ॥ संग हे राम कृष्ण भाई, तोरणसें रथ फेर सि-धाए, सरम नहीं आई ॥ जगतमें लोक करे हासी–मोह लियो शिवरमणी शोकन प्रीतम अविनाशी ॥ १ ॥ भादू महीने गगन बीच पीया इंदर चढ आयो, वैरण बीज खीज रही मोपें जोवन

गरणायो ॥ सखी मोकूं विरहा संतायो, मोर पपइया बोले पापी, मदन सदन आयो ॥ तीज विन प्रीतम यूं जासी ॥ मोह लि०२॥ आसू महीने आश पीयाको मिलणेकी लागी, तेल चढी मोकूं छिटकाई दया नहीं जागी ॥ कंत तुम निरमोही लागी, विना गुने तकशीर कंत मोहे, केसें तुम त्यागी ॥ प्रीतकी मारी गले फासी– मोह लि० ३ ॥ काती कंत गयो सहसावन खबर नहीं लीनी, उत्तम प्रीत रीत नहीं साजन ये तुम क्या कीनी॥ पशुनकी दयापें चित दीनी, रूस चले माहाराज गुने विन, अंतरंग झीनी॥स्याम तोकुं मति ये क्या न्हासी–मोह लि० ४ ॥ मिगसर मोहन तीन लोक पति नार और धारी, शिवरमणीके मिलणे वावत करी कंत त्यारी ॥ पिया तुम चढगये गिरनारी, अनंत लोग भोगी सो कामण, लगी तुमें प्यारी॥ पीया में चरणनकी दासी–मोह लि० ५ ॥ पोश पीया उलंभा देती हिये नहीं धारो, नहीं छोडूंगी संग नाथ अब चाहे सो कर मारो॥ वचन जो लगे तुमें खारो, एक वेर घर अंगण आवो फेर तजूं लारो ॥ शखी सब मिलकर समझासी--मो० ६ ॥ माह महीने रुत सरदीकी ठंड वहोत वाजै, सेज लगे नागण सी मुझकों नेम नही लाजै ॥ मदनको कटक कोण भांजै, नहीं वरून कूं गैरत किसकी, तुमकूं यह छाजै ॥ पिया विन करुं में गति काशी–मो० ७ ॥ फागण फाग घरोघर खेले दंपति सुख माणे, में अवला तरसुं विन प्रीतम जियकी जिय जानें ॥ कौन संग में खेलूं होरी, एक विना यो सब जग सूनो, नहीं वाला जोरी ॥ कंत में दरशनकी प्यासी--मो० ८ ॥ चेत मास फूली वनराई कोयल सोर करै, एसे निरमोहीसे करके कहो कुण फंद पडै ॥ प्रीत जिन नव भवकी तोरी, राजुल तज सिणगार हार कूं मदन मान मोडी ॥ नेम विन हो रही उदासी–मो० ९ ॥ माश

वैशाख आंख यूं जलजै प्रीतमकी मनमें, उग्रशेन महाराज दुला-री गइ सहसावनमें ॥ देखण शिवादेवीके नंदा, इंद्र चंद्र शेवित पदपंकज मुख पूनमचंदा ॥ आज शखी प्रीतम घर आसी–मो० १० ॥ जेठ माश गरमी रुत लूआं बाजै कंत बुरी, नही रैण सुख चैन शखीरी चल रही प्रेमछुरी ॥ पाप कोइ पूरब जदे आया, छोड चलै घनस्याम आज मैं दरशण सुख पाया ॥ तजी मैं सब घरकी फासी–मो० ११ ॥ माश असाढ सखी संग राजुल नेम चरण भेव्या, धर करणी भव तिरणी होकर धंद सभी मेव्या ॥ प्रीत तुम अजर अमर राखी, रूडसार आधार तुमारो प्रेम शिवा शाखी ॥ जगत जन गुण तेरा गासी–मो० १२ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ छुटकर स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ अथ श्री शीतलजिन स्तोत्र ॥

सकल मंगल केलि निवेशिनं, सहृदयं हृदयं गम देशनं ॥ अजिन तोत्तम भक्ति सुरेश्वरं, नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहज सुंदर सद्गुणमंदिरं, विमल केवल बोध विकश्वरं ॥ अति सुवर्ण सुवर्ण समद्युतं, प्रवर बंधुर लक्षण संयुतं ॥ २ ॥ युग्मं ॥ यदिय भक्तिर्भविनां भवेभवे, भवेदभीष्टार्थ निदानमद्भुतं ॥ सएव नंदा-त्म समुद्भवो जिनः, समर्चनीयः खलु शीतलः प्रभु ॥ ३ ॥ कर्मा भितप्तान् भवितः सुशीतलान्, कुर्वन्मुदा वाक् सुधया दयापरः ॥ सदेव देवो भवतात् सदैवमे, सदिष्ट सिद्धयै जिनराज शीतलः ॥ ४ ॥ अधिगत शिवशर्मा वीत मोहादि कर्मा, दृढरथ तनु जन्मा सर्वतः साध धर्मा ॥ त्रिदश महित मूर्त्तिः स्फुर्त्तिमत् पुण्यकीर्त्तिः, जयतु गत भवार्त्तिः शीतलः सौम्यमूर्त्तिः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ विशदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो, दलित दुरित राशि

विश्व विश्वावदातः ॥ प्रकट महिमरम्यो दुर्मती नाम गम्यो, जय तु जिनपतिः श्रीपार्श्वचिंतामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली मूल मुन्मूल यन्ती, पदम कत पदाब्जेयस्य भृंगीव पद्मा ॥ अवि कृतमति कायोत्सर्ग मुद्रान्वितोसौ, जगति बहुमतोस्मान् पातु वामांग जन्मा ॥ २ ॥ अविचल मणि बिभ्रत् सत्फणानां सहस्रं, बहुल विमल भास्वद्भूषणोभासि गात्रः ॥ गुरुतर वर भक्त्या सक्त चित्ताङ्गभाजां, भवतु शिव समृद्ध्यै चाश्वसे निर्जिनेन्द्रः ॥ ३ ॥ कुपित करि मृगेश व्याल दावानलाब्धि, प्रहरणगदगुप्त्यातंक शंका पहर्त्ता ॥ विकशित्त मुख पद्मः सत्पुरेसूरताख्ये, जयतु भुजग लक्ष्मी भ्राजमानो जिनेंद्रः ॥ ४ ॥

॥ अथ समस्यामयी शंखेश्वर पार्श्व जिन स्तुतिः ॥

यस्य ज्ञान दया सिंधो, दर्शनं श्रेय से ध्रुवं ॥ सश्रीमान्या श्वे तीर्थेशो, निषेव्यः सततं सतां ॥ १ ॥ वामा सूनोर्यशः पुंजै, रघाधस्या नघा गुणाः ॥ स्मर्यते येन सस्मार्यो, भवेत् प्राचीन वर्हि षां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान्, संसारिक सुरासुरान् ॥ सेव्यता मकयो धीराः, पार्श्वदेवो परः प्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सवार्थ दानेन, येन कल्पद्रुमा अपि ॥ भवेदभ्यर्चितो लोके, स श्रिये चामृतागच ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुर श्लोकैः, जैन लाभ प्रदायकः ॥ कल्याण कारको भूयात्, श्रीमान् शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ विविध यमक युक्त श्रीपार्श्व जिन स्तुतिः ॥

लक्ष्मी निदानं गुरु कर्मदानं, सद्धर्म दानं जगते ददानं ॥ यक्षेश पार्श्वं शित पाद पार्श्वं ॥ नुवामी पार्श्वं भवभेद पार्श्वं ॥ १ ॥ स्मेरातसी सून सम प्रभावा, सम प्रभावा भवदीय मूर्त्तिः ॥ वि-भाति वामां प्रभव त्रिलोके, भव त्रिलोकेन समर्चनीयः ॥ २ ॥ तवेश पत्पंकज मादरेण, हृद्याद्धाना जनतादरेण ॥ मुक्ता भवेदेक

पदे पराया, निर्वेश वनसौख्य परंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेष भूवर्षित दान वारि, यन्मानसेत्वं ध्रियसे सदैव ॥ सएव गव्युत्तम दानवारो, प्रोच्चारितोदाम यशाः सदैवः ॥ ४ ॥ देवाधिदेवाधि हरस्त्वमेव, सुज्ञान सुज्ञानभिबुद्ध रूपः ॥ सारांग सारांग वितीर्णभूयः, कल्याण कल्याण कृदं गभाजां ॥ ५ ॥ येरव्यसेत्वं वर वैद्यराज, मनोभिरामैः सुमनोभिरामै ॥ कर्माभिधै रुज्झित भूघनास्ते, विसारि लोकेश विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थंते जिन पुंगवस्य भगवन् प्रोद्दाम धामाभ्वितं, पादाब्जं परभाग भृत् त्रिभुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दक्षं कर्म विपक्ष पक्ष दलने भव्या भवंतु क्षमाः, कल्याणाश्रय मुक्तिमाशु मखिलंतीर्वा भवाम्भोनिधिं ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ शंखेश्वर जिन स्तवन ॥

शालिनी छंदः ॥ गौमीग्रामे स्तंभने चारु तीर्थे, जीरावल्या पत्तने लोद्रवाख्ये ॥ वाणारस्यां चापि विख्यात कीर्ति, श्रीपार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, वामा देव्या नंदनं देव वंद्यं ॥ स्वर्गे भूमौ नागलोके प्रशिद्धं॥ श्री पा० ॥ २ ॥ भित्वा भेद्यं कर्म जालं विशालं, प्राप्यानन्तं ज्ञान रत्नं चिरत्नं ॥ लब्धा मंदानंद निर्वाण शौख्यं ॥ श्रीपार्श्व० ३ ॥ विश्वाधीशं विश्वलोके पवित्रं, पापागस्यं मोक्ष लक्ष्मी कलत्रं ॥ अंभोजाक्षं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्रीपार्श्वे० ४॥ वर्षे रम्यं खंग दोर्भाग चंद्र, संख्ये मासे माधवे कृष्ण पक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर्दर्शनं यस्य तंच, श्रीपा० ५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्व जिन स्तोत्रं ॥

विशद सद्गुण राजि विराजितं, घनघना घननाद विभाजितं ॥ भजत भक्ति भरेण रमेश्वरं, जगति पार्श्व जिनेश मनेश्वरं ॥१॥ विविध वर्ण विभूषित विग्रहाः, विदित दुर्दम दर्पक निग्रहाः॥

वसु युगार्क मिताः सुकृताकराः, जिनवराः प्रभवंतु शिवंकरा ॥२॥ रुचिरवर्ण निबद्ध मनिन्दितं, सुमनसा प्रकरै रभिवंदितं ॥ निखिल साधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमता चितशर्मदं ॥ ३ ॥ सकल भव्य सरोज विकाशिका, कुमति संतमसोच्चय नाशिका ॥ जिनवरानन पद्म गतोन्मुदा, भवतु वाग्जिनराज शुभार्थदा ॥ ४ ॥

अथ श्री गोडीपार्श्व नाथ जिन स्तोत्रः ॥

श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्य विलसद्ज्ञानामृतांभोनिधेः, सद्भावेन परस्वरूप विरते मुक्त्यास्पदेतस्थुषः ॥ सद्भुत प्रतिबिंब तस्तु सुतरां गोम्भीपुरोद्भासिनः, सोल्लासंप्रणिपत्य सत्यमनसां तत्रैवनित्यं स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो भव्याव्रजंतोध्वनि, स्पृश्यंतेनहि दुष्टजंतुनिवहे र्वन्यैर्नवातस्करैः ॥ नैवोज्वालदवानलै र्जलचराकीर्णैर्जलैर्जातुनो, सःश्रीपार्श्वविभुर्ध्यचिन्त्यमहिमा हृश्योनकेषांभवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तःकरणाद्भुतं कुटिलतां मोहादिनोद्भावितां, धृत्वानिर्मलभावनांचविधिनायद्भक्तिमातन्विता ॥ लभ्यन्ते नरराज निर्जरवरश्रेणीसुखानिक्रमा, न्मुक्तिश्रीरपिसैवशुद्धमनसा संसेव्यतांविश्वयाः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशती जिनस्तवनं ॥

॥ आद्यः श्रीऋषभस्ततोजितजिनः, श्रीशंभवस्तीर्थकृत् ॥ सुश्रीमानभिनंदनश्चसुमतिः, श्रीसद्मपद्मप्रभः ॥ पृथ्वीकुक्षिभवसुपार्श्व, जिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रभः ॥ सर्वज्ञःसुविधिर्जिनोमुनिमतः, श्री शीतलसौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयांशप्रभुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः, शांतिःकुंथुररस्ततोजितरिपुर्मल्लिर्जिनःसुव्रतः ॥ अर्हंतोनमिनेमिशुद्ध मुनिपौविश्वत्रयेविश्रुतौ, श्रीमत्पार्श्वजिनःप्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमान प्रभुः ॥ २ ॥ एतेश्रीजिनपुङ्गवाःपरमश्चिद्रूपाश्चतुर्विंशति, निःशेषोत्तमभव्यजंतुहृदयांभोजप्रबोधोद्यताः ॥ वंद्यन्तेसुरवृंदवंद्यविशदश्लो

कवजानिर्जय, श्रीसंपत्तिनिवासविक्रमपुरेसद्भक्तितःप्रत्यहं ॥ ३ ॥

॥ अथ मंगलाष्टकलिख्यते ॥

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रभा, भास्वत्पादनखेंदव-प्रवचनांभोधौव्यवस्थायिनः ॥ येसर्वेजिनसिद्धसूरिसुगतास्तेपाठका-साधवः, स्तुत्यायोगिजनैश्चपंचगुरवःकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्द-र्शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयंपावनं, मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपते स्व-र्गापवर्गप्रदः ॥ धर्म्मःसूक्तिसुधाश्चचैत्यमखिलं जैनालयंश्चालयं प्रोक्तंतत्त्रिविधंचतुर्विधममीकुर्वंतुमेमंगलं ॥ २ ॥ नाभेयादिजिना धिपा स्त्रिभुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः, श्रीमन्तोभरतेश्वरप्रभृतयोयेच क्रिणो द्वादश ॥ येविष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्ताधिकाविंशती, त्रैलोक्येभयदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशेवृषभस्य निर्वृतिमहीवीरस्यपावापुरी, चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशे लेर्हतां ॥ शेषाणामपिचोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो, निर्वाणा विनयःप्रसिद्धविभवाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरभावनाम रगृहे मेरौकुलाशैस्थिता, जंबुशाल्मलिचैत्यशाखिषुतथावक्षाररूप्या दिषु ॥ इक्ष्वाकारगिरौचकुंडलनगेद्वीपेचनंदीश्वरे, शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ५ ॥ योगर्भावतरोजयत्यर्हतांजन्माभि-षेकोत्सवे, योजातः परिनिष्क्रमेवचभवो यःकेवलज्ञानभाक् ॥ यःकै-वल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः, कल्याणानिचतानिपंच सततंकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥६ ॥ येपंचोषधिऋद्धयः श्रुततपोरुद्धिंगतापंचये, येचाष्टांगमहानिमित्तकुशलायेष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्चयेपि बलिनोयेबुद्धीऋद्धीश्वरा, सप्तैतेसकलाश्चतेगणभृताकुर्वंतुमेमंगलं ॥७॥ देव्याश्चाष्टजयादिकाद्विगुणिताविद्यादिकादेवता, श्रीतीर्थंकरमातृका-श्चजनकायक्षाश्चयक्षीश्वराः द्वात्रिंशत्रिदशाधिपातिधिसुरा दिक्कन्यका श्चाष्टधा, दिक्पालादशइत्यमीसुरगणाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं

श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदंकद्ध्याणकालेर्हतां, पूर्वाण्हेपिमहोत्सवेपिस-ततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ येशृण्वंतिपठंतितैश्चमनुजै र्द्धर्मार्थकामान्विता, लक्ष्मीराश्रयतेविपायरहिताः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ९ ॥ इति मंगलाष्टकं संपूर्ण ॥

॥ अथ परमात्मा स्तोत्रः ॥

शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं, नदेवं नबंधु नेकर्म नकर्ता ॥ न अंगं नसंगं नइच्छा नकामं, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥ नबंधो नमोक्षो नरागादि लोकं, नजोगं नभोगं नव्याधि नेशोकं ॥ नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं ॥ चिदा० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा, नचक्षुर्नकर्णं नवक्रं ननिद्रा, ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा, चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोहं नाचिंता, नक्षुद्रं नभीतं नकृष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी नभृत्यं नदेवो नमर्त्या, चि०४॥ त्रिदंडे त्रिखंडे हरे विश्वव्यापं, हृषीकेश विद्धंस कर्म्मारिजालं ॥ नपुण्यं नपापं नअज्ञानप्राणं, चि० ॥ ५ ॥ नबाल्यं नवृद्धं नविद्धि नमूढा, नछेद्यं नभेद्यं नमूर्तिर्नमीहा ॥ नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा, चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या, नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टो नभव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं, चि० ॥ ७ ॥ इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्ववेदी, नपूर्णं नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्यो भिन्नभिन्नं नपरमार्थमेकं, चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणनिधिश्चैतन्यरत्नाकरं, सर्वेभूतगतागते सुख दुःख ज्ञातात्वया सर्वगं ॥ त्रैलोक्याधिपति स्वयं स्वमनसा ध्यायंति योगेश्वराः, वंदेतं हरिवंश हर्ष हृदयं श्रीमानभूदच्युतः ॥ ९ ॥ इति श्रीपरमात्मा स्तोत्रं ॥

अथ नमस्कार स्तोत्रं ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां, साधूनां वंदनेनच ॥

नतिष्ठति चिरंपापं, छिद्र हस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्य स्य, संसार ध्वांतनाशनं ॥ बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाश कं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मामृत वर्षणं ॥ जन्मदाय वि- नाशाय, वृंद्दणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेभक्ति२, जिनेभक्ति दिने२ ॥ सदामेस्तु१, सदामेस्तु भवे१ ॥ ५ ॥ नहित्राता१, नहित्रा ता जगत्रये ॥ वीतराग समोदेवो, नभूतो नभविष्यति ॥ ६ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्सर्व प्रयत्नेन, रक्ष२ जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतराग मुखंदृष्ट्वा, पद्मराग सम प्रभं ॥ नैकजन्म कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नि- त्यं, सिद्धा जगति मंगलं ॥ मंगलं साधवो मुक्तं, धर्म्मः सर्वत्र मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा ह्यर्हतः, सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लो कोत्तमो यतीशानां, धर्मोलोकोत्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदार्ह तः, शिद्धा शरणं मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्म्म शरण मर्ह तां ॥ ११ ॥ इति नमस्कार स्तोत्र संपुर्ण ॥

॥ अथ तपगछ समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥

॥ तत्र पुन्यप्रकाश आलोयण वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ स द्गुरु साम्नि सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रि शलातणो, नंदन गुण गंभीर ॥ शासननायक जगजयो, वर्द्धमान वडवीर ॥ २ ॥ इक दिन वीर जिनंदनें, चरणें करी परिणाम ॥ भविक जीवना हित भणी, पूछै गोयमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगति मा रग आराधियै, कहो किण पर अरिहंत ॥ सुधा सरस तब वचन रस, भाखे श्रीभगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार आलोइयैं, व्रत धरीये गु रु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥ विधिसुं वलि वोसराविये, पाप स्थानक अढार ॥ च्यार शरण नित

अनुसरै, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुन्न करणी अनुमोदियै, न्ना व न्नलो मन आणि ॥ अणशण अवसर आदरी, नवपद जपो सु जाण ॥ ७ ॥ शुन्नगति आराधनतणा, ए छै दश अधिकार ॥ चि त्त आणीने आदरो, जिम पामो न्नव पार ॥ ८ ॥ ( ढाल ॥ १ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ इस चालमें ) ज्ञान दरिशण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह न्नव पर न्नवना, आलोइये अतीचार रे ॥ प्राणी ज्ञान न्नणो गुणखाणी, वीर वदे इम वाणी रे ॥ प्रा० ज्ञा० १॥ गुरु ठंलविये नही गुरु विनयें, कालै धरी बहु मान ॥ सूत्र अर्थ तडुन्नय करी सूधा, न्नणिये वही उपधान रे ॥ प्रा० ज्ञा० २॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥एह तणी कीधी आशातना, ज्ञान न्नक्ति न संन्नाली रे ॥ प्रा० ज्ञा०॥ ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ न्नव प र न्नव वलिय न्नवोन्नव, मिछाडुक्कम तेहरे ॥ प्रा० समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ४ ॥ जिनवचने शंका नवि कीजे, नवि परमत अन्निलाष ॥ साधुतणी निंदा परहरजो, फल संदेह म राखी रे ॥ प्रा० स० ५ ॥ मूढपणूं छंमो परसंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ सा हमीने धर्मे करि थिरता, न्नगति प्रन्नावना करिये रे ॥ प्रा० स० ६ ॥ संघ चैत्य प्राशादतणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य दे वको जे विणसाड्यो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ प्रा० स० ७ ॥ इ- त्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंम्युं जेह ॥ आ न्नव प०, मि० ॥ प्रा० चारित्र ल्यो चित आणी ॥ ८ ॥ पांच सुमति त्रिण गुप्ति विराधी, आठे प्रवचनमाय ॥ साधुतणे धरमे प्रमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ प्रा० चा० ए ॥ श्रावकने धर्मे सामायक, पो सहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न पाली रे ॥ प्रा० चा० १० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र महोल्युं

जेह ॥ आनव०, मिछा० ॥ प्रा० चा० ११ ॥ बारे भेदे तप नवि कीधो, छते योगे निज शकते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविउं जगते रे ॥ प्रा० चा० १२ ॥ तप वीरज आचारे इण पर, विविध विराध्या जेह ॥ आनव०, मिछामि० ॥ प्रा० चा० १३ ॥ वलिय विशेषे चारित्र केरा, अतीचार आलोइये ॥ वीरजिनेसर वचन सुणीनें, पाप मैल सवि धोइये रे ॥ प्रा० चा० १४ ॥ (ढाल२) पृथ्वी पाणी तेउ, वाउ वनस्पती, ए पांचे थावर कह्या ए ॥ करी करसण आरंभ, खेत्र जे खेडीया, कूआ तलाव खणाविया ए ॥१॥ घर आरंभ अनेक, टांका भोयरां, मेडी माल चिणाविया ए ॥ लींपण गूंपण काज, इण पर परपरे, पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी, झीलण अप्पकाय, छोती धोती कर दूहव्या ए ॥ भाठीगर कुंभार, लोह सोवनगरा, भाडभूंजा लिहालागरा ए ॥३॥ तापण सेकण काजे, वस्त्र निखारण, रंगण रांधण रसवती ए॥ इणि परे कर्मादान, परिपरे केलवी, तेउ वाउ विराधियाए॥४॥ वाडी वन आराम, वावी वनस्पती, पान फूल फल चूंटीया ए ॥ पौंक पापडि शाक, सेक्या सूकव्या, छेद्या छूंद्या आथिया ए ॥५॥ अलशीने एरंड, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीया ए॥ घाली कोलू मांहि, पीली सेलडी, कंद मूल फल वेचीया ए ॥ ६ ॥ इम एकेंद्री जीव, हण्या हणाविया, हणतां जे अनुमोदीया ए ॥ आभव परभव जेह, वलिय भवोभव, ते मुझ मिछामिदुक्कडं ए ॥ ७ ॥ कृमी सरमिया कीडा, गाडर गंडोला, इअल पूरा अलशीआ ए ॥ वाला जलो चूडेल, विचलितरसतणा, वलि अथाणा प्रमुखना ए ॥ ८ ॥ इम बेइंद्री जीव, जे में दूहव्या, ते मुझ मि० ॥ उदेही जूं लीख, मांकड मंकोडा, चांचड कीडी कंथुआ ए ॥ ९ ॥ गद्दहिया धीवेल, कानखजुरडा, गींडोला धनेरीयां ए ॥ इम तेइंद्री जीव,

जे में दूहव्या, ते मुझ मिच्छा० ॥ १० ॥ माखी मच्छर मास, मसा पतंगिया, कंसारी कोलियावमा ए ॥ ढीकण विछु तीम, भमरा भमरीय, कौंता बग खरूमांकमी ए ॥ ११ ॥ इम चोरेंद्री जीव, जे में दूहव्या, ते मुझ० ॥ जलमां नांखी जाल, जलचर दूहव्या, वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीमया पंखी जीव, पामी पासमां, पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ इम पंचेंद्री जीव, जे में दू०, ते मुझ० ॥ १३ ॥ ( ढाल ३ ॥ प्राणी वाणी हितकरी जी ॥ ए चाल ) क्रोध लोभ भय हासथी जी, बोला वचन असत्य ॥ कूम करी धन पारका जी, लीधा जेह अदत्त रे ॥ जिनजी मिच्छामि डुक्कम आज, तुम्ह साखे महाराज रे ॥ जिनजी मि० ॥ देई सारू काज रे ॥ जिनजी मि० ॥१॥ देव मनुज तिर्यंचना जी, मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि० २ ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, भव२ मेली आथि ॥ जेह जिहां ते तिहां रही जी, कोइय न आवे साथ रे ॥ जि० ३ ॥ रयणी भोजन जे कर्या जी, कीधा भक्ष अभक्ष ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप कर्या परतक्ष रे ॥ जि० ४ ॥ व्रत लेई वीसारीया जी, वलि भांग्या पच्चरकाण ॥ कपट हेतु किरिया करी जी, कीधा आप वखाण रे ॥ जि० ५ ॥ त्रिण ढाले आठे दूहे जी, आलोया अतीचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहिलो अधिकार रे ॥ जि० ६ ॥ ( ढाल ४ ॥ साहेलमीनी देशी ॥ ) पंच महाव्रत आदरो, साहेलमी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथा शक्ति व्रत आदरी, सा० ॥ पालो निरतीचार तो ॥ १॥ व्रत लिया संभारीयै, सा० ॥ हीयमै धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सवै खमाविये सा० ॥ योनि चोरासी लाख तो ॥ मनशुद्धे करो खामणा, सा०॥

कोईसुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो, सा० ॥ कोइय न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष इम परिहरो, सा० ॥ कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहमी संघ खमाविये, सा० ॥ जे उप नी अप्रीत तो ॥ सज्जन कुटंब करी खामणा, सा० ॥ ए जिनशा सन रीत तो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमाविये, सा० ॥ एहीज धर्म नो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए त्रीजो अधि कार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० ॥ धन मुर्छा मैथुन्न तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा, सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥७॥ निंदा कलह न कीजीयै, सा० ॥ कूडा न दीजै आल तो ॥ रती अरती मिथ्या तजो, सा० ॥ माया मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रि-विध२ वोसराविये, सा० ॥ पाप स्थान अढार तो ॥ शिवगति आ राधनतणो, सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ए ॥ (ढाल ५ मी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए चाल ॥ ) जनम जरा मर-णे करी ए, ए संसार असार तो ॥ कस्या कर्म सहु अनुभवे ए, कोइय न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनु ए, शरण सिद्धभगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आभव परभव जे कस्या ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म साखे निंदिये ए, पडिक्कमिये गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामत वर्त्ताविआ ए, जे भाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वशे ए, बलि उत्थाप्या सूत्र तो ॥ ५॥ घड्या घडाव्या जे घणा ए, घरटी हल हथियार तो ॥ भव२ मेली मूकीया ए, करतां जीव संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीया ए, जनम२ परिवार तो ॥ जन-मांतर पोहतां पछी ए, कोइय न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आभव

परज्नव जे कस्या ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध२ वोसि राविये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा इम करी ए, पाप कस्यां परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए छठो अधिकार तो ॥ ए ॥ (ढाल छठी ॥ आदि तुं जोइने आपणो ॥ ए चाल ॥) धनर२ ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान शीयल तप आदरी, टाल्या दुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शेत्रुंजादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगते जिनवर पूजिया, वलि पोष्या पात्र ॥ ध० २ ॥ पुस्तक ज्ञान लिखाविया, जिणहर जिन चैत्य ॥ संघ चतुर्विध साचव्यां, ए साते क्षेत्र ॥ ध० ३ ॥ पडिक्कमणा सुपेरे कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधू सूरि उवज्झायनें, दीधा बहुमान ॥ ध० ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदियें, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ ज्ञाव ज्नलो मन आणीये, चित्त आणी गम ॥ समता ज्ञावे ज्ञावियें, ए आतमराम ॥ ध० ६ ॥ सुख दुख कारण जीवने, कोइ अवर न होइ ॥ कर्म आप जे आचस्यां, ज्नोगविये सोय ॥ ध० ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुन्य काम ॥ गरि ऊपर ते लींपणुं, जाखर चित्राम ॥ ध० ८ ॥ ज्नाव ज्नली परे ज्नावियें, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, आठमो अधिकार ॥ ध० ए ॥ (ढाल ७ मी ॥ रैवत गिरि ऊपरे ॥ ए चाल) हवे अवसर जाणी करीय संलेखण सार, अणसण आदरियें पच्चरकी च्यार आहार ॥ ललुता सवि मूंकी गंडी ममता अंग, ए आतम खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति च्यारे कीधा आहार अनंत निःशंक, पण तृपति न पाम्यो जीव लालचीउ रंक ॥ दुलहो ए वली२ अणशणनो परिणाम, एहथी पामीजे शिवपद सुरपद गम ॥ २ ॥ धन धन्ना शालिज्नद्र खंधो मेघकुमार, अणशण आराधी पाम्या ज्नवनो पार ॥ शिवमंदिर जास्ये करी एक अवतार, आराधन केरो

ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमें अधिकारे महा मंत्र नवकार, मनथी नवि मूंको शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाये दुर्गति दोष विकार, सुपरे ए समरो चउद पूरबनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरे जाता जो पामे नवकार, तो पातिक गाली पामे सुर अवतार॥ ए नवपद सरखो मंत्र न कोई सार, इह नव ने परनव सुख संपति दातार॥ ५॥ जुन नील नीलणी राजा राणी थाय, नवपद महिमाथी राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहुं पाम्या छे सुर नोग, इक नवथी लेस्ये सिद्धवधू संजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए वली मंत्र फल्यो ततकाल, फणधर फीटीने प्रगट थई फूलमाल ॥ शिवकुमरे योगी सोवनपुरसो कीध, इम एणे मंत्रे काज घणाना सिद्ध ॥ ए दश अधिकारे वीर जिनेसर नाख्यो, आराधनकेरो विधि जिणे चित्तमां राख्यो ॥ तिणे पाप पखाली नवनय दूरे नांख्यो, जिन विनय करंता सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ८ ॥ ( ढाल ८ मी ॥ नमो नवि नावसुं ए ॥ ए चाल ) सिद्धारथराय कुल तिलो ए, त्रिशला मात मल्हार तो ॥ अवनी तले तुमे अवतस्या ए, करवा अम्ह उपगार ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ १ ॥ में अपराध कस्या घणा ए, कहता न लहुं पार तो ॥ तुम्ह चरणे आव्या नणी ए, जो तारे तो तार ॥ ज० २ ॥ आश करीने आवियो ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्याने उवेखस्यो ए, तो किम रहस्ये लाज ॥ ज० ३ ॥ करम अलूजण आकरा ए, जनम मरण जंजाल तो ॥ हुं बुं एहथी उन्नग्यो ए, बोमव देवदयाल ॥ ज० ४ ॥ आज मनोरथ मुज फल्या ए, नाठा दुःख दंदोल तो, तूठो जिन चोवीशमो ए ॥ प्रगट्या पुन्य कल्लोल ॥ ज० ५ ॥ नव२ विनय तुम्हारमो ए, नाव नगत तुम्ह पाय तो ॥ देव दया करि दीजीये ए, बोधबीज सुपसाय ॥ ज० ॥ ६ ॥ ( कलश ) इय

तरण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जग जयो ॥ श्रीवीर जिणवर चरण थुणतां, अधिक मन उल्लट थयो ॥ १ ॥ श्रीविजयदेव सूरिंद पटधर, तीरथ जंगम इण जगे ॥ तपगच्छपति श्रीविजयप्रभसूरि, सूरि तेजे झगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरी शिष्य वाचक, कीर्तिविजय सुरगुरु समो ॥ तश शिष्य वाचक विनय विजयें, थुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत उगणतीसे, रही रानेर चोमाश ए ॥ विजयदशमी विजय कारण, कियो गुण अभ्यास ए ॥ ४ ॥ नरभव आराधन सिद्धिसाधन, सुकृत लील विलास ए ॥ निर्झरा हेते स्तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥

इति श्रीवीरजिन पुण्य प्रकाश आराधना स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ भरहेसरनी सिझाय लिख्यते ॥

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारोअ ढंढणकुमारो ॥ सिरिअ अणियाउत्तो ॥ अयमत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मे अज्जथूलिभद्दो, वयररिसि नंदिसेण सीहगिरी ॥ कयवन्नोअ सुकोसल, पुंडरिओ केसि करकंडू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, सालि महासालि सालिभद्दोअ ॥ भद्दोअ दसन्नभद्दो, पसन्नचंदोअ जसभद्दो ॥ ३ ॥ जंबूपहू वंकचूलो, गयसुकमालो अवंतीसुकमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिय, अज्जसुहत्थी उदाय गोमणगो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवोय ॥ ५ ॥ पभवो विन्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढपहारोअ ॥ सिज्जंस कूरगडुअ, सिज्जंभव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहि संजुत्ता ॥ जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा विलयजंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदणबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ नमयासुंदरि सीया, नंदा भद्दा सुभद्दाय ॥ ८ ॥ राईमई रिसिदत्ता, पउमावई अंजणा सिरीदेवी ॥ जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावई, पभावई चिल्लणादेवी

॥ ए ॥ बंभी सुंदरी रुप्पिणी, रेवई कुंती शिवा जयंतीय ॥ देवीई दोवई धारणी, कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ पउमावईय गोरी, गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवई सच्चनामा, रुप्पिणी कन्हट्ठ महिसीउ ॥ ११ ॥ जस्काय जरकदिन्ना, भूआतह चेव भूअ दिन्नाय ॥ सेणा वेणा रेणा, भयणीओ थूलभद्दस्स ॥ १२ ॥ इच्चाई महासईओ, जयंती अकलंक शील कलिआउ ॥ अज्ज विवज्जई जासिं, जस पडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सत्तासतीउनो सिझाय

॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥

मन्हजिणाणंआणं, मिच्छंपरिहरहधरसम्मत्तं ॥ छव्विहआवस्सयंमि, उज्जुत्तोहोइपयदिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसुपोसहवयं, दाणंशीलं तवोअभावोअ ॥ सझायनमुक्कारो, परोवयारोअजयणाअ ॥ २ ॥ जिणपूआजिणथुणणं, गुरुथुअसाहम्मिआणवच्छलं ॥ ववहारस्सयसुद्धी, रहयत्तातित्थयत्ताय ॥ ३ ॥ उवशमविवेकसंवर, भासासमिईछज्जीवकरुणाय ॥ धम्मियजणसंसग्गो, करणदमोच रणपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरिबहुमाणो, पुत्थयलिहणंपभावणा तित्थे ॥ सड्ढाणकिच्चमेअं, निच्चंसुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सकल तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोड, जिनवर नामे मंगल कोड ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्तीस, जिनवर चैत्य नमुं निशदीश ॥१॥ बीजे लाख अठावीश कह्या, त्रीजे बार लाख सरदह्या ॥ चोथे स्वर्गे अड लख धार, पांचमें वांदूं लाखज च्यार ॥ २ ॥ छट्ठे स्वर्गे सहस पचास, सातमें चालीस सहस प्राशाद ॥ आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमें वंदू शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमें त्रणसे सार, नव ग्रैवेयके त्रणसे अढार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोरासी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणु त्रेवीश सार, जिनवरभुवनतणो

अधिकार ॥ लांबा सो योजन विस्तार, पच्चास ऊंचा बहोत्तर धार ॥ ५॥ एकसो असी बिंब परिमाण, सभा सहित इक चैत्ये जाण ॥ सो कोम बावन कोम संभाल, लाख चोराणुं सहस चोंआल ॥ ६ ॥ सातसे उपर साठ विसाल, सवी बिंब प्रणमुं त्रिण काल ॥ सात कोमने बहोत्तर लाख, भुवनपतीमां देवल भाख ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब प्रमाण, इक२ चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरसे कोमि निव्याशी कोमि, साठ लाख वंदू करजोम ॥ ८ ॥ बत्रीशें ने ओगणसाठ, तिर्छा-लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशे वीश ते बिंब जुहार ॥ ए ॥ व्यंतर ज्योतषीमां वलि जेह, शाश्वता जिनवर वंदू तेह ॥ रुषभा चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुण-शेण ॥ १०॥ समेतशिखर वंदू जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥ विमलाचल ने गढगिरनार, आबू ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्रीअजित जुहार ॥ अंतरीक वर-काणो पाश, जीरावलो ने थंभणपाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदू जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अण-गार, अढार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सुमती सार, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदू गुणमणि माल ॥ नित२ ऊठी कीर्त्ति करूं, जीव कहे भव-सायर तरूं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ सकलार्हत स्तोत्र ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठान, मधिष्ठानंशिवश्रियः ॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयी-शान, मार्हत्यंप्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यभावैः, पुनतःस्त्रिज-गज्जनं ॥ क्षेत्रेकालेचसर्वस्मिन्, नर्हतःसमुपास्महे ॥ २ ॥ आदि-मंपृथ्वीनाथ, मादिमंनिःपरिग्रह ॥ मादिमंतीर्थनाथंच, रुषभस्वा-

मिनंस्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हंतमजितंविश्व, कमलाकरभास्करं ॥ अम्लान-
केवलादर्शी, संक्रांतजगतंस्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वभव्यजनाराम, कुल्या-
तुल्याजयंतुताः ॥ देशनासमयेवाचः, श्रीशंभवजगत्पतेः ॥ ५ ॥
अनेकांतमतांभोधि, समुल्लाशनचंद्रमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, भगवान
भिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युशत्कीरीटशाणाग्रो, त्तेजितांघ्रिनखावलिः ॥
भगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानिवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रभप्रभोर्देह,
भासःपुष्णंतुवः श्रियं ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः॥८॥
श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय, महेंद्रमहितांह्रये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगना-
भोगभास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभप्रभोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्वला ॥ मुर्त्ति-
मुर्त्ति सितध्यान, निर्मितेवश्रियेस्तुवः ॥ १० ॥ करामलकवद्विश्वं, कल-
यन्केवलश्रियां ॥ अचिंत्यमहात्म्यनिधिः, सुविधिर्बोधयेस्तुवः॥११॥
सत्वानांपरमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीतलः
पातुवोजिन ॥ १२ ॥ भवरोगार्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ निः-
श्रेयसश्रीरमण, श्रेयांसः श्रेयसेस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीभूत,
तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यःपुनातुवः॥१४॥
विमलस्वामिनोवाचः, कतकक्षोदसोदराः ॥ जयंतित्रिजगच्चेतो,
जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥
अनंतजिदनंताव, प्रयच्छतुसुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण,
मिष्टप्राप्तौशरीरिणां ॥ चातुर्धाधर्मदेष्टारं, धर्मनाथंमुपास्महे ॥ १७ ॥
सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्म्मलीकृतदिग्मुखः ॥ मृगलक्ष्मातमःशांत्यै,
शांतिनाथजिनोस्तुवः॥१८॥श्रीकुंथुनाथोभगवान्, सनाथोतिशयर्द्धि-
भिः॥ सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तुवःश्रिये ॥१९॥ अरनाथस्तुभ
गवां, श्चतुर्थारनभोरविः॥चतुर्थपुरुषार्थश्री, विलासंवितनोतुवः॥२०॥
सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदं॥कर्म्मद्रून्मूलनेहस्ति, मल्लंमल्लिमभि
ष्टुमः॥२१॥जगन्महामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमं॥मुनिसुव्रतनाथस्य,

देशनावचनंस्तुमः ॥२२॥ लुठंतोनमतांमूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणं ॥ वारिप्लवाइवनमेः, पांतुपादनखांशवः ॥ २३ ॥ यदुवंशसमुद्रेंदुः, कर्म्मकक्षहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ ॥ २४ ॥ कमठेधरणेंद्रेच, स्वोचितंकर्म्मकुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथःश्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमतेवीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, मरालायार्हतेनमः ॥ २६ ॥ कृतापराधेपिजने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥ २७ ॥ जयतिविजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितःश्रीमान् ॥ विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥ २८ ॥ वीरः सर्वसुरासुरेंद्रमहितो, वीरंबुधाःसंश्रिता ॥ वीरेणाभिहतःस्वकर्मनिचयो, वीरायनित्यंनमः ॥ वीरात्तीर्थमिदंप्रवृत्तमतुलं, वीरस्यघोरंतपो ॥ वीरेश्रीधृतिकीर्त्ति कांतिनिचयः, श्रीवीरभद्रंदिशः ॥ ॥ २९ ॥ अवनितलगतानांकृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभुवनगतानांदिव्यवैमानिकानां ॥ इहमनुजकृतानांदेवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानांभावतोहंनमामि ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिकर स्तोत्र लिख्यते ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइदायारं ॥ समरामिभत्तपालग, निवाणीगरुडकयसेवं ॥ १ ॥ ॐसनमो विप्पोसहिपत्ताणं, संतिसामि पायाणं ॥ भौंस्वाहा मंतेणं, सवाशिवदुरिअहरणाणं ॥ २ ॥ ॐसंतिनमुक्कारो, खेलोसहि माइलद्धिपत्ताणं ॥ सोंह्रींनमो सवोसहि, पत्ताणंचदेइसिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणी, सिरिदेवीजक्खरायगणिपिडगा ॥ गहदिसिपालसुरिंदा, सयाविरक्खंतुजिणभत्ते ॥ ४ ॥ रक्खंतुममरोहिणी, पन्नत्तीवज्जसिंखलासया ॥ वज्जंकुसिचक्केसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥ ५ ॥ गोरीतहगंधारी, महजाला माणवीअ वइरुट्टा ॥ अच्छुत्तामाणसिआ, माहा-

माणसिआउ देवीउ ॥ ६ ॥ जरकागोमुहमहाजरका, तिमुहजरके सुतुंबरूकुसुमो ॥ मायंगविजयअजिउ, बंभोमाणुउसुरकुमारो ॥७॥ छम्मुहपायालकिन्नर, गरुलोगंधवतहयजरिकंदो ॥ कुबेरवरुणोभिउमी गोमेहोपासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीउचक्केसरी, अजिआउरिआरि कालीमहाकाली ॥ अचुअसंताजाला, सुतारयासोअसिरिवछा ॥९॥ चंमाविजयंकुसिपन्नइत्ति, निवाणिअचुआधरणी ॥ वइरुट्टछु- त्तगंधारी, अंबपउमावईसिध्धा ॥ १० ॥ इयतित्थरस्कणरया, अन्नेविसुरासुरीचउहावि ॥ व्यंतरजोइसिपमुहा, कुणंतुरस्कंसयाअ म्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिट्ठिसुरगण, सहिओसंघस्ससंतिजिणचंदो ॥ मझविकरेउरस्कं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअसंतिना हसम्मदिठी, रस्कंसरइतिकालंजो ॥ सवोवद्दवरहिओ, सलहइसुह संपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगछगयणदिणयर, जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरू णं ॥ सुपसायलद्धगणहर, विज्जासिद्धिंभणइसीसो ॥ १४ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥

सीमंधर परमातमा, शिवसुखना दाता ॥ पुस्कलवई विज यें जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंमरीगणी, नयरी यें सोहे ॥ श्रीश्रेयांश राजा तिहां, नवियणना मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकीराणी मात ॥ कुंथु अर जिन अंतरे, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमें प्रनु जनमिया, वली योवन पांवे ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमणी परणावे ॥ ४ ॥ नोगवी सुख संसारना, संजम मन लावे, मुनिसुव्रत नमी अंतरे, दीक्षा प्रनु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवल नांण ॥ वृषन्न लंबने शोनता, सर्व नावना जाण॥६॥ चोराशी जस गणधरा, मुनिवर एकसो कोमी ॥ त्रण नुवनमां जोअतां, नहि कोई एहनी जोमी ॥ ७ ॥ दश लाख कह्या केवली, प्रनुजीने

परिवार ॥ एक समय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ छंदय पेढाल जिनांतरे ए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जशविजय गुरु प्रणमतां, शुभ वंछित फल लीध ॥ ए॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पुनः ॥ श्री सीमंधर जगधणी, आ भरते आवो ॥ करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल भक्त तुमे धणी ए, जो होवे अम नाथ ॥ भवोभव हूं छूं ताहरो, नहीं मेलुं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग छंडी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेविने, शिवरमणी वरिसुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुझनें घणो ए, पूरो सीमंधरदेव ॥ इहांथकी हूं वीनवूं, अवधारो मुझ सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धगिरो चैत्यवंदन लिख्यते ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन दिनकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंडण, प्रवर गुणगण भूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोडि सेवित, नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमें अहनिशि, नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी, कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल गिरिवर शृंग सीधा, नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिंदरं ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगै, नमो० ॥ ॥ ५ ॥ पातालनर सुरलोक मांही, विमलगिरिवर ते परं ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो० ॥ ६ ॥ इम विमलगिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याईये ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थे, परम ज्योतिनें पाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परम पद स्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजयसु हितकरं ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ॥ भाव धरीनें जे चढे, तेने भव पार

उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥ पूर्व नवाणूं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुंड सोहामणो, कवडयक्ष अभिराम ॥ नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन लिख्यते ॥

परमेसर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें मैं दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा रश सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभु ताहरा ए, किमही कह्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसोमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जावजो ॥ मुझ वीनतडी, प्रेम धरीनें इण पर तुमे संभलावजो ॥ जे त्रण भुवन ना नायक छै, जस चोसठ इंद्र पायक छै, नाण दरशण जेहना क्षायक छै ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया छै, जश धोरी लंछन पाया छै, पुंडरीगणी नगरीनो राया छै ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदा मांहि विराजे छै, जश चोत्रीश अतिशय छाजे छै, गुण पेंत्रीस वाणीयें गाजे छै ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ भविजनने ते पडिबोहे छै, तुम अधिक शीतलगुण सोहे छै, रूप देखी भविजन मोहे छै ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो हुं, पण भरतमां दूरे वसिओ हूं, महा मोहराय कर फसियो हूं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरियो छै, तुम आणा खड्ग कर ग्रहियो छै, तव कांइक मुझथी डरियो छै ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे पूरो, कहे पद्मविजय थाऊं शूरो, तो वाधे मुझ मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आंखड़ियें रे में आज सेत्रुंजो दीठो रे, सवालाख टकानो दिहाड़ो रे, लागे मुंनें मीठो रे ॥ सफल थयो म्हारा मननो ऊमा हो, वालामारा, भवनो संशय भाग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभुजीनें लाग्यो रे ॥ शेत्रुं० १ ॥ मानवभवनो लाहो लीधो, वाला० देहड़ी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपानें फूलड़े वधावी, प्रेमें प्रदक्षणा दीधी रे ॥ शेत्रुं० २ ॥ दूधड़े पखालीनें केशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे जोतां, पापमेवासी ध्रुज्या रे ॥ शेत्रुं० ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सुरपति आगे, वा० वीरजिनंद इम बोले रे ॥ त्रण भुवनमां तीरथ मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं० ४ ॥ इंद सरीखा ए तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल टाले, सूरजकुंडमां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ५ ॥ कांकरे२ श्रीसिद्धक्षेत्रे, वा० साधु अनंता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ६ ॥ नाभिराया सुत नयणे जोतां, वा० मेह अमीरश वूठ्या रे ॥ उदयरतन कहै आज म्हारे पोते, श्री आदीश्वर तूठ्या रे ॥ शेत्रुं० ७ ॥ इति ॥

पुनः ॥ विमलाचल नित वंदिये, कीजे एहनी सेवा ॥ मानू हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उज्जल जिन गृहमंडली, तिहां दीपै उत्तंगा, मानुं हिमगिरि विभ्रमें ॥ आई अंबर गंगा ॥ वि० २ ॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि आगलै, श्रीसीमंधर बोलै ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ कस्या, जात्राफल लहिये, तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहिये ॥ वि० ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश विजय संपद लहे, ते नर चिरनंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीपंचतीर्थ स्तवन ॥

श्लोक ॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलकं श्रीनाभिराजांगजं, वंदेरैवतशैलमौलिमुकुट श्रीनेमिनाथंयथा ॥ तारंगेअजितंजिनं भृगुपुरे श्रीसुव्रतंस्थंभने, श्रीपार्श्वंप्रणमामिसत्यनगरे श्रीवर्द्धमानंत्रिधा ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकल्पतल्प भुवनेग्रैवेयकेव्यंतरे, ज्योतिष्कामरमंदरा द्रिवसतो स्तीर्थंकरानादरात् ॥ जंबूपुष्करधातकीपुरुचके नंदीश्वरे कुंडले, येचान्येपिजिनानमामिसततं तान्कृत्रिमाऽकृत्रिमान् ॥२॥ श्रीमद्वीरजिनास्यपद्मह्रदतो निर्गम्यतेगौतम, गंगावर्त्तनमेत्ययाप्रविभवे मिथ्यात्ववैताढ्यकं ॥ उत्पत्ति स्थितिसंहृति त्रिपथगा ज्ञानांबुधावृद्धिगा, सामेकर्ममलंहरत्व वकलं श्रीद्वादशांगीनदी ॥ ३ ॥ शक्रश्चंद्ररविग्रहाश्वधरण ब्रह्मेंद्रशांत्यंबिका, दिग्पालाः सकपर्द्दिगो मुख गण श्चक्रेश्वरीभारती ॥ येन्येज्ञानतपक्रियाव्रतविधिः श्रीतीर्थयात्रा दिषु, श्रीसंघस्यतुराचतुर्विधसुरा स्तेसंतुभद्रंकराः ॥ इति श्रीपंच तीर्थ स्तवनं ॥

॥ अथ नेम राजुल सिझाय ॥

( नदी यमुनाके तीर उडे दोय पंखीया ॥ ए देशी ) पिउजी पिउजी रे नाम जपुं दिन रातियां, पिउजी चल्या परदेश तपे मोरी छातियां, ॥ पगपग जोती वाट वालेसर कब मिले, नीर विछोह्या मीन के ते जुं टलवले ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिब विण नवि गमे, जिहां रे वालेसर नेम तिहां मारूं मन भमें ॥ जो होव सज्जन दूर तोही पासे वसै, किहां सायर किहा चंद देखी मन उल्लसै ॥ २ ॥ निस्नेहीसुं प्रीत म करजो को सही, पतंग जलावै देह दीपक मनमें नही ॥ माणसतणो विजोग म होजो केहनें, साले रे साल समान हियामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीड जोवनवय अति दहै, जेहनो पिउ परदेश ते माणस दुःख सहै ॥

फुरी२ पंजर कीध काया कमला जिसी, हजुअ न आव्यो नेम मि ली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहसु रंग टाळ्यो ते नवि टलै, चकवा रयणी विजोग ते तो नयणे मिलै ॥ आंबा केरो स्वाद निंबू ते नवि करै, जे नाह्या गंगा नीर ते छीलर किम तरे ॥५॥ जे रम्या मालतीफूल धतुरे किम रमे, जेहने घीसुं प्रेम ते तेले किम जमे ॥ जेहने चतुरसुं नेह ते अवरने सुं करै, नवजोवन तजी नेम वैरागी थै फरै ॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान के पोहती सहसावने, जइ वां द्या प्रज्जु नेम संजम लेई एक मनें ॥ पाम्या केवलज्ञान के पोहती मनरली, रूपविजय प्रज्जु नेम ज्ञेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ आउखा सिझाय लिख्यते ॥

आउखो तूटाने सांधो को नही रे, तिण कारण म करो जीव प्रमाद रे ॥ जरा आव्याने शरणुं को नहीं रे, हिंसा छोमाने दया पाल रे ॥ आ० १ ॥ कुटंब कबीला नारी कारणे रे, मूरख संच्या बहुला पाप रे ॥ चोरतणी परे ऊंमी झूरसे रे, सहीसे इह लोक परलोक संताप रे ॥ आ० २ ॥ ऊंचा चिणाव्या मंदिर माळि या रे, दे दे धरतीमें ऊंमी नीव रे ॥ एक दिन अणजाण्युं ऊठी चालवूं रे, सुख दुःख सहसे आपणो जीव रे ॥ आ० ३ ॥ चक्र वर्त्ती हर बल राणो केशवो रे, जोजो वली इंद्र सुरानो नाथ रे ॥ ऊभीरने ऊवेही आथम्या रे, जोजो कोइ अचरजवाली वात रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी मुनि नीसरया रे, करता मुनि नवला तेह विहार रे ॥ ज्ञारंमपंखीनी दीधी उपमा रे, न धरे मम ता नेह लगार रे ॥ आ० ५ ॥ चारित्र पालै रूमी रीतसुं रे, देवे मुनि अपणो उपदेश रे, तिको मुनिवर सिधासी मोक्षने रे, जश लेई इहलोक परलोक रे ॥ आ० ६ ॥ शब्द रूप देखी समता धरो रे, म करो मुनि ज्ञणगानुं अज्ञिमान रे, रुषी चोथमल सूत्र

देखीने रे, जोम करी जालोर मझार रे ॥ आन० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचतीर्थी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

आदिदेव अरिहंत नमूं, समरूं तारूं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शेत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमूं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ ॥ आबू ऋषभ जूहार ॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरै, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानसुं, भरते भरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ वडूं, ज्यां वीशे जिन पाय ॥ वैभारकगिरि ऊपरै, श्रीवीर जिनेश्वरराय ॥ ४ ॥ मांडवगढनो राजियो, नामे देव सुपाश ॥ ऋषभ कहै जिन समरतां, पोहचै मननी आश ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दुज तिथीको चैत्यवंदन ॥

दु विध धर्म जिन उपदिस्यो, चोथा अभिनंदन ॥ बीजै जन्म्या ते प्रभु, भवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ दु विध ध्यान तुम्हे परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमतिजिन, ते चविया बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहने भवि तजिये ॥ मुझ परे शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव भजिये ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिनें वासुपूज्य परे, लह्यो केवलनाणं ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहियें ॥ अरजिन बीज दिने चवी, एम जिन आगलि कहियै ॥ ॥ ५ वर्त्तमान चोवीशीये, एम जिनकल्याण ॥ बीज दिने केइ पामिया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीयें, हुआ बहुत कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ग्यानपंचमीको चैत्यवंदन ॥

त्रिगडै बैठा वीरजिन, भाखै भविजन आगै ॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं

लोक जन, निसुणो मनरागे ॥ १ ॥ आराहो नवि नावसें, पांचम अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, येहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनथी लह्युं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काशकुशम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक प्रधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोसासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कामी वरसा लगे, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ज्ञानतणो महिमा घणो, अंग पांचमे नगवान ॥६॥ पंच माश लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच माशनी, पंचमी करो शुन्न दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, काउसग्ग लोगस्स केरो, ऊजमणूं करो नावशुं ए, टाले नव फेरो ॥ ८ ॥ इण परे पंचम आराहिये ए, आणी नाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परे, रंगविजय लहो सार ॥ ए ॥ इति पंचमी चैत्य-वंदन सपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टमी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

महा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो, तेम फागुण वदि आठमें, संनव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें, जनम्या ऋषननजिणंद ॥ दीक्षा पिण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्या दूर ॥ अन्निनंदन चोथा प्रनू, पाम्या सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम ऊजली, जनम्या सुमतिजिणंद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हव-रावे सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिसुव्रतस्वामी ॥ नेम आषाढ सुदि आठमें, पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदिनी आठमें, नमि जन्म्या जगन्नाण ॥ तिम श्रावण सुदि आठमें, पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ नाद्रवा वदि आठम दिने, चविया

स्वामी सुपास ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, सेव्यायी शिववास ॥७॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

शासननायक वीरजी, प्रभुकेवल पायो, संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी, सोमल द्विज यज्ञ ॥ इंद्रभूति आदे मिल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसें चउ गुणां, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करै, मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें थाप्या वंदिये, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलासी ॥ ऋषभ अजित सुमती नमी, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ शिव वास पास, भवभवना तोडी ॥ एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सघली जोडी ॥ ६ ॥ दश क्षेत्रें त्रिहु कालनां, देढसें कल्याण ॥ वरश इग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अग्यार अंग लखावियें, एकादश पाठा ॥ पूंजणी ठवणी विंटणी ॥ मसी कागल काठा ॥ ८ ॥ अग्यार अव्रत छांडवा ए, वहो पडिमा अग्यार ॥ खिमाविजय जिनशासनें, सफल करो अवतार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमंधर जिन स्तुति लिख्यते ॥

॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहिब देव, अरिहंत सकलनी भाव धरी करूं सेव ॥ सकलागम पारग गणधर भाषित वाणी, जयवंती आणा ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ( यह थुई च्यार वखते पण कहवाय छे )

श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥ कुंथु अरजिन अंतर जनम्या, तिहुअण जश परसंसा जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वर दीक्षा, शिक्षा जगतनि रासें जी ॥ उदय पेढाल जिनांतरमां प्रभु, जासे शिवपहु पासे जी ॥ १ ॥ वत्रीस चउसठि

चउसट्ठि मलिया, इगसय सट्ठि उक्किट्ठा जी ॥ चउ अड अड मिली मध्यम काले, वीश जिनेसर दिट्ठा जी ॥ दो चउ च्यार जघन्य दश जंबू, धायई पुस्कर मझारे जी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगे, प्रवचनसार उद्धारेजी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद खवण निमित्ते जी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन, देतां सुगत विनीतें जी ॥ द्वादश अंग पूरब युत्त रचिया, गणधर लब्धि विकसिया जी ॥ अपज्जवसिय जिनागम वंदो, अक्षर पदना रलिया जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित संगो, विविध भंग व्रतधारी जी ॥ चउविह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपद्रव हरनारीजी ॥ पंचांगुली सुरी शासनदेवी, देती तस जश ऋद्धी जी ॥ श्रीशुभ वीर कहै शिवसाधन, कार्य सकलमां सिद्धी जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतिथीकी स्तुति ॥

दिन सकल मनोहर बीज दिवस सुविशेष, राय राणा प्रणमें चंद्रतणी जिहां रेख ॥ तिहां चंद विमानें शाश्वत जिनवर जेह, जे बीजतणे दिन प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अभिनंदन चंदन शीतल शीतलनाथ, अरनाथ सुमतिजिन वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण, हुं बीजतणें दिन प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकास्यो बीजे द्विविध धर्म भगवंत, जेम विमला कमला विउल नयण विकसंत ॥ आगम अति अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार, बीजे सवि कीजे पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल चीर, चक्केसरी केसरी सरस सुगंध सरीर ॥ करजोडी बीजे हुं प्रणमुं तस पाय, इम लब्धिविजय कहे पूर मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति दूज थुई ॥

॥ अथ पंचमी स्तुति ॥

श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जनम्या नेमजिनंद तो ॥ स्यामव-

रंषा तनु शोभतो ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रभु आंभखो ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणी ए, पोहता मुक्ति मझार तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजन ए, पहोत्या मुक्ति मझार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी नगरीमां वली ए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेतशिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, भाखे सार वचन्न तो ॥ जीवदया गुण वेलमी ए, कीजै तास जतन्न तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थंकर इम कहे ए, परहरियै परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यक्ष भलो ए, देवी श्रीअंबिका नाम तो ॥ शाशन सानिद्ध जे करे ए, करै वलि धर्मना काम तो ॥ तपगछ नायक गुण निलो ए, श्रीविजयशेन सूरिराय तो ॥ रिषभदास पाय सेवतां ए, सफल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, भाव धरी सुरराजाजी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावै जिनराजा जी ॥ वीरजिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शिवसुख साधे जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, मंगलकमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन, अष्टापद परें बलीया जी ॥ आठमें आठ सुरूप विचारी, मद आठे तस गलिया जी ॥ अष्टमी गति परे पहुंता जिनवर, फरस आठ नहि अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्यश वाधै रंग जी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजै, समवसरण जिन राजै जी ॥ आठमें आठ सो आगम भाखी, भवि मन संशय भांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पालै निरतीचारो जी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारे, जीव दया चित धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट

प्रकारी पूजा करीने, मानवज्ञव फल लीजे जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजेजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे, निर्मल केवलज्ञान जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहे, तपथी, कोम कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रूवमी, गोविंद पूबे नेम ॥ कोण कारण ए पर्व मोटुं, कहो मुऊसुं तेम ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणक अतिघणा, एकशो ने पच्चास ॥ तेणे कारणें ए पर्व मोहोटुं, करो मौन उपवाश ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनसुं रंग ॥ २ ॥ अगियार अंग लखावियें, अगियार पाठां सार ॥ अगियार कवली विंटणा, ठवणी पूंजणी सार ॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी इम ऊजमो, जेम पामिये ज्ञव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ ज्जुजदंरु चंरु अखंम जेहनें, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पंमित शीश, शासनदेवी विघन निवारो, संघतणा निश दीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चवदशनी स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्यमेरुशिखरे, शच्याविज्ञोः शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मया, हृतरसब्रांत्या ब्रमच्चकुषा ॥ उन्मृष्टंनयनप्रज्ञा धवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्रंयस्यपुनःपुनःसजयति, श्रीवर्द्धमानोजिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहतपद्मरेणुकपिश, क्षीरार्णवांज्ञोज्नृतैः ॥ कुंज्नैरप्सरसांपयोधरज्नर, प्रस्पर्धिज्निःकांचनैः ॥ येषांमंदररत्नशैल-

शिखरे जन्माभिषेकेःकृतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणै, स्तेषांनतोहं क्रमात् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्रप्रसूतंगणधररचितं, द्वादशांगंविशालं ॥ चित्रंबव्हर्थयुक्तंमुनिगणवृषभै, र्धारितंबुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतंव्रतचरणफलं, ज्ञेयभावप्रदीपं ॥ भक्त्यानित्यंप्रपद्येश्रुतमहमखिलं, सर्वलोकैकसारं ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बालचंद्राभदंष्ट्रं ॥ मत्तंघंटारवेणप्रसृतमदजलं, पूरयंतंसमंतात् ॥ आरूढोदिव्यनागंविचरतिगगने, कामदःकामरूपी ॥ यक्षःसर्वानुभूति र्दिशतुममसदा, सर्वकार्येषुसिद्धिं ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणकंद सर्वदिन स्तुति ॥

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं, संतितउ नेमजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगणिक्कठाणं, भत्तीइवंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥ अपार संसार समुद्दपारं, पत्ताशिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सवे जिणंदा सुरविंद विंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वरजाण कप्पं, पणासियासेस कुवाइदप्पं ॥ मयंजिणाणं सरणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चंतिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदींदु गोखीर तुसारवन्ना, सरोज हत्था कमलेनिसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्ग हत्था ॥ सुहाथसा अम्ह सयापसत्था ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥श्रीशत्रुंजयगिरि तीरथ सार, गिरवरमांहे जिम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणूं, तारामांहे जिम चंद वखाणूं, जलधर मांहे जल जाणूं ॥ पंखीमांहे जिम उत्तम हंश, कुलमांहे जिम ऋषभनो वंश, नाभितणो जे अंश ॥ क्षमावंतमांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजयगिरि गुणवंता ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदा, सुमतिनाथ सुख पूनमचंदा, पद्मप्रभ सखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधी, शीतल

श्रेयास सेवो बहु बुद्धी, वासुपूज्य मति शुद्धी ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांती, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांती, मुनिसुव्रत सुद्ध पंथी ॥ नमी पास ने वीर चौवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्धगिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ भरतराय जिन साथै बोलै, स्वामी शत्रुंजयगिरि तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रुषभ कहै सुणो भरतराय, छहरी पालंता जे नर जाय, पातिक भूको थाय ॥ पशु पंखी जे इण गिरि आवै, भवबीजे ते सिद्ध ज थावै, अजरामर पद पावै ॥ जिनमतमें सेत्रुंजो वखाण्यो, ते मैं आगम दिलमांहे आण्यो, सुणता सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति भरत नरेसर आवे, सोवनतणां प्रासाद करावै, मणिमय मूरति ठावै, नाभिराय मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बहिन विख्याता, मूर्त्ति नवाणुं आता ॥ गोमुख नें चक्केसरीदेवी, शेत्रुंजय सार करै नित्यमेवी, तपगछ ऊपर हेवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वरराया, श्रीविजयदेव सूरी प्रणमी पाया, रुषभदास गुण गाया ॥ ४ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तुतिः ॥

महाविदेह क्षेत्रे सीमंधरस्वामी, सोनाना सिंहासण जी, रूपाना कोशीसा विराजै रत्नना दीवा दीपे जी ॥ कुंकुमवर्णी गहुंली विराजै मोतीना अक्षत सार जी, त्यां वैठा सीमंधरस्वामी बोलै मधुरी वाणी जी ॥ १ ॥ केसरचंदन भरी रे कचोली कस्तूरी बराश जी, पहलो रे पूजा अमारी रे होजो ऊगमतें परभात जी॥

॥ अथ पंचिंदिय संवरणो ॥

॥ पंचेंदिय संवरणो, तह नव विह बंभचेर गुत्तिधरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इय अठारस गुणेहि संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायारपालण समत्थो ॥ पंच समईतिगुत्तो, छत्तीस गुणेहिं गुरूमज्झ ॥ २ ॥

॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो, जावमणेहोइनियमसंजुत्तो ॥ छिन्नइअ सुहंकम्मं, सामाइयजत्तियावारा ॥ १ ॥ सामाइअंमिउकए, समणो इवसावउहवइजह्मा ॥ एएणकारणेणं, बहुसोसामाइयंकुज्जा ॥ २ ॥ सामायक विधें लीधु विधें पारिउं विधि करतां जे अविधि हुओ होइ ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ दश मनना दश वचनना बारे कायाना एवं बत्तीस दूषणमांहे जे कोइ दूषण लागो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

॥ अथ पोसह पारवानो गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चंडवडिंसोसुदंसणोधन्नो ॥ जेसिंपोसह पडिमा, अखंडिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहणिज्जा, सुलसा आणंदकामदेवाय ॥ जेसिंपसंसइभयवं, दढव्वयंतंमहावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधे लीधुं विधें पारिउं विधि करतां जो कोइ अविधि हुउ होय ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह भगवन् चैत्यवंदन करूं, इछं ॥ जग चिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरक्कण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह, जगभाव विअक्कण ॥ अठावय संठविअरूव, कम्मठ विणासण ॥ चउवीसं पि जिणवर जयंतु, अप्पडिहय शासण ॥ १ ॥ कम्मभूमिहिं२ पढम संघयण ॥ उक्कोसय सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लप्भई ॥ नवकोडिहिं केवलिण, कोडि सहस्स नव साहू गम्मई ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडिहिं वरनाण ॥ समणहकोडी सहस दोअ, थुणि जअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउसामी२ रिसहसंतुंजि उज्जिंत पहू नेमजिण ॥ जयउ वीर सच्च उरमंडण, भरुअछहि मुणिसुवय ॥ महुरिपास

छुह डुरिय खंरूण, अवर विदेहिं तित्थयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि, तीआणागय संपइअं, वंडु जिण सवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्का ठपन्न अठ कोरूीउ, वत्तीसय बासीआइ, तिय लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नास कोम्ि सयाइं, कोमी बायाल लक्क अम्रवन्ना ॥ ठत्तीस सहस असियाइं, सासय बिंबाइ पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा न्नणिउ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तडुन्नय, अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निकंखिअ, निवि त्तिगिछा अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरी करणे, वछल पन्नावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिंसमईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्ता यारो, अठविहो होइनायवो ॥४॥ बारसविहंमिवि तवे, अब्भिंतर बाहिरे कुशल दिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायवा सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसण मुणो यरिआ, वित्ती संखेवणं रसच्चाउ काय किलेसो संली ण याय, वज्झो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायच्छित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सज्झाउ ॥ झाणं उस्सग्गोविय, अब्भिंतर उ तवो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ बल विरिओ, परिक्कमइ जो जहुत्त माउत्तो ॥ जुंजइअ जहाथामं, नायवो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेशरं ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मंपुनातुवः ॥ १ ॥ येषामन्निषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षन्नरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥२॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं॥

अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रभाषितं, दिनागमे नौमिबुधैर्नमस्कृतं ॥३॥ इति॥

॥ अथ सुयदेवतानो स्तुतिः ॥

सुअ देवयाए करेमि काउसग्गं० सुअ देवया भगवई, नाणावरणीअकम्म संघायं ॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे भत्ती १

॥ अथ खेत्रदेवतानी स्तुति ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं ॥ साहंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ दुरियाइं ॥ १ ॥ इति

॥ अथ सामायकलेवानो विधि ॥

॥ प्रथम ऊंचे आसणे पुस्तक प्रमुखनी थापना मूकीने श्रावक श्राविका कटासणुं मुहपत्ती चरवलो लई शुद्ध वस्त्र पहेरी जग्या पूंजी कटासण ऊपर बेशी मुंहपत्ती डावा हाथमां मुख पासे राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणी ( पंचिंदिअ ) कही इच्छामि खमासमण देई इरियावहिया तस्सुत्तरी अन्नत्थऊससिएणं कहे, १ लोगस्सको अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करे ( पारी ) प्रगट लोगस्स कहे, खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायक मुंहपत्ती पडिलेहुं इच्छं । इम कही मुंहपत्ती तथा अंगनी पडिलेहणना पचास बोल कही मुंहपत्ती पडिलेहीए पछी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायक संदिस्साउं इच्छं । वली खमासमण देई इच्छा० सामायकठाउं इच्छं । एम कही बे हाथ जोडी एक नवकार गणी इच्छाकार भगवन् पसाय करी सामायकदंडक उच्चरावोजी, पछी गुरु प्रमुख वडेल करेमिभंते कहे, पछी खमासमण देई इच्छा० बेसणो संदिसाउं । खमा० इच्छा० बेसणोठाउं, खमा० इच्छा० सिझाय, संदिस्साउं । खमा० इच्छा० सिझाय करूं इच्छं, एम कही त्रण नवकार गणवा । पछी बे घडी सझाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानी विधि ॥

॥ अथ सामायकपारवानो विधिः ॥

॥ खमासमण देइ इरियावही पडिकम्याथी ( यावत् ) लो जस्स सूधी कही खमा० इच्छा० मुंहपत्ती पडिलेहुं एम कही मुंह पत्ती पडिलेही खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं यथाशक्ति, वली खमासमण देई इच्छा० सामायकपार्युं तहत्ती कही पछी ज मणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नव कार गणी सामाइयवयजुत्तो० कहिए, पछी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणिए ॥ इति सामायक पार वानो विधि ॥

॥ अथ दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम सामायक लीजे, पछी पाणी वावर्युं होय तो मुहपत्ती पडिलेहवी अने आहार वावर्यो होय तो वांदणा बे देवा, तिहां बीजा वांदणामां आवस्सियाए ए पाठ नही कहिवो. पछी यथाशक्ति पच्चख्काण करवुं, पछी खमासमण देई इच्छा० कही वडेरायें अथवा पोते चैत्यवंदन कहवुं, पछी जंकिंचि० नमोत्थुणं० कही ऊभा थईने अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो काउसग्ग करी नमोर्हत्० कहीनें प्रथम थुई कहवी, पछी लोगस्स० सवलोए अरिहंतचेइयाणं कही एक नवकारनो काउसग्ग पारीनें बीजी थुई कहवी, पछी पुख्करवरदी० कही सुअस्सभगवओ करेमिकाउसग्गं वंदण० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी त्रीजी थुई कहवी पछी सिद्धाणंबुद्धाणं० कही वेयावच्चगराणं० करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी नमोर्हत्कही चोथी थुई कहवी पछी बेसीनें नमोत्थुणं कहै, पछी चार खमासमण देवापूर्वक भगवान् आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यः प्रते थोभवंदन करीयै. पछी इच्छाकारेण० देवसिक प्रतिक्रमणठाउं एम कही जमणोहाथ चरवला अथवा कटा-

सणा ऊपर थापीने इछं सव्वस्सवि देवसिय० कहेवुं, पछी ऊभा थई करेमिभंते इछामिठामिकाउसग्गं जोमेदेवसिउ० तस्सउत्तरी० कहीने अतीचारनी आठ गाथानो काउसग्ग करवो, आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग करवो. ते काउसग्ग पारीनें लोगस्स कहेवुं, पछी बैसीनै त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेहीने वांदणा बे देवा, पछी ऊभा थईने इछाकारेण० देवसियं आलोउं इछं आलो एमि जोमेदेवसिउ० कहीने सातलाख कहवा. पछी अढार पाप स्थानक आलोइये, सव्वस्सविदेवसिअ कहीने बेसवुं, बेसीनें एक नव कार गणी करेमिभंते इछामिठामिपडिक्कमिउं कहीने वंदित्तु कहेवु पछी वांदणा बे देवा, पछी अभुट्ठिउमिअभिंतर देवसिअं खामीनें वांदणा बे देवा, पछी ऊभा थई आयरियउवझाए कहीने करेमि-भंते० इछामिठामि० जोमेदेवसिउ० तस्सउत्तरी० कही बे लोगस्स अथवा आठ नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारीने लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं वंदणवत्ति० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग पारीने पुक्खरवरदी० सुअस्सभ-गवउ करेमिकाउसग्गं० वंदण० कहीने एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारीने सिद्धाणंबुद्धाणं० कही सुय-देवयाए करेमिकाउसग्गं अनत्थु० कही एक नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारी नमोऽर्हत्कही पुरुषे सुयदेवयानी पहेली थुई कहवी अने स्त्रिये कमलदलनी पहली थुई कहवी. पछी खेत्रदेवतानी बीजी थुई स्त्रिये तथा पुरुषे बन्नेए एकज कहवी. पछी १ नवकार प्रगट गुणी बैसीने छठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेहीनें बे वांदणा दीजै, पछी सामायक चउवीसत्थो वंदनक पडिक्कमणुं काउ-सग्ग अने पच्चखाण करूंछुंजी एम ए छए आवश्यक संभारवा. पछी इछामो अणुसट्ठिं नमोखमासमणाणं० कही नमोर्हत् कही पुरुष

नमोऽस्तुवर्द्धमानाय कहे अने स्त्रिया संसारदावानी त्रण थुई कहे पछी नमोत्थुणं कही स्तवन कहवुं, पछी वरकनक कही भगवान आदे वांदवा, पछे जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी अढाइज्जेसु क- हेवुं, पछी देवसिअपायछित्तनो काउसग्ग च्यार लोगस्स अथवा शोलनवकारनो करवो, काउसग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही बेसीने खमासमण देई इछा० सिझायसंदिस्साउं, बीजुं खमासमण देई इछा० सिझायभणुं एम सिझायनो आदेश मांगी एक नवकार गणी सिझाय कहवी, पछी एक नवकार गणी खमासमण देई दुःखक्ख- उकम्मक्खउनो काउसग्ग च्यार लोगस्सनो संपूर्ण अथवा शोल नवकारनो करवो, ते एक वडेरे अथवा पोते पारीने नमोऽर्हत्कही लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्स कहे, पछी इरियावही० तस्सउ- त्तरी० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी चउक्कसाय० नमोत्थुणं० कही जावंति बे कहीने उवसग्गहरं० जयवीयराय कही मुंहपत्ती पडिलेहवी पछी इछामि० इछाका० सामायकपारुं यथाशक्ति इछामि० इछाका० सामायकपार्युं तहत्ति कही पछी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी एक नवकार गणीने सामाइयवयजुत्तो० कहेवुं, पछी थापेली था- पना होयतो एक नवकार गणी उठे. ए देवसि प्रतिक्रमण विधि कह्यो, बाकी अंतरविधि मोहटाथी समजवो ॥ इति देवशी प्रति- क्रमण विधिः ॥

## ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम पूर्वली रीते सामायक लेवुं पछी इछामि० इछाका० कही कुसमिणनो दुसमिणनो च्यार लोगस्सनो अथवा शोल नवकारनो काउसग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कहवो, पछी खमास- मण देई जगचिंतामणीनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सूधी कहेवुं, पछी

च्यार खमासमणपूर्वक भगवान आचार्य उपाध्याय अने सर्वसाधू प्रत्येके वांदवा, पछी खमासमण बे देई सज्झायनो आदेश मांगी एक नवकार भणीने भरहेसरनी सज्झाय कहीने फरी १ नवकार गणवो, पछी इच्छकारसुहराईनो पाठ कहवो, पछी इच्छाका० राईपडिक्कमणेठाउं कहीने जमणो हाथ ऊपधी ऊपर आपीने पछी इच्छं सव्वस्सविराईय दुच्चिंतिय० कही नमोत्थुणं तथा करेमिभंते कही इच्छामिठामिकाउसग्गं० तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग पारीने प्रगट लोगस्स कही सव्वलोएअरिहंत० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करवो, पछी पुक्खरवरदी० सुअस्स० वंदणव० कही अतीचारनी आठ गाथानो अथवा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग पारी सिद्धाणंबुद्धाणं कहीने त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेही वांदणा बे देवां तिहांथी लेनें अब्भुट्ठिओमिखामी बांदणा बे दीजे तिहां सूधी देवशीनी रीते जाणवुं, पण जे ठिकाणे देवसियं आवे ते ठिकाणे राईयं कहेवुं, पछी आयरियउवज्झाए० करेमिभंते० इच्छामिठामि० तस्सउत्तरी कही तपचिंतामणी करतां न आवडे तो च्यार लोगस्स अथवा शोल नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारी प्रगट लोगस्स कही छठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेही बांदणा बे देवा, पछी सकल तीर्थवंदन करीने यथाशक्तियें पच्चक्खाण करवुं, पछी इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायकचउवीसत्थो वंदनक पडिक्कमण काउसग्ग पच्चक्खाण कर्युं छेजी, एम छ आवश्यक संभारवा, पछी पच्चक्खाण करवुं होयतो करवुं छेजी अने धारवुं होयतो धारवुं छेजी, एम कहवुं, पछी इच्छामोअणुसट्ठिं० नमोखमासमणाणं० नमोर्हत्० कहीने विशाललोचन० नमोत्थुणं० अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी नमोर्हत्कही कल्याणकंदनी प्रथम थोय

कहेवी, पछी लोगस्स० पुक्खरवरदी० सिद्धाणंबुद्धाणं कही अनुक्रमे च्यार थोयो कहवी, पछी नमोत्थुणं कही भगवान् आदि चारने च्यार खमासणे वांदवा, पछी जमणो हाथ ऊपधि ऊपर थापी अ-ड्ढाइज्जेसु कहेवुं पछी सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन स्तवन० जयवी-राय० काउसग्ग० थोय पर्यंत कहीये तिहांसुधी करवुं, पछी खमा-सणपूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन स्तवन जयवीराय काउ-सग्ग० अने थोय कहवी, पछी सामायक पारवानी विधियें सामा-यक पारवुं इति ॥

॥ अथ पक्खी प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही रहिये तिहांसूधी सर्व कहेवुं पण चैत्यवंदन सकलार्हतनुं कहेवुं अने थोयो स्नात-स्यानी कहेवी, पछी खमासमण देईने इच्छाकारेण संदिस्सह भग-वान् देवसियं आलोइयंपडिक्कंता इच्छा० पक्खियमुंहपत्ती पडिलेहुं एम कही मुंहपत्ती पडिलेहीये, पछी वांदणा बे दीजे, पछी इच्छा-कारेण० संबुद्धाखामणेणं अब्भुट्ठिओहं अभिंतर पक्खियंखामेउं इच्छं खामेमिपक्खियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइयाणं जंकिंचिअप्पत्तियं० कही इच्छाकारेणसं० पक्खिअंआलोएमि इच्छं आलोएमि जोमेपक्खि-ओअइयारोकओ कही इच्छा० पक्खी अतीचार आलोउं, एम कही वृद्ध अतीचार कहीये, पछी एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्रीसमकितमू-लबारव्रत एकसो चोवीस अतीचारमांहे जे कोई अतीचार पक्षदि-वसमांहे सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय ते सवे हुं मनकर वचनकर कायायेंकरी मिच्छामिदुक्कडं ॥ सव्वस्सविपक्खिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिय दुच्चिठ्ठिय इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥ इच्छाकारिभगवन् पसाउ करी पक्खी तपप्रशाद कराउ जी, एम उच्चार करीने आवी रीते कहीये, चउत्थेणं एकउ-

पवाश बेआंबिल त्रणनीवि च्यारएकाशणा आठबेआसणां बेहजार सज्झाय करी यथाशक्ति तप प्रवेश कर्यो होयतो पइठी कहीए, करवो होयतो तहत्ति कहीये, न करवो होयतो अणबोल्या रहीये पछी वांदणा बे दीजे, पछी इच्छाकारे० पत्तेयखामणेणं अब्भुठ्ठिओहं अभिंन्तर पख्खिअं खामेउं इच्छं खामेमिपख्खियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइआणं जंकिंचिअप्पत्तियं० पछी वांदणा बे दीजे पछी देवसियआलोइयपडिक्कंता इच्छाका० भगवन् पख्खियंपडिक्कमुं सम्मपडिक्कमामि इच्छं एम कही करेमिभंतेसामाइयं० कही इच्छामिपडिक्कमिउं जोमेपख्खिओ० कहवो पछी खमासमण देई इच्छाका० पख्खीसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी साधु न होयतो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तु कहे, पछी सुयदेवयानी थोय कहवी पछी हेठा बैसी जमणोढींचण ऊभो राखी एक नवकार गणी करेमिभंते० इच्छामिपडि० कही वंदित्तु कहेवुं०, पछी करेमिभंते इच्छामिठामिकाउसग्ग जोमेपख्खिओ० तस्सउत्तरी० अन्नत्थ० कहीने (१२) बार लोगस्सनो काउसग्ग करवो, ते लोगस्स चंदेसुनिम्मलयरा सूधी कहवा अथवा अडतालीस नवकारनो काउसग्ग करी पारवो, पारीने प्रगट लोगस्स कही मुंहपत्ती पडिलेहीने बांदणा बे दीजे, पछी इच्छाका० समाप्तिखामणेणं अब्भुठ्ठिओहं अभिंतर० पख्खिअंखामेउं इच्छं खामेमिपख्खिअं पन्नरसदि० कही पछी खमासमण देई इच्छाका० कही पख्खीखामणाखामूं एम कही खामणा च्यार खामवा पछी दैवसीप्रतिक्रमणामां वंदित्तु कह्या पछी जे बांदणा देईने तिहांथी ते सामायक पारीये तिहांसूधी सर्व दैवसीनी पेठे जाणवु, पण सुयदेवयानी थुईने ठिकाणे ज्ञानादि थोयो कहवी स्तवन अजितशांतिनुं कहवुं, सज्झायने ठिकाणे उवसग्गहरं तथा संसारदावानी थुई च्यार कहेवी अने लघुशांतिने ठिकाणे मोटी

शांति कहेवी ॥ इति पख्खी प्रतिक्रमण विधी ॥

## ॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

ये ऊपरना कह्या प्रमाणे सर्व विधी करवी पण एटलो विशेष, बार लोगस्सना काउसग्गने ठिकाणे वीस लोगस्सनो काउसग्ग करवो अने पख्खीना आगारने ठिकाणे चउमाशीना कहवा, यथातपने ठेकाणे छठ्ठणं बे उपवास च्यार आंबिल छनीवी आठ एकाशणा शोल बेआसणा च्यारहजारसझाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

## ॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधिः ॥

ए पण ऊपर लख्या मुजब एटलो विशेष पण पख्खीना बार लोगस्सने ठिकाणे चालीश लोगस्सनो काउसग्ग अथवा एकशो शाठ नवकारनो काउसग्ग करवो, अने तपने ठिकाणे अठमभत्त एटले त्रणउपवाश छआंबिल नवनीवी बारएकाशणा चोवीश बेआसणा अने छहजार सिझाय ए रीते कहवुं अने पख्खीना आगारने ठिकाणे संवत्सरीना आगार कहवा ॥ इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

## ॥ अथ पडिलेहण करवानो विधो ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावही पडिक्कमवी. थापना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहवुं, पछी उस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही उभे पगे बेसी मुंहपत्ती चरवलो कटासणुं उत्तरासण धोतीउं कंदोरो आदिनुं पडिलेहण करवुं, पछी काजो काढी जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं, पछी काजो काढनार थापनाजी सन्मुख उभो रही इरियावही पडिक्कमे पछी काजो परठववा जग्या सोधी त्रणवार अणुजाणहजस्सुग्गो कही काजो परठवे, पछी त्रण वार वोसिरे कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो विधी ॥

॥ अथ पच्चख्काण पारवानो विधि ॥

प्रथम इरियावही पडिक्कमिये, पछी जगचिंतामणीनुं चैत्य वंदन जयवीयराय सूधी करवुं पछी मन्हजिणाणंनी सिझाय कह वी, मुहपत्ती पडिलेही इच्छामि० इच्छाका० पच्चख्काणपारूं यथाश क्ति० इच्छामि० इच्छाका० पच्चख्काणपारयुं तहत्ति एम कही जमणो हाथ चरवला अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नवकार गणी प च्चख्काण करयुं होय ते कहेवुं, ते लखिये छिये ॥ उग्गए सूरे नमोका रसहियं पोरसिं साढपोरसिं गंठिसहियं मुठिसहियं पच्चख्काणकरयुं चउविहार आंबिल नीवी एकासणुं बेआसणुं करयुं तिविहार पच्च ख्काण फासियं पालियं सोहियं तीरिअं कीट्टिअं आराहिअं जंचन आराहियं तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ एम कही १ नवकार गणवो ॥ इति॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥

पुख्कलवइ विजयें जयो रे, नयर पुंडरीगणी सार ॥ श्री सीमंधर साहिबा रे, राय श्रेयांसकुमार ॥ जिणंदराय धरज्यो धर्म सनेह ॥ (आंकणी)। मोहोटा नाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ शशि दरिशण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० २॥ गाम कुगाम न लेखवे रे, जग वरसत जलधार ॥ कर दोय कुसुमें वा सियो रे, गया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ रायने रंक सरिखा गणे रे, उद्योतें शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहुं तणा रे, ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे छो माहाराज ॥ मुझसुं अंतर किम करो रे, बांह ग्रह्यांनी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो माने सवितणो रे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषभलंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुकमणी कंत ॥ वाचक जश इम वीनवे रे, भयभंजण भगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

## ॥ अथ बीजनुं स्तवन ॥

( ॥ फतमल पाणीमाने जाय ए देशी ॥ ) ॥ प्रणमी शारदमाय, शासन वीर सुहकरूं जी ॥ बीज तिथी गुणगेह, आ दरो नवियण सुंदरू जी ॥ १ ॥ एह जिन पंच कल्याण, विवरीने कहूं ते सुणो जी ॥ माहा सुदि बीजे जाण, जन्म अभिनंदनतणो जी ॥ २ ॥ श्रावण सुदिनी हो बीज, सुमति चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण नवोदधि तेह, तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुन गाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र व॰ दिनी हो बीज, वरया मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥ फाल्गुन मासनी बीज, उत्तम उज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस च्यवन, कर्मक्षयें तब पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघ ज मास, शुदि बीजें वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवलनाण, शरण करो जिनराज नो जी ॥ ६ ॥ करणीरूप करो खेत, समकित बीज रोपो तिहां जी ॥ खातर किरिया हो जाण, खेड समता करी जिहां जी ॥७॥ उपशम तद्रूप नोर, समकित छोड प्रगट होवे जी ॥ संतोष करी अहो वाड, पच्चख्काण व्रत चोकी सोवे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष फल्यो तिहां जी ॥ मांजर अनुनवरूप, उतरे चारित्र फल जिहां जी ॥ ९ ॥ शांति सुधारश वारी, पान करी सुख लोजीये जी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रस किजीये जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश मास, उत्कृष्टी बावीस मासनी जो ॥ चोविहार उपवास, पालियें शील वसुधासती जो ॥ ११ ॥ आवश्यक दोय वार, पडिलेहण दोय लीजीये जी ॥ देववंदन त्रिण काल, मन वच कायायें कीजीये जी ॥ १२ ॥ ऊज मणुं शुन चित्त, करी धरीयें संजोगथी जी ॥ जिनवाणी रस एम, पीजीये श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एणि विध करियें हो बीज,

राग ने द्वेष दूरे करे जी ॥ केवलपद लहि तास, वरे मुक्ति उल्लट धरे जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुजक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, जक्ति पामे सुख संपदा जी ॥ १५ इति बीजतिथीनुं स्तवनं ॥

॥ अथ पंचमीनुं वृद्ध स्तवन ॥

( ॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥ ) सुत सिद्धारथ जूपनो रे, सिद्धारथ जगवान ॥ बारह परखदा आगले रे, जाखे श्रीवर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ जवियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे, ज्ञान जक्ति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतमतणा रे, मुख्यपणे तिहां होय ॥ तेमां पण ज्ञानज वडुं रे, जिणथी दंसण होय रे ॥ ज० २ ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने थिवरपणुं लहे रे, आचारज उवज्झाय रे ॥ ज० ३ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां रे, कठिण करम करे नाश ॥ वह्नि जेम इंधन दहे रे, क्षणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ ज० ४ ॥ प्रथम ज्ञान पछे दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुणठाणांग पगथालीये रे, जेम चढे मोक्ष आवासो रे ॥ ज० ५ ॥ मइ सुअ उहि मणपज्जवा रे, पंचम केवलज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक छे रे, स्व पर प्रकाश निदान रे ॥ ज० ६ ॥ तेहना साधन जे कह्या रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावे साचवे रे, धर्मी धरी अप्रमादो रे, ॥ ज० ७ ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, जणतां करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा बोबडा रे, मुंगा पांगुल थाय रे ॥ ज० ८ ॥ जणतां गुणतां न आवडे रे, न मले वल्लज चीज ॥ गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ज० ए ॥ प्रेमे पूछे परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, कहो अधिकार पसायो रे ॥ ज० १० ॥ इति ॥

( ॥ ढाल २ ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ )

जंबुद्धिपना भरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान, एहिज मुक्ति निदान रे ॥ प्रा० आ० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरें भणवा मूंकिउ रे, आठ वरस जब हुंतरे ॥ प्रा० २ ॥ पंमित यत्न करे घणो रे, गात्र भणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवमे रे, ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ प्रा० ३ ॥ कोढें व्यापी देहमी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ प्रा० ४ ॥ कपूरतिलका गेहनी रे, शीले शोभित अंग ॥ गुणमंजरी तस बेटमी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ प्रा० ५ ॥ शोल वरसनी सा थई रे, पामी यौवनवेश ॥ डुर्भग पण परणे नही रे, मात पिता धरे खेद रे ॥ प्रा० ६ ॥ तेणे अवसरे उद्यानमां रे, विजयशेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रतधार रे ॥ प्रा० ७ ॥ वनपालक नृपालने रे, दीध वधाइ जाम ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ प्रा० ८ ॥ धर्मदेशना सांभले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकशत नयन वदन मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ प्रा० ९ ॥ ज्ञान विराधन परभवे रे, मूरख पर आधीन ॥ रोगें पीड्या टलवले रे, दीसै डुःखीया दीन रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञान सार संसारमे रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥ ज्ञान विना जगजीवमा रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ प्रा० ११ ॥ श्रेष्ठी पूछे मुणिंदने रे, भाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुज अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ प्रा० १२ ॥ इति ॥

( ढाल ३ ॥ सूरती महिनानी देशीमां )

धातकीखंमना भरतमां, खेटक नयर सुगाम ॥ व्यवहारी

जिनदेव छे, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंमित पासे सीखवा, तातें मुंक्या कुमार ॥२॥ बालस्वभावें रामतें, करतां दहाडा जाय ॥ पंमित मारे जाहरे, मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी सीखवे, भणवानुं नही काम ॥ पांझ्यो आवे तेमवा, तो तस हणजो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खमिया लेखणा, बाली कीधा राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम करहाने झाख ॥ ५ ॥ पाडा परे मोहोटा थया, कन्या न दीये कोय ॥ सेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुफ करणी जोय ॥ ६ ॥ भटकी भाखे भामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे छै सहु कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापणि सापणी, सामा बोल म बोल ॥ रीसाली कहे तादरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुफ बेटी उपनी, ज्ञान विराधन हेव ॥ ए ॥ मुर्छागत गुणमंजरी, जातीसमरण पामि ॥ ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग, गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वंछित योग ॥ ११ ॥ उज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥ नमो नाणस्स गणणुं गुणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरब उत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य फलादि उदार ॥१३॥ दीवो पंच दीवटतणो, साथियो मंगल गेह ॥ पोसहमान करी सके, तेण विधि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा सौभाग्यपंचमी, उज्वल कार्तिक मास ॥ जावज्जीव लगे सेवियें, ऊजमणा विधि खास ॥ १५ इति ॥

( ॥ ढाल चोथी ॥ एकवीसानी देशीमां ॥ )

पांच पोथी रे, ठवणी पाठा विटांगणा ॥ चावखी दोरा रे, पाटी पाटला वर तणा ॥ मसी कागल रे, कांबी खमिया लेखणी॥

कवली भाबली रे, चंद्रुआ ऊरमा पुंजणी ॥ १ ॥ ( त्रूटक ) प्रा-
साद प्रतिमा तास जूषण, केसर चंदन भाबली ॥ वासकूंपी वाला
कूंची, अंगलूहणा गावभी ॥ कलश थाली मंगलदीवो, आरती नें
धूपणा ॥ चरवला मुंहपत्ती साहमी वछल, नोकरवाली आपना ॥
॥ २ ॥ ( ढाल ) ज्ञान दरिसण रे, चरणना साधन जे कह्या, तप
संयुत रे, गुणमंजरीयें सद्दह्या ॥ नृप पूछे रे, वरदत्त कुंवरनें अंग
रे ॥ रोग उपनो रे, कवण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ ( त्रूटक ) मु
निराज जासे जंबुद्दीपें, जरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु
तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ बन मांहे रमतां दोय
बंधव, पुण्य योगें गुरु मळ्या ॥ वैराग्य पामी जोग वामी, धर्म
धामी संवरया ॥ ४ ॥ ( ढाल ) लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी
लहे, पणसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिये ॥ कर्म योगे रे,
अशुज उदय थयो अन्यदा, संथारे रे, पोरसी जणी पोढ्यो यदा
॥ ५ ॥ ( त्रूटक ) सर्वघाति निंद व्यापी, साधु मांगे वायणा ॥
ऊंघमां अंतराय थातां, सूरि हूआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जा-
ग्यो, लाग्यो मिथ्या जूतभो ॥ पुण्य अमृत ढोली नांख्यो, जरयो
पापतणो घमो ॥६ (ढाल) मन चिंतवे रे, कां मुऊ लागुं पाप रे ॥
श्रुत अभ्यासो रे, तो एवमो संताप रे ॥ मुऊ बांधव रे, जोयण
खायण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥
( त्रूटक ) वार वासर कोई मुनिने, वायणा दीधी नही ॥ अशुज
ध्याने आयु पूरी, जूप तुऊ नंदन सही ॥ ज्ञान विराधन मूढ जम
पणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्ध बांधव मानसरवर, हंसगति पाम्यो
सही ॥ ८ (ढाल) वरदत्तने रे, जातिस्मरण ऊपनो ॥ जव दीठो रे,
गुरु प्रणमी कहे शुज मनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्रय दी
वमो ॥ गुण अवगुण रे, जासन जे जग परवमो ॥ ए ॥ (त्रूटक)

ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो किम आवसे ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासै, टाढ जेम घन तावसे ॥ नृप पभणे पुत्रने प्रज्ञु, तपनी शक्ति न एवसो ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा ल्यो बेवसी ॥ १० ॥ इति ॥

( ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥ )

सद्गुरु वयण सुधारसे रे, भेदी साते धात ॥ तपसुं रंग लागो, गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोग मिथ्यात्व ॥ त० १ ॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, पसर्यो महियल मांही ॥ त० ॥ कन्या सहस सयंवरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ नृपें कीधो पाट वी रे, आप थयो मुनि नूप ॥ त० ॥ ज्ञीम कांत गुणें करी रे, वर दत्त रवि शशिरूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीतणा रे, ज्ञोगवें ज्ञोग अखंम ॥ त० ॥ वरसें३ ऊजवे रे, पंचमी तेज प्रचंम ॥ त० ॥ ४ ॥ ज्ञुक्तज्ञोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खटकाय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावे निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थई साधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरे रे, गुणवंत नारी पेट ॥ तप० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुण्यें कीधो ज्ञेट ॥ तप० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, सो कन्या ज्ञ रतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ ८ ॥ तिहां पण ते तप आदर्युं रे, लोक सहित नूपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पालै राज्य उदार ॥ त० ॥ ९ ॥ चार महाव्रत चुंपसुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि मुक्ते गयो रे, सादिअनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शु ज्ञापुरी रे, जंबुविदेह मझार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी चवी रे, गुणमं-

जरीनो जीव ॥ त० ॥ मानसतर जेम हंसलो रे, नाम धर्युं सु ग्रीव॥ त० ॥ १२ ॥ वीसे वरसे राजवी रे, सहस चोरासी पूत्र ॥ त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३॥ पंचमी तप महिमा विषे रे, जाषै निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेहनो तस उपकार ॥ त० ॥ १४॥ इति ॥

( ढाल छठो ॥ करकंडुने करुं वंदना ॥ ए देशी )

चोवीश दंमक वारवा, हूं वारी ॥ चोवीशमो जिनचंद रे, हूं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणतस्वर्गथी, हुं० ॥ त्रिसला उर सुखकंद रे ॥ हुं० १ ॥ माहावीरनें करुं वंदना, हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमी गतिनें साधवा, हुं० ॥ पंचम नाण विलाश रे, हुं० ॥ माहा निशीथ सिद्धांतमां, हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे, हुं० मा० २ ॥ अपराधी पण उधर्यो, हुं० ॥ चंमकोसियो साप रे, हुं० ॥ यज्ञ करंता बांम्हणा, हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे हुं० मा० ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी, हुं० ॥ रिषजदत्त वली विप्रे, हुं० ॥ च्यासी दिवश संबंधथी, हुं० ॥ कामित पूर्यो क्षिप्र रे ॥ हुं० मा० ४ ॥ कर्मरोगने टालवा, हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे, हुं० ॥ आदर्यो में आला धरा, हुं० ॥ मुज ऊपर हित आणि रे, ॥ हुं० मा ५ ॥ श्रीविजयसिंह सुरीसनो, हुं०, सत्यविजय पन्यास रे, हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि, हुं० ॥ चंद किरण जस जास रे, ॥ हुं० मा० ६ ॥ पास पंचासरा सान्निद्धे, हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे, हुं० ॥ जिनविजय कहे मुज हजो, हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० मा० ७ ॥ ( कलश ) इय वीर लायक विश्व नायक सिद्धिदायक संस्तव्यो, पंचमी तप संस्तवन टोमर गुंथी निज कंठे ठव्यो ॥ पुन्य पाटण खेत्र मांहे सत्तर त्राणुं संवत्सरे, श्रीपार्श्व जनमकल्याण दिवसें सकल जवि मंगल करे ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे ठाम धरमना साढापचवीश देश जो, दीपे रे त्या देस मगध सहुमां शिरे रे लो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजै गज परे रे लो ॥१॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता तिहां आवी वीर समोसरया रे लो ॥ हां० चवद सहस मुनिवरना साथे साथ जो, सूधा रे तप संयम शियले अलंकरया रे लो ॥ २ ॥ हां० फूल्या रसञ्चर फूल्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुण शीलवन हलि रोमंचियो रे लो ॥ हां० वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो, वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लो ॥ ३ ॥ हां० देव चतुर्विध आवै कोमाकोम जो, त्रिगडुं रे मणि हेम रजतनुं ते रचे रे लो ॥ हां० चोसठ सुरपति सेवे होमाहोम जो, आगे रे रस लागे इंद्राणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां० मणिमय हेम सिंहासण बेठा आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरतनें जम्या रे लो ॥ हां० सुणतां डुंडुभि नाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस जानू अम्या रे लो ॥ ५ ॥ हां० ताजे तेजे गाजे घन जेम लूंब जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० निरखी हरखी आवे जन मन लूंब जो, पोषे रे रस न पमे धोषै भर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो, आव्यो रे परवरियो हय गय रथ पायगें रे लो ॥ हां० दइ प्रदक्षिणा वंदी बैठो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे भायगे रे लो ॥ ७ ॥ हां० त्रिभूवननायक लायक तव भगवंत जो, आणी रंजन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० सहज विरोध विसारी जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो॥ ८ ॥ इति ॥ (॥ ढाल बीजी ॥ वालम वहेला रे आवजो ॥ए देशी ॥)

वीर जिनवर एम उपदिसे, सांजलो चतुरसुजाण रे ॥ मोहनी नींदमां कां पमो, उलखो धर्मनां गाण रे ॥ १ ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो, ( ए आंकणी ) परिहरो विषय कषाय रे ॥ बापमा पंच परमादथी, कां पमो कुगतमां धाय रे ॥ वि० २ ॥ करी सको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व काले करी नवि सको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ पर्व खटना कह्या, फल घणा आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारे आराधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु परजवतणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणी एह आराधतां, प्राणिउ सद्गति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूछे गौतमस्वामि रे ॥ जविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीरप्रजु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धि रे ॥ वि० ७ ॥ लाज होय आठ पमिहारनो, अठ पवयण फल होय रे ॥ नाश अठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संजवतणो एह तिथें, अजिनंदन निर्वाण रे ॥ ॥ वि० ॥ ए ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनो मुक्ति दिन जाण रे ॥ पासजिन एह तिथें सिद्धा, सातमा जिन च्यवन माण रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिउ, दंमवीरज लह्यो मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिनतणा केइ कल्याण रे ॥ एह तिथें वलि घणा संजमी, पामले पद निर्वाण रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ धर्म वाशित पशु पंखिआ, एह तिथें करे उपवास रे ॥ व्रतधारी जीव पोसो करे, जेहने धर्म अभ्यास रे ॥ वि० ॥ १३ ॥

भाखियो वीरे आगमतणो, भविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखें उच्चरी प्राणिया, पामसे भवतणो पार रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहै, टले कष्टनी कोम रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति कर जोम रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ (कलश) एम त्रिजग भासन अचल शासन वर्द्धमान जिनेश्वरू, बुध प्रेम गुरु सुपसाय पामी संथुण्यो अलवेसरू ॥ जिन गुण प्रसंगे भण्यो रंगे स्तवन ए आगमतणो, जे भविक भावे सुणे गावै कांति सुख पावे घणो ॥ १ ॥ इति अष्टमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमजिनंद, द्वारिकानगरी समोसरया ॥ जगपति वंदवा कृष्णनरिंद, जादव कोमिसुं परिवरया ॥ १ ॥ जगपति धीगुण फूल अमूल, भक्तिगुणें माला रची ॥ जगपति पूजी पूछै कृष्ण, क्षायिक समकित शिव रुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंभ परिग्रहे ॥ जगपति मुझ आतम उद्धार, कारण तुम विन कोण कहै ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुझ नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय बताय, जेम करे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्वल मागशिर मास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशो ने पच्चाश, कल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रिण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेउ जिनना कल्याण, विवरी कहूं आगलि वली ॥ ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्ली जन्म व्रत केवली ॥ नरपती वर्त्तमान चोवीशी, माहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरपति मौनपणें उपवास, दोढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रततणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकीखंम, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अं-

निधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंद्रावती तास, चंद्रमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्टी शुर विख्यात, शीयल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार नूषण चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करै ॥ ११ ॥ नरपति पोषै पात्र सुपात्र, सामायक पोषध करै ॥ नरपति देववंदन आवश्यक, काल वेलाये अणुसरे ॥ १२ ॥ इति ( ढाल बीजी ) एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधुतणा री ॥ विनयें वीनवे सेठ, मुनिवर करि करुणारी ॥ १ ॥ दाखो मुज दिन एक, थोमो पुण्य कियो री ॥ वाधे जिम वमबीज, शुन्न अनुबंधी थयो री ॥ २ ॥ मुनि नाषै महान्नाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तप शुन्नगे री ॥ ४ ॥ सांन्नलि सद्गुरु वेण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥ तप सेवी उजवीय, आरणस्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर आय, पाली पुन्यवसे री ॥ सांन्नल केशवराय, आगलि जेह थसे री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां सेठ, समृद्धदत्त वमो री ॥ प्रीतिमती प्रिया तास, पुण्यें जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूखें अवतार, सूचित शुन्न स्वप्ने री ॥ जनम्यो पूत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥ नाल निक्षेप निधान, नूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्न्न दोहद अनुन्नाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक नणयो री ॥ योवन वय अगियार, रूपवती परण्यो री ॥ ॥ १० ॥ जिनपूजन मुनिदान, सुव्रत पच्चरकाण धरे री ॥ अगियार कंचन कोम, नायक पुण्य नरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार, तिणि अधिकार कहे री ॥ सांन्नलि सुव्रतसेठ, जाती स्मरण लहे री ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि साख, नकें तप उच्चरे री ॥ एक

वशी दिन आठ, पहोरो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥ ( ढाल त्री जी ) पछी संयुतें पोसह लीधो, सुव्रतशेठे अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आव्या, घरमां धन लूंटे तदा जी ॥ १ ॥ शासनज्ञ के देवीशक्तें, थंज्ञाणा ते बापका जी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, नृप आगल धरया रांकका जी ॥२॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ जेटणा जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूंकावी, शेठे कीधा पारणा जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवश विश्वानल लागो, सोरीपुरम आकरो जी ॥ सेठजी पोसह समरस बैठा ॥ लोक कहे हठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्यें हाट वखारो शेठनी, नगरी सहू प्रशंसा करै जी ॥ हरखे सेठजी तप कजमणुं, प्रेमदा साथे आदरे जी ॥ ॥ ५ ॥ पुत्रनें घरनो जार जलावी, संवेगी शिर सेहरो जी ॥ चउ नाणी विजयशेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक खटमासी च्यार चोमाशी, दोसय छठ सो अठम करे जी ॥ बीजा तप पिण बहुश्रुत सुव्रत, मौनएकादशी व्रत धरें जी ॥ ७॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टि, देवता सुव्रतसाधुने जी ॥ पूर्वोपार्जित कर्म उदेरी, अंगे वधारे व्याधिनें जी ॥ ८॥ कर्मे नडियो पापे जडियो, सुर कहे जाउ औषधजणी जी॥ साधु न जाये रोष जराये, पादु प्रहारें हण्यो मुनि जी ॥९॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगे, ध्यान अनल दहे कर्मनें जी ॥ केवल पामी जिलपदरामी, सुव्रत नेम कहे श्यामनें जी ॥ १०॥ (ढाल चोथी) कान पयंपै नेमने ए, धन्य२ यादव वंश, जिहां प्रजु अवतरया ए ॥ मुझ मन मानस हंस, जयो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवादेवी मावडी ए, समुद्रविजय धन्य तात, सुजात जगतगुरु ए ॥ रत्नत्रयी अवदात ॥ ज० २ ॥ चरण विराधी कपनो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो०॥ तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥

हाथी जेम कादव गळ्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ ज० ॥ तोपण हुं न करी सकुं ए, दुष्ट कर्मना जेय ॥ ज० ॥ ४ ॥ पण सरणो बलियातणो ए, कीजै सीझै काज ॥ ज० ॥ एहवा वचनने सांभली ए, बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए, समकित युत आराध ॥ ज० ॥ आईस जिनवर बारमो ए, भावी चोवीशीयें लाध ॥ जयो० ६ ॥ (कलश) इय नेम जिनवर नित्य पुरंदर रेवताचल मंडणो, बाण नंद मुनि चंद वरसे रा जनगरे संथुण्यो ॥ संवेग रंग तरंग जलनिधि सत्यविजय गुरु अनुसरी, कपूरविजय कवि क्षमाविजय गणि, जिनविजय जयसिरी वरी ॥ १ इति ॥

अथ माहावीरस्वामीनुं हालरिऊं प्रारंभ ॥

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालणें, गावे हालो हालो हालरुवानां गीत, सोना रूपानें वली रत्नें जडियुं पालणुं, रेसम दोरी घूघरी वागे छुमछुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने ॥ १ ॥ जिनजी पार्श्वप्रभुथी वरस अढीशें अंतरे, होसे चोवीशमो तीर्थंकर जिन परमाण ॥ केशीस्वामी मुखथी एवी वाणी सांभली, साची साची हुइ ते मारे अमृतवाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वप्ने होवे चक्री के जिनराज, बीता बारे चक्री नहि हुवे चक्रीराज ॥ जिनजी पास प्रभुना श्रीकेशी गणधार, तेहने वचनें जाण्या चोवीशमा जिनराज ॥ मारी कूखे आव्या तारण तरण जिहाज, मारी कूखें आव्या त्रण्य भुवन सिरताज ॥ मारी कूखें आव्या संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्यपनोती इंद्राणी थई आज ॥ हा० ॥ ॥ ३ ॥ मुझनें डोहलो उपन्यो जे बेसुं गजअंबाडीयें, सिंहासण पर बेसुं चामर छत्र धराय ॥ ए सहु लक्षण मुझने नंदन ताहरा तेजनां, ते दिन संभारूनें आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ कर-

तल पगतल लक्षण एक हजार नें आठ छै, तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन ऋमणो जंगें लंछन सिंह विराजतो, में पहले सुपनें दीठो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन भोजाइयोना देवर छो सुकमाल, ह ससें भोजाइयो कही देवर माहरा लाडका, हसशे रमशे नें वली चूंटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नें वली ठुंसा देसे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडाराजाना भाणेज छो, नंदन नवला पांचसें मामीना भाणेज छो, नंदन मामलिआना भाणेजा सुकमाल ॥ हशशे हाथे उछाली कहीने नाहना भाणेजा, आंख्युं आंजीनें वली टबकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां, रतने जडिया झालर मोती कशबीकोर ॥ नीला पीला नें वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकिशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखडली सहु लावशे नंदन गजुबे भरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन मुखडा जोईने लेशे मामी भामणां, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर ॥ हा० ॥ ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती, मारी भत्रीजी ने बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूंझे भरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे लावशे लाखटकानो घूघरो, वली शूडा मैंना पोपट नें गजराज ॥ सारस हंस कोयल तीत्तर नें वलि मोरजी, मामी लावशें रमवा नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरनी मांहि ॥ फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मंडले, बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहि ॥ हा० १२॥ तमनें मेरुगिरिवर सुरपतिये नवरावीआ, निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ॥ मुखडा ऊपर वारुं

कोटी कोटी चंद्रमा, वळी तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥ हा० १३ ॥ नंदन नवला जणवा नीशाले पण मूकशुं, गज पर अंबाडी बेसाडी मोहोटे साज ॥ पसली जरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं, सूखडली लेशुं नीशालीआने काज ॥ हा० १४ ॥ नंदन नवला मोहोटा थाशोने परणावशुं, वहु वर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूंने पधरावशुं, वर वहू पोंखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर सासर मा-रा बेउं पक्ष ऊजला, माहरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, मा-हरे आंगण वूठा अमृत दुधे मेऊला ॥ माहरे आंगण फलिया सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गायुं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पुत्रतणा साम्राज ॥ बिलीमोरा नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जय२ मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिझाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोल्या महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे मायबाप रे ॥ निं १ ॥ दुर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलामें धोया लूगडां रे, कहो केम ऊजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, नींदानी मूंको परी टेव रे, ॥ थोडे घणे अवगुणे सहु भरया रे, के-हना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर-जो आपणी रे, जेम छूटकबारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रह-जो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ देववांदवानो विधिः ॥

प्रथम इरियावही पडिक्कमवाथी मांडीने यावत् लोगस्स कही पछी उत्तरासण करी चैत्यवंदन नमोत्थुणं कही अरधुं जयवीराय आभवमखंडा सूधी हाथ जोडी कहे, वली चैत्यवंदन कहीने नमोत्थुणं कही यावत् चार थोयो कहीये छीये तिहां सूधी बधू कहेवुं, पछी नमोत्थुणं कही वली च्यार थोयो कहीये त्यांसूधी बधूं कहेवुं, पछी नमोत्थुणं तथा बे जावंती कही स्तवन कही अरधुं जयवीअराय आभवमखंडा सूधी कही पछी चैत्यवंदन कही नमोत्थुणं कही आखो जयवीअराय कहेवो. इहां सवारे देववांदवा तेमां मन्ह जिणाणंनी सज्झाय कहेवी, अने मध्यान्हें तथा सांझें देववांदवामां सज्झाय न कहेवी ॥ इति देववांदवानो विधिः ॥

॥ अथ ज्ञानविमलजी कृत चउमासी देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम इरियावही पडिक्कमी काउसग्ग करी लोगस्स० कही एक खमासमण देइ इच्छाका० श्रीऋषभजिन आराधनार्थं चैत्य वंदन करुं, एम कही चैत्यवंदन करे ॥ ( श्री आदिजिन चैत्यवंदन लिख्यते ) ॥ प्रथम जिनेसर ऋषभदेव, सरवठथी चविया ॥ वदि चउथें आषाढनी, शक्रे संस्तविया ॥ अठमी चैत्रह वदितणी, दिवसे प्रभु जाया ॥ दीक्षा पिण तिणहिज दिनें, चउ नाणी थाया ॥ फागुण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुभ ध्यान ॥ महा वदि तेरशे शिव लह्या, परमानंद निधान ॥ १ ॥ इहां नमोथुणं० अरिहंत चेइयाणं० वंदणवत्तियाए कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी थुइ क्रमथी कहिये ते लखिये छीये ॥ ( ॥ अथ थोय जोडो प्रारंभ ॥ ) ऋषभजिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया, कनक वरण काया, मंगला जास जाया ॥ वृषभ लंछन पाया देव नर नारी गाया, पणसय धणु छाया ते प्रभु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन

त्रेवीश उदार, एक नेम विना सवि समवसरया निरधार ॥ गिरि कन्दणें आया पोहता गढ गिरनार, चैत्रीपूनम दिनें ते वंदू जयकार ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे अंतगड सूत्र मझार, सिद्धाचले सीधा बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि सवि तीरथ सिरदार। जिन भेटे थावे सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्केसरी शासननी रखवाल, ए तीरथ केरी सांनिध करे संभाल ॥ गिरुओ जस महिमा संप्रति काले जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरी नामें लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोत्थुणं जावंती बे कही नमोऽर्हत्कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन प्रारंभ ॥ ललनानी देशी ॥

आदिकरन अरिहंत जी, उलगडी अवधार ललना ॥ प्रथम जिनेसर प्रणमीयें, वंछित फल दातार ललना ॥ आदि करण अ०॥ १ ॥ उपगारी अवनीतले, गुण अनंत भगवान ललना ॥ अविनाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासे पण जेहनें, अमृतफलनो आहार ललना ॥ ते अमृतफलनें लहै, ए जुगतुं निरधार ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इक्षाग छे जेहनो, चढतो रश सुविशेष ललना ॥ भरतादिक थया केवली, अनुभव फल रस देख ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाभिराय कुलमंडणो, मरुदेवी सर हंस ललना ॥ ऋषभदेव नित वंदिये, ज्ञानविमल अवतंस ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री ऋषभजिन स्तवनं ॥ पछी जयवीअराय अर्धा कहेवुं, एक खमासमण देई इच्छा० श्री अजितनाथजी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

शुदि वैशाखनी तेरशें, चविया विजयंत ॥ माह सुदि आठमें जनमिया, बीजा श्री अजित ॥ माह शुदि नवमें मुनि थया,

पोषी इग्यारस ॥ उज्वल उज्वल केवली, यथा अक्षय कृपारस ॥ वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीर विमल कविरायनो, नय प्रणमें धरी नेह ॥ २ ॥ इति ॥ पछी नमोत्थुणं अरिहंतचे० ॥ कही एक नवकारको काउसग्ग करके थुईनी गाथा कहै. इसी तरें सर्वत्र विधि करवी ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ अजित जिनपतीनो, देह कंचन जरीनो ॥ भविक जन नगीनो, जेहथी मोह लीनो ॥ हुं तुझ पद लीनो, जेम जल मांहे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो, ताहरे ध्यान पीनो ॥ १ ॥ इति अजित थोय ॥ ॥ अथ श्री शंभवनाथ चैत्यवंदन ॥

सत्तम ग्रैवेयक थकी, चविया श्री शंभव ॥ फागुण सुदि आठम दिनें, शुदि चवदशी अभिनव ॥ १ ॥ मृगशिरमासें जनमीया, तणी पूनम संजम ॥ कार्त्तिक वदी पंचमी दिने, लहे केवल निरूपम ॥ २ ॥ पंचमी चैत्रनी ऊजली ए, शिव पोहता जिनराज ॥ ज्ञानविमल प्रभु प्रणमतां, सीझै सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथथोयप्रारभ्यते ॥ जिन शंभव वारू, लंछने अश्व धारू ॥ भवजलनिधि तारू, कामगद तीव्र दारू ॥ सुर तरुपरी वारू, दुसमाकाल मारू ॥ शिवसुखकिरतारू, तेहना ध्यान सारू ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥ ॥ अथ श्री अभिनंदन चैत्यवंदन ॥ जयंतविमानथकी चव्या, अभिनंदनराया ॥ वैशाख सुदि चोथे माघ, सुदि बीजे जाया ॥ माहा शुदि बारशे अहिय दिख्क, पोष सुदि चउदश ॥ केवल शुदि वैशाखनी, आठमें शिवसुख रश ॥ चउथा जिनवरनें नमी ए, चउगति भ्रमण निवार ॥ ज्ञानविमल गणपति कहै, जिनगुणनो नही पार ॥ २ ॥

॥ अथ स्तुति प्रारभ्यते ॥ ॥ अभिनंदन वंदो, साम्यमाकंद कंदो ॥ नृप संबरनंदो, धर्षिताशेषकंदो ॥ तमतिमिरदिणंदो, लंछने

वानरिंदो ॥ जस आगल मंदो, सौम्य गुण सारदिंदो ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ॥ अथ श्रीसुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ श्रावण सुदि बीजै चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमीगति दायक नमुं, पंचम जिन सुमति ॥ शुदि वैशाखनी आठमें, जनम्या तिम संजम ॥ शुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शमदम ॥ चैत्र इग्यारश ऊजली ए, केवल पामे देव ॥ शिव पाम्या तिणें नवमियें, नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ सुमति सुमति आपे, डुःखनी कोडि कापे ॥ सुमति सुजन व्यापे, बोधिनुं बीज व्यापै ॥ अविचलपद थापे, जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कदही नावें, जो प्रभुध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ॥ अथ श्रीपद्मप्रभु चैत्यवंदन ॥ नवम ग्रैवेयकथी चव्या, माहा वदि छठदिवसें ॥ काती वदि बारसे जनम, सुरनर सवि हरखे ॥ वदि तेरस संजम ग्रहे, पद्मप्रभस्वामी ॥ चैत्रीपूनम केवली, वलि शिवगति पामी ॥ मृगशिर वदि इग्यारसें, रक्तकमल सम वान ॥ नयविमल जिन राजनुं, धरियै निरमल ध्यान ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ पद्मप्रभु सोहावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ सुगति वधू मनावे, रक्त तनुं कांति फावे ॥ डुःख निकट नावे, संतती सौख्य पावे ॥ प्रभु गुणगण ध्यावे, अष्ट महासिद्धि थावे ॥ १ ॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन चैत्यवंदन ॥ छठा ग्रैवेयकथी चवी, जिनराज सुपास ॥ भादरवा वदि आठमें, अवतरिया खास ॥ जेठ शुक्ल बारसी जण्या, तस तेरसे संजम ॥ फागुण वदि छठे केवली, शिव लहे तस सत्तमि ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते इति समंत ॥ ज्ञानविमल सूरि नितु लहे, तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ फले कामित आशे, नामथी डुःख नाशे ॥ म

हिम महि प्रकाशे, सातमा श्रीसुपासें ॥ सुरनर जस दास, संप दानो निवाश ॥ गाय नवि गुणरास, जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीचंद्रप्रन्न जिनचैत्यवंदन ॥ चंद्रप्रन्न जिन आठमा, चंद्रप्रन्न शम देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चैत्रेह ॥ पोष वदि बारसें जनमिया, तस तेरसे साथ ॥ फागुण वदनी सातमें, केवल निराबाध ॥ नाद्रव सातम शिव लह्या ए, पूरी पूरण ध्यान ॥ अठ महासिद्धि संपजे, नय कहै जिनअन्निधान ॥ १

॥ अथ थोय प्रारन्यते ॥ ॥ शुन्न नरगति पामी, उद्यमें धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रन्न नाम स्वामी ॥ मुफ अंतरजामी, जेहमां नहिय खामी ॥ शिवगति वरगामी, ते जन पुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ सुविधनाथचैत्यवंदन ॥

गोरा सुविधि जिणंद नाम, बीजुं पुष्फदंत ॥ फागुण वदि नवमैं चव्या, महेली सुर आनंत ॥ मृगशिर वदि पंचमे जण्या, तस छठें दिक्षा ॥ काती शुदि त्रीजें केवली, दिये बहु परें शिक्षा ॥ शुदि नवमी नाद्रवा तणी ए, अजर अमर पद होय ॥ धीर विमल सेवक कहे, ए नमतां सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारन्यते ॥ सुविधि जिन नदंत, नाम वलि पुष्फदंत ॥ सुमति तरुणि कंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म डुरंत, लब्धि लीला वरंत ॥ नव जलधि तरंत, ते नमीजे महंत ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीशीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

प्राणतकल्पथकी चव्या, शीतल जिन दशमा ॥ वदि वैशाखनी छठे, जाणि दाघ ज्वर प्रशम्या ॥ माहा वदि बारस जनम दिख्या, तस बारसें लीध ॥ वदि पोष चवदश दिने, केवली परसिद्ध ॥ वदि बीजै वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिनराजथी, सीझे सगला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय

प्रारम्यते ॥ ॥ सुण शीतल देवा, वालही तुझ सेवा ॥ जेम गज मन रेवा, तूंही देवाधिदेवा ॥ पर आणव देवा, शम है नित्य मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु डुःख्क खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीश्रेयांश जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ अच्युतकल्पथकी चव्या, श्रेयांश जिनंद ॥ जेठ अंधारी दिवस छठ, करत बहु आनंद ॥ फागुण वदि बारसे, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माह अमावशि, देशन चंदनरस ॥ वदि श्रावण त्रीजे लह्या ए, शिवसुख अक्षय अनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहै ए जगवंत ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥ सवि जिन अवतंस, जास इक्षागवंश ॥ विजित मदन कंश, शुद्ध चारित्र हंश ॥ कृतभय विध्वंश, तीर्थनाथ श्रेयांश ॥ वृषभ ककुद अंश, ते नमुं पुन्य वंश ॥ १ ॥ अथ श्रीवासुपूज्य चैत्यवंदन ॥ प्राणतथी इहां आविया, ज्येष्ट सुदी नवम ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावशी संजम ॥ माह शुदि बीजै केवली, चौदशि आषाढी ॥ शुदि शिव पाम्या कर्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ए, विद्रुमरंगे काय ॥ श्रीनयविमल कहे इसुं, जिन नमतां सुख थाय ॥ २ ॥

॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥ वासुदेव नृप तात, श्रीजयादेवी मात ॥ अरुणकमल गात, महिष लंछन विख्यात ॥ जस गुण अवदात, शीत जाणें निवात ॥ होय नित सुख शात, ध्यावतां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अष्टम कल्पथकी चव्या, माधव सुदि बारस ॥ शुदि महा त्रीजें जण्या, तस चोथें व्रत रस, शुदि पोष छठें लह्या, वर निर्मल केवल ॥ वदि सातमि आषाढनी, पाम्या पद अविचल ॥ विमल जिणेसर वंदियै ए, ज्ञानविमल करी चित्त ॥ तेरसमो जिन नितु दिये, पुण्य परिघल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ

थोय प्रारभ्यते ॥ विमलश आवे, वंदतां दुख जावे ॥ नव निधि घर आवे, विश्वमां मान पावे ॥ सुपर लंछन कावे, जोमि आरस्वेद थावे ॥ मनु विनति जणावे, स्वामिनुं ध्यान ध्यावे ॥ १ इति॥

॥ अथ श्रीअनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतथकी चविया इहां, श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चवदसें व्रत ॥ वदि वैशाखे चवदसि, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी दिने, शिववनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चवदमाए, कीधा दुष्मन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामथी, तेज प्रताप अनंत ॥ १४॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ अनंत जिन नमीजे, कर्मनी कोटि छीजे ॥ शिवसुख फल लीजे, सिद्धि लीला वरीजे ॥ बोधिबीज मोह दाजे, एटलुं काज कीजे ॥ मुझ मन अति रीझे, स्वामिनुं कार्य सीझे ॥ ॥ १ ॥

॥ अथ धर्मनाथ जितचैत्यवंदन ॥ ॥ वैशाख सुदि सातमें, चविया श्रीधर्म ॥ विजयथकी माहमासनी, शुदि त्रीजें जनम ॥ तेरसमाही ऊजली, लिये संजमभार ॥ पोषिपूनमें केवली, गुणना भंडार ॥ जेठी पांचम ऊजलीए, शिवपद पाम्या जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ धर्म जिनपतीनो, ध्यानरसमांहे भीनो ॥ वररमण सचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिभुवन सुख कीनो, लंछने वज्र दीनो, नवि होय ते हीनो, जेहने तूं वसीनो ॥ ॥ १ ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ भाद्रवा वदि सातम दिने, सवठ्थी चविया ॥ वदि तेरस जेठे जण्या, दुःखदोहग शमीया ॥ जेठि चवदस वदि दिने, लीये संजम वेम ॥, केवल ऊजल पोसनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवडा ए शोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वदि तेरशें शिव लह्या, नय कहे सारो काज ॥ १६ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ जिनपति

जयकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ त्रिभुवन सुखकारी, सस जय ईति वारी ॥ सहस चउसठि नारी, चउद रत्नाधिकारी ॥ जिन शांति जीतारी, मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ केशर घोली, मांहे कपूर चोली ॥ पेहरी शीत पटोली, वासियें गंध धूली ॥ भरी पुष्प पटोली, टालीयें दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीयें भाव लोली ॥ २ ॥ शुभ अंग इग्यार, तेम उपांग बार ॥ वलि मूल सूत्र चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ दश पयन्न उदार, छेद खट वृत्ति सार ॥ प्रवचन विस्तार, भाष्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा, जैन दृष्टी सुरिंदा ॥ करे परमानंदा, टालता दुःख धंदा ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्थ माकंदकंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्यानथी नित्य भद्रा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ मोतीमानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतरुकंदा, शांतिकरण श्री शांतिजिणंदा ॥ साहिबा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज हमारा ॥ सा० ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुझ विलगो, पलक मात्र न रहुं हिव अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे, झंझयो पण तुम्हे नवि झंझाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुम्हे कोइशुं नेह न लावो, वीतराग कही सवि समझावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर कहो एम समझे, पण गौरु दीधाथी रीझे ॥ सा० ॥ बालकना हठथी नवि चाले, जे मांगे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ भक्ति खांची मनमांहे आण्यो, सहज स्वभावें पण में जाण्यो ॥ सा० ॥ माहरे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥ सा० ॥ ॥ ४ ॥ कबजे आव्या तो छूटीजे, जेह मुंह मागे तेहिज दीजै ॥ सा० ॥ अभेदपणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रभु तो नीकलशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अरूयभाव निधी तुम पाश, आपी दासनें पूरो आश ॥ ज्ञानविमल समकित प्रभुताई, दीधी साहब एह व

ध्याई ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीकुंथुनाथ चैत्यवंदनं ॥ श्रावण वदि नवमी दिनें, सवठ्थी चवियां ॥ वदि चवदश वैशाखनी, जिन कुंथु जणिया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी, लीये संजमभार ॥ शुदि त्रीजे चैत्रहतणी, लहे केवल सार ॥ प डिवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल ठाण ॥ छठा चक्री जय करू, ज्ञानविमल सुखखाण ॥१७॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ जिन कुंथु दयाला, छाग लंछन सुहाला ॥ जश गुण शुभमाला, कंठे पेहरो विशाला ॥ नमति भवि त्रिकाला, मंगल श्रेणी माला ॥ त्रिभुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति थोय ॥

॥ अथ श्रीअरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ सरवारथथी आविया, फागुण शुदि बीजें ॥ मृगशिर शुदि दशमी जणया, अरदेव नमी जे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संजम आदरियो ॥ काती बजाल बारसें, केवलगुण वरिओ ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद लहे जिननाथ ॥ सातमचक्रीनें नमूं, नय कहे जोडी हाथ ॥१८ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ॥ अरजिन ए जुहारुं, क र्मनो क्लेश वारूं ॥ अहनिश संभारूं, ताहरो नाम धारूं ॥ कृत ज यजयकारूं, प्रास संसार सारूं ॥ नवि होय ते सारूं, आपणो आप तारूं ॥ १८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥ चव्या जयंतविमानथी, फागुण शुदि चउथें ॥ मृगशिर सुदि इग्या रसें, जनम्या निग्रंथें ॥ ज्ञान लह्या एकण दिनें, कल्याणक तीन ॥ फागुण शुदि बारसें, लहे शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिनेसर नीलमा ए, भगणीशमा जिनराज ॥ अरापरणया अणभूपपद, भव जल तरण जिहाज ॥ १९ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ जिन मल्ली महिला, वान छे जेह नीला, ए अचरज लीला, स्त्री पणें नाम पीला ॥ दुश्मन सवि पीड्या, स्वामि जो छे वसीला ॥

अविचल सुखलीला, दीजिये सुण रंगीला ॥ १९ ॥ इति मल्लि स्तुति ॥ ॥ अथ मुनिसुव्रत जिनचैत्यवंदन ॥ अपराजितथी आविया, श्रावण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारमी, थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि बारसें व्रत, वदि बारसें ज्ञान ॥ फागुणनी तेम जेठ नवमी, कृष्णें निर्वाण ॥ वर्ण श्याम गुण उ- जला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमल जिनराजना, सुरनरना- यक दास ॥ २ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ मुनिसुव्र तस्वामी हुं नमूं शीश नामी, मुऊ अंतरजामी कामदाता अका- मी ॥ दुःखदोहग वामी पुण्यथी शेव पामी, शम्या सर्वदारामी राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीनमिनाथचै त्यवंदन ॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया ॥ श्रा वण वदि आठम दिने, नमीजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आषाढ नी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसें, वर केवल धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अक्षय अनंता सुक्ख ॥ नय कहे श्रीजिन नामथी, नाशे दोहग दुःक्ख ॥१॥ ॥ अथ थोय प्रा रभ्यते॥ नमी जिनवर मानो, जेह नदी विश्व गानो ॥ सुत वप्रा मानो, पुण्यकेरो खजानो ॥ कनककमल वानो, कुंभ ले जे कृपानो ॥ स वि भुवन प्रमानो, तेहशुं एक तानो ॥ २१ ॥ ॥ अथ श्रीनें मीनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अपराजितथी आविया, काती वदि बारस ॥ श्रावण शुदि पंचमी जण्या, यादव अवतंस ॥ श्रावण सुदि छठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आषाढनी ठमें, शिवसुख लहे प्रमाण ॥ अरिठनेमी अणपरणीया ए, ... मतीना कंत ॥ ज्ञानविमल गुण एहना, लोकोत्तर वृत्तंत ॥२२॥ ... ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ गया शस्त्रागारे, ... निज हाथ धारे ॥ कियो शब्द प्रचारे, विश्व कंप्यो तिवारे ॥ ...

संशय धारे, एहनी कोइ सारे ॥ जयो नेमकुमारे, बालथी ब्रह्मचा रे ॥ १ ॥ चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अरू धातकीखंम, सुरनर सारे सेव ॥ अरू पुष्करअरधे, इणि परें वीश जिनेश ॥ सं प्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम, न वजलनिधिने तारे ॥कोहादिक मोटा, मछतणा नय बारे ॥ जिहां जीवदयारस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ नवि नाव धरीनें चित्त करीनें चाख्यो ॥३॥ जिनशाशन सानिध्य, कारी विघन विमारे ॥ समकित दृष्टी सुर, महिमा जास वधारे ॥ शेत्रुंजगिरि सेवो, जिम पामो न व पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति॥

॥ अथ स्तवन प्रारंन ॥ ॥ रहो रहो रे यादव दो घ मीयां, दो घमीयां दो चार घमीयां ॥ रहो रहो० ॥ मोज महिरा ण शिवादेवी जाया, तुमें हो आधार अमवमियां ॥ रहो० १ ॥ ना ह विवाह चाह करी आए, क्युं जावत फिर रथ चमियां ॥ रहो० २॥ पशुय पुकार सुणीय कीय करुणा, गेम दीए पशु पंखी चिमियां ॥ रहो० ३ ॥ गोद विछाउं में बली जाउं, करुं वीनती चरणे प मियां ॥ रहो० ४ ॥ पीयुं विन दीहा ते वरिस समोवम, न गमे स्वपनमें सेजमियां ॥ रहो० ५ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन, वामी वन घर सेरमियां ॥ रहो० ६ ॥ अष्ट नवांतर नेह निनाव त, नवमें नव ते वीछमीयां ॥ रहो० ७ ॥ सहसावनमांहे स्वामी सुणीने, राजुल रेवतगिर चमियां ॥ रहो० ८ ॥ पीयु करे निज शिरें हाथे देवा, व्रत चाखे चारित्र सेलमियां ॥ रहो० ए ॥ जादव वंश विनुषण नेमजी, राजुल मीठी वेलमियां ॥ रहो० १० ज्ञान विमल गुणे दंपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखमीयां ॥ रहो० ११ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कृष्ण चोथ चैत्रहतणी, प्राणतथी आया ॥ पोष वदि दशमी ज-

नम, त्रिभुवन सुख पाया॥ पोष वदि इग्यारसें, जहे मुनिवर पंथ॥ कमठासुर उपसर्गनो, टाळ्यो पलीमंथ ॥ चैत्र कृष्ण चोथइ दिनें ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ श्रावण शुदि आठमें लह्या, अविचल सुख नरपूर ॥२३॥इति॥ ॥अथ थोय प्रारभ्यते॥ जलधर अनुकारे, पुण्यवल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघनने जे विदारे ॥ नवनिधि आगारे, कष्टनी कोडि वारे ॥ मुज प्राणाधारे, मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे, वीर चारित्र पावे ॥ अनुभव लय लावै, केवलज्ञान पावै ॥ षट् जे कल्याण, संप्रति जे प्रमाणे ॥ सवि जिनवर भाण, श्रीनिवासादि ठाण ॥ २ ॥ दशविधि आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सत्त प्रकार, पच्चक्खाणादि विचार ॥ मुनि दश गुणधार, जे भण्या जिहां उदार ॥ ते प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशी दिशिपाला, जे महा लोगपाला ॥ सुरनर महिमाला, शुद्धदृष्टी कृपाला, नयविमल विशाला, ज्ञान लच्छी मयाला ॥ जय मंगलमाला, पास नामे सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ थारे माथे पंचरंगी पाग सोनानो छोगलो मारूजी ॥ प्रभु पास जिनेसर भुवन दिनेसर संकरो, साहिबजी ॥ लीला अलवेसर धीरममंदिर भूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो, सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुछवि निरमल जलधरो ॥ सा० १ ॥ तूं अक्षय अरूपी ब्रह्म सरूपी ध्यानमां, सा० ॥ ध्याये जे जोगी तुम गुण भोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चय वासी निजमतें, सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमतें ॥ सा० २ ॥ षट् दर्शन भासे युक्ति निरासें शासनें, सा० ॥ स्याद्वाद विशालें सहज समाजे भावने ॥ सा० ॥ तूं ज्ञाननें ज्ञानें आतमध्यानें आतमा, सा०॥ परमागम वेदी भेद अभेद नही त-

मा ॥ सा० ३ ॥ एक अनेके बहुत विवेके देखियें, सा० ॥ आत म तत्कामी अगुण अकामी लेखिये ॥ सा० ॥ सवि गुण आरा मी छो बहुनामी ध्यानमां, सा० ॥ आपे गतनामी अंतरजामी ज्ञा नमा ॥ सा० ४ ॥ तूं अनियतचारी नियत विचारी योगमां, सा० ॥ अध्यातम सेवी एम बहु फेवी आगमें ॥ सा० ॥ तूं धर्म सन्या सी सहज विलासी समगुणें, सा० मोहारि विनाशी तूं जितका शी कवि जणे ॥ सा० ५ ॥ ज्ञानदर्शनदायक गुणमणी लायक माथ छे, सा० ॥ दुर्गति दुःखघायक गुणनिधि दायक हाथ छे ॥ सा० ॥ जित मनमथ सायक त्रिजुवन नायक रंजणो, सा० ॥ अ नेकांती एकांती तूं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ६ ॥ ध्यानानल योगें पुद्गल जोगें ते दह्या, सा० ॥ अंतररिपु हणिया मूलथी खणिया न वि रह्या ॥ सा० ॥ तूं हेतू समीयो सुरवर नमीयो सहु कहे, सा० ॥ ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो कुण लहे ॥ सा० ७ ॥ इम तुम गुण थुणियें कर्मने हणिये पलकमां, सा० ॥ पण नवि अवगणियें सेवक गणिये खलकमां ॥ सा० ॥ वामाचे नंदा त्रिजुवन इंदा संथुणे, सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुम पय वंदा गुण जणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीवर्द्धमान जिनचैत्यवंदन ॥ शुदि आषाढ छठ दिवसें, प्राणतथी चवि या ॥ तेरस चैत्रह शुदि दिने, त्रिसलायें जणिया ॥ मृगशिर वदि दशमी दिने, आपे संजम आराधे ॥ शुदि दशमी वैशाखनी, वर केवल साधे ॥ काती कृष्ण अमावशी ए, शिवगति करे उद्योत ॥ ज्ञानविमल गौतम लहै, पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ लह्यो जवजल तीर, धर्म कोटीर हीर ॥ दुरति रज समीर, मोह मूसार सीर ॥ दुरित दहन नीर, आण ॥ कप्पें सग्ग कर पणासय घणु माणुं. सासय असासयं

मेरुथी अधिक धीर ॥ चरम श्रीजिनवीर, चरण कल्पद्रु कीर ॥ ॥ १ ॥ इम जिनवर माला, पुण्य नीर प्रवाला ॥ जगजंतु दयाला, धर्मनी शास्त्रशाला ॥ कृत सुकृत सुगाला, ज्ञानलीला विशाला ॥ सुरनर महिपाला, वंदता है त्रिकाला ॥ २ ॥ श्रीजिनवर वाणी, द्वादशांगी रचाणी ॥ सुगुण रयणखाणी, पुण्य पीयूष पाणी ॥ नवम रस रंगाणी, सिद्धि सुखनी नीसाणी ॥ दुह पीलण घाणी, सांभलो भाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला, जे वली लोगपाला ॥ समकित गुणवाला, देव देवी कृपाला ॥ करो मंगलमाला, टालीने मोहहाला ॥ सहज सुख रसाला, बोध दीजै विशाला ॥ ॥ ४ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ आज गइ थी हुं समव सरणमें ॥ ए चाल ॥ वंदो वीर जिनेसरराया, त्रिशलामाता जाया जी ॥ हरि लंछन कंचन सम काया, मुज मनमंदिर आया जी ॥ वंदो वी० ॥ १ ॥ दूषम समयें शासन जेहना, शीतल चंदन गाया जी ॥ जे सेवंता भविजन मधुकर, दिन२ होत सवाया जी ॥ वंदो० २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी, जस मनमां जिन आया जी ॥ वंदन पूजन सेवन कीधी, ते काजननी माया जी ॥ वंदो० ३ ॥ कर्म कठिन भेदन बलवत्तर, वीर विरुद जिन पाया जी ॥ एकलमल अतुलीबल अरिहा, दुसमन दुर गमाया जी ॥ वंदो० ४ ॥ वंछित पूरण, संकट चूरण, मातपिना तूं सहाया जी ॥ सिंहपरे चारित्र आराधी, सुजस निशान वजाया जी ॥ वंदो० ५ ॥ गुण अनंत भगवंत विराजे, वर्द्धमान जिनराया जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहे, शुद्ध समकित गुणदाया जी ॥ वंदो० ६ ॥ इति ॥ इहां पूरण जयवीयराय कहेवो ॥

॥अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन॥ सकल मंगलकार एही, सिद्ध सकल पय ठाण ॥ स्याद्वाद साधन पद एही

अध्यातम गुणठाण ॥ १ ॥ ( सही ए नमो जिणाणं ) २ ( ए आंकणी ) विहुंतेर लक्ख सग्गकोमि नवणवई, सासय जिण हर माणं ॥ तेरशें नव्याशी कोमी, सग्गस ठ बिंबह परिमाणं ॥ सही० ॥३॥ मेरु वैताढ्य वरकारा कंचन, यमक कुंम द्रह जाणुं ॥ एकत्रीश ओगणयासी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिलख इक्याशी सहस चारसो, ज्यासी अधिक बिंब जाणुं ॥ रुच क कुंमल नंदीसर प्रमुखें, सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ स० ॥५॥ अम शत सय सहस चालीसा, बिंबतणुं परिमाणं ॥ सरवाले बत्तीससें गुणसठी, तिर्यक्लोके चेइयाणं ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा त्रण लख सहस एकाणुं, चउ सय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौवारा अवर त्रिवारा, रुचक कुंम नंदी ठाणं ॥ स० ॥ ७ ॥ बार देवलोकें नव ग्रैवेयकें, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रे वीश चेइ जाणुं ॥ स० ॥ ८ ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं, सहस चमालीस आणुं ॥ सातशें साठ ऊपर उर्द्धलोकें, जिन प- मिमा मन आणुं ॥ स० ॥ ए ॥ त्रिभुवनमांहे सासय जिनहर, सगवन्न लक्क वर्से व्यासी ॥ आठ कोमि अथ प्रतिमा संख्या, सु णजो समकितवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पन्नरशें कोमी बेंतालीश कोमी, तेम अठावन्न लक्का ॥ छत्रीश सहस अशी वलि साधिक, सासयबिंबनी संख्या ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसो वीश त्रिवारे प्रति मा, चोमुखें शत चौवीश ॥ पांच सन्ना तिहां साठ वधारो, एकश त अशी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ ऋषन्न चंद्रानन नें वर्द्धमान, वा रिखेण चउ नामे ॥ व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या, जिनघर पमि मा माने ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुरासुर नावना नावे, समकि तगुण दीपावे ॥ परित्त संसार करी शिव जावे ॥ कुमति ते मन नावे ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताले ने तिर्यक्लोके, पणसय धणु परि

जाए ॥ स० ॥ १५ ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विणु, सेत्रुंजादिक बहुला ॥ ते सविहूनें त्रिविधे नमतां, पातक जाये सगला ॥ स० ॥ १६ ॥ ज्ञानविमल प्रभु नाम जपंता, लहिये कोमि कल्याण ॥ मनह मनोरथ सगला सीझै, जनम सफल सुविहाण ॥ स० ॥ १७ ॥ नयहर भगवंताणं जयगुर, नमो जिणाणं सही ए ॥ नमो अविचल आदिगराणं, सही ए नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥ ॥ १८ ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोगस्सको काउसग्ग चंदेसुनिम्मलयरा सूधी एक जण करे, ते काउसग्ग पारी पछी चार थोयो कहेवी ते लखिये छिये ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ रुषभदेव नमुं गुण निर्मला, कुधमांहे जिम भेली सीतोपला ॥ विमल शीलतणा सिणगार छै, भवर मुझने चित्त रुचै ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली, जेह हसे विचरंता जे वली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे, जिन पमिमा प्रणमुं नित झगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम क्षीर महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ भविक देह सदा पावन करे, कुरित तापर जोमल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनपशासन भासन कारिका, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रभुताये दीपता, कुरित कुष्टतणा भय जीपता ॥ ४ ॥ इति शाश्वत अशाश्वत जिनस्तुति ॥ ॥ अथ विधिः ॥ इहा एक जण मोटी शांति कहे ( अने ) बीजा सर्व काउसग्गमां सांभलै ॥ पछी सर्वे जणा काउसग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कहै ॥ पछी बेसीनें एकवीश नवकार प्रगटपणें सर्व जण गणे, पछी सर्वे जण मुखथकी आवी रीते कहे-श्रीशेत्रुंजायनमः १ श्री पुंमरीकायनमः २ श्रीसिद्धक्षेत्रायनमः ३ श्रीविमलाचलायनमः ४ श्री सुरगिरयेनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

पर्वतायनमः ८ श्रीपर्वतेंद्रायनमः ए श्रीमहातीर्थायनमः १० श्री शाश्वतायनमः ११ श्रीदृढशक्तयेनमः १२ श्रीमुक्तिनिलायनमः १३ श्रीपुष्पदंतायनमः १४ श्रीमहापद्मायनमः १५ श्रीपृथ्वीपीठाय नमः १६ श्रीसूरजङगिरयेनमः १७ श्रीकेलाशगिरयेनमः १८ श्री पातालमूलायनमः १ए श्रीअकर्मकत्रेयनमः २० श्रीसर्वकामपूरणा यनमः २१ ॥ ए सिद्धगिरीना २१ नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने पछे पांचतीर्थना पांच स्तवन कहवा ते लखिये छिये ॥

॥ प्रथम सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥ साहेलडीयानी देशी ॥

नीलुडी रायणतरूतले, साहेलडियां ॥ पीलुडा प्रभुजीना पाय, गुणमंजरीया ॥ ऊजले ध्याने ध्याइयें, सा० ॥ एहीज मुग ति उपाय ॥ गु० १ ॥ शीतलडी छायाये बेसीये, सा० ॥ रातडो करी मनरंग ॥ गु० ॥ नाही धोई निर्मल थई, सा० ॥ पहेरी व स्त्रादिक चंग ॥ गु० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलडे, सा० ॥ नेह धरीने एह ॥ गु० ॥ ते त्रीजे भवे शिव लहे, सा० ॥ थाये निर्म ल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षणा, सा० ॥ दीए एहने जे सार ॥ गु० ॥ अभंग प्रीति होए जेहनें, सा० ॥ भव२ तुम आ धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे, सा० ॥ शाखा थड ने मूल ॥ गु० ॥ देवतणा वासाछे, सा० ॥ तीरथनें अनुकूल ॥ ॥ गु० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मनें, सा० ॥ सेवो एहने उछाह ॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु भाखियो, सा० ॥ शत्रुंजा महातम मांहि ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति श्रीसत्रुंजा स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीगिरनारतीर्थ स्तवनं ॥

देखी कामनी दोय के कामे व्यापियो, होला० कामें० ॥ ए चाल ॥ नेम निरंजन देव के सेव सदा करूं, हो लाल के ॥ सेव० ॥

अहनिश ताहरूं ध्यान के दिल मांहे धरूं हो लाल, दि० ॥ शंख लंछन गुणखाण के अंजन वान है हो लाल के अं० ॥ राजिमतीना कंत के परण्या विणुअ है हो० प० ॥ १ ॥ तूंहीज जीवनप्राण के आतमराम है हो० आ० ॥ माहरे परम आधार के ताहरूं नाम है हो० ता० ॥ समुद्रविजयना नंदन नितु नितु वंदता हो० नि० ॥ कीजीये करुणावंत के कर्मनिकंदना हो० क० ॥ २ ॥ जोत्या मनमथ राज रही गढ ऊपरै हो० र० ॥ पहरी शील सन्नाह उदास एली धरे हो० ऊदा० ॥ नवि जिनवरमां स्वामि तुह्मे अधिकुं करयुं हो० तु० ॥ कुम्मरपणे धरी धीर महाव्रत ऊचरयुं हो० मा० ॥ ३ ॥ आठ भवांतर नेह जे तेह उवेखीनें हो० ते० ॥ करुणा कीधी केवल पशुवां देखीने हो० पशु० ॥ पूरण पाली प्रीत वली निज नारने हो० व० ॥ आपी संजमभार पहोचाड्यी पारनें हो० पो० ॥ ४ ॥ जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन घणा हो० करे० ॥ निरवाहे धरी नेह के ते विरला सुण्या हो० ते वि० ॥ राजमतीनो कंत वखाणो कविजना हो व० ॥ तुह्मे तो दीवा छेह के तेहना थिर मना हो० ते० ॥ ५ ॥ जादवनाथ सनाथ करो मुझनें सदा हो० क० ॥ दिले मुझ शिर हाथ होवे जस संपदा हो० हो० ॥ जलि२ मरे पतंग दीवाले मन नहीं हो० दी० ॥ नाणे मन असवार घोड़ो दोड़े सही हो० घो० ॥६॥ सबला साथै प्रीत निबलनें नवि कही हो० नि० ॥ विण लागी जे थोड़ी किहां जाश्रे वही हो० कि० ॥ जे सज्जनसुं होय ते भीड़ न भंजीये हो० भी० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होए तो कर्मने मंजीये हो० क० ॥ ७ ॥ तो दुसमन होय दूर कोणे नवि गंजीये हो० को० ॥ प्राणाधार पवित्र के दरशन दीजीजे हो० द० ॥ ज्ञानविमल सुख पूर सलीनें कीजीये होला० स० ॥

॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीआबूतीर्थ स्तवन ॥

॥ चालो चालोने राज गिरधर रमवा जइयै ॥ ए चाल ॥

॥ आवो आवोनें राज श्रीअर्बुद गिरिवर जइये ॥ श्रीजिनवरनी भक्ति करीनें, आतम निर्मल थइये ॥ आवो० ॥ विमलवसीना प्रथम जिनेसर, मुख निरखे सुख पइयें ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुसमवर, कंठे टोम्डर ठविये ॥ आ० ॥ १ ॥ जिमणें पासे लूणग वसही, श्रीनेमीसर नमिये ॥ राजीमतीवर नयणे निरखो, दुःख दोहग सवि गमिये ॥ आ० ॥ २॥ सिद्धाचल श्रीऋषभ जिनेसर, रैवत नेम समरिये ॥ ओ दो वसीनो यात्रा करतां, बिहुं तीरथ चित्तधरिये ॥ आ० ३ ॥ मंडप मंडप विविधि कोरणी, निरखो हियडै ठरियै ॥ श्रीजिनवरना बिंब निहाली, नरभव सफलो करिये ॥ आ० ४ ॥ अविचलगढ आदीश्वर प्रणमी, अशुभकरम सब हरिये ॥ पाश शांति निरखी जब नयणें, मन मोह्यो डुंगरीयें ॥ आ० ५ ॥ पाजे चढतां भजम वाधे, जेम घोडे पाखरीयें ॥ सकल जिनेसर पूजी केशर, पापपडल सवि हरियें ॥ आ० ६ ॥ एकण ध्यानें प्रभुनें ध्यातां, मनमांहे नवि डरिये, ज्ञानविमल कहै प्रभु सुपशायें, सकल संघ सुख करियें ॥ आ० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअष्टापद गिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरी आया ॥ पुष्पक नामें विमाने बैशी, मंदोदरी सुहाया ॥ १॥ श्रीजिन पूजियें लाल, समकित निर्मल कीजै ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरभव सफलो कीजै ॥ हीयडै हरखी लाल, समता संग करीजै ॥ ( आंकणी ) चउमुख चउगति हरण प्रशादें, चउवीशें जिन बेठा ॥ चउदिशि सिंहासन सम नाशा, पूरव दिशि दोय जिठा ॥ श्री० १

॥ संभव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि उत्तरदिशि जाणो, एवं जिन चउवीशा ॥ श्री० ३ ॥ वैठा सिंहतणे आकारे, जिनहर भरते कीधा ॥ रयणबिंब मूरत आपीनें, जग जशवाद प्रसिद्धा ॥ श्री० ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक, रावण तांत वजावे ॥ मादल बीणा ताल तंबूरो, पगरव ठमठमकावे ॥ श्री० ५ ॥ भक्तिभावें एम नाटक करतां, तूटो तंत विचाले ॥ सांधी आप नसा निजकरनी, लघुकलासुं ततकालें ॥ श्री० ६ ॥ द्रव्य भावशुं भक्ति न खंडी, तो अक्षयपद साध्युं ॥ समकित सुरतरु फल पामीनें, तीर्थंकर पद लाध्युं ॥ श्री० ७ ॥ इणि परें भविजन जे जिन आगें, बहुपरे भावनाभावें ॥ ज्ञानविमल गुण तेहना अहनिश, सुरनर नायक गावै ॥ श्री० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसमेतसिखर स्तवनं ॥

॥ समेतसिखरगिरि भेटीये रे, मेटवा भवना पास ॥ आतमसुख वरवा भणी रे, ए तीरथ गुण निवास रे ॥ भवियां सेवो तीरथ एह, समेतशिखर गुणगेह रे ॥ भवि० से० १ ॥ (आंकणी ) समेतसिखर कलपें कह्यो रे, वीश टुंक अधिकार ॥ वीश तीर्थंकर शिव वर्या रे, बहु मुनिने परिवार रे ॥ भ० से० २ ॥ सिद्धक्षेत्र मांहे वस्या रे, भाखे नय व्यवहार ॥ निश्चय निज स्वरूपमांहे रे, दोय नय प्रभुजीना सार रे ॥ भ० से० ३ ॥ आगमवचन विचारतां रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वस्तु तत्व जिणे जाणिये रे, ते आगम स्याद्वाद रे ॥ भ० से० ४ ॥ जयरथरायनणी परे, जात्रा करो मनरंग ॥ भवदुःखने देइ अंजली रे, थायें सिद्धवधूनो संग रे ॥ भ० से० ५ ॥ समकितयुत यात्रा करे रे, तो शिव हेतु थाय ॥ भवहेतु किरिया त्यागथी रे, आतमगुण प्रगटाय रे ॥ भ० से० ६ ॥ जेह समें समकित थयो रे, तेह समये होय नाण ॥ ज्ञान

विमल गुरु भाखियो रे, आवश्यकभाष्यनी वाण रे ॥ भ० से० ॥ ७ ॥ इति चौमाशी देववंदन विधि ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणपर्व स्तुति ॥

॥ सत्तरभेदी जिन पूजा रचीनें, स्नात्र महोछव कीजै जी ॥ ढोल दमामा भेरी नफेरी, झल्लरि नाद सुणीजैजी ॥ वीरजिन आगल भावना भावी, मानवभव फल लीजै जी ॥ परब पजूसण पूरब पुन्यें, आव्या इम जाणीजै जी ॥ १ ॥ मास पास वली द-शम दुवालश, चत्तारी अठ कीजै जी ॥ ऊपर वलि दश दोय क रोनें, जिन चौवीश पूजीजै जी ॥ वड्डाकल्पनो छठ करीनें, वीर-वखाण सुणीजे जी ॥ पडवानें दिन जन्म महोछव, धवल मंगल वरतीजै जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावी, अठमनुं तप कीजै जी ॥ नागकेतुनी परे केवल लहियै, जो शुभ भावे र हिये जी ॥ तेलाधर दिन त्रणथ कल्याणक, गणधरवाद वदीजै जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजे, रुषभ चरित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥ बारशें सूत्र नें समाचारी, संवत्सरी पडिक्कमियें जी ॥ चैत्यप्र-वाडी विधिसुं कीजै, सकल जंतुनें खामीजै जी ॥ पारणानें दिन सामीवछल, कीजै अधिक वडाई जी ॥ मान विजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीको बारामासो ॥

॥ सीयाले खाटू भली रे लाल ॥ ए चाल ॥ ॥ तोर-णथी रथ फेरीयो रे लाल, नीठुर नेमकुमार ॥ प्रेम विलूधी पद-मणी रे लाल, वीनवै राजुलनार ॥ हो रंगीला नेम सुण माहरी अरदाश ॥ १ ॥ सहीवांसुं राजुल कहे हो लाल, मगसिर नायो पीव ॥ प्रीतम विन हिव माहरो हो लाल, धीरज न धरै जीव ॥ हो० २ ॥ पोस महीनो आवियो हो लाल, आयो मो दुख देण ॥

तो सूरतने सांवला हो लाल, देखण तरसै नैण ॥ हो० ३ ॥ माहमहीने सी पडे हो लाल, प्रीउ संग पोढे नारी ॥ प्रीतम विण हूं एकली रे लाल, केम रहूं निरधार ॥ हो० ४ ॥ होली खेले हेतसुं हो लाल, फागुणमें नर नारी ॥ हुं किणसुं खेलूं हिवे हो लाल, पाश नही भरतार ॥ हो० ५ ॥ चेतमहीने चांदणी रे लाल, संजोगण सुख देण ॥ विरहणनैं वालम विना रे लाल, रोवत जावै रैण ॥ हो० ६ ॥ वनहरिया वैशाखमें रे लाल, मांजर रही महकाय ॥ अरज सुणो अबला तणी हो लाल, तपत मिटावो आय ॥ हो० ७ ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल, दाझै कोमल गात ॥ ससनेही साहिब विना हो लाल, कुण पूछै मुझ वात ॥ हो० ॥ ८ ॥ आसाढे काली घटा हो लाल, ऊनमि आयो मेह ॥ कंत मिल्या निज नारसुं रे लाल, धरती मिलिया मेह ॥ हो० ॥ ९ ॥ श्रावण चमके दामनी हो लाल, घन वरसे झरला-इ ॥ इण रुत सूनां एकली हो लाल, क्यूं कर रैण विहाई ॥ हो० ॥ १० ॥ काली कालाहख मिलो हो लाल, भाद्रवमें वर खंत ॥ अरज सुणीनें साहिबा हो लाल, पूरो मो मन खंत ॥ हो० ॥ ११ ॥ आसोजे आंसू झरै हो लाल, नाह विना निसदीश ॥ सार न पूछी साहिबे हो लाल, राखि रह्यो मन रीश ॥ हो० ॥ १२ ॥ काती हठ छाती करी हो लाल, जाय मिली गिरनार ॥ देखी मुख निज नाहनो हो लाल, सफल गिणे अवतार ॥ हो० ॥ १३ ॥ संयम ले पिउ सेंहथे हो लाल, पामे भवनो पार ॥ इण पर पाले प्रीतमी हो लाल, धन २ ते नर नारि ॥ हो० ॥ १४ ॥ जे कीधी पशु ऊपरे हो लाल, मो पर करज्यो देव ॥ चंद भणो द्यो करि दया हो लाल, प्रभु चरणारी सेव ॥ हो० ॥ १५ ॥ इति श्रीनेम राजुल बारेमासो संपूर्ण ॥

॥ अथ आदिजिन आरती ॥

अपछरा करती आरती जिन आगै, हांरे जिन आगे रे जिन आगै, हांरे ए तो अविचल सुखड़ा मागै, हांरे नाभीनंदन पाश ॥ ॥ अप० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमकै, हांरे दोय चरणे झांझर झमकै ॥ हांरे सोवनना घूघरी घमके, हांरे लेती फूदड़ी बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदंग ने वांशली डफ वीणा, हांरे रूड़ा गावंती स्वर झीणा ॥ हांरे मधुर सुरासुर नयणां, हांरे जोती मुखडुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रभु जाया, हांरे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हांरे मे तो पूरब पुन्यें पाया, हांरे तोरो देख्यो दीदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो, हांरे प्रभु सेवक हूं हुं तारो, हांरे भवोभवना दुखड़ा वारो, हांरे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो चित्त धरजो, हांरे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हांरे मुनि माणक सुखित करजो, हांरे जाणी पोतानुं बाल ॥ अ० ॥६॥ इति ॥

॥ अथ नेम राजोमती सिझाय ॥ देशी उमादे भटीयाणीरी ॥

पहली तो समरूं हो सिद्ध बुद्धरी दाता सारदा, लागुं गुरां रे पाय ॥ प्रभुगुण गास्यां हो नेमीसर साहिब जिनतणा, सुभमत आपो मोरी माय ॥ १ ॥ सोरीपुरहुंती हो नेमीसर साहिब थे चढ्या, जान करी याडाय ॥ हसती तो सिणगारया हो नेमीसर साहिब थे भला, घोड़लांरी गिणती न काय ॥ २ ॥ वाजा तो अधिका हो नेमीसर साहिब वाजता, आया तोरण बार ॥ महिल चढीने हो राजुल जोवे हरखसुं, मनमांहे हरख अपार ॥ ३ ॥ आंख फरूके हो सहेली मारी जीमणी, फिरताइ दीसे छै भरतार ॥ वाड़ो तो भरीयो हो नेमीसर साहिब जीवनो, पशुवाणी पुणी रे पुकार ॥ ४ ॥ ऊभो तो रथनें हो नेमीसर साहिब राखी-

थो, ए पशु बांध्या छै किण काज ॥ गोरो तो होसी हो नेमीसर साहिब तुमतणो, सारथी कहे छै महाराज ॥ ५ ॥ थोमा तो सुखनें हो इण राजुल नारीरे कारणें, होसी हो जीवानो संहार ॥ जीव बंध्याने हो नेमीसर साहिब गेम्हिया, जीव सवे तिण वार ॥ ६ ॥ अणपरणी राजुल हो नेमीसर साहिब गेमने, जाय चढ्या गिरनार ॥ आठे तो करमांसुं हो नेमीसर साहिब जीतवा, लीधो संजमजार ॥ ७ ॥ राजुल तो झूरे हो नेमीसर साहिब एकली, जल विन मछली जेम ॥ नव जवारो हो नेमीसर साहि-ब गेम्हनें, नेम विन जीवुं केम ॥ ८ ॥ सहियां तो समजावे हो राजुल दुःख मत करो, एतो कालो छै जरतार ॥ पाछो तो राजुल जाषै हो सहेली मारी थे सुणो, इण जव ए जरतार ॥ ए ॥ रा-जुल तो चाली हो नेमीसर साहिब वांदवा, साथे तो घणुं रे परि-वार ॥ गिरनारे चढतां हो सब आगे पाछे नीकळ्या, एकली रही छै राजुल नार ॥ १० ॥ मेहा तो वरस्या हो नेमीसर साहिब अ-तिघणा, जीज्या छै सवि सिणगार ॥ गुफा तो देखी हो राजुल नारी अति जली, चीर निचोवै राजुल नार ॥ ११ ॥ गहणा तो वाज्या हो राजुलनारीरे अंगना, घूघरना झणकार ॥ झणका तो सुणिया हो रहनेमी वैठे ध्यानमें, खोलो छै पलक तिणवार ॥१२॥ रूपे तो मोह्यो हो रहनेमी वैठो ध्यानमें, कहै सुंदर करो मोसुं प्यार ॥ बोली तो सुणकर हो राजुल अंग ढांकियो, मांनै गेम्हो छै नेमजरतार ॥ १३ ॥ जोजन तो जीम्यो हो रहनेमी खीरखांमनो, उलटी करे नांखे तेम ॥ वेनें तो माणस हो रहनेम पाछो नही जखे, जखसी काग कुत्ता जेम ॥ १४ ॥ हूं तो माता हो रहनेम थारे सारखी, हुं वमा जाईनी नार ॥ पाय तो धरस्यो हो रहनेम माहरे ऊपरां, तो पमस्यो थे नरक मझार ॥ १५ ॥ एहवा तो वं-

चने हो रहनेम राजुल पाए नम्यो, पाप खमावै वारंवार ॥ कपड़ा तो पहरया हो राजुलनारी आपणा, पुहती छै प्रभु दरबार ॥ १६ ॥ राजुल तो हरखे हो नेमीसर साहिब वांदिया, वांदीनें लीधो संजमभार ॥ केवल तो पाली हो नेमीसर साहिब निरमलो, पुहती छै मुगति मझार ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर साहिब आगलै, मिलिया छै मुगति मझार ॥ माणिक्य रंगे हो नेमीसर साहिब गाईयो, म्हारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिझाय ॥

श्रीगौतमस्वामी पूछा करे, विनय करी शीस नमाय प्रभूजी॥ अविचल थानक मैं सुण्यो, कृपा करी मोय बताय प्रभूजी ॥ शिवपुरनगर सोहामणुं ॥ १ ॥ आठ करम अलगा करी, सार्या आतम काज प्रभूजी ॥ छूटा संसारना दुख थकी, रहवानो किहां ठाम प्रभूजी ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उर्द्ध लोकमां, सिद्धशिलातणो ठाम हो गोतम ॥ स्वरगपुरीने ऊपरे, तेहना बारे नाम हो गोतम ॥ शि० ३ ॥ लाख पिस्तालीस जोजना, लांबी पोहली जाण हो गोतम ॥ आठ जोजन जाडी विचै, छेहडे माखीपंख माण हो गोतम ॥ शि० ४ ॥ ऊजला हार मोतीतणा, गोदुग्ध संख प्रमाण हो गोतम ॥ ते थकी ऊजली अतिघणी, उलटो छत्र संठाण हो गोतम ॥ शि० ५ ॥ अरजनस्वर्ण शम दीपती, घठारी मठारी जाण हो गोतम, फटकरतन थकी निरमली, सुंआली अत्यंत वखाण हो गोतम ॥ शि० ६ ॥ सिद्धशिला उलंघी गया, अधर रह्या सिद्धराज हो गोतम ॥ अलोकसुं जाई अड्या, सार्या आतकाज हो गोतम ॥ शि० ॥ ७ ॥ जनम नहीं मरणो नहीं, नहीं जरा नही रोग हो गोतम॥ वैरी नहीं मित्रो नही, नहीं संजोग विजोग हो गोतम ॥ शि०

॥ ८ ॥ भूख नहीं तिरखा नही, हरख नहीं नहीं सोक हो गो-
तम ॥ करम नहीं काया नहीं, विषयारस नहीं योग हो गोतम ॥
शि० ए ॥ शब्द रूप रस गंध नही, फरस नहीं नही वेद हो
गोतम ॥ बोले नही चाले नही, मोनपणूं नही खेद हो गोतम ॥
॥शि० १०॥ गाम नगर ए को नहीं, वसती नही ऊजाड हो गोतम ॥
काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथि वार हो गोतम॥ शि०
११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नही ठाकुर नहीं दास हो गोतम
॥ मुक्तिमें गुरु चेलो नहीं, नहीं लघु वडाई वास हो गोतम ॥
शि० १२ ॥ अनंता सुखमें फिलरह्या, अरूपी ज्योत प्रकाश हो
गोतम ॥ सहु कोईनें सुख सारिखा, सगलानें अविचल राज हो
गोतम ॥ शि० १३ ॥ अनंता सिद्ध मुगते गया, वली अनंता जाय
हो गोतम ॥ अवर जग्या रूंधे नही, जोतमां जोत समाय हो गो
तम ॥ शि० १४ ॥ केवलज्ञाने सहित छै, केवलदर्शन खास हो
गोतम, क्षायकसमकित दीपता, कदय न होवै ऊदाश हो गोतम ॥
शि० १५ ॥ सिद्धस्वरूप जे ळलखे, आणी मन वैराग हो गोतम ॥
शिवरमणी वेगे वली, नवि कहे सुख अथाग हो गोतम ॥ शि०
१६ ॥ इति सिद्धिपद वर्णन सिज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथजीरो सिलोको ॥

समरुं सारदनें गुणपते राणी, विघन टालो द्यो अविरल
वाणी ॥ कहुं सिलोको नेमिनाथकेरो, जादववंस मांहे वडेरो॥ १॥
नगरी सोरीपुर पृथ्वीमें दीपे, रिद्धे समृद्धे अलकानें जीपे ॥ राजा समुद्र
विजै शिवादे राणी ॥ सीलै रूपै कर अधिकी वखाणी ॥ २ ॥
तेहनोजी अंगज नेमजीनाथो, मुगतरमणासुं घाले छै बाथो ॥ आणंद
घणों वसंत आयो, कुली बत्तीसें फाग जगायो ॥ ३ ॥ रमवाजा
सारू चलिया गोपालो ॥ डफ चंग वाजे रमे गुलालो ॥ रुखमण

राणी राधा सतभामा, बीजाही गोपी मिलर रामा ॥ ४ ॥ नेमनाथजीरो व्याह मंमायो, कुमरी राजुलनो सगपण करायो ॥ राजानें परजा अति सुख पायो ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा घरे वधाई, जादवरायरी जानज आई ॥ ढोलनें वरघू सखरी सरणाई, भुंगलने भेरी सखरी सझाई ॥ ६ ॥ ताल कंसाल कुहके करनाला, गोरीजी गावै गीत रसाला ॥ रथ वहलै वाजै घूघरमाला, मदझरता मेंगल झाकझमाला ॥ ७ ॥ इण विधसुं कुंवरी परणन आयो, लाडी राजीमती वेस वणायो ॥ मसतक मोती मांग भराई ॥ सीसफूलांरी ज्योत सवाई ॥ ८ ॥ सुविसाले भालै टीकोजी सोहै, अणियाली आंष्यां काजल मोहै ॥ काने हंकोटा जडावकेरा, नकवेसर मोती झलके भलेरा ॥९॥ दाडिमकुलियां दांत बत्तीसे, बदनी बोलै सार बत्तीसै ॥ डुलडी तिलडी गल मोत्यांरी माला, कुच ऊपर कसिया कुंच रसाला ॥ १० ॥ चूडे नें गहणें जाइ न वखाणी, रूपैकर गोरी जीपे इंद्राणी ॥ झांझरनें नेवर घूघर घमकंती, हंसा तो जीपै सुंदर हालंती ॥११॥ हाथेजी पगे पोथीजी दीधी, सुधामे देही गरकाब कीधी ॥ फाबंते कपडै सखियां वणाई, राजूल सरखी नार न काई ॥ १२ ॥ मृगानैणी सोहै जोवनवालो, सारीखी सखियां तिण विचालो ॥ इण विधसुं पदमण परणन आयो, मदसिरी रूपें मदन हरायो ॥ १३ ॥ मदमाता राता करता गहगाटो, कोडजी ग्यानें जादव थाटो ॥ घणुं मछराला महा अभिमानी ॥ केसरिये वागै मिलिया छै जानी ॥ १४ ॥ डुरदंत कुंवर हरिवंस केरा, बीजाही जानी नृपति भलेरा ॥ धक्को मारे तो मेरु धूजावै, जातां कालनें झाल पछाडै ॥ १५ ॥ तिहां मांहे नेमजी महाबलवंतो ॥ अनंता सुरपतिसुं जोर अनंतो ॥ तारागणमांहे शोभे जु चंदो, तिण विध मांहे नेमजिणंदो ॥ १६ ॥ तिण वेला देखी पसुअ दुखाया, अण-

परण्या नेमजी पाछाजी आया ॥ धिग् २ संसार मायाजंजालो, जामणने मरण महा विकरालो ॥ १७ ॥ इण अनुक्रम नेमजी चारत लीधो, आपरो नाम अविचल कीधो ॥ नेमजी राजुल बाल ब्रह्मचारी, जिणरो शिलोको गावै नरनारी ॥ १८ ॥ इति श्रीनेम नाथजीरो सिलोको संपूर्ण ॥

॥ अथ चोढालिया प्रारंभ ॥

॥ विजयसेठ विजयासेठाणीका चोढालिया लिख्यते ॥

प्रह ऊठी रे पंच परमेष्टि सदा नमूं, मनसूधे रे तेहने चरणे नित नमूं ॥ धुरि तेहने रे अरिहंत सिद्ध वखाणियै, आचारज रे उपाध्याय मन आणियै ॥ ( उल्लालो ) आणियै निज मन भाव सुद्धै, उपाध्याय नमूं वली ॥ जे पनरह करमभूमिमांहे, साधु प्रणमुं ते वली ॥ जिम कृष्णपक्ष नैं शुक्ल पक्ष वलि शील पाल्यो ते सुणो, भरतारने स्त्री विन्हे तेहनो चरित भावेसुं भणो ॥ १ ॥ ( ढाल ) भरतक्षेत्रे रे समुद्र तीर दक्षिणदिसै, कच्छदेसै रे विजयसेठ श्रावक वसै, शीलव्रत रे अंधारापक्षनो लियो, बालापणै रे एहवो निश्चै मन कियो ॥ ( उल्लालो ) मन कियो एहवो तेण निश्चै पक्ष अंधारे पालस्युं, हुं शील निश्चै एह विरुद्ध विषय सेवा टालस्युं ॥ इकअवै सुंदर रूप विजया नाम कन्या ते वली, पिण शुक्ल पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगे मनरली ॥ २ ॥ ( ढाल ) कर्मजोगे रे मांहोमांहे विहुंतणो, शुभ दिवसे रे हुओ विवाह सुहामणो ॥ तब विजया रे सोले शृंगार भला करी, पिउ मंदर रे पोहती मन उल्लट धरी ॥ ( उल्लालो ) मन धरी उल्लट अधिक पहुती पिया पासे सुंदरी, ते देखि हरखे सेठ बोलै शील निश्चो संभरी ॥ मुझ शील निश्चो पखअंधारे तेहना दिन तीन छै, ते नेम पालो शुक्ल पक्षे हुं भोग भोगविस्युं पछै ॥ ३ ॥ ( ढाल ) इ॰ सांभल रे वि-

जया मन विलखी थई, पिउ पूछै रे किम चिंता तुझने भई ॥ तब विजया रे कहे शुक्लपक्ष व्रतमें लियो, व्रत चोथे रे बालापण निश्चो कियो ॥ ( उल्लालो ) बालपणेंमें कियो निश्चो शुक्लपक्ष व्रत पालस्युं, तो उभय पक्ष हिव शील पाली नियम दूषण टालस्युं ॥ तुह्मे अवर नारी परणने हिव शुक्लपक्ष सुख भोगवो, कृष्णपक्ष निज नियम पाली अभिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ ( ढाल ) तब वलतो रे तसु भरतार कहे इसो, विषयारस रे कालकुटविष छे तिसो ॥ ते बंन्नी रे शीलव्रत दोनुं पालस्यां, एह वार्त्तारे माता पिता न जणावस्यां ॥ ( उल्लालो ) मातपिता जब जाणस्ये तब दिक्ष्य लेस्यां धर दया, इम अभिग्रह लेईनें ते भावचारित्रिया थया ॥ एकत्र सय्या सयन करतां खड्गधारा व्रत धरे, मन वचन काया करी सूधो शील बेउं आचरे ॥ ५ ॥ ( ढाल २ ) विमल केवली एक, चंपा नयरीए, ततखिण आवी समोसरया ए ॥ प्राणी अधिक विवेक, श्रावक जिणदास, कहै विनयगुण परिवरयो ए ॥६॥ सहस चोरासी साधु, मुझ घर पारणो, करै मनोरथ तो फलै ए ॥ केवल ज्ञान अगाध, कहै श्रावक सुणो, एह वात तो नवि मिलै ए ॥ ७ ॥ किहां एतला अणगार, किहां वलि सूझतो, भातपाणी नहिं एतलो ए ॥ तो हिव तेह विचार, करो तुम्हें जिम तिम, फल अम्ह हुवे तेतलो ए ॥ ८ ॥ अछै हिवे कछदेश, सेठ विजय वली, विजया भार्या तसु घरै ए ॥ भावयती ग्रहवास, तेहनें भोजन, दीधां फल हुवे तेतलो ए ॥ ए ॥ जिणदास कहै भगवंत, ते मांहे एतला, कुण गुण कुण व्रत छै घणा ए ॥ केवली कहै अनंत, गुण तसु शीलना, कृष्ण शुक्लपक्ष व्रतत णा ए ॥१०॥ ॥ ढाल ३ ॥ दान कहै जग हूं वडो ए ॥ देशी ॥ केवलीनें मुख सांभली, श्रावक ते जिनदास रे ॥ कछदेसें हिव

आवियो, पूरे निज मन आस रे ॥ ११ ॥ धन२ शील सुहामणो, शील शमो नही कोय रे ॥ शीले देव सानिध करै, शीलथी शिव सुख होई रे ॥ ध० ॥१२॥ सेठ विजय विजयाभणे, भगतसुं भोजन देई रे ॥ सहस चोरासी साधुना, पारणानो फल लेई रे ॥ ॥ ध० ॥ १३ ॥ मातपिता पूछे तेहनें, एहनो शील वखाण रे ॥ केवलीने मुख जिम सुण्यो, तिम कहै तेह गुणजाण रे ॥ ध० ॥ ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनें, पारणो दीये कोइ भाय रे ॥ कृष्ण शुक्लपक्ष दंपती, भोजननो फल थाय रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ मातपिता जव जाणियो, प्रगट हूउ संबंध रे ॥ सेठ विजय विजया लियो, चारित्र अप्रतिबंधो रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ ॥ ढाल ४ ॥ केवलीनें पासे, चारित्र लेइ उदार ॥ मनममता मूकी, पालै निरतीचार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ ते सुगते पहुंता, दंपत्ती सुगुण सुजाण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै, भावै जे नर नार ॥ ते वंछित सुख लहै, पहुंचै भवनें पार ॥१९॥ ॥ कलश ॥ इम कृष्णपक्ष नें शुक्लपक्षें शील पाल्यो निरमलो, ते दंपतीना भाव शुद्धें सदा शुभगुण सांभलो ॥ जिम दुरिय दोहग दूर जायै सुख आयै बहु परै, वलि सकल मंगल मनह वंछत कुशल नित घर अवतरै ॥ २० ॥ इति शील चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ इखुकारराजा भृगुरोहित चोढालिया लिख्यते ॥

महिलांमे बैठी राणी कमलावती, झीणी तो उमै मारग खेह ॥ जोवै तमासो इखुकार नगरमें, कौत्तक उपनो मनमें एह ॥ सांभल रे दासी आज नगरमें वद्दो किम घणो ॥ १ ॥ कांतो परधान सखी मंत्रीया, कां केइ लूंट्या राजा गांव ॥ कां कोइ गाम्यो धन नीसर्यो, गामा रह्या है गामो गाम ॥ सां० ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ नातो परधान बाईजी मंत्रिया, ना कोई राजा लूंट्या

गांव ॥ भृगुपुरोहित धन तजं नीसरचो, राजारै धन लेवा चाव ॥ सांभल हे राणी हुकम करो तो कोइ गाफो इहां धरां ॥ ३ ॥ बेटां तो तिणरा संजम लियो, वरज्यो घणोंही पितामात ॥ ते पिण चारित्र लेवा ऊमह्या, भृगू जसा तिणें मोह ललचात ॥ सांभल हे रा० ॥ ४ ॥ इम सुण कमलावतीराणी इम कहे, इहां तो कमी नहीं काय ॥ सांभलनें राणी माथो धूणीयो, राजारी म मता नही गाय ॥ सां० दासी राजानें ए वाता जुगती नही ॥ ५ ॥ महिलांसूं राणी कमलावती, आई छै राजारे हजूर ॥ वचन कहै राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोलै सूर ॥ सां० हो राजा ब्राह्मण छोफी रुद्धि क्यूं आदरो ॥ ६ ॥ करजोफी कमला कहै, सां भल कंत सुजान ॥ ब्राह्मण जे रुद्धि परिहरि, ते तो घर मांहे म त आण ॥ सांभल हो राजा० ७॥ ए रुद्धिसुं अपणे कांइ घणो हुसी, राजारा मोटा छै भाग ॥ वमियें आहाररी वांछा कुण करै, कै कुतरा कै काग ॥ सांभल हो रा० ८ ॥ वमियो आहार पीछो नर भखै, नही परसंसवा जोग ॥ भृगूप्रोहित रुद्धि तज नीसरचो, थे जाणयो छै असी म्हारे भोग ॥ सां० राजा० ॥ ए ॥ संकलपियोफो पाछो किम लियै, सांभल हो महाराज ॥ दान दियो थे पहिलां हाथसुं, ते पूछो लेतां नावै थांने लाज ॥ सांभल रा० १० ॥ निश्चै तो मरणो राजाइक दिने, छोफीनें काम विशेष ॥बीजो तो जगमें सरणो को नही, तारै जिनजीरो धर्म एक ॥ सांभलहो रा० ११ ॥ सगलै जगतरो धन भेलो करी, थे घालो भंफारारे मांहि ॥ तोपिण त्रसना राजा पापणी, त्रिपत न मनफो थाय ॥ साम्भल हो राजा० १२ ॥ सांभलनें इखुकारराजा बोलीयो, तूं भाषैनी वचन संभाल ॥ का तनें राणी फोलो वाजियो, का काई कीधी मतवाल ॥ सांभल हो राणी राजानें करफा वचन

न बोलीयै ॥ १३ ॥ नातो राजाजी झोलो वाजीयो, ना कोइ कीधी मतवाल ॥ ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो, वरजण आई हो नृपाल ॥ सांभल हो रा० १४ ॥ वलतो राजा राणीने इम कहै, इसमी वैरागण थाय ॥ अजूं तो निजरां आवै नही, तूं बैठी छै घर मांय ॥ सांभल हे राणी० १५ ॥ बलतरवाली तो दीसे नही, इसमी आई छै मतवाल ॥ हुंतो घर छोडीने नीसरी, थे पिण छोडो हो नृपाल ॥ सांभल हो राजा आग्या देवो तो संजम आदरुं॥१६॥ रतन जडतरो राजा पिंजरो, तिणमें सुवटियो पडियो फंद ॥ इण रीते हूं थांरे राजमें, रहिने पांमु आणंद ॥ सांभल हो राजा आग्या० १७ ॥ सनेहरूपीया तांतण तोडनें, आरंभ धनसुं रहस्यां दूर ॥ विरकत थई मौनपणें रह्या, थे पिण होयज्यो सूर ॥ सां० रा० आ० १८ ॥ दव तो लागी हो राजा वन मझे, हिरण ससा बले मांय ॥ गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनें, मनमांहे हरखित थाय ॥ सां० रा० राग द्वेषरा भांगा लग रह्या १९ ॥ मांहोमांहि खेधोईसको, दश प्राण रहित कीधो काल ॥ दुस्मन तो मनमें हरख पाम्यो घणो, जाणे ते माहरो मिटियो साल ॥ सां० राजा राग द्वे० २० ॥ इण दृष्टांते लोभी मूरख थका, मुरझ रह्या भोगमांहि ॥ पहिलांने दुखियो देखी चेते नही, लागी राग द्वेषरी लाय ॥ सांभल हो राजा रा० २१ ॥ मांसरी बोटी पंखीरी चांचमें, नर पासै पंखी पडियो आय ॥ आमिष सम भोग छोडनें, चारित्र लेस्यां चित लाय ॥ सांभल रे प्राणी संयमथी सुख पामियै २२ ॥ महल पिलंगादिक अथिर छै, ते पाम्या छे आपणे हाथ ॥ कामभोगमें रकत होय रह्या, ते तज होय सांनाथ ॥ सांभलरे प्रा० २३ ॥ पांचे इंद्रीयारा भोग छोडने, द्रव्य भावे हलक थाय ॥ सहज वायु पंखीनी परें, विचरस्यां आपणी दाय ॥

सांभल रे प्रा० २४ ॥ गिरधपंखी ज्युं भोग जाणज्यो, ए काम बधारै संसार ॥ साप ज्युं मोर थकी डरतो रहै, ज्युं पापसुं संकस्यां इण वार ॥ सांभल रे प्रा० २५॥ शोक तजी संतोषसुं, लेस्यां संयमभार ॥ ममता तजी समता ग्रहो, करस्यां उग्र विहार॥ सांभल रे प्रा० २६॥ तन धन जोबन कारमो, चंचल बीज समान ॥ खिण२ खूटै आउखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांभल रे प्रा० २७ ॥ हस्ती ज्युं बंधण तोड़नें, आपे वन सुखे जाय ॥ करमबंध तूटै संयम लियां, सुणो कहुं छुं महाराय ॥ सांभल हो रा० सं० २८ ॥ इम सुणनें इखुकारराजा चेतियो, छोड़ीनें मोटको राज ॥ कायरनें तो ए तजतां दोहिलो, विप्र सहित सारयां काज ॥ सांभल हो राणी सं० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह छोड़कै, पायो जिनधरम सुजाण ॥ तपस्या सगलांही आदरी, उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥ ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३० ॥ सुध संयम पालै सदा, सुमति गुपति दयाल ॥ भमरानी परै करै गोचरी, रिषि टालै दोष बयाल ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज छै, भव्यजीवनें उतारै पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी समझनें, निरमल भावना भाव ॥ छए जणा थोड़ा कालमें, मुगति विराज्या जाय ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, भृगुपुरोहित जसा नार ॥ भृगुप्रोहितना दोय दीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा भृगुप्रोहित अधिकार संपूर्ण ॥

॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥

॥दुहा॥ प्रथम जिनेसर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रशाद ॥ दान शील तप भावना, बोलिस बहु संवाद ॥ १ ॥ वीरजिनंद समोसरया राजगृही उद्यान ॥ समवसरण देवें रच्यो, बैठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥

बेठी बारे परखदा, सुणवा जिणवर वाण, दान कहे प्रभु हुं वडो, मुजने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांभलजो सहुको तुमें, कुण छे मुज समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पहुर दातारनो, ले सहु कोई नाम ॥ दीधांरी देवल चढै, सीधै वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थंकरनें पारणे, कुण करस्ये मुज होड ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढाबारे कोड्डि ॥ ६ ॥ हुं जग सगलो वस करूं, मुज मोटी छे वात ॥ कुण२ दानथकी तिरया, ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥ धनसारथवाह साधुनें, दीधुं घृतनो दान ललना ॥ तीर्थंकर पद में दियो, तिणें मुजनें अभिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहै जग हूं वडो, मुज सरिखुं नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा, दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती, पडिलाभ्यो अणगार ललना ॥ कुमर सुबाहू सुख लहै, ते तो मुज उपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणनें पारणे, पडिलाभ्यो ऋषिराय ललना ॥ शालिभद्र सुख भोगवे, दानतणें सुपसाय ललना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पांचसें मुनिनें पारणो, देतो वोहरी आण ललना ॥ भरत थयो चक्रवर्त्ति भलो, ते पण मुज फल जाण ललना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उरुदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणें, श्रीश्रेयांशकुमार ललना ॥ सेलडी-रस वहरावियो, पाम्यो भवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंदनबाला बाकुला, पडिलाभ्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट थया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव भव पारेवडूं, शरणें राख्यूं सूर ललना ॥ तीर्थंकर चक्रवर्त्तिपणें, प्रगट्यो पुन्य पडूर ललना ॥ दा० ९ ॥ गजभव शशलो

राखीयो, करुणा कीधी सार ललना ॥ श्रेणिकने घर अ वतरयो, अंगज मेघकुमार ललना ॥ दा० १० ॥ इम अनेक में उधरया, कहतां नावे पार ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, मुझ पहिलो अधिकार ललना ॥ ॥ दोहा ॥ शील कहे सुण दान तुं, किस्यो करै अहंकार ॥ आडंबर आठै पहुर, याचकसुं विवहार ॥ १ ॥ अंतराय वलि ताहरै, भोगकरम संसार ॥ जिनवर कर नीचो करे, तुझने पड्यो धिक्कार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे दान तूं, मुझ पूठै सहु कोय ॥ चाकर चालै आगले, तो स्युं राजा होय ॥३॥ जिनमंदिर सोनातणो, नवो निपावे कोय ॥ सोवन कोटी दानदिये, शीयल समो नहि कोय ॥ ४ ॥ शीले संकट सहु टले, शीले जश शोभाग ॥ शीले सुर सानिध करै, शील वड्यो वेराग ॥५॥ शीलै सर्प न आभडै, शीले शीतल आग ॥ शीलै अरि करी केसरी, भय जावै सब भाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना भय थकी, में छोड्या अनेक ॥ नाम कहूं हिव तेहना, सांभलजो सुविवेक ॥ ७ ॥ ॥ ढाल २ ॥ पासजिनंद जुहारिये ॥ ए देशी ॥ शील कहै जग हूं वड्यो, मुझ वात सुणो अति मीठी रे ॥ लालच लावे लोकनें, में दानतणी वात दीठी रे ॥ शी० १ ॥ कलह कारण जग जाणीयें, वलि विरती नही पण कांई रे ॥ ते नारद में सीझव्या, मुझ जुओ ए अधिकाई रे ॥ शी० २ ॥ बांहे पहिरया वैरखा. शंखराजा दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ कलावती, ते में नवपल्लव कीधो रे ॥ शी० ३ ॥ रावणघर शीता रही, तो रामचंदे घर आणी ॥ शीतानो कलंक उतारीयो, में पावक कीधूं पाणी रे ॥ शी० ४ ॥ चंपाबार उघाडिया, वली चालणियें काढयुं नीरो रे ॥ सतीय सुभद्रा जस थयो, में तसु कीधी भीरो रे ॥ शी० ५॥ राजा मारण मांडीयो, राणी अभयायें दूषण दाख्या रे ॥ शूली सिंहासण

में कियो, में शेठ सुदर्शन राख्यो रे ॥ शी० ६ ॥ शील सन्नाह मंत्रीसरें, अ वतां अरिदल थंन्यो रे ॥ तिहां पिण सानिध में करी, वली धरम काज आरंन्यो रे ॥ शी० ७ ॥ पहिरण चोर प्रगट किया, में अठोत्तरसो वारो रे ॥ पांरुवनारी डोपदी, में राखो माम नुगारो रे ॥ शी० ८ ॥ ब्राह्मी चंदनबालिका, वलि शीलवती दवदंती रे ॥ चेम्रानी साते सुत, राजीमती सुंदर कुंती रे ॥ शी० ए ॥ इत्यादिक में उधरया, नर नारीना वृंदो रे ॥ समयसुंदर प्रनु वीरजी, पहिले मुऊ आनंदो रे ॥ शी० १० ॥ ॥ दूहा ॥ तप बोल्यो नटकी करी, दानने तूं अवहील, पिण मुऊ आगल तुं किसुं, सांनल रे तूं शील ॥ १ ॥ सरसा नोजन तें तज्या, जगमें मीठा नाद ॥ देहतणी शोना तजी, तुऊमां किस्यो सवाद ॥ २ ॥ नारी थकी म्हरतो रहे, कायर किस्युं वखाण, कूम कपट बहु केलवी, जिम तिम राखे प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुऊ आदरे, ठंन्मो सहु संसार ॥ आप एक तूं नांजतो, बीजा नांजे चार ॥ ४ ॥ करम निकाचित तोम्रया, नांजु नवनय नीम ॥ अरिहंत मुऊने आदरे, वरस ठम्मासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीसर उपरे, मुऊ लबधे मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारे शाश्वता, आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोटा जोयण लाखना, लघु कुंथु आकार ॥ हय गय रथ पायकतणा, रूप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुऊ कर फरसे नुपशमें, कुष्टादिकना रोग ॥ लब्धि अठावीस उपजे, नुत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥ जे में तारया ते कहूं, सुणजो मन नल्लास ॥ चमत्कार चित पामसो, देशो मुऊ साबास ॥ ९ ॥ ॥ ढाल ३ ॥ नणदलरी देशी ॥ दृढप्रहार अति पापीयो, हत्या कीधी चार हो सुंदर ॥ ते पिण तिण नव उधरयो, मूक्यो मुगति मऊार हो सुंदर ॥ १ ॥ तप सरखो जग को नही, तप करे कर्मनूं सूम हो सुंदर ॥ तप

करवूं अति दोहिलूं, तपमां नही को कूम हो सुंदर ॥ त० २ ॥ सात माणस नित मारतो, करतो पाप अघोर हो सुंदर ॥ अर्जुन माली में ऊधरयो, छेद्या कर्म कठोर हो सुंदर ॥ त० ३ ॥ नंदिषेणनें में कियो, स्त्रीवल्लन्न वसुदेव हो सुंदर ॥ बहुत्तर सहस अतेउरी, सुख न्नोगवे नित्यमेव हो सुंदर ॥ त० ४ ॥ रूप कुरूप कालो घणो, हरिकेशी चंमाल हो सुंदर ॥ सुरनर कोमी सेवा करे, ते में कीधी चाल हो सुंदर ॥ तप० ५ ॥ विष्णुकुमर लबधे कियुं, लाख योजननो रूप हो सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणे, ए मुऊ शक्ति अनूप हो सुंदर ॥ त० ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, वांद्या जिन चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पिण प्रतिबूऊव्या, तिण मुऊ अधिक जगीस हो सुंदर ॥ त० ७ ॥ चौद सहस अणगारमां, श्रीधन्नो अणगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, ए पण मुऊ अधिकार हो सुंदर ॥ त० ८॥ कृष्ण नरेसर आगले, डुक्करकारक एह हो सुंदर ॥ ढंढण नेम प्रसंसीयो, मुऊ महिमा सवि तेह हो सुंदर॥ त० ए॥ नंदिषेण विहरण गयो, गणिका कीती हास हो सुंदर॥वृष्टि करी सोवननणी, में तसु पूरी आस हो सुंदर ॥ त० १०॥ इम बलन्नद्र प्रमुख बहू, तारया तपसी जीव हो सुंदर ॥ समयसुंदर प्रन्नु वीरजी, पहिलो मुऊ प्रस्ताव हो सुंदर ॥ त० ११ ॥ दूहा ॥ न्नाव कहे तप तूं किसुं, वेरूधुं करे कषाय ॥ पूर्वकोमी जो तप तपे, क्षणमां खेरूं थाय ॥ १ ॥ खंधक आचारज प्रते, तें बाल्यो सवि देश ॥ अशुन्न नियाणो तूं करे, क्षमा नही लवलेश ॥ २ ॥ द्वीपायन ऋषि दूहव्या, सांब प्रद्युम्न सनाह ॥ तें तब क्रोध करी तिहां, कियो द्वारिका दाह ॥३॥ दान शील तप सांन्नलो, म करो कूब गुमान॥ लोक सहूको साख दे, धर्मे न्नाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक वो त्रिण्हे, घे व्याकरणी साख ॥ काम सरे नहि कोइसुं, न्नाव न्नणे में

पाख ॥५॥ रस विन कनक न नीपजै, जल विन तरुअर वृद्ध ॥ रसवति रस नही लवण विण, तिम सुज विण नही सिद्ध ॥६॥ मंत्र यंत्र मणि औषधी, देवधर्मगुरु सेव ॥ भाव विना ते सवि वृथा, भाव फलै नितमेव ॥७॥ दान शिल तप जे तुमें, विघ २कह्या वृत्तांत ॥ तिहां जो भाव न हुंनतो, कोई सिद्धी नव हुंत ॥ ८ ॥ भाव कहे में एकले, तार्या बहु नर नार ॥ सावधान थड सांजलो, नाम कहूं निरधार ॥९॥ ( ढाल चोथी ॥ कपूर हुवै अति उजलो रे, एदेशी) ॥ कानतमें काउसग्ग रह्यो रे, प्रसन्नचंद ऋषिराय ॥ ते में कीधो केवली रे, ततखिण करम खपाय ॥ १ ॥ सोजागी सुंदर, भाव वडो संसार ॥ एतो बीजो मुझ परिवार, सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे, पोहचाडूं भवपार ॥ सो० २ ॥ वंश ऊपर चढ खेलतो रे, एलापुत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कियो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ३ ॥ भूख तृषा खमें अतिघणी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल महिमा सुर करै रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ४ ॥ लाभथी लोभ वाधे घणो रे, आण्यो मन वैराग ॥ कपिल थयो मुनि केवली रे, ते मुझनें सोभाग ॥ सो० ५ ॥ अंबिकासुत गच्छनो धणी रे, खीणजंघा वलि जाण, कीधो अंतगड केवली रे, गंगाजल गुण खाण ॥ सो० ६ ॥ पनरेसें तापसभणी रे, दीधी गौतम दिख्क ॥ ततखिण कीधा केवली रे, जो मुझ मांनी सीख ॥ सो० ७ ॥ पालक पापीये पीलीया रे, खंधकसूरीना शिष ॥ जनममरणथी छोडव्या रे, आपे मुझ आशीष ॥ सो० ८ ॥ चंडरुद्रने चालतां रे, दीधो दंड प्रहार ॥ नवदीक्षित थयो केवली रे, ते गुरु पिण तेणी वार ॥ सो० ९ ॥ थनरथकारक साधुनें रे, पडिलाभ्यो उलास ॥ मृगलो भावना भावतो रे, पोहतो स्वर्ग आवास ॥ सो० १० ॥ निज अपराध खमावती रे, मूंक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीनें

में दियुं रे, निर्मल केवलज्ञान ॥ सो० ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरे रे, देखी पूत्रनी रुद्धि ॥ मुऊनें मनमांहे धर्योरे, ततखिण पामी सिद्ध ॥ सो० १२ ॥ वीर वंदन चाल्यो मारगे रे, चांप्यो चपल तुरंग ॥ दर्दुर नामें देवता रे, तेह थयो मुऊ संग ॥ सो० ॥ १३॥ प्रजु पाय पूजन नीसरी रे, डुर्गला नामे नार ॥ कालधर्म विचमां करी रे, पोहती स्वर्ग मऊार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोजा कारमी रे, रूप किसुं अजिमान ॥ जरत आरीसाजुवनमां रे ॥ पाम्यो केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढजूति कलानिलो रे, प्रगव्यो जरतसरूप ॥ नाटक करतां पामियो रे, केवल ज्ञान अनूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षादिन काउसग्ग रह्यो रे, गजसुकमाल मसाण ॥ सोमल शीस प्रजालीयो रे, सिद्धि गयो शुज्ञ ऊाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवली रे, सांजल पृथवीचंद ॥ पोते केवल पामियो रे, सेव करै सुर इंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ इम अनेक में ऊधर्या रे, मूंक्या शिवपुरवास ॥ समयसुंदर प्रजु वीरजी रे, मुऊने प्रथम प्रकास ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ दूहा ॥ वीर कहे तुमें सांजलो, दान शील तप जाव ॥ निंदा छै अति पापणी, धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ परनिंदा करतां थकां, पापे पिंम जराय ॥ वेढ राम वाधै घणी, डुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरिखो पापीयो, जूंमो कोइय न दिठ ॥ वलि चंमाल समो कह्यो, निंदक वदन अदिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी, करतो इंद नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासे निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को केहनी म करो तुम्हे, निंदाने अहंकार ॥ आप आपणें ठामे रहो, सहुको जलो संसार ॥ ५ ॥ तोपण अधको जाव छै, एकाकी समरत्थ ॥ दान शील तप त्रिणें जला, पण जाव विना अकयछ ॥ ६ ॥ अंजन आंखे आंजता, अधिको आणो रेख ॥ रजमांहे

त्तज काढतां, अधिको न्नाव विशेष ॥ ७ ॥ न्नगवंत हठ न्नंजण न्नणी, चारे समान गणंत ॥ चार करी मुख आपणा, चन विध धर्म न्नणंत ॥ ८ ॥ ॥ ढाल ५ मी ॥ वीर जिणेसर इम न्नणे रे, बैठी परखदा बार, धर्म करो तुमें प्राणिया रे, जिम पामो न्नव पार रे ॥ धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे, न्नवियण सांन्नलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारो रे ॥ धर्म० ॥ धर्मथकी धन संपजै रे, धर्मथकी सुख होय, धर्मथकी आरति टले रे, धर्म समो नहि कोय रे ॥ ध० ॥ २ ॥ डुर्गति पमतां प्राणिया रे, राखै श्रीजिनधर्म ॥ कुटंब सहुको कारमो रे, मति न्नूलो न्नवि न्नर्म रे ॥ ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिआ हूआ रे, वलि होसे छै जेह ॥ ते जिनवरना धर्मथी रे, मत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ सोलेसे गासठ समे रे, सांगानेर मकार, पद्मप्रन्नु सुपसाउले रे, एह न्नण्यो अधिकारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहमसामी परंपरा रे, खरतर गछ कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगमो रे, श्रीजिनचंद मु- नींद रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतो रे, विनयवंत ज- सवंत ॥ आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ध०॥ ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शीस ॥ स- मयसुंदर वाचक न्नणे रे, संघ सदा सुजगीस रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ दान शीयल तप न्नावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ न्नणतां गुणतां न्नावसुं रे, ऋद्धि समृद्धि सुप्रसाद रे ॥ ध० ॥ ए ॥ इति दान शील तप न्नाव चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥

सेवो वीरनें चित्तमा नित्य धारो, अरि क्रोधनें मन्नथी दूर वारो ॥ संतोषवृत्ती धरो चित्तमांही, राग द्वेषथी दूर थाउ न्नाई ॥ ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्धतत्त्वनी वात तेणे न

जाणी ॥ मनुजन्म पामी वृथा कां गमो छो, जैनमार्ग छंडी जुआं कां भमो छो ॥ २ ॥ अलोभी अमानी निरागी तजो छो, सलोभी समानी सरागी भजो छो ॥ हरि हरादि अन्यथी शुं रमो छो, नदीगंग मुकी गलीमां पमो छो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ देव घाले गले रुंडमाला ॥ केइ देव उत्संगे राखेछे वामा, केइ देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ मांस भक्षी महा विकराला, केइ योगणी भोगिणी भोग रागे, केइ रुद्रणी छागनो भोग मागे ॥५॥ इसा देव देवी तणी आश रा खे, सदा मुक्तिने सुखने केम चाखे ॥६॥ जदा लोभना थोकनो पार नाव्यो, तदा मधनो बिंदुउ मन भाव्यो ॥ ६ ॥ जे देवलां आपणी आस राखे, तेह पिंडने सन्नसुं लेइ चाखे ॥ दीन हीननी भीड ते केम भाजे, फूटो ढोल होवे कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता भजो मोक्षदाता, अलोभी प्रभुने भजो विश्वख्याता ॥ र त्नचिंतामणी सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंडसुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंदबुद्धि जेह प्राणी कहेछे, सवि धर्म एकत्व भूलो भमेछे ॥ किहां सर्षवाने किहां मेरुधीरं, किहां कायराने किहां शू रवीरं ॥ ए ॥ किहां स्वर्णथालं किहां कुंभखंडं ॥ किहां कोद्रवान किहां क्षीरमंडं ॥ किहां क्षीरसिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कामधेनु किहां छागखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां कूडवाणी, किहां रंकनारी किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने किहां देवभोगी, किहां इंद्रदेही किहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्म घाती किहां कर्म धारी, नमो वीरस्वामी भजो अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्न थी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धी धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन्न माचे, जना मूढमां श्रेष्ठसुं इष्ट गाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंभ रोसो, सजो पुण्य पोली भजो ते अरोसो

॥ १३ ॥ गति च्चार संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रन्नु पाय स्वामी ॥ तूंही२ तुंही प्रन्नु पमेरागी, न्नवफेरनी शृंखला मोह न्नागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी ठे एक अर्ज मोरी, दीजै दासकूं सेवना चरण तोरी ॥ पुन्य नदय हुओ गुरु आज मेरो, विवेकें लह्यो में प्रन्नु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारका छंद लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ वंछित पूरे विविधपर, श्रीजिनसासन सार ॥ निश्चे श्रीनवकार नित, जपतां जैजैकार ॥ १ ॥ अमसठ अक्षर अधिक फल, नवपद नवेनिधान ॥ वीतराग सैंमुख वदे, पंच परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समरयां संपति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र सिर मुकटमणि, सदगुरु न्नाषित सार, सोन्नवियां मन शुद्धसें, नित्त जपिये नवकार ॥ ४ ॥ ( बंद हाटकी ) नवकार थकी श्रीपाल नरेसर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध, समसान विषे शिव नाम कुमरने सोवनपुरुषो सिद्ध ॥ नवलाख जपंता नरक निवारै, पामे न्नवनो पार ॥ सो न्नवियां न्नत्ते चोखे चित्ते नित जपियै नवकार॥५ ॥ बांधी वमसाखा शींके बैसी हेठल कुंम हुताश, तस्करने वलि मंत्र समर्प्यो श्रावक नड्यो तेह आकाश ॥ विधि रीते जप्यां विषधर विष टाले ढाले अमृतधार॥ सो० ६॥ बीजोरा कारण राय महाबल व्यंतर डुष्ट विरोध, जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यक्ष प्रतिबोध ॥ नवलाख जपंता थायै जिनवर एहवो ठे अधिकार ॥ सो० ७ ॥ पल्लीपति सीख्यो मुनिवर पासें महामंत्र मन शुद्ध, परन्नव ते राजसिंह पृथ्वीपति पाम्यो परघल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी अमरापुर पुहुतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ८ ॥ सन्यासी कासी तप साधंतो पंचाग्नि परजाले, दीठो श्रीपासकुमारे पन्नग अधबलतो

ते टाले ॥ संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्रभुवन अवतार ॥ सो० ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, इण ध्याने कुष्ट टल्युं उंबरनुं रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपतां नवनिधि थाये धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमांहे कृष्णभुजंगम घाल्यो घरणी करवा घात, परमेष्ठि प्रजावे हारफूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतियें पिंगल कीधो पापतणो परिहार ॥ सो० ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहणी पामी बाण प्रहार, पद पंच सुणंता पांमुपतधर ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख महिमा मंदिर जवदुख जंजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संबल कादव काढ्या सकट पांचसें माल, दीधे नवकारे गया देवलोके विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधामां लही विलसै जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीसी हुइ अनंती होसे वार अनंत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम जाखै जगवंत ॥ पूरबदिसि चारे आदि प्रपंचे समरयां संपति सार ॥ सो० १४ ॥ परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कठोर, पुंमरगिरि ऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो मणिधर नें इक मोर ॥ सद्गुरु सन्मुख विधियें समरंता सफल जनम संसार ॥ सो० १५ ॥ सूली आरोपण तस्कर कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहां सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी ऋद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवार्यो सुरें करी मनुहार ॥ सो० १६ ॥ पंच परमेष्टी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पंच सिझाय महाव्रत पंचहुं पंचसमति समकित्त, पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पालो पंचाचार ॥ सो० १७ ॥ ( कलश ॥ छप्पय ) नित्य जपिये नवकार सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जंपै जगनायक ॥ श्रीअरिहंत सुसिद्ध सुद्ध आचार्य जणीजै, श्रीउवझाय सुसाधु पंच परमेष्टि थुणीजै ॥ नवकार सार संसार

है कुशल लाभ वाचक कहै, एक चित्तै आराधतां ऋद्धिसिद्धिवंछित लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणो लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥ जाकी छवि कांति अनोपम ओपित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख-ज्योति झिगामिग झिगमग२, पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप सरूप वखाणहि भूपत, तूंही त्रिभुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर लोक सबे मिल, जाका जस्स थुणंदा हे ॥ तेरी खिजमत्त करे इकचित्तसुं तो सेवक धरणिंदा हे ॥ तें जलता आग निकाल्या नाग, किया वड्भाग सुरिंदा हे ॥ तो चरणां आय रह्या लपटाय, कला अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न महा रन वन पंचागनि, ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी छद्माधारी, अल्प अहार लियंदा हे ॥ सब भेष सन्यासी रहे उदासी, अविनासी ध्यावंदा हे ॥ दिसि च्यारां दिठी बले अंगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥ महिमा वद्धारी सब नर नारी, जाकूं आय नमंदा हे ॥ एसी सुण वत्तां धरिय उछत्तां, पुत्तां पास जिनंदा हे ॥ वामादे अक्खै कुण तो पक्खै, मेरा हूंस पूरंदा हे ॥ तिहां चालो पुत्तां जिहां अवधुत्तां, जो गारंभ जगंदा हे ॥४॥ जननी मन आसा पूरण पासा, औरापत्ति सझंदा हे ॥ गल घूग्घरमाला जाण हेमाला, दंताला ओपंदा हे ॥ वर वीर घंटाला मद मतवाला, झोलालो झलकंदा हे ॥ ५ ॥ पंचरंगी पक्खर सझी सक्खर, ढालांसु ढलकंदा हे ॥ धतकारे धत्ता मत्ता अंकुस, मावत शीस दियंदा हे ॥ गंगातट आये खड़े रहाए, प्रभु ज्ञानी आखंदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अभिमानी तप अज्ञानी, पावक जीव जलंदा हे ॥ तिहां फाड़ उफाड़ दिखाले लक्कड़, वड़ फणधर नागंदा हे ॥ नवकार सुणाया सुरपद पाया, तापस जस घटंदा हे ॥

तिण किया नियाणा तप खजाणा, कोमी सट्टे वेचिंदा हे ॥ ७ ॥
हुयके क्रोधातुर आतुर सो कमठासुर धुर उपजंदा हे ॥ अश्वसेन
सुतन महाराज विषय डुख, जाणत आप तजंदा हे ॥ पंचमुठी
लोच किया आलोच, मनासुं सोच अफंदा हे ॥ प्रनु अप्रतिबंध वि-
हार कियो तब, रनबन वास वसंदा हे ॥ ८ ॥ उपशम अणगारे
काउसग्ग मझारे, कमठासुर दाव लहंदा हे ॥ वम्म असुराणा बली
हेराणा, पिछाण विलोक धुखंदा हे ॥ करि आतस क्रोध विचार
विरोध, महा अभिमान धरंदा हे ॥ वादल मतवाली नीली काली,
वायु महा वाजिंदा हे ॥ ए ॥ रवि किरणा कोट रही रज ओट,
दिवाकर तेज छिपंदा हे ॥ कर घोर घटा चिकटा उमटी, अरु बाजू
गाजंदा हे ॥ गरमाटा वाटा सुणिया थाटा, ऐरापति लाजंदा हे ॥
हुआ अकाला धुर वरसाला, बीजलिया षोवंदा हे ॥ १० ॥ मोटी
धारांसुं आराबांसुं, यों अंबू वरसंदा हे ॥ चल्ले जल खाला नदियां
नाला, हेमाला हालंदा हे ॥ दरियाव उलट्टां केतो फुट्टां, पाणी नहि
मावंदा हे ॥ दिगपाल दहल्लां धरिय उत्थल्लां, खोणीपत्ति खिसंदा
हे ॥ ११ ॥ वम्मे पाहाम्मां मंगी माम्मां, सझाम्मां ढाहंदा हे ॥ सम
ढाहंदी रेल वहंदी, जाणक जग रेलंदा हे ॥ बहु वासर वूठा जाण
कि रुठा, मूगा मन असुरेंदा हे ॥ तेवीशम राया वनमें पाया, काउ
सग्ग कहा करंदा हे ॥ १२ ॥ उवसग्गाहंदी केल करंदी, पाछा
नांहि मुमंदा हे ॥ धरि मनमें ध्याना क्रोध न माना, निश्चल ध्यान
धरंदा हे ॥ प्रनु नासा तांइ नदी आई, तोही नांहि खुन्नंदा हे ॥
देवारज जेसा धीर पएसा, पावस पीम्म सहंदा हे ॥ १३ ॥ तिण
अवसर वरदां धरणी धरदां, आसण बेग चलंदा हे ॥ तिण अवधि
प्रयुंजी दीठे प्रनुजी, तन मन अति उलसंदा हे ॥ तिहां पदमा-
वत्ती देव सकत्ती, सुं मिल वेग वहंदा हे ॥ हुयके हेराना वैठ वि

माना, पांवां आय लगंदा हे ॥ १४ ॥ फणनाग हजारां कर विस तारा. उत्तर ज्यूं ठावंदा हे ॥ ले आपण खंधे प्रेम निबंधे, पूरव प्रीत सुखंदा हे ॥ इंद्राणीनारी सब सिणगारी, जोबन अंग झिल कंदा हे ॥ १५ ॥ राकापति वयणी मिरगानयणी, सुंदर रूप सो हंदा हे ॥ अणियाला कज्जल झलके विज्जल, खूब बणाव बणंदा हे ॥ नकवेसर नत्थां लाल सुकत्थां, विच मोती झलकंदा हे ॥ उढण पाटंबर झीणी अंबर, आभूषण झलकंदा हे ॥ १६ ॥ उर कंचु क सिया तन उल्लसिया, कामघटा गहरंदा हे ॥ पहिरण तन खूवा हरिया दूवा, सोलेही सोहंदा हे ॥ कटिमेखल कड़ियां सोने जड़ि यां, हीरा वीच हलकंदा हे ॥ १७ ॥ घमके घूघरियां पाए घरियां, पग नेवर रणकंदा हे ॥ ले झांझर ताला ताल कंसाला, पखावज वाजंदा हे ॥ कुहके करनाला वीच रसाला, जंगी ढोल घुरंदा हे ॥ वाजे सरणाई लखरी धाई, नगारा रोड़ंदा हे ॥ १० ॥ पडमा वै रुट्टा आण उलट्टां, नाटिक मिल नाचंदा हे ॥ तत्ताथेइ२ तान त ड़ड़ा, रस भेद रमंदा हे ॥ दिन तीन वितीता तोहि न वीता, पा वस जल पसरंदा हे ॥ १ए ॥ धरणीधर जाण्या ग्यान पिछाण्या, कमठासुर कोपंदा हे ॥ नागादी पत्तो आख्या रत्तो, कित्ती रीस आवंदा हे ॥ रे मुढा धिठा चित्त विणठा, क्यूं नांही समझंदा हे ॥ साहिव बलवंता जोर अनंता, तूं तो नहि जाणंदा हे ॥ २० ॥ ए क्षमासागर गुणके आगर, तीनूं लोक नमंदा हे ॥ असमांन खमाई रीस भराई, हिक्काइ बजरंदा हे ॥ कित्ती बहु गल्लां पड़ै दहल्लां, धड़हड़ देह धूजंदा हे ॥ धरणेंद्र ड़राया तब ते आया, पावां आय लगंदा हे ॥ २१ ॥ कर जोड़ि खमाया सीस नमाया, जगनायक जिनचंदा हे ॥ तूं साहिब सच्चा तो गुण रच्चा, मेरा दिल खुलंदा हे ॥ तें रीस न धरियां किणही विरियां, तूंही अचल गिरंदा हे ॥

कमठासुर किन्ती बहु विनत्ती, निज अपराध खमंदा हे ॥ २२ ॥ सुरपती सिधाये निजघर आये, प्रभुके गुण समरंदा हे ॥ सुध संजम पाले दोष निहाले, तब केवल उपजंदा हे ॥ सम्मेतशिखर पर चढके ऊपर, सिद्धपुरी पोहचंदा हे ॥ तेरी कीरत्ती जग ऊपत्ती, पार न को पावंदा हे ॥ २३ ॥ तूं सच्चा रक्खे भेद परक्खे, गुमानी मोभंदा हे ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव करंदा हे ॥ तूं दीवाणा तूं खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा हे ॥ तूं अल्ला पीर फकीर मुसाफर, तूं जोगी तूं जिंदा हे ॥ २४ ॥ तूं काजी मुल्लां मरद अवल्लां, तूंही शेष फरींदा हे ॥ तैंही ऊपाया धंदे लाया, मायामें मुलकंदा हे ॥ तूं बूढा बाला मद मतवाला, तूं पक्का वाजंदा हे ॥ तूं कच्चा कवला सबतें सबला, सच्चा मऊ रहंदा हे ॥ २५ ॥ बाबागोसांई भेद न पाई, भीम्म पज्यां आवंदा हे ॥ तूं नारायण जोगपरायण, माधव तूंही मुकंदा हे ॥ तूं कवलाधारी तूं अवतारी, तूं देवादेवंदा हे ॥ तूं एकां थप्पे एक उथप्पे, थिति निज सुध आपंदा हे ॥ २६ ॥ तो देवल मझां लोकति संझा, सीरणिया वाटंदा हो ॥ गुण गीत पयासे कीरत भासे, झीणे सुर गावंदा हे ॥ कालागरु अगरसुं मलयागर, धूपेभा धुखंदा हे ॥ कुंकुंम कसतूरी केसर पूरी, चंदनसुं चरचंदा हे ॥ २७ ॥ मरुआ मचकुंदा फूलाहंदा, टोम्भर कंठ ठवंदा हे ॥ चंपा गुलाबां भरीया छाबां, परमल तिहां वासंदा हे ॥ कसावोई चंगी रचिये अंगी, फूलां बीच फाबंदा हे ॥ आभूषण धरियां तन ऊपरियां, कुंभल कान झिगंदा हे ॥ २८ ॥ सूरत सोहंदी मूरत हंदी, दीठां नैण ठरंदा हे ॥ तेरी बलि जाउं मोजां पाउं, वीनती तूंहि सुणंदा हे ॥ २९ ॥ क्या कत्थूं गल्लां हुकम अदल्लां, समकित मन उलसंदा हे ॥ सिद्धांदा वासा तिदा रहासा, तुझ सेवक विलसंदा हे ॥ घग्घर नीसांणी पास वखाणी

गुण जिनहर्ष कहंदा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीघग्घर नीसाणी संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरुदेव स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विलशे ऋद्धि समृद्धि मिली, शुभ योगे पुण्यदशा सफली ॥ जिन कुशल सूरि गुरु अतुलबली, मनवंछित आपै दादो रंग रली ॥१॥ मंगल लील समें विपुला, नवनवा महोछव राजेला॥ सुपसायैं गुरु चढती कला, सुकलीणी पूत्रवती महिला ॥ २ ॥ सवही दिन थायै सबला, सद वासकपूरतणा कुरला ॥ हय गय रथ पायक बहुला, किल्लोल करे मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वींझै चमर निसाण घुरै, नर बै दरबार खड़ा पुहरे ॥ जय२ करजोडी उचरै, सानिद्ध गुरु सब काज सरे ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पान सदा, दुख रोग दुकाल न होय कदा ॥ अविचल ऊलट अंग मुदा, गुरु कूरम दृष्टि प्रशान्न सदा ॥ ५ ॥ घमघम मादल नाद घुमें, बत्तीसे नाटक रङ्गरमे ॥ प्रगट्यो पुण्य प्रताप इमें, सबला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥ तनसुख मनसुख चीरतणें, पहिरें वेलाउल होयरनें ॥ ध्यावो कुशल गुरु एक मनें, जृंभक सुर मंदिर भरे धनें ॥ ७ ॥ ततखण घण खंच्यो आवे, करि स्यांमघटा मेह वरसावे ॥ तिसीयां तोय तुरत पावे, जलदाता त्रिजग सुजश गावे ॥ ८ ॥ लहिरयां जल कल्लोल करै, प्रवहण भवसायर मझ फरै ॥ बूडंता वाहण जे समरे, ते आपद निश्चेसुं उवरे ॥ ९ ॥ खड़खड़ खड़ग प्रहार वहै, सो दामनि जिम समसेल सहै ॥ कुशल२ गुरु नाम कहै, ते खेमकुशल रिण मझ लहै ॥ १० ॥ थुंभ सकल परचा पूरै, श्रीनाग पुरै संकट चूरै ॥ मंगलोर अधिके नूरै, देरावर भय टाले दूरै ॥११॥ वीरमपुर वाने उधरै, खंभायतपुर विक्रमनयरे ॥ जिणचंद सूर पाटे पवरे, जसु कीरति महीमंडल पसरे ॥ १२ ॥ पूरब पश्चिम दक्षण आगे, उत्तर गुरु दीपै शोभागे ॥ दहदिशि जन सेवा मागे,

श्रीखरतरगच्छनी महिमा जागे ॥१३॥ पुर पट्टण जनपद गामे, गाईजै कुशल नयर गामै ॥ पूजै जे नर हितकामे, ते चक्रवर्त्ति पदवी पामे ॥ १ ॥ श्रीजिनकुशल सूरि साखै, सेवकजननें सुखिया राखै ॥ समरयां गुरु दरशण दाखै, श्रीसाधुकीरति पाठक भाखैं ॥ १५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीजिनदत्त सूरि सद्गुरु उत्पत्ति स्तवन ॥

॥ वर लाछ विलाश सुवाश मिलै, गुरु नामें मनरी आश फलै ॥ दोषी दुस्मन दूर टलै, सहसा बहु संपति आश फलै ॥ १ ॥ जय२ जिनदत्त सूरिंद यती, श्रुतधार कृपालक शीलवती ॥ जसु नामे न रहै पाप रती, जेहनी महिमा जगमांहे अती ॥ २ ॥ शुभ मंगल लील विलाश सदा, दुख रोर दुकाल न होय कदा ॥ आराध्यां आवै सुगुरु मुदा, सुप्रशन हाजर होय जदा तदा ॥ ३ ॥ जिण जीती चोसठ जोगणियां, वश वावन खेतलवीर कियां ॥ जसु नामे न पड़े वीजलियां, भूत प्रेत न कर सके छलबलियां ॥ ४ ॥ जिण सिंध सवालख दिस साधी, पंच पीर नदी जिण पुल वांधी ॥ उपगार कीयां कीरत लाधी, वरसात लीयां गुरु सिद्ध वाधी ॥ ५ ॥ सुत मुगल कियो सरजीत बहु, पाये लागा नर नार सहू ॥ जिण साधी विद्या वेशलहू ॥ प्रतिबोधी श्रावक कीध सहू ॥ ६ ॥ वड़नगरे ब्राह्मण द्वेष धरो, मृत गाय लइ जिण चैत्य धरी ॥ गुरु मंत्रबलें जीवत उधरी, विप्रवेष सहू गुरु पाय परी ॥ ७ ॥ वज्रमय थंभो दोय खंड कियो, पोथी परगट परभाव थियो ॥ विद्या सोवनवरणे सझियो, वर नयर उजेणी सुजश लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुंवड़ वंसे जीवदया, मंत्री वाछग परसिद्ध थया ॥ वाहड़दे कूखे जनम भणूं, ते चवदे विद्या जाण घणूं ॥ ९ ॥ इग्यार बत्तीसै जनम भणूं, इग्यार इगताले दिक्ष भणुं ॥

थुगवर इग्यारै गुणहत्तरै, स्वर्गे बारेसै इग्यारै ॥ १० ॥ जिनचन्द्र सूरी पटोधरणं, परभाव उदेसर भयहरणं ॥ नवनिधि लछमी संपति करणं, वलि विकट संकट आरती हरणं ॥ ११ ॥ थुंभ सकल श्रीअजमेरे, गढमंभो वर बीकानेरे ॥ सुखदायक श्रीजेशल मेरे, दीपे गुरु गाजीखान डेरे ॥ १२ ॥ मुलतान नगर महिमा सागै, भावठ दालिद्र दूरे भागै ॥ डेरे असमालखानके सोभागे, गुरु पुर२मैं कीरति जागे ॥ १३ ॥ धन२ जे सद्गुरु ध्यान धरे, तेरनवन पूजा जेह करै ॥ गछ खरतरनी महिमा पसरै, कवि सूरि उदय जिनकीरति करै ॥ १४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सद्गुरु श्रीजिनकुशल सूरजी उत्पत्ती स्तवन ॥

रिसह जिनेसर सो जयो, मंगल केलि निवास ॥ वासुव वंद्रिय पायकमल, जग सहू पूरै आस ॥ १ ॥ ( चोपाई ) चंद कुलांवर पूनमचंद, वंदो श्रीजिनकुशल मुणिंद ॥ नाम मंत्र जसु महिम निवास, जो समरै तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंडल सवियाणो गाम, धण कण कंचन अति अभिराम ॥ जिहां वसै जिल्हागर मंत्र, जैतसिरी जसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे तीसे जम्म, सेतालैं सिरिसंजम रम्म ॥ पाटण सतहत्तरे जसु पाट, निव्यासिये तसु सुरगे वाट ॥ ४ ॥ भूमंडल सरगें पायाल, अचिराचिर युग इण कलिकाल ॥ प्रभु प्रताप नवि मानें सोय, मैं नवि नयणें दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहे धन धन्न सुवन्न, पुन्नहीण पामें बहु पुन्न ॥ असुखी पामे सुख शंतान, एक मनां करतां गुरु ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सवि टलै, सयल संति सुख संपति मिलै ॥ आधी व्याधी चिंता संताप, ते डंभि नवि मंडै व्याप ॥ ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां, गुरु समरण उत्कंठा जिहां ॥ सेवंता सुरतरुनी छांह, निश्चै दालिद्र मेटे बांहि ॥ ८ ॥ विसहर

विसनरैं विस नरनाह, जूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह ॥ प्रजु नामें ते न करै पीम, जाजै जावठ जवजय जीम ॥ ए ॥ रोग सोग सवि नासै दूर, अंधकार जिम ऊगै सूर ॥ मूरख फीटी पंमित थाय, प्रजु पसाय डुख डुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन२ जिनसासन ज-द्योत, जिहांअछै जवसायर पोत ॥ सो सदगुरु मैं जेट्यो आज, रलियरंग सब सीधा काज ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ आज घरअं-गण सुरतरु फलियो, चिंतामणि करकमलै मिलियो, उदयो पर-मानंद घरै ॥ १२ ॥ आज दीह मैं धन्न गिणियो, जुगपवरागम जो मैं थुणियो, चंद्रगछ महिमा निलो ए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथ्वी पति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिंता आणो कांइ मने ॥१४॥ वार२ एक चित्त जणीजे, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै, सरै काज आयास विन ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसै, मुलक वाहण पुरमें मन हरसै, अजिय जिणेसर पर जुवणें ॥ १६ ॥ कीयो कवित्त ए मंगल कारण, विघन हरण बहु पाप निवारण, कोइ मत संसो धरो मनें ॥ १७ ॥ जिम२ सेवे सुरनरराया, श्रीजिनकुशल मुनीसर पाया, जयसागर उवझाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु गुण अजिनंदै, ऋद्धि समृद्धे सो चिरनंदै, मनवंछित फल मुज हुवो ए ॥ १९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ आयो सहु श्रीसंघ आश धरे, गुरु मोन ग्रह्यां कहो केम सरे ॥ दरशन वहिलो सद गुरु दाखो, निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इय विखमी विरियां आयवणी, केहवी करिये तुज अरज घणी ॥ हिव अलगा छो तो वेगा आवो, हिव ढील घमीजर म करावो ॥ २ ॥ तूं सद गुरु खरतर गछ साचो, कोइय न जाणे तुजने काचो ॥ इण संकटमें आलश म करो, दादा डुसमननें दूर करो ॥ ३ ॥ कोइ चूक पमी सदगुरु हमसुं, तो ज्यूं कहसो तिण पर खमसुं ॥ हिवणा इह

थे मन ताणो, निश्चे पोतानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया सब श्रीसंघ अठा लगै, पाछा किम जावा इणे पगे ॥ इण पर करिये गुरु अरज इसी, हिव सगला मेलो करो खुसी ॥ ५ ॥ जिनकुशल सूरीसर जग चावो, अपणायत वेगा आवो ॥ अगला विरुद उजवालो, परघल निज केरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुण गाम गम्भीरे गायो, सुणतां सदगुरु वेगो आयो ॥ राजी हुय सगला रंगरली, जिनचंदनी आस्या सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सदगुरुजी थे सांभलो, श्रीजिनदत्त सूरीस हो ॥ सेवकने सांनिध करो, पूरो मनह जगीस हो ॥ १ ॥ दोलति दो हो दादाजी संपति दो ॥ आंकणी ॥ दोलत दो गुरु माहरा, थांहरा विरुद अनेक हो ॥ थां समरथां संकट टलै, एहीज दादाजी ताहरी टेक हो ॥ दो० २ ॥ जीती चोसठ जोगणी, वस कियां बावन वीर हो ॥ सिंधमांहे तें साधीया, पंचनदी पंच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥ पडिकमणामांहे बीजली, बलीर झबकाय हो ॥ थे मंत्री राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उच्छव करतां उच्चमें, मूंत मुगलरो पूत हो ॥ जाप करीनें जीवाडियो, संघ मांहे राख्यो दादे सूत हो ॥ दो० ५ ॥ वडनगररे ब्राह्मणां, देहरे धरी मृतगाय हो ॥ परप्रवेश विद्या बलै, पिशुन लगाया दादे पाय हो ॥ दो० ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दूरकीया तें सहू दुःख हो ॥ परवार पिण पोतें कीयो, सहुनें दियो दादे सुख हो ॥ दो० ७ ॥ अंबड हाथे अक्षरै, थे प्रगट्या ततखेव हो ॥ जुगप्रधान जग तूं जयो, आखै अंबिकादेव हो ॥ दो० ॥८ ॥ थांभो वज्र विदारनें, पोथी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवनअक्षरे, उज्जेणीमांहि लीध हो ॥ दो० ॥ ९ ॥ इम विरुद घणा छै ताहरा, कहतां नावै पार हो ॥ भागसंजोगे दादो भेटियो, अरूवडियां आधार हो ॥ दो० ॥

॥ १० ॥ हुं तूं सेवक ताहरो, थे आपो धन ऋद्ध हो ॥ कनककीरत सुपसाउलै, लाजउदय सुख सिद्ध हो ॥ दो० ११ ॥ इति पदं ॥
॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दरशण सदा देवो ॥ दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरयां आपे सुखशाता, दादो जगबंधव जगगुरु त्राता ॥ दा० ॥ १ ॥ दादो परचा जग सगले पूरै, दादो सेवकनां संकट चूरै, दादो दुरित हरै सहूनी दूरै ॥ दा० ॥ २ ॥ दादो अलगांथी जात्री आवै, दादो देखीने ते सुख पावै, म्हारा दादाजीनी जोम कोइ नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमांहे राजै, जिहां सुजशनगारा नित वाजै, दादो ढोगाखां सेहर गाजै, दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केसर सूकम घोली, हाथे लेइ सोवन क चोली, पूजो दादाजीनें मिलश टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरतियां आरति टालै, दादो सेवगजनने प्रतिपालै, दादो जिन सासन नित उजवालै ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत माहाराजा, दादो राजै खरतर गछ राजा, दादो समरयां सफल करै काजा ॥ दा० ७ ॥ दादो कुशलसूरिंद बहु गुणधारी, दादो परतिख सुरतरु अवतारी, जाउं दादाजीनी हूं वलिहारी ॥ दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनचंदसूरिंद पाटै, दादो गाजे गुणियन गहगाटै, जसु थांन सोहे जग थिरथाटै ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महिर निजर मुझ पर करियै, दादा आरति पीमा दुख हरियै, दादा जिम जग जयकमला वरियै ॥ दा० १० ॥ दादा सेवगनें सानिध करज्यो, दादा दुस्मणनें दूरे हरज्यो, जिनचंदना मनवंछित फलज्यो ॥ दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥ पुनः गाजै जिनकुशल गम्हालै, सेवकनां संकट टाले हो ॥ गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरै, सेवकनी चिंता चूरे हो ॥ गा० ॥ २ ॥ छतरीनितरी छवि गाजै, विचमें थिर थुंभ विराजै हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ फूलरे यात्री मिल

आवे, दादोजी दीठां सुख पावे हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ केशर घस भरिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली हो ॥ गा० ॥ ५ ॥ पूजो पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ६ ॥ दादोजी दुखियां सुख देवै, निरधनियां नित धन देवे हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ हय हाथी रथपति बहुला, गुरु नामे पामे कमला हो ॥ ॥ गा० ॥ ८ ॥ सकजा सुत सुंदर नारी, पामे परिकर सुखकारी हो ॥ गा० ॥ ए ॥ अलगांथी रोग गमावे, गुरु पूज्यां वंछित पावै हो ॥ गा० ॥ १० ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी, तिण वेला जलधर आणी हो ॥ गा० ॥ ११ ॥ ग्रह गोचर चोर जंजालै, पीड़ा हुवै आलेमाले हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ बाजै जग जशना बाजा, राजै खरतर गछ राजा हो ॥ गा० ॥ १३ ॥ जसु जैतसिरी वर माता, जिल्हा गरमंत्र विख्याता हो ॥ गा० ॥ १४ ॥ संवत सतेरेसे इकयासी, कातीपूनम परकासी हो ॥ गा० १५ ॥ सहु संघ सहित सुविलासै, अधिके हर हेत उल्लासे हो ॥ गा० ॥ १६ ॥ इम यात्रा करी आणंदे, जिनभक्ति जतीसर वंदे हो ॥ गा० ॥ १७ ॥ इति पदं ॥ पुनः सहाइ मेरे श्रीजि-नकुशल गुरू ॥ कुशल करण कलिमाहे प्रगटयो, खरतर गछ वरू ॥ स० ॥ बावनोचंदन मृगमद मेलो, पूजो प्रेम भरू ॥ स० १ ॥ चिंता चूरण विघ्न विडारण, दालिद दूरहरू ॥ स० २ ॥ दिन२ साहिब चढते वानें, ध्यावो ग्यानधरू ॥ स० ॥ बाजे जेहना जशना वाजा, ठावी ठामे जरू ॥ स० ॥ ३ ॥ संवत अढारसमें अरूतडे, मिगसरमाश थिरू ॥ स० ॥ संघ सहित श्रीसदगुरु भेटे, श्रीजिनहर्ष सरू ॥ स० ॥ ४ ॥ गाम गड़ाछै चरण नमंता, तूठो कल्पतरू ॥ स० ॥ पाठक श्रीविद्याहेम गणिनें, उदयरत्न करू ॥ स० ॥५॥ इति पदं ॥ पुनः आयो आयो जी, समरंता दादोजी

आयो ॥ संकट देख सेवककूं सदगुरु, देशउरतें ध्यायोजी ॥ स० ॥ १ ॥ दादा वरसे मेहनें रात अंधेरी, वाय पिण सबलो वायो ॥ पंचनदी हम वैठे बेरी, दरीयै चित्त डरायो जी ॥ स० ॥ २ ॥ दादा उच्चजणी पोहचावण आयो, खरतर संघ सवायो ॥ समयसुंदर कहे कुशल कुशलगुरु, परमानंद सुख पायो जी ॥ स० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग लहुरी ॥ जाया जक्तिसूं पूर रहो रे, छुरिजन सब छुर हरो रे ॥ जा० ॥ मेरे मनमें जक्ति वैरागी, चित्त परणित लगनसुं लागी ॥ मेरी जाग्यदशा अब जागी, जीया हो जा० ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आवो, गुरुचरणे चोक पूरावो ॥ वलि अक्षत थाल वधावो, जीहा हो जा० ॥ २ ॥ गुरु महिमावंत सवाई, गुरुनाम सदा सुखदाई ॥ गुरु सेव्यां पाप पुलाई, जीया हो जा० ॥ ३ ॥ घस केसर जरके कचोली, मांहे मृगमद कुंकुम घोली ॥ गुरु पूज रचो जर जोली, जीया हो जा० ॥ ४ ॥ श्री जिनहर्ष सूरीसरराजा, वाजै जग जशना वाजा ॥ सत्यरत्न करै सुज काजा, जीया हो जा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राग केरवो ॥ ॥ कुशल सूरिंद गुरु पूजो जवि हितसुं, कु० ॥ कशर चंदन कपूर अरगजा, जाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ कु० १ ॥ मोगरा लाल गुलाब मालती, मन सुध माल करै जवि रुचसुं ॥ कु० २ ॥ अशरण सरण परम गुरु सेवो, धरम ध्यान धरो आतम रुचिसुं ॥ कु० ३ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगतगुरु, आसा पूरै गुरु घणुं दत्तसुं ॥ कु० ४ ॥ ध्यान सुधारै ज्ञान वधारै, रूप रंग देवै चित हित मतिसुं ॥ कु० ॥ ५ ॥ कुशल सुरिंद गुरु सानिधकारी, परतिख परचा पूरै सतसुं ॥ कु० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहर्ष सदा सुविलाशी, सत्यरत्न सुख एही गतमुं ॥ कु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ राग देवगंधार ॥ आज करो रे उछाह, श्रीजिनकुशल

रींद आगै ॥ आ० ॥ आ आछी वेला नें उ आछो दाव, इण आछी वेला क्यूं करो लाज ॥ आ० ॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो नवरंग, हिलमिल गावो साजन संग ॥ आ० ॥ धूप दीप करो नै व्य सार, फुलवारीनो नहीं जिहां पार ॥ आ० ॥ २ ॥ अक्षत श्रीफल ढोवै जेह, पुत्र कलत्र पामे संपदा तेह ॥ आ० ॥ ३ ॥ सुर नर नारी ऊजा करजोरू, कोण करै म्हारा दादाजोनी होरू आ० ॥ ४ श्रीखरतर गछपति सिरदार, राजा राणा सेवै इकतार ॥ आ० ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज, कुशलसूरिंद गुरु गरीबनिवाज ॥ आ० ६ ॥ श्रीजिनहर्ष करै उछरंग, सत्यरत्न मन ध्यान उमंग ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ राग बंगालोघाटो ॥ मैं निरख्या गुरु माहाराज, ठतियां हर्षभरी ॥ मैं० ॥ अमल अनंत गुण आगरु रे, समतारसनो धाम ॥ परम परम परमातमा रे, वंछित दायक स्वाम ॥ ठ० १ ॥ करुणानिध गुरु दोलती रे, सेवक जन प्रतिपाल ॥ भविजन भक्ते भावसुं रे, ध्यावै भर२ थाल ॥ ठ०२ ॥ केशर चंदन कुमकुमा रे, भरिय कचोली हाथ ॥ पदमण आवै मलपती रे, पूजै सहियर साथ ॥ ठ० ३ ॥ कुसल सूरीसर साहिबा रे, श्रीजिन चंद सूरी पाट ॥ बलिहारी जिनकुशलनी रे, गाजै घणुं गहगाट ॥ ठ० ४ ॥ अष्टसिद्ध सानिध करे रे, सुख संपूरण सार ॥ श्रीजिन हर्ष सूरीसरू रे, सत्यरत्न सुखकार ॥ ठ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग प्रभाती ॥ चरणकी चरणकी चरणकी, वारी जाउं गुरुराय चरणकी ॥ वा० ॥ श्रीजिनदत्त सूरीसर सद्गुरु, सफल घमी सेवा चरणकी ॥ वा० १ ॥ प्रथम मंगल गुरुरायकी सेवा, अशुभ करम सब हरणकी ॥ वा० २ ॥ दालिद्रभंजन अरि सब गंजण ॥ पग२ सानिध करणकी ॥ वा० ३ ॥ मोह नहीं परवाह अनेरी, सरण महो इन चरणकी ॥ वा० ४ ॥ श्रीजिनहर्ष तुम चरणको दा

शा, आशा पूरो सुख करणकी ॥ वा० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ अब मोहि दरसण दीजै, कुशलगुरु अ० ॥ एसी भात करो मेरे सदगुरु, ज्यूं मन मूढ पतीजै ॥ अ० १ ॥ जलदातार विरुद अमृतरस, श्रवण अंजलभर पीजै ॥ सुरतरु शम दरिसण विन देख्यां, कहो नयण किम रीझै ॥ कु० ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजै ॥ परमभगत जिनराज तुमारो, अपणो कर जाणीजै ॥ कु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः कुशलगुरु कुशल करो भरपूर, सेवकजन मन वंछित पूरण, समरथां होत हजूर ॥ कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेमरस पूरण, अशुभ हरण भये दूर ॥ संघ उदोकर सदगुरु मेरा, वीनवै श्री जिनचंद सूर ॥ कु० ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल लूवरकी ॥ सदूगुरु पूजण जावस्यां, म्हेतो कुशल सूरिंद गुण गावस्यां हे माय ॥ स० ॥ श्रीफल भेट चढावस्यां, म्हेतो चरणारी पूज रचावस्यां हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मारूदेशमें सोभता, नगरवीकाणे राजे हे माय ॥ गाम गमाले दीपता, ज्यांरी महियल महिमा गाजे हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समरथां संकट चूरता, कुशल करण अवतारी हे माय ॥ सुखदायक श्रीसंघनें, खरतर गछ अधिकारी हे माय ॥ सा० ३ ॥ दूर देशांतरथी घणा, हिलमिल यात्री आवे हे माय ॥ लुल२ शीस नमावता, संत सुजश मिल गावे हे माय ॥ स० ४ ॥ सझ सिणगार मनोहरू, ठमर पाय ठमकावे हे माय ॥ तन मन प्राण लोभावती, गोरी मंगल गावे हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥ विछड्या साजन मेलवे, अनमी पाय नमावे हे माय ॥ मनरा मनोरथ पूरवै, परघल लखमी ल्यावे हे माय ॥ स० ६ ॥ विषमी वेला वाटमें, समरथां सानिध आवे हे माय ॥ भूखां भोजन मेलवै, तिसियां नीर पिलावे हे माय ॥ स० ७ ॥ यात्री आवै नित नवा,

थान आगल थिर थाट हे माय ॥ सीरणीयां नित सामठी, गावै गुण गहगाट हे माय ॥ स० ॥ ८ ॥ कुशलसूरिंद गुरु आगलै, जवि निज जावना जावे हे माय ॥ चंद फतें मुनि नित नमें, पर मानंद सुख पावे हे माय ॥ स० ॥ ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ श्रीसद्गुरुजीसैं वीनती रे, आयो सरण तुमारी ॥ दादासाहिब अ रज सुणीज्यो म्हारी ॥ दीनदयाल विरुद सुण आयो, तन मन सु- धकर ध्यान लगायो ॥ महिर निजर अब कीजीये जी, चरणक मल बलिहारी ॥ दादा० ॥ १ ॥ आधि व्याधि संकट छुख मेटो, सोमवार पूनम दिन जेटो ॥ अन धन लक्ष्मी चोगुणी रे, वधती संपद सारी ॥ दादो० ॥ २ ॥ नर नारी अपछर मिल आवै, अतर गुलाब केवमो व्यावे ॥ पूजै मृगमद पुष्पसे रे, खुल रही केसर क्यारी ॥ दादा० ॥ ३ ॥ कलयुगमें परचा तूं पूरे, चिंता दोखी छु स्मन चूरे ॥ धनश सदगुरु जगजयो रे, सहस किरण अवतारी ॥ दा० ॥ ४ ॥ जगणीसे अठावन वरसै, कातीपूनम दिन जलसै ॥ गछपति कीर्त्ति सूरीसरू रे, वंदै वार हजारी ॥ दा० ॥ ५ ॥ अरस परस दरशण अब दीजे, अपणो दास मुझै समझीजै ॥ जगमें सु रतरु सारखो रे, कीरति बारही आरी ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रगटपणें व रदाता देख्यो, आज सफल दिन में कर लेख्यो ॥ श्रीजिनकुशल सूरिंद धणी रे, कहै रामऋद्धिसारी ॥ दा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ चाल जरतरीकी ॥ सदगुरु दीनदयाल, गछपति दिनकर तुम धणी ॥ सेवकजन प्रतिपाल, छुखतमहारण दिनम णी ॥ १ ॥ गढ सवियाणे जी देश, गजेन्द्र कुल उदयाचले ॥ जिल्हासाह पितेश, जैततिरी अंबर जलै ॥ २ ॥ गछपति चंदमु णिंद, पाट तिलक किरणावली ॥ खरतर कमल आणंद, तेज प्र काशन मनरली ॥ ३ ॥ पुर पतन सब देश, झिगमिग ज्योती जी

झिगमिगे, पूनमनें सोमवार ॥ नर नारी गुरु उलगे ॥ ४ ॥ अरचै अतर फूलेल, परिमल फूली जी मालती ॥ महके चंपक वेल, सुंदर आवत मलपति ॥ ५ ॥ शुभ्र थिर थुंभ वीकाण, बालूचर महिमा घणी ॥ कीरतबाग प्रधान, उखभंजन चिंतामणी ॥ ६ ॥ पूरो वंछित आश, छांया तुम सुनिझरतणी ॥ दाता सुख कैलाश, चरण शरण किंकर भणी ॥ ७ ॥ पूजै पद गोविंद, चंद्रशिखर जय राशमें ॥ कोटिक गण कुलचंद, कुशलसूरिंद परकाशमें ॥ ॥ ८ ॥ उगणीसें अरुताल, मिगसर वदि दशमी करी ॥ दरशण अतहि विशाल, कुशलनिधान हरख धरी ॥ ए ॥ गुरुगुण शरिता नीर, मीन मगन हुलाशमें ॥ लखमी लील समीर, ऋद्धिसार जस वासमें ॥ १० ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ राग, सो जोगी गुरु मेरा ॥ यह चाल ॥ सुगुरु मेरी वेकिया पार उतारो, तूं वण अब मांझी हमारो ॥ सु० ॥ सरिता भाद्रव नीर जलधि ज्युं, यो संसार अपारो ॥ ता तट पारंपार अमरपद, ताको वण दातारो ॥ सु० ॥ १ ॥ राग रंग इक जीरण नौका, तिरस्ही भर मझ धारो ॥ में वेठो परमारथ खातर, मोह मगरनें उगारो ॥ सु० ॥ २ ॥ भक्त उधारण श्रीसदगुरुजी, जलदी कष्ट निवारो ॥ जाण बाल गणपति करुणानिध, याविपतितसें वारो ॥ सु० ॥ ३ ॥ उल्कापात गगन ज्यूं विषयरश, दीशै अतहि करारो ॥ विरह व्यथादिक निशि अंधियारो, कोण करै निशतारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु रटै कोइ ईसा, अल्ला उमया प्यारो ॥ में ध्याउं जिनदेव कुशलगुरु, अरिगण गंजणहारो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुण अरजी आये गछ तमहर, तुरतही विघन विभारो ॥ रामबाग पुर गंज अजीमें, कुशलनिधान जुहारो ॥ सु० ६ ॥ केइयक गुरुसे लखमी पावत, हुकम धरै वसुधारो ॥ में इक सेवा चरणकमलकी, मांगु

गुरु दातारो ॥ सु० ७ ॥ संवत नगणीसे अमृतालीश, मेरुत्रयोदशी सारो ॥ नयणा सफल किये गुरु दरशण, हे ऋद्धसार तिहारो ॥ सु० ८ ॥ इति पदं ॥ राग घाटो ॥ मेरो मन वस कर लीनो ॥ ए चाल ॥ देख्या मैं दरश तिहारा, द० ॥ श्रीसद गुरु महाराज ॥ दे० ॥ सफली फली मेरी आशा, पाया सुरतरु आज ॥ दे० १ ॥ तुमहो चिंतामणी जैसा, दायक सब सुख साज ॥ दे० ॥ गंगा अंगणमें प्रगटी, सुझ मन निरमल काज ॥ दे० २ ॥ गुण ऋद्धि संपत काजै, कामधेनु गुरुराज ॥ दे० ॥ सब सिद्धि लीला प्रगटी, दुख दोहग गये आज ॥ दे० ३ ॥ गुरु तुह्म परउपगारी रे, प० ॥ सुरपद शिवपद पाज ॥ दे० ॥ सुज थांन पुर२ सोहे, सुलक वीकाणे राज ॥ दे० ४ ॥ वर गछ खरतर राजा रे, ख० ॥ धर्मशील रहे गाज ॥ दे० ॥ तुम नाम रामऋद्ध सारी, रा० ॥ जपे पाठक सिरताज ॥ दे० ५ ॥ इति पदं ॥ ताल ठुमरी ॥ सदा सहाई कुशल सूरिंद गुरु, द्यो दोलत गुरु रायजी ॥ सदा० ॥ खाई न खूटै खरची न तुटै, दिन२ वधे सवायजी ॥ सदा० १ ॥ सकजा सुत अरु सुंदर नारी, सुज परिकर सुखदाय जी ॥ सदा० ॥ मित्र समागम सुजश वधारण, नितप्रति हरख उछाह जी ॥ स० २ ॥ राजा परजा पाय नमें सहु, गुरु समरण सुखसायजी ॥ स० ॥ दोखी दुसमन नृप भय पड़ियां, सदगुरु करय सहायजी ॥ स० ३ ॥ विखमी विरियां संकट पड़ियां, समरयां आवे धायजी ॥ स० ॥ भूखां भोजन तिसियां पाणी; निरधनियां धन दायजी ॥ स० ४ ॥ संघ सकलनें द्यो सुखसाता, जिम कीरत जग थाय जी ॥ स० ॥ थानक बिरना पगगल भोजन, पग२ कुशल सहाय जी ॥ स० ५ ॥ अभय मदा सुखदाई सदगुरु, नवनिधि वंछित आयजी ॥ स० ॥ सुमनि सवाई निन घर सपदं

दान विशाल लहायजी ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ जिनकुश लसूरिंद गुरु सदा नमो, जी० ॥ सुख संपति रिद्धि सिद्धि सब हाजर, देश देशांतर कांइ भमो ॥ जी० १ ॥ वाट घाट घर विखमी विरियां, विघन बुराई दूर गमो ॥ जि० २ ॥ अहनिशि नाम मंत्र उर धारो, सुगुरु चरण चित रमो रमो ॥ जि० ३ ॥ इक मन ध्यावो वंछित पावो, विपत व्यथा सब दमोदमो ॥ जि० ४ ॥ अक्षय महा सुख संपति पामो, सुथिर थानक थित जमोजमो ॥ जि० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ छत्रपती थारे पाय नमें जी, सुरनर सारे सेव ॥ ज्योत थारी जग जागती जी, कुनि थांमे परतिख देव ॥ १ ॥ हुंतो मोहि रह्यो जी, म्हारा राज दादेरे दरबार ॥ केसर अंबर केवड़ो जी कस्तूरी कपूर ॥ चंपो चंदन राय चंपेली, भक्ति करूं भरपूर ॥ हुं० २ ॥ पांगुलियांनें पांव समावे, आंधलियांने आंख ॥ रूपहीणांने रूप देवे दादा, पांखहीणाने पांख ॥ हुं० ३ ॥ चंद पाटोधर साहिबा जी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥ आठ पहर थांने ओलगे जी, रंग वणे राजिंद ॥ हुं० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी, स० ॥ पहली काम किये बहुतेरे, अपणा विरुद विचारी ॥ पल२ चूक परी सदगुरुजी, में मुतलबका गरजी ॥ स० १ ॥ ध्यान तुमारो कबहुं न ध्यायो, पूजा करी नहीं तेरी ॥ तोही सेवक वंछित पूरया, आही थारी मरजी ॥ स० २ ॥ निश्चेसेती तुमगुण गावे, तुरत कटत दुख वेरी ॥ भक्त उधार कहावत जगमें, ताहे करत हुं अरजी ॥ स० ३ ॥ और देवकूं में नहीं ध्याऊं, शरण ग्रही में तेरी, दूरथकी में भेटण आयो, विपतदशा सब तरजी ॥ स० ४ ॥ कुशल गुरुका में हुं सेवक, लोक जाणे सबकोई ॥ क्षमारत्नकी वीनती सुणके, दरशण दियो सदगुरुजी ॥ स० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ होरीकी चाल ॥ सद्गुरुके चरण चित लायर, जिनदत्त सुरिंद गुरु करो रे पसाय ॥ सद० ॥ बावन वीर अने वलि चौसठ, जोगण वस कीनी हर्ष लाय ॥ विद्या पुस्तक सोवनअक्षर, थांभो वज्र विहार पाय ॥ सद० १ ॥ मुलतानमें पंच पीर महाबल, पंचनदी साधी चित्त लाय ॥ इत्यादिक बहु परचा पूरक, गुरु समरथा सब दुख जाय ॥स०२॥ गुरुके नाममें अरुसिद्ध नवनिद्ध, गुरुगुण गावो सबही धाय ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरि सुगुरु पर, महिर करो गुरु सुखदाय ॥ सद० ॥ ३ ॥ इति पद ॥ पुनः॥ होरी खेलो भविक सद्गुरुके संग, नित आनंद उच्छव होत रंग ॥ हो० ॥ मस्त महीना फागुण आया, श्रीसंघसे हिलमिलके संग ॥ हो० ॥ कोयल सबद करत स्वर झीणा, अली कलीके संग जंग ॥ हो० ॥ १ ॥ रुत वसंत आनंद पिया संग, गोरी गावत वजत चंग ॥ हो० ॥ एसें साज समाज भक्तिसें, गुण गुलाल लिये गुरुके अभंग ॥ हो० ॥ २ ॥ निरमल मन मकरंद सुधाकर, अतर पुष्पसें चरचो अंग ॥ हो० ॥ ध्यान पिचकारी अजब सुधारी, छिरको महकत सुरभिगंग ॥ हो० ॥ ३ ॥ करत चैन दरसणसे नैण, रामऋद्धीसार के चित उमंग ॥ हो० ४ इति पदं ॥ पुनः ॥नेमश्यामसें कहियो मोरी॥ इस चालमें ॥ गुरु पूज रचो रे सुज्ञानी, भली हिये भक्ति भराणी ॥ गु० ॥ श्रीजिनकुसल सूरीसर साहिब, खरतरगछरा जानी ॥ देशदेशमें थानक गुरुका, सोभा जग पहिचानी, सदा रवि तेज समानी ॥ गु० ॥ १ ॥ केशर चंदन मृगमद भेली, चरणांरी पूज रचानी ॥ धूप दीप वलि आगल ढोवी, बहु विध पुष्प चढानी, भला फल भेट धरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ वाट घाटमें परचा पूरक, हाजर होत सहानी ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरिके साहिब, वंछत

काज करानी, सदा गुरु मंदिर लखानी ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ होरी ॥ सदगुरुजीके द्वार मची होरी ॥ स० ॥ आये श्रीसंघ सब हिलमिलके, संग लिये बालाजोरी ॥ स० ॥ दीनद यालकेसनमुख गावै, पठत मधुर धुन गुण गोरी ॥ स० ॥ १ ॥ केशर घोली ज्ञरी रे कचोली, पूजत हे वारीज्ञोरी ॥ स० ॥ रंग गुलाल मच्यो सदगुरुके, अबीर उडावत ज्ञरजोरी ॥ स० ॥ २ ॥ धनश ज्ञाग्य हमारे प्रगटे, सदगुरुनें पकडी कोरी ॥ स० ॥ अती मनरं जण डुसमन गंजन, बलिहारी चरणा तोरी ॥ स० ॥ ३ ॥ कामि तदाता जगके त्राता, अरजी हय सुनले मोरी ॥ स० ॥ कहत रामरुद्धिसार सुपाठक, वंदत हे डुय करजोरी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ राग प्रज्ञाती ॥ केसे२ अवसरमें गुरु रखी लाज हमारी ॥ के० ॥ मोकूं सबल ज्ञरोसा तेरा, चंद सूर पटधारी ॥ के० १ ॥ तुम विन अवर न कोई मेरे, या जगमें हितकारी ॥ मेरा जीवन हाथ तुमारे, देखो आप विचारी ॥ के० २ ॥ आगे तो केई वेर हमारो, चिंता दूर निवारो ॥ अबकी विरिया ज्ञूल मत जावो, सदगुरु परउपगारी ॥ के० ३ ॥ अबके आप लाज गुजरकी, रखिये गुरु जशधारी ॥ मेरे कुशल सूरिंद गुरु तेरा, बडा ज्ञरोसा ज्ञारी ॥ के० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीजिनकुशल सूरीसर साहिब, तुम हो परउपगारी ॥ श्री० ॥ खरतर गछ नायक गुणलायक, जिनचंद सूरि पटधारी ॥ श्री० १ ॥ संत उधारण सुजश वधारण, ज्ञीडज्ञंजण अति ज्ञारी ॥ नाम तुमारो कुशल करण जग, वारीजाउं वार हजारी ॥ श्री० २ ॥ जगवछल तुमही हो जगतगुरु, करुणानिध करतारी ॥ कहे जिन चंद मेरे हो सदगुरु, हम हें सरण तिहारी ॥ श्री० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीगणधर गुरु कुशल सूरिंदके, चरणकमल पर

वारी ॥ श्री० ॥ केशर चंदन अक्षत कुंकुम, जलझर कंचनझारी ॥ देवके आगे मंगलदीपक, फूल धरूं फूलवारी ॥ श्री० १ ॥ एशी जाति करूं विध पूजा, आणके चित इकतारी ॥ राज कहत मेरे परमगुरूकी, वेर२ वलिहारी ॥ श्री० २॥ इति पदं ॥ राग रेखता ॥ कुशलगुरु देखके दरशण, मेरा दिल होत है परशन ॥ जगतमें या झमो कोई, न देख्या नयण जर जोई ॥ १ ॥ विरुद जूमंमले गाजे, फरशतां पाप सब जाजे ॥ पूजतां संपदा पावै, अचिंती लछ घर आवै ॥ २ ॥ इके मुख गुण कहूं केता, मुझे हिये ग्यान नही एता ॥ लालचंदकी अरज सुण लीजे, चरणकी सेव मोहि दीजे ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग कहरवो ॥ कुशलगुरु दरशण दीजे हो ॥ कु० ॥ खरतर गछपति कुशल सुरिंद गुरु, मुझ पर महिर धरीजे हो ॥ कु० १ ॥ पतित उधारण विरुद तुह्मारो, इतनी अरज सुणीजे हो ॥ कु० २ ॥ आधि व्याधी अरु दोखी दुसमन, ए सब दूर हरीजै हो ॥ कु० ३ ॥ खेमरतन सेवगकूं निशदिन, सदगुरु सानिध कीजै हो ॥ कु० ४ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ पूजो जजो रे जाई, गुरु महिमा ज्योत सवाई ॥ पू० ॥ १ ॥ मृगमद केशर चंदन अरचो, सुंदर पुष्प चढाई ॥ पू० ॥ २ ॥ जविक जीव मिल गुरुगुण गावै, वाके सदगुरु होत सहाई ॥ ३ ॥ श्रीजिनसौजाग्य सूरि सुगुरु मेरे, निशदिन हर्ष वधाई ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हूंतो अरज करूं करजोमने जी, म्हारी अरज सुणो गुरुराय ॥ सदगुरु ॥ विरुद घणा छै राजरा जी कांई, सूरि सकल सिरताज ॥ स० ॥ सुनिजर जोयजो साहिबा ॥ १ ॥ थांरे रावल राणा राजवी जी, थारा पूनम पूजे पाय ॥ सु० ॥ केशर अगर नें कुमकुमा जी, कांई मृगमद रही महकाय ॥ स० सु० २ ॥ थारै घुमटां रे आगल

घूमरा जी, कांइ ढूलत चमर गजढाल ॥ स० ॥ कारण सेवे काम नी जी, काई निरख करे जी निहाल ॥ स० सु० ३ ॥ थांरी गावी गोंमे थापना जी, काई उदयापूर आबेर ॥ स० महिमा जली गुरु मेरूते जी, कांइ सालूरूवाली सांगानेर ॥ स० सु० ४॥ थांरी ज्योति घणी गुरु झिगमिगे जी, कांइ वधती गढ वीकाण॥ स० ॥ आसा पूरण आवजो जी, थेलो देरावरा दीवाण ॥ स० ५ ॥ म्हारी वीनतम्ही जलै मानज्यो जी, कांई दादाजी दीनदयाल ॥ स० ॥ कुशल सदा कविराजने जी, कांइ पाटोधर प्रतिपाल ॥ स० सु० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सांगानेर विराजे, गुरु परतिख तिहां राजे रे ॥ म्हारा सदगुरुजीनी बलिहारी ॥ मनवंछित पूरो म्हारा, म्हेतो चरण पखालां थारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ सोवन जरिय कचोलो, मांहे वलि मृगमद घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजूं सदगुरु पाया, पूज्यां सब पाप पुलाया रे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पूनमनें सोमवारा, थांरे जात्री आवै अपारा रे ॥ म्हा० । सुध मन पूजा कीजै, दुख दोहग दूर हरीजे रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलयुगमां हे तारी, कीरत चिहुं दिशिमांहे सारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह सम अवर न कोई, दीठो में परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूरूवाली सांगानेरे, जिहां राज करै नितमेव रे ॥ म्हा० ॥ श्रीसंघ मिल तिहां आवे, जिहां लूखियां गोठ रचावे रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ग्यान सार गुरुराजा, ज्यांरा वाजै सदाइना वाजा रे ॥ म्हा० ॥ क्षमानंदन गुण गावै, करजोरुी शीस नमावै रे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

## ॥ अथ दादाजीको लावणी संग्रह ॥

सदगुरुजी म्हारा, दरशण दीज्यो जी गछपति साहिबा ॥ सद ॥ स० ॥ कुशल सूरि वंछितके दाता, देवो बुद्धि विख्याता ॥ स० ॥ १ ॥ गुरु महर करीज्यो मुझपर, ज्युं भिंजनकुं साता हो ॥ स० ॥ १ ॥

खरतर राजचंद पटधारी, सेवकजन आधार ॥ विषमवाटमें सं कट काटै, संघ सकल सुखकार हो ॥ स० ॥ २ ॥ जगमांहे परचा अधिकाई, जाणे सब संसार ॥ जरदरियांमे ज्याज उगारी, जिन गुरुकी बलिहार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणांबुज दरशणसेती, पापतिमर हट जाय ॥ गुरु परमानन्द सुगुण शोजागी, गुरुगुण केम कहाय हो ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनेणी नेउर रणकाती, लिये अली बहु लार ॥ नृत्य जक्ति गुरु अग्र विचक्षण, मृडु समीर ऊणकार हो ॥ स० ॥ ५ ॥ मदमस्ती हस्ती वर राजत, श्रीसदगुरु दरबार ॥ इंद नारिंद नमे पदपंकज, हरखित चित्त उदार हो ॥ स० ॥ ॥ ६ ॥ रूद्ध सिद्धके आगर सदगुरु, जो ध्यावे सो पावे ॥ जात्री आवै जात्र करणकूं, केशर रंग मचावै हो ॥ स० ॥ ७ ॥ पेम पीन अर्चन सदगुरुको, पूनम पुन सोमवार ॥ वाद्यनि नाद तूर पुन ऊ च्छर, करै सुविध सुविचार हो ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अग्नि वर संवत सुखकर, नंद चंद शशि वार ॥ स्तैष माश प्रतिपत् दिन जव्या, शुक्ल पक्ष शुज वार हो ॥ स० ॥ ए ॥ सुरगिरमें नंदनवन सोहै, तारकमें दिनकार ॥ शरदचंद जिम हंस सूरीसर, खरतर इंद्र उ दार हो स० ॥ १० ॥ सद्गुरु धर्मशील परजावै, कुशल होत नित साय ॥ ऋद्धिसारपें महिर करीनें, अविचल लील बताय हो ॥ स० ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ पुनः ॥ मोरी सखी सहेल्यां आज चालोनी गुरु वंदवा ॥ मो० ॥ श्रीजिनचंद पाट अधिकारी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥ परचा जगमें निरमलासरे, दीपत पूनमचंद हे ॥ मो० ॥ १ ॥ खरतरगछना राजवीसरे, सेवकजन प्रतिपाल ॥ डुष्ट कष्ट जय दूर करीनें, देवो सुख विशाल हे ॥ मो० ॥ २ ॥ पूनमश जक्ति धरीनें, आवै संघ अपार ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, पूजै विविध प्रकार हे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सुंदर सदगुरु आगले

सरे, सऊ शोले सिणगार ॥ नाटक करती बहु गुणवंती, पग नेउर ऊणकार हे ॥ मो० ॥ ४ ॥ दूर देशथी संघ चतुर्विध, आवे चित्त उलशाय ॥ श्रीसदगुरुना दरशणसेती, आनंद अंग न माय हे ॥ मो० ॥ ५ ॥ रसना एके किम कहवाये, गुरुगुण अधिक अपार ॥ बलिहारी गुरुनामनीसरे, वारीजाउं वार हजार हे ॥ मो० ॥ ६ ॥ संवत उगण वत्तीसे कार्त्तिक, पूनम दिन सुखकार ॥ सदगुरु गाम गम्भालामांहे, जात्र करी जयकार हे ॥ मो० ॥ ७ ॥ खरतरगछ सुखकर सोन्नागी, कीरत जग विस्तार ॥ गुण आगर दीपत्त शशि अन्निनव, हंससूरि गणधार हे ॥ मो० ॥ ८ ॥ धर्मशील चरणांबुज सेवक, कुशल सदा सुखकार ॥ ऋद्धसार गुरु गुणगण ऊपर, नित प्रति हुं बलिहार हे ॥ मो० ॥ ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ कामित कामगवी, सुगुरु मेरो कामित कामगवी ॥ मनसुध साह अकबर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥ सु० ॥ १ ॥ सकल निशाकर मंम्हल सम सूरी, दीपत वदन छवी ॥ सु० ॥ २ ॥ महिमंम्हल मांहे महिमा जाकी, दिनप्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जिनमाणिक्य सूरी पाट उदयगिरि, श्रीजिनचंद रवी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पेखतही हरखित न्नयो मन मेरो, रत्ननिधान कवी ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल पणिहारीकी ॥ श्रीसौन्नाग्य सूरीसरू, गुरु गछपति हो, खरतर गछ सुखकार ॥ साहिबजी ॥ कोठारी कुल दीपता, गुरु गछपति हो, तात करमचंद सार ॥ सा० ॥ १ ॥ करुणादेवी कूखमें, गु० गुणनिधि लियो अवतार ॥ सा० ॥ संवत अठारे बासठे, गु० जन्म समय वर धार ॥ सा० ॥ २ ॥ अगारेसे सीतोत्तरे, गु० पंच महाव्रत जाण ॥ सा० ॥ वरस अगारे वाणमें, गु० पद अन्नाकर न्नाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ क्षांत्यादिक गुण सोन्नता, गु० करता जग उपगार ॥ सा० ॥ परचा जगमें नवनवा, गु० क-

हता नावै पार ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष पटोधरू, गु० दीपता गुणमणी खाण ॥ सा० ॥ उगणीसे सतरे समे, गु० पायो देववि मान ॥ सा० ॥ ५ ॥ वेद वन्हि निधि ऋतुपती, गु० माघमाश सुखदाय ॥ सा० ॥ श्वेत पक्ष तूर्या तिथि, गु० प्रेम घणें हरखाय ॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहंस सूरीसरू, गु० वंदे वारंवार ॥ सा० ॥ कुशल कला नित नेहसें, गु० प्रणमें इम ऋद्धसार ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति सौभाग्यसूरी स्तवनं ॥

॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥

वीरजी दिये छे देशना रे, त्रिभुवन जन हितकारज ॥ परखद बारने आगले रे, जगजीवन हित काज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रभु मुख पद्म मनोहरू रे, जिहां वाणी मकरंद ॥ भव्य मधु-र तो भावथी रे, पान करै आनंद ॥ वी० ॥ २ ॥ अज रपणुं जग संपजे रे, अमृत ध्यान पसाय ॥ प्रभु वचनामृत पानथी रे, अजर अमर पद थाय ॥ वी० ३ ॥ मधुरपणें मनमोहनी रे, अनुपम वाणि उदार ॥ सांभले भव्य लहे सही रे, जिन पर भाव विचार ॥ वी० ४ ॥ जिहां षट् द्रव्य विचारणा रे, नय निक्षेप अभंग ॥ चोविह धर्मपरूपणा रे, सतभंगी अति चंग ॥ वी० ५ ॥ शासननायक जिनवरू रे, अनुपम अमृतधार ॥ जलधरनी पर वरसता रे, भवि चातिक हितकार ॥ वी० ६ ॥ श्रीजिनलाभ पसायथी रे, जिन आतम हित जाण ॥ वाचक अमृतधर्मनो रे, शीश भणें कल्याण ॥ वी० ७ ॥ इति देशना ॥ पुनः गुणनिधि श्रीजिनचंद मुणिंदा, मुख सोहे पूनमचंदा ॥ मोह्या सब सुरनर वृंदा, सुगुरु म्हारा देशना द्यिव दीजै ॥ थांरी देशना सुण मन रीझै ॥ सु० ॥ १ ॥ दिनकर परकाश सवायो, भूमंडल ऊपर आयो ॥ कमलादि सकल मन भायो, सु० ॥ २ ॥ वेलाचल देव-

गंधार, वलि भैरव राग मझार ॥ गायन गावै सुखकार, सु० ॥३॥ पंच सबद गहिर ध्वनि गाजे, जिनवर घर झालर बाजै ॥ सहु सज्ज थया धर्म काजै, सु० ॥ ४ ॥ हिव वहिला पाट पधारो, श्रीसंघना कारज सारो ॥ मधुरे स्वर वचन उच्चारो, सु० ॥ ५ ॥ सुण विनंती वचनविशेष, गुरु आपे धर्म उपदेश ॥ टालो भव कोड़ कलेश, सु० ॥ ६ ॥ सदगुरुनी मीठी वाणी, उपदेश सुणो भविप्राणी ॥ सुणतां मन अतहि सुहाणी, सु० ॥ ७ ॥ गुरु प्रतपो ज्युं शशि सूर, दिन२प्रति वधते नूर ॥ हरो संघ सकल दुख दूर, सु० ८ ॥ गोरी मिल मंगल गावै, भर मोतियां थाल वधावै॥ लावण्यकमल सुख पावै, सु० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वधावो ॥

मृगापूत्र गोखे रतन जड़ाव हो ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनचंद सूरीसरू, सुगुण म्हारा श्रीखरतर गछराय हो ॥ श्रीजिनलाभ पाटोधरू, सुगुरु म्हारा दिन२ सोभ सवाय हो ॥ म्हारा सहिज सोभागी, म्हारा शुभ गुण रागी, म्हारा हितधरू ॥ १॥ सुगुरु म्हारा देशना द्यो मनरंग हो ॥ संघ सहू उछक थयो, सु० सुणवा अमृतवाण हो ॥ वहिला वंछित पूर हो ॥ सु० भ ओ अवसर जाण हो ॥ म्हा० २ ॥ सूर किरण धर संचरया, सु० विकस्या कमल कलाप हो ॥ राग विभास प्रमुखतणा, सु० होय रह्या आलाप हो ॥ म्हा० ३ ॥ पंचसबद झालरतणा, सु० मंगल नाद उच्चार हो ॥ इम बहु विध भूमंडलै, सु० वरत्या जय२कार हो ॥ म्हा० ४ ॥ संघ सकल भगते करी, सु० जोवै थांरी वाट हो ॥ नीचे पधारो गछपती, सु० द्यो दरिशण गहगाट हो ॥ म्हा० ५ ॥ तिण अवसर सिंघासणें, सु० पावधारै उलसंत हो ॥ जलधर ज्युं गहरै स्वरै, सु० वांचै सूत्र सिद्धांत हो॥ म्हा० ६ ॥ बहु भवियण प्रति-

बूझवै, सु० वयण सुधारस योग हो ॥ उत्तम धरम प्रकाशता, सु० टाले नवडुख नोग हो ॥ म्हा० ७ ॥ तेज तरणी जिम दिनमणी, सु० गुण उत्तीस निवास हो ॥ मोहन मुद्रा तुमतणी, सु० निरख्यां मन उल्लास हो ॥ म्हा० ८ ॥ थे चिरजीवो गछपती, सु० राज करो इक आण हो, इम बोलै मुनि सुध सदा, सु० वाणी क्षमाकल्याण हो ॥ म्हा० ए ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यात्रा निनाणूं करियै ॥ ए चाल ॥ एहवा सदगुरु वांदियै, नविकजन ॥ एहवा० ॥ आप तरे उरनकूं तारै, शरण तिहारी गहियै ॥ न० १ ॥ जिम सारथपति साथीजनकूं, वंछित देशैं वहियै ॥ न० ॥ तिम सदगुरु अमृतउपदेशे, लहै नविक सुख कहियै ॥ न० २ ॥ गोप समा गुरु गुण नित धारे, राखै गोजन महियै ॥ न० ॥ वलि निर्यामक उपमा धारै, जिम नाविक नौ तरियै ॥ न० ३ ॥ एक असंजम दोय विधि वंधन, त्रिविध दंम परिहरियै ॥ न० ॥ चार कषाय निवारक तारक, पंच महाव्रत धरियै ॥ न० ४ ॥ षट् काय रक्षक महानय जीपक, अशरण शरण कहीजियै ॥ न० ॥ एहवा सदगुरुनी बलिहारी, शरण ग्रही निशतरियै ॥ न० ५ ॥ गोतमस्वामि समा मुनि उत्तम, सर्व जीव शम धरियै ॥ न० ॥ हिदयकमल नितप्रति राखीजै, आनंद शिवपद लहिय ॥ न० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः नवि तुह्म वंदो रे शीतल जिनपती रे ॥ ए चाल ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थंकरू रे, वरधमान जिनराज ॥ दरशण जेहनो रे दरपण ज्युं दिप रे, शोनत तेज समाज ॥ नविजन वंदो रे नावै गछपती रे ॥ १ ॥ तसु पट राजे रे सुधरम गणधरू रे, ग्रु न्त द्वादश अंग ॥ जंबूस्वामी रे शिष्य सोहामणो रे, चवद पूरव धर चंग ॥ न० २ ॥ प्रनव सज्यंनव जगमें परगमा रे, श्रीयशोनद्र मुणिंद ॥ श्रीसंनूतविजय नद्रबाहुजी रे,

श्रीथूलभद्र दिणंद ॥ भ० ३ ॥ एम अनुक्रम दश पूरवधरू रे, हुवा वयर मुणीश ॥ श्रीजिनमत दीपायो भूतले रे, सुरनर नामत शीश ॥ भ० ४ ॥ तास परंपर चंद्रकुले भला रे, श्रीकोटिक गणधार ॥ श्री उद्योतन सूरि सोहामणा रे, वयरी लाख मझार ॥ भ० ५ ॥ वरधमान परमुख शिष्य जेहना रे, चार अशी परिमाण ॥ गच्छ चोराशी प्रगट्या तिहांथकी रे, जाणे चतुरसुजाण ॥ भ० ६ ॥ तास शीस जिनेश्वर सूरिजी रे, दुर्लभराय समक्ष ॥ खरतर विरुद लह्यो ते रूवडो रे, गच्छपति जीत प्रत्यक्ष ॥ भ० ७ ॥ नव अंग वृत्तिकारक दीपता रे, श्रीअभयदेव सूरिराय ॥ श्रीजिनवल्लभ जिनदत्त गच्छपती रे, श्रीजिनकुशल अमाय ॥ भ० ८ ॥ परम प्रभावक इण गच्छमें थया रे, आचारज गुणवंत ॥ शुद्ध सामाचारी जग तेहनी रे, सुणि हरखंत होय संत ॥ भ० ९ ॥ शुद्ध परंपरमां थया अनुक्रमे रे, श्रीजिनलाभ सूरीश ॥ तास पटोधर जगमां परगड़ा रे, श्रीजिनचंद मुणीश ॥ भ० १० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणी रे, सौम्यपणे द्विजपत्ति ॥ गंभीरगुण सागरनें जीतियो रे, सुर सेवे दिन रत्ति ॥ भ० ११ ॥ स्याद्वाद जिनधर्म वखाणता रे, नय निक्षेप विचार ॥ भंग पदारथ अति विस्तारसें रे, भाखे भवि हितकार ॥ भ० १२ ॥ ग्यान पूरव क्रिया साधे भली रे, जिनवाणी अनुसार ॥ एहने सेवो रे क्यूं भूला भमो रे, थाय सफल अवतार ॥ भ० १३ ॥ सुरतरु छंडी वांवल आदरे रे, कांइ नर मूढ गिमार ॥ ए उखाणो साचो मत करो रे, लहि एहवो गणधार ॥ भ० १४ ॥ नाम धारक आचारज छै घणा रे, पंचम काल मझार ॥ पिण इण सरिखो जगमां को नही रे, स्व पर तारणहार ॥ भ० १५ ॥ वाचक लाभ एयकमल पसायथी रे, कमलसुंदरनी वाणि ॥ जे मानसी ते सुख पामस्ये रे, पातिकनी करि हाण ॥ भ० १६ ॥ इति वधावा ॥

पुनः ॥ श्रावण पावस ऊलस्यो ॥ ए चाल ॥ मोतियमे मेह वरसीयो, सखि आज हुअ आणंद ॥ पूज पधारया विहरता, नामें सौभाग्यसूरिंद रे ॥ जिनहर्ष सूरिंदनो नंद रे, सदगुरु सुरतरुनो कंद रे ॥ मुख सोहे पूनमचंद रे, सखी मोती० ॥ १ ॥ क्षांतिगुणे करी शोभता, सखि पंच महाव्रतधार ॥ वर छतीस गुणे सदा, विचरे जे निरतीचार रे ॥ रसिया जे पर उपगार रे, उपशमरसना भंमार रे ॥ पाले पंचाचार रे, सखी० २ ॥ मेघतणी पर गाजता, सखि मीठी जेहनी वाण ॥ आप तरे पर तारता, गुण रतनारी खाण रे ॥ सहु आगमना जे जाण रे, प्रतपै जिम जलहल भाण रे ॥ जेहनो अतिशय विन्नाण रे, सखि० ॥ ३ ॥ परतिख सुरतरु सारिखा, सखि इण पंचम काल ॥ साथै जेहनें शोभता, मुनिवर जिम मोतीमाल रे ॥ कोई थिवर ने कोई बाल रे, वंदीजे तेह त्रिकाल रे, सखि० ४ ॥ सूरि सकल सिर सेहरो, सखि खरतर गच्छ सिणगार ॥ जैनधरम दीपावता, महिमा जेहनी अणपार रे ॥ सहु संघतणा सिरदार रे, सखि कुमतितणा भरतार रे ॥ जेहनें प्रणमें नरनार रे, सखि० ॥ ५ ॥ सूत्र अरथ विसतारता, सखि देता धर्मोपदेश ॥ दान शीयल तप भावना, बारे भावन सुविशेष रे ॥ द्रव्यादिक अर्थ विशेष रे, गुण अरु पर्याय प्रदेश रे ॥ सखि० ॥ ६ ॥ सुणतां श्रीजिनराजना, सखि अमृतवचन विलाश ॥ क्षण में कर्म समूहनो, सखि निश्चै होवे नाश रे ॥ थाय निज ज्ञान प्रकाश रे ॥ कहे बाल सुगरु सहवास रे, करतां निज रूप सुभाव रे ॥ सखि० ७ ॥ इति वधावो ॥

॥ अथ गुंहली लिख्यते ॥

॥ नणदल विंदली दे ॥ ए चाल ॥ जिनशासन जयकारी, जगगुरु गोतम गणधारी रे ॥ सहियां गुंहली करो ॥ गुंहली करो

गुरु संगे, जगतितणै उछरंगे रे ॥ सही० ॥ विचरंता मुनिराय । राजग्रहनगरी आया रे ॥ सही० ॥ १ ॥ पंचेंद्री विषय निवारी, नवविध ब्रह्मव्रतधारी रे ॥ सही० ॥ च्यार कषायकुं टाले, पंच महाव्रत सूधा पाले रे ॥ सही० २ ॥ सेवे पंचाचार, धरै पंच सुमति मनुहार रे ॥ सही० ॥ त्रिण गुप्ती वलि गाजे, इम छत्रीश गुणें गुरु राजे रे ॥ सही० ॥ ३ ॥ चरण करण गुणसंगी, शुद्धातम अनुभव रंगी रे ॥ सही० ॥ उत्सर्गने अपवादी, बहु नयगम भंग प्रवादी रे ॥ सही० ४ ॥ मोक्षमारग उपदेशी, धरे धरमध्यान शुभ लेशी रे ॥ स० रत्नत्रय अभ्यासी, भविजन चितकमल विकासी रे ॥ स० ५ ॥ श्रेणिक नरपति आवै, गणधर वंदन शुभ भावे रे ॥ सही० ॥ चेलणा स्वस्तिक पूरै, मोह तिमिर भरमने चूरे रे ॥ सही० ॥ ६ ॥ निसुणी गुरुमुख वाणी, समकित निरमल करै शाणी रे ॥ स० ॥ श्रुत सेवा जे करस्यै, ते कीर्तिसागर पद वरस्यै रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

पुनः देशना ॥ नणदलबाई चुम्ले जोबन झिल रह्यो ॥ ए चाल ॥ सुणीये सद्गुरु देशना ए सहियां, मधुर सुधारश वाण ॥ सद्गुरु म्हारा, धो मनमोहन देशना ॥ १ ॥ वीरजिनंद जिम उपदिस्या ए सहियां, नय निक्षेप सरूप ॥ स० ॥ तुम मुखवाणी निरमलो ए सहियां, भ्यासे घ..२ चूं. ॥ सद० ॥ २॥ तखत विराजो साभता ए सहियां, उदयाचल ज्युं दिणंद ॥ स०॥ तेज झलामल सुरतरू ए सहियां, मुखछवि पूनमचंद ॥ स० ३ ॥ जीवदया तरू सींचवा ए सहियां, तुम वाणी जलधार ॥ सद० ॥ श्रुतसागर धीरजधरा ए सहियां, भाखो नव तत्व सार ॥ सद० ॥ ४ ॥ संघ भगति नित साचवै ए सहियां, पूरब पुन्यसुथा.न ॥ सद० ॥ तारण तरण जिहाज ज्यूं ए सहियां, सुध समकित सुध ज्ञान ॥ सद० ॥ ५ ॥

खरतरगछ महिमा निलो ए सहियां, सदगुरु कुशलनिधान ॥ सद० ॥ ऋद्धसारनी भावना, मंगल धवल प्रधान ॥ स० ॥ ६ ॥ इतिदेशना ॥ पुनः ॥ सुगुरु म्हारा भ्याजनी पर तारो, गुरु मनमो ये मोह्यो म्हारो ॥ सवाईगुरु भ्याजनी० ॥ अमृत उपम जिनवाणी, स्याद्वाद सुधारस खाणी, श्रुति नय निक्षेप प्रमाणी ॥ सवाई० ॥ १ ॥ जगगुरु श्रीजिनवर भाखी, गणधर मुनि सूत्रे साखी, आगमनिधि हृदयें राखी ॥ सवा० ॥ २ ॥ सदगुरु ज्ञानी गुणवंता, भवि हृदयकमल बोधंता, गुरु सहस किरण भलकंता ॥ सवा० ॥ ३ ॥ भविजीव श्रवण गुण रसिया, चात्रक ज्यूं जलधर हसिया, उपदेशे दुरित सब नसिया ॥ सु० ॥ ४ ॥ गुरु धर्म शील सोभागी, तसु चरणें श्रुतमति जागी, ऋद्धसार वचन धुन लागी ॥ सवाई गु० ५ इति वधावो ॥



## ॥ अथ श्रीखरतर वृहद्गच्छकी सिद्धांत शुद्ध सामाचारी लिख्यते ॥

जो एकमतिथि १ क्षय होय तो प्रतिपदाका पच्चक्खाण व्रत पिछली अमावास्या ३० तिथिकों करे, ८ अष्टमी क्षय होय तो अष्टमीका व्रत सप्तमीकों करे, और जो चवदस क्षय होय तो १४ का उपवास अमावस या पूनमको करे, इसका कारण यह हे की यह दोनों तिथि बराबर पर्व हे, चौदश पर्वदिन हैं तैसेंइ अमावस पूनम भी चिरंतन पर्वीका दिन हे, यह दोनों दिन धर्मकृत्य करणेके हैं, पारणे उत्तरपारणे धर्मका उद्योत करे ॥ इस वखत जैनी पंचांगकी प्रवर्ति नही, अन्य धर्मियोंके पंचांग परसे तिथियां गिणनेमें आती हे, जैन पंचांगमें संवत्सरी आदिक पर्वोका क्षय वृद्धि नहि होता, जंबूद्वीपपन्नत्तीमें पांच संवत्सर कहे हैं, उसमें स अग्नि वर्द्धन संवत्सर मिथ्यात्वियोने प्रचलित कर रखा हे, लेकिन् सूर्यसंवत्सर तीनसें सवापेंसठ दिनका होता हे, इस वास्ते जैनागमसे यह पत्रा यथार्थ नही एकांत नयवाद हेतुसें. इस वास्ते जो चौदश क्षय हो तो उपवास तथा पक्खी प्रतिक्रमण निस्संदेह पूनम तथा अमावसके दिन करे, लेकिन् तेरस तथा चौदस क्षय तिथिके वितत्थेको न करे, और जो बेला करे तोहरीगोंकेतो दोनों दिन त्यागपक्षमें ग्राह्य हे ॥ अब कोइ वखत संवछरीकी चोथ क्षय हो तो पांचमके दिन संवछरी प्रतिक्रमण करे, लेकिन् तीजके दिन कदापि काले भी नहि करे, और जो चोथ दो होय तो पहली चोथको संवत्सरी करे, और कोइ भी तिथि दो होयतो पहली तिथि माननीय हे, दूसरी लौकतिथि हे. दूसरा यह प्रमाण हे, साठ घडीकी तिथि छोडके दूसरी घडी अधघडीकी तिथि मानणा

बुद्धिमानोका काम नही, इस पर कोई एसा कहे की अपणे तो उदयतिथि मान्य हे, सूर्य उदय होय जहां तक कोई भी तिथि होयतो उस दिन वोही तिथि मानते हे, इस वास्ते जो दुसरी तिथि अधघमी उदयके वखत होय तो माननेमें क्या दोष हे? इस प्रश्नका उत्तर–हे भव्य, जो पहले दिन तिज मानी हे, उर तीजके दिन चोथ बहुत घमी भुगतेगा, लेकिन् वह तिथि तीजही मानीजेगा, इसी तरे चोथके दिन सूर्य उदयकी वखत घमी अधघमी चोथ होयेसें चोथ मानीजेगा, लेकिन् जो तिथी दो होगी उसमें पहली तिथि सूर्य उदय उर अस्त दोनोंमें रहेगी, तवतो एसी संपूर्ण तिथिकों छोमके दुसरी थोमीसी तिथिकूं व्रत करणा लाजम नही. कार्त्तिक माश बढे तो पहले कार्त्तिक चोमासो करे. फाल्गुण तो बढताही नही, अगर बढेतो दुसरे फाल्गुणमें चोमासा करे. असाढ दो होयतो दुसरे असाढमें चोमासा करे. असाढ चोमासेकी चौदससें पच्चास गुणपच्चासमे दिन चोथकूं संवत्सरी करे, चोथ कम होयतो पांचमके दिन संवत्सरी करे, श्रावण भादवा आसोज बढेतो पंचमासी चोमासा करे. श्रावणमास दो होयतो दुसरे सावण सुद ४ कूं संवछरी करे, चोमासेकी चौदससे पच्चास दिन लांघके संवछरी पर्व कदापिकाले न करे, यह श्रीकल्पसूत्रजीके पहिली समाचारीमें पाठ हे, उर जो दो महीना होय उसमें पहिले महीनेका वदिपक्ष दुसरे बढ महीनाका शुक्लपक्ष एसें कल्याणकतिथिका व्रत एक महीनेमें करणा, पहिलेका सुदपक्ष दुसरेका वदिपक्ष एवं ३० दिन लूंण जानना, इन ३० दिनोंमें कल्याणकतिथिका व्रत पच्चरकाण नहि करे, यह तिथियोका प्रमाण श्रीहरिभद्रसूरजी कृत तत्वतरंगणी ग्रंथमें प्रसिद्ध हे, सो किंचित्प्रमाण गाथा लिखते हे ॥ निहिपम्गेपुव्वतिही, क.यव्वा

जुत्तधम्मकज्जेय ॥ चाउद्दसीविलोवो, पुन्नमियपक्खिपडिक्कमणं ॥१॥ तत्थेवपोसहविही, कायव्वासव्वगेहिसुहहेउ ॥ नहुतेरसीइकीरई, ज म्हाआणाइणोदोसा ॥ २ ॥ सूरोदयपडियायावी, तेरसीहुंतिनप क्खियंकुज्जा, चउम्मासियंकरणे, एसविहीदेसिउंसमणा ॥ ३ ॥ ति हिवुड्ढीएपुव्वा, गहियापडिपुन्नभोगसंयुत्ता, इयराविअप्पभोइज्जा, परं थोवत्तितत्तुल्ला ॥ ४ ॥ ( तेसेइ ज्योतिष्करंड पयन्नेमें भी एसाही लिखा हे ) ॥ छट्ठिसहियानअट्ठमी, तेरसिसहियानपक्खियाहोई ॥ प डिवेसहियानकयावि, इइभणियावीयरागेण ॥ १ ॥ अट्ठमिदिनंमि पायं, कायव्वाअट्ठमीयपाएण ॥ कइयाविसत्तमंमि, नवमीछट्ठीनका यव्वा ॥ २ ॥ पनरसम्मियदिवसे, कायव्वंपक्खियंतुपाएण ॥ चाउद्दसे विकइया, नहुतेरसिसोलसमेकहवि ॥३॥ तथा श्रावक सामायक करे तब पहली सामायकदंडक ३ वीर उच्चरके पीछे इरियावही पडिक्कमें, क्योंकी आत्मार्थी आचार्य श्रीभद्रबाहूस्वामी, श्रीहरिभद्रसूरजी, तथा श्राद्धविधिके कर्त्ता तपागच्छी श्रीरत्नशेखरसूरजी, तथा कमला गच्छी नवपद प्रकरण कर्त्ता श्री सूरिः प्रमुख आचार्योंके बनाये ग्रंथोमें पहले करेमिभंते सा० कहके फेर इरियावहीका पाठ हे ॥ तथा श्रीमहावीरस्वामीके छव कल्याणक मान्य हे, इस बातका कल्पसूत्रादिक अनेक ग्रंथोमें पाठ हे; खरतरगच्छ, तपगच्छ के आचा र्योंने ग्रंथोमें प्रगटपणे वर्णन किया हे, जो आश्चर्यकारी संबंध जा णके छठा कल्याणक न मानते हे उनोकों डिगंबरकी तरे मल्लि नाथस्वामीकों भी स्त्रीपणें माणना नहि चाहिये, क्यूंकी वो भी आश्चर्यकारी संबंध समानत्वही हे. दुसरा अपणे मनकल्पितपणेसें न माणनेसें अपणेही पूर्वाचार्य गुरुवोकी आज्ञा लोपन होती हे तेसें सर्वे पोषध अष्टमी चतुर्दशी कल्याणकादिक पर्वतिथिको करे, लेकिन् तिजापर्व सामान्य तिथिमें पोसह करणेका कथन किस

सिद्धान्तमें भी नही है. पर्युषणमें कल्पसूत्रकी नव वाचनाही क-रणी। एसा वंधारण नही, अबकी भी करे। तथा श्राविकासें एक अनन्तद्रव्य दूसरा उष्णजलद्रव्य यह दो द्रव्यही ग्रहण करणा क थन है इस वास्ते जो उन्होंका लोलपीपणे करके अधिक द्रव्य ग्रह ण करणा नहिं चाहिये। तथा तरुण स्त्रीयोंकुं सूरनायकजीकी पूजा करणी प्रमाणीक आचार्योंने मना किया है, कारण इस का लमें प्रायें स्त्रियोंसें अविवेकपणा तथा अकस्मात् स्त्रीधर्म प्रगट होना दीखरहा है, तथा श्रावककुं पच्चख्खाणमें पाणस्सलेगवाका पाठ कहणा युक्त नहीं, यह पाठ साधूका है. तथा दिनप्रति एक उपवास पच्चख्खावे. जो अधिक तपकी इच्छा होय तो अपने दिलमें धारणा रखे, लेकिन पच्चख्खाण नित्य सूर्योदयकी वखतही करे। तथा जिस धान्यकी दो फाड होय सो सब विदलकी गिणतीमे है, इस द्विदलधान्यकूं गोरस दही छाछके साथ भक्षण नहिं करे, तथा मरण जन्मका सूतक जिस घरमें होय उस घरका आहार पाणी साधु वर्जन करे, लेकिन संपूर्ण कुल गोत्रका सूतक नहीं माने, इत्यादि इहां संक्षेप मात्र खरतरकी सामाचारी लिखी है. अनेक ग्रंथ खरतर साधाचार्यके है जिसमे सरल शुद्धोपयोगी स-मयसुंदरोपाध्याय विरचित समाचारीशतक पंचांगी प्रमाण सू त्रोंके पाठ संयुक्त है सो अनेकांती बुद्धिवानोंने गुरुगमसें देखके धारणा॥ यह खरतरगच्छसेंमें चोराशी गच्छ भया है, जिस वास्ते खरतरगच्छमें चोराशी नंदि है. उद्योतनसूरजी, वेमचंद्रसूरजी के निजशिष्य थे. इस उद्योतनसूरजीने ८३ विद्यार्थी शिष्य कर ८४ मे निजशिष्य श्रीवर्द्धमानसूरि एवं ८४ को आचार्य पद दिया, व र्द्धमानसूरिके शिष्य जिनेश्वरसूरजीने सं० १०८० का. जालोर स- भा, अणहिलपत्तनमें चैत्यवासी शुद्धीनी [illegible] हटा कर किया

करके जीता, तब दुर्लभराजाने खरतर विरुद दिया, तबसे कोटिक गछ चंद्रकुल वज्रशाखावाले खरतरगछ कहेलाणे लगे, लेकिन् अभी स्वमताभिमानी खरतरगछकूं संवत् बारेसे ४ की सालमें जिनदत्तसूरजीसें भया एसा धर्मसागर निन्हवकी तरे स्वकल्पित ग्रंथोमें लिखा है, लेकिन् अपणे पूर्वाचार्योके बणाये सम्यक्तसप्तति आदि ग्रंथकूं तो देखे, इन जिनेश्वरसूरिःके दो शिष्य भये, बमे जिनचंद्रसूरि, जिनोने संवेगरंगशालादि ग्रंथ बणाये उर श्रीमाल गोत्र थापा, दुसरे श्रीअभयदेवसूरिः, जिनोने नवांगकी वृत्ति शाशनदेवताकी वीनतीसे रची, जिनोके शिष्य श्रीजिनवल्लभसूरिः, जिनोने हजारों राजपूतोंको श्रावक बणाये, जिनोके शिष्य श्रीजिनदत्तसूरजी एक लाख तीस हजार राजन्यवंसी माहेश्वरी तथा ब्राह्मनोकों श्रावक बणाये, राखेचा लूंणीया पारख, सांवसुखा मालू कोठारी, बोथरा नाहटा, वगेरे गोलछा भावक चम्म डुगम सेठिया ब्रह्मेचा, इत्यादिक तीनसें गोत्र स्थापक भणशाली प्रमुखगोत्रोंकूं उसवंशमें श्रावक बणाया, सब गोत्रोके नाम लिखणेसे ग्रंथ बढ जायगा इस वास्ते इतने पर समज लेणा. एक अठारे जाति रत्नप्रभसूरिजीने उसियामे उसवाल बणाये है, बाकी प्रायें सर्व उसवाल कुल श्रीवर्द्धमानसूरजीसे लेकर श्रीजिनदत्तसूरिः माहाराज तक खरतरगछके प्रतिबोधक हे, पीछे उसवालवंसी हुये पीछे संवत १५ सें से लेकर आज दिन तक उरर गछियोने तथा मतावलंबियोने इनोपर अपणा सिका जमाया है, मूल वंशावली देखोगे तो सब व दोलत खरतर वृहद्गछकी है, यह बात हमने बहोतोकी वंशावली तपासके लिखी है, जिनोके पट्ट परंपरामें दादा श्रीजिनकुशलसूरजी भये, उनोके शिष्य उपाध्याय श्रीक्षेमकीर्तिसे क्षेमधाम शाखा सविग्गणगछमें पांचसे राजन्यवंशीयोकूं दीक्षा देणे

से प्रसिद्ध श्रई. उस शाखामें जगत्पुज्य श्रीसाधुगुणसें विराजमान धर्मशीलगणिः परमगुरु श्रये, जिनोके शिष्य पंडित , श्रीकुशलनिधानमुनिः श्रये, उक्त परमगुरुसाधुजी माहाराजका चरणाब्जचंचरीक उ० श्रीरामलालगणिः ने शिष्यमंडली पं। क्षेमचंदमुनिः चि। प्रेमचंद अमरचंदादि शिष्योके तथा पाठशाला श्रीबीकानेर वास्तव्य अनेक विद्यार्थियोके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्त्तव्य सर्व जीवोके उपगारार्थ छपायके प्रसिद्ध करा हे.

ठिकाणा पुस्तक मिलणे का बीकानेर श्रमा उपाश्रय विद्याशाला उ। श्री। परमोपगारी युक्तिवारिधिः। रामलालजी। गणिः ॥

